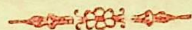
श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

ब्रजविलास ।

श्रीब्रजवासीदासकृत.



यह ग्रन्थ अत्यन्तशुद्धतापूर्वक
टिप्पणी सहित,

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

कार्तिक संवत १९६३, शके १८२८.

प्रस्तावना ।



श्रीब्रजवासीदासजी महाराजका निर्माण करा यह " ब्रजविलास " ग्रंथ कृष्णचरित्रोंमें सबसे चढ बढके है, कैसाही उदास क्यों न हो इस को हाथमें लेतेही उसकी उदासीका फिर पता कहाँ ? फिर तो प्रेम पूरित हो, अश्रुपातयुत नेत्रसे साक्षात् कृष्णस्वरूप दर्शनका अनुभव प्रत्यक्ष लेने लगता है। अतएव इस ग्रंथको अनेकस्थानोंमें अनेक यंत्रालयाधीशोंने छापा है और छापते जातेहैं. परंतु संवत् १९४६ में हमने प्राचीन २ और नवीन २ पुस्तकोंके आश्रयसे आयुर्वेदोद्धारक पं० दत्तरामचौबे व पं० कृष्णबिहारीशुक्लजीसे शोधन करा और जहाँ २ इसके कठिन पद हैं उनपर अंक देके नीचे टिप्पणी करदीनी हैं. ऐसा उत्तम छापा है कि, न कहीं छपा है न कहीं मिलनेका. जिनके पास यह पुस्तक होयगी वो निस्संदेह इसको कबूल करैंगे. महाशयगण ! बहुतसे प्रतिपक्षियोंने इसकी नकल छापी परन्तु (काचः काचो मणिर्मणिः) वो बात कहाँ ? यद्यपि हमने एक बहुत बड़े अक्षरकी छापी है और एक उससे छोटी मध्यम अक्षरकी छापी है और अब देशाटन करने वालोंकी सुगमताके लिये यह छापी है. कारण यहहै कि, जो पहला बड़ा तथा फिर मध्यम टैपमें होनेके कारण प्रत्येक साधारणको कीमत देना अति कठिन था इसवास्ते परमसुवाच्य और ललित अक्षरोंमें यह छापकर उयार करी है. इसमें दो भेद हैं एकतो चिकने कागजपर और दूसरा रफ (खुरदरा) कागजपर छापा है और सबको सुगमहो इसवास्ते कीमत भी बहुत सस्ती करदीनी है. बहुत क्या लिखें जो कुछ है सो आपके हाथमें है. देखही रहे हैं प्रत्यक्षमें प्रमाणकी कुछ आवश्यकतानहीं है.

आपका कृपाकांक्षी-**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

"**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-बंबई.

श्रीः ।

अथ ब्रजविलासकी लीलाओंका सूचीपत्र.



पूर्वार्द्धम् ।

सं०	नामलीला	पृष्ठांकः
४९	दानलीला	२४२

अथोत्तरार्द्धप्रारंभः।

इति सूचीपत्र ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई.

श्रीः ।

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ ब्रजविलास ।

सोरठा–होत गुणनकी खान, जाके गुण उर गनतहीं ॥
द्रवो सु दयानिधान, वासुदेव भगवंत हरि ॥ १ ॥
मिटत ताप¹त्रय फांसि, जासु नाम मुखसों कहत ॥
वन्दौं सो शुभराशि, नन्दसुवन सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
अरुण कमल दलनैन, गोपवृन्द² मंडन शुभग ॥
करहु सो मम उर ऐन, पीताम्बर वर वेणुधर ॥ ३ ॥
वन्दौं जगत अधार, कृष्णाग्रज बलदेवपद ॥
अभिमत³ फल दातार, नीलाम्बररेवतिरमण ॥ ४ ॥
श्रीगुरु कृपानिधान, वन्दौं पद महि माथ धरि ॥
जासु वचन जलयान⁴, नर चढ़ि भव⁵सागर तरहिं ॥ ५ ॥
वंदौं संत कृपाल, पद सरोज⁶रज राखि शिर ॥
जग हितरत शुभमाल, जिन निजगुण हरि वशकरे ॥ ६ ॥
पुनि वंदौं ब्रजदेश, परमरम्य पावन परम ॥
महिमा जासु सुदेश, राधानाथ विहारथल ॥ ७ ॥

प्रथम कृष्णको तात मनाऊं । श्रीवसुदेव चरण शिरनाऊं ॥
बहुरि देवकी पद जलजाता । वंदन करौं कृष्णकी माता ॥
इनसे और कौन बड़भागी । ब्रह्म धरयो नरतनु जिनलागी ॥
वंदौं नंद महरके चरणा । सहित यशोमति मंगल करणा ॥

---

१ अध्यात्म । अधिभूत । अधिदैव । २ समूह । ३ वांछित । ४ नौका । ५ संसारसागर । ६ कमल ।

जिनकी महिमा भाग्य बड़ाई । निगमागम शिव शारद गाई ॥
वंदौं रोहिणि पद जलजाता । कृष्णाग्रज बलदेवकि माता ॥
कीरतिसुत वृषभानु गोपवर । वंदौं चरण कमल रज शिरधर ॥
तात मात राधा रानीके । त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके ॥
कृष्ण कमल दृगकी कमलाके । कलुष विभंजन सब विमलाके ॥
वंदौं श्रीराधापद अम्बुज । जिनके ध्यान मिटत भव भै रुज ॥
होत कृष्ण सहजहि वश ताके । प्रेमसहित गुण गावत जाके ॥
वन्दौं सो वृषभानु दुलारी । कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी ॥

दोहा–राधाकृष्ण पदाम्बुजन, वन्दौं मँहि शिर टेक ॥
ब्रजविलास हित दोयतन, प्रगट कियेहैं एक ॥

सो०–वन्दौं युगल किशोर, रूपराशि आनंदघन ॥
दोऊ चंद्र चकोर, प्रीति रीति रसबश सदा ॥

अपर गोप गोपी गोपाला । जिनके सँग विचरहिं नँदलाला ॥
गाय बच्छ बालक ब्रजवासी । जिनके सखा कृष्ण अविनासी ॥
और जात जो ब्रजहिं निवासी । वंदौं सकल सुकृतकी रासी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर । गोकुलादि जो ग्राम उजागर ॥
श्रीयमुनासरि पर्व पुनीता । जासु दरश नहिं यमपुर भीता ॥
पर्वत बाँपी कूप तड़ागा । श्रीवृंदावनादि वन बागा ॥
खँग मृग जलचर जीव विभागा । वंदौं सकल सहित अनुरागा ॥
वंदौं गिरि गोवर्द्धन देवा । अपर देव तिन सम नहिं केवा ॥
सुरपति मेटि जाहि हरिपूजा । आनदेव तिन समको दूजा ॥
अति रमणीय रेत यमुना तट । उपवन अमित सुभग वंशीवट ॥
जहँ जहँ श्रीहरि धेनु चराई । सुन्दर श्यामल कुँवर कन्हाई ॥
रास विलास जहां हरि कीन्हों । भक्तवछल भक्तन सुख दीन्हों ॥

दो०–जड़चेतन ब्रजदेशके, तृण तरु महिरज जेत ॥
वंदौं कीट पतंग सब, पुनि पुनि प्रीति समेत ॥

१ वेद पुराण । २ पृथ्वी । ३ बावड़ी । ४ तलाव । ५ पखेरू । ६ इन्द्र । ७ तिनका । ८ पृथ्वी ।

सो०-ब्रजजनपद शिरराख, विनय करौं करजोरि पुनि ॥
मोमनको अभिलाष, पूरण करिये जानजन ॥
ब्रजविलास कछु कहौं बखानी । करन पुनीत जान निजवानी ॥
सो तबलों नहिं उरमें आवै । जबलग तुम्हरी कृपा न पावै ॥
मैं मन बच क्रम तुम्हरो दासा । ताते पुरवहु मोरी आसा ॥
यद्यपि मति इतनी मोहिं नाहीं । करौं उक्ति कछु निज तेहि माहीं॥
तहां एक मैं कियो विचारा । या विधि बल अपने उर धारा ॥
श्रीशुकदेव कही हरि लीला । सुनी परीक्षित सब गुणशीला ॥
सूरदास सोइ हरि रससागर । गायो बहुविधि परम उजागर ॥
फैल रह्यो सो त्रिभुवन माहीं । गावत सुनत सुयश हरषाहीं ॥
विविध प्रकार चरित हरिकेरे । तामहि बरणे सूर घनेरे ॥
सो वह प्रीति रीति सुखदाई । मेरे मन अतिशय करि भाई ॥
सो तो कथा अमित विस्तारा । मोपै पायो जात न पारा ॥
तामें ब्रजविलास सुखदाई । सो कछु कहिहौं कैर चौपाई ॥
दो०-भाषाकी भाषा करों, क्षमियो कवि अपराध ॥
जिहि तिहिं विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुतिसाध॥
सो०-हरिपद प्रीति न होय, बिन हरि गुण गाये सुने ॥
भवते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥
ताते मैं सन्तन शिरनाई । गावौं हरियश जन सुखदाई ॥
जो ब्रजमें हरि कियो विलासा । सो कछु कहिहों सहित हुलासा ॥
यामें इतनी + कथा बखानौं । ताकी सूचनका यह जानौं ॥
श्रीवसुदेव देवकी ब्याही । चल्यौ कंस पहुँचावन ताही ॥
तहां भई नभवाणी वाही । सुनिके कंस डर्यो पुनि ताही ॥
अठयों गर्भ होयगो याके । तेरी मृत्यु हाथ है ताके ॥
तबै देवकी हतन विचार्यो । करि विनती वसुदेव उबार्यो ॥

१ कविता । + यहांसे श्रीब्रजवासीदासजी ब्रजविलासकी कथोंकी सूचना-करतेहैं । २ आकाशवाणी ।

सब सुत ताहि देन को भाखे। नृप तब दुहुँन वन्दिमें राखे ॥
षट् बालक तिनके नृप मारे। पातक भये भूमिपर भारे ॥
दुखित गई सो हरिके पासा। हरि ताको जिमि दई दिलासा ॥
पुनि संकर्षण गर्भहि आये। तिनको बहुरि रोहिणी जाये ॥
सो सब कहिहौं मति अनुमाना। जैसी भांतन सुन्यो पुराना ॥

दो०-पुनि भगवान अनादि अज, ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥
प्रगट भये वसुदेव गृह, निज इच्छा सुखकन्द ॥

सो०-तात मात सुखदैन, सुंदर रूप दिखायकै ॥
कियो परम उरचैन, दूर किये दुखद्वंद्व सब ॥

तात मात पुनि जिमि समझाये। लै गोकुल वसुदेव सिधाये ॥
यशुदा गोद राखि घनश्यामहि। कन्या तासु गये लै धामहि ॥
कंसासुर सो कन्या पाई। सो जैसे आकाश सिधाई ॥
तासु वचन सुनि अति भयमाना। बालकहतन मंत्र तब ठाना ॥
बजे नन्दघर अनँद बधाये। ब्रज युवतिन मिल मंगल गाये ॥
भयो नन्दघर अति उत्साहू। ब्रजवासिनको परम उछाहू ॥
प्रीति सहित सो सब सुख गैहौं। जितनो निजमति को बल पैहौं ॥
बहुरि कंस पूतना पठाई। सो जैसे हरिके ढिग आई ॥
ताहि मारि जननी गति दीन्ही। प्राण पान करि पावन कीन्ही ॥
कागासुर पुनि जाविधि आयो। ताको पुनि हरि मारि बहायो ॥
बहुर्यो शकट चरणते डार्यो। तृणावर्त्तको जाविधि मार्यो ॥
अन्न प्राशनादि जे कर्मा। किये नंद जिमि निजकुलधर्मा ॥

दो०-बालचरित्र पवित्र पुनि, जिमि कीने अभिराम ॥
जानु पाणि चलि सुख दियो, तात मातको श्याम ॥

सो०-ब्रज जनके मनमोद, चले बहुरि पाँयन कछुक ॥
कीने बालविनोद, नन्द यशोमतिके अजिरै ॥

गर्ग आय लक्षग पुनि भाषे। पुनि सब व्रजवासी अभिलाषे ॥

१ माता। २ पवित्र। ३ घुटरुअन। ४ आंगन।

पुनि बालनसँग खेलन लागे। बालखेल लीला अनुरागे ॥
विप्रपाक जैसे छुइ लीनो। चन्दाहेतु बहुरि हठ कीनो ॥
कनछेदन लीला सुखदाई। कहिहौं सब आनन्द बधाई ॥
पुनि हरि खेलत माटी खाई। यशुमति लै सांटी उठिधाई ॥
माता आगे मुख जिमि बायो। ताही में त्रिभुवन दिखरायो ॥
शालग्राम मेलि मुख लीन्हों। नन्दहि पूजामें सुख दीन्हों ॥
अन्हवावनहित जिमि मचलाये। बहुत भांति यशुमति फुसलाये ॥
ग्वालन संग बहुरि अनुरागे। माखन चोरीके रस पागे ॥
बहुरों माता क्रोध उपायो। भक्तिहेतु दावरी बँधायो ॥
यमलाअर्जुन वृक्ष ढहाये। धनद सुतनके पाप नशाये ॥
पुनि वनगोचारन मन आन्यो। ग्वालन संग जान हठ ठान्यो ॥

दो०—बहुरि जाय वनमें हन्यो, वत्सासुर नँदनन्द ॥
ग्वाल संग आनँद सहित, घर आये सुखकन्द ॥
सो०—सो करिकै विस्तार, प्रेम सहित सब वरणिहौं ॥
निज मतिके अनुसार, व्रजवासी प्रभुके गुणन ॥

गोदोहन जैसे पुनि कीनो। तात मात ब्रजजन सुख दीनो ॥
मोती बये नन्दके धामें। सुर नर लखि चकृत भयेजामें ॥
बहुरि जाय वन नन्दकुमारा। बका असुरको वदन विदारा ॥
बहुरों बालचरित चित दीने। भौंरा चकई खेलन लीने ॥
श्रीराधा सों प्रीति बढ़ाई। कीने चरित ललित सुखदाई ॥
अघा असुर मार्‍यो पुनि जाई। ग्वालन संग छाक वन खाई ॥
भयो मोह जिमि विधिके मनमें। बालक वत्स हरे तिन वनमें ॥
तिनको रूप आप प्रभु कीनो। ब्रजके वासिनको सुख दीनो ॥
सो सब कहिहौं कर विस्तारा। अघनाशन प्रभु चरित उदारा ॥
श्री वृषभानु लली पुनि आई। जैसे हरिसों गाय दुहाई ॥
कहिहौं सो रसकथा सुहाई। अति विचित्र जनमन सुखदाई ॥
बहुरो धेनुकको वधकीनो। विष जलते ग्वालन रखलीनो ॥

१ कर्णछेदन। २ कुबेर। ३ ब्रह्मा। ४ पाप।

दो०–पुनि नाथ्यो काली उरग[1], जलमें पैठि मुरारि ॥
यमुनाजल निर्मल कियो, ब्रजते दियो निकारि ॥
सो०–कियो दावानल पान, राखिलिये ब्रज लोग सब ॥
जिनके कृपानिधान, सदा भक्ति संकटहरण ॥

बहुरि प्रलंब असुर ब्रज आयो । खेलतमें हरि ताहि नशायो ॥
पनघट यमुनातट पुनि जाई । गोपिनसों रसकियो कन्हाई ॥
चीरहरण लीला पुनि कीनी । कहिहों सकल प्रेम रसभीनी ॥
पुनि वृन्दावनमें सुखशीला । ग्वालनसंग करी जो लीला ॥
वृन्दावनकी महत बड़ाई । श्रीमुख श्रीबलजू सों गाई ॥
ऋषिपेत्निनसों[2] भोजन लीनो । भक्ति दान तिनको प्रभु दीनो ॥
पुनि श्रीगोवर्द्धन गिरिराई । ब्रज थापे सुरपतिहि मिटाई ॥
सुरपति कोप कियो यह जानी । वरष्यो प्रलय कालको पानी ॥
तब प्रभु गिरि[3]करधारि ब्रज राख्यो। जै जै सब ब्रजवासिन भाख्यो ॥
सो सब अनुपम कथा सुहाई । कृष्ण कृपाते कहिहौं गाई ॥
नन्दहि पकरि वरुणके दासा । जिमि लै गये वरुणके पासा ॥
लाये श्याम तहां ते जाई । ब्रजमें भइ आनन्द बधाई ॥

दोहा–बहुरों पुर वैकुंठजो, अति पुनीत निजधाम ॥
ब्रजबासिनको करि कृपा, दिखरायो घनश्याम ॥
सो०–सो सब कथा अनूप, अति विचित्र पावन परम ॥
कहिहौं मति अनुरूप, सन्तजनन मन भावनी ॥

पुनि जो करी श्याम सुखशीला । अति अद्भुत ब्रजमें रसलीला ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी । और सकल ब्रज गोप कुमारी ॥
तिन सों मिल श्रीकुंजविहारी । रस श्रृँगार लीला विस्तारी ॥
आनँदमयी सकल सुखकारी । गाय तरत भव सब नर नारी ॥
जिमि गोपिन हरिसों मन लायो। प्रेम पंथ दृढकरि दिखरायो ॥
गोरस लै निकसीं ब्रजनारी । जिमि दधि दान लिये बनवारी ॥

१ सर्प । २ माथुरद्विजनकीस्त्री । ३ गोवर्द्धन ।

भई प्रेम उन्मत्त गुवारी । लोक लाज तनु दशा विसारी ॥
बहुरि चरित्र कुँवरि राधाके । परम पवित्र हरण बाधाके ॥
जैसे मिली श्याम सों जाई । बहुरौं जैसी प्रीति दुराई ॥
पुनि संकेत चरित्र विविधवर । किये प्रिया प्रीतम अतिसुन्दर ॥
गर्ब विरह अभिलाष परस्पर । अति रहस्य लीला सुंदरवर ॥
कहिहौं सकल कथा सुखदाई । भक्ति रसज्ञन के मन भाई ॥

दोहा–देखि मुकुरमें लाडिली, पुनि जैसो निजरूप ॥
विवश भई सो गायहौं, लीला परम अनूप ॥

सो०–पुनि नैनन अनुराग, अरु मुरलीकी प्रियकथा ॥
कहिहौं सहित विभाग, प्रेम सुधारससों भरी ॥

बहुरौं शरदरैनि अति पावन । श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तहाँ श्याम बाँसुरी बजाई । घर घर ते ब्रज नारि बुलाई ॥
कियो रास रस रसिक विहारी । भई प्रेम गर्वित तहँ नारी ॥
अन्तर्ध्यान चरित तब कीन्हो । गर्व गोपिकनको हरिलीनो ॥
कियो महा मंगल पुनि रासा । बाढ्यो परमानन्द हुलासा ॥
पुनि जलकेलि करी मनभावन । कहिहौं चरित सकल अतिपावन ॥
मान चरित लीला सुखदाई । करी बहुरि जिमि कुँवर कन्हाई ॥
विस्तर सहित कहौं सो वरनी । भरी प्रेमरस आनँद करनी ॥
बहुरौं जाय हिंडोला झूले । भये सकल गोपिन अनुकूले ॥
ऋतु वसंत फागुन जब आयो । कियो फाग रँग सब मन भायो ॥
सो रसकथा सकल सुखदानी । मति समान सब कहौं बखानी ॥
पुनि विद्याधर शाप नशायो । अजगर तनु ते ताहि छुड़ायो ॥

दो०–शंखचूड मार्यो बहुरि, अधम निशाचर नीच ॥
पुनि मार्यो वृषभा असुर, हरि ब्रजवासिन बीच ॥

सो०–वध्यो बहुरि गोपाल, केसी व्योमा असुर जिमि ॥
दुष्टदलन नँदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब ॥

१ भक्तिरसके जाननेवारे । २ दर्पण । ३ अभिमान । ४ जलविहार । ५ मानलीला । ६ सुदर्शनविद्याधर ।

कर्म्म धर्म्म नहिं नीति बखानी। केवल भक्ति प्रेम सुखदानी ॥
जानि कृष्णके चरित पुनीता। कहिहैं सुनिहैं सन्तसप्रीता ॥
बहुरि कहत दोऊ करजोरी। सुनियो विनय कृपा करि मोरी ॥
चूकपरी जो मोतन होई। सुजन सुधारि लीजिये सोई ॥
मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊं। कृष्णविलास प्रीति करि गाऊं ॥
सो विचारके श्रवणन कीजै। काव्य दोष गुण मन नहिं दीजै ॥
ऐसे सबको विनय सुनाई। कृष्णचरित वरणौं सुखदाई ॥
कृष्णचरित आनँदके रासा। मंगल करण हरण भववासा ॥

दो०–विघ्न विनाशन शुभ करण, हरणताप त्रयशूल ॥
चरित ललित नँदनन्दके, सकल सुखनके मूल ॥

सो०–चरण कमल उरधार, श्रीराधा नँदलालके ॥
सुन्दररस आगार, ब्रजविलास अब वरणिहौं ॥

सम्बत शुभ पुराण[1] शत जानौ। तापर और नक्षत्र[2]हि आनौ ॥
माघ सुमास पक्ष उजियारा। तिथि पंचमी सुभग शशिवारा[3] ॥
श्रीबसन्त उत्सव दिन जानी। सकल विश्व मन आनँद दानी ॥
मनमें करि आनन्द हुलासा। ब्रजविलासको करौं प्रकासा ॥
वन्दौं प्रथम कमलपदनीके। श्रीवल्लभ आचारज जीके ॥
श्रीलक्ष्मण भट कुँवर उदारा। जन उद्धारन हित अवतारा ॥
माया व्याधि मिटाय अनेका। कियो प्रेम मारग दृढ़एका ॥
श्रीगोकुलवसि सुख उपजायो। कृष्ण नामको दान चलायो ॥
विरहानल[4]में सुभग शरीरा। वाणी प्रेम सिन्धु गम्भीरा ॥
हरिप्रापतिकी रीति बताई। विरह रूप करि प्रगट दिखाई ॥
विरह भर्यो जिनको सब नेमा। विरह रूप करि जिनको प्रेमा ॥
विरहै भरी भक्ति विस्तारी। ताते गोकुल गैल निहारी ॥

दोहा–द्वापरतनु धरि सुरनहित, कृष्ण सँहारे दुष्ट ॥
श्रीवल्लभ वपु धरि कियो, प्रेमपंथ कलिपुष्ट ॥

१ अठारह। २ सत्ताईस, अर्थात् १८२७ के संवत्‌में इस ग्रंथको बनायो है। ३ चंद्रवार। ४ विरहरूप अग्नि।

सो०-मन वच क्रमसों चित्त, श्रीवल्लभ चरणनलग्यो ॥
वही आश वहि वित्त, वहिसाधन वहि युक्तफल ॥
पुनि श्रीवल्लभ कुलहि मनाऊं। चरणकमल तिनके शिरनाऊं ॥
श्रीगोकुलमें जिनको धामा। विश्व विदित सुन्दर गुणग्रामा ॥
प्रेम भक्तिकी ज्योति विराजै। तेज प्रताप जगतपर राजै ॥
जिनके सदन देखिये ऐसे। नन्द महरिके सुनियत जैसे ॥
तहां कृष्णकी नितनवलीला। बाल विनोद भरी सुख शीला ॥
तिनकी शरण जीव जो आवै। तौ दृढ भक्ति कृष्णकी पावै ॥
देत श्रवण मग अति सुखदाई। कृष्ण नाम रस सुधा पियाई ॥
भक्ति दानको परम उदारा। जगत विदित श्रीगोकुलद्वारा ॥
तामहँ मंगल वंश मझारी। परम कृपालु दीन दुखहारी ॥
श्रीमोहनजी नाम गुसाई। सुन्दर श्याम श्यामकी नाई ॥
परम विशाल कमल दल लोचन। दया दृष्टि उरतापं विमोचन ॥
मधुर मनोहर शीतल वानी। प्रेम सुधारससों लपटानी ॥
दोहा-तिन तीरथपति मधि दियो, कृष्ण नाम मोहिं दान ॥
दीन जानि राख्यो शरण, लगिकै मेरेकान ॥
सो०-तिनके पद उर राख, ब्रजविलास वर्णन करौं ॥
मोमनको अभिलाष, पूरण करिहैं जानि जन ॥
वन्दतहौं सब सूर सुजानै। जिन्हैं सूर सम सबकोउ मानै ॥
प्रेम रूप वाणी परकासा। प्रफुलित अम्बुंज सुनि हरिदासा ॥
कृष्ण रूप बिन और न देख्यो। जगत विषय तृणसम करि लेख्यो ॥
राखे नैन सदा करि ध्याना। दिव्य दृष्टि करि सुयश बखाना ॥
लीला श्याम जन्म भरगाई। रहसकेलि सब प्रगट जनाई ॥
वाणी भांति अनेक बखानी। 'कृष्ण प्रेम रस सों लपटानी ॥
चहै कठोर मोह वश जेऊ। होत प्रेम वश सुनिकै तेऊ ॥
कीन्हों अति उपकार जगतको मारगदयो चलाय भगतको ॥

१ धन। २ घर। ३ अमृत। ४ हृदयको दुःख। ५ मथुरापुरी वा प्रयागराज। ६ सूर्य। ७ कमल।

मोहिं बडाई करि नहिं आवै । जिनको गायो सबकोउ गावै ॥
चरण शीश धरि तिन्हैं मनाऊं । यह अपराध क्षमा करि पाऊं ॥
मोते यह अति होत ढिठाई । करत विष्णु पदकी चौपाई ॥
सो मम दोष न उरमें धरिये । सफल मनोरथ मेरो करिये ॥

दोहा–अब सन्तनकी मण्डली, वन्दतहौं शिरनाय ॥
बिना कृपा जिनकी भये, हरि यश गाय न जाय॥
सो०–करिहैं मोहिं सहाय, गुणगाहक परहित करन ॥
तिनको सहज सुभाय, संतत[1] संत कृपालुचित ॥

संत मण्डलीको शिर नाऊं । जिनकी कृपा विमल मति पाऊं॥
जिनकी कृपा विघ्न सबनाशै । जिनकी कृपा कृष्ण गुणभाशै ॥
जिनकी प्रेम भक्ति फल पाई । जिनकी कृपा कुमति मिटिजाई ॥
जिनकी कृपा होंय गुणनाना । जिनकी कृपा सर्व कल्याना ॥
जिनकी कृपा मोहतम[2] नाशै । जिनकी कृपा ज्ञान परकाशै ॥
जिनकी कृपा सकल सुखमूला । होहु सो सन्त मोहिं अनुकूला ॥
जय जय जयश्रीकुंज बिहारी । नँदनंदन वृषभानु दुलारी ॥
मंगल मूरति आनँद कारी । लीला ललित भक्त भयहारी ॥
रूपनिधान प्रेम की रासी । श्रीवृन्दावन धाम निवासी ॥
अखिल नाम गुण सुखके धामा । पूरण काम श्याम अरु श्यामा ॥
युगल किशोर ध्यान उर धरिकै । सुभग कमल पद वन्दन करिकै ॥
ब्रजविलास रस परम हुलासा । गावतहै ब्रजबासी दासा ॥

अथ कथाप्रसङ्गवर्णनम् ॥

दोहा–तत्त्व नाम पद परम गुरु, पुरुषोत्तम जगदीश ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद,सकल देव मणि शीश॥
सो०–वन्दौं नन्दकिशोर, वृन्दावनवासी सदा ॥
श्रीराधा चितचोर, आनँद घन भवभयहरण ॥

१ निरंतर । २ मोहरूपीअंधकार ।

कहौं कथा सुन्दर सुखदेनी। अघहरणी वैकुण्ठ निशेनी ॥
कृष्णचरण पंकज रति देनी। जन पावन करती जिमि वेनी ॥
श्रीकलिन्दतनया[3] तट पावन। बसत मधुपुरी परम सुहावन ॥
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं। तीनिलोक पर वेद बतावैं ॥
दरशन ते नर पावन होई। कृष्ण कृपा बिन सुलभ न सोई ॥
उग्रसेन तहँ बसै नरेशा[4]। नीतिनिपुण सह धर्म सुवेशा ॥
ताको सुवन कंस अतिपापी। असुर बुद्धि भो विश्व संतापी ॥
कियो तात गहि बन्दीशाला। आपन भयो कंस भूपाला ॥
तासु अनुज तहँ देवक नामा। सुता + तासु देवकी ललामा ॥
दई कंस वसुदेवहि ताही। लोक वेदकी रीति विवाही ॥
दायज दियो अनेक विधाना। हय गज रथ पट भूषण नाना ॥
दासी दास बहुत सँग दीनो। दान मान परिपूरण कीनो ॥

दोहा–तब चढ़ाइ रथ देवकी, आप भयो रथवान ॥
पहुँचावन अति हेतुसों, चल्यो सहित अभिमान ॥
सो०–तेहि क्षण गिरा विशाल, होत भई आकाशते ॥
होय कंस को काल, देवकिके सुत आठवें ॥

कंसासुर सुनि वचन अकाशा। भयो चकित मन मिट्यो हुलाशा ॥
शत्रु समान देवकी मानी। रथते उतरि पर्‍यो अभिमानी ॥
खड्ग निकासि हाथमें लीन्हों। यह विचार अपने मन कीन्हों ॥
अब हौं याहि मारि दुख मेटों। पुनि कलेश काहेको भेटों ॥
केश पकरि देवकि गहि लीन्ही। नहिं कछु कानि बहिनकी कीन्ही ॥
तब वसुदेव दीन है कहहीं। तिय वध नहीं भूप यश लहहीं ॥
बहुरो यह पुनि स्वसा तिहारी। राजन कीजै काज विचारी ॥
सुन वसुदेव भई नभ बानी। तुमहुं सुनी कछु नाहिं छिपानी ॥
ताते उग्र शोच किन करिये। पाछे काहेको दुख भरिये ॥
वृक्ष फलै जो विषफल आगे। ताहि बनै पहिलेही त्यागे ॥

१पाप। २त्रिवेणी। ३यमुना। ४राज। ५पुत्र। ६पिता। ७कैदखाना। ८पिताको छोटोभाई। + पुत्री (बेटी)। ९ आकाशवाणी। १० तरवार। ११ बहिन।

जो नहिं हतौं आज यह बाला । मिटै न उरसों शोच विशाला ॥
कन्या और व्याहि तोहिं देहौं । याहि मारि उर शोच नशैहौं ॥

दोहा–मुनिजन गुरुजन संगजे, तिन्हहि कह्यो तिहिकाल॥
वृथा होत है यज्ञफल, यह न उचित महिपाल ॥

सो०–यहै तुम्हारे मान, आनकदुन्दुभि देवकी ॥
इन्हैं न हतिये जान, वेद विरोध न कीजिये ॥

पुनि वसुदेव कह्यो करजोरी । राजन्[1] सुनिय विनय कछु मोरी ॥
वृथा, देवकीको जनि मारो । याको सुतहै शत्रु तुम्हारो ॥
सब सुत याके हमसों लीजै । जीवदान याको प्रभु दीजै ॥
यह वाचा हम तुमसों भाखैं । चन्द्र सूर साखी दै राखैं ॥
भली बात यह सब दिन जानी । भावी[2] विवश कंसहू मानी ॥
हरि कीनो चाहैं सो होई । ताहि मिटावन हार न कोई ॥
तिन्हैं सहित नृप घर फिरि आये । करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकि जायो । लै वसुदेव कंस पहँ आयो ॥
बालक देखि कंस हँसि दीनो । इन तौ कछु अपराध न कीनो ॥
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो । सो दीजो तुम मोहिं सबेरो ॥
यह कहि अपनो पाप क्षमायो । तब वसुदेव हर्षको पायो ॥
ऐसे बाल फेरि जब दीनो । तब वसुदेव गमन हँस कीनो ॥

दोहा–तब ऋषि नारद कंस पहँ, लिये हस्त[3]तल वीण ॥
गुण गावत गोविन्दके, आये परम प्रवीण ॥

सो०–उठ्यो देखिकै कंस, शीशनाइ पद वन्दिकै ॥
बैठाये परशंस, शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु है आये । सो सब ऋषिको कंस सुनाये ॥
सुनि नृप वचन विहँसि ऋषि बोले । तुम कत रहत शत्रुसों भोले॥
जाके भय तुम अति भय मानो । अठवौं कौन सु तुम कछु जानो ॥

---

१ हेराजन् । २ होनहार । ३ कर ।

जो वह प्रथमहि आयो होई । दैवचरित्र जान कछु कोई ॥
आठलकीर खैंचि दिखराई । गिनतीमें सब आठौं आई ॥
यह समझाय गये ऋषि ज्ञानी । कंसासुर उर अति भयमानी ॥
तेहि क्षण बालक फेरि मँगायो । लै वसुदेव तुरतही आयो ॥
लियो मूढ़गहि करमे ताही । पटकत भयो शिलापर वाही ॥
याही विधि षट् बालक मारे । मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी । तुम बिन कासों करहिं पुकारी ॥
यह सन्ताप मिटै कब भारी । बेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी ॥
केहि विधि नाथ राखिये प्राना । करत कंस निरवंश निदाना ॥

दोहा–विपति विनाशन दुख दमन, जन रंजन सुरराय ॥
अब हमको कोऊ नहीं, तुम बिन और सहाय ॥

सो०–विनती प्रभुहि सुनाय, मनमहँ दम्पति दुखित अति ॥
होत न प्रकट जनाय, कंस असुरके त्रासते ॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी । बढ्यो पाप असुरनको भारी ॥
सहि न सकी तब गोतनुधारी । शिव बिरंचि पै जाय पुकारी ॥
सकल सुरनमिलि कियो विचारा । हमते नहिं उतरै भुविभारा ॥
विनय करिय चलि श्रीपति पाहीं । कृपा करैं तब सब दुख जाहीं ॥
भूमि सहित सुर सकल सिधारे । क्षीर सिंधु तट जाइ पुकारे ॥
जहँ श्रीपति श्रीसहित निवासी । पुरुषोत्तम अविगति अविनासी ॥
धेनु अग्र करि विनय सुनाई । जय जय जय त्रिभुवनके साईं ॥
जय सुखकन्द संत हितकारी । जय जगवन्द्य भूमि भयहारी ॥
जय जय असुर समूहनिकन्दन । जय जय भक्तनके उर चंदन ॥
जय जय जय प्रणतारतमोचन । दैत्य दलन सुर शोच विमोचन ॥
जय जय जय प्रभु अंतर्य्यामी । सुनिय विनय सचराचर स्वामी ॥
करिये प्रभु सो वेग उपाई । हरिये नाथ भूमि गरुवाई ॥

दोहा–धरिय मनुजतनु दनुजहति, करियधरणि उद्धार ॥

१ हाथमें । २ छःबालक । ३ पृथ्वी । ४ ब्रह्मा । ५ भगवान् । ६ पृथ्वी ।
७ बोझ । ८ मनुष्यदेह ।

परशत पदपंकज मिटहिं, सकल भूमि अघ भार॥
सो०–पाहि पाहि भगवंत, शरणागत वत्सल हरे ॥
क्षमा करहु अब कंत, दीन दुखित जन जानि हरि ॥
दीन वचन जब धेनु पुकारी। भई गिरा[1]नभ मंगलकारी ॥
जाहु सकल सुर[2] घर भय त्यागी। धरिहौं नरतनु तुम हित लागी ॥
प्रथम जन्म देवकि वसुदेवा। मोसन माँगलियो करि सेवा ॥
तुमसम पुत्र हमारे होई। मैं तिनको वर दीनो सोई ॥
तैसे नन्द यशोदा जानौ। दूध पियावन उनहिन मानौ ॥
गर्भ देवकीके अवतरिहौं। बालचरित गोकुलमें करिहौं ॥
तुमहूं गोप वेष ब्रज होऊ। मम सँग सुख पावो सब कोऊ ॥
यह कहि सुरनबिदा हरि कीन्हो। आयसु योग[3] शक्ति कहँ दीन्हों ॥
सप्तम गर्भ देवकी केरा। तहां शेष मम अंश बसेरा ॥
सो आर्कर्षण[4]कै क्षण माहीं। राखो गर्भ रोहिणी पाहीं ॥
शक्ति जबहि हरि आयसु पायो। तत्क्षण ताहि वहीं पहुँचायो ॥
हरि चरित्र कछु जान न कोई। जो कछु करन चहैं सो होई ॥
दोहा–तब कृपालु जनके सुखद, अविगति कमलाकन्त ॥
निज आगम देवकि उदर, दिय जनाय भगवन्त ॥
सो०–तनु द्युति बढ़ी अपार, परम प्रकाशित भवन सब॥
आनन मुकुर[5] निहार, अति प्रसन्न मन देवकी ॥
निजमुख मुकुर देवकी देख्यो। शरद चन्द्र पूरण सम लेख्यो ॥
मिट्यो तिमिर[6] भ्रम अति सुखपायो। जान्यो कंस कालि हरि आयो ॥
प्रभु आगमन जानकर देवा। आये सकल जनावन सेवा ॥
नभते[7] गर्भ स्तुति सब करहीं। जय जय जय जय जय उच्चरहीं ॥
जय ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई। जय वेदान्त वेद सुरसाई ॥
जय तीरथ पद भवनिधि बोहित। प्रणतपाल जय दीननके हित ॥

१ आकाशवाणी। २ देवताओंको। ३ योगमाया। ४ खींचकर। ५ दर्पण। ६ अंधकार-भ्रम। ७ आकाशमें ठाढ़ेहैकर।

जय संकल्प सत्य गुणधामा । जय मन वांछित पूरण कामा ॥
जय गो द्विजहित नरतनु धारी । जय सन्तन पतिगति अपहारी ॥
जय कृपालु आनन्द वरूथा । वन्दत चरण सकल सुर यूथा ॥
जय पुरुषारथ अमित अनूपा । महापुरुष सचराचर भूपा ॥
जय अहीश नित नव गुण गावैं । तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं ॥
जो मुनिजन मन ध्यान न आवैं । भक्ताधीन वेद यश गावैं ॥

दोहा—अलख अरूप अनीह अज, प्रभु अद्वैत अनादि ॥
गर्भवास सो देवकी, कौतुकनिधि सर्वादि ॥

सो०—किनहुँ न पायो भेव, शेष महेश गणेश विधि ॥
नमो नमो तिहि देव, परम विचित्र चरित्र शुभ ॥

करि विनती सुरसदन सिधारे । परमानंद मगन मन भारे ॥
तब देवकिपति पास बखाने । कोमल वचन प्रेमते साने ॥
हो पिय सो उपाय कछु कीजै । अबकै यह बालक रखलीजै ॥
बुधि बल छल पिय कीजै सोई । जामें कुलको नाश न होई ॥
मैं मन वच अबकै यह जाना । है मम उदर देव भगवाना ॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं । कौन भांति यह गर्भ दुराऊं ॥
सत्य धर्म बरु जाय तौ जाऊ । पति यहि सुतहित करिय उपाऊ ॥
कर्म धर्म सब हारि हित भाखैं । सो हरितजि कहुँ धर्महिं राखैं ॥
सुनहु पिया अस को हितकारी । जो यह बालक लेहि उबारी ॥
शिर ऊपर बैठे रखवारे । पाँयन पड़े निगड़ अति भारे ॥
कंस असुर अपवंश विनाशन । केहि विधिसों उबरे तियतासन ॥
ऐसो को समरथ जग पाई । जो इहि अवसर होय सहाई ॥

दो०—षट् बालक वध सुरतिकरि, दम्पति दुखित विचार ॥
अति आकुल भय कंसके, दृगन चली बहि धार ॥

सो०—करुणासिन्धु दयाल, तात मात अति दुखितलखि ॥
प्रगट भये तिहि काल, दुखमोचन लोचन सुखद ॥

१ समूह । २ शेष । ३ अपनेस्थानको । ४ बेड़ी । ५ नेत्रनते । ६ नाशकरता ।

योग शक्ति हरि आयसु पाई । प्रगटी नन्द भवन सो जाई ॥
ताके प्रकटतही नरनारी । भये नींदवश देह विसारी ॥
भादों कारी निशि अति पावन । आठैं बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिललोकपति जन सुखदायक । आये जन्म लियो सुरनायक ॥
शशिमुकुट कल कुण्डल कानन । शरदमयंक[1] सरस शुभ आनन ॥
चारु[2] चरण पंकजदल[3] लोचन । चितवन सुखद तापत्रय मोचन ॥
कुटिल अलक भ्रूमेचकताई[4] । जन मन हरण परम सुखदाई ॥
पीतवसनतनु श्यामतमाला । उरश्रीवत्स चारु मणिमाला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी । शंख चक्र गद अम्बुज[5] धारी ॥
अंग अंग सब भूषण नीके । परम विचित्र भावतेजीके ॥
चरण सरोज उदित नख जोती । कमल दलन राखे जनु मोती ॥
परम प्रताप शुभग शिशु वेषा । अद्भुत रूप देवकी देखा ॥

दो०—देखि अमितछबि चकितभति, पति ढिगलिये बुलाय ॥
दम्पति परमानन्द मन, परे हर्ष सुत पाय ॥

सो०—भरे प्रेम जल नयन, अति सनेह आकुल शिथिल ॥
बोलें गद्गद बैन, जोरि पाणि[6] विनती करत ॥

प्रभु किहि विधि तुम गुणन बखानो । तुम मायावश तुमहि न जानो ॥
सहसानन[7] जाके गुण गावैं । नेति नेति जेहि निगम[8] बतावैं ॥
जाकी भ्रूविलास अनयासा । अखिललोक उपजै अरुनासा ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं । कृपा करहु तब दरशन पावैं ॥
जो सबतेपर अज अविनाशी । सो किमि कहिय उदर मम वासी ॥
परम विचित्र चरित्र तुम्हारे । मोहतहैं प्रभु मनहिं हमारे ॥
तात मातके वचन सुहाये । सने प्रेम वश प्रभु मन भाये ॥
बोले तात मात सुखदानी । मधुर मनोहर अद्भुतबानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं । प्रथम जन्मकी कथा बताऊं ॥
तुम यांच्यो मोहिं कर तप भारे । तुम समान सुत होय हमारे ॥

१ शरदकाचंद्र । २ श्रेष्ठ । ३ कमल । ४ श्यामताई । ५ कमल । ६ हाथ । ७ शेष । ८ वेद ।

जन हित विरद मोर श्रुति गायो। सो कैसे करि जात लजायो ॥
ताते मैं वर तुमको दीन्हों। सो हम आय सत्य अब कीन्हों ॥
दो०-शिव ब्रह्मा सनकादिमुनि, ध्यानसकत नहिंपाय ॥
सो मैं तुम्हरे प्रेम वश, दियो दरश निज आय ॥
सो०-कौतुकनिधि सुरराय, करत चरित मुनि मनहरण ॥
महा मोह उरझाय, दियो बहुरि पितु मात मन ॥
करहु तात अब वेग उपाई। हमहिं कंस ते लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई। तहां यशोदा कन्या जाई ॥
मोहिं राखि कै यशुदा पासा। कन्या लै आवहु अनयासा ॥
सो कन्या लै कंसहि दीजै। तात हमारो नाम न लीजै ॥
ऐसहि मात पिता समुझाई। भये तुरत शिशु[1] यदुकुलराई ॥
देखि चरित सुनि प्रभुकी बाता। विस्मय हर्ष विवश पितुमाता ॥
सुतउठाय उरसों लपटायो। प्रेम विवश लोचन जल छायो ॥
कहति देवकी पति सुनि लीजै। गमन वेग गोकुलको कीजै ॥
जबलगि सुनहि न वह हत्यारो। मन वच क्रम नृप को न पत्यारो ॥
बनै नाथ उर धीरजधारे। नाहिन इतने भाग्य हमारे ॥
जो यह सुख नयनन पुट पीजै। ऐसे सुतको यश सुनि लीजै ॥
दरशन सुखित दुखित महतारी। शोचत विकल कंस भयभारी ॥
दो०-अति अँधियारी अर्द्ध निशि[2], भट घेरे चहुँओर ॥
कौन भाँति जैहैं दई, पाँय निगँड[3] अति घोर ॥
सो०-बरषत अति जल जोर, घन गरजत चमकत चपल ॥
बीच यमुन अति घोर, पार कवन विधि पाइ हैं ॥
कहा करौं अब काहि पुकारौं। कौन भांति धीरज उर धारौं ॥
कंस सरोष तबहिं किन मारी। विनती करि पति वृथा उबारी ॥
ऐसो सुत बिछुरत महतारी। कौन भांति जीवै दुखभारी ।
कृपा समुद्र भक्त सुखदानी। सुनत मातुकी आरतबानी ॥

१ बालक। २ आधीरात। ३ बेड़ी।

कृपाकरी सब भ्रम भय टारे। गिरे निगड पाँयनते भारे ॥
तब वसुदेव हर्ष तिहि ठाहीं। लक्ष धेनु मनसी मन माहीं ॥
पुत्र गोदलै तुरत सिधाये। द्वार कपाट[1] खुले सबपाये ॥
रखवारे सब सोवत देखे। सपदि[2] चले उर हर्ष विशेखे ॥
तबहीं मघवा[3] वृष्टि[4] निवारी। मन्द समीर[5] भई श्रमहारी ॥
हरिमुख चन्द्रप्रभा तम नाशै। क्षण क्षण तडित[6] पंथ[7] परकाशै ॥
प्रभु पर शेष छांह फनछाई। आगे सिंह दहाड़त जाई ॥
सो वसुदेव न जानत भेवा। पहुँचे जाय यमुनतट देवा ॥

दो०—सरित[8] देखि गम्भीर अति, मनमें शोच विचार ॥
गोकुलके सम्मुख धँस्यो, प्रभु प्रताप उरधार ॥

सो०—यमुनापति पहिचानि, मन अनंद हुलस्यो हियो ॥
परसन हित पदपानि, अति प्रवाह ऊंचो उठयो ॥

गुल्फ[9] जंघ[10] कटि[11]लों जल आयो। तब हरिको कछु ऊर्ध्व[12] उठायो ॥
ज्यों ज्यों वसुदेव सुतहि उठावै। त्यों त्यों जल ऊपरको आवै ॥
नाक प्रयन्त नीर जब आयो। तब हरिपद अधको[13] लटकायो ॥
परशि नीर हुंकारहि दीनो। तुरतहिं भयो गुल्फते हीनो ॥
भयो पार, लैकै घनश्याम[14]हि। गये वसुदेव नन्दके धामहि ॥
तहां सकल जन सोवत पाये। सुत लै यशुमति पास सिधाये ॥
कन्या तहां पुनीत निहारी। लई उठाय राखि दैत्यारी ॥
फिरि फिरि सुतको वदन निहारी। चले तुरत भय कंस विचारी ॥
जो सम्पति निगमागम[15] गाई। योगी जनन जानि नहिं पाई ॥
सनकादिक सरवस विधि[16] प्राना। शंकर जासु धरतहैं ध्याना ॥
शारद नारदादि यश गावैं। सहस[17] बदनहू पार न पावैं ॥
अहो विलोकहु भाग्य बड़ाई। सोई सोवत यशुमति माई ॥

दोहा—वहां देवकी प्रेम वश, अति व्याकुल अकुलात ॥

---

१ किवाँर। २ जलदी। ३ इन्द्र। ४ वर्षा। ५ पवन। ६ वीजुरी। ७ मारग। ८ यमुना। ९ टिहुना। १० पींडरी। ११ कमर। १२ ऊपर। १३ नीचेको। १४ भगवान्। १५ वेद-पुराण। १६ ब्रह्मा। १७ शेष।

बालक अरु वसुदेव कहँ, पठै बहुत पछितात ॥
सो०—बैठत उठत अधीर, व्याकुल सोई सेजपर ॥
पोंछत नयनन नीर, बोलि सकत नहिं कंस भय॥
मनमन सुर¹ मनाय सनमानै । मत यह भेद दई कोउ जानै ॥
रखवारे कहुँ जान न जाहीं । मत कोउ दुष्ट मिलै मग माहीं ॥
याते अधिक शोच मोहिं भारी । क्यों दुरिहै शशिमुख² उजियारी ॥
मग महँ यमुना अति गम्भीरा । केहि विधि पहुँचैंगे वहितीरा ॥
गोकुल पहुँचे धौं मग माहीं । भई बेर पति आयो नाहीं ॥
यहि विधि शोच विवश अकुलाई । इकक्षण कल्प समान बिहाई ॥
पहुँचे वसुदेव तिहि क्षण जाई । बूझत उठी पुत्र कुशलाई ॥
केहि विधि पुत्र राखि पति आये । समाचार वसुदेव सुनाये ॥
कन्या दई देवकी जबहीं । द्वार कपाट³ गये लगि तबहीं ॥
बेड़ी ह्वैगई पग ततकाला । कन्यारोय उठी तिहि काला ॥
चहुं दिशि जागि परे रखवारे । तुरत कंस पहँ जाय पुकारे ॥
सुनतहि उठि अति आतुर धायो । लीन्हें खड्ग⁴ तहां चलि आयो ॥
दोहा—कन्या लै तब देवकी, आगे राखी आय ॥
दीन वचन आधीनह्वै, कंसहि कही सुनाय ॥
सो०—अहो भ्रात यह दान, तुम हम कहँ अब दीजिये ॥
है कन्या जिय जान, याते भय तुमको नहीं ॥
सुनत कंस भगिनी⁵ की बानी । मृत्यु त्रासते शठ रिसमानी ॥
यामें कछू होय छल कोई । कोजानै विधना⁶गति गोई ॥
यह विचार कन्या गहिलीनी । पटकनकी मनसा तिहि कीनी ॥
करते छूटिगई आकाशा । दिव्यरूप तहँ कियो प्रकाशा ॥
बोलति भई गगन⁷ते बानी । अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ॥
ममहत्या तैं लई वृथाहीं । तेरो रिपु⁸ प्रगट्यो ब्रजमाहीं ॥

१ अपनेइष्टदेवको मनाय । २ कृष्णकोचंद्रसमानमुख । ३ किवाँर । ४ तरवार । ५ बहिन । ६ विधाता । ७ आकाश । ८ वैरी ।

सर्प ग्रसित जिमि दादुर[1] होई । माखी खान चहत शठ सोई ॥
तैसे तू चह मारन मोहीं । आयो काल निकट शठ तोहीं ॥
ऐसे कहिकै स्वर्ग सिधारी । कंसहि शोच भयो सुनि भारी ॥
पर्‍यो देवकी चरणनमाहीं । मैं मारे तुवपुत्र वृथाहीं ॥
क्षमा करौ मेरे अपराधा । है विधिकी गति अलख अगाधा ॥
वसुदेवहुसन क्षमा कराई । निगडदिये[2] पगते कटवाई ॥

दोहा–गयो शोच व्याकुल सदन[3],परयो सेजपर जाय ॥
जागतही बीती निशा[4], नींदपरी नहिं ताय ॥

सो०–हरिके चरित अनूप, असुर विमोहन सुर सुखद ॥
नर न परत भवकूप, सहज प्रेम गावहिं सुनहिं ॥

यशुदा जब सोवतते जागी । सुत मुख देखतही अनुरागी ॥
पुलक अंग उर आनँद भारी । देखि रही मुखशशि[5] उजियारी ॥
गद्गद कण्ठ न कछु कहि आयो । हर्षवन्त ह्वै नन्द बुलायो ॥
आवहु कन्त पुत्र मुख देखो । बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो ॥
भये प्रसन्न आजु सब देवा । सफल भई सबहिनकी सेवा ॥
सुनत नन्द प्रिय तिय[6]की बानी । प्रेम मग्न तनुदशा भुलानी ॥
हर्षित ह्वै उठि आतुर धायो । यशुमति सुतको वदन दिखायो ॥
देखत मुख उर सुख भयो जैसो । कहि न सकहि श्रुति शारद[7] तैसो ॥
कहा कहौं तिहि क्षणकी शोभा । मनहुं महा छबितरुके गोभा ॥
आनँद मगन नन्द मनमाहीं । जानत नहिं हमको केहि ठाहीं ॥
रोय उठे तब नन्दके लाला । जागि परे सब ग्वालिन ग्वाला ॥
जित तितते हर्षित[8] उठ धाये । मनहुं रंक[9] धन लूटन आये ॥

दोहा–देहिं बधाई नन्दको, परैं यशोदा पाव ॥
कहैं पियारे लालको, नेक हमहिं दिखराव ॥

सो०–अति हर्षित नँदराय, कह्यो बजावनसोहिलो[10] ॥

१ मेढक । २ वेड़ी । ३ घर । ४ रात्रि । ५ मुखचंद्र । ६ यशोदाकी । ७ सरस्वती । ८ प्रसन्न । ९ दरिद्री । १० जन्मबधाई ।

नारि उठीं सब गाय, लाग्यो बजन बधावनो ॥
छं०–सुरसिद्धमुनिन्दापरम अनन्दासुनिगोकुलहरि आये ॥
दुन्दुभी¹ बजावत मंगल गावत तियनं² सहित उठि धाये ॥
विद्याधर किन्नर सुघर कण्ठवर करत गान सचुपाये ॥
गरजत तिहिकाला मधुररसाला धनगति जनन जनाये ॥
बाजत करताला बरषन माला सुरतरुसुमन³ सुहाये ॥
सब करैं किलोलैं हर्षित बोलैं जय जय जय सुखपाये ॥
नभ महँ ध्वनि होई सुन सब कोई भये सबन मन भाये ॥
संतन हितकारी असुर सँहारी आवत क्षितिसुखछाये⁴ ॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता ॥
गुणिगण सब गावैं प्रभुहि सुनावैं आनँद उर न समाता ॥
भएमन चीते सब भय बीते प्रगटे दनुजनिपाता⁵ ॥
अतिमनमें हर्षे पुनि पुनि वर्षे सुमनं⁶ जो सुरतरुं⁷ जाता ॥
सुरतिय⁸मनमाहीं निरखि सिहाहीं यशुमतिके बड़ भागा ॥
इनसमहमनाहीं पुण्यनमाहीं कहैं सहित अनुरागा ॥
योगी जेहि ध्यावैं ध्यान न पावैं करि करि योग विरागा ॥
जो वेद न जानै नेति बखानै सो सुतह्वै उरलागा ॥
दोहा–भरे परम आनन्द सुर, उपजावत अनुराग ॥
बार बार वर्णन करैं, नन्द यशोमति भाग ॥
सो०–रहे सदन⁹ सुर भूल, गोकुलको उत्सव निरखि ॥
जन्मे मंगल मूल, ब्रजवासी हर्षित सबै ॥

ब्रजवासिन सबहिन सुनि पायो। नन्दमहरघर ढोटा जायो ॥
परमानन्द लोग सब धाये। नन्दराय तब विप्र बुलाये ॥
काढ़ि लग्न ग्रह योग सुधायो। अति विचित्र सब द्विजन सुनायो॥

१ नगारे-धौंसा। २ देवांगनासहित। ३ कल्पवृक्षकेपुष्प। ४ पृथ्वीमें। ५ दैत्यकेमारनवारे। ६ पुष्प। ७ कल्पवृक्ष। ८ देवांगना। ९ स्वर्गमें-घर।

करत वेद ध्वनि अति सुखपाई। देहिं नन्दको सकल बधाई॥
तब स्नान महरि उठि कीन्हो। भाल तिलक चन्दन लैलीन्हो॥
जाति कर्म करि पितर पुजाये। भूषण वसन द्विजन पहिराये॥
गैया लक्ष[2] सवत्ससुहाई[3]। बाढी दूध नवीन मँगाई॥
सब विधि सकल अलंकृत[4]कीनी। करि संकल्प द्विजनको[5] दीनी॥
मुदित विप्र सब देइँ अशीसा। चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा॥
हँसि हँसि बहुरि महरि नँदराई। हितकुटुम्ब सब निकट बुलाई॥
बहु सुगंधि मथि तिलक बनाये। भूषण वसन विविध पहिराये॥
हुते जु कुलमें वृद्ध[6] जिठेरे। हित सों पाँय परे सब केरे॥

दोहा—बंदी[7] मागधं[8] सूत[9] गण, भरे भवन बहु आय॥
लैलैनाम बुलाय सब, परि[10]तोषे नँदराय॥
सो०—मन वांछित सबलेहिं, जो जाके भावै मनहिं॥
नन्द भरे रस देहिं, किये अयाँचीयाचकानि[11]॥

सुनि सुनि धाई ब्रजकी नारी। लेकर कमलन कंचन[12] थारी॥
मंगल साज साज सब लीन्हें। सहजश्रृंगार सुभगतनु कीन्हें॥
चारु[13] चीर[14]तनु दृग[15] कजरारे। भाल[16] तिलक कुच शिथिल सँवारे॥
मांग सिंदूर तरौना कानन। रोरी रंग किये कछु आनन॥
अँगिया अंगकसे छबिछाजै। विविध भांति उर हार बिराजै॥
अति आनन्द मगन मनफूलीं। अंचल उडत सँभारन भूलीं॥
निज निज मेल मिलीं सब गावैं। विहरत नन्द धामको आवैं॥
इक भीतर इक आंगन माहीं। इक द्वारे मग[17] पावत नाहीं॥
सबको यशुमति निकट बुलावैं। मुख उघार सुत[18]को दिखरावैं॥
देहिं अशीश परो शिशुपायन। जीवहु जबलग नभ[19] तारागन॥
पूरण काम भयो ब्रजसारो। धन्य यशोदा भाग्य तिहारो॥

१ नांदीश्राद्धकरा। २ एकलाख। ३ बछरासहित। ४ शृंगारी। ५ ब्राह्मणनको। ६ बूढेबड़े। ७ जोप्रसंगके अनुसारबोलैं। ८ भाट। ९ पौराणिक। १० प्रसन्नकरे। ११ भिखारीन्कोधनाढ्यकरिदिये। १२ सुवर्णकी। १३ उत्तम। १४ वस्त्र। १५ नेत्र। १६ मस्तक। १७ मार्ग। १८ कृष्णको। १९ आकाश।

धन्यसो कोखि जहां सुत राख्यो । पुण्य तिहारो जात न भाख्यो ॥

दोहा-धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथिवार ॥
जहँ जायो ऐसो सुवन[1], थिरथाप्यो परिवार ॥

सो०-पुनि पुनि शीश नवाय, देहिं अशीश मनाय सुर ॥
जियहु सुवन नँदराय, रूप अचल कुलकी थुनी ॥

परमानंद नंद अनुरागे । चित्र विचित्र वस्त्र बहु मांगे ॥
सारी सुरँग कसबके लहँगे । अति चटकीले मोल न महँगे ॥
सिगरी वधू बोल पहिराई । जो जैसी जाके मनभाई ॥
देहिं अशीश मुदित ब्रजनारी । फूलीं कमल कलीसी न्यारी ॥
एक रहसि[2] निज निज गृह जाहीं । इक हुलसी आवैं गृह माहीं ॥
एक कहैं एकनसों धाई । हौं यह बात भली सुनि आई ॥
म्हारे यशोदा ढोटा जायो । नंदद्वार सखि बजत बधायो ॥
चलो वेग सखि देखिये सोई । विधना चाहतहीहै जोई ॥
इक नाचैं इक ढोल बजावैं । एक नन्दको गारीगावैं ॥
एक साथिये द्वार बनावैं । एकै वंदनवार बँधावैं ॥
ध्वज पताक तोरण छविछाई । घर घर होत अनंद बधाई ॥
पुनि पुनि सुमन[3] देव वर्षावैं । फूलनसों सब गोकुल छावैं ॥

दोहा-ध्वज पताक तोरण कलश, बंदनवार दुवार ॥
गोपनके घर घर बँधे, तोरन मंगलचार ॥

सो०-नंदसदन[4]सविचार, वरणिसकै सो कौन कवि ॥
लियो जहाँ अवतार, छविसागर त्रिभुवन धनी ॥

ग्वाल वृंद सब सुनि उठि धाये । बाल वृंद सब निकट बुलाये ॥
घसि बन धातु[5] चित्र सब कीन्हे । गुंजा भूषित भूषण लीन्हें ॥
यद्यपि अरु भूषण तनु माहीं । तद्यपि अहिरन गुंज सुहाहीं ॥
एक कहैं एकन समुझाई । आज वनहिं कोऊ नहिं जाई ॥
गैरा लेपन[6] सहित बनावो । चित्र विचित्र वेगि लै आवो ॥

१ पुत्र । २ प्रसन्नहै । ३ पुष्प । ४ नंदकेघरको । ५ खरिया । ६ मनासिलपेवरीआदि ।

पूत नन्दके घर है जायो । भयो सबनके मनको भायो ॥
कितनो गहर करत बिन काजा । वेगि चलो सब सहित समाजा ॥
दधि माखनके माट भराये । कछु इक हरदी रंग मिलाये ॥
लिये शीशपर केतिक गावें । केतिक ताल मृदंग बजावें ॥
मिल मिल निज निज यूथन माहीं । नंद सदन निरखत सब जाहीं ॥
देखि नन्द अति आनँद पावें । हँसि हँसि सबको निकट बुलावें ॥
छुइ छुइ चरण भेंट धरिआगे । देहिं बधाई अति अनुरागे ॥

दोहा–नाचत गावत मगन मन, भई सदन अति भीर ॥
मनु आये उत्साह सब, धरि धरि गोप शरीर ॥

सो०–देहधरे+आनन्द, मनहुँ नंद तिन मधि लसैं ॥
जन्मे आनँदकन्द, कहि न सकहिं सुखसहसमुख ॥

इक नाचत इक गावत ठाढे । इक कूदत अति आनँद बाढे ॥
छिरकत एक दूध दधि डोलैं । एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचो नंद घर दधिको कांदौं । बरसत दूध दही जनु भादौं ॥
एक धाय एकन पै जाहीं । एकै मिलत डारि गलबाहीं ॥
एक एकके पायँन परहीं । इकदधि दूर्वाक्षत शिरधरहीं ॥
अति उछाह सबके मन माहीं । राजा राव गनत कछु नाहीं ॥
गोकुल मध्य देखिये जितहीं । करत गोप कौतूहल तितहीं ॥
एकै लूटि नंदको लेहीं । एकै एकनको धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद बुलावैं । पट भूषण तिनको पहिरावैं ॥
एक कहैं हम तब कछु लेहैं । जब लालन मुख देखनदेहैं ॥
एक जो एकन ते कछु लेहीं । ते निशंक एकन को देहीं ॥
अति आनंद मगन पशुपालक । नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक ॥

दोहा–गोकुलको आनंद सब, कापै वर्ण्यो जाय ॥
जहां परम आनंद मय, लियो जन्म हरि आय ॥

---

१ अबेर । २ घर । ३ कीच । ४ चावल । ५ ग्वारिया । ६ ज्वान । ७ बूढे ।
+ मानो यावत् गोपहैं सोई उत्साहरूपहै और नंदराय नहीं हैं मानो देहधारणकरे मूर्तिमान उनमें उत्साहहै ।

सो०-नितनव होत विलास, हरि मुकुंदके जन्मते ॥
ब्रज संपदा सुपास, सुर[1] भूलहिं कौतुक निरखि ॥
जबते जन्म लियो हरि आई । सुख संपति ब्रज घर घर छाई ॥
सब उदार सब परमप्रवीना । सब सुंदर सब रोग विहीना ॥
मुदित जहाँ तहँ सब ब्रजवासी । सब यशुमतिसुत प्रेम उपासी ॥
नंद सदन वर्ण्यो किमिजाही । शतसुरेशलखि[2] विभ्रमजाही ॥
अति प्रकाश मन्दिरके माहीं । फैलिरही हरि छबि की छाहीं ॥
ग्वाल गाय गोपन की भीरा । कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ क्षीरा ॥
भूमि बाग बन गिरि[3] रमणीया । खग मृग[4] सर[5] सरिता[6] कमनीया ॥
विटपवेलि सब सहित फूल फल। दिशा प्रकाशित निर्मल जल थल ॥
सुरभी सुर सुरभी सम तूला । भयो सकल ब्रज मंगल मूला ॥
विभव भेद यह कोउ न जाने । आदिहिंते हम ऐसे माने ॥
कृष्णजन्म आनंद बधाई । सुर पुर नाग तिहूं पुर भाई ॥
ब्रज वासिन गण अधिक उछाहू ।कहि नहिं सकहिं सहससुख काहू॥
दोहा-ब्रजको सुख को कहिसकै, सुखमा बढ़ी अपार ॥
सुखनिधान भगवान जहँ, लियो मनुज अवतार॥
सो०-प्रकटे गोकुलचंद, संत कुमुद वन मोदकर ॥
तम कुल असुर निकंद, ब्रज जन चारु चकोरहित॥
नित नव भीर नंदके द्वारे । याचक जन सब होंय सुखारे ॥
गाँव गाँवते सुनि सुनि आवैं । मन भायो सब कोऊ पावैं ॥
पाँचदिवस इहिविधि सुख पायो। छठयों दिवश छठीको आयो ॥
मन्दिर सकल सुवास लिपायो । जहाँ तहाँ चित्रित करवायो ॥
वीथी चारु सुगंधि सिंचाई । द्वारन वंदनवार बँधाई ॥
जानि कुटुम्ब मित्र हित जेते । नंदराय न्योते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई । भोजन कहँ आये सब कोई ॥

---

१ देवता । २ सौइन्द्र । ३ पर्वत । ४ पखेरू । ५ सरोवर । ६ नदी ।
७ सुंदर । ८ वृक्ष । ९ रोहिणिआदि करे रसोई ।

गोप वधू सब बनि बनि आवैं । लालन को पहिरावन ल्यावैं ॥
जरिकस कुरता भूषण टोपी । रत्न समेत प्रेम रँग ओपी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई । धरि धरि कंचन थारिन लाई ॥
गावहिं मंगल कोकिल बानी । नंद भवन आवहिं हर्षानी ॥
करि आदर यशुदा बैठावैं । देखि श्याम घन सब सुखपावैं ॥

दोहा—वृषभानादिक गोपवर, ब्रजवासी समुदाय ॥
आये सब नंदराय गृह, भूषण वसन बनाय ॥

सो०—अति आदर करि नंद, शुभ आसन दीने सबन ॥
सबके मन आनंद, बजत दुंदुभी नचतनट ॥

कहूं ग्वाल गावतहैं हेरी । कहूं खिलावत गाय घनेरी ॥
वंश प्रशंसा भाट सुनावैं । कितहूं ढाढी ढाढिनि गावैं ॥
देहिं गोपगण तिनको दाना । भूषण वसन धेनु मणि नाना ॥
परजा सकल खिलौना ल्यावैं । अति अद्भुत कापै कहि आवैं ॥
धरहिं नंदके आगे आनी । राखहिं सब अतिशय सुखमानी ॥
तिनहीं देहिं निछावरि हरिकी । कोमल श्यामल सुन्दर बरकी ॥
विश्वकर्मा पलना गढ़िलायो । रत्नजटित शुभरंग सुहायो ॥
लालन हितसों नंद रखायो । विश्वकर्मा सब वांछित पायो ॥
ऐसे दिवस यामयुग आयो । तब सब गोपन नंद जिमायो ॥
छिरकि सुगंध पान कर दीन्हों । तब सब गोपन भोजन कीन्हों ॥
मंगलमय[1] रजनी जब आई । गाय उठीं सब नारि सुहाई ॥

अथ कुरता टोपी वर्णनम् ॥

दोहा—कुरता टोपी पीतरँग, लालनको पहिराय ॥
लै उछंग[2] पूजन छठी, बैठीं हर्षित माय ॥

सो०—करि कुलको व्यवहार, करी आरती श्यामकी ॥
करति निछावरि नार, तन मन धन शशिमुख[3] निरखि ॥

नेग जोग सब नेगिन पायो । दियो सबनि यशुदा मन भायो ॥

१ मंगलकी रात्रि । २ गोद । ३ चंद्रमुख ।

प्रातहि उठि लालन अन्हवायो । सुदिन शोधि पलना पहुड़ायो ॥
निरखि निरखि यशुदा बलिजाई । अरुण चरण कर कोमलताई ॥
ब्रजवासी जीवन नँदलाला । मातु सुकृत फल मदन गोपाला ॥
नितनव मंगल होहिं सुहाये । मंगलनिधि जवते हरि आये ॥
नंद + सुकृत वर्षाऋतु सोई । यशुमति सुकृत अकाश बनोई ॥
तहँ घनश्याम श्याम तनु उनये । मंदहँसनि दामिनिद्युति जुनये ॥
गर्जन मंद मधुर किलकारी । ब्रजजन मोरन आनँद कारी ॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा । परम प्रीति मन परम हुलासा ॥
पलना पचरँग मणि छबिछाई । इन्द्र धनुष उपमा तिनपाई ॥
गज मुक्तनकी लर लटकाई । सोइ मानों बगपांति सुहाई ॥
ब्रज घर घर सुख संपति छाई । सोई मनहुँ भूमि हरिआई ॥

दोहा—वर्षत परमानंद जल, नंद सदन जगमाहिं ॥
ध्यान भूमि दृग सरित मग जनउर सिंधुसमाहिं॥

सो०—पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशि वासर भरत ॥
बढ़त लहरि पुलकाहिं, हरि मुख शशिराका निरखि॥

कंसहि वहां नींद निशि नाहीं । अति चिंता व्याकुल मन माहीं ॥
बैठ्यो निकासि सभा उठिप्राता । मंत्री बोलि कहहि सब बाता ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं । कौन भांति पहिंचानों ताहीं ॥
जाते जाय वेगि वह मारो । ऐसो तुम कछु मंत्र विचारो ॥
दिन दिन बड़ो होय अवसोई । कोजानै फिरि कैसी होई ॥
बोल्यो एक असुर सुनु राजा । क्यों डरपत इतनेके काजा ॥
मोपै एक मंत्र सुनिलीजै । धर्म काज कछु होन न दीजै ॥
जप तप होम होन नहिं पावैं । विप्रन साधुन असुर सतावैं ॥
जो यह देव होयगो कोऊ । सहिनहिं सकै प्रकट ह्वै सोऊ ॥
तब तेहिं असुर जाय संहारै । याविधि शत्रु तुम्हारो मारै ॥

+ या चौपाईमें नंदराय और वर्षाकी ऐक्यताकरिके दिखाई है जैसे नंदको सुकृत सोई वर्षाऋतु और यशुदाको सुकृत आकाश तामें श्यामसुंदर सांवरी घटा उठी तामें कृष्णकी मंदहँसन सोई बीजुरी किलकारीरूप गरजन ब्रजवासी-रूप मोर आदि जानने ।

बोलो एक बात यह नीकी। औरो सुनौ हमारे जीकी ॥
देश देशको असुर पठावो। बालक मासकके जे पावो ॥
दोहा-तिन सबहिनको वधकरैं, वचन न पावै कोय ॥
इनहीं में वह होयगो, मान्यो जैहै सोय ॥
सो०-कह्यो कंस हर्षाय, कहे मंत्र दोऊ भले ॥
पठवहु असुर निकाय², जायकरै कारजसँभारि ॥
याविधि असुर विदा बहु कीन्हों। बाल वधनकी आयसु दीन्हों ॥
कह्यो जाय ब्रज वेगहि कोई। तहँके बालक मारै सोई ॥
कह्यो पूतना आयसुपाऊं। तो यह कारज मैं करिल्याऊं ॥
सकल घोर्षे शिशु जाय नशाऊं। जोकहिये तौ जीवत ल्याऊं ॥
क्षणमें रूप मोहिनी धारौं। वशीकरण पढ़ि सब परडारौं ॥
घिसि कंकोल उरोजन लाऊं। ब्रजबासिनके बाल पियाऊं ॥
तौ पूतना नाम कहवाऊं। जो नृपको कारज करि आऊं ॥
तुरत कंस तेहि आयसु दीन्हों। सुनतहि वचन गमन तिन कीन्हों ॥
तादिन नंद मधुपुरी आयो। राज अंश कछु नृप कहँ ल्यायो ॥
नृप दरबार ताहि पहुँचायो। समाचार वसुदेवको पायो ॥
छोड़ि बंदितें नृपने राखे। हते मित्र सुनिके अभिलाखे ॥
मिलनगये तिनको नँदराई। उठि वसुदेव मिले हर्षाई ॥
दोहा-कुशल पूंछि करि परस्पर, बारम्बारसप्रीति ॥
बैठारे नंदराय ढिग, करिकै आदर रीति ॥
सो०-तब बोले नँदराय, सुनिय दैव भावी प्रबल ॥
तासों कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाके विवश ॥
तुम अति कष्ट कंसते पायो। सुनि सुनि भयो बहुत पछतायो ॥
आजु देखिकै चरण तिहारे। भये हमारे नैन सुखारे ॥
तब वसुदेव कही मृदुवानी। अहो नन्द तुम सत्यबखानी ॥

१ महीनाभरके। २ समूह। ३ मारनकी। ४ व्रजकेबालक। ५ आज्ञा। ६ मथुरा। ७ राजाको कर। ८ कैदखानेते।

कर्मरेख नहिं जात मिटाई। विधि की गति कछु जात न पाई ॥
सुन्यो नंद सुत भयो तुम्हारे। तब ते अति सुख भयो हमारे ॥
तुमको जरा आय नियराई। बड़ी बैस विधि भयो सहाई ॥
तब नँद हलधर जन्म सुनायो। प्रथमहिं तिन्हैं रोहिणी जायो ॥
तिनको उत्सव प्रगट न कीनों। कंस त्रास अपने उरलीनों ॥
सुनि वसुदेव बहुत सुख पायो। तब ऐसे कहि वचन सुनायो ॥
सुनहु नंद तुम नीके जानौ। कंस नृपति कृत नाहिं छिपानौ ॥
ताते अब वे दोऊ बालक। अपने मानि करौ प्रतिपालक ॥
अब तुम वेगि गोकुलहि जाहू। बालक हित पतियाहु न काहू ॥

अथ पूतनावधलीला ॥

दोहा–जित तित भेजे कंसके, करत असुर अनरीति ॥
प्रजा लोगके बालकन, ताते है अति भीति ॥
सो०–गई पूतना आज, ब्रजके बालक घातिनी ॥
करि है कछू अकाज, वेग धाम सुधि लीजिये ॥

सुनि वसुदेव वचन नँदराई। भये बिदा तुरतै भय पाई ॥
निकसत शकुन अशुभ मग पायो। ताते अधिक शोच उर छायो ॥
क्षिप्र चले कछु सुधि तनु नाहीं। बालककी चिन्ता मनमाहीं ॥
इहां पूतना ब्रजमें आई। रूप मोहनी प्रगट बनाई ॥
गरेल बांटि कुच सों लपटायो। ऊपर शुभग शृँगार बनायो ॥
अतिही कपट छबीली सोहै। जो देखै ताको मन मोहै ॥
इत उतह्वै नँद धामहिं आई। देखि रूप यशुदा मन भाई ॥
देखि रही सुख सुन्दरताई। कै यह नर कै सुरकी जाई ॥
काकी वधू कौनकी बेटी। अबलौं ब्रजमें कबहुँ न भेटी ॥
बिन पहिचाने आदर कीन्हो। बैठनको शुभ आसन दीन्हो ॥
अहो महरि पालागन मेरो। हौं आई सुत देखन तेरो ॥
हरिपलनापर मन मुसुकाई। यशुमति कछु गृहकाज सिधाई ॥

१ विधाता। २ बुढापा। ३ नगीच। ४ उमर। ५ श्रीबलदेवजीको। ६ भय। ७ घरकी। ८ जल्दी। ९ जहर। १० देवताकी बेटीहै।

दोहा–तबहिं राक्षसी दुष्टमति, पलनाके ढिग जाय ॥
निरखि बदन मुख चूमिके, लीन्ह उछंग उठाय ॥

सो०–दियो कमल मुख माहिं, बिषलपट्यो अस्तन तुरत ॥
पकर दुहूं कर माहिं, लगे करन पयपान हरि ॥

पय सँग प्राण खिंचे जब वाके । ह्वै गये अंग शिथिल सब ताके ॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक । सो क्यों छुटै दुष्ट कुलघालक ॥
पय सँग प्राण खींचि हरि लीन्हा । पठै स्वर्ग जननी गति दीन्हा ॥
परी मृतक ह्वै असुर सुनारी । योजनलों निजतनु बिस्तारी ॥
यशुमति धाय देखि गुहरायो । पलना पर बालक नहिं पायो ॥
त्राहि त्राहि करि ब्रज जन धाये । व्याकुल विपुल नन्द गृह आये ॥
अति व्याकुल यशुमति महतारी । ढूंढहिं श्यामहि रोवत भारी ॥
हरि ताकी छाती लपटाने । करत चरित जो अचरजसाने ॥
ढूंढत ढूंढत उर पर पाये । लै उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई । जिमि मणि गई भुवंगन पाई ॥
सुखित भई सब ब्रजकी बाला । कहति बच्यो अति नँदको लाला ॥
नन्द यशोमति भाग्य बड़ेरी । सुतकी करवर टरी कॅरेरी ॥

दोहा–आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुमारि ॥
कपट हेतु नहिं सहिसक्यो, तेहि मार्‍यो करतारि ॥

सो०–कहत यशोमति माय, पुनि पुनि सबके पांयपरि ॥
उबर्‍यो आजु कन्हाय, तुम पंचनके पुण्यते ॥

बड़ो कष्ट यह सुतने पायो । आजु विधाता बहुत बचायो ॥
कोउ कह भाग्यवन्त नँदराई । कुलके देवन करी सहाई ॥
कोउ कह नेक मोहिं सुत देरी । देखहुँ मुख मैं पुनि तू लेरी ॥
कोउ मुख चूमि बलैया लेई । लै उछंग पुनि यशुदहि देई ॥

---

१ गोद । २ आँचर । ३ दूध । ४ माता । ५ मरी । ६ चारकोशमें देह फैलायके । ७ सर्प । ८ भगवान् ।

बच्यो कान्ह सब ब्रज सुधिपाई । घर घर बजी अनंद बधाई ॥
तबहिं नंद गोकुलमें आयो । देखि पूतनहिं अति भय पायो ॥
जो वसुदेव कही ही बानी । सो सब मनमें सांची जानी ॥
तहँ सब ब्रजवासी जुरि आये । समाचार सब प्रकट सुनाये ॥
तब सुखपाय गये नँद धामहिं । देख्यो जाय सुवन घनश्यामहिं ॥
वदनविलोकि हर्षि उरलाये । बहुत दानदै देव मनाये ॥
तब ब्रजवासी सकल बुलाये । अंग पूतनाके कटवाये ॥
बाहर एक ठौर सब कीन्हें । अग्नि लगाय फूंकि सब दीन्हें ॥

दोहा–अति सुगंध ता अंगमें, कीन्ही अग्नि प्रकाश ॥
हरि स्पर्श प्रतापते, ब्रज सब भयो सुबाश ॥
सो०–रहे अचम्भो पाय, ब्रजवासी चकित सबै ॥
चरण कमल चित लाय, नंदसुवनमहिमा सुनत॥

हरि रोये माताकी कनियां । दूध पियायो तब नँदरनियां ॥
पुनि पलना पौढाय झुलावै । हुलरावै दुलराय मल्हावै ॥
लालनके हित नींद बुलावै । मधुरे सुर जोई सोइ गावै ॥
रेलालनको आव निदरिया । तोहिं बुलावत श्याम सुंदरिया ॥
जो करि कपट लालको आवै । तौ अबकीलौं विधि विनशावै ॥
अहो देवता या कुलकेरे । मैं पूजिहौं कमलपद तेरे ॥
वेगि बडो करदे यह बालक । ब्रज जन प्राण पूतना घालक ॥
दुतियाके शशि लौं शिशु बाढै । आँवा लौ अरि उर नितडाढै ॥
सोवै मेरो बाल कन्हाई । माता मुखकी बलि बलि जाई ॥
सोवत देखि मौन गहि रहई । जागत देखि बहुरि कछु कहई ॥
अँग फरकाय अलेप मुसुकाने । ता छबिकी उपमा को जाने ॥
बार बार शिशु वदन निहारैं । यशुमति अपनो भाग्य विचारैं ॥

दोहा–हुलरावत गावत मधुर, हरिके बाल विनोद ॥

---

१ श्यामसुंदरपुत्र । २ मुखदेख । ३ द्वितीयाकेचंद्रसमान । ४ बालक ।
५ मंदमुसकाए. ।

जो सुख सुर मुनिको अगम, सो सुखलेत यशोद॥
सो०–कबहूं लेत उछंग, उर लगाय चूमत मुखहिं ॥
निरखि मनोहर अंग, कबहुँ झुलावत पालने ॥
दर्शनको नित सुर मुनि आवैं । बाल विनोद निरखि सुख पावैं॥
कहैं परस्पर सुर नर नारी । हरिके अद्भुत चरित निहारी ॥
अलेख अगोचर अज अविनाशी । पुरुष पुरातन विश्व निवासी ॥
जाको भेद न शिव मुनि जानैं । ब्रह्मा पढि पढि वेद बखानैं ॥
सो हलरावत नँदकी घरणी । पूरण भई पुरातन करणी ॥
मन अभिलाष बढावत भारी । हुलसत हँसत देत किलकारी ॥
वर्षि प्रसून हर्षि मनमाहीं । धन्य २ कहि ब्रज घर जाहीं ॥
नित नव कौतुक होहिं अकासा । ब्रजवासिनमन अमित हुलासा ॥
यशुदा नवनित लाड लडावैं । निरखि २ ब्रज जन सुख पावैं ॥
नित नव मंगल नंदके धामा । नित नव रूप श्याम अभिरामा ॥
भक्तवछल भक्तन हितकारी । भक्तन हित नाना तनुधारी ॥
भजत संत यह हृदय विचारी । जन ब्रजवासी हैं बलिहारी ॥
दोहा–जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस ॥
प्रगट भयो ब्रज शत्रु मम, यह जानी निःशंस ॥
सो०–बसो तासु उरमाहिं, ताही क्षणते अचल हरि ॥
भूलत इक छिन नाहिं, शत्रु भाव लाग्यो भजन॥

अथ कागासुरवध लीला ॥

कागासुर नृप निकट बुलायो । ताहि मतो सब कहि समुझायो ॥
आवहु वेगि नंदसुत मारी । करियहु कारज बुद्धि विचारी ॥
आयसु धरि शिर गर्व बढ़ायो । काग रूप तिहि असुर बनायो ॥
वेगवन्त उठि गोकुल आयो । प्रेरितकाल अवधि नियरायो ॥
बैठ्यो नंद धामपर आई । पलना पौढे बाल कन्हाई ॥

१ जोदेखवेमेंनआवे । २ कहिवेमेंनआवे । ३ अजन्मा । ४ जाकोनाश न होय । ५ प्राचीनपुरुष । ६ विश्वमेंरहनेवारो । ७ फूल ।

ताको आवतही हरि जान्यो। कागन होय असुर पहिचान्यो ॥
यशुदा हरिको सोवत जानी। कछु गृह कारजमें लपटानी ॥
तबहिं असुर पलनापर आयो। चाहत हरिको चोंच चलायो ॥
कंठ पकरि हरि करसों लीन्हो। चोंच मरोरि फेंकि तिहिं दीन्हो ॥
पऱ्यो जाय नृपपास[1] उतान्यो। यह ब्रजवासी काहु न जान्यो ॥
तुरत कंस तिहि बूझन धायो। बीते याम[2] बोल तब आयो ॥
सुनहु कंस वह बाल न होई। है अवतार महाबल कोई ॥

दोहा–एक हाथसों पकरि मोहिं, फेंकि दियो तुम पास ॥
ह्वै है तुम्हरो काल वह, मैं कीन्हो विश्वास ॥

सो०–अति डरप्यो महिपाल[3], कागासुरके वचन सुनि ॥
बढ़िसो गयो विशाल, जम्यो जु उरमें शोच[4] तरु ॥

सभा मध्य सब असुर सुनाई। बार बार शिरधुनि पछिताई ॥
ब्रजमें उपज्यो मेरो काला। ताको अबहीं ते यह हाला ॥
दनुज सुता पूतना पठाई। ताको इकक्षण माँझ नशाई ॥
कागासुरके ऐसे हाला। सोतो दिन दिन होत विशाला ॥
है कोउ वीर जु ताहि नशावै। मम कारज करि आप बचावै ॥

अथ शकटासुरवध लीला ॥

ऐसो कौन कहां मैं जासों। अबकै जाय भिरै जो तासों ॥
असुरनको ये नृपति सुनायो। शकटासुर मन गर्वबढायो ॥
उठि कै पान नृपति सों मांगे। कहा काम यह मेरे आगे ॥
तव प्रताप तेहि पलमें मारौं। कहौ तौ सब ब्रजको संहारौं ॥
कंस हर्ष तेहि बीरा दीन्हो। शूर सराहि बिदा तेहि कीन्हो ॥
यहां श्याम पलना पर खेलैं। करगहि पद अँगुठा मुख मेलैं ॥
अपने मन यह करत विचारा। इह मम*पद संतन आधारा ॥

---

१ कंसकेपास। २ पहर। ३ कंसराज। ४ शोकरूपवृक्ष कागासुरकी वाणी सुनके अत्यंत बढगयो। + सब ऋषि मुनि शिव ब्रह्मादि अपने हृदयमें धारण-कर आनंदलेयहैं सो भगवानने विचारा कि, मैंहूंतो मुखमें लेकर देखों मेरेचरणमें ऐसो कहा बडोस्वादहै।

दोहा-ये पद पंकज राखि उर, निरखत शम्भु सुजान ॥
इनको रस मन मधुप करि, करत निरंतर पान ॥
सो०-पुनि इनपदको ध्यान, करत ब्रह्मसनकादिमुनि ॥
लक्ष्मी अति सुखमान, उरते क्षण टारत नहीं ॥

इन पदपंकज रस अनुरागा । मगन सकल सुर नर मुनि नागा ॥
ऐसोधौं का रस इन माहीं । सोतो मोहिं विदित कछु नाहीं ॥
मोको यह रस दुर्लभ भारी । देखौं धौं मैं ताहि विचारी ॥
ताते पद अँगुठा मुख मेलैं । लैलै स्वाद मगन रस खेलैं ॥
ताअन्तर शकटासुर आयो । पवनरूप काहु न लखि पायो ॥
भारे शकट[1] नन्द घर केरे । पलनाके ढिग हते घनेरे ॥
तिनमें सो शठ[2] आय समान्यो[3] । नन्दसुवन[4] तबहीं यह जान्यो ॥
ताको हरि इक लात चलाई । गिऱ्यो शकट तब अति हहराई ॥
दनुज निधन[5] काहू नहिं जान्यो । गिऱ्यो शकट यह सबहिन मान्यो ॥
सुनत शब्द सब व्याकुल धाये । नन्द आदि सब जुरि तहँ आये ॥
यशुमति दौरि श्यामको लयऊ । सबके मन अति विस्मय भयऊ ॥
कारण कहा कहैं नर नारी । गिऱ्यो शकट आपुहिते भारी ॥

दोहा-पलनाढिग खेलत हुते, कछुक गोपके बाल ॥
तिनन कह्यो डाऱ्यो शकट, पलनाते नँदलाल ॥
सो०-सोनहिं करी प्रतीति, काहू बालनकी कही ॥
यह तौ कछु विपरीति, भई कुशल अति श्यामकी ॥

यशुमति अति मन मन पछिताई । भये आज कुलदेव सहाई ॥
बार बार उरसों सुत लाई । निरखि नन्द पुनि पुनि बलि जाई ॥
मेरे निधनी के धन छैया । लगै मोहिं तेरि रोग बलैया ॥
ऐसे बहु विधि लाड लडाये । पय[6] पियाय पलना पौढाये ॥
मन्द मन्द करठोंकि सुनावैं । कछु इक मधुर मधुर सुर गावैं ॥

१ छकडा । २ दुष्ट । ३ छिपगयो । ४ कृष्ण । ५ शकटासुरदैत्यकोमरण । ६ दूध ।

सोवत श्याम शुभग सुंदर वर। चौंकि चौंकि शिशु दशा प्रगटकर।
लिये मातु छतियां लपटाई। जनु फणि मणि उर माँझ दुराई ॥
मात निरखि सुख आनँद कीनो। चूमि वदन सुत को पय दीनो ॥
कोमल धाम अजिर जब आयो। तब सुत पलना पर पौढायो ॥
आप मथन दधि भवन सिधारी। नंदहि सुतके ढिग बैठारी ॥
निरखि नन्द सुत आनँद भारी। कमल वदन छबि रहे निहारी ॥
चुटकी दैदै सुतहिं खिलावैं। निरखि निरखि मुख अति सुखपावैं

दोहा–किलकिउठेलखितात मुख, करपदहग अतुराय ॥
झपट झटकि उलटे परे, सुखनिधि त्रिभुवनराय ॥
सो०–सो छबि कहिय न जाय, निरखि नन्द टेरत महरि ॥
आप न सकत उठाय, अति कोमल मम सकुचमन॥

नंदहि टेरत सुनि नँदरानी। तजी तुरत दधि मथन मथानी ॥
जाने महरि गिरे सुखदाई। ताते अति आतुर उठिधाई ॥
नंदहि देखि हँसतिहैं पासा। तब धीरज धरि कियो हुलासा ॥
उलटि पऱ्यो सुत देख्यों आई। उठि न सकत करसेजलगाई ॥
सोछबि निरखि मातु सुखपायो। तुरत मुदित उलटाय उठायो ॥
उर लगाय मुख चुम्बन लागी। कहत आज मैं भई सभागी ॥
पेटकँरियन हरि उलटन लागे। डेढ मासके भये सभागे ॥
चिरजीवहु मम कुँवर कन्हाई। आज करों मैं अनँद बधाई ॥
नँदरानी ब्रज नारि बुलाई। यह सुनि सब आनँद कर धाई ॥
हरिको निरखि परम सुख पायो। हरषित सबहिन मंगल गायो ॥
बाँटी घर घर पान मिठाई। नन्दसुवन ब्रजजन सुखदाई ॥
धनि धनि ब्रजकी बालसभागी। हरिके बालचरित अनुरागी ॥

दोहा–जननी अति आनँद भरी, निरखत श्यामलगात॥
जैसे निधनी पाय धन, मुदित रहत दिन रात॥

---

१ श्रेष्ठ। २ बालचरित्र। ३ सर्पकीमणि। ४ आंगन। ५ हाथ पाँय आँख। ६ पेटकेबल। ७ दरिद्री।

सो०–धनि धनि ब्रजकोवास, धन्य यशोदा धन्यनँद ॥
धनि ब्रजवासी दास, जिनको मन यारस मगन ॥

अथ तृणावर्त्तवधलीला ॥

धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई । बाल चरित लीला सुखदाई ॥
यशुदा भाग्य न जात बखाने । त्रिभुवन पतिको सुतकर माने ॥
हरिको गोदलिये पय[1]प्यावै । विविध भांति करि लाड़ लड़ावै ॥
कबहूं हरि मुखसों मुखलावै । कबहूं हर्षित कंठ लगावै ॥
मोनिधनीको धन सुतनान्हा । खेलत हँसत रहौ नित कान्हा ॥
कबधौं मधुर वचन कछु कैहैं । कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं ॥
कब नन्दहि कहि बाबा बोलैं । खेलत इत उत आँगन डोलैं ॥
कबधौं तनक तनक कछुखैहैं । अपने करले मुख मैं नैहैं ॥
कब विधि[2] यह अभिलाष पुरावै । मनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
किलकत हरि जननीकी कनियां । करत चरित्र मातुसुख दनियां ॥
तृणावर्त्त हरि आवत जाना । पठयो कंस सहित अभिमाना ॥
भयो गरुव[3] जननी भरपायो । सहि न सकी तब भुव बैठायो ॥

दोहा–आपलगी गृहकाज कछु, राखि आजिर[4] गोपाल ॥
अति प्रचंड बौंडर उठ्यो, गोकुलपुर तिहकाल ॥
सो०–बातचक्र[5]मिस आय, तृणावर्त्त पापी असुर ॥
हरिको लियो उठाय, अन्धधुंध गोकुल कियो ॥

हरिको लैकै गयो अकाशा । धूरि धुन्ध गोकुल चहुँपासा ॥
जहां तहां नर नारि छिपाने । प्रलय काल सम करि सब माने ॥
यशुमति दौरि अजिरमें आई । तहाँ न पायो कुँवर कन्हाई ॥
नन्द नन्द करि शोर लगायो । तेरो सुत अँधवायु उड़ायो ॥
दौरो वेगि गुहार लगावो । ब्रजबासिनको टेरि बुलावो ॥
अति व्याकुल खोजत नँदरानी । जित तित फिरत भुवन बिलखानी ॥

---

१ दूध । २ विधाता । ३ भारी । ४ आँगन । ५ भभूरेकेरूप ।

तृणावर्त्तको हरि यों कीन्हो । ग्रीव लिपट तिहि नीचे लीन्हो ॥
कठिन शिला पर ताहि गिरायो । ताके ऊपर आपुन आयो ॥
चूर चूर करि ताके गाता । कीन्हे भुक्ति मुक्तिके दाता ॥
धूरि धुन्ध सब तुरत विनाशी । खोजत हरिहिं विकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवनितन उपवनमें पाये । लिये उठाय कण्ठ लपटाये ॥
अलि आतुर यशुमति पै लाई । ह्वैगइ घर घर अनँद बधाई ॥

दोहा–लिये धायकै मायने, छतियां रही लगाय ॥
नन्द निरखि सुख पायके, मनसी बहुतिक गाय ॥
सो०–बार बार ब्रजनारि, देहिं बसन भूषण मगन ॥
जित तित कहैं विचारि, नयो जन्म हरिको भयो ॥

उबरे श्याम महरि बड़भागी । देखहु धौं कहु चोट न लागी ॥
रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हाई । हरिहैं ब्रजके जीवन माई ॥
भली न प्रकृति यशोदा तेरी । इकलो हरिको छांड़त हेरी ॥
घरको काज इतहुँ ते प्यारो । बौरी अजहूं सुरति सँभारो ॥
बहुत बच्योरी आज कन्हाई । भयो पुरबलो पुण्य सहाई ॥
यशुमति सब सों कहत लजानी । अब मैं सीख तिहारी मानी ॥
मोहिं कहा हो यह सुखमाई । मैं तो रंक परी निधिपाई ॥
अब मैं अपनो लालचितैहों । एकौ क्षण काहू न पत्यैहों ॥
ऐसे कहि सब सों नँदरानी । कीन्ही बिदा सकल सन्मानी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै । देखि देखि सुख नयन सिरावै ॥
अति कोमल श्यामल तनु देखी । बार बार पछितात विशेषी ॥
कैसे बच्यो जाउँ बलिहारी । तृणावर्तकी घात निवारी ॥

दोहा–नाजानी किहि पुण्यते, को करिलेत सहाय ॥
कियो काम सब पूतना, तृणावर्त्त यह आय ॥
सो०–मातु दुखित जियजानि, कृपासिन्धु वत्सलभगत ॥
बालचरित सुखदानि, करन लगे सुन्दर परम ॥

१ दानकरी । २ बावरी । ३ दरिद्री ।

खेलत मातु उछंग कन्हाई । करत बाललीला सुखदाई ॥
जननी बेसर लटकत देखी । चितवततांहि बिसारि निमेषी ॥
ताहि गहनको पाणि चलायो । तब जननी कछु वदन उचायो ॥
नहिं पहुँचे तब अति उकताई । सो छबि निरखि मातु बलि जाई ॥
जननी वदन निकट करि लीन्हों । तब हरि हुलसि किलकि हँसि दीन्हों
बिहँसत चमकि परीं दुइदतियाँ । जनु युग बिज्जु बीजकी पतियाँ ॥
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली । प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली ॥
बाहरते तब नंद बुलाये । परमानन्द सहित उठि धाये ॥
हो पति सफल करो दृग आई । देखहु सुत मुख दतुलि सुहाई ॥
हर्षित हरिहिं गोद नँद लीन्हो । निरखि तात मुख हरि हँसि दीन्हो ॥
देखत वदन नयन सियराने । दूध दांत किधौं छबिके दाने ॥
अहो महरि बड़ भाग्य तुम्हारे । सफल फले मनकाज हमारे ॥

दोहा—कछु दिन घट षट[३] मासके, भये श्याम सुखदान ॥
अन्न पराशनके दिवस, बूझहु विप्र बिहान ॥
सो०—सुनि पुलके नँदराय, भये पराशन योग हरि ॥
प्रेमरह्यो उरछाय, सो सुख कापै जाय कहि ॥

अथ अन्नप्राशनलीला ॥

प्रातकाल उठि विप्र बुलायो । राशि बूझि शुभ दिवस धरायो ॥
यशुमति सो दिन आछो पायो । सखिन बोलि शुभगान करायो ॥
युवतिमहरिको गारी गावैं । और महरको नाम सुनावैं ॥
मणि कंचनकी थार मँगायो । भांति भांतिके बासन आयो ॥
नन्दघरनि ब्रजवधू बुलाई । जे सब अपनी जाति सुहाई ॥
कोउ जिवनार कोऊपकवाना । षट्रसके बहु करत विधाना ॥
बहु प्रकारके व्यंजन ठाने । जिनके स्वाद न जायँ बखाने ॥
अति उज्ज्वल कोमल शुभनीके । कियो विविध विधि मनहुँ अमीके ॥

---

१ हाथ । २ नेत्र । ३ छःमहीना । ४ नँदराय । ५ मीठे-खारे-चरपरेआदि ।
६ अमृतके ।

यशुमति नन्दहिबोलि कह्यो तब । बोलो महर जाति अपनी सब ॥
आय गये नँद सकल महर घर । ल्याये बोलि सबन आदरकर ॥
बैठारे सब आनि अथाई । भीतर गये आप नँदराई ॥
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये । सुन्दरपट भूषण पहिराये ॥

दोहा–तनु झँगुली शिर चौतनी, कर चूरा दुहुँ पाँय ॥
बार बार मुख निरखिकै, यशुमतिलेतिबलाय ॥

सो०–लै बैठे नँदराय, जानि शुभघरी गोद हरि ॥
लीने सदन बुलाय, गोप सकल आनँद भरे ॥

बैठे सकल गोपगण[1] आई । अति आनन्द मगन नँदराई ॥
कनकथार[2] भरि खीर धराई । मिश्री घृत मधु[3] डारि मिलाई ॥
लगेनन्द हरि मुख जुठरावन । गोप वधू लागीं सब गावन ॥
आंगन बाजी विविध बधाई । शंख निशान भेरि सहनाई ॥
षड्रसके व्यंजनहैं जेते । हरिके अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये । हरिको यशुमति पै पहुँचाये ॥
हर्षवन्त युवती सचुपायो । लैलै मुख चुंबति उरलायो ॥
विप्रन बोलि दक्षिणा दीन्ही । नाना वस्तु निछौंवरि कीन्ही ॥
गोपन संग महरि नँदराई । बैठे पनवारे पर जाई ॥
अति रुचि सबहिन भोजन कीनो । बीरा बहुरि सबनको दीनो ॥
गोपवधू सब महरि जिमाई । दैकै पान सुगंधि सिँचाई ॥
इहि विधि सुख बिलसैं ब्रजबासी । निरखैं श्याम शुभग शुभराशी ॥

दोहा–सुर सिहाहिं ललचाहिं मुनि, लखि ब्रजजनके भाग ॥
धन्य धन्य कहि सुमनझरि, करहिं सहित अनुराग ॥

सो०–नितनव मंगलचार, नितनवलीला श्यामकी ॥
को कवि वरणै पार, शेष न पावैं पार जिहिं ॥

नेति[4] नेति जिनको श्रुति गावैं । तिनको ब्रज जन गोद खिलावैं ॥
जो सुख नंद भवनके माहीं । तीनि लोक महँ सो कहुँ नाहीं ॥

१ गोपसमुदाय । २ सोनेकोथार । ३ सहत । ४ वेद ।

नित्य नयो सुख यशुमति पावैं। नये नये नित लाड़ लड़ावैं॥
नयन ओट हरि करत न कैसे[१]। जुगवत रहै फणिकमणि[२] जैसे॥
निंदति निमिषै[३] होत पल ओटा। निरखतही सुखपावति ढोटा॥
तनक कपोल अधर अरुणारे। तनक तनक कचैं घूंघर वारे॥
कुटिल भ्रुकुटि की रेख सुहाई। मसिबिन्दुक[५] तापर सुखदाई॥
नयन नासिका भाल विशाला। कलबल बोलन परमरसाला॥
अल्प[६] दशन चिबुं[७] कंदर ग्रीवा। तनुघन श्याम मृदुल छबि सींवा॥
मातु निरखि नयनन सुखपावैं। प्रेम विवश मति गति बिसरावैं॥
निरखिरूप यशुमति अनुरागै। कहत कहूं मम दीठि[८] न लागै॥
तब अँचरातर लेत छिपाई। डारत बार लोन अरु राई॥

दोहा–कबहुँ झुलावति पालने, कबहुँ खिलावति गोद॥
कबहुँ सुवावति पलँगपर, यशुदासहित विनोद॥
सो०–नित प्रति ब्रजकी बाम, आवें यशुमतिके सदन॥
मुदित निरखि घनश्याम, लैलै गोद खिलावहीं॥

इहि विधि विहरत बाल कन्हाई। कछु दिनमें संतन सुखदाई॥
लागे चलन घुटुरुवनि आँगन। लगे मातु सों माखन माँगन॥
खेलत मणिमय आँगन माहीं। देखि रहत लखि निज परछाहीं॥
कबहुँ तात कहि पकरन धावैं। जानु[९] पाँणि[१०] विचरत छवि पावैं॥
कबहूं किलकि तात मुख पेखें। कबहूं हँसि जननी तन देखैं॥
कबहुँ बुलाय लेत नँदराई। कबहुँ जननि ढिग आवत धाई॥
कबहूँ किलकि अनत उठि भाजैं। गिरत परत घुटुवन छबि छाजैं॥
कबहुँ कि जात जहाँ बलभाई। खेलत गोप बाल समुदाई॥
कबहुँ कहत कछु खंडित बाता। सुनत होत सुख पूरण गाता॥
कहन चहत कछु प्रगट न आवै। माखन माँगत सैन बतावै॥
मात समझ मथनीते लेई। कछु खवाय कछु कर[११] धर देई॥

---

१ देखतरहै। २ सर्पमणिको। ३ निमिराजाको। ४ बार। ५ श्यामबिंदु। ६ छोटेछोटेदांत। ७ ठोडी। ८ नजर। ९ घोटू। १०-११ हाथ।

खेलत खात कान्ह मणि अँगना । इत उत करत घुटुरुवन रिंगना ॥
दोहा–करचूरा पगपैंजनी, तनु रंजित रजपीत ॥
उर हरि नख कटि किंकिणी, मुखमंडित नव[३]नीत॥
सो०–होत चकित चितवाय, बजत पैंजनी शब्दसुनि॥
सुर मुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि॥
खेलत आँगन बाल गोविन्दा । तात मात उर करत अनन्दा ॥
चलत पाणि पदकी परछाहीं । प्रति[४] बिम्बत मणि आँगन माहीं ॥
मनहुँ शुभग छबि महितटपाई । जल भाजन जल लेत भराई ॥
किधौं जानि पद कोमलतासन । धरि धरि देत कमलके आसन ॥
निरखि शुभग शोभा सुखदनियाँ। लिये हरषि सादर नँदकनियाँ ॥
नील[५]जलजतनु सुन्दरश्यामा । शुभग अंग सब छबिके धामा ॥
अरुण तरुण नख ज्योति सुहाई । कोमल कमल चरण सुखदाई ॥
रुनु झुनु पैंजनि पाँयन बाजैं । मनसि[६]जयंत्र सुनत सुरलाजैं ॥
कटि किंकिणी जटित खनकारी । पीत झँगुलिया सुभग सवाँरी ॥
कर कमलनि चूरा छबिछाजै । रुचिर बाहु भूषण अतिराजै ॥
कठुला हार जो अंग सुहाए । बिच बिच पदिक प्रबाल पुहाए ॥
चारु चिबुक द्युति वरणि न जाई । गोलकपोल परम छबि छाई ॥
दो०–अरुँण अधरमधिदशन द्युति, प्रकट हँसनमें होति ॥
मानहु सुन्दरता सदनं[१०], रूप रत्नकी ज्योति ॥
सो०–मधुर तोतरे बैन, श्रवण सुखद मुनि मन हरण॥
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं॥
नाशा सुभग कमल दल लोचन । भाल[११] विशाल तिलक गोरोचन ॥
भ्रुकुटि निकट मे[१२] सिबिन्दुकलाग्यो।मनो अ[१३]लि शावकसोयन जाग्यो
लाल चौतनी शीश सुहाई । विविध रंग मणि गण लटकाई ॥
बाल दशाके के[१४]चघुंघरारे । छिटकिरहे कछु घूमघुमारे ॥

१ बधनखा (वाघके नख) २ कमरमे कोंधनी । ३ माखन । ४ देखत । ५ नीलकमल । ६ कामदेवकेयंत्र । ७ लाल । ८ होठ । ९ दांत । १० सुंदरता-कोघर । ११मस्तक । १२श्यामबिंदु । १३भौंराको बाल । १४ लटुरियां (जुल्फ)

मंजुल तारन की चपलाई । बाल दशा की ललित सुहाई ॥
चन्द्रबदनसुख सदन कन्हाई । निरखिनन्द आनँद अधिकाई ॥
वदन चूमि उर सों लपटायो । सोसुख कापै जात बतायो ॥
ब्रज युवती सब चितवत ठाढ़ीं । मनहुँ चित्र पुतरी लिखि काढ़ीं ॥
प्रेम मगन नँद सुवन निहारैं । गृह कारजकी सुरति बिसारैं ॥
ब्रज युवती हरि सों मन लावैं । नन्द सुवन सबके मन भावैं ॥
ब्रजवासी प्रभु सबके नायक । प्रेम विवश जनके सुखदायक ॥
बाल चरित लखि सुर सुख पावैं । योग दशा सनकादि भुलावैं ॥

दोहा–करत बाललीला ललित, परमपुनीत उदार ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तनके आधार ॥
सो०–कापै बरण्यो जाय, बालचरित नँदलालको ॥
कल्पन सकहिं न गाय, शेषकोटि शारद सहस ॥

अथ नामकरण लीला ॥

इकदिन श्रीवसुदेव विज्ञानी । पठये बोलि गर्गमुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधिवत बैठायो । युग पद कमल शीशतवनायो ॥
बहुरि कह्यो सुनिये ऋषिराई । जबते भयो कंस दुखदाई ॥
तबते गोकुल नन्द अवासा । जाय रोहिणी कियो निवासा ॥
जाके गर्भ जन्म सुतलीन्हों । कंस त्रासते प्रगट न कीन्हों ॥
नाम करण ताको अबताई । भयो नाहिं तुम बिना गुसाई ॥
करिकै कृपा तहां प्रभु जइये । ताको नाम राखिकै अइये ॥
सुनि वसुदेव वचन सुखपायो । हर्ष सहित मुनि गोकुल आयो ॥
नन्दराय ऋषि आगम जान्यो । अपनो बड़ो भाग्य करि मान्यो ॥
चरण धोय चरणोदक लीन्हों । अर्घासन अतिहित करि दीन्हों ॥
बड़ी कृपा कीन्ही ऋषिराजू । मोसम धन्य आन नहिं आजू ॥
अति पुनीत भोजन बनवायो । विविध भाँति ऋषिराय जिमायो ॥

दोहा–बहुरि महरि ऋषि रायसों, कह्यो जोरि कर दोय॥

१ दोनोंचरणोंमें । २ नंदरायकेघरमें । ३ गर्गाचार्यको । ४ पवित्र । ५ दोनोंहाथ ।

किहि कारज प्रभु आगमन, कहौ कृपा करि सोय ॥
सो०—तब बोले ऋषिराज, पठयेहै वसुदेव मोहिं ॥
नामकरणके काज, सुभग रोहिणी सुवनको॥
सुनत नन्द अति भये सुखारे। लै आये कनियां दोउ वारे ॥
मुनि चरणनमेले दोउ भाई । दई अशीस मुदित ऋषिराई ॥
हरिकी छबि अति आनँदकारी। देखि रहे मुनि पलक बिसारी ॥
प्रथम नन्द बलहाथ दिखायो। जन्म दिवस मुनि पास सुनायो ॥
देखि गर्ग उठि कियो विचारा। है यह शिशु सब जगत अधारा ॥
अतिशुभ लक्षण बलको धामा। धन्यो नाम तिनको बलरामा ॥
बहुरि नन्द चरणन शिरनायो। कह्योकि ऋषि मम भागन आयो ॥
तुम सर्वज्ञ अहो मुनिनाथा। देखिये यह बालकको हाथा ॥
मुनिवर देखत चिह्न भुलान्यो। प्रेममगन सब तनुपुलकान्यो ॥
पुनि पुनि हरिको बदन निहारी। बोल्यो मुनिवर सुरत सँभारी ॥
धन्य नन्द धनि महरि यशोदा। धनि धनि धन्य खिलावत गोदा ॥
सुनहु नन्द मैं सत्य बखानों। इनको तुम सुत करि मतजानों ॥
दोहा—रूपरेख जाके नहीं, अलख अनादि अनूप ॥
सोभक्तनहित अवतर्यो, निज इच्छा अनुरूप ॥
सोरठा—इनते बड़ो न कोय, येकर्ता सब जगतके ॥
जोये करैं सो होय, तुम सों हम सांची कहैं ॥
इनके नाम अमितें जगमाहीं। तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं ॥
इन कबहूं वसुदेवके धामा। लियो जन्म सुन्दर वर श्यामा ॥
ताते वासुदेव इक नामा। सो सुमिरत पावहिं नर कामा ॥
कहिहैं कृष्ण बहुरि जगमाहीं। जाके सुमिरत पाप नशाहीं ॥
अरु ये जैसे कर्मनि करिहैं। तैसे नाम जगत विस्तरिहैं ॥
दुष्ट दलन सन्तन सुखदाई। भूमिभार हरिहैं दोउ भाई ॥

१ रोहिणीकेपुत्रको। २ दाऊजीको। ३ बालक। ४ कृष्णको। ५ अनेक।
६ दुष्टनकोमारनवारो।

तुम कबहूं तपकरि यह माँगा । तुमहिं खिलावैं अति अनुरागा ॥
ताते सुत करि तुम इनपायो । मतजानौ इनको निज जायो ॥
ये अति सुखदायक ब्रजकेरे । करिहैं अति आनन्द घनेरे ॥
सुनि ऋषिसुख हरि यश सुखराशी । आनंदे सब ब्रजके वाशी ॥
सुनत नन्द यशुमति सुखपायो । मुनि चरणनको शीशनवायो ॥
बहुत भेंटलै आगे राखी । स्तुति बहुत भांति सों भाखी ॥

दोहा–बिदा भये ऋषिराज तब, नन्दभाग्य बड़ भाखि
चले मधुपुरीको हरषि, हरि मूरति उरराखि ॥

सो०–कह्यो हर्षि ऋषिराय, सब वृतान्त वसुदेवको ॥
सुनत बहुत सुखपाय, ऋषिहि पूजि कीन्हे बिदा ॥

यशुमति समुझि गर्गकी वानी । आपुनि अति बड़भागिन जानी ॥
हरिको लै उरसों लपटायो । प्रमुदित स्तनपान करायो ॥
श्यामराम मुख निरखत मोदा । मातु रोहिणी और यशोदा ॥
रवँकि रवँकि हरि बैठत गोदा । भावत हरिके बाल विनोदा ॥
हरिको गोदलिये दुलरावैं । पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावैं ॥
कबहुँक गावत दैकर तारी । कबहुँ सिखावत चलन मुरारी ॥
तनक तनक भुज टेक उठावैं । क्रम क्रम ठाढे होन सिखावैं ॥
पुनि गहि भुज पद द्वैक चलावैं । लरखरातलखि मन सुख पावैं ॥
मनहीं मन यों विधिहि मनावैं । कबधौं अपने पांयन धावैं ॥
कबहुँक छोंड देत अँगनैया । खेलत मुदित तहां दोउ भैया ॥
गौरश्याम बलराम कन्हैया । संगहि संग फिरत दोउ भैया ॥
जिमि बछराके पाछे गैया । ब्रजवासी जनलेत बलैया ॥

दोहा–धवल[2] धूरि धूसरिततनु, बाल विभूषण अंग ॥
अंजन रंजित दृग[3] चपल, निरखत लजत अनंग[4] ॥

सो०–विहरत आनँदकन्द, मणि मय आंगन नन्दके ॥

१ अपनोपुत्र । २ सफेद । ३ नेत्र । ४ कामदेव ।

यदुकुल कैरव[1] चन्द, दहन दनुज कुल वन अनल[2]॥
कबहूं ठाढ़ि होति गहि मैया। कबहूं डोलत चलत कन्हैया॥
कुलही चित्र विचित्र अँगुलिया। दमकि उठत द्वैललित दँतुलिया॥
मुनि मन हरणमंजुमसि बिंदा। सुखद चारु लोचन अरबिंदा॥
कलबल वचन तोतरे बोलैं। गहिमणि खंभ डगत डगडोलैं॥
निरखत झुक झांकत प्रतिबिम्बै। देत परम सुख पितु अरु अम्बै[3]॥
मथति जहां दधि नँदकी रानी। होतखरे तहँ टेकिमथानी॥
मात तनिकदधि देति खवाई। लेत प्रीति सों सो सुखदाई॥
क्षीर समुद्र जासु रजधानी। तनकदही सों तिन रुचि मानी॥
तनिकसो बदन तनिकसी दँतियां।तनिकसों अधर तनिकसीबतियां
तनकबदन दधि तनक कपोलन। तनक हँसन मन हरन अमोलन॥
तनक तनक कर तनकै माखन। तनक अँगुरिया तनकै चाखन॥
तनक तनक भुज चरण सुहाये। तनक स्वरूप मनोज[4] लजाये॥

दोहा–तनक विलोकन जासुकी, सकल भुवन विस्तार॥
तनक सुने यश होतहै, तनक सिन्धु संसार॥
सो०–तनकरहत नहिं पाप, तनक नाम जाके लिये॥
मिटत सकल भवताप[5], तनक कृपा जापै करहिं

अथ बरसगांठलीला॥

बरसगांठ लालनकी आई। द्विषट[6] मासके भये कन्हाई॥
फूली फिरत यशोमति माई। घरघर ते सब बधू बुलाई॥
प्रमुदित मंगल गान करायो। आनँद उमँगे तूर बजायो॥
आँगन सकल सुगंधि लिपायो। रचिरचि मोतिन चौक पुरायो॥
फूले फिरत नन्द सुख भारी। लिये गोपगण सकल हँकारी॥
द्वारन बन्दनवार बँधाये। ध्वजपताक रचि विविध बनाये॥
पान फूल फल डार रसाला। हरदि दूब दधि अक्षत माला॥

---

१ यदुकुल कमोदनीको प्रकाशितकरनवारेचंद्र। २ दैत्यकुलवनरूपके नाशकरवेको अग्निरूप। ३ माता। ४ कामदेव। ५ संसारक्लेश। ६ वर्षदिनके।

मंगल द्रव्य सकल मँगवाई । बहुमेवा बहुभांति मिठाई ॥
यशुमति कीन्ह उबटि अन्हवाये । अंग पोंछि भूषण पहिराये ॥
टोपी जरकस पीत झँगुलिया । दमकत द्वैद्वै चार दँतुलिया ॥
कठुला कंठ बघनखानीको । किये भाल केसरको टीको ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी । वरणि न जाय वदन छविरूरी ॥

दोहा--नयन आँज भ्रुकुटी निकट, कियोमातुमासिबिन्द॥
करि शृंगार हरि मुख निरखि, चूम्यो मुख अरविन्द

सो०-लिये गोद सुखकन्द, नन्द बोलि यशुमति कह्यो॥
बोलहु भूसुर वृन्द, लग्न घरी आवत चली ॥

काहेको अब गहरु[1] लगावत । विप्र वेगि काहे न बुलावत ॥
नन्द क्षिप्र[3] वर विप्र बुलाये । पदपखारि[4] आसन बैठाये ॥
लै उछंग[5] लालन नँदराई । बैठे हर्षि चौकपर जाई ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढावत । बरसगांठि सुख सहित जुड़ावत ॥
ब्रजनारी सब बनिबनि आवैं । मंगल तिलक श्यामको लावैं ॥
गावत मंगल कोकिल बैनी । हरि दर्शन प्यासी मृगनैनी ॥
तिलक सबनि मोहनके दीन्हों । देखि देखि मुख अति सुखलीन्हों॥
विप्रन वहुत दक्षिणा पाई । बाँटी सबको पान मिठाई ॥
धन मणि चीर निछावरि कीन्हे । बार बार नेगिनको दीन्हे ॥
तब सारी पचरंग मँगाई । हर्षित महरि वधुन पहिराई ॥
देत अशीश सकल अतिमोदा । लेत यशोमति भरि भरि गोदा ॥
नित नव गोकुल होत बधाई । सदा श्याम जनके सुखदाई ॥

दोहा-धन्य यशोमति धन्य नँद, धन २ बालविनोद ॥
धन्य सुमन जिन जननके, रहत सुधारस ओद॥

सो०-धनि धनि ब्रजकी बाल, कहि २सुर वर्षहिं सुमन॥
धन्य धन्य नँदलाल, दैत्यदलन सज्जन सुखद ॥

कान्ह चलत पद द्वै द्वै धरनी । होत मुदितलखिनँदकी घरनी ॥

१कारीबिंदी(भोमटकना वा डिठोना) । २ देर। ३जल्दी। ४चरणधोय । ५गोद ।

करत हुती अभिलाषा जोई। निरखत अपने नयनन सोई॥
रुनुकु झुनुकु नूपुर पग बाजै। डगमगात डोलत छबिछाजै॥
बैठ जात पुनि उठत तुरतहीं। देहरिलौं चलिजात फुरतहीं॥
धाम अवधि राखत अटकाई। गिरि २ परत नांघि नहिं जाई॥
कीन्हीं तीन पैड जिन बसुधा[1]। देहरिताहि नँघावत यशुदा॥
पकरि पाणि क्रम क्रम उतरावै। लखि सुर मुनि मन विस्मयपावै॥
कोटिन अंड रचै पल माहीं। पलमें बहुरि मिटावै ताहीं॥
ताहि खिलावत यशुमति ग्वारी। नाना विधि सुख करि २ भारी॥
कबहूं दै करतारि नचावै। कबहूं मधुर २ सुर गावै॥
देखि श्याम जननीके ताँई। आपुन गावत तारि बजाई॥
पग नूपुर कटि किंकिणि कूजै। लखि छबि मन अभिलाषहि पूजै॥

दोहा–शोभित कठुला कंठकल[2], उरहरिनख[3] छबिराश॥
मनहुँ श्याम घनमें कियो, नवशशिविमल प्रकाश॥

सो०–जननि कहत बलिजाउँ, नचहु लेहु नवनीत सद॥
धरत रुनक झुन पाउँ, त्रिभुवनपति नवनीत हित॥

बोलन लगे श्याम कलबानी। कछुकतोतरी कछुक सयानी॥
नंदहि तात यशोदा मैया। बलसों दाऊ कहत कन्हैया॥
प्रातहि उठि मांगत दोउ भैया। माखन रोटी देरी मैया॥
अँचरागहैं न मानत बाता। अति आतुर ठुनकत[4] दोउ भ्राता॥
सुनि २ मधुर वचन सुख पावैं। ताते जननी गहेरु लगावैं॥
जननि मध्य सन्मुख संकर्षण। पाछे ठाढ़े सुभग श्यामतन॥
मनौ सरस्वति सँग युगपक्षी। राजहंस अरु मोर विपक्षी॥
कबँरी[6] गही श्याम खिझलाई। मुक्ता माँग गही बल भाई॥
मनहुँदुहन निज २ भखँ[7] लीनो। जननी सों झगरो यह कीनो॥
नंददेखि हँसि २ गएलोटी। यशुमति मुदित कर्मकी मोटी॥

---

१ पृथ्वी। २ श्रेष्ठ। ३ नाहरको नख। ४ रुदन। ५ देरी। ६ चुटिया (वेणी)। ७ भक्षण।

कतहौ औरि करत गहि चोटी। यहै बात मोहन तेरी खोटी ॥
जो चाहौ सो लेउ दोउ भैया। करहु कलेवा मैं बलि जैया ॥

दोहा–दियो कलेऊ मात उठि, माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन, सकल विश्वके नाथ ॥

सो०–जेहि ध्यावैं योगीश, सनकसनंदन आदि मुनि ॥
कौतुकनिधि जगदीश, करत चरित संतन सुखद॥

अथ ब्राह्मणलीला ॥

चलत लाल पैंजनिके चायन। पुनि २ हर्षित लखि २ पायन ॥
विविध ग्वाल बालन सँगलीने। डगमगात डोलत रँगभीने ॥
कबहूं दौरि द्वार लौं जाहीं। कबहूं भजि आवैं घर माहीं ॥
ब्राह्मण एक नन्दके आयो। महाभाग्य हरिभक्त सुहायो ॥
गोपनको सो पूज्य कहायो। पुत्रजन्म सुनिकै उठि धायो ॥
यशुमति देखि अनन्द बढायो। आदर करि भीतर बैठायो ॥
पाँय धोय जल शीश चढायो। पाँक[2] करनको भवन लिपायो ॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै। जो भावै सो भोजन कीजै ॥
धेनु दुहाय दूधलै आई। पांडे रुचि करि खीर बनाई ॥
घृत मिष्टान्न खीर मिश्रितकर। कृष्ण भोग हित धार परसिधर ॥
वेद मंत्र पढिकै हरि ध्यायो। नयन मूंदिकै ध्यान लगायो ॥
नयन उघारि विप्र जब देख्यो। श्यामहि आगे जेंवत पेख्यो ॥

दोहा–अहो यशोदा आपने, सुतकृत[3] देखौ आय ॥
सिद्धपाँक[4] सब आयकै, डार्यो कान्ह जुठाय ॥

सो०–महरि जोरि युगपान[5], विनय करी द्विजराज[6]सन ॥
बालक अति अज्ञान, बहुरि पाक विधि कीजिये ॥

बहुरि दूध मिष्टान्न मँगायो। ब्राह्मण फिरकर पाक बनायो ॥
जबहीं ध्यान धर्यो मन लाई। तबहीं लागे खान कन्हाई ॥

---

१ झगरो। २ रसोईंकरवेको। ३ पुत्रकेकौतुक। ४ करीकराईरसोई।
५ दोनोंहाथ। ६ ब्राह्मण।

ऐसेहि विप्र न जेंवन पावै । बार बार हरि छूछू आवै ॥
तब यशुमति हरि सों रिसि आई । कतहि अचकरी करत कन्हाई ॥
मैं इच्छाकारि विप्र जिमाऊं । बार २ भोजन बनवाऊं ॥
यह अपने ठाकुरहि जिमावै । ताको तू गोपाल खिझावै ॥
भैया मुहि जनि दोष लगावै । बार बार यह मोहिं बुलावै ॥
नयन मूंदि कर जोरि मनावै । बहुत भाँति कर विनय सुनावै ॥
लैलै नाम कहत प्रभु ऐये । खीर खांड यह भोग लगैये ॥
तब मैं रहि नसकौं उठि धाऊं । याको दीनो भोजन पाऊं ॥
प्रेम सहित जब मोहिं बुलावै । तब नहिं रहत मोहिं बनि आवै ॥
सुनत गूढ मृदुहरिके बयना । खुलिगये विप्र हृदयके नयना ॥

दोहा–धनि धनि गोकुल नंदधनि, धन्य यशोदा माय॥
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, जहँ प्रगटे हरि आय॥

सो०–सफलजन्म प्रभु आज, प्रकटभयो सब सुकृतफल॥
दीनबन्धु ब्रजराज, दियो दरश मोहिं कृपाकारि ॥

बार बार कहि नँदके आँगन । लोटत द्विज आनंद मगनमन ॥
मैं अपराध कियो बिन जाने । कोजाने किहि भेष समाने ॥
भक्तहेतु वश रहत सदाई । यहै नाथ तुम्हरी बडयाई ॥
जेजे शरण तुम्हारी आये । तेते भये पुनीत सुहाये ॥
पतित उधारन यश विस्तारा । अघ जारन इकनाम तुम्हारा ॥
देह धरत गो द्विज हित लागी । पायो दरश भयो बडभागी ॥
हितकी चितकी मानन हारे । सबके जियकी जाननहारे ॥
शरण २ प्रभु शरण तुम्हारी । दीनदयालु कृपालु मुरारी ॥
हँसत श्याम यशुमति ढिग ठाढे । प्रेम-मगन मन आनँद बाढे ॥
निजजन जानि कृपा अति कीनी । प्रेम भक्ति हरिताको दीनी ॥
प्रेम मगन द्विज बारहिं बारा । कहि जै जै जै नन्दकुमारा ॥

---

१ छिपेभये । २ वचन । ३ दीन ।

पुनि २ पुलकत देत अशीशा । विदा भयो घरको द्विज ईशा ॥

दोहा–देख चरित यशुमति चकित, परी विप्रके पांय ॥
दिये रत्न बहु दक्षिणा, चले हर्ष द्विजराय ॥

सो०–यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्हको ॥
चितै वदन बलिजाय, आनँद निधि सुखको सदन ॥

अथ चंद्रप्रस्तावलीला ॥

शोभा मेरे हरिपै सोहै । मैं बलि बलि पटतरको कोहै ॥
मेरो श्याम मनोहर जीवन । विहँसि श्याम लागे पयपीवन ॥
ठाढी अँजिर[3] यशोदा रानी । गोदी लिये श्याम सुखदानी ॥
उदय भयो शशि शरद सुहावन । लागी सुतको मात दिखावन ॥
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत । अति शीतल दृग ताप नशावत ॥
चितै रहे हरि इकटक ताही । करते निकट बुलावत वाही ॥
मैया यह मीठो कैंखारौ । देखत लगत मोहिं अति प्यारौ ॥
देहि मँगाय निकट मैं लैहौं । लागी भूख चन्द्र मैं खैहौं ॥
देहि वेग मैं बहुत भुखानौ । मांगतही मांगत बिरुझानौ ॥
यशुमति हँसत करत पछतायो । काहे को मैं चन्द्र दिखायो ॥
रोवत है हरि विनहीं जाने । अबधौं कैसे करिके माने ॥
विविध भांति कर हरिहि भुलावै । आन बतावै आन दिखावै ॥

दोहा–कहति यशोदा कौन विधि, समझाऊं अब कान्ह ॥
भूलि दिखायो चन्द्र मैं, ताहि कहत हरिखान ॥

सो०–अनहोनी क्यों होय, तात सुनी यह बात कहुं ॥
याहि खात नहिं कोय, चन्द्रखिलौना जगतको ॥

यहै देत नित माखन मोको । क्षण क्षण तात देत सो तोको ॥
जो तुम श्यामचन्द्रको खैहौ । बहुरो फिर माखन कहँ पैहौ ॥
देखत रहौ खिलौना चन्दा । हठ नहिं कीजै बालगोविन्दा ॥

१ मुख । २ अनुसार । ३ आंगन ।

मधु मेवा पकवान मिठाई। जो भावै सो लेहु कन्हाई॥
पालागों हठ अधिक न कीजै। मैंवलि रिसही रिस तनु छीजै॥
खसि २ कान्ह परत कनियांते। देशशि कहत नंदरानियांते॥
यशुमति कहति कहा धौं कीजै। मांगत चन्द्र कहांते दीजै॥
तब यशुमति इक जलपुटलीनो। करमें लै तिहि ऊंचो कीनो॥
ऐसे कहि श्यामहिं बहकावै। आव चन्द्र तोहिं लाल बुलावै॥
याहीमें तूतंतु धरि आवै। तोहिं देखि लालन सुखपावै॥
हाथ लिये तोहि खेलत रहिहै। नेक नहीं धरणी पर धरिहै॥
जलपुट आनि धरणि पर राख्यो। गहि आन्यौ शशि जननी भाख्यो॥

दोहा—लेहु लाल यह चन्द्र मैं, लीनो निकट बुलाय॥
रोवै इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय॥

सो०—देखहु श्याम निहारि, या भाँजनमें निकट शशि॥
करी इती तुम आरि, जा कारण सुन्दरसुवन॥

ताहि देखि मुसिक्याय मनोहर। बार बार डारत दोऊ कर॥
चन्द्रापकरत जलके माहीं। आवत कछू हाथमें नाहीं॥
तब जलपुटके नीचे देखै। तहां चन्द्र प्रतिबिंब न पेखै॥
देखत हँसी सकल ब्रजनारी। मगन बाल छबि लखि महतारी॥
तबहिं श्याम कछु हँसि मुसकानें। बहुरो मातासों बिरुझानें॥
ल्यों गो री मा चन्दा ल्यों गो। वाही अपने हाथ गहौंगो॥
यह तौ कलमलात जलमाहीं। मेरे करमें आवत नाहीं॥
बाहर निकट देखियत वाही। कहौ तौ मैं गहिल्यावों ताही॥
कहति यशोमति सुनहु कन्हाई। तब मुख लखि सकुचत उडराई॥
तुम तिहि पकरन चहत गुपाला। ताते शशि भजि गयो पताला॥
अब तुमते शशि डरपत भारी। कहत अहो हरि शरण तुम्हारी॥
बिरुझाने सोये दैतारी। लिय लगाय छतियां महतारी॥

१ चन्द्र। २ शरीर। ३ वर्त्तन। ४ छाया। ५ विधु।

दोहा–लैपौढ़ाये सेजपर, हरिको यशुमतिमाय ॥
अति विरुझाने आज हरि, यह कहि २ पछताय ॥
सो०–करसों ठोकि सुनाय, मधुरेसुर गावत कछुक ॥
उठि बैठे अतुराय, चटपटाय हरि चौंकिकै ॥

अथ पुरातन कथालीला ॥

पौढो लाल कहत महतारी । कहौं कथा इक श्रवणन प्यारी ॥
हर्षे यह सुनि मन वनवारी । पौढ़ि गये हँसि देत हुँकारी ॥
नगर एक रमणीय सुहावन । नाम अवध अति सुंदर पावन ॥
बड़े महल तहँ अगम अटारी । सुंदर विशद[1] चारु गच ढारी ॥
बहुत गली पुर बीच सुहाई । रहैं सदा सब सुगँधि सिँचाई ॥
भांति भांति बहु हाट बजारू । अति शृँगार जनु विश्व शृँगारू ॥
तहां नृपति दशरथ रजधानी । तिनके नारि तीन पटरानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा । तिन जन्मे सुत चार पवित्रा ॥
राम भरत लक्ष्मण रिपुहन्ता । चारौं अति सुन्दर गुणवन्ता ॥
तिनमें राम एक व्रतधारी । अतिसुन्दर जनके हितकारी ॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई । तिनहिं सतावें निशिचर[2] आई ॥
तिन नृप सों द्वै सुत लै माँगे । अपनी रक्षाके हित लागे ॥

दोहा–राम लषण ऋषि लैगये, दनुज हते तिनजाय ॥
ऋषिदीनी विद्या[3] बहुत, तिनको अति सुख पाय ॥
सो०–तहां जनक इकभूप, धनुषयज्ञ ताने रच्यो ॥
कन्यातासु अनूप, जुरे तहां भूपति अमित ॥

ऋषि लैगये कुँवर तहँ दोऊ । जनकराय सन्माने सोऊ ॥
धनुष तोरि भूपन सुखमारी । राम विवाही जनककुमारी ॥
चारहु कुँवर व्याह तहँ आये । भये अवध पुर अनँद वधाये ॥
रामहिं देन लगे नृपराजू । सज्यो सकल अभिषेक समाजू ॥

१ उज्ज्वल । २ राक्षस । ३ बला-अबला ।

ताही समय कैकयी रानी । चेरीकी मतिसों बौरानी ॥
वचन मांगि राजा सों लीनो । वनको वास राम को दीनो ॥
सुनि पितु वचन धर्त हितकारी। नारी सहित भये वनचारी ॥
तिन्हैं चलत भ्राता सँगलाग्यो । उनके जात पिता तनुत्यागो ॥
चित्रकूट गये भरत मिलनजब । [१]पद पाँवर कृपा करी तब ॥
युवती हेतु कपट मृग मारा । राजिव लोचन राम उदारा ॥
रावण हरण कियो तब नारी । सुनतश्याम घन नींद बिसारी ॥
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनुदेहू । देख भयो यशुदहि सन्देहू ॥

अथ कर्णछेदनलीला ॥

छं०—सन्देह जननीमनभयो हरि चौंकधौं कहि परचो
कहुँदीठ खेलतमें लगी धौं स्वप्नमें कान्हर डरचो॥
बहु भांति देव मनाय पढ़ि २ मंत्र दोष निवारही॥
लैपियति पानी वारि पुनि २ राइ लोन उतारही॥
दोहा—सांझहिते विरुझाय हरि, करी चन्द्रहित आरि॥
झिझकिउठचो धौं ताहि ते, रह्यो सुरत उरधारि॥
सो०—बडभागी नँदनारि, महिमा वेद न कहिसकैं ॥
हरिको वदन निहारि, बिसरावत त्रय ताप दुख॥

प्रात नन्द उठि हरिपै आये । मुखछबि देखनको अतुराये ॥
निशि[२] के द्वन्द्व नयन अति आरत। हरुवै करि मुखते पटटारत ॥
स्वच्छ सेजते बदन प्रकाश्यो । द्वन्द्वतिमिर नयननिको नाश्यो ॥
मनहुँ मथनपै निधि उडराई । फेणु फोरि कै दई दिखाई ॥
धाये ब्रज जन चतुर चकोरा । इकटकरहे वदन शशि ओरा ॥
फूली कुमुदनिसी महतारी । कहत उठहु सुतमैं बलिहारी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा । जो भावै सो करहु कलेवा ॥
सद माखन मिसरी तब आनी । कछु खवाय धोयो मुखपानी ॥

१ खडाऊं । २ रात ।

देखि बदन छबि महरि सिहानी । कहति नन्दसों यशुमति रानी ॥
कनछेदन अब हरिका कीजै । कुंडल सहित देख सुखलीजै ॥
बोलि विप्र शुभ दिवस गनायो । जाति कुटुँब सब न्योत बुलायो ॥
कुलव्यौहार कियो सब साजा । विविध भांति बहु बाजन बाजा ॥
छंद–बाजी बधाई विविध आंगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरखितहोंइ सुमननिवर्ष गोकुल छावहीं ॥
करिप्रथम मुंडन श्यामको पुनि कर्ण वेधन विधलई ॥
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुरु भेली दई ॥
हँसत सुरगण सहित विधि हरि मात उर अति धुकधुकी॥
अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकत नहिं सन्मुख तकी॥
भरि सींकरोचन देत श्रवणनि निकट करि अतिचातुरी
ढेढुर मँगाये कनक के कह कहौं छेदन आतुरी ॥
देख रोवत जननि लीन्हे विहँसि तबहीं झुकि अली ॥
हँसत नंद सब युवति गावत झमकि भीतर लैचली ॥
कहति सुरवनिता परस्पर धन्य धन ब्रजभामिनी ॥
नहिंनइनकी किंकरी सम हम सकल सुरकामिनी ॥
दोहा–करति निछावरि ब्रजवधू, धन मणि भूषण चीर ॥
सकल अशीशत नंदसुत, जहँ तहँ याचक भीर ॥
सो०–पहिरावत नँदराय, ब्रज युवतिन भूषण वसन ॥
आनँद उर न समाय, मनहुँ उमँग चहुँ दिश चल्यो॥
नितही नवमुद मंगल ताके । मंगल मूरति हरि सुत जाके ॥
जेहि विधि तात मात सुखपावैं । सुखनिधान सोइ चरित उपावैं ॥
जाको भेद वेद नहिं पावैं । नंद भवनसो कान छिदावैं ॥
निज भक्तन हित नरतनु धारी । करत बाललीला सुखकारी ॥
हरि अपने रंगनि कछु गावैं । नंद भवन भूषण मनभावैं ॥

तनक तनक चरणनसों नाचैं । मन २ रीझ विविध विधिराचैं ॥
मन्द मन्द पग नूपुर बाजैं । बाल विभूषण अंग विराजैं ॥
कबहूं भुज उठाय गुहरावैं । धौरी धूमरि गाय बुलावैं ॥
कबहूं माखनलै मुख नावैं । कबहुँ खंभ प्रति बीच खवावैं ॥
माखन मांग दुहूं करलेई । एक भाग प्रतिबिंबहिं देई ॥
तासों कहत लेत क्यों नाहीं । डारदेत काहे महिमाहीं ॥
दुर देखत यशुमति महतारी । उर आनंद करति अतिभारी ॥

दोहा–हरषि जननि मुख चूमकै, लीनो गोद उठाय ॥
परमानंदरस मगन मन, सो सुख किमि कहि जाय ॥
सो०–कौतुक निधि भगवान, करत चरित नित २ नये ॥
सुन्दर श्याम सुजान, ब्रजवासिनके प्रेमवश ॥

अथ माटीखानलीला ॥

खेलत श्याम धामके द्वारे । सोहत ब्रजलरिका संगबारे ॥
अति अज्ञान सबनिमलि भोरी । सबकी प्रीति श्याम सँग जोरी ॥
एक वैस सब परम सुहाये । करत बाललीला सुखपाये ॥
गावत हँसत देत किलकारी । लखि २ सुख पावत महतारी ॥
निरखि रूप सब ब्रजजन मोहैं । कोटि काम नहिं पटतरसोहैं ॥
तनु पुलकित अति गद्गदबानी । निरखि मनहिं मन महरि सिहानी ॥
तबहिं श्यामघन माटी खाई । यशुमति देखि सांटि लै धाई ॥
पकरी भुजा[1] श्यामकी जाई । कहति कहा यह करत कन्हाई ॥
उगलहुबेगि वदन ते माटी । नाहीं तौ मारतिहौं सांटी ॥
सबदिन झुठवतहै सब ग्वालन । मोसों अब कहा कहिहौ लालन ॥
तब मोहन कीनी लँगराई[2] । कहति कि मैं माटी नहिं खाई ॥
झूठहि मोको लोग लगावैं । माटी मोको नेकनभावै ॥

दोहा–झूंठ कहत तोसों सबै, माटी मोहिं न सुहाय ॥
नहिं मानै जो मात तू, दिखराऊं मुँह बाय ॥

१ हाथ । २ धूर्तता ।

सो०–दीनो मुखहि उघारि, नयन मूंदि माता निकट॥
देखि चकित नँदनारि, तनुकी सुरत रही नहीं॥

दिखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं । नभ शशि रवि तारा इकठाहीं ॥
सुर सागर सरिता गिरि कानन । सुर सुरनायक शिव चतुरानन ॥
सकल लोक लों लय यम काला । महि मंडल सब अग जग जाला॥
देखि चरित यशुमति अकुलानी। करसे सांटि गिरति नहिंजानी ॥
वदन मूंदि तब दृग हरि खोले । डरसमेत माता सों बोले ॥
मैया मैं माटी नहिं खाई । यशुमति चकित रही अरगाई ॥
कहत नंद सों यशुदारानी । हरिकी कथा नजात बखानी ॥
माटीके मिसकरि मुखबायो । तीन लोक तामहिं दिखरायो ॥
स्वर्ग पताल धरणि वन बागा । सुर नर असुर विपुल खग नागा॥
अपरसृष्टिकहि जाति सुनाहीं । देखो सकल बदनके माहीं ॥
मोको परत सांच सबजानी । जो कछु कही गर्ग ऋषिवानी ॥
चकित नंद सुनि अचरजवानी । मन मन करत विचार विनानी ॥

दोहा–नन्द कहत सुनि बावरी, हरि अति कोमल गात॥
अचरज तेरी बातको, पुनि पाछे पछतात ॥
सो०–अचरज तेरी बात, को जानै देख्यो कहा ॥
कुशल रहौ दोउ भ्रात, राम श्याम खेलत हँसत॥

कहति श्याम सों यशुमति मैया । मैं तेरी बलिहारि कन्हैया ॥
मैं अजान रिस बीच न जानी । वृथाश्याम तुम पर रिस सानी ॥
जरहु हाथ जिन सांटि उठाई । बरहु आंखि जिन दीठ दिखाई ॥
मधु मेवा दधि माखन मांठी । खात लाल तुम काहे माटी ॥
सिगरोइ दूध पियो तुमन्यारे । बलको बांट न देहु पियारे ॥
कहत नंद सों यशुमति मैया । दुहौ लाल की ठाढी गैया ॥

---

१ आँखे । २ पक्षी । ३ हाथी । ४ मटुलिया ।

कजरीको पय पियो गुपाला। जो तेरि चोटी बढ़ै विशाला ॥
सब लरकनमें तो तनु माही। वेग वेश बल श्री अधिकाही ॥
मात वचन सुनिकै अनुरागे। ज्यों त्यों करि पय पीवन लागे ॥
खिन पीवत खिन २ कचटोवै। देखि २ मुखहँसति यशोवै ॥
मैया कब बाढैगी चोटी। यह तौ है अबही लौं छोटी ॥
तूजो कहतहि बललौं ह्वैहै। छोडत गुहत गोडलौं जैहै ॥

दोहा-कितीबार भइ पयपियत[2], चोटी बडी न होहि ॥
कहि कहि झूठी बात नित, दूध पियावत मोहि ॥
सो०-सुनि सुनि भोरी बात, सुन्दर श्याम सुजानकी॥
यशुमति मन न अघात, हँसि लीने उरलाय[3] हरि॥

भोरहिं महर यमुनतट धाये। दरशन करि अतिही सुख पाये ॥

अथ शालिग्रामलीला ॥

करि स्नान नन्द घर आये। पूजा हित यमुनाजल लाये ॥
तुलसीदल अरु कमल पुनीता। प्रभु निमित्त आने अति प्रीता ॥
पाँय धोय प्रभु मन्दिर आये। करी दण्डवत प्रेम बढाये ॥
स्थल लीप पात्र सब धोये। पूजाके सब साज सँजोये ॥
छाप तिलक सब अंग सँवारे। प्रभु पूजाविधि करन सँवारे ॥
कुँवरकान्ह खेलत ते आये। देखत पूजाविधि चितलाये ॥
विधिवत देव[4] नन्द अन्हवाये। चन्दन तुलसी फूल चढाये ॥
भूषण वसन अलंकृत कीन्हें। धूप दीप अतिहित कर दीन्हें ॥
पट अन्तर दै भोग लगायो। आरति चरणनि शीश नवायो ॥
तबहीं श्याम बिहँसि उठि बोले। कहत तात सों वचन अमोले ॥
बाबा तुम जो भोग लगायो। सोतो देव कछू नहिं खायो ॥
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई। चितैरहे मुख हँसि नँदराई ॥

---

१ पग। २ दूध। ३ छाती। ४ शालिग्राम।

दोहा—कहत नंद सुख पायकै, यों नहि कहिये तात ॥
देवनको कर जोरिये, कुशल रहो जिहिगात ॥
सो०—हँसत श्याम सुखदानि, नंद स्वरूप न जानहीं ॥
रह्योतिनहिं सुत मानि, करत ब्रह्मलीला सगुण ॥

देखत जननि तहां दुरि ठाढी । मगन प्रेमरस आनँद बाढी ॥
बैठे नंद समाधि लगाई । तब यह लीला रची कन्हाई ॥
शालग्राम मेलि मुख माहीं । बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान विसर्जन करि नँद जागे । शालग्राम न देखे आगे ॥
खोजत चकित चित्त नँदराई । इष्टदेव किन लिये चुराई ॥
इतउत खोजत पावत नाहीं । भयो बडो अचरज मनमाहीं ॥
बिहँसत हरिके मुखमें जाने । देखत महरि महर मुसकाने ॥
सुनहु तात जननी बलिजाई । उगिलहु शालग्राम कन्हाई ॥
मुखते तबहिं काढि ब्रजनाथा । दियो देवता नँदके हाथा ॥
हरिके चरित कहत नहि आवैं । बालविनोद मोद उपजावैं ॥
लखि लखि मात पिता पुलकाहीं । देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं ॥
धन्य धन्य सब ब्रजके वासी । विहरत जहाँ ब्रह्म अविनाशी ॥

दोहा—परते पर परब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेम वश, विहरत बालक रूप ॥
सो०—प्रेम मगन पितु मातु, निशि दिन जात न जानहीं ॥
क्योंहूं मन न अघात, सुनत वचन देखत दरश ॥

अथ अन्हवावनलीला ॥

यशुमति श्यामहिं कह्यो न्हवावन । सुनतहि मचलि परे मनभावन ॥
उबटनलै आगे गहि बाहीं । लोटिगये हरि मानत नाहीं ॥
तब यशुमति बहुभांति दुलारे । मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे ॥
उबटन पाछे धर्यो चुराई । फुसलावत सुत श्याम कन्हाई ॥
मैं बलि ऐसी आरि न कीजै । जो चाहौ सो मोपै लीजै ॥
कहत लाल रोवै दुख पावै । ऐसो को जो तोहिं खिझावै ॥

१ छिपी । २ छोडकैं । ३ रात्रि । ४ रारि ।

अतिरिसते मैं बालि तनु छीजै। सुन्दर कोमल अंग पसीजै ॥
बरजतही बरजत बिरुझाने। करिकारि क्रोध मनहिं अकुलाने ॥
धरत धरत धरणी पर लोटे। गहि माताके चीर निझोटे ॥
गहि गहि अँगके भूषण तोरैं। दधि माखनके भाजन फोरैं ॥
धर्‌यो तप्त दल जननी पासै। मानत नाहिं ताहि लेखि त्रासै ॥
मेहरि बांह धरिकै तब आने। जबहीं तेल उबटने साने ॥

दोहा—तब दुचती करि मातुको, गिरत परत गये भाज॥
नेक निकट लागैं नहीं, मनमोहन ब्रजराज ॥

सो०—तब पुचकारे मात, साम भेद[3] कहि कहि वचन॥
मैं बलि आवहु तात, नहिं आवहु तो जानिहौं॥

तुम मेरी रिसको हरि जानौं। मोको नीकी बिधि पहिचानौं ॥
जोनहिं आवहु मदनगोपाला। आज तुम्हैं तौ बांधौं लाला ॥
तबहिं नन्द उतते चलि आये। कहत हरिहि किन अतिहि खिजाये ॥
लै कनियाँ उरसों लपटाये। बदन चूमि यशुमति पहँ ल्याये ॥
कत खिजवत मोहनहिं अयानी। लै हियलाय लिये नँदरानी ॥
क्योंहुँ यत्न करिकै जब पायो। तब उबटन हरिके अँग लायो ॥
पुनि तातो जल न्हान समोयो। दियो न्हवाय वदन शशि धोयो ॥
सरस बसन लैकै तनु पोछ्यो। बहुरो बदन सरोज अँगोछ्यो ॥
अंजन दोऊ दृगे भरि दीनों। भ्रूपर चारु चखोडा कीनों ॥
सब अँगके भूषण मँगवाये। क्रम क्रम लालनको पहिराये ॥
ऐसी रिस नहिं कीजै कान्हा। अब कछु खाउ जाउँ बलि नान्हा ॥
तब तुतरात कह्यो काहेरी। जो मोको भावै सो देरी ॥

दोहा—कहत जननि या वचन पर, मैया बलि बलि जाय॥
जोइ जोइ भावे लालको, सोइ सोइ ल्यावे माय

सो०—किये अमितपकवान, मैं अपने सुतके लिये ॥
सो सब कहौं बखान, जो भावे सो लीजिये ॥

१ देखिकै। २ नंदराय। ३ धमकायकर। ४ मुखचंद्र। ५ नेत्र।

सदमाखन अरु दही सजायो । तुम्हरे हित पय औटि जमायो ॥
खोवा औट्यो मधुर मलाई । तापर मिश्री पीसि मिलाई ॥
अरुदाधिको अति सरस सवाँरी। तामहिं सोंठि मिरच रुचि कारी॥
खीर बरा करिकै दधि बोरे । मानहुँ चंद्र अमी[1] मधु खोरे ॥
खुरमा और जलेबी बोरी । जेहि जेंवत रुचि होत न थोरी ॥
अरु लडुआ बहुभांति सँवारे । जेमुख मेलहु कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा बहु पूरिन पूरे । अति सुवास उज्ज्वल अति रूरे ॥
पापर घेवर घीउ चभोरे । मिश्री से तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर मालपुआ मधु साने । तप्त तुरत करि रोहिणि आने ॥
अतिहीं सुन्दर सरस अँदरसे । घृत दधि मधु मिलि स्वादन सरसे॥
सरस सवाँरी दाल मसूरी । अरु कीन्हो सीरा घन पूरी ॥
पूरी सुनिके हिय हरि हरषे । तब जेंवन पर मनकरि करषे ॥

दोहा—सुनत यशोदा तुरतही, ले आई हरषाय ॥
बलदाऊको टेरिके, लीन्हे नन्द बुलाय ॥
सो०—षटरसके परकार, जे वरणे यशुदा प्रथम ॥
परसि धरे सब थार, जेंवत हरि बलवीर दोउ ॥

जेंवत एक थार दोउ बीरा । हरषि श्याम रुचि राख्यो सीरा ॥
तब शीतल जल लियो मँगाई । भरि झारी यशुमति लैआई ॥
जल अँचवावत नैन जुडाने । दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने ॥
तब जननी हँसि चुरू[2] भराये । तनक तनक कछु मुख पखराये ॥
रुचि रुचि उजरे पान खवाये । अतिहीं अधर अरुण ह्वैआये ॥
ठाढे तहाँ सकल ब्रजदासा । लागिरहे जूठनि की आशा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो । उबर्‍यो सो ब्रजदासन पायो ॥
सखावृन्द[3] प्रिय द्वार पुकारे । खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥
तृषित दरश रस चातकदासा । हरिय बरषि नवघन छवि पासा ॥
विनय वचन सुनि हर्ष कृपाला । चले मनोहर चाल रसाला ॥

१ अमृत । २ मूंदे । ३ प्यारेसखानके समूह ।

लघु लघु ललित चरण कर लाला। कमलनैन उर बाहु विशाला ॥
चन्द्र बदन तनु छबि घनश्यामा। अंग अंग भूषण अभिरामा ॥

दोहा–निरखत छबि नँदलालकी, थकित सकल सुरवृंद ॥
निश्चल चखन चकोरजनु, तकत शरदको चन्द ॥

सो०–अति आनन्द उमंग, मिलि सखनको जाय हरि॥
व्रीडित कोटि अनंग, क्रीडत बालक वृन्द सब ॥

खेलत दूरि गये कहुँ कान्हा। सखन संग धावतहैं नान्हा ॥
बहुत अबेरभई घनश्यामहिं। खेलत ते आये नहिं धामहिं ॥
नंदहि तात मातु मोहिं कानन। योंहीं सुनत सुहात जु आनन ॥
मन अवसेरै करत महतारी। पलक ओट रहि सकत न न्यारी ॥
देखत द्वार गलीमें ठाढी। सुतमुख दरश लालसा बाढी ॥
तत्क्षण दूरि खेलनते आये। दौरि मातु लै कण्ठ लगाये ॥
खेलन दूरि जातकिन कान्हा। मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा ॥
आज एक बन हाऊ आयो। तुम नहिं जानत मैं सुनि पायो ॥
इक लरिका भजि आयो तबहीं। सो वह मोसों कहिगयो अबहीं ॥
वहतो पकरि लेतहै तिनको। लरिका करि जानतहै जिनको ॥
चलहु भाजि चलिये निज धामहिं। यह सुनि टेर लिये बलरामहिं ॥
कनियाँ करि लै आई धामहिं। बडभागिनि यशुमति सुत श्यामहिं

दोहा–रूपरेख जाके नहीं, विधिहर अन्त न पाय ॥
हाऊ सों डरपाय तिहिं, यशुमति राखत स्वाय॥

सो०–भाव वश्य भगवान, भावइ करिके पाइये ॥
भक्तनके सुखदान, तिहि तैसे जैसे भजे ॥

ब्रज वीथिन खेलत मनमोहन। हलधर सुबल सुदामा गोहन ॥
और गोप बालक बहुबारे। एक वयस सब हरिके प्यारे ॥
बाल विनोद मोदमन दीने। नानारंग करत रस भीने ॥

१ छोटे छोटे। २ नेत्र। ३ लज्जित। ४ कामदेव। ५ फिकर। ६ गोदमेंबैठार। ७ ब्रह्मा–शिव। ८ ब्रजकी गली। ९ एकहीअवस्थाके।

तारी हाथ मारि सब भाजें । धावत धरत होड कर बाजैं ॥
बरजत बलि हरि तूमति दौरे । लगिहै चोट गोड¹ किहुं तोरे ॥
तब हरि कह्यो दौरि मैं जानों । मेरो गात बहुत बलवानों ॥
है श्रीदामा जोड हमारी । तासों मारि भजों मैं तारी ॥
बोलि उठ्यो तबहीं श्रीदामा । तारी मारि भजौ तुम श्यामा ॥
तबहीं श्याम भजे दैत्यारी । धन्यो जाय श्रीदाम हँकारी ॥
तबहरि कह्यौ वदौं नहिं तोहीं । ठाढो भयो छियो तब मोहीं ॥
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने । कहत सखा सब श्याम खिझाने ॥
तबतो कह्यो दौर मैं जानौं । हारे श्याम बुरो अब मानौं ॥

दोहा—बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप ॥
हारि जीति जाने नहीं, लरकन लावत पाप ॥
सो०—ये हैं तनुके श्याम, झूंठहिं झगरत सखन सँग ॥
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास पूंछति जननि ॥

मैं बलि क्यों उदास हरि आयो । कौने मेरो लाल खिझायो ॥
मैया² म्वहिं दाऊ दुख दीन्हों । मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहाकरौं या रिसके मारे । मैंनहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरी माता। को तेरो तात³ कौन तेरो भ्राता॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी । तुम तो कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये । ले वसुदेव यहां निशि⁴ आये ॥
मोल कछू वसुदेवहिं दीन्हो । ताके पलटे तुमको लीन्हो ॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिझावे । अरु सब लरकन यहै सिखावे ॥
मोहीं को तू मारन धावै । दाउहि कबहुं न खीज डरावै ॥
रोष सहित सुनि बतियां भोरी । बढत मातु उर प्रीति नथोरी ॥
सुनहु श्याम बलराम चबाई । झूठहिं तोहिं खिझावत जाई ॥
मोहिं गोधनकी सोंह कन्हैया । मेरो सुत तू मैं तेरि मैया ॥

दोहा—पाछे ठाढे सुनत सब, नन्द श्यामकी बात ॥

१ पाँय । २ मैया । ३ पिता । ४ रात ।

लीन्हें गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्यामलगात ॥
सो०—बलको धरियो नंद, सुनि मनहर्षे श्याम तब ॥
लीला नटवर चन्द, करत चरित जनमन हरन ॥

अथ भोजनकरनलीला ॥

भोजनके समये नँदराई । करे सुरति बलराम कन्हाई ॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया । मोसँग जेवैं आय कन्हैया ॥
खेलत बहुत बेर भइ आजा । उनबिन भोजन कौने काजा ॥
यशुमति सुनत चली अतुराई । ब्रज घर घर टेरत दोउ भाई ॥
कहत बोल लेहु कोऊ श्यामहिं । खेलत हैं धौं काके धामहिं ॥
जेंवन सिद्ध सिरात धरोई । उनबिन नंद न जेंवत सोई ॥
ऐसे जननीके सुनि बैना । आये खेलत ते सुखदैना ॥
चलहु तात मैया बलि जाई । जेंवन को बैठे नँदराई ॥
परस्यो थार धऱ्यो + मग हेरति । मैं तबहीं सों तुमको टेरति ॥
दौरि चलहु आगे गोपाला । छाँडि देहु गति मन्दमराला ॥
चलहु बेगि दौरौ दोउ भाँई[3] । सो राजा जो आगे जाई ॥
जो जैहै पहिले बलि भाई । तौहँसिहैं तोहिं ग्वाल कन्हाई ॥
दोहा—आये दौरे श्याम तब, तुरतहिं पांय पखार[4] ॥
बैठे जेंवन नंदके, सँग दोऊ सुकुमार ॥
सो०—कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाणि दुहुँ ॥
शुभगसांवरे गात, बालकेलि रस बश खरे ॥
बडोकौर मेलत मुख भीतर । आय गई तब मिरचि दशन तर ॥
तीक्षण लगी नयन भरि आये । रोवत बाहरको उठि धाये ॥
रोहिणि फूंकिदेत मुख माहीं । लिय लगाय उरसों गहि बाहीं ॥
मधुर ग्रास लैलात निहोरे । लै बैठे फुसलाय अँकोरे ॥
जेंवत कान्ह नंदकी कनिया । छबि निरखत ठाढी नँदरनिया ॥

१ भोजन कऱ्यो करायो । + वाट । २ हंसकीसी मंदचाल । ३ दोऊभैया । ४ पाँयधोय । ५ दाँतनके नीचे । ६ मोठोकौर ।

बेसनके व्यंजन विधि नाना । बराबरी बहु शाक विधाना ॥
मूंग ठरहरी हींग लगाई । दाल चनाकी पीत सुहाई ॥
राज भोगको भात पसायो । उज्ज्वल कोमल सुगँध सुहायो ॥
बेसन मिली कनककी रोटी । सदघृत बोरी पतरी छोटी ॥
आंब आदि बहुभांति सँधाने । दोउ भैया जेंवत रुचि माने ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रित कर । लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥
आपुन खात नंद मुख नावैं । सोछबि कहत कौनपै आवैं ॥

दोहा–भोजन कर अचमन कियो, लैझारी नँदराय ॥
अपने करसों श्यामको, दीनो वदन धुवाय ॥
सो०–को कारि सकै बखान, भाग्य यशोमति नंदके ॥
ब्रह्म रह्यो रुचिमान, बाल रूप जिनके सदन ॥

अथ पयछुड़ावन लीला ॥

बैठे श्याम मातकी कनियां । पियत दूध सुन्दर सुखदनियां ॥
वार वार यशुमति समुझावे । हरिसों स्तन पान छुडावे ॥
कहति श्याम तू भयो सयानो । मेरो कह्यो लाल अब मानो ॥
दूध पियत देखत लरिका सब । हँसत तोहिं नहिं लाज लगत अब ॥
जैहैंदांत बिगरि सब तेरे । अजहूं छांडि कह्यो करि मेरे ॥
सुनत वचन मुसकाय कन्हाई । अन्चरांतरमुख लियो छिपाई ॥
आये तबहीं सखा बुलावन । मात कह्यो खेलहु मनभावन ॥
यह सुनि हर्ष उठे बनवारी । मांगतदे चौगोन कहांरी ॥
मथनीके पाछे कहि दीन्हों । हर्षित श्याम तहांते लीन्हों ॥
लै चौगान बढाकर आगे । चले सखन देखत अनुरागे ॥
कहत सखनसों हरि हरषाई । खेलहु गे किहिं ठोहर भाई ॥
खेलत बनिहै घोष निकासू । हरषि चले सब सहित हुलासू ॥

दोहा–कान्हर हलधर बीर दोउ, भये भुजा बरँ जोर ॥

---

१ भात । २ गोद । ३ अंचल । ४ आनंद । ५ गेंद । ६ बराबर एक ओर श्रीकृष्ण और दाऊजी और सुबल सखा एक ओर ।

श्रीदामा अरु सुबल मिलि, जुरे सखा इकठौर ॥
सो०-और सखनके वृन्दे, बांटि लिये जुरि जोटे जुट ॥
अति आँनद नँदनन्द, दियो बटा ढरकाय महि ॥

अथ चौगानखेलनलीला ॥

हरि अपनी बातन लैजाहीं । एक एक सन पावत नाहीं ॥
इतते उत उतते इत घेरैं । बटा मारि चौगाननि फेरैं ॥
दौरत हँसत खसत उठि मारें । आप आपनी जीत विचारैं ॥
जम्यो खेल अति मगन कन्हाई । देखत सुर मुनि रहे लुभाई ॥
जीतत सखा श्याम जब जाने । करो खेल कछु तब मचलाने ॥
कहत सखा सब सुनहु गोपाला । रुगँटैयांको कौन खियाला ॥
श्रीदामासों हौ तुम हारे । झूठी सौहैं खाउ ललारे ॥
खेलतमें को काको सैयां । कहा भयो जो नंदगुसैयां ॥
ताते तुम गर्वित मन महियां । तनक वसत हम तुम्हरी छहियां॥
अति अधिकाई जनावत ताते । तुम्हरे अधिक गाय कछुजाते ॥
अब नहिं खेलहिं संग तुम्हारे । भये सखा सब रिस करि न्यारे ॥
खेल्यो चाहत त्रिभुवन राई । दियो दांव तब पीठ चढ़ाई ॥

दोहा-जाके गुणगण अगमअति, निर्गम न पावत और ॥
सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग, बँधे प्रेमकी डोर ॥
सो०-खेलत भई अबेर, जननी टेरत श्यामको ॥
आवहु धाम सबेर, सांझ समय नहिं खेलिये ॥

सांझ भई घर आवहु प्यारे । बहुरि खेलियो होत सबारे ॥
आपुहि जाय बांह गहि आने । सुभग श्याम तनु रज लपटाने ॥
बोलि लिये यशुमति बलरामहिं । लै आई दोऊ सुत धामहिं ॥
धूरि झारि ताती जल ल्याई । तेल परशि दीन्हे अन्हवाई ॥
सरस बसन तनु पोंछि सँवारे । लै गोदी भीतर प्रभु धारे ॥

१ समूह । २ जोडी । ३ गेंद । ४ हक्करोमटी । ५ मालिक । ६ मालिक-पन्यो । ७ वेद । ८ पुराण ।

करहु बियारू कछु दोउ भाई । पुनि तुमको राखौं पौढ़ाई ॥
सीरा पूरी सरस सँवारी । और धरी मेवा बहु न्यारी ॥
दीन्हीं परसि कनककी थारी । बलमोहन दोउ करत बियारी ॥
मिश्री मिलै दूध औटाई । लै आई तब रोहिणि माई ॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत । देखि देखि छवि नयन जुडावत ॥
खात खात मोहन अलसाने । बारहिं बार श्याम जमुहाने ॥
आरससों कर कौर उठावत । नैनन नींद झमकि झुकि आवत ॥

दोहा–उठहु लाल तब मातु कहि, धोये मुख अरविन्द ॥
पौढ़ाये लै सेजपर, बल अरु बाल गोविन्द ॥
सो०–सोये बाल मुकुंद, दोउ भैया सुख सेजपर ॥
जननी अति आनन्द, शोचत गुण गोपालके ॥

माखन मोहनको प्रियलागै । भूखो छिन न रहत जब जागै ॥
तगहि बड़ों जो गहरु लगावै । नहिं मानै जो इन्द्र मनावै ॥
मैं इहि जानत बात श्यामकी । हगनोंचे नवनीत खानकी ॥
लै मथनी दधि धर्यो बिलोई । जबलगि लालन उठहिं न सोई ॥
भोर भयो जागहु नँदनंदन । संग सखा ठाढे जगवंदन ॥
सुरभी पँयहित बच्छ पियाये । पंछी तरु तजि चहुंदिशि धाये ॥
चन्द्र मलिन उडुगण दुतिनाशी । निशिनिबटी रवि किरण प्रकाशी ॥
कुमुदिनि सकुची वारिज फूले । गुंजत मधुप लता लगि झूले ॥
दरशन देहु मुदित नर नारी । ब्रजवासी प्रभु जन सुखकारी ॥
सुनि जननीके वचन रसाला । खोले दृगराजीव बिशाला ॥
हँसत उठे संतन सुखदाई । मुखछवि देखि मातु बलिजाई ॥
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे । मैं माखन मथि धरेउँ सँवारे ॥

दोहा–रोटी अरु माखनतनक, देरीमा मोहिं हाथ ॥
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ ॥

---

१ सोनेकीथार । २ मुखकमल । ३ बलराम । ४ दूध । ५ तारे । ६ रात्रि । ७ सूर्य । ८ कुमुदनी । ९ कमल । १० भौंरा । ११ नेत्रकमल ।

सो०-करत कलंक श्याम, माखन चोरी मानि रुचि ॥
त्रिभुवनपति सुखधाम, चार पदारथ हाथ जेहि ॥

अथ माखनचोरी लीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावै । और कछू अति रुचि नहिं आवै ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई । सो मोको नेकहु न सुहाई ॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढी । हरिके वचन सुनत[1] रतिबाढी ॥
मन मन कहत कबहुँ अपने घर । माखन खात लखौं सुंदर वर ॥
बैठे जाय मथनियां पाहीं । अपने करनि[2] काढिकै खाहीं ॥
मैं बरु देखहुं कहूँ छिपाई । कैसे मोघर जाहिं कन्हाई ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानें । ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानें ॥
गये श्याम ता ग्वालिनिके घर । ठाढे भये जाय द्वारे पर ॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं । तब पैठे[3] ताके घर माहीं ॥
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो । परममुदित अतिही सुख मान्यो ॥
रही दबकि दुरि डीठि[4] लगाई । हरिबैठे मथनी ढिग जाई ॥
देखी माखन भरी कमोरी । खान लगे करि अति मतिभोरी ॥

दोहा-चितै रहे मणि खम्भमें, हरि अपनी प्रति छाँहि[5] ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाहँ ॥

सो०-तासों करत सयान, कहत लेहु आधो तुमहुँ ॥
हम तुम एक समान, भलो बन्यो है संग अब ॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो । तुमको देखि बहुत सुख पायो ॥
अब तुम मेरे सँग नित आवो । यह काहूको मतिहि जनावो ॥
सुनि सुनि हरिके मुखकी बानी । उमँगि हँसी ब्रज युवति सयानी ॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी । भाजि चले ब्रज खोरि मुरारी ॥
अति आनँद ग्वालिन मनमाहीं । पूंछत सखी परस्पर ताहीं ॥
पायो आज परो कछु तैंरी । कहा तोहिं अति आनँद हैरी ॥
गद्गद कंठ पुलक तनुतेरो । सो किन कहै कहा सुख हेरो ॥

१ प्रीति । २ अपने हाथ । ३ घुसे । ४ दृष्टि । ५ प्रतिबिंब ।

करहु बियारू कछु दोउ भाई। पुनि तुमको राखौं पौढ़ाई ॥
सीरा पूरी सरस सँवारी। और धरी मेवा बहु न्यारी ॥
दीन्हीं परसि कनकको थारी। बलमोहन दोउ करत बियारी ॥
मिश्री मिलै दूध औटाई। लै आई तब रोहिणि माई ॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत। देखि देखि छवि नयन जुडावत ॥
खात खात मोहन अलसाने। बारहिं बार श्याम जमुहाने ॥
आरससों कर कौर उठावत। नैनन नींद झमकि झुकि आवत ॥

दोहा—उठहु लाल तब मातु कहि, धोये मुख अरबिन्द ॥
पौढ़ाये लै सेजपर, बल अरु बाल गोबिन्द ॥
सो०—सोये बाल मुकुंद, दोउ भैया सुख सेजपर ॥
जननी अति आनन्द, शोचत गुण गोपालके ॥

माखन मोहनको प्रियलागै। भूखो छिन न रहत जब जागै ॥
ताहि सदा जो गहरु लगावै। नहिं माने जो इन्द्र मनावै ॥
मैं हौं जानत बात श्यामकी। दृगलोभ्ये नवनीत खानकी ॥
लै मथनी दधि धर्यो बिलोई। जबलगि लालन उठहिं न सोई ॥
भोर भयो जागहु नँदनंदन। संग सखा ठाढे जगवंदन ॥
सुरभी पयहित बच्छ पियाये। पंछी तरु तजि चहुँदिशि धाये ॥
अरुण भाल उडुगण दुतिनाशी। निशितिमिर हटी रवि किरण प्रकाशी ॥
कुमुदिनि सकुची वारिज फूले। गुंजत मधुप लता लगि झूले ॥
दरशन देहु मुदित नर नारी। ब्रजवासी प्रभु जन सुखकारी ॥
सुनि जननीके वचन रसाला। खोले दृगराजीव बिशाला ॥
हँसत उठे संतन सुखदाई। मुखछवि देखि मातु बलिजाई ॥
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे। मैं माखन मथि धरेउँ सँवारे ॥

दोहा—रोटी अरु माखनतनक, देरीमा मोहिं हाथ ॥
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ ॥

---

१ सोनेकीथार। २ मुखकमल। ३ बलराम। ४ दूध। ५ तारे। ६ रात्रि। ७ सूर्य। ८ कुमुदनी। ९ कमल। १० भौंरा। ११ नेत्रकमल।

सो०–करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि ॥
त्रिभुवनपति सुखधाम, चार पदारथ हाथ जेहि ॥

अथ माखनचोरी लीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावै । और कछू अति रुचि नहिं आवै ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई । सो मोको नेकहु न सुहाई ॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढी । हरिके वचन सुनत रति[1] बाढी ॥
मन मन कहत कबहुँ अपने घर । माखन खात लखौं सुंदर वर ॥
बैठे जाय मथनियां पाहीं । अपने करनि[2] काढिकै खाहीं ॥
मैं बरु देखहुं कहूँ छिपाई । कैसे मोघर जाहिं कन्हाई ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानें । ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानें ॥
गये श्याम ता ग्वालिनिके घर । ठाढे भये जाय द्वारे पर ॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं । तब पैठे[3] ताके घर माहीं ॥
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो । परममुदित अतिही सुख मान्यो ॥
रही दबकि दुरि डीठि[4] लगाई । हरिबैठे मथनी ढिग जाई ॥
देखी माखन भरी कमोरी । खान लगे करि अति मतिभोरी ॥

दोहा–चितै रहे मणि खम्भमें, हरि अपनी प्रति छाँहिं[5] ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाहँ ॥
सो०–तासों करत सयान, कहत लेहु आधो तुमहुँ ॥
हम तुम एक समान, भलो बन्यो है संग अब ॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो । तुमको देखि बहुत सुख पायो ॥
अब तुम मेरे सँग नित आवो । यह काहूको मतिहि जनावो ॥
सुनि सुनि हरिके मुखकी बानी । उमँगि हँसी ब्रज युवति सयानी ॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी । भाजि चले ब्रज खोरि मुरारी ॥
अति आनँद ग्वालिन मनमाहीं । पूंछत सखी परस्पर ताहीं ॥
पायो आज परो कछु तैंरी । कहा तोहिं अति आनँद हेरी ॥
गद्गद कंठ पुलक तनुतेरो । सो किन कहै कहा सुख हेरो ॥

१ प्रीति । २ अपने हाथ । ३ घुसे । ४ दृष्टि । ५ प्रतिबिंब ।

तनु न्यारो जिय एक हमारो । हमैं तुम्हैं कछु भेद न न्यारो ॥
सुनहु सखी मैं तोहिं बताऊं । जो सुख भयो सो तोहिं सुनाऊं॥
यशुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी । आयो आजु हमारे चोरी ॥
खम्भ निकट मथनीको माखन । लियो निकासि लग्यो सो चाखन॥
मैंडुरि भीतर देखन लागी । वा मोहन छबि पर अनुरागी ॥

दोहा–देखि खम्भ प्रतिबिंबको, मन कछु सकुचे श्याम ॥
अर्द्ध भाग तेहि देन कहि, प्रगट करो जिन नाम ॥

सो०–तब न रह्यो मोहिं धीर, हँसी मनोहर वचन सुनि॥
कहा कहौं तुम बीर, मन हरि लीन्हों सांवरे ॥

मोहिंदेखि तब गयो पराई[1] ।सखि सो छबि कछु वरणि नजाई॥
सुनिहरि चरित सखी अनुरागी। अति सुख पाय प्रेम रस पागी ॥
कहतकि मैं देखन नहिं पायो । सोइ अभिलाष जासु उर छायो॥
हरि अन्तर्यामी सब जानैं । सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥
इहिविधि माखन प्रथम चुरायो । कीन्हों ग्वालिनिको मनभायो ॥
भक्त बछल संतन सुखकारी । पुनि मनमहँ यह बात विचारी ॥
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं । माखन चोर नाम कहवाऊं ॥
बालरूप मोहिं यशुमति जानैं । ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानैं ॥
मित्रभाव करि ग्वाल बखानैं । प्रीति रीति सब मोसों मानैं ॥
इनहींके हित गोकुल आयो । करों सबनके मनको भायो ॥
यह विचार हरि निज उर ठाना । भक्ति कृपा अम्बुधि भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई । तिनसों हँसि हँसि कहत कन्हाई॥

दोहा–माखन खइये चोरिकै, सब ब्रज घर घर जाय ॥
कीजे बाल विहारयों, मेरे मन यह आय ॥

सो०–सुनि हरषे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब॥
भली कही नँदलाल, तुम विन यह बुधिको करै

चले सखन लै माखन चोरी । एक वयस सबहिन मति भोरी ॥

१ छिपीभई । २ भाजगयो । ३ आनंद । ४ भक्ति और कृपाके समुद्र ।

देख्यो झांकि झरोखा ओरी। मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी॥
धर्यो मठा मथनीमें जालो। ऊपर माखनहै लपटानो॥
ग्वालिनि गई कमोरी मांगन। पाई घात तबहिं सुन्दर घन॥
सखन समेत तांहि घर आये। दधिमाखन सबहिन मिलि खाये॥
छूँछी मटुकी छांड़ि सिधाये। हँसत हँसत सब बाहर आये॥
आयगई द्वारे सोइ बाला। घरसों निकसत देखे ग्वाला॥
माखन कर मुख दधि लपटानो। ग्वालिनि यह कछु भेद न जानो॥
देखिरही हँसि मुखकी शोभा। निरखि रूप लाग्यो मन लोभा॥
चमेकि गये हरि सखन समेता। तबहीं ग्वालिनि गई निकेता॥
देखी जाय मथनियां खाली। चकित विलोकत इत उत ग्वाली॥
मन हरि लीन्हों मदन गोपाला। जान्यो ग्वालिनि हरिके ख्याला॥

दोहा—घर घर प्रगटी बात यह, सखावृन्द लै साथ॥
चोरी माखन खातहैं, नन्दसुवन ब्रजनाथ॥
सो०—सबके मन अभिलाष, चोरी पकरन पाइये॥
धरियो माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये॥

कहत परस्पर ग्वालि सयानी। सब मोहनके रूप लुभानी॥
माखन खान देहु गोपालहि। मत बरजो कोउ श्याम तमालहि॥
तुम जानत हरि कछू न जाने। वे मोहनहैं परम सयाने॥
कोऊ कहत पकर जो पाऊं। तो अपने गहि कंठ लगाऊं॥
एक कहत जो मेरे आवैं। तौ माखन हम हरिहि खवावैं॥
कहत एक जो मैं गहिपाऊं। तौ हरिको बहु नाच नचाऊं॥
कोउ कहत जो हरिको पैये। तौ गहि यशुमतिपै लै जैये॥
इक कह आजु हमारे आये। द्वारहिते मोहिं देखि पैराये॥
इहि विधि प्रेम मगन सब बाला। सबके हृदय ध्यान नँदलाला॥
निशि बासर नहिं नेक विसारैं। मिलिबे कारण बुद्धि विचारैं॥
गये श्याम सूने ग्वालिनि घर। सखा सबै ठाढे द्वारे पर॥

१ भाजगए। २ सखासमूह। ३ भाजगए। ४ दिन रात।

देख्यो भीतर जाय कन्हाई । दधि अरु माखन धर्यो मलाई ॥

दोहा–सद माखन देख्यो धर्यो, हरषे श्यामसुजान ॥
सखा बुलाये सैनदे, लै लै लागे खान ॥

सो०–इत उत चितवत जात, कछु संशय मनमें किये ॥
बाँटत दधि अरु खात, उठि उठि झांकत द्वारतन ॥

देखतसो ग्वालिनि अंतरकरि । मगनभई अति उर आनँद भरि ॥
लीन्ही बोलि सखी ढिग बासी । तिन्हैं दिखावत हरि सुखरासी ॥
देखि सखी शोभा अति बाढ़ी । उठि अवलोकि ओटकै ठाढ़ी ॥
किहिविधिसों दधि लेत कन्हाई । सखन देत अरु आपन खाई ॥
बदन समीप पाणि अति राजै । माखन सहित महाछवि छाजै ॥
लै उपहार जलज मनुजाई । मिलत चन्द्रसों बैर बिहाई ॥
गिरि गिरि परत बदनते ऊपर । दुइ दधिसुतके बुन्द सुभगतर ॥
मनौ प्रलय जल आगम हरषत । इन्दुसुधाके कणका बरषत ॥
मुखछबि देखि थकित ब्रजनारी । कहत न बनै रही उरधारी ॥
बालविनोद मोद मन फूलीं । भई शिथिल सब तनु सुधि भूलीं ॥
बरजनको स्फुरत न बानी । रही विचारि विचारि सयानी ॥
गये ठगोरी लाय कन्हाई । रहीं ठगीसी सब सुखपाई ॥

दोहा–विश्व भरण पोषण करण, कल्पतरोवर नाम ॥
सो प्रभु दधिचोरी करत, प्रेम विवश सुखधाम ॥

सो०–नित उठि करत विहार, ब्रजमें घर घर साँवरो ॥
ब्रजजन प्राणअधार, माखन चोरी व्याजकरि ॥

श्याम एक ग्वालिनि घर आये । चोरी करत पकरि तिन पाये ॥
कहत करी तुम बहुत ढिठाई । अबतौ बात परेखै आई ॥
निशि वासर मोहिं बहुत खिझायो । दधि माखन सब ऐसे खायो ॥
दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहौ । दधि माखन दै छूटन पैहौ ॥

१ हाथ । २ कमल । ३ माखन । ४ मानोंचंद्रअमृतकीबूंद वर्षेहै । ५ माखनचोरीके मिसकरके ।

ताके मुखतन चितै कन्हाई। बोले वचन मधुर मुसुकाई ॥
तेरीसौं मैं छुयो न राई। सखा खाय सब गये पराई ॥
चारु चितौनि चित्त उरझानो। उरते रोष जात नहिं जानो ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां। लिये लगाय ग्वालिनी छतियां ॥
बैठो श्याम जाउँ बलिहारी। मैं लाऊं दधि खाउ विहारी ॥
हरिको लेन चली दधि गोरी। हरिहँसि निकसि गये व्रजखोरी॥
रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी। मन लैगयो साँवरो चोरी ॥
हरिगये और ग्वालिनीके घर। देख्यो जाय न कोऊ भीतर ॥

दोहा–माखन काढि निशंक ह्वै, लागे खान कन्हाय ॥
ग्वालिनि आवत जानिघर, तब उठि रहे छिपाय॥

सो०–ग्वालिनि घरमें आय, मथनी ढिग ठाढ़ी भई ॥
भाजन रीतो पाय, चकित विलोकति चहूं दिशि॥

अबहिं गई आई इन पावन। आयो माखन कौन चुरावन ॥
भीतर गई तहां हरि पाये। पकरी भुजा भये मन भाये ॥
तब हरि कहि निज नाम लजाये। नयनसरोज[1] कछुक भरि आये ॥
देखि बदन छबि आनँदहीके[2]। दीन्हें जान भावते जीके ॥
भयो ग्वालिमन परमहुलासा। कहन चली यशुमतिके पासा ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई। हँसिहौ सुनि हरिकी लरिकाई ॥
आजगये हरि मो घर चोरी। देखी माखन भरी कमोरी ॥
मैं गइ आन अचानक जबहीं। रहे छिपाय सकुचिकै तबहीं ॥
जब मैं कह्यो भवनमें कोरी। तब मोहिं कहि निज नाम निहोरी॥
लगे लेन लोचन[3] भरि आंसू। तब मैं कानन तोरी सांसू ॥
सुनत श्याम सब रोहिणि कनियां। सकुचत हँसत मंद मुसुकनियां॥
ग्वालि विहँसि हरितन डरपायो। माखनचोर पकरि मैं पायो ॥

दोहा–करौ नोयकी दामरी, बांधो अपने धाम ॥
लाय लिये उर रोहिणी, बाँधि सकै को श्याम ॥

१ नेत्रकमल। २ आनंद। ३ नेत्र।

सो०—यशुमति उर आनन्द, बालचरित सुनिश्यामके ॥
कहत सुनो नँदनन्द, ऐसो काम न करहु सुत ॥

पुनि इक गृह गए नन्ददुलारे। देखि फिरे तहँ ग्वाल दुआरे ॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई। फांदि परे पिछवारे जाई ॥
सूनो भवन कहूं कोउ नाहीं। मानहु इनको राज सदाहीं ॥
भांडे मूंदत धरत उतारत। दधि अरु माखन दूध निहारत ॥
रैनिजमायो गोरस पायो। लगे खान मनु आप जमायो ॥
आहट सुनि युवती घर आई। झलकत देखे कुँवर कन्हाई ॥
अँधियारे घर श्याम गये दुरि। दधि मटुकी ढिग बैठि रहे मुरि ॥
सकल जीव उर अंतरवासी। तहां कछुक चेटक परकासी ॥
ग्वालिनि हरिको इत उत हेरे। पावत नाहीं धाम अँधेरे ॥
कहति अबहिं देख्यो नँदनंदन। कितहि गयो पछतात मनहिं मन ॥
परिगये दीठि ओट मथनीके। सुन्दर श्याम प्राण गथनीके ॥
तबहीं ग्वालिनि भुज गहि लीन्हों। कहत तुम्हैं अब तो मैं चीन्हो ॥

दोहा—कहौ कहा चाहत फिरत, धाम अँधेरे माहिं ॥
बूझे बदन दुरावते, सूधे चितवत नाहिं ॥

सो०—दधि मथनीमें हाथ, अबका उतर बनाइ हौ ॥
सखा नहीं कोउ साथ, कहिये अब कैसी बनै ॥

मैं जान्यो यह घरहै मेरो। ता धोखे इत ह्वैगयो फेरो ॥
दृष्टिपरी चींटी दधि माहीं। काढनि लग्यो तिन्हैं इहिं ठाहीं ॥
सुनि मृदुवचन ग्वालि मुसकानी। तुमहौ रतिनागर हम जानी ॥
उरलगाय मुख चुंबन कीन्हो। विधिहि मनाय बिदा करि दीन्हो ॥
हरि दरशन बिन क्षण न सुहाई। उरहन मिस यशुमतिपहँ आई ॥
सुनहुमहरि निजसुतकी करणी। करत अचगरी जात न बरणी ॥
नितप्रति करत दूध दधि हानी। कहँलगि करैं कान नँदरानी ॥

---

१ एकघरमें। २ रातकोजम्यो। ३ छिपगए। ४ दृष्टि। ५ दुबको हो। ६ नम्र।

मैं अपने मन्दिर अँधियारे। माखन धर्‍यो दुराये सँवारे॥
सोई ढूंढि लियो हरि जाई। अति निशंक नहिं नेक डराई॥
बूझे उत्तर तुरत बनावै। चींटी काढनको करनावै॥
सुनि ग्वालिनिके वचन सयानी। हँसिकै बोध कियो नँदरानी॥
यशुमति कहत श्यामसों प्यारे। परघर काहे जात ललारे॥

दोहा–मम लोचन आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय॥
तुम्हरे बाल विनोद लखि, मेरोहियो सिराय॥
सो०–मोपै लीजे श्याम, दधि माखन मेवा मधुर॥
सब कछु तेरे धाम, परघर जाय बलाय तुव॥

माखन मांग्यो कुँवरकन्हाई। मुदित मातु तुरतहिं लै आई॥
लगी खवावन हिय हरषानी। श्याम कह्यो खैहौं निज पानी॥
दियो हाथ धरि भरिकै दोना। चले खात खेलत हरि लोना॥
सखन संग खेलत वनमाली। यमुना जाति सखी इक ग्वाली॥
आपचली ताके घर माहीं। पूंछत बात कौनहै काहीं॥
लेखे तहां शिशु दोय अयाने। भीर देखते रोय डराने॥
इत उत देख्यो गोरस नाहीं। ऊंचे धर्‍यो सिकहरेन माहीं॥
तब मनमोहन रच्यो उपाई। आनि तहां ऊखल औंधाई॥
तापर एक सखा बैठारी। ताके कंध चढे बनवारी॥
ऐसी विधि करि गोरस पायो। दधि माखन सबही मिलिखायो॥
दूध डारि बछरू सब छोरे। दिये निकासि बनहिंकी ओरे॥
मँही छिरक लरकन डरपाई। चले अग्रकरि सखा कन्हाई॥

दोहा–ग्वालिन आवत देखिकै, सखागये सब दौरि॥
फँसि भीतर मोहन परे, रोंकि लई तिन पौरि॥
सो०–रोष भरी मुख बात, प्रेम भर्‍यो अन्तरहियो॥
कहत महरके तात, जात कहां दधि चोर अब॥

१ छिपाय। २ मेरी आंखिनके आगे। ३ अपने हाथन। ४ देखे। ५ दोबालक। ६ छीकेपर। ७ दूधकी छीटादेके।

तब हरि ताके सुखतन देखी । कीन्हे उरनख घात विशेखी ॥
अति रिस ग्वालिनि मन उपजाई । दोउ भुज पकरि महरिपै लाई ॥
मानौ महरि कह्यो तुम मेरो । अति उतपात करत सुत तेरो ॥
राख्यो गोरस छिके चढाई । ग्वाल कन्ध चढि लिये कन्हाई ॥
माखन खाय दूध ढरकायो । मही छिरक बालकन रुवायो ॥
और कहत सकुचतहौं बाता । कहा दिखाऊं तुमको गाता ॥
हैं गुण बड़े श्यामके माई । इहां सकुचि लरिका है जाई ॥
बरजत क्यों नहिं सुतहि अनेरो । कहा अहो नितप्रतिको झेरो ॥
जो कछु राखै दूरि दुराई । तहीं तहीं ते लेत चुराई ॥
तापर देत बछरुवन छोरी । वन वन फिरत बही चहुँ ओरी ॥
चोरी अधिक चतुर बनवारी । सुनहु महरि हम इनते हारी ॥
कहँलगि इनके गुणन बखानों । तुम इनको सूधो मति जानों ॥

दोहा—सुनत ग्वालिनीके वचन, यशुमति हरि तन देखि ॥
भये सकुच युत मुख निरखि, कोमल ललित विशेखि ॥

सो०—कहत लगावत लोग, झूंठहि सब मेरे सुतहि ॥
कब भये चोरी योग, पांच वरषके तनिकसे ॥

इहिमिसि देखनको सब आवैं । चोरी मेरे सुतहि लगावैं ॥
ऐसो तो मेरो न अन्याई । अतिही बालक कुँवर कन्हाई ॥
छीके बँधे भवन अति ऊंचे । तहँ इनकी कैसे भुज पहुँचे ॥
कौन वेग इतनो है आयो । तेरो गोरस कैसे खायो ॥
हाथ नचावत आवत दौरी । जीभन करहि समुझिकै बौरी ॥
घरही माखन भरी कमोरी । कबहूं लेत न अँगुरिन बोरी ॥
इतनी सुनत निरखि घनश्यामैं । विहँसि चलीग्वालिनि निज धामैं ॥
हरिसों कहति महरि समुझाई । मैं बलि कहुँ जिन जाहु कन्हाई ॥
तुम्हरे कारण षटरस नाना । करि करि राखौं विविध विधाना ॥
इते उपाय करत कितजाई । परघर दधि माखनहिं लगाई ॥

१ छातीमें नखनके चिह्न । २ छः प्रकारके व्यंजन ।

व्रजकी बाढ़ी ग्वालि गँवारी। हाट बाट दधिबेचनहारी॥
नहिंकछु लाज नकान विचारैं। बोलत वचन कटुक मुहँ फारैं॥

दोहा–झूंठो दोष लगायके, नित उठ आवत प्रात॥
सन्मुख वादति शंक तजि, विकट बनावत बात॥

सो०–नौलख दुहियत गाय, दूध दही तेरे घनो॥
तूकित चोरी जाय, बुरो मानिहैं नन्दसुनि॥

हरिमाखन चोरी रस गीधे। कैसे रहैं प्रेमके बीधे॥
एक ग्वालि घर माँझ अँधेरे। अति श्यामल तनु परत नहेरे॥
कछुकधरो गोरस तहँ पायो। प्रथम सुरुचिकर भोगलगायो॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली। तहँ देखे भीतर वनमाली॥
भुजा चार धरि दरश दिखायो। ग्वालिनि लखि अति अचरजपायो॥
दखि माखनके बूंद सुहाये। सुभग श्याम उर अति छबिछाये॥
मानहु यमुना जलके माहीं। देखि परत उडगण परछाहीं॥
इहि छबि निरखि रही छकि ग्वाली। बहुरो भये द्विभुज वनमाली॥
देखि चरित हरषीं ब्रजबाला। चकित विलोकति हर्ष विशाला॥
मन मन कहति कहा मैं देख्यो। यह जाग्रतकै स्वप्न विशेष्यो॥
प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली। गद्गद कंठ रोमावलि फूली॥
मन हरि लीनो रूप दिखाई। चले वहांते कुँवर कन्हाई॥

दोहा–देखि श्यामके चरित तब, ब्रजनारी सुख पाय॥
होहिं हमारे पुरुष हरि, माँगहि विधिहिं मनाय॥

सो०–घर घर करत बिलास, नाना भेष दिखाय हरि॥
ब्रज जन परमहुलास, देखि चरित गोपालके॥

देखी श्याम ग्वालि इक ठाढ़ी। गोरस मथति प्रात छबिबाढ़ी॥
डोलत तनु उघर्यो शिर अंचल। वेणी चलत पीठपर चंचल॥
यौवन मदमाती इठिलानी। करषत रज्जु दुहुँ करन मथानी॥
इत उत अंग मोर झक झोरी। गोरे अंग दिननकी थोरी॥

१ बजारमें। २ झोटा। ३ प्रेमपगे। ४ तारागण। ५ विधाता।

मढी उरोजन अँगिया गाढी । मनहुँ काम साँचे भरि काढी ॥
रीझि रहे लखि नन्ददुलारे । लागे खेलन तासु दुआरे ॥
फिरि चितई ग्वालिनि द्वारेतन । परिगये दृष्टि श्याम सुन्दर घन ॥
बोलि लिये हरुवे सूने घर । लिय लगाय उरसों सुन्दर बर ॥
उमँग अंग अँगिया उर दरकी । तिहिं अवसर सुधि रही न घरकी
तबहीं सुन्दर श्याम सुजाना । भये बरस द्वादश[2] अनुमाना ॥
सो छबि देखि छकी ब्रजनारी । बहुरि भये शिशुरूप[3] निहारी ॥
हरिके कौतुक[4] अति सुखदाई । देखि रही मति गति बिसराई ॥

दोहा–माखन लै तब श्याम मुख, धरत आपने पान ॥
अति आनंद उमंग उर, बिसरीग्वालि सुजान ॥

सो०–रसिक शिरोमणि श्याम, माखन खाय रिझायतिय ॥
आये अपने धाम, छबिसागर नागर नवल ॥

मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । बिन देखे क्षण रह्यो न जाई ॥
उरहनके मिस ग्वालिसयानी । आई देखन हरि सुखदानी ॥
सुनहु महरि सुतके गुण जैसे । कहा कहौं कहि जात न तैसे ॥
माखन खाय मही ढरकायो । चोली फारि अबहिं भजि आयो ॥
गोरस हानि सही लै माई । अब कैसे सहिजात खुटाई ॥
बीचहिं बोलि उठे बनवारी । झूंठहिं मोहिं लगावत ग्वारी ॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई । दोउ भुज भरि लीनो उरलाई ॥
मेरे कर अपने उर धारी । आपुनहीं चोली पुनि फारी ॥
माखन आपहिं मोहिं खवायो । मैं कब दही मही ढरकायो ॥
अति भोरी सुनि हरिकी बानी । यशुमति ग्वालिन सों रिसियानी ॥
जानति हूं जु कटाक्ष तिहारौ । अति भोरो सुत मेरो बारौ ॥
दैदै दगा बुलावति ताही । सोइ सोइ करत जो भावत जाही ॥

दोहा–बोलि बोलि निज निज भवन, भेंटति भरि भरि अंक ॥
भोरे भोरे बालको, ग्वालिनि निलज निशंक ॥

१ धीरेधीरे । २ बारहवर्षके । ३ बालकरूप । ४ चरित्र । ५ बावरीसी ।

सो०–तापर उरनेखलाय, फिरत दिखावति लाजतजि ॥
कान्हहिं दोष लगाय, आपुन अति भोरी भई ॥
नित उठि उरहन लै उठि धावैं । बिना भीतिही चित्र बनावैं ॥
मिस करि करि मेरे गृह आई । रहत श्याम तनु दीठि लगाई ॥
मेरो पाँच वर्षको कान्हा । अजहुँ रोय पय माँगत नान्हा ॥
कहँ तू यौवनकी मदमाती । हरिके संग फिरत अठिलाती ॥
ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना । मनहरि लीन्हो राजिव नैना ॥
आवत रोष प्रीति मनमाहीं । उत्तर देत बनत कछु नाहीं ॥
कछुअ न उत्तर कहि रिसियाई । चली भवन उर राखि कन्हाई ॥
यशुमति यहै सिखावति श्यामहिं । कितहो जात पराये धामहिं ॥
ये सब गोरसकी मदमाती । फिरत ढीठ ग्वालिनि इतराती ॥
नित उठि उरहन देत बिहाने । मुख सँभारि नहिं बात बखाने ॥
रुचि उपजै तुम्हरे मन जोई । मोपे माँगिलेहु किन सोई ॥
कहि कहि मधुर वचन निज ताता । सुख उपजावत मेरे गाता ॥
दोहा–अपनेहिं आँगन खेलिये, सखन सहित दोउभाय ॥
मोहिं सुख दीजै आपने, बालविनोद दिखाय ॥
सो०–सुन्दर घन ब्रजनाथ, कोटि काम शोभा हरण ॥
गोप बालले साथ, करत बाललीला ललित ॥
मथुरा जात लखी इक ग्वाली । चर्चि लई ताको बनमाली ॥
बैठि रहे ताके पिछवारे । सखा संगलै नंददुलारे ॥
कहति परोसिन सों समुझाई । सुनि लीन्हों सो कुँवर कन्हाई ॥
बेंचन जाति सखी हों दहियो । तौलौ मेरे घर तन चाहियो ॥
सद माखन द्वैमाट धरोई । सौंपि जाति हौं तोको सोई ॥
डरतो और कछू ब्रज नाहीं । नंदसुवन सखि आय न जाहीं ॥
योंकहि चली ग्वालिनी जबहीं । सखन सहित हरि पैठे[७] तबहीं ॥

---

१ छातीमें नह्व मारिके । २ विनाभीतके चित्र बननो असंभवहै ऐसेही मेरे लालाने तेरी छातीमें नह्व मारा सो असंभवहै । ३ टिकिटिकी लगाय देखे है । ४ कमलनेत्र । ५ प्रातःकाल । ६ जानलीनी । ७ घुसे ।

कछु ग्वालनकी आहट पाई । सोपुनि फेरि घरहि फिरि आई ॥
देखि सखा सब चले पराई । पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई ॥
औरन जानि जान मैं दीन्हें । तुम कित जात अचकरी कीन्हे ॥
बाँह पकरि लै चली लिवाई । कहत यशोमति देखहु आई ॥
उरहन देत सदा रिसमानों । अब अपनो सुत आय पिछानो ॥

दोहा–वहै उरहनो नित्यको, सत्य करनके काज ॥
मैं गहिल्याई श्यामको, बाँह पकरिकै आज ॥

सो०–हरि बैठे निज धाम, खेलत जननीके निकट ॥
कौतुक निधि घनश्याम, करत चरित संतन सुखद ॥

यशुमति सुनि ग्वालिनिकी बानी । देखन चली सुतहि अकुलानी ॥
गये तहां है सुता पराई[1] । देखि यशोमति अतिरिसियाई ॥
तेरे आँखिन मतिहियँ[2] नाहीं । दृगन देखि पहिचानत नाहीं ॥
देखहुरी याकी गति माई । या कन्याको कहत कन्हाई ॥
तैं जो मेरे सुतको नामा । सूधो करि पायो है श्यामा ॥
तुगहि बाँह कौन को ल्याई । खेलत मेरे धाम कन्हाई ॥
रही बाल हरिको मुख चाँही[3] । समुझि समुझि मनमें पछिताही ॥
बाँह पकरि मैं घरते ल्याई । कीन्हें कैसे चरित कन्हाई ॥
जात बनैना कछु कहि आई । रही ग्वालि ठगिसी सकुचाई ॥
महरि कहत चलि जाहि इहांतें । मैं जानत सब तुम्हरी बातें ॥
हरिके चरित कहा कोउ जानै । ग्वालिनि तन दुरि मुरि मुसकानै ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली । बुधि करि जीते श्याम तमाली ॥

दोहा–चतुरि गये इक ग्वालिवर, मनमोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम ॥

सो०–सब घर लियो ढँढोरि, माखन खायो चोरि हरि ॥
भाजन डारे फोरि, गोरस दियो लुढाय महि ॥

---

१ पराईबेटी । २ तेरी हियेकी आँखि नहीं रही । ३ देखत ।

सोवसि लरिकन चुटकि जगाये। महीछिरकि डरपाय रुवावे ॥
बड़ो माट इक घीको पेखो। बहुत दिननको चिकनो चोखो॥
सोऊ फोरि कियो बहु टूका। चले हँसत सब मिलिदैकूका ॥
आइ गई ग्वालिनि तिहि काला। निकसत धरिपाये नँदलाला ॥
देख्यो घर बासन सब फोरे। रोवत बाल मही सों बोरे ॥
दोऊ भुज गाढेही लीन्हे। जाय महरि ढिग ठाढे कीन्हे ॥
कहति सरोष यशोमति आगे। अब पति रहिहै या ब्रजत्यागे ॥
ऐसे हाल किये गृह मेरे। सुनो महरि लक्षण सुत केरे ॥
माखन खाय दही ढरकायो । मही छिरकि बालकन रुवायो ॥
बासन फोरि धरे सब घरके। उपज्यो पूत सपूत महरिके ॥
घीको माट युगनको राख्यो। सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो ॥
चलौ दिखाऊं घरको हाला। राखहुबांधि आपनो लाला ॥

दोहा–जननी खीजति कान्हको, करत फिरत उत्पात॥
नित उठि उरहन सहतिहौं, तू नाहिं मानत तात ॥

सो०–बडे बापके पूत, चोर नाम प्रगट्यो जगत ॥
उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तातको ॥

जननीके खीझत हरि रोये। भरि आये नैननिके कोये ॥
झूठहिं मोहिं लगावत धगरी। मेरे ख्याल परी हैं सिगरी ॥
यशुमति रोवति देखि कन्हाई। वदन पोंछि लीनो उरलाई ॥
कहति सबै युवतिन यह भावै। नितही नित उठि मोरहि आवै॥
मेरे बारहि दोष लगावैं। झूठहि उरहन मोहिं सुनावैं ॥
कबहि गयो तेरे दरवाजे। दूध दही माखनके काजे ॥
धन माती इतराती डोलैं। सकुचति नाहिं सँभारि न बोलैं ॥
मेरो कान्ह तनक सों माई। ताहि रुवावत झूंठ लगाई ॥
कब हरि तेरो माखन लीनो। मेरे बहुत दैई को दीनो ॥
कहा भयो घर गयो तिहारे। छियो तनकदधि बालकवारे ॥

१ नोचकर। २ दही। ३ यशोदाके। ४ मेरेबालकको। ५ भगवानकोदीना।

ग्वालिन सुनि यशुमतिकी बानी। कहति महरि तुम उलटिरिसानी॥
नित उठि होय जासुकी हानी। सो क्योंकहे आन नँदरानी॥
दोहा-तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गाउँ॥
जहां बसे नहिं पति[1] रहै, तजनि कह्यो सो ठोउँ[2]
सो०-पूतहि देत पठाय, भडहाई घर घर करन॥
उरहन देत रिसाय, कोबसिहै ऐसे नगर॥
सखा भीरलै पैठत धाई। आपखाइ तो सहिये माई॥
जो कछु गोरस घरमें पावै। कछु डारे कछु सखन लुटावै॥
कहँ लों सहैं नित्यकी हानी। कबलौं करैं नंदकी कानी॥
इक दिन मेरे मन्दिर आयो। मोको देखत बदन बिरायो॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई। तबके गुण कहा कहौं सुनाई॥
भाजि रह्यौ दुरि देखत जाई। मैं पौढी अपने गृह आई॥
हरैं हरैं आये शिरहाने। चोटी पाटी बांधि परोने[3]॥
सुनि मैया याके गुण मोसों। ये सब झूठ कहतिहैं तोसों॥
खेलतते मोहिं लियो बुलाई। मोपै दधिकी चींटि कढाई॥
टहल करौं मैं याके घरकी। यह सोवै पति संग निःधरकी॥
सुनत वचन यशुमति मुसुकानी। ग्वालिनिहँसि मुख मोरिलजानी
सुनहु महरि सुतके गुणकाने। समुझहु है भोरे कै स्याने॥
दोहा-करत फिरत उत्पात अति, सब ब्रज घर घरजाय
नित उठि खेलत फागसी, गरियाँवतनलजाय[4]॥
सो०-बाहर तरुण किशोर, बोलत वचन विचित्र बर
इहां होत शिशु[5] भोर, तुम अचरज माननतनहीं॥
योंकहिगई ग्वालिनी धामहि। यशुमति पुनि पुनि सिखवत श्यामहि
घर गोरस जिनजाहु पराये। तातरिसात[6] उरहनो लाये॥
लघु दीरघता कछु नहिं जानै। झगरो आय झूंठ तबठानै॥

---

१ लाज। २ ठौर। ३ भाजगए। ४ गारी देवेमें नेकलाज नहींकरे। ५ बालक। ६ नन्दबाबा।

नौ लख धेनु दूध की तेरे। और बहुत बन चरैं अनेरे॥
तू कित माखन खात चुराई। छांड़ि देहु अब यह लरिकाई॥
यों कहि जननी कंठ लगायो। सुन्दर श्याम हर्ष तब पायो॥
खेलन गये बहुरि नँदलाला। किये जाय पुनि सोइ ख्याला॥
अपर ग्वालि उरहनलै आई। आई यशुमति पै रिसयाई॥
तेरो सुत मम माखन खायो। सखनसहित अबहीं भजिआयो॥
मैंगइ यमुन भरनको पानी। दुपहर दिवस सून घरजानी॥
गयो भवनमें खोल किवाँरी। छीकन ते दधि लियो उतारी॥
खाय लुटाय बहाय परानै। वारक ढूबरजौ नहिं मानै॥

दोहा—कीन्हों अतिही लाडलो, लाड लड़ाय बहूत॥
अबहीं ते ये ढँग करत, जायो नोखो पूत॥
सो०—सुनि ग्वालिनिके बैन, कहत यशोमति कान्हसों॥
सिखयो मानत नैन, लै साँठिया डाटति भई॥

माखन खात पराये घरको। मेरे रहत जहाँ तहँ ढरको॥
नितप्रति मथियत सहसमथानी। तेरे कौन वस्तुकी हानी॥
कितने अहिर जियत घरमेरे। बेंचत खात मही बहुतेरे॥
पूत कहावत नन्द महरिको। चोरी करत उघारत फरको॥
मैया मैं नहिं माखन खायो। मेरे बदन सखन लपटायो॥
भाजन ऊंचे छिकन चढायो। समुझ देखि मैं कैसे पायो॥
मैं ये नान्हें हाथ पसारी। किहि विधि माखन लियों उतारी॥
मुख दधि पोंछत कहत कन्हाई। दोना पाछे पीठि दुराई॥
डारि सांटि यशुमति मुसुकानी। गहि उर लाय लिये सुखदानी॥
बाल विनोद मोद मन मोह्यो। निरखत वदन त्रास युत सोह्यो॥
भक्ताधीन वेद यश गावै। सोहरि भक्ति प्रताप दिखावै॥
यशुमतिको मुख निरखि अगाधा। बिसरी शिव मुनि ब्रह्म समाधा॥
दोहा—धन ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रजकी गाय॥

जिनको माखन चोरि हरि, नित उठि घर घर खाय ॥
सो०-रहे सकल सुरभूल, ब्रजविलास हरिको निरखि ॥
हरषहिं बरषहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥
आई कहत और इक ग्वाली । सुनहु यशोमति सुतकीचाली ॥
भाज गये मम भाजन फोरी । माखन खाय मही महि ढोरी ॥
हाँक देत पैठत घरमाहीं । काहू विधि कर मानत नाहीं ॥
सखा संग कीन्हें इक ठौरी । नाचत फिरत साँकरी खोरी ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै । गारी दैदै सबन बुलावै ॥
गोरस हानि करत है सिगरौ । कहँलगि कीजै नित उठि झगरौ ॥
घरघर करत फिरत सुतचोरी । ऐसीविधि बसिहै ब्रजकोरी ॥
सुनत गोपिका की रिसबानी । कहत श्याम सों नंद किरानी ॥
तू नहिं मोहिं डरात मुरारी । बकत बकत तोसों पचिहारी ॥
षटरस भरे धरे घरमाहीं । सो तू खात पियत क्यों नाहीं ॥
परघर चोरी को नितजाई । देत उरहनो ग्वालि सदाई ॥
मोको कृपण कहत सब आई । तेरे घर ढोटहु न अघाई ॥
दोहा-सुनि सुनि लाजनि मरति मैं, तूनहिं मानत बात॥
अबतोहिं राखों बाँधिकै, जानी तेरी घात ॥
सो०-सुनिरी ग्वालिनिबात, कहे देत अब तोहिंमैं ॥
जबहीं पावहु घात, मेरी सौं यहिमारियौ ॥
अबते मोको बहुत खिजाई । सौंटिन मारि करौ पहुनाई ॥
अजहूं मानि कह्यौ करि मेरौ । तू घरघर मति फिरै अनेरौ ॥
जननी रिस लखि श्याम डराने । अब नहिं जैहौं धाम बिराने ॥
यों कहि निकरि गये हरिद्वारे । खेलत सखन संग गलियारे ॥
तबहीं ग्वालि और इक आई । सो यशुमतिसों कहत सुनाई ॥
नंदमहरिसुत भलौ पढ़ायौ । ब्रजघर बीथिनि सोर मचायौ ॥
मारि भजत काहूके लरिका । खोलतहैं काहूको फरका ॥

१ सूम ।

काहूको दधि माखन खाई । काहूके घर करत भँडाई ॥
गारी देत सकुच नहिं मानै । गैल चलत हठ झगरौ ठानै ॥
कह कह हरिके गुणनि बतैये । तोसों उरहन देत लजैये ॥
कछु टोना सों पढ़िकर आई । जोइ भावत सोइ करत कन्हाई ॥
पीताम्बर ओढत शिरनाई । अंचल दै दै झुरि मुसुकाई ॥

दोहा-तेरीसौं तोसों कहति, मैं सकुचाति यह बात ॥
तेरो मुख हरि लखतिही, सकुचि तनिक है जात ॥
सो०-नेक दिखावहु आँखि, नहिं अबते यह ढँग भले॥
कब लगि कहिये राखि, करत अचकरी श्याम अति ॥

अथ दावरीबंधनलीला ॥

यशुमति सुनि हरिके गुणगाथा । रिस करि उठी साँटिलै हाथा ॥
कहति जो ऐसी रिसमें पाऊं । तो हरिकी गति तुमहिं दिखाऊं ॥
कैसे हाल करौं हरि केरे । लागे तात[1] आज है मेरे ॥
छाँडों नहीं आज बिन मारे । भये श्याम अब बहुत दुलारे ॥
इहि अन्तर आई इक गोपी । बांह गहे हरिकी मुख कोपी ॥
भलो महरि सूधो सुत जायो । चोली हार खोलि दिखरायो ॥
किन नहिं सुतको लाड लडायो । कौने नहीं कठिन करि जायो ॥
तेरो कछुक अधिकरी माई । बरजत नाहिंन नेक कन्हाई ॥
यशुमति हरिको भुज गहि लीन्हो। कहति बहुरि अपनो ढँग कीन्हो॥
हरुवै साँटिया ढेक लगाई । आज बांधि मेटौं लँगराई ॥
गहे भुजा सुतकी बितलानी । इत उत रजु[2] खोजत नँदरानी ॥
हरि जननी उर कोप निहारी । मनमन बिहँसत कौतुककारी ॥

दोहा-अग्नि प्रेरि त्रिभुवनधनी, दियो क्षीर उफनाय ॥
यशुमति लखि तजि हरि भुजा, लगी सँभारन जाय॥
सो०-इहि विधि भुजा छुडाय, दधि भाजन फोरन लगे ॥
माखन मुँह लपटाय, गोरस दियो लुढाय सब ॥

१ पिता । २ रस्सी ।

रिसमेरिस और उपजाई। जानि जननि अभिलाष कन्हाई ॥
देखि यशोमति अतिरिसि पागी। पकरि श्यामको बांधन लागी ॥
गर्व जानि नहिं दाम समाई। सब रजु द्वै आंगुरि घटि जाई ॥
पुनि पुनि यशुमति और मँगावै। हरिके तनु सब ओछी आवै ॥
देखि यशोमति अति रिसबाढी। मन पछितात ग्वालिनी ठाढी ॥
देखि सखी यशुमति बौरानी। हरिको बांधन चहत सयानी ॥
हरिको त्रिभुवनपति नहिं जाने। जिनते सकल कलेश नशाने ॥
अखिल ब्रह्मांड उदरमें जाके। बांधति महिर उदर रजु ताके ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी। इनहूं जिनकी गति नहिं जानी ॥
जलथल जिनकी ज्योति समानी। कही गर्ग सब प्रकट बखानी ॥
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई। ताहूपर परतीति न आई ॥
तिनहिं देख बांधति नँदरानी। अचरज कथा न जाति बखानी ॥

दोहा–आप बँधावत प्रेम वश, भक्तन छोरत फंद ॥
वदत वेद वाणी विदित, भक्त वछल नँदनंद ॥
सो०–जननिहिं अति रिस जान, यमला अर्जुन सुरतिकारि ॥
दीनबंधु भगवान, जनहित गये बँधाय प्रभु ॥

जननीके मनकी रुचि जानी। आप बँधायो शारँगपानी ॥
कहत यशोमति लै करडोरी। बांधों तोहिं सकैको छोरी ॥
लै लै रजु ऊखलसों जोरै। हरि लखि बदन नैन जल ढोरै ॥
यह सुनि ब्रजयुवती उठि धाई। देखि श्यामको सब मुसुकाई ॥
कहति इन्हैं कोऊ मत छोरो। बहुरि श्याम अब माखन चोरो ॥
ऊखल बांधि यशोमति डोरी। मारनको साँटिया करतोरी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी। विकल भई मन अति अकुलानी ॥
कहति यशोमतिसों सब गोपी। ऐसी कहा पूत पै कोपी ॥
कहा भयो जो बालक पाहीं। ढरक गई मथनी महि माहीं ॥
घर घर गोकुल दई दिवारी। तू बांधत हरिकी भुजकारी ॥

१ बावरी ह्वैगईहै। २ पैरमेंरस्सी। ३ इच्छा।

ऐसी तोहिं बूझियत नाहीं। गोरस लगि बांधत सुतवाहीं ॥
चूक परी हमते इहि भोरें। डरहन दियो बकस करजोरें ॥

दोहा–बार बार जोवत वदन, हुचकिन रोवत श्याम॥
वज्रहुते तेरो हियो, कठिन अहो नँद वाम ॥

सो०–कित रिस करति अचेत, छोर उदरते दाँवरी ॥
डार कठिन करबेत, लोचन भरि भरि लेत हरि ॥

जाहु चली अपने अपने घर। तुमहिं सबै मिल ढीठ कियो वर॥
बन्धन छोरनको अब आई। मोको मतिबरजो कोउ माई ॥
मोहिं आपने बाबा कीसों। अब न पत्याउँ श्यामको बीसों ॥
देखि चुकी मैं इनके ख्याला। उपजे बडे नंदके लाला ॥
मैं देवन हित पय औटायो। कोरी मटुकी दही जमायो ॥
जावन दियो न पूजन पायो। सो सब फोरि भूमि ढरकायो ॥
तिहि घर देव पितर कहु काके। भयो कान्हसों सुत घर जाके ॥
कहत एक सुन यशुमति बौरी। दधि कारण सुत बांधत दौरी ॥
तैं यह सीख कौनपै लीन्ही। इतनी रिस बालकपै कीन्ही ॥
जो अतिही अचकरो कन्हाई। तऊ कोखको जायो माई ॥
नेक देखि धौं हरिहि निहारी। कैसे डरत लकुटि उरभारी ॥
शोभित सजल सांवरे लोचन। नीरजदल अति ओस भरेजन ॥

दोहा–नमित वदन सूखत अधर, कछुकसकुचमें रोस ॥
सांझ होत जिमि बात वश, शोभित पंकज कोस ॥

सो०–निरखि नयन सुख देत, हरिपै सर्वसवारिये ॥
प्रकटे नंदनिकेत, को जानै किहि पुण्य वश ॥

एक कहति जो आयसु पाऊं। तौ माखन निज घरते लाऊं ॥
जिहि कारण कीनी रिस हरिते। अजहुँ न डारत सँटिया करते ॥
देखि डरात तोहिं हरिकैसे। सकुचत जलजशीत भय जैसे ॥

१ हाथजोरे। २ बीसो विश्वे नहीं पत्याउँ। ३ देवतोंकेलिये। ४ जैसे कमल-के पत्रनपर ओसकी बूंद। ५ जैसे सायंकालमें पवनकेमारे कमल नवि जायहै ।

वेगि छोरि बंधनपट त्यागी । ले लगाय उर श्याम सभागी ॥
कहन लगीं अब बढि बढि बानी । माखन मोहिं देतिहैं आनी ॥
मानों मेरे घर कछु नाहीं । तब नहिं उरहन देत लजाहीं ॥
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो । उरहन दै दै मूड़ पिरायो ॥
रिसहीमें मोको गहि दीनो । सबको ज्ञान जानि मैं लीनो ॥
बोली अपर एक ब्रजनारी । देखहु यशुमति सुतहि निहारी॥
मुख छबि कोटि चन्द्र बलिहारी । यहहैं साह कि चोर विहारी ॥
नाहिन तरुण किशोर कन्हाई । कितहिं करत इनसों रिस माई ॥
कहा भयो जो उरहन आने । बालक हरि अबहीं कहा जाने ॥

दोहा–श्रमित त्रमितजो त्रासते, चपल सजलदृग कोर ॥
मनहुँ मीन वंसी विधे, करत सलिल झकझोर ॥

सो०–लैउठाय उरधारि, छोरि उदरते दांवरी ॥
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदन गोपाल पर ॥

तेरो कठिन हियो है माई । कहत एक ग्वालिनि समुझाई ॥
ऐसो माखन दधि बहि जाई । बांधे कमलनयन जेहिलाई ॥
जो मूरति शिवध्यान लगावैं । सपनेहुँ सुर नहिं देखन पावैं ॥
निगमनहूं खोजत नहिं पाई । सोतैं दे करतार नचाई ॥
याही ते तू गर्व भुलाई । घर बैठे तेरे निधि आई ॥
काहूको सुत रोवत देषी । लेत धाय उरलाय विशेषी ॥
अब यह कित सीखी चतुराई । निजसुतसों इतनी कठिनाई ॥
कहत एक देखहु नँदनारी । कबके ऊखल बँधे मुरारी ॥
गयो क्षुधाते मुख कुम्हिलाई । अति कोमल तनु श्याम कन्हाई ॥
भई वेर बीते युगं यामा । हरिके निकट आय गो घामा ॥
तू लागी गृहकारज माहीं । है निर्दयी दया कछु नाहीं ॥
घरको काज इनहुँते प्यारो । यशुमति नेक न हृदय विचारो ॥

१पकरकर मोको दीनो । २ दूसरी । ३ जैसे वंसी लोहेकी बनी मच्छीपकरने-केकाटेमें फँसकर जलमछरी तलफै है ऐसे श्रम और त्रासते सजल चपल कृष्णकेनेत्रकोर प्रतीतहोयहैं । ४ दोपहर ।

दोहा–जलजलोल[1] लोचन सजल, भये त्रास ते दीन॥
चितवत तेरे बदन तन, मन मोहन आधीन॥
सो०–केतिक गोरस हान, जाको तोरत कान तू॥
वारि दीजिये प्रान, रोम रोम पर श्यामके॥

हरिको देखि सखा इक धायो। तिन हलधरसों[3] जाय सुनायो॥
अहो राम तुम्हरो लघु भैया। बांध्यो आज यशोदा मैया॥
काहूके लरिकाहिं हरि मार्‍यो। यशुमति पै तिन जाय पुकार्‍यो॥
तबते हरिहि बांधि बैठायो। छोड़ति नाहिन सबहि छुड़ायो॥
सो हम तुमहिं जनावन आये। हलधर सुनत तुरत उठिधाये॥
माता डरतहु अतिहि त्रसाये। हरिहि देखि लोचन भरि आये॥
कहत भले दोउ भुजा बँधाये। ऊखलसों बांधे हरि पाये॥
मैं बरजे कइ बार कन्हाई। अजहूं छोडि देहु लँगराई॥
दोउ कर जोरि कहतरी मैया। काहेको बांध्यो मेरो भैया॥
श्यामहि छोड़ि बांध बरमोहीं। और कहा कहिये अब तोहीं॥
मेरो प्राण अधार कन्हाई। ताकी भुज मोहिं बँधी दिखाई॥
कौन काज गोरस धन धामा। जिहि कारण बांध्यो घनश्यामा॥

दोहा–छुवत और जो तनु कोऊ, आज देखतो सोय॥
तू जननी कछु वश नहीं, जो कछु करे सो होय॥
सो०–तेरे वश हरि आहिं, को जानै किहि पुण्यते॥
तू पहिचानत नाहिं, गोरस हित बांधत हरिहि॥

सुनहु बात हलधर तुम मेरी। करन देहु सेवा इनकेरी॥
माखन खात परायो जाई। प्रगटत चोरी नाम कन्हाई॥
तुमहीं कहो कमी किहि केरी। नवनिधिकी मेरे घर ढेरी॥
हौं हारी बरजत दिनराता। मानत नाहिन मेरी बाता॥
कहा करौं हरि अतिहि खिझाई[2]। भयो बहुतही ढीठ कन्हाई॥
मेरो कह्यो तनक नहिं मानै। नित उठि टेक आपनी ठानै॥

१ कमल। २ चंचल। ३ दाऊजीसों।

भोर होत उरहन लै आवै । ब्रज युवतिनते मोहिं लजावै ॥
जहँ तहँ धूम मचावत जाईं । घरनहिं रहते क्षणक कन्हाई ॥
तुमहूं दोष देत हौ मोहीं । कान्हरते प्यारो दधितोहीं ॥
तोहिं तजि और कहो किहि मैया । औरको मेरो मान रखैया ॥
तेरी सों जननी सुन मोहीं । उरहन देत झूंठ सबतोहीं ॥
है सब ब्रजको श्याम पियारो । श्याम सकल ब्रजको रखवारो ॥

दोहा—दधि माखन पय कान्हको, कान्हाकी सबगाय॥
मोहूंको बल कान्हको, तू नहिं जानत माय ॥

सो०—बलदाऊकी बात, सुनि हँसिकै यशुमति कह्यो॥
तुम यक[1]मति दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित ॥

हरिहि देखि हलधर मुसकाने । यह तुम गति तुम विनको जाने
को तुम छोरन बांधन हारा । तुम छोरत बांधत संसारा ॥
कारन करन करत मनमाने । अति हित यशुमति हाथ बिकाने॥
असुर सँहारन जन दुखमोचन। कमलापति[2] राजीव[3] विलोचन ॥
भक्तनके वश रहत सदाईं । ताहीते कछुओ न बसाई ॥
हरि यमलार्जुन तरुतन हेरे । मनमें कहत दास ये मेरे ॥
अबहीं आजु इन्हें उद्धारौं । दुसह शाप मुनिवर[4] को टारौं ॥
इनहीके हित भुजा बँधाई । परसि विटप[5] अब देहुँ गिराई ॥
दारुण दुख इनको सब टारौं । इहि मिसिकरि बंधन निरवारौं ॥
भक्त वछल हरि दीनदयाला । करुणासिन्धु अगाध कृपाला ॥
भक्ताधीन वेद यश गावैं । पावन पतितनाम कहवावैं ॥
भक्तहेतु नाना तनुधारी । करत चरित भक्तन सुखकारी ॥

दोहा—ब्रजवासी प्रभु भक्ति हित, आप बँधायो दाम ॥
ताही दिन ते प्रकटहै, दामोदर सो नाम ॥

सो०—नंद नँदन घनश्याम, जन रंजन भंजन विपति॥
मेटत जिनको नाम, पाप शाप त्रय ताप दुख ॥

१ एकबुद्धि । २ लक्ष्मीपति । ३ कमलनेत्र । ४ नारद । ५ वृक्ष ।

यशुदा बाहेर छांडि कन्हाई। लगी मथन दधि भीतर जाई॥
कहत वचन रसरिस लपटाने। खात फिरत दधि धाम बिराने॥
षटरस छांड़ि आपने धामा। चोरी प्रकट करतहैं श्यामा॥
मारि भजत ब्रजलरिकन जाई। जहां तहां ब्रज धूम मचाई॥
रहौ तुमहु हलधर चुपसाधी। इनकी मेटन देहु उपाधी॥
ऊखलसों बांधे वनवारी। कहत यशोमति सों ब्रजनारी॥
कान्हहुँ ते तोहिं माखन प्यारो। अरी देखि तरसत हरिवारो॥
डारिदेहि मथनी नँदरानी। ह्वैहै हरिकी भुजा पिरानी॥
दूध दही हरिपै सब वारौ। मोहन जीवन प्राण हमारो॥
हरुये बोलि उठी नँदरानी। जाहु सबै तुम युवति सयानी॥
मैं खीझत लरिकहि गुण काजे। तुम कित झुरत दई बिनकाजे॥
लरिकहि त्रास दिखावत रहिये। अबहींते अवगुणनहिं चहिये॥

दोहा–युवति चलीं बिरुझाय सब, कहत यशोदहिं पोच॥
सूरखसों कहिये कहा, करत प्रेम वश शोच॥
सो०–कहा करैं बलि जाउँ,कहत चलीं सब श्यामसों॥
धरत यशोदहिनाउँ, अति कठोर मानत नहीं॥

तबहिं श्यामसुंदर यह ठानी। युवती धाम गईं सब जानी॥
गृहकारज जननी अटकायो। आप यमलअर्जुन पहँ आयो॥
परसत पात उठे झहराई। परे शब्द आघात सुहाई॥
उखरे मूल सहित अरराई। दिये धरणि दोउ तरुन गिराई॥
भये चकित सब ब्रजके बासी। रहे सकुचि तनु सुधि बुधि नासी॥
कोइ भूमि कोइ तकत अकासा। रहे घडीइक लौं जकि त्रासा॥
याही अन्तर युगल कुमारा। प्रगटे धनदतनय सुकुमारा॥
नारद शाप पाय दोउ भाई। भये हुते ब्रजमें तरुआई॥
हरिके परशत निजगति पाई। भये पुनीत मिटी जडताई॥
तिन्हें कृपालु अनुग्रह कीन्हो। चारि भुजाकरि दरशन दीन्हों॥

१ बांहदुखआई होयगी। २ खिसयानी हैके। ३ दोबालक। कुबेरकेपुत्र।

देखि दरश अति पुलक शरीरा। परे चरण दोउ बंधु अधीरा ॥
बारबार पदरज शिरधारी। जोरि पाणि स्तुति अनुसारी ॥
छं०–अनुसारि प्रस्तुति युगल प्रेमानँद मगनसन्मुखखरे ॥
जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धरि ध्यावत हरे ॥
जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे ॥
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे ॥
धनि धन्य व्रज धन गोप गोपी गाय दधि माखनमही ॥
धन्य गोविंद बाल लीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनोदित नित उठिधन्य अनखबढावही ॥
धन्य जननी बाँधि राखति जाहि वेद न पावही ॥
धन्य सो तरुजासुकोरजु श्याम भुजन बँधाइयौ ॥
धन्य सो तृण जासु ऊखल धनि सुजन गढि लाइयौ ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्हो अति अनुग्रहसो कियो ॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो ॥
अब कृपा करि देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै ॥
जहां जन्महिं कर्म्म वश तहँ एक तुम्हरी रति रहै ॥
दीनबन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीव्रज नाथजू ॥
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथजू ॥
दोहा–बार बार पदनाय शिर, बिनती प्रभुहि सुनाय ॥
प्रेम मगन निरखत वदन, हर्ष सहित दोउ भाय ॥
सो०–साधु साधु कहि नाम, भक्ति दान तिनको दियो
बिदाकिये घनश्याम, हर्षिगये निज पुर युगल ॥
वृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई। देखे अँजिर न कुँवर कन्हाई ॥
परे विटप महि लखि अकुलानी। श्याम दबे तुरुतर यह जानी ॥
आरत महरि पुकारन लागी। बांधे हरिमैं परमअभागी ॥
सुनत शोर व्रज जन उठि धाये। नन्द द्वार सब आतुर आये ॥

१ रस्सी। २ चरणकमल। ३ अलकापुरी। ४ आंगन।

देखि गिरे तरु मनहिं डराने। ढूंढत श्यामहिं अतिहि सकाने ॥
बारबार सब करहिं विचारा। गिरे कौन विधि विटप अपारा ॥
देख दुहुंतर बीच कन्हाई। रहे त्रसित ऊखल लपटाई ॥
धाय लिये भुज छोरि उठाई। ब्रज युवतिन उर लीन्हे लाई ॥
कहत सबै नन्दहि बडभागी। बचे श्याम कहुं चोट न लागी ॥
कबहूँ बांधत मारत कबहूं। देत दोष यशुमतिको सबहूं ॥
नयननीर भरि दौरि यशोदा। लियो लगाय कंठ भरि गोदा ॥
जरहु सोरिस जिन तुमको बाँध्यो।जरहु हाथ जिन जेवरि साँध्यो ॥

दोहा–नन्द मोहिं कहिहैं कहा, देखत तरुवर आय ॥
कुशल रहौ अब भ्रात दोउ, मैं लैमरहुँ बलाय॥

सो०–श्याम रहे लपटाय, अति सभीत उर मातुके ॥
बार बार बलि जाय, यशुमति मन पछितात अति ॥

ब्रज युवती लै लै उर लावैं। निरखि वदन तनमन सुख पावैं॥
मुख चूमत यह कहि पछिताहीं। कैसे बचे अगम तरु माहीं ॥
बड़ी आयु हरिकी है माई। जहां तहां विधि होत सहाई ॥
प्रथम पूतना मारन आई। पय पीवत वह तहां नशाई ॥
तृणावर्त्त लै गयो उड़ाई। आपहि गिर्यो शिलापर आई ॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो। सुनी कहति जिय छेत परान्यो ॥
शकटासुर पलना ढिग आयो। को जानै तिहि छणहिं गिरायो ॥
कौन कौन करवर विधि टारी। ऊखलसों बाँधे महतारी ॥
तहँतेउ उबर्‍यो आजु कन्हाई। ऊपर वृक्ष परे भहराई ॥
सबहिन पेलि करत मनभाई। पुण्य नन्दके बच्यो कन्हाई ॥
भुजपर बन्दन चिह्न निहारी। कहत यशोमति सों ब्रजनारी ॥
ये गुण यशुमति अहहिं तिहारे। सकुची महरि निरखि हरि प्यारे ॥

दोहा–तबहिं नन्द आये घरहिं, दोउ तरु गिरे निहारि ॥
श्याम चपल बाँधे सुने, देत महरिको गारि ॥

१ मैयाकी छातीतें। २ दृढवृक्ष।

सो०-बाँधतिहै बिन काज, मेरे हरि बारे सुतहि ॥
कुशल करी विधि आज, शोचत नँद लखि तरुवरन॥

तबहिं तात कहि धाय कन्हाई । लिये नंद कनियाँ सुखपाई ॥
चूमि बदन उरसों लपटाये । प्रेम पुलकि लोचन भरि आये ॥
मेरे लाल मैं तुम पर वारी । काहेको बांधे महतारी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी । चली नाहिं कहुँ तनक बयारी ॥
बार बार शोचत नँदराई । पूछत तैं कछु लख्यो कन्हाई ॥
श्याम कही मैं कछू न जानों । ऊखल ढिग मैं रह्यों छिपानों ॥
कहत नन्द हरि बदन निहारी । बड़ी आज विधि करवर टारी ॥
बहुत दान हरि हाथ दिवायो । द्विज चरणन लैलै सुत नायो ॥
देहिं अशीश विप्र सुखमानी । भये प्रसन्न नन्द सुनि वानी ॥
तबहीं श्याम जननि पहँ आये । हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
भूखो भयो आज मेरो बारो । काको मुखधौं प्रात निहारो ॥
लाई उरहन ग्वालिनि भिनहीं । यह सब कियो पसारो तिनहीं ॥

दो०-पहिले रोहिणि सों कह्यो, तुरत करो जिवनार॥
ग्वाल बाल सब बोलिकै, बैठे नन्दकुमार ॥

सो०-वेगि लाउरी मात, भूख लगी मोको बहुत ॥
आज न खायों प्रात, सुनत वचन यशुमति हँसी॥

रोहिणि चितै रही यशुमति तन । शिर धुनि २ पछिताति मनहिंमन॥
परसहु हरिहि विलम्ब न लावहु । भूखे हरि किन वेगि जिमावहु ॥
बहु व्यंजन बहु भांति रसोई । कहँ लगि वरणि कहै कबि कोई॥
परसत जाति यशोमति मैया । जेंवत श्याम सखा बल भैया ॥
जो जो व्यंजन यशुमति राखे । तनक तनक मोहन सब चाखे ॥
श्याम कही अब मात अघानो । अब मोको शीतल जल आनो ॥
अँचवन करि अँचये दोउ भैया । अति सुख पायो लखि दोउ मैया॥
सहित सुगंधि पान कर लीन्हे । बाँटि सकल ग्वालनको दीन्हे ॥

१ देख्यो । २ पेटभरगयो ।

खात खात दोऊ अलसाने । मुख जँभात जननी पहिचाने ॥
जल अँचवाय कमल मुख धोये । बांह पकरि पलका पौढाये ॥
सोवत राम श्याम दोउ भैया । हरुवे[1] पाँय पलोटति मैया ॥

दोहा–सोये श्याम सुजान हरि, सुखसों बीती रात ॥
बहुरि कलेऊके लिये, जननि जगाये प्रात ॥

सो०–दियो कलेऊ प्रात, माखन प्यारे श्यामको ॥
मुदित निरखि दिन रात, यशुमति हरिके चरितको॥

अथ वृन्दावनगमनलीला ॥

महर महरि यह मनहिं विचारी । गोकुल होत उपद्रव भारी ॥
जब ते जन्म भयो हरि केरो । नितहिं होत उतपात घनेरो ॥
आकस्मात[2] गिरे तरु भारी । बच्यो बडेनके पुण्य मुरारी ॥
ताते अब तजिये यह गाऊं । बसिये चलि कहुँ उत्तम ठाऊं ॥
नन्दराय तब गोप बुलाये । समाचार ये सबनि सुनाये ॥
सबहिनके मनमें यह आई । बसिये अनत कहूं अब जाई ॥
नितहि उपाधि नई जिहि ठाहीं । बसिबो भलो तहांको नाहीं ॥
नंद कही मैं मनहिं विचारी । है इकठाउँ बहुत सुखकारी ॥
वृन्दावन गोवर्द्धन पासा । तहँ सबको सब भांति सुवासा ॥
तहां गोपगण सब सुखपैहैं । बनमें गोधन वृन्द चरैहैं ॥
यह विचार सबके मनभायो । चलिवेको शुभ दिवस धरायो ॥
वृन्दावन सब चले गुवाला । पांच वर्षके मदन गोपाला ॥

दोहा–शकट[3] सौज सब साजिकै, गोधन दिये हँकाय॥
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दावन समुदाय ॥

सो०–निरखि अनूपम[4]ठाम, शकट दिये सब छोरिकै ॥
सबके मन वस श्याम, बसे सकल वृन्दा विपिन॥

बसे सकल वृन्दावन माहीं । अति आनंद गोप मनमाहीं ॥
गाय वत्स सबही सुखपायो । चरत निकट तृण हरित सुहायो ॥

१ धीरेधीरे । २ विनाकारण । ३ छकडा । ४ परमअद्भुत ।

हलधर धेनु चरावन जाहीं। मन मोहन लखि मनहि सिहाहीं॥
प्रात चले सब गाय चरावन। जननी सों बोले मनभावन॥
मैं हूं गाय चरावन जैहौं। बडो भयो अब नाहिं डरैहौं॥
संग सखा अरु हलधर भैया। इनके संग चरैहौं गैया॥
बालन संग यमुन तट माहीं। खेलहिंगे सब बटकी छाहीं॥
अपनी रुचि मनके फल खैहौं। तेरी सों यमुना नहिं न्हैहौं॥
ऐसी अबहिं कहौ जिनबारे। देखहु अपनी भांति ललारे॥
तनक पायँ चलिहौ किहि भांती। गैयन आवत ह्वैहै राती॥
प्रात जात गैयन लै चारन। आवत सांझ लखौं सब ग्वालन॥
तुम्हरो कमल वदन मुरझैहै। रेंगत घाम मांझ दुखपैहै॥

दोहा—तेरी सों मोहिं घाम नहिं, लागत भूख न नेक॥
कह्यो कान्ह मानत नहीं, करै आपनी टेक॥
सो०—चले चरावन गाय, ग्वाल बाल बलदेव वन॥
हेरी टेर सुनाय, गोधन करि आगे लिये॥

हेरी टेर सुनत लरिकनकी। गये दौरि हरि अति रुचि मनकी॥
इत उत यशुमति जबहिं निहारी। दृष्टि न परे श्याम बनवारी॥
बनतन जान्यो जात कन्हाई। टेरति यशुमति पीछे धाई॥
जात चले गैयन सँग धावत। बलदाऊ को टेरि बुलावत॥
पीछे जननी आवत जानी। फेरि फेरि चितवत भय मानी॥
हलधर आवत देखि कन्हाई। ठाढे किये सखा समुदाई॥
पहुँची जननि भये सब ठाढे। रिस करि दोउ भुज पकरे गाढे॥
बल कह जान देहु सँग मेरे। बनतें ऐहैं आज सबेरे॥
कह्यो यशोमति बलहि निहारी। देखत रहियो मैं बलिहारी॥
भ्राता सँग गये बनहि कन्हाई। यशुमति यहै कहत घर आई॥
देखो हरि कैसो ढँग लीन्हों। अपनी टेक पर्‍यो सोइ कीन्हों॥
आज जाय देखहु बनमाहीं। कहां परोस धर्‍यो तिहि ठाहीं॥

१ वंशीवट। २ डोलत।

दोहा—माखन रोटी और जल, शीतल छाक बनाय ॥
दई वेगही ग्वाल सँग, यशुमति वनहिं पठाय ॥
सो०—चिन्तामणि सुर धेनु, पंच सुधारस कल्पतरु ॥
अनुदिन जाके एक, खात छाक सो ग्वाल सँग ॥
वृन्दावन खेलत नँदलाला । भयो हिये आनन्द विशाला ॥
जहँ जहँ ग्वाल गाय सँग जाहीं। तहँ तहँ आप फिरत वनमाहीं ॥
बलदाऊ सों कहत कन्हाई । नितल्यावहु मोहिं संग लिवाई ॥
आज मरूं करि आवन पायो । जननी तुम्हरे कहे पठायो ॥
कालिह कौनिविधि करि वन ऐहौं । यशुमति पै आवन नहिं पैहौं ॥
सोवत बोलि लीजियो मोकों । सोहैं नंदबबाकी तोकों ॥
पुनि पुनि विनय करत सुखदाई । बलसों सखन समेत सुनाई ॥
संध्या समय निकट जब आई । घर कहँ चलौ कह्यो बल भाई ॥
गैयन घेरि करी यकठौरी । चले सदन[1] सब गावत गौरी ॥
आवत बनते धेनु चराई । ग्वालन मध्य श्याम सुखदाई ॥
जिहि जिहि भांति ग्वाल सुख भाखैं । सुनि सुनि मनमोहन उर राखैं॥
नान्हें सुर[2] पुनि आपुनि गावैं । तारी देत हँसत सुख पावैं ॥
दोहा—मोर मुकुट वनमाल उर, पीताम्बर फहराय ॥
गोपदरज छबि बदन पर, आवत गाय चराय ॥
सो०—छुटीं अलक छबिदेत, जलज[3] वदन पर मधुप[4] जनु॥
आवत सखन समेत, नंदसुवन व्रज प्राण धनु ॥
देखत नन्द यशोदा ठाढ़े । रोहिणि अरु व्रज जन सुख बाढ़े॥
गायन संग श्याम जब आये । लैबलाय जननी उर लाये ॥
आज गयो हरि गाय चरावन । मैं बलि जाउँ तनकसे पाँवन ॥
मो कारण कछु बनते लाये । तुमको मिलि मैं अति सुखपाये ॥
आंचर सों सब अँग अँग झारे । बदन पोंछि मुख चूमि दुलारे ॥
खाउ कछुक जो भावै मोहन । देरी माखन रोटी सोहन ॥

१ घरको । २ मंदस्वरसों । ३ कमलमुखपरजानों । ४ भौंरा ।

दिये जिमाय तुरत दोउ भैया । अति आनन्द मगन मन मैया ॥
कहत जननिसों श्रीब्रजनाथा । प्रात नितहि जैहौं बलसाथा ॥
मैं अपनी अब गाय चरैहौं । तेरे कहे घरहि नहिं रैहौं ॥
ग्वाल बाल गायनके माहीं । नेकहु डर लागत मोहिं नाहीं ॥
आज न सोवों नन्द दुहाई । रहिहौं जागत कहत कन्हाई ॥
सब मिलि गाय चरावन जाहीं। मैं क्यों रहौं बैठि घर माहीं ॥

दोहा-सोय रहौ अब श्याम तुम, जननि कहै चुचकारि ॥
प्रात जान कहिहौं तुम्हैं, बनको मैं बलिहारि ॥

सो०-ज्यों त्यों राखे स्वाय, प्रात देन वन जान कहि ॥
जननी दाबत पांय, श्रमित जानि वन गमनके ॥

बहुते दुख हरि सोय गयोहै । ज्यों त्यों करि मन बोध लयोहै ॥
सांझहि ते लाग्यो इहि बातैं । जान कहत बन उठि पुनि प्रातैं ॥
यह तो संग लागि बलरामहिं । गये लिवाय आज वन श्यामहिं ॥
अब तो सोयरह्यो करिऐसे । प्रात विचार करै धौं कैसे ॥
कहत नंद बलके सँगजाई । इत उत आवन दे फिरि धाई ॥
भोर भयो यशुमति कहप्यारे । जागहु मोहन नन्ददुलारे ॥
बीतीनिशि[२] रवि किरण प्रकाशी।शशि[३] मलीन उडगण[४] द्युतिनाशी ॥
सुनहु शब्द बोलत खगमाला । खोलहु अम्बुजनयन[५] विशाला ॥
सुनत श्याम जननीकी बानी । जागि उठे सन्तन सुखदानी ॥
लाई तुरत कलेऊ मैया । माखन रोटी खान कन्हैया ॥
टेरत ग्वाल सखा सबद्वारे । आये तबके होत सकारे ॥
खेलहु ब्रज भीतरही प्यारे । दूरकहूं मतिजाहु ललारे ॥

दोहा-टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय ॥
प्रात ग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय ॥

सो०-श्याम जोरि दोउ हाथ, जननी सों हाहाकरत॥
जैहौं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दा विपिन ॥

१ थकेभए । २ रात । ३ चंद्र । ४ तारागण । ५ कमलनयन ।

टेरत मोहिं दाऊरी मैया । जैहौं बनहिं चरावन गैया ॥
बन फल तोरि देत मोहिंजाई । आपुन घेरत गैयन धाई ॥
जैहौं अरु ग्वालन सँगनाहीं । मोहिं खिझावत वे बनमाहीं ॥
मैं अपने दाऊ सँग रैहौं । देखत वृंदावन सुख पैहौं ॥
आगे दै लावत मगमाहीं । तू क्यों जान देत मोहिं नाहीं ॥
लीन्हो यशुमति बलहिं बुलाई । सुनहु लाल हरिके गुण आई ॥
कहत यशोमति सों बल मैया । जान देहु मोसंग कन्हैया ॥
अपने ढिग ते नेकु न टारौं । जियपरतीत नेकनहिं धारौं ॥
तू काहे डरपति मन माहीं । जान देत हरिको क्यों नाहीं ॥
हँसी महरि सुनि बलकी बानी । जाहु लिवाय कहत नँदरानी ॥
मैं बलिहारी तुम्हरे मुखकी । तुमहूं कहत श्यामके रुखकी ॥
अति आनंद भयो हरिधाये । दोऊ संग खरकमें आये ॥

दोहा—धाय धाय भेंटत सखन, उर अति हर्ष बढ़ाय ॥
पठयो मैया मोहिं बन, चलहिं चरावन गाय ॥
सो०—कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखौ बनहिं ॥
बनमाला पहिराय, करत चित्र[1] वन धातु तन ॥

चले बनहिं सब गाय चरावन । सखा संग सोहत मनभावन ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयान्हे । नंदसुवन तिनमें कछु नान्हे ॥
गाय गोप गोसुत बन जाई । तिनके मध्य श्याम सुखदाई ॥
हरिसों सखा कहत समझाई । छोड़ि कहूं जिनजाहु कन्हाई ॥
वृंदाबन अति सघन विशाला । जैहौ भूलि कहूं नँदलाला ॥
सुनत श्याम घन तिनकी बाता । मनमन हँसत कहत जगत्राता ॥
तुम्हरो संग न छांड़तराई । बनहिं डरात बहुत मैं भाई ॥
जात चले सब हर्ष बढ़ाये । खेलत श्याम संग सुखपाये ॥
कोउगावत कोउवेणु बजावै । कोउनाचत कोउ कूदत आवै ॥
देखिदेखि हरि अति हर्षाहीं । हँसत सखन सों दै गलबाहीं ॥

१ गेरू (सिलखरीआदिवनधातु)

भली करी तुम मोकोलाये । आज यशोमति हर्ष बढाये ॥
इहि विधि गोधन लै सब ग्वाला । यमुना तट पहुँचे नँदलाला ॥

दोहा–दई धेनु बगराय सब, चरन आपने रंग ॥
गाय चरावत नंदसुत, मिलि ग्वालनके संग ॥

सो०–उर मुक्तनकी माल, शीश मुकुट कटि पीत पट॥
हाथ लकुटिया लाल, डोलत ग्वालन संग प्रभु॥

अथ वत्सासुरवधलीला ॥

खेलत श्याम सखनके माहीं । यमुनाके तट तरुकी छाहीं ॥
वत्सासुर तिहिं अवसर आयो । पठयो कंस काल नियरायो ॥
वत्सरूप धरि आय समान्यो । कृष्ण ताहि आवतही जान्यो ॥
बलै तन चितै कह्यो मुसकाई । तुम याको जानत हौ भाई ॥
यह तो असुर वत्स ह्वै आयो । हमको मारन कंस पठायो ॥
हलधरहूं देख्यो धरि ध्याना । कहत सांच तुम श्याम सुजाना॥
ग्वालनहूं सों कहत कन्हाई । बछरा घेरि करो इक ठाई ॥
लाये घेरि वत्स सब ग्वाला । वह नाहिं घिरहि चपल विकराला॥
बारबार हरि ओर निहारै । दांव घात मन माहिं विचारै ॥
तब हरि कह्यो याहि मैं ल्यावत । तुमतो याको छुवन न पावत ॥
हाथ लकुटिया लै हरि धाये । वत्सासुरके सन्मुख आये ॥
हरिको जबहिं जुदो करि पायो । असुर कोपकरि मारन आयो ॥

छं०–धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामके सन्मुखगयो॥
ह्वै गयो निष्पाप तबहीं योग्य सुरपुरके भयो ॥
धायके हरिचपरिताको पकरि पाँय फिराइयो ॥
पटक्यो धरणि तनु असुर प्रगट्यो फेरि श्वास न आइयो ॥

दोहा–वत्सासुर सुरपुर गयो, अधम असुर तनु त्याग॥
सुर हर्षत वर्षत सुमन, गगन सहित अनुराग ॥

१ छातीपरमोतिनकाहार । २ वृक्ष । ३ दाऊजी । ४ स्वर्ग । ५ आकाश ।

सो०–धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्ण बल देखिकै ॥
धन्य धन्य नँदलाल, कहत परम आनँदभरे ॥

असुर देखि सब अचरजपायो। कहत हमैं हरि आज बचायो ॥
बछरा करि हम जान्यो याहि। यहतो असुर भयानक आही ॥
आज सबनि धरिकै यह खातो। और कौन पै जात निपातो ॥
हर्षि हर्षि हरिको उर लायो। असुर निकन्दन नाम सुनायो ॥
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई। धन्य धन्य ब्रज प्रगटे आई ॥
यह ऐसो तुम अति सुकुमारा। किहिं विधि भुजन फिराय पछारा॥
सबहीके देखत पलमाहीं। माऱ्यो असुर डरे तुम नाहीं ॥
अबलौं हम न तुमहिं पहिचान्यों। हो तुम बड़े सबनते जान्यों ॥
कोउ वनमाल आनि पहिरावैं। कोउ बन धातु रगरि तनुलावैं ॥
कोउ कुण्डल शिर मुकुट सँवारैं। अलिकावलिकोउ तिलक सुधारैं॥
जात भुजनपर कोउ बलिहारैं। तनु देखत कोउ वदन निहारैं ॥
बनफल तोरि धरत कोउ आगे। कहत खाउ मीठे अति लागे ॥

दोहा–इहि विधि हरिको पूजिकै, ग्वाल बाल हरषाय ॥
सांझ निकट आवत चले, घरको धेनु चराय ॥

सो०–परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं॥
गावैं शब्द रसाल, ब्रजबासी प्रभुके गुणन ॥

सखन मध्य सोहत नँदनंदन। जलद श्यामतनु चित्रित चंदन ॥
मोर मुकुट पट पीत सुहावन। इंद्र धनुष दामिनिहि लजावन ॥
मुक्तमाल वनमाल विराजै। बक[1] शुक[2] अवलि[3] मनहुँ छबिछाजै॥
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन। कोटि काम छबि शोभित आनन ॥
कुटिल अलक भ्रुव नैन विशाला। गोपदरज कन द्युति छबिजाला ॥
बल मोहन बनते बनिआवैं। निरखि निरखि ब्रजजन सुखपावैं॥
सखन सहित हरि धामहिं आये। हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
कहत ग्वाल सुनु यशुमति मैया। है तेरो रणवीर कन्हैया ॥

१ बगला। २ तोता। ३ पंक्ति। ४ मुख।

वत्स रूप एक दानव वनमें। आय समान्यो बछरागनमें ॥
हम ताको कछुं जानि न पायो। सो वह हरिको मारन धायो ॥
क्षणहीं माहिं ताहि हरि मार्‍यो। हम देखत महिपटकि पछार्‍यो ॥
यह कोउ बड़ो पूत तै जायो। भाग्य हमारे ब्रजमें आयो ॥

दोहा–सुनि ग्वालनके वचन ते, वत्सासुरको घात ॥
यशुमति सबके पांय परि, बार बार पछितात॥

सो०–भयो महरि उर त्रास, बचे आज हरि असुरते॥
मैं न बिगार्‍यो कास, भयो सहायक आनि हरि॥

यशुदा शोच करत तू जाये। यह तो ख्याल कान्हके भाये ॥
पर्वत तुल्य विकट तनु जाही। कियो प्राण बिन क्षणमें ताही ॥
तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं। हम सबको रक्षक यह आहीं ॥
याके चरणकमल चित लैये। बारबार याकी बलि जैये ॥
ग्वालन यों हरिके गुण गाने। ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने ॥
लीलासागर हरि सुखदानी। मोहे सब नरनारि सुबानी ॥
हँसि जननी सों कहत कन्हाई। देख्यो मैं वृन्दावन जाई ॥
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके। कुंज सघन निरखत सुख जीके ॥
अति कोमल तृण हरित सुहाये। यमुनाके तट बच्छ चराये ॥
वनफल मधुर मिष्ठ अति नीके। भूख मिटी खाये तिनहींके ॥
सखन सङ्ग खेलत वटछाहीं। वनमें मोहिं लगत डर नाहीं ॥
रोहिणि सहित यशोदा माता। मुदित सुनत हरिकी मृदु बाता ॥

दोहा–मोहिं लियो मन जननिको, मधुरे वचन सुनाय ॥
वत्सासुरको शोच उर, क्षणमें दियो मिटाय ॥

सो०–लगे दुहन सब गाय, जहँ तहँ हर्षित गोप गण ॥
गये तहां हरि धाय, गाय दुहन चाहत सिखन ॥

अथ धेनुदुहन लीला ॥

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन। कहत मोहिं सिखवो गोपालन ॥

१ यशोदा।

मैं दुहिहौं मोहिं देहु सिखाई। बैठि गये तिन सङ्ग कन्हाई॥
कैसे गैया थनहिं लगावत। कैसे नोय पगन अटकावत॥
घुटरुन गहत दोहनी कैसे। मोहिं बताय देउ तुम तैसे॥
कैसे धार दूधकी होई। देहु दिखाय मोहिं सब कोई॥
कहत ग्वाल तुम सुनौ कन्हाई। भई अबार आज अति भाई॥
तुमको सिखवैं दुहन सबारे। अबकहुँ लगिहै चोट तुम्हारे॥
श्याम कह्यो सबही समुझाई। भोर दुहौं निजनन्द दुहाई॥
मेरी सौं मोहिं लीजो टेरी। मैं दुहिहौं निज गाय सबेरी॥
दुष्टदलन सन्तन सुखदाई। ठाढे गैयन मांझ कन्हाई॥
आवहु कान्ह सांझकी बिरिया। कहत जननि यह बडी कुबिरिया॥
लरिकाई कछु छाँड़त नाहीं। सोवहु लाल आय घर माहीं॥

दोहा–आये हरि यहसुनतही, जननि लिये अँकवार॥
लै पौढ़ाये सेजपर, अजिरे[2] चांदनी चार॥
सो०–कहत कहत कछु बात, सोय गये वश नींदके॥
कहत यशोमति मात, सोय गयो हरि अजिरहीं॥

दोउ जननी हरुवै[3]के हरिको। सेज सहित लीन्हे भीतरको॥
बहुत आज हरि सोय गयो है। अतिहि नींदके वशहि भयोहै॥
नेक न बैठत थिर घर माहीं। खेलनमें मन रहत सदाहीं॥
रोहिणि कहत देउ किन सोवन। खेलत हारि गयो मनमोहन॥
माता हरुवै पवन डुरावति। निरखि वदन सुंदर सुखपावति॥
प्रात जगावत नंदकीरानी। उठहु श्याम सुन्दर सुखदानी॥
नाहिनइतो सोइयत लाला। सुनु सुत प्रात समय शुचि[4] काला॥
उग्योतरणि[5] कुमुदिनि सकुचानी। घरघरग्वालिनि मथतमथानी॥
बारबार टेरत सब ग्वाला। सांझकह्यो तुम दुहन गोपाला॥
होत अबार गाय सब ठाढीं। भरि भरि क्षीर भारथनबाढीं॥

१ दूहतीबारजो रस्सी बांधतेहैं। २ आंगन। ३ गिरेते ४ पवित्र। ५ सूर्य।

वत्सपुकारत आरत ताई । दुहत नाहिं तुम सोंह दिवाई ॥
तुम्हरे लिये ग्वाल सब ठाढ़े । देखत वाट प्रेम उर बाढ़े ॥
दोहा–यह सुनतहि तुरतहि उठे, शशि मुखते पटटार ॥
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नन्दकुमार ॥
सो०–लाउ रोहिणी मात, वेगि तनकसी दोहनी ॥
कह्यो सिखावन तात, आज मोहिं गैया दुहन ॥
रोहिणि तुरत दोहनी लाई । घर घरते देखन सब आई ॥
अटपट आसन बैठि कन्हाई । गोथन[1] कर लीन्हो सुखदाई ॥
धार अनतहीं जात निहारी । हँसे नन्द यशुमति महतारी ॥
चितै चोर चित हरि हँसि दीन्हो।ब्रजवासी जन बलि बलि कीन्हो॥
किये यशोमति आनँद भारी । दियो दान विप्रनहि हँकारी ॥
गावत मङ्गल ब्रजकी नारी । दुही गाय सन्तन हितकारी ॥
अति आनंद मगन नँदराई । बैठे प्रमुदित गोप अथाई ॥
लिये गोप सुन्दर घनश्यामहिं । ब्रजके जीवन जन सुख धामहिं ॥
आयो तहाँ एक बनजारो । मूंगा मोती बेचन हारो ॥
तिहि लखि[2] अटके नंदकुमारा । देहि देहि कहि बारम्बारा ॥
दीरँघ[3] मोल कह्यो व्यापारी । रहे ठगे सब गोप निहारी ॥
करपर राखि रहे हरि मोती । देत नहीं लखि सुन्दर जोती ॥

अथ मोतीबोनेकी लीला ॥

दोहा–मुक्तालै हरि घर गये, वये अजिरं[4] बलबीर ॥
आलँ[5] बाल थल रोपिकै, पुनि पुनि सींचत नीरं[6]॥
सो०–हँसत यशोमति मात, कहत करत मोहन कहा॥
यह नहिं जानत बात, ये करता सब जगतके ॥
भये तुरत शाखाँ[7] दल तामें । यशुमति अजिर मुक्त फल[8] जामें ॥
फूलत फलत न लागी वारा । ब्रह्मादिक नित करत विचारा ॥

१ गौकेथन । २ देखि । ३ बडो । ४ आंगन । ५ थामरो । ६ जल ।
७ डाली । ८ मोतीरूपफल ।

सुर नर मुनि कोउ मर्म न जानैं । देखि देखि अति अचरज मानैं ॥
नन्द भवन हरि सुक्त जमाये । व्रजवनितन गुहिहार बनाये ॥
व्रजवासी यह प्रभुकी लीला । सब गुण समरथ सबगुणशीला ॥
क्षणमहँ जासु रजायसुमाया । प्रकट करत ब्रह्मांड निकाया ॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावैं । नंदअजिर सो ख्याल बनावैं ॥
जाकी महिमा लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपुसोई ॥
लोकरचै नाशै अतिपारैं । सो ग्वालन सँग लीला धारैं ॥
शिव विरंचि मुनि ध्यान न आवैं। ताहि यशोमति गोद खिलावैं ॥
अगम अगोचर लीला धारी । सो वृंदावन कुंजविहारी ॥
बड़े भाग्य सब व्रजके बासी । जिनके सँग बिहरत अविनासी ॥

दोहा—धनि धनि व्रजके नारि नर, धनि यशुदा धनिनंद॥
विहरत जिनके सदनमें, ब्रह्म सच्चिदानंद ॥

सो०—कहि कहि देवसिहाय, धन्य धन्य व्रज बाग बन॥
जहाँ चरावत गाय, सकल सुरन शिर मुकुटमणि॥

अथ बकासुरवधलीला ॥

प्रात चले उठि गाय चरावन । हलधर सुंदर श्याम सुहावन ॥
देखत छबि व्रज सुन्दरि ठाढ़ी । करत परस्पर आनँद बाढ़ी ॥
देखु सखी व्रज ते बन जाहीं । बल मोहन ग्वालनके माहीं ॥
रोहिणिसुत छबि गौर सुहाई । यशुमति सुवन श्याम सुख दाई ॥
ओढे नील पीतपट सोहैं । सो छबि निरखि वदन मन मोहैं ॥
युगल जलद घन दामिनि जानौं। जो रतिनाथ परस्पर मानौं ॥
शीश मुकुट कल कुंडल कानन। झलकैं बिम्बकपोलन आनन ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला । मंद हँसनि दृग कमल विशाला ॥
कटि किंकिणि कर लकुट सुहाये। जात चले वन मनहिं चुराये ॥
रहीं थकित लखि सब व्रजनारी । गये वनहिं विहरत वनवारी ॥
वन वन फिरत चरावत गैया । हलधर श्याम सखाइकठैया ॥

१ घरमें । २ वादर । ३ सुंदर । ४ करिहाउँ ।

करत विहार विविध बनमाहीं । बाल केलि रस वरणि न जाहीं ॥
दोहा—कबहूं गावत सखन सँग, कबहुँ बजावत बेनु ॥
धौरी धूमरि नामलै, कबहुँ बुलावत धेनु ॥
सो०—+कबहुँ नचावत मोर,सुन्दर श्यामलजलदजन॥
गरज मुरलि घन घोर, बरषत परमानंदतन ॥
खेलत बिविध खेल मनभावन । श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तृषित जानि गैयन नँदलाला । कह्यो चलहु जल देन गुपाला ॥
लेहु बुलाय सुरभिगण टेरी । सुनत ग्वाल सब लाये घेरी ॥
गोधनवृंद हांकि सब लीन्हो । ग्वालन गमन यमुनतट कीन्हो ॥
तहां बकासुर छलकरि आयो । माया रचित स्वरूप बनायो ॥
एक चोंच भूतल१ महँ लाई । एकरही आकाश समाई ॥
मगमें२ बैठ्यो वदन पसारी । ग्वालन देखि भयो भय भारी ॥
बालक जातहते जे आगे । ताहि देखि सो पाछे भागे ॥
कहत भये सब हरिसों आई । आगे एक बलाय कन्हाई ॥
आवत नितहि ग्वाल इहिठाहीं। ऐसो कबहुँ लैख्यो३ हम नाहीं ॥
तबहिं कृष्ण ताको पहिचान्यों । यहै बकासुर मैं यह जान्यों ॥
पलमें आज याहि मैं मारौं । असुर चोंच धरि वदन विदारौं ॥
दोहा—निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास ॥
कहत सखा सब श्याम सों, नहिं जीवनकी आस॥
सो०—अबहूं नहीं डरात, बचे किते उतपातते ॥
चले कहां हरि जात, हम बरजत मानत नहीं॥
तबहरि कह्यो चलहु तेहि पासा।सब मिलि मारि करहिं बकनाशा॥
जब हरि संग चले सब ग्वाला । देख्यो जाय बकहि विकराला ॥
ताके निकट गये सब जबहीं । लियो लीलि४ हरिको बक तबहीं॥
जान्यो असुर काज मैं कीन्ह्यो । तबहीं वदन मूंदि कै लीन्ह्यो ॥

+ या सोरठामें बादरकी और कृष्णकी समानता दिखाई है । १ पृथ्वी । २ रस्ता । ३ देख्यो । ४ निगलगयो ।

ग्वाल पुकारत आरत भागे। बलसों आय कहन सब लागे॥
हम बरजत हठि गये कन्हाई। लीन्हे लीलि असुर बकधाई॥
हरि चरित्र कछु जानि न जाहीं। उपजी आगि असुर तनुमाहीं॥
लाग्यो जरन भयो अति व्याकुल। हरिको उगिलदियो अतिआकुल॥
बहुरो पकरनको मुख बायो। चोंच पकरि हरि चीरि बहायो॥
मरत चिकार असुर अति भारी। व्याकुल भये ग्वाल भय भारी॥
ग्वालन विकल देखि बलरामा। कहत असुर मार्‍यो घनश्यामा॥
टेरि उठे उत कुँवर कन्हाई। आवहु सखा वृन्द सब धाई॥

दोहा–बक विदारि हरि सखनको, टेरत आवहु धाय॥
चोंच फारि मारेउँ असुर, तुमहूँ करौ सहाय॥

सो०–गये सखा सब धाय, सुनत श्यामके वचन वर॥
निरखि नयन सुख पाय, पुनि पुनि भेंटत पुलकतनु॥

कहत परस्पर सखा सयाने। ये कोउ ब्रज प्रगटे हम जाने॥
इन्हें नाहिं कोउ घात करैया। ये हैं असुरनके[1] दलनैया॥
जब ते इन्हें यशोमति जाये। तबते असुर कितेकउ आये॥
तृणा पूतना शकटा मारे। तब वे रहे बहुत ही बारे॥
हम देखत वत्सासुर मार्‍यो। कितक बात यह बका विदार्‍यो॥
इनके गुण कछु जानि न जाहीं। हम अपने जिय डरे वृथाहीं॥
धनि यशुमति जिन इनको जाये। धनि हम इनके सखा कहाये॥
बकहि मारि सुन्दर घनश्यामा। यमुना तट आये सुखधामा॥
सुरभीगण[2] सब नीर पियाये। सखन समेत आप प्रभु आये॥
घसि वन धातु चित्र तन कीन्हो। मोरमुकुट माथे धरि लीन्हो॥
वनमाला रचि सखन बनाई। प्रेम सहित हरिको पहिराई॥
वनफल मधुर गोप लै आये। सखन सहित हरि भोग लगाये॥

दोहा–बल मोहन घरको चले, जानि साँझकी बेर॥
लीनी गैयाँ घेरि सब, मुरली की ध्वनि टेर॥

१ दैत्यनके मारनेवारे। २ सब गौ समूह।

सो०—चले बजावत बेन, ग्वाल वृन्दके मध्य हरि ॥
अँग अँग छबिको ऐन, ब्रज जन मोहन साँवरो॥

सुनि मुरली की टेर रसाला । देखनको धाईं ब्रजबाला ॥
कहत परस्पर अति सुख पावत । देखु सखी बनते हरि आवत ॥
नाना रंग सुमनकी माला । श्यामहिये छबि देत विशाला ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट विराजै । मधुर मधुर मुख मुरली बाजै ॥
भ्रुकुटी बिकट निकट सुखदाई । तिलक रेख छबि बरणि न जाई ॥
कुण्डल लोल अलक घुंघरारी । निरखु सखी लागत अति प्यारी॥
नासानिकट अधर अरुणाई । जनु शुक बिम्बहिं चोंच चलाई ॥
मन्द हँसनि घन दामिनि जैसे । दुरि दुरि प्रगट होतहैं तैसे ॥
तनु घनश्याम कमल दल नैना । बोलत मधुर मनोहर बैना ॥
मुख अरविन्द मन्द सुर गावत । नटवर रूप सखन मनभावत ॥
सब अँग चन्दन खौरि बनाये । गुंजमाल मन लेत चुराये ॥
या मोहन छबि पर बलि जैये । नन्द नँदन देखत सुखपैये ॥

दोहा—ग्वाल बाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउ भाय॥
साँझ समय वनते चले, आये धेनु चराय ॥

सो०—राँभति धाईं गाय, वत्स सुरति कर पयँ स्रवत॥
हर्षि यशोदा माय, कहति श्याम आवत घरहि ॥

इतनी कहत श्याम घर आये । जननी दौरि हर्षि उरलाये ॥
ब्रज लरिका सब तुरतहि धाये । महरि महर पद शीशनवाये ॥
ऐसोपूत धन्य तुम जायो । इनको गुण कछु जात न गायो ॥
आज गये वनगाय चरावन । चले यमुनतट जलहि पियावन ॥
तहां असुर इक खँग तनुधारी । रह्यो यमुनतट वदन पसारी ॥
एक चोंच महि सों लपटाई । एक रह्यो आकाश लगाई ॥
हम बरजत पहिले हरिधायो । ताके मुख में जाय समायो ॥

१ फूलनकी । २ होठनकीललोही । ३ यहां ब्रजवासी दास उपमा देयहैं कि जैसे तोता लालकदूरीके फलपर चोंच चलावे ऐसे श्रीकृष्णकी नासिका होठनके ऊपर शोभादेयहै । ४ कमल । ५ दूध । ६ बगलाको रूप ।

हम सब डरपि भजे बल पासा। अति व्याकुल तनु भयो निरासा॥
कैसे धौं हरि बाहर आयो। चोंच फारि तेहि मारि गिरायो॥
सुनत नन्द यशुमति ब्रजनारी। चकित चित्तरहे हरिहि निहारी॥
यशुदा कहति कहा कोउ जानै। नित प्रति होत आनकी आनै॥
भयो आज कोउ सुकृत सहाई। विधिकी गति कछु जानि न जाई॥

दोहा-जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि॥
कहा सर्‌यो हमरे यतन, विधि गति अगम अगाधि॥
सो०-किन धौं करी सहाय, को जानै भावी प्रबल॥
को मेरे पछिताय, करी अयानी बूझबिन॥

लै बलाय छतियाँ हरि लाये। प्रेम सलिल[1] लोचन भरि आये॥
मैं बलि जाउँ कहत कछु काहू। तुम कित गाय चरावन जाहू॥
नन्द महर सों पिता तुम्हारे। मोसी मात जाय बलिहारे॥
खेलत खाल रहौ अपने घर। दधि माखन पकवान विविधवर॥
निरखि वदन सुनि वचन तुम्हारे। लोचन श्रवण सिरात हमारे॥
दुष्टदलन भक्तन सुखदानी। बोले मधुर मातुसों बानी॥
मैया मैं न चरैहौं गैया। अब वन मेरी जात बलैया॥
मोसों सबै ग्वाल वन जाई। गाय घिरावत हैं बरिआई॥
दौरत मेरे पाँय पिराहीं। जब मैं बैठि रहौं तरुछांहीं॥
जो न पत्याय बूझ बल भाई। देहिं आपनी सौंह दिवाई॥
यह सुनतहि यशुमति रिसियानी। गारि देत ग्वालन दुखमानी॥
मैं पठवत लरिकहि वन जाई। आवहिं तनिक मनहिं बहलाई॥

दोहा-जानहिं कहा चरायकै, अबहीं मोहन गाय॥
अति बारो मेरो सुवन[2], मारत ताहि रिंगाय[3]॥
सो०-हरि जनके सुखदाय, को जानै हरिके चरित॥
मधुरे वचन सुनाय, मोहि लियो मन मातको॥

१ प्रेमके अश्रुपात। २ मेरोपुत्र। ३ डुलाय।

अथ चकई भवँराखेलनलीला ॥

कछुक खाय हरि निशिको सोये । प्रातजगाय जननि मुखधोये ॥
कियो कलेऊ कछु सुखदाई । जननी सों बोले हर्षाई ॥
दे मैया भवँरा चक डोरी । खेलत रहिहौं ब्रजकी खोरी ॥
हर्षि जननि आरे पर भाखे । तुमहितनये मोल लै राखे ॥
लै आये हरि तुरत निकारी । भये मगन अति रङ्ग निहारी ॥
बार बार हर्षित मुख भाखै । मैया बिन अरुको लै राखै ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी । खेलन सखन संग ब्रज खोरी ॥
जैसे आप सखा सब तैसे । सुन्दर कोटि मनोभव जैसे ॥
निरखि २ छवि गोप किशोरी । बार बार डारत तृण तोरी ॥
सबहिनको मन मोहन भावैं । सब ब्रजतिय हरिसों मनलावैं ॥
यह वासना करैं ब्रजबाला । होहिं हमारे पति नँदलाला ॥
हरि अन्तर्य्यामी सब जानैं । सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥

दोहा–चित दै जो हरिको भजै, कोऊ कौनहु भाव ॥
ताको तैसेई सदा, प्रकटत त्रिभुवन राव ॥
सो०–भक्तनके सुखदान, भक्त बछल भगवान हरि ॥
नारि पुरुष नहिं मान, प्रेम भावके वश सदा ॥

गोपिनके यह ध्यान सदाई । नेक न अन्तर होहिं कन्हाई ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी । करहिं बात उनके मनमानी ॥
मारग चलत तिन्हैं हठि रोकैं । खेलत माँझ जहाँ तहँ टोकैं ॥
चकई भँवरा डोरि फिरावैं । तिनके भूषण सों अरु झावैं ॥
काहू सों हरि वदन सकोरैं । काहू सों दृग वदन मरोरैं ॥
काहू सों अँखियां मटकावैं । आप हँसैं अरु उन्हैं हँसावैं ॥
युवतिनके मन बसैं कन्हाई । देखे बिन इक पल न सुहाई ॥
हरिको खेलत मांझ खिझावैं । खट कौरी दै गारी गावैं ॥
गेंद उरोजनै माहिं दुरावैं । इहि विधि हरिसों अंग छुआवैं ॥

१ रात्रि । २ स्तन ।

कंचुकि फारि आपुही लेहीं। यशुदहि जाय उरहनो देहीं॥
अन्तर भुज गहि हरिहि दुरावैं। कहैं चलो नँदरानि बुलावैं॥
यशुमति पै तुमको लै जैहैं। कुटिल भौंह किय हम न डरैहैं॥

दोहा-यों ब्रज बनितन नेहवश, आनँद छवि घनरास॥
रसिक पुरंदर साँवरो, ब्रजमें करत विलास॥

सो०-अब बरणौं सुखखानि, हरि वृषभानु कुमारिको॥
प्राण एकही जानि, प्रथम मिलन दोउ देहको॥

अथ राधाजूके प्रथममिलनकी लीला॥

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी। मेघश्याम तनु पीत पिछोरी॥
श्रवणन कुण्डलकी छवि छाजै। मोर पँखनको मुकुट विराजै॥
दर्शन दमक दामिनि द्युतिथोरी। हाथ लिये फेरैं चकडोरी॥
गये यमुनके तट मनमोहन। नाहीं तहां सखा कोउ गोहन॥
औचक दृष्टि परी तहँ राधा। प्रेम राशि गुण रूप अगाधा॥
नयन विशाल भाल दिय रोरी। नील वसन तनुकी छवि गोरी॥
बेनी पीठ करत झक झोरी। अति छवि पुंज दिननिकी थोरी॥
संग लरिकिनी आवत देखी। चितै रहे मुख रोक निमेखी॥
रीझि रहे घनश्याम कन्हाई। अनुपम छवि लखि रहे लुभाई॥
नयन बयन मिलि परी ठगोरी। बूझत श्याम कौन तैं गोरी॥
रहत कहाँ काकीहै बेटी। अबलौं नहीं कहूं ब्रजभेटी॥
काहेको हम ब्रजतन आवैं। खेलत रहत आपने गावैं॥

दोहा-सुनत रहत श्रवणन सदा, नँदढोटा ब्रज माहिं॥
घर घरते नित चोरिकै, माखन दधिलै खाहिं॥

सो०-विहँसि कह्यो घनश्याम, तुम्हरो कहा चुरायहैं॥
आवहु किन ब्रज धाम, नितहि खेलिये संग मिलि॥

रसिक शिरोमणि नागर दोऊ। प्रीति पुरातन जान न कोऊ॥
ब्रजवासी प्रभु कुंजविहारी। बातन भुरै लई हरिप्यारी॥

१ अँगिया। २ टेढी। ३ दांत। ४ विजुरीकी चमक। ५ संग। ६ मोहिलीनी।

प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो । गुप्त प्रेम शिशुता प्रकटान्यो ॥
कहत श्याम मन कत सकुचावहु । खेलन कबहुँ हमारे आवहु ॥
दूर नहीं कछु सदन हमारो । श्रवणन सुनियत बोल पुकारो ॥
लीजो मोहिं टेरि नँदपोरी । कान्ह नाम मेरो सुनु गोरी ॥
सूधी बहुत देखियत तुमहूं । तातें साथ कीजियत हमहूं ॥
तुम्हैं बबा वृषभानु दुहाई । घरी पहर खेलहु इतआई ॥
गैयां गिनन नंद जब जैहैं । तिनके संग हमहुँ उतऐहैं ॥
जो तुम गाय दुहावन ऐहौ । खरक माँझ तौ मोको पैहौ ॥
रसिक शिरोमणि जान न राई । इमि प्यारी संकेत बुलाई ॥
सुनत गूढ हरिकी मृदुबानी । मनहीं मन प्यारी मुसुकानी ॥

दोहा—गुप्त प्रीति प्रकटी नहीं, दोउअन हृदय छिपाय ॥
मनमोहन प्यारी चली, घरको[1] नयन चलाय[2] ॥

सो०—चली सदन सुकुमारि, मनमें उरझो साँवरो ॥
जानी बडी अबारि, मात त्रास उर आनिकै ॥

कहत सखिन सों चली कुँवरिबर । को जैहै खेलन इनकेघर ॥
चलो वेग अपने घर जाहीं । भई अवार यमुनतट माहीं ॥
वचन कहत ऊपर मुख माहीं । हृदय प्रेम दुख मन हरिपाहीं ॥
गई भवन वृषभानु कुमारी । जननी[3] कहति कहां हुतिप्यारी ॥
अबलौं कहां अबार लगाई । गैया खरक देख मैं आई ॥
ऐसे कहि मातहिं बहराई । अन्तर्गत वस रहे कन्हाई ॥
विरह विकल तनु गृह न सुहाई । सुंदर श्याम मोहनी लाई ॥
खान पान कछु नेक न भावै । चंचल चित्त पुलकितनु आवै ॥
मात पिताको मानत त्रासा[4] । नयनन हरि दर्शनकी आसा ॥
कहत दोहनी दै मोहिं मैया । जैहौं खरक दुहावन गैया ॥
अहिर दुहत तब गाय हमारी । जब अपनी दुहि लेत सवारी ॥
घरी एक मोहिं लगि तहँ जाई । तूमति आउ खरक अतुराई ॥

---

१ घर । २ सैनचलाय । ३ कीरति । ४ डर ।

दोहा-लई मात सों दोहनी, चली दुहावन गाय ॥
मन अटक्यो नँदलालसों, गई खरक सखुहाय ॥
सो०-मग[1] मग सोचत जाय, कब देखों वह साँवरो ॥
जिन मन लियो चुराय, खरक मिलन मोसों कह्यो ॥

देखे जाय तहां हरि नाहीं। भई चकित प्यारी मन माहीं ॥
कबहूं इत कबहूं उत डोलै। प्रेम विकल कछु मुख नहिं बोलै ॥
देखे नन्द सङ्ग हरि आवत। ललकि लगे लोचन सुख पावत ॥
देखी श्याम राधिका ठाढ़ी। लई बुलाय प्रीति अति बाढ़ी ॥
कह्यो महर लखि खेलहु दोऊ। दूरि कहूं मति जैयो कोऊ ॥
सुनि वृषभानुसुता इत आई। अपने साथ खेलाउ कन्हाई ॥
हरि तन रहियो नेक निहारै। कोई कहूं गाय जिनमारै ॥
नन्द बबाकी बात सुनो हरि। जाहु न मोहिँ[2] कतहूं टरि ॥
महर सौंपि हमको तुम दीन्हों। राधे हरिहबाँह गहि लीन्हों ॥
तुमको कहूं जान नहिं दैहौं। जोजैहौ तौ पकरि लै ऐहौं ॥
मेरी बाँह छोड़दे राधा। कहत श्याम ऊपर मन साधा ॥
तुम्हरी बाँह न तजौं कन्हाई। महर खीझिहैं हमको आई ॥

दोहा-परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द ॥
करत आपनी घात दोउ, बँधे प्रेमके फन्द ॥
सो०-समुझि पुरातन नेह, ब्रजविलास हित तनु धरे ॥
चलन चहत वन गेह, युगल विहारी कुंजके ॥

तबहिं श्याम घन घटा उठाई। गर्ज मेघ महि चहुँ दिशि छाई ॥
पवन झकोर चली झकझोरी। चपला[3] चपल चमक चहुँ ओरी ॥
ह्वैगइ भूमि सकल अँधियारी। तासिय तरु तमाल[4] द्युतिकारी ॥
डरे देखिकै कुँवर कन्हाई। कह्यो राधिका सों नँदराई ॥
कान्है संगलिये घरजारी। भई अकाश घटा अति भारी ॥
लिये बाँहगहि कुँवर कन्हाई। चले युगल बन घर हरषाई ॥
नवल राधिका नवल विहारी। पुलक अंग मन आनँद भारी ॥

१ रास्तामें। २ देखिके। ३ बीजुरी। ४ श्यामतमालवृक्ष।

नवलनेह नवरँग मन भायो । नवल कुंजबन शुभग सुहायो ॥
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले । गुंजत भ्रमर मत्तरस भूले ॥
शुभग यमुन जल पवन झकोरै । उठत श्याम छबि कुंजहिंडोरै ॥
बनज[1] विपुल बहुरंग सुहावन । चारु विचित्र पुलिन अति पावन॥
गये युगल तहँ रसिक रसीले । नागर नवल प्रेम रसगीले ॥

दोहा–विहरत विविध विलास वन, युगल रूपकी रास॥
गुणगावत मुनि वेद विधि, अहिपति[2] पति कैलास

सो०–अति रहस्य सुखदाय, वनविहार नँदलालको ॥
क्यौं सुकहै कवि गाय, वेद भेद पावैं नहीं ॥

श्लोक गीतगोविन्द ॥

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तंभीरुरयं
त्वमेवतदिमं राधेगृहं[3] प्रापय ॥ इत्थंनन्दनिदेशतश्चलितयोः
प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयन्तियमुनाकूलेरहःकेलयः

चले सदन प्रभु कुंजविहारी । गृह पठई अंकमें[4] दै प्यारी ॥
प्यारीकी सारी हरि लीन्ही । पीत पिछौरी प्यारिहि दीन्ही ॥
बादर जहँ तहँ दिये उड़ाई । आये सदन श्याम सुखदाई ॥
रही यशोमति हरिहि निहारी । ओढ़े देखि शीशपर सारी ॥
मन धौं कहत कहां यह पाई । पीत पिछौरी कहाँ गँवाई ॥
यशुमति तुरत आँखि पहिचानी । ब्रजयुवतिन भुरये यह जानी ॥
पूछत हरिहि विहँसि नँदरानी। तरुणिनकी सिखई बुधि ठानी ॥
पीत पिछोरी कितहिं बिसारी । यह तौ लाल तियनकी सारी ॥
जानि लई जननी हरि जानी । तब इक बुद्धि तुरत उर आनी ॥
मैं लैगाय गयो यमुनारी । तहँ बहु भरति हतीं पनिहारी ॥
बिडरी गाय भजीं सब नारी । बची बँसुरिया बहुत सवारी ॥
हौंलै भजो औरकी सारी । सो लै चादर गई हमारी ॥

---

१ कमल । २ शेष और श्रीमहादेवजी । ३ घर । ४ आलिंगनकरके ।

दोहा-पीत पिछौरी लैभजी, मैं पहिचानत वाहि ॥
मैयारी मैं जांयकै, घर लै आवत ताहि ॥
सो०-हरि मायाको जानि, पीताम्बर ताको कियो ॥
जननि देखायो आनि, कहतलै आयो ताहिसों॥

राधा गई सदन समुहाई। हाथ दोहनी दूध भराई ॥
परम प्रीति हरि बसन दुरायो। जननी द्वारहिते गुहरायो ॥
औरकी और कहत सुख बानी। जननी दौरि देखि भय मानी ॥
कहत दीठि लागी कहुँ बारी। उर लगाय पछितात निहारी ॥
बूझत नेह विकल महतारी। कहा भयो राधा तोहिं प्यारी ॥
अबहीं खरक गई लूनीके। आवत कौन व्यथा भइ जीके ॥
इक लरिकिनी संगही मेरे। कारेडसी आय तिहि नेरे ॥
मूर्च्छि परी वह धरणि मझारी। मैं डरपी अपने जिय भारी ॥
श्याम बरन इक ढोटा आयो। कहत सुनो वह नँदको जायो॥
कछु पढ़िकै उन तुरतहि झारी। जानत नहीं कौनकी बारी ॥
मेरे मन भरि त्रास गयोरी। अब कछु नीको नेक भयोरी ॥
अति प्रवीण वृषभानु दुलारी। यह कहि समुझाई महतारी॥

दोहा-सुनि जननी राधा वचन, उरसों लीन्ही लाय ॥
कहत टरी करिवरबड़ी, बार बार पछिताय ॥
सो०-एक सुता द्वै तात, पायो देवन द्वारपरि ॥
भई आज कुशलात, बची सर्प्पते लाडिली ॥

खीझी कछुक कुँवरि पै जननी। घर नहिं रहत फिरत भई हरनी ॥
कितनो कहत ताहि मैं हारी। दूरकहूं बाहर जिनजारी ॥
हैं लरिकिनी सबन घरमाहीं। तोसी निडर कहूं कोउ नाहीं ॥
कबहूं खरिक कबहुँ बन जाई। कबहूँ फिरत यमुनतट धाई ॥
चितै अकाश धरत पग धरनी। बात कहत लागत तोहिं जरनी ॥
सात वर्षकी भई कुमारी। बहुत महर वृषभानु दुलारी ॥

१ बलाया। २ भय।

आज कुशल कुलदेवन कीन्ही। विधि बचाय विषधरते[1] लीन्ही ॥
शीतल जल लै तुरत न्हवाई। अङ्ग अँगोछ बसन पहिराई ॥
बारहिं बार कहत कछु खारी। अब कहुँ खेलन दूरि न जारी ॥
यह सुनि हँसी मनहि मन प्यारी। हृदय ध्यानहरि कुंजविहारी ॥
कहत दूर अब कतहुँ न जैहौं। गाँम घरहि खेलत नित रहिहौं ॥
जिनके गुणन विरंचि भुलाने। तिनके चरित कहा कोउ जाने ॥

दोहा—जनरञ्जन भञ्जन कलुष[2], राधा नन्दकुमार ॥
गुप्त प्रकट लीला करत, ब्रजमें युगल[3] विहार ॥

सो०—देखि अनूपम[4] बाल, मात पिता गुरु जन हरिहि॥
असुर लखत बिकराल, नव किशोर चित चोर तिय

सर्व रूप सब घटके वासी। सब विधि करन सकल सुखरासी
सर्व भाव सब फलके दायक। सर्वोपरि सब गुणके लायक ॥
सर्व आदि सब अन्तर्यामी। सबते परे सकलके स्वामी ॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा। प्रेम प्रीति दोउ परम अगाधा ॥
छँवि श्रृंगार मनहुँ[5] इक जोरी। करत बिहार श्याम अरु गोरी ॥
वसे श्याम श्यामा उर[6] माहीं। देखे बिन भावत क्षण नाहीं ॥
खेलन मिसु वृषभानु किशोरी। आई नन्द महरिकी पौरी ॥
टेरत मधुर वचन सकुचाई। घर भीतर हैं कुँवर कन्हाई ॥
सुनत श्याम कोकिलसम बानी। अति आतुर राधा पहिचानी ॥
मातासों कछु कलह करत घरि। तुरतहिसो बिसराय दियोहरि ॥
तू पहिचानति इनको मैया। कहत बारही बार कन्हैया ॥
मैं यमुना तट काल्हि भुलान्यों। बाँहपकरि मोको इन आन्यों॥

दोहा—तूसकुचाति आवति इहां, मैं दै सोंह बुलाय ॥
अति नागर जननी हृदय, दियो प्रेम उपजाय ॥

सो०—भीतर लेहु बुलाय, कहत मात हरिसों निरखि॥

---

१ सर्प। २ पाप। ३ दोनों। ४ अद्भुत। ५ मानो छबि और शृंगारहीकी जोड़ी है। ६ हृदय।

चले श्याम सुखदाय, लखि प्यारी आनँद भयो॥

नैन सैन लखि दोउ सुखपायो। विरह ताप दुख द्वंद्व नशायो॥
मनहीं मन आनँद अति भारी। भये मगन दोउ रूप निहारी॥
कहत श्याम राधा किन आवै। तुमको यशुमति माय बुलावै॥
बाँह पकरि लाये बनवारी। यशुमति बोलि निकट बैठारी॥
देखि रूप मनमाँझ सिहानी। बूझत नन्द महरकी रानी॥
ब्रजमें तोहिं न कबहुँ निहारी। कौन गाँव है तेरो प्यारी॥
को तेरो तात कौन महतारी। कहा नाम तेरो है प्यारी॥
भूलि गयो है काल्हि कन्हाई। भली करी तू कर गहि ल्याई॥
धन्यकोखि जिन तोकहँ धारी। धन्य घरी तूजिहि अवतारी॥
देखि रूप यशुदा अभिलाषी। सवितासों विनती करिभाषी॥
नयन विशाल वदन शुभ छोटी। भली बनी है सुन्दर जोटी॥
बार बार बूझत हरषाई। है तू कौन महरकी जाई॥

दोहा–मैं बेटी वृषभानुकी, तुमको जानत माय॥
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तट आय॥
सो०–अब मैं लीन्ही जान, वेतो कुलटा हैं बड़ी॥
हैं लाँगर[३] वृषभान, गारि देत हँसि नँदघरणि॥

राधा बोलि उठी इत आई। करी कछू बाबा लँगराई॥
ऐसो समरथ कब उन पायो। हँसि यशुमति राधा उरलायो॥
कहति महरि कीरति हम जोटी। अब कीजत है तेरी चोटी॥
यशुमति राधा कुँवरि सँवारी। प्रेम सहित बारनि निरवारी॥
बड़े बार कोमल अतिकारे। लै सुमनासुत[४] औंछ सँवारे॥
माँग पारि बेनी रचि गूथी। मानहुँ सुन्दर छविकी यूथी॥
गोरे बदन बिन्दु करि बन्दन। मानो इन्दु मध्य भुवनन्दन॥
सारी नई सुरंग निकारी। यशुमति अपने हाथ सँवारी॥
वदन पोंछि अम्बर सों दीन्हो। उर आनन्द निरखि छबि कीन्हो॥

१ जन्मालियो। २ छिनार। ३ नटखट। ४ फुलेल।

तिल चावरी बतासे मेवा । कुँवरि गोदभरि विनवति देवा ॥
कह्यो कान्ह सँग खेलहु जाई । यह सुनि कुँवरि मनहिं हरषाई ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी राधा । खेलत दोउ छवि सिन्धु अगाधा ॥

छं०-छबिसिंधु परमअगाध दोऊ नंद सदन बिराजहीं ॥
लखि रूपकोटिककामरति घनदामिनीद्युति लाजहीं ॥
यशुमति विलोकति चकित देखति रूप मन आनँदभरी ॥
सोइ भाव देख्यो दुहुनके उर जोइ अभिलाषा करी ॥

दोहा-खेलत दोउ झगरनलगे, भरे परम अहलाद ॥
मानों घन अरु दामिनी, करत परस्पर वाद ॥

सो०-अमिय वचन रसमूल, अकथनीयछबि अमितगुण
रहीयशोमति भूल, युगल किशोर विहार लखि ॥

चली महरि सों कहि सुकुमारी । सदन आपने जानि अवारी ॥
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई । खेल्यो करि हरि सँग नित आई ॥
बोलि उठे मोहन सुनराधा । तूकत सकुच करै जियबाधा ॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं । जननी सों डरपति मनमाहीं ॥
तोको लखि मैया सुख पावै । देखि कितौ करि छोह बुलावै ॥
सुनि मोहनके वचन सयानी । चितै रही सुख मन मुसकानी ॥
बिहँसि चली वृषभानु दुलारी । हरि मूरति उर टरत न टारी ॥
गई सदन बूझत महतारी । कहांहुती अबलौंरी प्यारी ॥
बेनी गूँथि माँग किन कीन्ही । बेंदी भाल लाल किन दीन्ही ॥
खेलत रही नंदके द्वारी । यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
बूझन नाम लगी पुनि मेरो । बाबाको पूछेउ अरु तेरो ॥
मोहिं चितै पुनि सुतहि निहारी । कछु सवितासोंगोदपसारी ॥

दोहा-मेरी शिर वेनी गुही, बेंदी लाल बनाय ॥
पहिराई निज हाथसों, सारी नई मँगाय ॥

सो०-तिल चावरि दै गोद, विधना सों विनती करी ॥

१ स्त्रीपुरुषको भाव । २जैसे मेघ और बीजरीकी शोभाहोयहै । ३सूर्यनारायणसों ।

उर करिकै अति मोद, तोहिं विहँसि गारी दई॥
विहँसि कह्यो तोको नँदरानी। वह जैसी तैसी हमजानी॥
तोहिं नाम धरि धरयो ववाको। कह्यो धूत वृषभानु सदाको॥
सबमैं कह्यो ठग्यो कब तुमहीं। हँसिलपटानि लगी तब हमहीं॥
सुनि कीरति राधाकी बातें। सरल स्वभाव भरी शिशुतातें॥
कहत ज्वाव तैं नीको दीन्हो। बेटी दाँव आपनो लीन्हो॥
जो कछु मोहिं कह्यो नँद घरणी। सो सबहै इनही की करणी॥
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये। मनमें अति आनंद बढाये॥
फेरि फेरि यशुदाकी बातें। बूझति है जननी राधातें॥
सुनि सुनि बरसाने की नारी। गावत यशुमतिको हितगारी॥
सुनि बातें कीरति मुसकानी। नँदरानीके जियकी जानी॥
मेरी सुता विमल चपलासी। वेहरि मेघ श्याम छविरासी॥
बाढ़यो उर आनंद हुलासी। कीरति गई समुझि पति पासी॥
छंद–समुझि पतिके पास कीरति गई अति आनँदभरी॥
प्रीति रीति जनाय हित सों बात सब परगट करी॥
भयो अति उत्साह दंपति हर्षि मन आनँद भरे॥
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुण गावत खरे॥
दोहा–युगल किशोर स्वरूप वर, वृन्दावन रसखान॥
नव दुलहिन दूलह सदा, राधा श्याम सुजान॥
सो०–दूलह दुलहिन चार, मांडव वृन्दा विपिनके॥
गावत नित्य विहार, शेष महेश गणेश वि[3]धि॥
कहत यशोमति सों हरि प्यारे। जहँ तहँ रहत खिलौना डारे॥
राधा जिन लै जाय चुराई। आवत सांझ सकार सदाई॥
चितै रहति मुरलीकी धाहीं। मेरो प्राण बसत इहि माहीं॥
तेरे भाये नेक न माता। राखु उठाय मान मो बाता॥
बलहूको पतियाय न राई। राखु खिलौना सबहिं छिपाई॥

१ ठग। २ बीजरीसी। ३ ब्रह्मा।

कहत जननि हँसि लालन मेरे। कोलै जाय खेलौना तेरे ॥
नेक सुनत ताको जो पाऊं । वाको ब्रजते बास नशाऊं ॥
बिन देखे तू काको कहिहै । सो कहु कैसेकै प्रगटैहै ॥
आवतही राधा लै जैहै । फिर तू पाछेते पछितैहै ॥
अजहूं राखु उठाय सबारी । माँगेते पुनि देहै गारी ॥
जननी हरिकी बतियां भोरी । श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी ॥
टेव आपने सुतकी जानै ॥ बिरझाने क्योंहूं नहिं मानै ॥

दोहा–सैंततिहै हरिके हरषि, महरि खिलौना जान ॥
भौंरा चकई मुरलिका, गेंद बटा चौगान ॥

सो०–यशुमति सुखकी रास, नंद भवन भूषणपरम ॥
ब्रजमें करत विलास, ब्रजबासी जन जाहिं बलि ॥

कहत श्यामसों यशुमति मैया । पियहु दूध कछु लेहुं बलैया ॥
आज सबार दुही मैं गैया । सोई दूध प्याव मोहिं मैया ॥
और दूध रुचि मोहिं न आवै । जो तू कोटि यतन करि प्यावै ॥
जननी तबहिं सौंह करि ल्याई । यह धौरीको दूध कन्हाई ॥
तुमते और कौन मोहिं प्यारो । औट धर्‌यो तुम्हरे हित न्यारो ॥
ताते जानि वदन नहिं ल्यावै । फूंकि फूंकि जननी पयप्यावै ॥
पय पीवत मोहन अलसाये । सुन्दरसेज जननि पौढाये ॥
प्रात जगावत नन्दकिरानी । उठहुलाडिले शारँगपानी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे । ठाढे ग्वाल बाल सब द्वारे ॥
हरहुताप मुख कमल दिखाई । करौ कलेऊ मिलि दोउ भाई ॥
सद्माखन दधि रैनिजमायो । माँगिलेहु अरु जो मन भायो ॥
सखा वृन्द सब लेहु बुलाई । उठहुलाल जननी बलिजाई ॥

दोहा–तब हँसि चितये सेजते, उठे श्याम सुखदान ॥
यशुमति जल झारी लिये, मुख धोयो निजपान ॥

सो०–बोलि उठे बलराम, उठे सवारे आज हरि ॥

१ निकालदेउँ । २ दूध । ३ रातिका जमाया।

हर्षि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि भ्रातसों ॥
द्वारे सों सब सखन बुलायो । देखि बदन सबहिन सुख पायो ॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई । कियो कलेऊ कछु दोउ भाई ॥
गैयनलै बन चले गुवाला । संग चले मोहन नँदलाला ॥
टेर सुनत बालक सब धाये । घर घरके बछरनलै आये ॥
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया । चलहु आज वृन्दावन भैया ॥
यमुना तट सब वत्स चरैहैं । वंशीबट खेलत सुख पैहैं ॥
भली कही हँसि कह्यो गोपाला । चले सकल वृन्दावन ग्वाला ॥
कोउटेरत कोउ घेरलै आवैं । कोउ सुरभी गण जोर चलावैं ॥
कोउ शृंगी कोउ वेणु बजावैं । कोउ परस्पर होरी गावैं ॥
हेरीटेर सुनत मनमोहन । कहत मोहिं सिखवहु निज गोहन॥
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई । हँसे सकल पूरी नहिं आई ॥
कहत श्याम अबकै फिरिलीजो । अबके जाय तबै हँसिदीजो ॥
दोहा–गावत खेलत हँसत सब, सखा वृन्द गो साथ॥
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावनके नाथ ॥
सो०–फिरत चरावत धेन, दीनबंधु दुष्टनदलन ॥
कृष्ण कमल दल नैन, सबै अंग सुन्दर सुखद॥

अथ अघासुरवध लीला ॥

तहाँ अघासुर वनमें आयो । कंस राज करि कोप पठायो ॥
ताके एक बहिनहै भैया । मारे प्रथमहिं कुँवर कन्हैया ॥
एक पूतना जो ब्रज आई । बत्सासुर अरु बक दोउ भाई ॥
तिनको बैर असुर उर धारी । कियो गर्व मनमें अति भारी ॥
आज राजको कारज कीजै । और बैर भाइनको लीजै ॥
गिरि सम्भाल अजगरतनु धारी । पर्‍यो असुर मगँ बदन पसारी ॥
वन घन नदी रची मुख माहीं । मायाकृत पहिचानत नाहीं ॥
वाही मग निकसे नँदलाला । गाय वच्छ लीन्हे सब ग्वाला ॥

१ सींग । २ अजगर-सर्प । ३ मार्गमें ।

हरि अंतर्यामी जिय जानी। कपट रूप यह लखि अभिमानी॥
याको आज तुरत संहारों। असुर मारि भूभार उतारों॥
ग्वालन ओहि पर्वत करि जान्यो। तासु वदन गिरि कंदर मान्यो॥
देखि सुहावन तृण हरियाई। गाय वत्स बैठे सब धाई॥

दोहा–गाय बच्छ ग्वालन सहित, सब मुख गये समाय॥
कहत परस्पर आज वन, सुरभी चरहिं अघाय॥

सो०–सब मुख गये समाय, असुर सकोर्‌यो वदन तब।
अंधकार गयो छाय, मानौं घन घेरो निशा॥

अति अकुलाय उठे तहँ ग्वाला। गाय वच्छ सब विकल बिहाला॥
कहत परे धौं हम कहँ आई। त्राहि त्राहि घनश्याम कन्हाई॥
सबके प्राण गये इहि बारा। तुमबिन कौन उबारन हारा॥
श्रवण सुनत प्रभु आरत वानी[2]। भये दुखित चिन्ता उर आनी॥
दीनबंधु भक्तन सुखदाई। पैठे आप अघा मुख आई॥
अघा असुर उर अति हरषाई। लियो ओंठ सों ओंठ लगाई॥
विद्याधर मुनिवर गंधर्वा। अति भय विकल मगन सुर सर्वा॥
तबहिं कृष्ण मन बुद्धि उपाई। अविगत गति भक्तन सुखदाई॥
मुखते देह दुगुण विस्तारी। रुँधी श्वास भै त्रास दैवारी[3]॥
सक्यो नहीं तब असुर सम्हारी। कियो शब्द आघात पुकारी॥
फूटि गये शिर दशन दुवारी। निकसी प्राण ज्योति उजियारी॥
सोवह ज्योति स्वर्ग को धाई। बहुरि आय हरि मांझसमाई॥

दोहा–वाही मग अब वदनते, निकसे गोकुलराय[4]॥
कहत सखन आवहु निकसि, मैं करि लई सहाय॥

सो०–अतिहिसकाने ग्वाल, गाय वच्छ व्याकुल सकल॥
मिट्यो तिमिर तिहि काल, जहँ तहँ हर्षे वचन सुनि

वच्छ सहित बाहर सब आये। हरिको देखि परमसुख पाये॥
हम अज्ञान वृथा भय भाई। श्याम हमारे साथ सहाई॥

१ सर्प। २ दुःखितवाणी। ३ दैत्य। ४ कृष्ण।

धन्य कान्हधनि धनि पितु माता। जिन जायो सुतको ब्रज त्राता ॥
गिरिसम असुर सर्प्प तनु धारी । ताहि हन्यो तुमहौ असुरारी ॥
कहत कान्ह तुम करी सहाई । तब मार्‍यो मैं असुर अन्याई ॥
जो तुम मेरे संग न होते । तौ यह मार्‍यो जात न मोते ॥
देखि अघासुर वध सुर ज्ञानी । वर्षि सुमन कहि जै जै बानी ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा । अति आनँद गुण गावत सर्वा ॥
अघा असुरकी करत बड़ाई । हरि मधि जाकी ज्योतिसमाई ॥
करत अनेक यत्न मुनि ग्रामा । अंतकाल दुर्लभ हरिनामा ॥
सोहरि अंतकाल जगपावन । बसे आप अघ मुख दुख दावन ॥
इहि सम और कौनके भागा । कहत देव सब अति अनुरागा ॥

दोहा—जै जै जै प्रभु जगत हित, जगत्राता जगदीश ॥
जाको मारनहूं प्रगट, तारन विश्वा वीश ॥
सो०—हर्षि सुमन[1] बरषाय, जय जय ध्वनि नभ[3] करतसुर[4]।
गाय ग्वाल सुख पाय,अति आनँद निरखत हरिहि।

तबहिं सखन सों बिहँसि कृपाला । बोले करुणासिंधु गोपाला ॥
चलहु सकल बंशीवट छाहीं । आई ह्वैहै छाक तहांहीं ॥
भोजन करिये सब मिलिजाई । बछराहांकि लेहु अगुवाई ॥
हर्षि चले तहँते बलबीरा । आये सब वंशीबट तीरा ॥
बंशीबट अति सुभग सुहावन । और चहूंदिशि बहु द्रुम[5] पावन ॥
चरत वत्स सब बनके माहीं । बैठे आय श्याम वट छाहीं ॥
आस पास गोपनके बालक । मध्य श्याम सुंदर जगपालक ॥
मोर मुकुट कल कुण्डल कानन । कोटि काम छवि मोहन आनन ॥
गेरुकादि चित्रित तनु श्यामा । पीतवसन वनमाल ललामा[6] ॥
बहु विशाल लकुटीकर लीन्हें । गुंजनके आभूषण कीन्हें ॥
सखा वृन्द सब सुन्दर सोहैं । निरखत रूप मदन मन मोहैं ॥

---

१ फूल । २ प्रेम । ३ आकाश । ४ देवता । ५ वृक्ष । ६ सुन्दर । ७ बहुतसुघर ।

प्रेम मगन मन परम हुलासा । करत परस्पर हास विलासा ॥
दोहा–तहां छाक घर घरनते, आई भरि भरि भार ॥
यशुमति पठये कान्हको, व्यंजन बहुत प्रकार ॥
सो०–छाकपठाई मात, हर्षि कहत हरि सखनसों ॥
दधिलवनी बहुभांत, सब मिलि भोजन कीजिये ॥
वन भोजन विधि करत कन्हाई । छाक सबै इकठाँव रखाई ॥
जलते पुरइन पात मँगायो । दोना बहु पलाशके लायो ॥
कछु फल वृन्दावनके नीके । लिये मँगाय भावते जीके ॥
बैठे मंडल जोरि गोपाला । मध्य श्याम सुंदर नँदलाला ॥
भांति भांति व्यंजन रस पागे । परसि धरे सबहिनके आगे ॥
कछुकहथेरिन पर धरि लीन्हो । शाक खोलि अँगुरिन बिच कीन्हो ॥
मुरली मुकुट कांख तर लीने । भोजन करन लगे रस भीने ॥
मधु मंगल पर सैन्य सुदामा । सुबल सुखमना अरु श्रीदामा ॥
अपर अनेक गोप सुत लीने । जेंवत सब मिलि श्याम प्रवीने ॥
लेत परस्पर कौर छुड़ाई । कबहुँ कितनको देत कन्हाई ॥
कबहूं काहू देन बुलावैं । डहँकिताहि अपने मुख नावैं ॥
मीठे खाटे स्वाद बखानैं । हास बिलास करत सुखसानैं ॥
दोहा–देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढ़े विमान अकाश ॥
लखि कौतुक चकित सबै, गये कमल भव पास ॥
सो०–कह्यो ब्रह्मसों जाय, कहत जाहि वर ब्रह्म तुम ॥
सो ग्वालन सँग खाय, छोरि छोरि करते कवर ॥

अथ ब्रह्माके मोहकी लीला ॥

हरि माया मोहे सब प्रानी । कह ब्रह्मा कह सुर मुनि ज्ञानी ॥
सुनि विरंचि सुरगणकी वानी । भयो मोह उरमें यह आनी ॥
गोकुल जन्म कौन यह आयो । मैं कछु वाको भेव न पायो ॥
परचौलै देखौं प्रभुताई । बाल वत्स हरि ल्यावों जाई ॥

१ ब्रह्मा ।

जो सर्वज्ञ ईश भगवाना। लैहैं तुरत मँगाय सुजाना॥
यह विचार विधिमन ठहरायो। चल्यो तुरत वृन्दावन आयो॥
देखि सरित[1] वनमें अति पावन। पुहुप[2] लता द्रुम परम सुहावन॥
अति रमणीक कदम चहुँ पासा। वंशीवट मधि सुखद निवासा॥
गोप मण्डली मण्डन मोहन। भोजन करत सखन सँग गोहन॥
देखि विरंचि चकित भ्रम भारी। बछरा हरि लीन्हे बनझारी॥
हरि अन्तर्य्यामी सब जानी। विधि[3]के मनकी रुचि पहिचानी॥
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई। लावहु वर्त्स[4] घेरि सब जाई॥

दोहा—ग्वाल सकल वन ढूंढिकै, फिरि आये हरि पाहिं॥
कहत वत्सगे दूरि कहुँ, खोज पाइयत नाहिं॥

सो०—तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठे रहौ॥
मैंधौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब॥

जबगे दूर बनहिं जनत्राता। तबहीं बालक हरे विधाता॥
प्रभुलीलाकी गम कछु नाहीं। गर्वित गयो लोक[5] निजपाहीं॥
निजमाया सों करि मति भोरी। राखे बाल वत्स इक ठोरी॥
गुणसागर नागर नँदनन्दन। वंशीवट आये जगवन्दन॥
दीनबन्धु भक्तन हितकारी। यह अपने मन मांझ बिचारी॥
बालवत्स जो ब्रज नहिं जैहैं। मात पिता इनके दुख पैहैं॥
ताते रूप सबन को धारों। या विधि तिनको दुःख निवारों॥
बाल वत्स विधि लै गये जेते। भये श्याम तब आपुन तेते॥
वैसोइ रूप वैसगुणशीला। वैसिय बुद्धि पराक्रम लीला॥
रङ्ग रेख जैसो जिहि माहीं। अंग चिह्न अंतर कछु नाहीं॥
बोलन हँसन चलन चतुराई। हेरन टेरन फेरन राई॥
भूषण वसन लकुट करजैसे। भये श्याम तब आपुन तैसे॥

दोहा—मारन उद्धारन यदपि, हैं समर्थ भगवान॥
तदपि जान निज दास विधि, करीतासुकी कान॥

१ सरोवर। २ फूल। ३ ब्रह्मा। ४ बछरा। ५ ब्रह्मलोक।

सो०—अपनो करि विधि जान, अनजानत ढीठो करी ॥
तातै कीन्हे आन, मनैं भायो विधिको कियो ॥

कह्यो श्याम सब सखन बुलाई । लावहु घेरि वत्स सब जाई ॥
व्रजको चलहु सांझ नियराई । वर्षि चले बालक समुदाई ॥
चहूंपास सब सखा सुहाये । मध्य श्याम बछरन अगुवाये ॥
वेणु विशाल रसाल बजावत । अपने अपने रँग सब गावत ॥
राँभति गाय वत्स हित लागीं । देखत व्रज युवती अनुरागीं ॥
मोर मुकुट कुंडल बनमाला । हँसन मनोहर नयन विशाला ॥
×गोपद्रज मुख पर छबिछाई । मनहुँ चंद्रकन अमिय निकाई ॥
व्रज वनिता सब तन मन वारत । निरखि रूप भेंटत चित वारत ॥
पहुँचे व्रजहिं श्याम सुंदर वर । गये वत्स बालक निज निज घर ॥
गोसुत ग्वाल बाल हर्षाई । लीन्हे तात मात उरलाई ॥
परम प्रीति करि भोजन दीन्हों । कृष्णचरित काहू नहिं चीन्हों ॥
यशुमति कहत सुतहि मिलि प्यारे । वनहिरात कत करत ललारे ॥

दोहा—मैं सबेर घरको चल्यो, सखा करत सब रात ॥
देखि अगम वनमें डर्यो, वे डरपावत जात ॥

सो०—बारबार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहत ॥
ल्यावहिं गाय चराय, काल्हि जायँ वेई सबै ॥

यह सुनिकै हँसि कहत कन्हाई । काल्हि चरावन जात बलाई ॥
लागी भूख बहुत मोहिं हैरी । भोजनको तुरतहिं कछु देरी ॥
सुनत तुरत माखन लै आई । तब लौं खाहु जननि बलि जाई ॥
है जल तप्त घामको प्यारे । तेल परसतहु न्हाहु ललारे ॥
जाते बनको श्रम मिटि जाई । भोजन करहु बहुरि दोउ भाई ॥
तब जननी गहि बाँह न्हवाये । जेवनको बलराम बुलाये ॥
अति रुचि सों जेंवत दोउ भाई । परम प्रीति परसतहैं माई ॥

---

१ नगीच आय पहुँची । × जैसें चंद्रके ऊपर अमृतकी बूंद हो याप्रकार कृष्णके मुखारविंद पर गोरज शोभा देयहै । २ तेललगायके ।

जेइँ उठे अचमन तब कीन्हों । बीरादुहुँन रोहिणी दीन्हों ॥
जानि उनींदे सेज बिछाई । जननी पौढ़ाये दोउ भाई ॥
श्याम राम सोवत दोउ भैया । सुख पावत निरखत दोउ मैया ॥
अधम रह्यो विधि गर्व नवायो । ब्रजवासिन कछु भेद न पायो ॥
बाल वत्स हरि नये उपाये । सब जानत वेईहैं आये ॥

दोहा–बाल वत्स नव कृत तिन्हैं, ब्रजवनिता अरु धेन ॥
पूरबप्रीतिहुते अधिक, करत रहत उर चैन ॥

सो०–ब्रज मंगल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानंद प्रभु ॥
भक्तनके सुखदान, लगे देन सुख घरन घर ॥

तब [2]विरंचिके मन यह आई । ब्रजके लोगन देखौं जाई ॥
ह्वैहैं करत विलाप कलापा । बिन बच्छन गैयन सन्तापा ॥
आय विरंचि तुरत तहँ देख्यो । घरही घर सब कौतुक पेख्यो ॥
जहँतहँ दुहत गाय पशुपालक । खेलत निजनिज घर सब बालक
देखि विरंचि चकित मनमाहीं । हैं यह ब्रज कैधौं वह नाहीं ॥
मैं विधना सब सृष्टि [1]उपाई । यह रचना धौं किनहिं बनाई ॥
कैधौंहौं यहि भ्रमहिं भुलाना । हैं हरि अविनाशी नहिं जाना ॥
अन्तर्यामी जानत सबहीं । बाल बच्छ धौं ल्याये तबहीं ॥
अति संभ्रम विधिज्ञान भुलायो । गयो फेरि निजलोकहि धायो ॥
देखे वत्स बाल जहँ राखे । चकित बहुरि ब्रजको अभिलाखे॥
क्षण भूतल क्षण लोक सिधारो । बालबत्स दुहुँ ठौर निहारो ॥
वर्ष दिवस इहि भांति बिताई । भयो थकित अति उर भ्रमछाई ॥

दोहा–मोहविकल अति देखिकै, सुंदर श्याम सुजान ॥
प्रकट कियो जन जानि निज, विधिके उरमें ज्ञान ॥

सो०–हृदय भयो तब शुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु ॥
धिक धिक मेरी बुद्धि, बैर बढ़ायो कृष्णसों ॥

मैं मतिहीन [3]भेद नहिं जान्यो । मोहविवश प्रभुसों छल ठान्यो ॥

१ उत्पन्नकिये । २ ब्रह्मा । ३ भेद ।

यह अपराध बहुत मैं कीन्हो । निज अज्ञान न प्रभुको चीन्हो ॥
भई गिलानि बहुत मन माहीं । सन्मुख होय सकत विधिनाहीं ॥
भयो शोच उरमाँझ विशेषा । प्रभु प्रभाव तब परगट देशा ॥
बालक वत्स सहित सब साजू । कृष्णरूप सब लख्यो समाजू ॥
शिव ब्रम्हादिक देव अनेका । देखे अधिक एकते एका ॥
चरण कमल वन्दन प्रभु केरे । गावत गुण गन्धर्व घनेरे ॥
देखि चकित चित भर्म नशान्यो । पूरण ब्रह्म कृष्ण पहिंचान्यो ॥
शरण शरण कहि अति अतुराई । परचो चरण कमलन परआई ॥
अनजानत मैं करी ढिठाई । क्षमा करहु त्रिभुवनके राई ॥
मैं प्रभु तुम प्रताप नहिं जान्यो । तुम्हरी माया मांझ भुलान्यो ॥
चूक परी मोते निज भोरे । नाथ न बनै तुम्हें मुख मोरे ॥

दोहा—मैं अपराधी हीनमति, परचो मोहके जाल ॥
ममकृत दोष न मानिये, तुम प्रभु दीनदयाल ॥
सो०—कह जानों तुव भेव, मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो ॥
तुम देवनके देव, आदि सनातन अजित[1] अज[2] ॥

जो जनते बिगरै बिन जाने । सो अपराध न प्रभु कछु माने ॥
जो शिशु[3] अज्ञ दोष उरमाहीं । माता कबहूं मानत नाहीं ॥
दोष पोष ताको वह करई । बिकसत चित्त अंकलै भरई ॥
रैंदरबनादल[4] जौरिस होई । कहौ कौन परकीजै सोई ॥
निजतनु व्याधि पीर जन पावै । यदपि यत्न करि नहीं बचावै ॥
तैसेही प्रभु मोको कीजै । क्षमि मम दोष शरण गहि लीजै ॥
तुम जाने बिन जीव सदाहीं । उत्पति परलय मांझ समाहीं ॥
तुम करि कृपा जनावहु जाको । सो जानै तुम्हरी प्रभुताको ॥
मैं[5] विधि एक लोकको साईं । जिमि कृमि गूलर मांझगोसाईं ॥
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता । कोटि कोटि ब्रह्माण्ड विधाता ॥

१ जीतनेमें न आवे । २ अजन्मा । ३ बालक मूर्ख । ४ दांत जीभ । ५ गूलरके भुनगा ।

कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं । रवि सम क्योंहूं होंहि सुनाहीं ॥
अब प्रभु बनै सँभारे तोहीं । राखिय चरण शरण निज मोहीं ॥

दोहा–अतिही अगम अगाध हरि, अविगति गतिको जान ॥
तासु पार चाहौं लह्यो, मैं विधि अति अज्ञान ॥

सो०–करिय विरदकी लाज, ममकृत दोष न मानिये ॥
दीनबन्धु ब्रजराज, शरणागत पालन हरे ॥

जब विधि कही दीन बहु बानी।शरण शरण कहि अति भयमानी ॥
तब नहिं बाल बच्छ कछु देखे । एकै रूप कृष्ण विधि पेखे ॥
कृपा करी तब श्रीब्रजनाथा । हस्तकमलपरस्यो विधिमाथा ॥
अभय कियो विधि शोच मिटायो । चरणकमलते शीश उठायो ॥
बार बार पदकमल निहोरी । स्तुति करत दुहूं कर जोरी ॥
जो जग धाम श्याम सुखराशी । ज्योति स्वरूप सबै उरबासी ॥
गुणगण अगम निगम नहिं पावैं । ताहि यशोदा गोद खिलावैं ॥
धरै[3] जल अनल[4] अनिल[5]नभ[6]छाया । पाँच तत्त्व मिलि जगतउपाया ॥
काल डरै जाके भय भारी । सो ऊखल बांधे महतारी ॥
जग करता पालन संहरता । विश्वम्भर सब जगके भरता ॥
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं । ब्रजमें हँसि हँसि जूठनिखाहीं ॥
बड़े भाग्य ब्रजवासिन केरे । तिनके प्रेम रहत तुम घेरे ॥

छं०–रहत जिनके प्रेम घेरे, धन्य ब्रज बासी सबै ॥
ब्रह्म एक अनीह अविगति, घरन घर जिनके फबै ॥
धन्य श्रीवसुदेव देवकि, पुत्र करि जिन पाइयो ॥
धन्य यशुमति नन्द जिन, पय प्याय गोद खिलाइयो ॥
धन्य ब्रजके गोप जिन सँग, धन्य गाय चरावहीं ॥
चार मुख मैं कहा वरणौं, सहस मुख नित गावहीं ॥
धन्य बालक बच्छ तिनते, नाथ पद दरशन लियो ॥

१ पटबीजना (सुनकेहरवा) २ वेद । ३ पृथ्वी । ४ अग्नि । ५ पवन ।
६ आकाश । ७ शेष ।

परसि चरण सरोज मस्तक, पाप तजि पावन भयो ॥
अब देहु ब्रजको बास मोहिं, प्रभु आश यह मेरे हिये ॥
रेणु तृण द्रुम[1] लता खग[2] मृग, होहिं जो तुम्हरे किये ॥
यह नित्य ब्रजलीला तुम्हारी, तुम अनुग्रह ते लही ॥
महत श्रीवृन्दाविपिनको, अमित मित सकको कही ॥
लोक मोहिं न सुहात अब प्रभु, आन विधि कोउ कीजिये
मोहिं ग्वालनको करौ भृत[3], खाय जूठनि दीजिये ॥
बार बार मनाय युग पद, नाथ पद बर माँगहूं ॥
ह्वैरहौं वृन्दा विपिन रज, चरणपंकज लागहूं ॥
दोहा—करि स्तुति गद्गद वचन, दृगजल[4] पुलक शरीर ॥
परयो चरण पंकज बहुरि, विधि अति प्रेम अधीर॥
सो०—तब हँसि बोले श्याम, गर्वप्रहारी भक्त हित ॥
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब ॥
और काहि अब करौं विधाता। तुमहौ कर्म धर्मके दाता॥
तुमते है यह सब संसारा। मम मायाको नाहिंन पारा॥
ताते अब मम आयसु कीजै। ब्रजकी जाय प्रदक्षिण दीजै॥
जाते तनुके पाप नशाहीं। बहुरि जाहु लोकहि सुख माहीं॥
हरि उरहार विविध पहिरायो। बिदाकियो सब शोच नशायो॥
प्रभु आयसु माथेपर धारी। पाय प्रसाद हरषि सुखचारी॥
ब्रज दाहिन[5] फिर पाप नशाये। बाल वत्स प्रभु पहँ पहुँचाये॥
बार बार चरणन शिरनाई। विधि निज लोक गये सुखपाई॥
ग्वालन यह कछु मर्म नजान्यो। वाहि समय सबहिन मनमान्यो॥
हरिसों कहत बिलँब कहँलाई। हम तुम बिना छाक नहिं खाई॥
तुमसब भोजन माँझ भुलाने। बच्छ जाय बन दूर हिराने॥

१ वृक्ष। २ पक्षी। ३ चाकर। ४ नेत्रजल। ५ ब्रजकी प्रदक्षिणा करके।

खोजत खोजत क्योंहूं पाये । सों मैं लै तुम पहँ पहुँचाये ॥

दोहा—अब राखौ सब घेरिकै, दूरि निकसि नहिं जाहिं ॥
तब सुचिते ह्वैके सबै, रुचि सों भोजन खाहिं ॥

सो०—ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो ॥
बहुरि यमुन तट जाय, जल अँचयो[1] धोयो बदन ॥

सन्ध्यासमय चले घरग्वाला । मध्यश्याम सुन्दर नँदलाला ॥
वच्छ घेरि आगे करि नीके । काँधनपर धर लीन्हे छीके ॥
जन जन शृङ्ग बजावत गावत । बनते बने ब्रजहि हरि आवत ॥
घर आये ब्रज मोहन लाला । कहत यशोमति सों सब ग्वाला ॥
अहो महरि बन आज कन्हाई । महादुष्ट इक मार्‍यो जाई ॥
उरग रूप निगले शिशु बच्छा । करी आज सबकी हरि रच्छा ॥
गिरि कन्दर सम तिन मुखबायो । पैठि[2]श्याम तिहि तुरत नशायो[3] ॥
याके बल हम बदत नकाहू । फिरत सकल बन सहित उछाहू ॥
जीते सबै असुर बन माहीं । यह काहूते हार्‍यो नाहीं ॥
बीते वर्ष कहत सब ग्वाला । आज अघा मार्‍यो नँदलाला ॥
यह प्रभु लीला अपरम्पारा । कौन कौन को भुरै न पारा ॥
यशुमति सुनि चकित पछिताई । मैं बरजत वन जात कन्हाई ॥

दोहा—केती करवरते बच्यो, तऊ न नेकडरात ॥
अति विचित्र गति ईशकी, जानी जात न बात ॥

सो०—खीझति यशुमति मात, मानत नहिं मेरो कह्यो ॥
श्याम मनहिं मुसकात, अब बनमें नहिं जाइहौं ॥

हरिकी लीला कहत न आवै । सुर नर असुर सबहिं भरमावै ॥
पय पीवत पूतना नशाई । पटक्यो तृणा शिलापर जाई ॥
तीन लोक मुखमें दिखराये । यमला अर्जुन वृक्ष ढहाये ॥
वत्सासुर बक बहुरि नशायो । अघामारि विधि गर्वनवायो[4] ॥
यशुमति यह पुरुषारथ देखी । तापर खिझपछितात विशेखी ॥

१ जलपीयो । २ भीतरघुसकै । ३ मार्‍यो । ४ ब्रह्माको गर्व दूरकर्‍यो ।

अघा मारि आये नँदलाला । घरघर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि सुनि ब्रज युवती उठि धाई । चकित विलोकत हरिमुख आई ॥
मन मन करत यहै अनुमाना । इनकी सर कोऊ नहिं आना ॥
येई हैं ब्रजके रखवारे । येई हैं पति प्राण हमारे ॥
कहत परस्पर सुनहु सयानी । हैं ये जगपति हम यह जानी ॥
प्रेम मगन ब्रजके नरनारी । लहत परम सुख हरिहिंनिहारी ॥
ब्रज मोहन सुन्दर सुखरासा । भोजन मांगत यशुमति पासा ॥

दोहा–खाहु लाल जो भावई, रुचि सों सखन समेत ॥
सद माखन व्यंजन सरस, करि राखे तुम हेत ॥

सो०–देरोटी नवनीत, और मोंहि भावै नहीं ॥
दियो मात अति प्रीत, खात हँसत मिलिसखनसँग ॥

गोदोहन लीला ॥

हँसि जननी सों कहत कन्हैया । दोहनि दे दुहिहौं मैं गैया ॥
नंद बबा मोंहि दुहन सिखायो । ग्वालन की सर दुहन चढ़ायो ॥
धौरी धूमरि काजरि गैया । तुरतहि दुहिल्यावों दे मैया ॥
भयो मोंहिं बल माखनखाई । अब न डरात बूझ बल भाई ॥
तोंहिं नहीं पतियारो आवै । बैठि ऊठकर भाव बतावै ॥
अँगुरी भाव देखि हँसि माता । उरलगायलिये सांवलगाता ॥
कहत कहां इतनी बुधि पाई । हर्षि निरखि मुख बलि बलि जाई ॥
लै दोहनी दई करमाता । हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
बछरा छोरि तुरत थन लायो । मात दुहत लखि हर्ष बढ़ायो ॥
सखा परस्पर कहत कन्हाई । हमहूं ते तुम करत बड़ाई ॥
दुहन देहु कछु दिन मोंहि गैया । तब करियो मेरी सर भैया ॥
जब लगि एक दुहौ तबताई । दश न दुहौं तो नन्द दुहाई ॥

दोहा–सखा कहत सब झूठही, नंद दुहाई खात ॥
प्रात साथ हम दुहहिंगे, देखहिंको अधिकात ॥

१ माखन । २ गैया दुहिनेको भात्र ।

सो०-कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही तुम बात यह ॥
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड़ लगायके ॥

श्रीवृषभानु कुँवरि मन माहीं । श्याम सुरत क्षण विसरत नाहीं ॥
दरश लालसा दृगन न थोरी । देखोइ चहत बहोरि बहोरी ॥
उठे प्रभात दोहनी लीन्हीं । सुरत श्याम दर्शनकी कीन्ही ॥
जननी देखि कह्यो दुलराई । जातकितै राधा अतुराई ॥
खरकाहिं जात दुहावन मैया । दुहत सवेर ग्वाल सब गैया ॥
कालिह तनक मैं विलँब लगाई । उठे अहिर सब मोहिं रिसाई ॥
गई गाय सब बच्छ पियाई । रीती दोहनि लै फिरि आई ॥
तुमहूं खीझन लगि तब मोहीं । जातसबार आज कहि तोहीं ॥
ऐसे कहि जननी समुझाई । वरते चली व्रजहि समुहाई ॥
नंदसदन¹ आई हरिप्यारी । दुहत गाय गृह द्वार विहारी ॥
दुहत परस्पर अति सुख पायो । निरखि बदन छबि हर्ष बढ़ायो ॥
राधहि देखि महरि नँदरानी । लई बुलाय निकट हर्षानी ॥

दोहा-दंपतिको सुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ॥
बार बार लखि युगल छबि, मनहीं मन बलिजाय॥

सो०-महरि मुदित मुसकाय, मथन कह्यो दधिकुँवरिसों॥
मान दुहाइ दिवाय, आयसुते ठाढ़ी भई ॥

नेति पाणि मन अति अनुरागी । रीतोइमाट बिलोवनलागी ॥
तैसइ भई श्याम गति भोरी । मनलाग्यो जहँ कुँवरि किशोरी ॥
वृषभहिंसों लोई लै लैया । बिसरि गई ठाढी कित गैया ॥
दम्पति³ दशा देखि नँदरानी । रही चकित नहिं जात बखानी ॥
राधा सों कहि प्रगट जनायो । किन यह तोको मथन सिखायो ॥
निज घर मथति ऐसही जानी । कै मेरे घर आय भुलानी ॥
मैं नहिं मथन कबहुँ दधि कीनी । तुम मोहिं सोंह बबाकी दीनी ॥
ताते मथन करन मैं लागी । तुम्हरो वचन सकी नहिं त्यागी ॥

१ देरी । २ नंदरायके घरमें । ३ दोनों कृष्णराधिकाकी ।

तब नँद घरनी मथन बतायो । राधे हरि तन ध्यान लगायो ॥
दुहन श्याम गैया बिसराई । लैया वृषभ पाव अटकाई ॥
दोहनी श्याम माँग तब लीन्ही । तुरत सखा इक लै कर दीन्ही ॥
कहत दुहौ हरि करो चडाई । हँसत गोप बालक समुदाई ॥
दोहा–हँसत कहत हरिसों सबै, कह तुम रहे लुभाय ॥
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारी सों चितलाय ॥
सो०–प्रिया वदन दृग लाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥
देह दशा बिसराय, भूलि गये सब चतुरता ॥
यशुमति कहत सधिकहिटेरे । येढँग हैरी प्यारी तेरे ॥
ऐसो हाल मथत दधि तेरो । हरि भयो मानहु चित्र चितेरो ॥
तेरो मुख सम शशि नहिं भ्राजै । नयननलखि खंजन गतिलाजै ॥
चपलाईते चमकत हैरी । करिहै कहा श्यामको तैरी ॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नाहीं । है धौ कहा गुणत मनमाहीं ॥
इकटकदीठि तबहिं तेल्याई । तनुकी सुरति सबै बिसराई ॥
अबहीं ते ऐसे ढँग योहीं । अबहीं बहुत होनहै तोहीं ॥
ऐसे ढँगहि लगायो श्यामहिं । काज नहीं कछु तेरे धामहिं ॥
चितयो मतिहि करै टकलाई । हिलिमिलि खेल श्याम सँग आई ॥
कुँरहो बैठि आपने धामहिं । धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं ॥
देखत तोहिं श्याम सुधि जाई । तू चितवति तनु सुधि बिसराई
सूधेरहि जो इहां तु आवै । ऐसो ढँग मोको नहिं भावै ॥
दोहा–करत अचंकरी आयतू, यह नहिं मोहिं सुहाय ॥
सूधे खेलहि श्याम सँग, कैतू इत मति आय ॥
सो०–ऐसे महरि रिसाय, सीख दई हरि भाव तेहिं ॥
तब कछु मन सुधि पाय, बोली अति भोरे वचन ॥
मोहिं खीजति बरजत सुत नाहीं । नित उठि मोहिं बुलावन जाहीं
मोहिं कहत बिन तोहिं निहारे । रहत न मेरे प्राण सुखारे ॥

१ नेत्र । २ चित्रके समान । ३ चंद्रमा । ४ बीजुरी । ५ चपलता ।

छोह लगत मोको सुनि बानी । तब आवत मैं ह्यां घरजानी ॥
सुख पावति आवति मैं तातें । तुम कछु लावत औरहिं बातें ॥
यशुमति सुनि प्यारीकी बानी । भोरे भाय समुझि सकुचानी ॥
बाँह पकरि उरसों लै लावति । प्यारी मनसों रोष मिटावति ॥
हँसत कहत मैं तोसों प्यारी । मनमें कछू बिलग जनिलारी ॥
सिखवत तोहिं सीख गुणकारी । मैं तेरी जैसे महतारी ॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई । गृहकारज कछु तोहिं सिखाई ॥
सुनि यशुमतिके वचन सप्रीती । बोली अति नागरि शिशुरीती[1] ॥
मैया मोसों टहल करावै । खीझत जात देखि जो पावै ॥
सुनि यशुमति राधाकी बानी । श्रीवृषभानु लाड़िली जानी ॥

दोहा-अति सप्रेम दुलरायकै[2], लई बहुरि उर लाय ॥
श्रीराधाके चित्ततै, दीनो क्षोभ[3] मिटाय ॥
सो०-कापै वरणी जाय, हरि प्यारीकी चतुरता ॥
लीनी सहज सुभाय, बातनहीं यशुमति भुरै ॥

कहत सखा हरिसों मुसकाई । दुहत कहा तुम आज कन्हाई ॥
काल्हि दुहत रहे होडलगाई । बिसर गई सब आज बड़ाई ॥
गिरति दोहनी कम्पित हाथा । नोवर्त[4] वृषभ वत्सलै साथा ॥
सुनि ग्वालनके वचन गोपाला । कछुक सकुचि बिहँसे नँदलाला ॥
बच्छ छोरदियो खरिक चलाई । आप जननिसों कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो । सुनि आऊं दाऊ मोहिं टेरो ॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो । लै हरि मुकुट शीश धरिलीनो ॥
चारु पीत पट[5] कटि लपटाई । कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी । गये बुलाय खरिक सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई । कहति यशोमति सों अतुराई ॥
जाति घरहि प्रातहि मैं आई । खरिक दुहावनको निजगाई ॥

---

१ बालपनकी रीतिसों । २ प्यारकर । ३ क्रोध । ४ बैलके पायनमें लोमनाडारके दुहौहौ । ५ कमरमें पीतांबर कस ।

पायो ग्वाल खरिक कोउ नाहीं । खोजति मैं आई इत माहीं ॥
दोहा–इहाँ अजिर गैया दुहत, देखे आय कन्हाय ॥
तनके दोहनि तनक कर, देख रही चित लाय॥
सो०–सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी वचन ॥
यशुमति मन सुखपाय, कहत कुवँरि सों जान घर॥
जा प्यारी घर आवत रहियो । हमरो मिलन महरि सों कहियो॥
यह सुनि कुँवरि चली हर्षाई । मन हरि लीन्हो कुँवर कन्हाई ॥
गई खरिक कर[2]दोहनि लीने । चितवत मग[3] जहँ श्याम प्रवीने ॥
तहां मिलीं बहु सखी सहेली । बूझति राधहि कहा अकेली ॥
प्रात दुहावन मात पठायो । तहां खरिक कोउ अहिर न पायो॥
इत आई मैं ग्वाल बुलावन । जात खरिक अब गाय दुहावन॥
बोलि उठे हरि तब इत आवो । हम दुहि देइँ दोहनी लावो ॥
दुहन देन कहि श्याम बुलाई । सुनत गई प्यारी सुखपाई ॥
कहति सखी सब मन मुसुकाई । कहां प्रीति इन आय लगाई ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया । आई कहां दुहावन गैया ॥
हरि मुख लखि वृषभानुकिशोरी । प्रेम विवश भइ तनु सुधि भोरी
मोहन लई दोहनी करते । प्रिया प्रीति रस वश भइ वरते ॥
दोहा–धेनु दुहावत लाड़िली, दुहत नन्दको लाल ॥
सो सुख कापै जाय कहि, देखत ब्रजकी बाल॥
सो०–बछरा पद अटकाय, गोथन लीन्हों हाथ हरि ॥
प्रिया वदन दृग लाय, दूध धार छांड़त छलन॥
दुहत धेनु अतिही छवि बाढ़ी । प्यारी पास दुहावन ठाढी ॥
एक धार दुहनी में डारे । प्यारी तन इक धार पखारे ॥
हरि करते पय धार छुटाहीं । लसत छीट प्यारी मुख माहीं ॥
नमहु मयँ[4]क कलङ्क पखारी । शोभित जहँ तहँ चन्द्र सुधारी॥
कै धौं पै निधि खोरि मयङ्का । लसत सुधा[5]सह खोय कलङ्का ॥

१ छोटी । २ हाथ । ३ मार्ग । ४ चन्द्रमा । ५ अमृत ।

लसतनीलपट कनक किनारी । सोरत मुखहिं मुदित मन प्यारी॥
मनहुं शरदे शशि सुधा उदारा । घनदामिनि घेर्यो इक बारा ॥
इहि विधि रहसत बिलसत दोऊ। हेतु हिये थोरे नहिं कोऊ ॥
मनहुं उभैय आनँद सैर भारी । मिलत चहत मर्याद बिसारी ॥
हाव भाव रस दम्पति पूरे । निरखत ललितादिक दुर दूरे॥
इहि विधि श्रीवृषभानुदुलारी । हरि पै धेनु दुहावत प्यारी ॥
बिलसत ब्रजविलासब्रजप्यारे । ये सुख तीन भुवनते न्यारे ॥

दोहा-दुही कुँवर नँद लाडिले, श्रीराधाकी गाय ॥
दोहनि देत न हँसि प्रिया, माँगत हाहाखाय ॥

सो०-त्यों त्यों हँसत कन्हाय, ज्यों ज्यों प्रिय हाहाकरत॥
सो सुख बरणि नजाय, अरझे दोऊ प्रेम रस ॥

फिर हाहाकर कहत कन्हाई । अकबैदेहौं नन्द दुहाई ॥
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी । दई दोहनी बिहँसि बिहारी ॥
हाव भाव करि मन हरि लीन्हों । कुँवरिहि कान्ह बिदा तब कीन्हो॥
यह छवि निरखि सखी हर्षानी । चली अग्रह्वै कछुक सयानी ॥
प्यारी निरखि श्याम सुन्दरको । चलन चहत पग चलत न घरको ॥
अंतरनेक न हरिसों भावै । पुरजनसकुच बहुरि सकुचावै ॥
धिक यह लाज कहत मन माहीं । निरखन देत श्याम जो नाहीं ॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताई । दूर करौं पुनि इहि दुखदाई ॥
यह विचार मनमें ठहराई । चली सदन उर राखि कन्हाई ॥
मुरि मुरि नंद नँदन तन हेरे । आवति विरह बिथा तन घेरे ॥
आगे धरत परत पग नाहीं । मन फेरत मन मोहन पाहीं ॥
चितवत श्याम खरिक महँ ठाढे । प्यारी तन मन आनँद बाढे ॥

दोहा-भये दृगनते ओट दोउ, गये सदनै सुखरास ॥

१ श्रीराधिकाजीके मुखपर सुनहरी किनारी लगी नीलीसारी अत्यंत सोभा देय उसकी ब्रजवासीदास उपमा देयहैं कि जैसे। २ मानो शरदऋतुके चन्द्रमाको एककालमेंही मेघ और बीजरीने घेर्यो होय । ३ दोनों । ४ सरोवर । ५ नेत्रनते । ६ घरको ।

विरह विकल प्यारी गई, ज्यों त्यों सखियन पास ॥
सो०-सखियन आवत देषि, श्रीवृषभानु कुमारिको ॥
उर आनंद विशेष, हर्षि सबै ठाढी भई ॥
बूझति सबै सखी मुसकानी । कहहु राधिका कुँवरि सयानी ॥
और अहिर तुम्हरे कित प्यारी । हरि दुहि दीन्ही गाय तुम्हारी ॥
यह सुनि चकित भई मति भोरी । गिरी धरणि[1] मुरझाय किशोरी ॥
देखि सखी सब आतुर धाई । लई उठाय कुँवरि उरलाई ॥
क्यों नागरी गिरी मुरझाई । दूध दोहनी दई गिराई ॥
यह वाणी कहि सखिन सुनाई । कारे[2] मोहिं डसीरी माई ॥
भई विकल कछु तनु सुधि नाहीं । कहत सखी सब आपसमाहीं ॥
अबहीं देखत नीके आई । कहा भयो कारे कित खाई ॥
यहतो कारो कुँवर कन्हाई । हमहूं को जिन फूंक लगाई ॥
जाकी मुर मुसकन विष बांको । याके रोम रोम विष ताको ॥
तन मन दृगन सांवरो छायो । देह गेह सब नेह भुलायो ॥
सब सखियन मन यह ठहराई । लैराधिकहिं सदन पहुँचाई ॥
दोहा-लेहु महरि कीरति[3] सुता, अपनी देखहु आय ॥
कहुँकारे याको डसी, गिरी धरणि मुरझाय ॥
सो०-ल्यावहु गुणी बुलाय, वेग यत्न याको करहु ॥
गयो वदन कुम्हिलाय, ज्यों त्यों हम लाई इहां ॥
जननी सुनत उठी अकुलाई । रोवति धाय कंठ लपटाई ॥
प्रात गई नीके उठि घरते । मैं बरजी मान्यो नहिं अरते ॥
अतिहि हठीली कह्यो न मानै । सोई करति जु मनमें आनै ॥
डरी मात लखि अँग सब जूडे । अतिही शिथिल स्वेदजल[4] बूडे ॥
महरि नगर ते गुनी बुलाये । सुनत सकल आतुर उठि धाये ॥
मंत्र यंत्र बहु भांति जगावैं । थके सकल कछु भेद न पावैं ॥
गारुड हरि जो रहे मन माहीं । महरि विकल अति मन पछिताहीं ॥

१ पृथ्वी । २ कारेसाँपने । ३ कीरतिमैया । ४ पसीना ।

फिर फिर बूझत सखिन बुलाई । कह प्यारी कहि तुमहिं सुनाई ॥
कहत सखी सब परम सयानी । सुनहु महरि इतनी हम जानी ॥
हम आगे यह पाछे आई । गिरी धरणि दुहनी ढरकाई ॥
यही कह्यो कारे मोहिं खाई । तब हम आतुर लई उठाई ॥
सो कारो हमहूं पुनि देख्यो । लग्यो सबन विष याहि विशेष्यो॥
दोहा–सो अब हम तुम सों कहैं, मानिलेहु यह बात ॥
बड़ो गारुडू रायहै, नंदमहरको तात ॥
सो०–ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही विष जायगो ॥
तुरतहि लेहिं जिवाय, हम नीके यह जानहीं ॥
देखहु धौं यह बात हमारी । एकहि मंत्र जियावहिं झारी ॥
त्रिभुवन गुनी और नहिं ऐसो । है वह नंद महरिको जैसो ॥
कीरति महरि सुनी यह बानी । अपनें मनहिं सांचकर मानी ॥
इकदिन राधा हू यहबानी । मोसों कही हती यह जानी ॥
कीरति चली नंदके धामहिं । बोलन आतुर गारुड़ श्यामहिं ॥
महरि यशोदहि जाय पुकारो । अहो गारुडू सुवन तुम्हारो ॥
मेरी सुता लाडिली गोरी । विह्वल विकल परीमति भोरी ॥
प्रातहि खरिक दुहावन आई । तहां कहूं कारे डसिखाई ॥
नेक पठै सुत काज विचारो । यह यश ह्वैहै बड़ो तुम्हारो ॥
सुनि यशुमति कीरतिकी बानी । कहत महरि तुम भई अयानी ॥
मंत्र यंत्र कह जानै मेरो । अतिही बाल वर्ष षट केरो ॥
किन तुमको दीनो बहँकाई । यह तुम बूझो गुणिन बुलाई ॥
दोहा–मैं चकित तुम बचन सुनि, यह अचरजकी बात ॥
श्याम भयो कब गारुडू, तुम आई अतुरात ॥
सो०–अबलों सुनी न कान, भयो श्याम कब गारुडू॥
बालक अति अज्ञान, यंत्र मंत्र जानै कहा ॥
महरि गारुडू कुँवर कन्हाई । इक दिन राधा मोहिं सुनाई ॥

१ पुत्र । २ बावरी । ३ छःवर्षको ।

एक लरकिनी कारे खाई । जाको तुरतहि श्याम जियाई ॥
ताते मैं आई अतुरानी । पठवहु सुतहि नेक नँदरानी ॥
है मम कुँवरि विकल अधिकाई । प्रात खरिक कारे कहुँ खाई ॥
बड़ो धर्म यशुमति यह लीजै । वेगि बुलाय कान्हको दीजै ॥
यह सुनिकै यशुमति मुसकाई । अबहिं हती मेरे घर आई ॥
है राधा मोहन कछु कारन । चुप है मन में लगी विचारन ॥
वहाँ सखी ललतादि सयानी । प्यारिहि देखि हृदय अनुमानी ॥
याहि डसी बंशीधर कारे । चितवन फण मुसकन विषधारे ॥
प्रेम प्रीति दौंडारत जारे । लगे न मंत्र गुणी सब हारे ॥
थके सकल करि विविध उपाई । यह विष मोहन बिन नहिं जाई ॥
सखी एक हरि पास पठाई । तिन मोहन सों जाय जनाई ॥

दोहा—अहो महरिके लाड़िले, मोहन श्याम सुजान ॥
कित सीखे यह गोदुहन, हम सों कहौ बखान ॥
सो०—दुहि दीनी जिहिगाय, आज भोरही खरिकमें ॥
वेग विलोकौ जाय, निज नयनन[1] ताकी दशा ॥

जबते दुहि दीन्ही तुम गैया । अहो अनोखे गाय दुहैया ॥
घर लौं कुवँरि जान नहिं पाई । बीचहि धरणि गिरी मुरझाई ॥
देखत संग सखी सब धाई । जैसे तैसे गृह पहुँचाई ॥
सो अब तनुकी सुधि न सम्हारै । परी बिकल नहिं दृगन उघारै ॥
सकसकात तनु स्वेद बहाई । उलटि पलटिभरि लेत जँभाई ॥
कहति मोहिं कारे अहिखाई । कियो यतन बहु गारुड आई ॥
ताहि कछू उपचार न लागै । तुमरो नाम लेत कछु जागै ॥
हौं पठई इक सखी सयानी । यह विष तुमरो निहचै जानी ॥
यह कारो अहिरूप तुम्हारो । मुसकनिविष ता ऊपर डारो ॥
अब जो चाहौ ताहि जियावो । वेगि चलो जिन गहर लगावो ॥
अतिहि विकल वह विरह अधीरा । दरश दिखाय हरौ तनु पीरा ॥

---

1 नेत्रन ।

तुम अश्विनीकुमार कन्हाई । वेगि चलो हरि लेहु जिवाई ॥
दोहा-नजर दीठ इकरावरी, टेर कहत हम कान्ह ॥
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्द द्वार सब प्रान ॥
सो०-व्याकुल जननी तास, परनि महर वृषभानुकी ॥
गई यशोमति पास, वेगि जाय सुधि लीजिये ॥
कीरति आगम सुनत कन्हाई । कीनी विदा सखी मुसुकाई ॥
जो कहुँ डसी भुजङ्गम प्यारी । तौ हम आय देहिंगे झारी ॥
ऐसे कहि हरि सदनहि आये । देखि यशोमति निकट बुलाये ॥
तू कछु जानत मंत्र कन्हैया । बूझति बिहँसि यशोमति मैया ॥
कीरति महरि बुलावन आई । कुँवरि राधिका कारे खाई ॥
आनहु झारि वेगि सँग जाई । कुँवरि जिवाये अतिहि भलाई ॥
गारुड भयो भले सुत जानी । आज सुनी श्रवणन यह बानी ॥
मैया एक मंत्र मैं जानों । तेरी सों कहि सत्य बखानों ॥
अहि काट्यो मो दृष्टि जु आवै । मोपै क्योंहूं मरण न पावै ॥
जननि कह्यो सुत जाउ कन्हाई । देहु राधिकहि जाय जिवाई ॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाथा । चले हर्षि कीरतिके साथा ॥
चली महरि हरि संग लिवाई । गइ वृषभानु पुरा समुहाई ॥
दोहा-रुदतिमहरि लखि कुँवरिको, अतिहि गई कुम्हलाय ॥
शिथिल अंग वाणी निरखि, लीनी कण्ठ लगाय ॥
सो०-तबहिं श्यामके पांय, परी कुँवरि लैके महरि ॥
मोहन देहु जियाय, अति व्याकुल मेरी सुता ॥
आये गारुड कुँवर कन्हाई । कुँवरि कान्हने यह सुनि पाई ॥
धन्य धन्य आपनको जानी । हृदय हर्ष दृग आनँद पानी ॥
प्रगट रोम तनु स्वेद बढ़ाई । विह्वल देखि जननि अकुलाई ॥
अन्तर भाव भेद हरि जाने । रसिक शिरोमणि मन मुसकाने ॥
तब कछु पाढिकै कुँवर कन्हाई । मुरलि अंगसों दई छुवाई ॥

१ घर । २ आनंदजल ।

तत्क्षण लोचन कुँवरि उघारे । सन्मुख सुंदर श्याम निहारे ॥
निरखत दृगन परम सुख लीनो । सकुच सँभारि वसन सम कीनो
बूझत बात जननि सों प्यारी । आज कहा यह है महतारी[1] ॥
जननी कहति हरषि उरलाई । तोहिं मरतते कान्ह जिवाई ॥
करत लाज तू कारी प्यारी । करिवर बड़ी आज विधि टारी ॥
यों कहि महरि हृदय अनुरागी । नंदसुवनके पांयन लागी ॥
बड़ो मंत्र तुम कियो कन्हाई । सुता[2] हमारी मरत जिवाई ॥

दोहा-उर लगाय मुख चूमिकै, पुनि पुनि लेत बलाय ॥
धन्यकोखि यशुमति महरि, जहां अवतरे आय ॥
सो०-कछु मेवा पकवान, कह्यो खान घनश्याम सों ॥
बिदा किये दै पान, कीरति श्याम सुजानको ॥

महरि मनहिं मनमें अनुमानी । जोरी भली विधाता बानी ॥
ब्रज घर घर यह बात चलाई । बड़ो गारुड़ू कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहत हरिसों मुसकाई । भले भले हो गारुडराई ॥
प्रगट्यो गारुड नाम तुम्हारो । भले आज तुम विषहिं उतारो ॥
जननि कहति मेरो अति वारो । अवधौं कौन करै निरवारो ॥
जान्यों कठिन वसन ब्रजकारो । अव यह मंत्रहिं मतिहिं बिसारो॥
फिर कारो कहुँ करहिं पसारो । हम तब लेहैं नाम तुम्हारो ॥
यह गारुडी कहां तुम पाई । प्यारी एकहि टेर जिवाई ॥
अब हम जानी बात तुम्हारी । जाहु आपने सदनै[3] बिहारी ॥
रसिक मुकुटमणि कुंज बिहारी । हँसबशकीनी घोषै[4] कुमारी ॥
बिवश भई सब ब्रजकी बाला । गये सदन मोहन नँदलाला ॥
ब्रजविलास बिलसत ब्रज प्यारो । ब्रजवासी जनको रखवारो ॥
दोहा-कारोसुत नँदरायको, जाकी लीला नित्त ॥
तिनहींको हरि डसतहैं, जिनको उज्ज्वल चित्त ॥
सो०-धन्य धन्य ब्रज बाल, धनि धनि ब्रजके ग्वाल सब॥

१ मैया । २ बेटी । ३ घर । ४ गोपनकी कन्या ।

जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित ॥
प्रात होत बल मोहन लाला। गाय बच्छ सबलै सँग ग्वाला ॥
चले चरावन ब्रज वन माहीं। क्रीड़ा करत सकल मग जाहीं ॥
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला। वृन्दावन गये मदनगुपाला ॥
गैया बगर गईं वन माहीं। बैठे कान्ह कदमकी छाहीं ॥
सखालिये सँग सुबल सुदामा। क्रीडा करत सहित बलरामा ॥
ग्वाल जहाँ तहँ गाय चरावैं। आनँद भरे कृष्ण गुण गावैं ॥
करत विहार विविध सब ग्वाला। गये दूरि बन सघन विशाला ॥
कोऊ गैयन घेरन धायो। कोऊ बछरन लै बिलगायो ॥
हलधर रहे कहूं वनजाई। आप अकेले रहे कन्हाई ॥
मन मन कहत श्याम सुखदाई। सखारहे कत बन बिरमाई ॥
गैराँभन कहुँ सुनियत नाहीं। गये निकसि धौं कित वन माहीं ॥
आलस गात जानि मनमाहीं। बैठे बंशीबटकी छाहीं ॥
दोहा–सखा वृन्द हलधर सहित, लिये बच्छ अरु गाय ॥
वृन्दावन घन छाँड़िकै, रहे ताल वन जाय ॥
सो०–मन हरषे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ॥
फरे विपुल तरु ताल, अति रस मय मीठे मधुर ॥

अथ धेनुकवध लीला ॥

गोधन वृन्द दिये बगराई। लगे खान फल मन हरषाई ॥
अचयो बलरस ताल रसाला। बाढ़्यो उर आनंद विशाला ॥
सुरत नन्दनन्दनकी आई। कह्यो सखन सों कहां कन्हाई ॥
ल्यावहु घेरि जाय सब गैया। चलौ वेगि जहँ कुँवर कन्हैया ॥
सुनत सखा हलधरकी बानी। बनमें श्याम अकेले जानी ॥
आतुर गैयन घेरन धाये। टेर दई सब ग्वाल बुलाये ॥
तहां असुर इक धेनुकनामा। खरके रूप रहै वनधामा ॥
सोयो हुतो विटपकी छाया। सुनत शोरकर तामस धाया ॥
अति बलवान विशाल कराला। परम भयंकर मानहु काला ॥

दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे। भाजे जित तित भयके मारे॥
असुर महाबल गर्व बढ़ाई। बलके सन्मुख गरजो आई॥
मत्त तालके रस बलराई। देखि असुर मन रिस उपजाई॥

दोहा—बल सँभारि उठिकोपकारि, असुर प्रचार्यो जाय॥
अग्रज माता श्यामको, तिहुँ पुर जासु बड़ाय॥

सो०—बलको आवत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण॥
चपर चलाई आनि, बहुरो हठ ठाढ़ो भयो॥

बहुरो फिर मारनको धायो। बल जूको तामस तब आयो॥
जबहिं असुर फिर चरण चलायो। गहि लीनो करिकोप फिरायो॥
पटक्यो लै तरुताल हिलाई। भयो प्राण बिन तरुहिं गिराई॥
तरुसों तरु टूटे भहराई। उठ्यो सकल वन घन घहराई॥
और बहुत धेनुक परिवारा। कीन्हों बल सबको संहारा॥
मार्‍यो असुर महा दुखदाई। ग्वाल बाल सब करत बड़ाई॥
आये सब वृन्दावन माहीं। जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं॥
चढ़ि चढ़ि द्रुमन पुकारत ग्वाला। आवहु हो मोहन नँदलाला॥
ल्याये घेरि मिली सब धेनू। आवहु मधुर बजावहु वेनू॥
कोमल चरण कहूं मति धावहु। कंटक कठिन मही इत आवहु॥
ऐसे हरिको टेरत जाहीं। तृषितभये सब वनके माहीं॥
ग्वाल बाल सब यमुनहिं आये। बलरस मत्त न पहुँचन पाये॥

दोहा—गोप गाय अचवत भये, कालीदहको नीर॥
निकसत सब अकुलायकै, बैठ गये जल तीर॥

सो०—परे सकल मुरझाय, जहां तहां विष झारते॥
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनो विन प्राण सब॥

हरि ठाढे बंशीवट छाहीं। बारहिं बार कहत मन माहीं॥
अबहिं रहे सब संग चरावत। निकसि गये धौंकितबन धावत॥
गौरॉभन ग्वालनके बैना। श्रवण न माँझ परत कछु हैना॥
तरु चढि इत उत गैयन हेरत। लै लै नाम सखनको टेरत॥

कालीदह तन आहट पाई। शोधलेत उत चले कन्हाई ॥
बन घन ढूंढत हरि तहँ आये । गाय ग्वाल सब मूर्च्छित पाये ॥
मनमें ध्यान करतही जान्यो । कालीअहि ह्यां आय समान्यो ॥
रहत इहां खगपति भयमानी । अँचयो इन ताको विषपानी ॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारी । तुरत उठे सब भये सुखारी ॥
देखि कृष्णको अति सुखपाई । मिले सकल प्रेमातुर धाई ॥
बोले हरि मृदुवचन सुहाये । तुम सब मोहिं छोडिकै आये ॥
कितते कित इतनिकसे आई । मैं बन ढूंढि रह्यो पछिताई ॥

दोहा–खोज लेत आयो इहाँ, देखे सब बेहाल ॥
मुरछि परे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल ॥

सो०–गाय बच्छ अरु ग्वाल, उठे एकही बार पुनि ॥
कहा कियो इह ख्याल, देखि मोहिं अचरज भयो ॥

सुनि हरि वचन परम सुखदाई । कहत सखा सब सुनहु कन्हाई॥
अचयो तृषित यमुन जल आई । तबहिं गिरे सब तट अकुलाई ॥
कारण हम कछु जान्यो नाहीं । भये प्राण बिन सब क्षण माहीं ॥
इह हम जानी कुँवर कन्हाई । तुमहीं हमहिं जिवायो आई ॥
हो तुम ब्रज जनके रखवारे । तहां तहां तुम हमहिं उबारे ॥
तब हरि बलदाऊको हेरो । कह्यो चलहु वन होत अँधेरो ॥
सखा बोलि ल्याये बलरामहिं । हँसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं ॥
बड़ीदेर भइ तुम्हें कन्हैया । रहे अकेले वनमें भैया ॥
चलहु वेगि अब घरको जाहीं । लेहु लिवाहि गाय वन माहीं ॥
हेरी देत चले सब ग्वाला । गावत गुण सुन्दर गोपाला ॥
गोधन आगे दये चलाई । सखन मध्य मोहन बलभाई ॥
चले ब्रजहि ब्रज जन सुखदाई । निरखि बदन छबि मदन लजाई ॥

दोहा–सुनि ब्रज सुन्दरि परस्पर, कहत मुरलि सुर घोर॥
आवत वनवासि अहर निशि, आगम नंदकिशोर ॥

सो०–धाई गृह तजि काज, निरखनको मन भावतो ॥

सुन्दर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छौंडिकै ॥

वे देखो आवत बल मोहन । सुबल सुदाम सुदामा गोहन ॥
मेघश्याम [illegible] गैयन पाछे । शीश मुकुट कटि कछनी काछे ॥
कमल वदन कर वेणु बजावैं । गौरी राग मिले सुरगावैं ॥
नयन विशाल कमल ते आछे । कोटि मदन की छबिको बाछे ॥
कुंडल श्रवण वदन छवि छाई । गोरज छवि कहुँ चंद्र छिपाई ॥
निरखि मुदित सब ब्रजकी बाला। पहुँचे आय सदन नँदलाला ॥
ब्रज जीवन बल मोहन भैया । निरखि जननि दोउ लेत बलैया॥
ग्वाल कहत धनि यशुमा माता। धनि धनि बल मोहन दोउ भ्राता॥
नरतनु धरे देव ये कोऊ । ब्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
येहैं सब ब्रजके रखवारे। गाय गोपके राखनहारे ॥
गर्दभ रूप असुर इक भारो । ताहि आज हलधर बल मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरझाई । तहां कान्ह सब मरत जिवाई ॥

दोहा—अब हम काहू डरत नहिं, येहैं हमैं सहाय ॥
बल मोहनके बल फिरत, वन वन चारत गाय ॥

सो०—परत गाढ़ जब आय, तब तब होत सहाय हरि ॥
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुँवर ॥

यशुमति सुनि ग्वालन की बानी। कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी ॥
नित नव चरित सुनत हरि केरे। हैं कोऊ ये बडन बडेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये । धन्य धन्य हम सुत करि पाये ॥
अतुलित कर्म दुहुनके जानी । दोउ जननी मन मांझ सिहानी ॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी । लिये लाय छाती हर्षानी ॥
भूखे जान तुरत अन्हवाये । षट्रस व्यंजन सरस जिमाये ॥
भोजन करि अचये दोउ भाई। लीन्हे पान संत सुखदाई ॥
पौढे सेज दास हितकारी । ब्रज जन बासीहैं बलिहारी ॥
चिंतामणि हरि जन सुखदानी। कालीकी चिन्ता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित वनको जाहीं। दुखपावत कालीदह माहीं ॥

विषधरको रहबो जलमाहीं। वृन्दावन ढिग नीको नाहीं॥
कालिहिकाढि इहां ते दीजै। यमुनाको जल निर्मल कीजै॥
दोहा–यह विचार मनमें करत, भये नींद वश श्याम॥
यशुमति हरि पौढ़ायकै, आपलगी गृह काम॥
सो०–खरैं न बोलन देत, घरमें काहूको महरि॥
बल मोहनके हेत, जागि परैं मति नींदते॥
शिव सनकादि दिवसनिशिध्यावैं।कबहूं जाको अन्त न पावैं॥
ब्रह्म सनातन आनँदखानी। सोनँद सदन सोवत सुखदानी॥
देखो नंद कान्ह अति सोवत। श्रमित जानि बनके सुख जोवत॥
मानत नाहिं कहों किन कोऊ। आप हठीले भैया दोऊ॥
करसों पोंछत सुभग शरीरा। कहियत यहै प्रेमकी पीरा॥
निजपलका तहँ लियो मँगाई। सोये हरिके ढिग नँदराई॥
यशुमति हूं पौढ़ी तहँ आई। निशिबीते अधिकी अधिकाई॥
जाग उठे तब कुँवर कन्हैया। कहां गई मोढिगते मैया॥
सँग सोवत जान्यो बल भाई। अतिही श्याम उठे अकुलाई॥
जागे नँद अरु महरि यशोदा। हरिको ऐंचिलियो नँद गोदा॥
काहे झिझकि उठ्यो अनियासा। तुरतहिदीपक कियो प्रकासा॥
सपने गिरो यमुन जल जाई। काहू मोको दियो गिराई॥
दोहा–नित प्रति मैं बरजतरहों, तू हठि यमुना जाय॥
सुधि रह गई अन्हानकी, जिन हो लाल डराय॥
सो०–कौरै लै नँदराय, पौढ़ाये निज संग तब॥
वृंदावन तू जाय, किहि कारण जित तित फिरत॥
अब तू वृन्दावन जनि जाई। तहां कौनधौं रहत बलाई॥
सोये दंपति बीच कन्हाई। तुरतहिगई नींद फिर आई॥
सपनो सुनि जननी अकुलानी। कहत नंद सों यशुदारानी॥
देख्यो धौं कह स्वप्न कन्हाई। या ब्रजके जीवन दोउ भाई॥

१ सुखमानी।

यहै यत्न इनको अब कीजै । गाय चरावन जान न दीजै ॥
गृहसंपति द्वै तनक दुठौना । इनहीं लौं बल भोग ठठौना ॥
येवन जात चरावन गैयां । हँसी करत ब्रज लोग लुगैयां ॥
दंपति आपसमें इहि भांती । करत विचार बीति गइ राती ॥
तारागण सब गगन छिपाने । गयो तिमिर अम्बुज विकसाने ॥
उठि यशुमति लागी गृह काजा । भूलिगयो निशि शोच समाजा ॥
प्रात स्नान यमुन नित जाई । नंदहि तुरतहि दियो उठाई ॥
मथन हारि ग्वालिनि सब जागीं। जित तित दही बिलोवन लागीं॥

दोहा–हरिप्यारी सुरभीनको, जम्यौ जुदधि बिलगाय ॥
सो हरि हित माखन लिये, मथति यशोदा माय॥
सो०–सदमाखन निज पानि, मथत तुरत मथनी धर्‌यो॥
बड़ भागिनि नँदरानि, माखन प्यारे लाल हित॥

लगी जगावन हरिको जाई । उठहु तात माता बलि जाई ॥
प्रगट्यो तरणि किरणि महि छाई । खोलि देहु मुख कमल कन्हाई॥
सखा द्वार सब तुम्हहिं बुलावैं । तुम कारण सब धाये आवैं ॥
उठि तिनको मिलिकै सुखदीजै । होत अवार कलेऊ कीजै ॥
तब हरि उठिकै दरशन दीनो । माता निरख मुदित मनकीनो ॥
दाऊ जू कहि श्याम पुकार्‌यो । नीलांबरगहि मुखते टार्‌यो ॥
मनु घनते शशि भयो नियारो। प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो ॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ वीरा । गौर श्याम अति सुभग शरीरा ॥
शयन भवन ते बाहर आये । लखि दोउ जननि परम सुखपाये॥
दँतवनलै दोउवन कर दीनी । चौकी बैठि मुखारीकीनी ॥
मातन निज निज कर मुख धोयो। नयननको आरस सब खोयो॥
अँचरन सों मुख कमल अँगोछे । उर लगाय सब अंगन पोछे ॥

दोहा–करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुँ बाहर जाउ॥
मथ्यो तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ ॥
सो०–दई दुहुनको मात, रोटी अरु माखन मधुर ॥

हरषि परस्पर खात, माता अंतर हेतु लखि ॥

अथ कालीदमन लीला ॥

ऋषि नारद हरि भक्त सयाने । प्रभुके मनकी रुचि पहिचाने ॥
गावत गुण हरि परम हुलासा । गये तुरत मथुरा नृप पासा ॥
देखि कंस आदर अतिकीनो । करिदंडवत बरासनदीनो ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई । कछुक शोचवश परत लखाई ॥
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई । एक शोच मोहिं बड़ो गुसाई ॥
येदोउ ब्रजमें नंदकुमारा । जानि परत मोहिं कोउ अवतारा ॥
कहत जिन्हैं बलराम कन्हाई । तिनकी गति मति जानि न पाई ॥
तृणावर्त्तसे दैत्य पठाये । सो उन पल इक माहिं नशाये ॥
बकी पठाय दई पहिलेहीं । ऐसनको बल सब लैलेहीं ॥
उनते भयो नहीं कछु काजा । यह सुनि समुझि होत मोहिं लाजा ॥
अबमुनि तुम कछु कहहु विचारा । जिहि विधि मारहुँ नंदकुमारा ॥
मुनि हरिके गुण नीके जाने । सुनि नृप वचन मनहिं मुसकाने ॥

दोहा—तब बोले मुनि नृपति सों, सत्य कही तुम तात ॥
वे दोऊ अवतारहैं, इन गति जानि न जात ॥

सो०—हैं ये तुम्हरे काल, प्रगट भये ब्रज आयकै ॥
नंद गोपके बाल, तुम इनको राखो मतिहि ॥

एक बात मेरे मन आवै । करहु कंस तुमको जो भावै ॥
काली अहि रह्यो यमुना आई । तहां कमल फूले विपुलाई ॥
फूल तहां ते मांगि पठावहु । दूत पठै नंदहि डरपावहु ॥
यह सुनि ब्रजके लोग डरै हैं । यहै बात वेऊ सुनि पैहैं ॥
जैहैं अवशि फूलके काजा । तहां घात करिहैं अहिराजा ॥
यह सुनि कंस बहुत सुखपायो । भलो मंत्र मुनि मोहिं बतायो ॥
धनि धनि कहिपुनिशिरनावत । हरषि चले मुनि हरि गुण गावत ॥
तबहिं कंस इकदूत बुलायो । ब्रजहि नंदके पास पठायो ॥
दीनो ताको पत्र लिखाई । कहियो यहै नंदको जाई ॥

कोटि कमल कालीदह केरे । पहुँचावहुलै कालिह सबेरे ॥
कंसराज अति काज मँगाये । बनिहै तुमको तुरत पठाये ॥
चल्यो दूत आतुर ब्रज धाई । जानि लई सब कुँवर कन्हाई ॥

दोहा–आप रहे ता दिन घरहिं, वनहि पठाये ग्वाल ॥
ब्रजवासी जनके सुखद, ब्रजजीवन नँदलाल ॥

सो०–दूतहि आवत जान, आप गये बहराय हरि ॥
सुन्दर श्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि॥

आये नन्द यमुन जल न्हाये । पैठत सदन छींक भइ बांये ॥
महर मलिन मन अशकुन जान्यो। आज कहा डर शोच समान्यो॥
तबहीं चल्यो दूत जब आयो । नंद महर घरही में पायो ॥
बोललिये पाती कररारवी । नृपकी कही मुखागर भाखी ॥
कालीदहके फूल मँगाये । ता कारण अति डाट पठाये ॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु । तौ कोउ ब्रजमें रहन न पावहु ॥
गोप नन्द उपनन्दजितेका । डारौं मार न राखौं एका ॥
जो नहिं कालिह कमल मैं पाऊं । तो दोउ सुत तेरे बाँधि मँगाऊं ॥
यह सुनि नन्द गये मुरझाई । और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सबको सब बात सुनाई । परी आय यह अति कठिनाई ॥
कोटि कमल कालीदह माहीं । कहौ कौन धौं काढ़न जाहीं ॥
कह्यो फूल जो कालिह नपाऊं । तो सुत तेरे बाँधि मँगाऊं ॥

दोहा–मेरे सुत दोउ नृपति उर, खटकत हैं दिनरात ॥
आज कही यह बातसों, बल मोहन पर घात ॥

सो०–चढ़िहै ब्रजपर धाय, कालिह कंस अति कोप कर ॥
बन्यो मरण अब आय, को राखै कित जाइये ॥

मुहि अपने जियको डर नाहीं । शोच श्याम बलको उर माहीं ॥
अब उबार देखियत नहिं कोई । बल मोहनहिं राखि को गोई ॥
वरु मोहिं राखै बाँधि नृपाला । रहैं सदन बल मोहन लाला ॥

---

१ विचार । २ चिट्ठी । ३ लिय । ४ हृदय । ५ गृह ।

नन्द वचन सुनि सब ब्रजवासी।भये दुखित मन परम उदासी ॥
काहू पै कछु बात न आई। अति भय त्रसित गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजवासी ठाढे। मानहुँ चित्र चित्र लिखि काढे ॥
नन्दघरन ब्रजनारि विचारैं। अति व्याकुल नयनन जल ढारैं॥
ब्रजहिं बसत सब जन्मसिरान्यो।इहि विधि कंस न कबहुँ रिसान्यो
कालीदहके फूल मँगाये। कहौ कौन विधि जातसो पाये ॥
अतिहि शोचवश सब नर नारी। भये कंस भय बहुत दुखारी ॥
कोउ कह शरण चलो सब जाहीं।शरण गये कहिये कछु नाहीं ॥
कोउ कह देहु जितो धन चाहैं। ऐसे सब मिलि बुद्धि उपाहैं ॥

दोहा—यहै शोच सब मिलि पगे[2], नहीं कहूं निरवार॥
ब्रज भीतर नँद भँवनमें[3], घर घर यही विचार॥
सो०—अन्तर्य्यामी[4] जानि, खेलत ते आये घरहिं ॥
देखतही नँदरानि, दृग[5] भर लिये लगाय उर ॥

चितवत माता कुँवर कन्हाई। बूझत कत रोवत दुख पाई ॥
बूझहु जाय तात सों बाता। मैं बलि जाउँ बदन जलजाता ॥
तुमहीं काज कंस अकुलाई। बाहर मत कहुँ जाहु कन्हाई ॥
जाय तातको शोच मिटावो। अपने मधुरे[6] वचन सुनावो ॥
आयो श्याम नंद पै धायो। जान्यो मात पिता दुख पायो ॥
बूझत नंदहि कुँवर कन्हैया। तात दुखित कत तुम अरु मैया ॥
मोसों बात कहौ किन सोई। कहा शोच वश हौ सब कोई ॥
नंदलाल कनियां बैठारे। कहा कहौं तुम सों मैं प्यारे ॥
जबते जन्म भयो सुत तेरो। करत कंस तुमसों अरझेरो ॥
केतिकिरवर टरीं तुम्हारी। कुलदेवन कीन्हीं रखवारी ॥
प्रथमहिं अधम पूतना आई। शकट तृणा पुनि आयो धाई ॥
वत्सबका अघ पुनि दुख दीन्हों। सबते तोहि राखि विधिलीन्हों॥

१ अतिशय। २ लवलीन। ३ गृह। ४ अन्तरके जाननेहारे। ५ आंखैं।
६ मीठे। ७ बलायें।

दोहा–कालीदहके फूल अब, पठये भूप मँगाय ॥
सबते यह गाढ़ी परी, कोकरि लेय सहाय ॥
सो०–जो नहिं आवैं फूल, लिख्यो कंस मोहिं डाटिकै॥
करौं ब्रजहिं निर्मूल, बांधि मँगाऊं तव सुतन ॥

बाबा तुम काहे दुख पाई। कहत कौन धौं करै सहाई ॥
सो देवता ब्रजहिंके माहीं। रहत हमारे संग सदाहीं ॥
लीन्हों जिन सब ठौर बचाई। करिलेहैं सोइ देव सहाई ॥
सोई कंसहि फूल पठैहै। ब्रजवासिनको शोच मिटैहै ॥
कंस केश गहि सोई मारै। असुर मारि भूभार उतारै ॥
सब मिलि सोई देव मनावो। अपने मनते शोच मिटावो ॥
सुनत महर हरि मुखकी वानी। भये सुखी धीरज उर आनी ॥
इष्टदेवको शीश नवायो। जहां तहां तुम श्याम बचायो ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी। अबहू करहु सहाय हमारी ॥
जाते कंस त्रास मिटि जाई। रहैं सुखी बलराम कन्हाई ॥
मात पितहि हरि इहि ढँगलाई। आप चले खेलन हर्षाई ॥
सखन मध्य गये कुँवर कन्हाई। कह्यो खेलिये गेंद मँगाई ॥

दोहा–श्रीदामा यह सुनतही, गयो धाम निज धाय ॥
अपनी गेंदले आयके, दीन्हों हरिको आय ॥
सो०–चलो खेलिये धाय, बाहर घोष निकासिकै ॥
जहँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनिहै तहाँ॥

सखन संगलै बाहर जाई। रच्यो गेंदको खेल कन्हाई ॥
इक मारत इक भाजत जाहीं। रोकलेत इक बीचहि माहीं ॥
आपस मांझ परस्पर मारैं। नाना रँग करिकै किलकारैं ॥
भाजत मारत दूजो जाहीं। मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
श्याम सखनको खेलत माहीं। यमुना तट तन लीन्हे जाहीं ॥

१ जडतेउजाड। २ बाल। ३ कुलदेवता। ४ बीच। ५ घर। ६ अपने। ७ किनारे।

आपन जात कमलके लालन । सखा संग लीन्हें सब ग्वालन ॥
को जानहिं यह हरिके ख्याला । यमुना निकट गये सब ग्वाला ॥
श्याम सखाको गेंद चलाई । अंग मोर सो गयो बचाई ॥
परी गेंद यमुना जल माहीं । है गयो खेल भंग तिहि ठाहीं ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा । मेरी गेंद देहु तुम श्यामा ॥
जान बूझ तुम गेंद गिराई । बनिहै दीन्हें गेंद मँगाई ॥
और सखा मोको मति जानो । मोसों मतिहिं ढिठाई ठानो ॥

दोहा—सखा हँसत सब तारिदे, भली करी तुम कान्ह ॥
दीन्ही गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन्ह ॥
सो०—सकल लोक शिरताज, पार न पावैं ब्रह्म शिव ॥
ताहि गेंदके काज, फेंट पकरि झगरत सखा ॥

छांडि देहु मेरि फेंट सुदामा । रारि बढावत थोरेहि कामा ॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों । फेंट न गहौ कहौं मैं तोसों ॥
छोटो बड़ो न जानत काहू । करत बराबर पकरत बाहू ॥
हम काहेको तुमहिं बराबर । तुम उपजे अब बडे नंदघर ॥
ऐसे हम अब गये बिलाई । तुमहु बराबर नाहिं कन्हाई ॥
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा । कहा भयो तुम नंदके ढोटा ॥
गेंद दियेहीं बनै मँगाई । मोसों चलिहै नाहिं ढिठाई ॥
मुँह सँभारि बोलत नहिं मोसों । करिहौं कहा धुताई तोसों ॥
पुनि पुनि करत बराबर आई । तैं नहिं जानत मोरि धुताई ॥
प्रथम पूतना शकटा मार्‍यो । कागासुर अरु तृणा पछार्‍यो ॥
बत्स बकासुर बनके माहीं । मार्‍यो सो कह जानत नाहीं ॥
अघ मार्‍यो पुनि देखत तोहीं । ऐसो धूत न जानत मोहीं ॥

दोहा—तुम मारे सो साँच सब, कतही लाल डराहु ॥
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु ॥
सो०—कालिहिहिं परिहै जानि, पकरि मँगैहै कंस जब ॥

१ झगडा । २ न रहे । ३ धूर्तता ।

देत फूल किन आनि, बहुत अचकरी करि रहे ॥

सांच कहौं मैं सुनु श्रीदामा । आयो यहां फूलके कामा ॥
किलक बापुरो कंस बतायो । जाके भय तुम मोहिं डरायो ॥
केश पकरि गहि ताहि पछारों । देखहुगे तुम देखत मारों ॥
कोटि कमल तिहि आज पठाऊं । ब्रजते ताको त्रास नशाऊं ॥
कालीदह जल पियत मरे सब । गहि ल्याऊं सोई काली अब ॥
लीन्ही रिस करि फेंट छुड़ाई । चढे कदम पर धाय कन्हाई ॥
नीचे सखा हँसन सब लागे । श्रीदामाके डर हरि भागे ॥
रोय चले श्रीदामा घरको । जाय कहत मैं महरि महरको ॥
टेरत कहि कहि सखा कन्हाई । लेहुगेंद मैं ल्यावत जाई ॥
यह कहि नटवर मदन गोपाला । कूदि परे जलमें नँदलाला ॥
हाय हाय करि सखा पुकारे । भये श्यामबिन बहुत दुखारे ॥
रोवत चले ब्रजहिं सब धाई । श्रीदामाको दोष लगाई ॥

दोहा–कोमल तनु अति साँवरो, साजे नटवर साज ॥
जलमें पैठि गये तहां, जहँ सोवत अहिराज ॥
सो०–यहि अंतर हरिमाय, भूखे ह्वै हैं जानि हरि ॥
खेलत ते अब आय, मोसों भोजन मांगिहैं ॥

यशुमति चली रसोंई कारन । तबहीं छींक उठी इक ग्वालन ॥
ठिठकिरही उर शोचत ठाढ़ी । भली नहीं कछु चिंता बाढी ॥
आई अजिर निकसि पछिताई । चली बहुरि सो दोष मिटाई ॥
मँजारी तब पंथ कटाई । बहुरो यशुमति बाहर आई ॥
व्याकुल भई निकरि गइ द्वारे । कहँ धौं खेलत मेरे बारे ॥
बायें काग दाहिने स्वर खरै । सुनि आई अति व्याकुल फिर घर ॥
क्षण बाहर क्षण आंगन माहीं । टेरत हरिहि शांत मन नाहीं ॥
तबहीं नंद चले घर आरत । देख्यो श्वान श्रवण फट कारत ॥
दहिने काहू रोय सुनायो । माथेपर ह्वै काग उड़ायो ॥

१ कमर । २ पुकारत । ३ गधा । ४ कान ।

सन्मुख गरसी करत लराई । डरे नन्द अशकुन बहु पाई ॥
आये घर मन मलिन विशेखी । व्याकुल मलिन वदन तिय देखी॥
बूझत यशुदहि नन्द डराई । काहे तव मुख गयो झुराई ॥

दोहा—चली रसोई करन हौं, छींक भई मुहिं आज ॥
आगे ह्वै माँजारि पुनि, गई दूसरे भाज ॥

सो०—तबते मोजिय शोच, हरिधौं खेलत हैं कहां ॥
समुझ कंस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति ॥

नन्द कहत पैठत घर माहीं । मोहिं शकुन नीके भे नाहीं ॥
आज कहा यह समुझि न जाई । हैं धौं कित बलराम कन्हाई ॥
महरि महर मन त्रास जनाई । खोजत हरिहि चले अकुलाई ॥
सखा सकल इहि अंतर[2] धाये । रोवत ब्रजहि पुकारत आये ॥
महरि महर सों आय जनाई । यमुना बूडे कुँवर कन्हाई ॥
सुनि दम्पति[3] बूझत अकुलाई । कैसे कहां कहौं समुझाई ॥
खेलत कदम चढ़े हरि धाई । कूदि परे कालीदह जाई ॥
सुनतहि परी धरणि महँ मैया । कीनो सपनो सत्य कन्हैया ॥
रोवत नन्द यमुन तट आये । बालक सब नंदहि सँग धाये ॥
ब्रज घर जहां तहां यह बाता । ब्रजबासी धाये बिलखाता[4] ॥
कहां पर्‍यो गिरि कुँवर कन्हाई । दई बालकन ठौर बताई ॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे । गिरे धरणि नहिं अंग सँभारे ॥

दोहा—लोटत अतिव्याकुल धरणि, परन चलत जल धाय॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैसे[5] बुढाय ॥

सो०—लोग उठे सब रोय, दीन वचन सुनि नंदके ॥
कहत विकल सब कोय, हरि तुम ब्रजसूनो कियो॥

नन्दहि गिरत सबहि गहि[6] राख्यो । ताक्षणको दुख जात न भाख्यो॥
कहत गोप नंदहि समुझाई । बन्यो मरण सबहीको आई ॥
हरि बिन को जीवै ब्रजमाहीं । कहौ कान्ह किहि जीवन नाहीं॥

१ भय । २ बीच । ३ नंद-यशोदा । ४ रोते पीटते । ५ अवस्था । ६ पकर ।

मोह मगन अति यशुमति मैया । टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहां तुम बेर लगाई । माखन धर्‍यो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू । जेवहु लाल लेहूँ मैं रोगू ॥
धौरी दूध धर्‍यो औटाई । तुम निज कर दुहि गये अन्हाई॥
सदमाखन अतिहित मैं राख्यो । आज नहीं तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहिते मैं दियो जगाई । दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवत तव पंथ कन्हाई । देखत आज अबार लगाई ॥
बैठो आय संग दोउ भैया । तुम जेंवहु मैं लेहुँ बलैया ॥
शोकसिंधु बूड़त नँदरानी । तनुकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥

दोहा–ब्रज युवती सुनि महरिके, वचन प्रेम आधीर ॥
अकुलानी रोवत सबै, बढी कठिन उर पीर ॥
सो०–बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहि कहि हरिहैं भले॥
सुत[1] वियोग[2] विकराल, जात नहीं कहि मातको ॥

चौंकपरीतनुकी सुधि आई । रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानी दह गिरे कन्हाई । पुत्र पुत्र कहिकै उठि धाई ॥
ब्रजवनिता सब संगहि लागीं । श्याम वियोग बिथा सब पागीं ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल[3] पुकारैं । तोरतलट उरसों कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाई । गिरी धरणि यशुमति अकुलाई ॥
मुरझि परी तनुदशा भुलाई । प्राण रह्यो हरि सुरति[4]समाई ॥
ब्रजवासी सब उठे पुकारी । जल भीतर कह करत मुरारी ॥
संकटमें तुम करत सहाई । अब क्यों नाहिं बचावत आई ॥
मात पिता अतिही दुख पावैं । रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥
आय गये हलधर तेहि काला । देखी जननी विकल बिहाला ॥
नाक मूंदि जल सींचि जगाई । जननी[5] कहि कहि टेर लगाई ॥
बार बार जब हलधर टेर्‍यो । भयो चेत कछु बलतन हेर्‍यो ॥

दोहा–कहत उठी बलरामसों, बनहिं तज्यो लघु भ्रात॥

१ लड़का । २ बिछोहा । ३ सम्पूर्ण । ४ ध्यान । ५ माता ।

कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं, तुमसों क्यों रहिजात ॥
सो०-मगन शोच सर मांझ, कहत लै आवहु कान्ह कोउ॥
भूखे ह्वैगइ सांझ, आज कछू खायो नहीं ॥
कबहुँ कहत बनगयो कन्हाई । कबहुँ बतावत घर समुहाई ॥
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै । कित खेलत कहि लाल बुलावै ॥
अतिही मोह बिकल नँदरानी । करत बोध हलधर मृदुबानी ॥
कतरोवत तू यशुमति मैया । नीके हैं धरु धीर कन्हैया ॥
श्यामहिं नेक कहूं डर नाहीं । तू कत डरपत है मनमाहीं ॥
तेरी सौं मैं कहत पुकारे । वह काहूके मरै न मारे ॥
जिन काली भय होहु दुखारी। तू अपने मन देखु विचारी ॥
पहिले बकी कपट करि आई। तब दिन दशके हते कन्हाई ॥
शकटा तृणावर्त्त पुनि आयो । तू देखत हरि तिन्हैं नशायो ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे। विष जलते सब सखा उबारे॥
अब वे कालीनाथ लैऐहैं। कमल पठाय कंसको दैहैं ॥
मोहिं भरोसो कान्हर केरो। मानों सत्य कह्यो सुनु मेरो ॥
दोहा-मोहिं दुहाई नंदकी, अबहीं आवत श्याम ॥
नाग नाथ लै आवहीं, तौ कहियो बलराम ॥
सो०-सुनि हलधरके बैनँ, अति उदार हरिके चरित ॥
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सु सोह सब॥
बांह पकरि बलको बैठाई। लैबलाय उर रही लगाई ॥
अति कोमल तनुधरे कन्हाई। पहुँचे कालीके ढिग जाई ॥
हरिको देखि उरगकी नारी। रही चारुमुख चिह्न निहारी ॥
कहत कौन तू इत कित आयो। अति कोमल तनुकाको जायो ॥
बारहि बार कहति अकुलाई। वेगि भाज इतते कितजाई ॥
देखै नाग जागकै जवहीं। है है भस्म क्षणक में तबहीं ॥
सुनत नाग नारीकी वाणी। बोलें हँसि हरि सारँग पाणी ॥

१ कसम। २ मान्यो। ३ वचन। ४ सर्प-काली। ५ स्त्री।

पठयो मोहिं कंस नृपराई । तू याको अब देहु जगाई ॥
कंस कहा तू इनहिं बतैहै । एक फूंकमें तू जरिजैहै ॥
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो । लगत छोहँ देखत तनु तेरो ॥
मरहु कंस जिन तोहिं पठायो । तूकत इहां मरणको आयो ॥
बालक जानि दया अति मेरे । दुख पैहैं पितु माता तेरे ॥

दोहा–अरी बावरी सर्प्पसों, कहा डरावत मोहिं ॥
जैसो मैं बालक प्रकट, अबहिं दिखावहुँ तोहिं ॥
सो०–तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके बलहि ॥
यापै कमल लदाय, लैजैहौं इहि नाथ ब्रज ॥

सुनत वचन अहिनारि रिसानी । छोटे वदन कहत बड़िवानी ॥
खगेपतिसों सरवर जिनठानी । ताहि कहत नाथन अज्ञानी ॥
देखतही ह्वैहै जर छारा । केतिक तू बैपुरो सुकुमारा ॥
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी । बोलत नाहिन बात सँभारी ॥
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारौं । एकहि लात खसमतुवमारौं ॥
सोवत काहू मारिय नाहीं । चलि आई है बात सदाहीं ॥
ताते तू पति देहि जगाई । देखौं मैं याकी मनसाई ॥
जो पै तोहिं मरन बुधि आई । तो तूही किन लेत जगाई ॥
तब हरि झटकि ताहि दैगारी । दाबी चरण पूंछ अहिकारी ॥
मसकी नेक धरणि सो लाई । काली उरग उठ्यो अकुलाई ॥
आयो जानि गरुड भय बाढ्यो । देख्यो बालक आगे ठाढ्यो ॥
तबहिं क्रोध करि गर्व बढ़ायो । झटकि पूंछ अति रिसकरि धायो ॥

दोहा–दांव घात लाग्यो करन, सहँसौ फन फटकार ॥
बार बार फुंकार कर, डारत विषकी झार ॥
सो०–जरत यमुनको नीरँ, जात फेन उतरात विष ॥
परसतँ नाहिं शरीर, अरिमर्दमोचन श्यामके ॥

१ मोह । २ गरुड । ३ छोटा । ४ पति । ५ पृथ्वी । ६ सहस-हजार । ७ पानी । ८ स्पर्श । ९ कालीका गर्व निवारणवारे ।

कियो युद्ध बहु उरग अघाई । मुरे नहीं नेकहु यदुराई ॥
कहत परस्पर अहि की नारी । देखहु यह बालक अति भारी ॥
विष ज्वाला जल जरत यमुनको । याकेतनु परसत नहिंतनको ॥
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै । अतिकोमल विष नेक नमानै ॥
सहसोफनन करत अहिघाता । अबलौं बच्यो पुण्य पितु माता ॥
तब अहिराज श्याम तन हेरी । कहत पूंछ दाबी इन मेरी ॥
अतिहि क्रोधकरि आतुर धाई । हरिके अंग गयो लपटाई ॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई । कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥
कौतुकनिधि हरि सब गुण खानी । कियो दांवइहि अहिको जानी ॥
तिहि अवसर सुर मुनि गन्धर्वा । अति व्याकुल आये ब्रजसर्वा ॥
उरग नारि मन मन पछिताहीं । हरिको रूप समुझि मनमाहीं ॥
कहैं गर्वकरि अति यह आयो । काल विवश पगइतहिं चलायो ॥

दोहा–काली हरिसों लिपटकै, गर्व कियो मन मांह ॥
कहत मोहिं जानत नहीं, मैं सर्पनको नाह[3] ॥
सो०–भंजन गर्व गोपाल, गर्व भरे सुनि अहि वचन ॥
कीन्हो वपुष[4] विशाल, विकल भयो अहिराजतन ॥

जबहिं श्यामतन अति विस्तारो । टूटन लग्यो अंग सब सारो ॥
शरण शरण तब उरग पुकारो । मैं नाहिं जान्यो रूप तिहारो ॥
जीवदान प्रभु मोको दीजै । अपनी शरण राखि मोहिं लीजै ॥
यह वाणी सुनतहि भगवाना । सकुचि गये हरि कृपानिधाना ॥
यहै वचन गजराज[5]सुनायो । गरुड़ छांड़ि ताके हित आयो ॥
यहै वचन सुनि द्रुपदसुता[6]को । वसन[7] बढ़ाय दियो पुनिवाको ॥
यहै वचन सुनि लाक्षा गृहते । लीने राखि पाण्डवन जरते ॥
यहवाणी सहिजात न श्यामहिं । दीनबन्धु करुणाके धामहिं ॥
लीनो अंगसँकोच कृपाला । देख्यो विकल शिथिल जबव्याल[8] ॥

१ त्रिबल । २ चोटी । ३ राजा । ४ शरीर । ५ गजेन्द्रमोक्षाख्यानका हाथी ।
६ द्रौपदी । ७ लुगडा-वस्त्र । ८ नाग ।

पगसों चापि नाकधरि फोरी । लीनो नाथ हाथगहि डोरी ॥
कूदिचढ़े हरि ताके शीशा । सनमन करत विचार अहीशा ॥
मैं यह सुन्यो हतो विधिपाही । कृष्ण अवतार होहि ब्रजमाहीं ॥

दोहा–ते गोकुलमें अवतरे, मैं जान्यो निरधार ॥
ये अविनाशी ब्रह्महैं, ब्रज कृष्णा अवतार ॥

सो०–किये बहुत फन घात, बार बार पछितात मन ॥
स्तुति करत लजात, रह्यो दीनह्वै सकुचि अति ॥

देख्यो व्याल विहाल कृपाला । दियो दरश निज दीनदयाला ॥
देखि दरश मनहर्ष बढ़ाई । बोल्यो दीन वचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियो बिन जाना । क्षमो नाथ तुम क्षमानिधाना ॥
तामस योनि कीट विषजानो । कौनभांति तुमको पहिचानो ॥
अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथा । दीनो दरश जगतके नाथा ॥
अशरण शरण नाथ तव बाना । कहत सन्त सब वेद पुराना ॥
ते अपराध क्षमा सब कीजै । अब प्रभु शरणराखि मोहिंलीजै ॥
आज धन्य यह मेरो माथा । जापर चरण दिये मम नाथा ॥
अब ये चरण परसिप्रभु तेरे । मिटे दोष दुख अघ सब मेरे ॥
जो पदकमल पुनीत तुम्हारे । निशिदिन रहत रमा उरधारे ॥
शिव विरञ्चि सनकादिक ध्यावैं । जे पद योगी ध्यान लगावैं ॥
जे पदपद्म सलिल सुर सरिता । तीन लोककी पावन करिता ॥

दोहा–जिन पद पंकज परसते, गति पाई ऋषिनारि ॥
सुर नर मुनि वन्दित तिन्हैं, सन्तत प्राण अधारि ॥

सो०–फिरत चरावत गाय, श्रीवृन्दावन जे चरण ॥
भक्तनके सुखदाय, ब्रजवासी जन दुखहरण ॥

जे पद पंकज परम सुहाये । प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये ॥
गरुड़ त्रास ते इत भजिआयो । भलो कियो मोहिं गरुड़ सतायो ॥
जाते दरश भयो प्रभुतेरो । अब भय ताप मिट्यो सब मेरो ॥

---

१ ब्रह्मा । २कीडा । ३पाप । ४आकाशगंगा । ५कमलसे पद । ६ सदैव। ७सहज।

आज भयो मैं नाथ सनाथा । गह्यो नाथ मम प्रभु निजहाथा ॥
सुनत दीन कालीकी वानी । दीनबंधु अतिशय सुखमानी ॥
फनप्रति चरण सरोज छुवाये । ताके सब सन्ताप नशाये ॥
तब ब्रजनाथ भक्त हितकारी । यह अपने मनमाहिं विचारी ॥
कालीको ब्रज देश दिखैये । कमल भार याप लै जैये ॥
हैं हैं ब्रजके लोग दुखारी । करौं जाय अब तिनहिं सुखारी ॥
कमल कंसको देउँ पठाई । काल्हि चढ़ै गो ब्रजपर आई ॥
लीन्हे अहिपर कमल लदाई । चले ब्रजाहि ब्रज जन सुखदाई ॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई । फनपर ठाढ कुँवर कन्हाई ॥

दोहा—उरगनारि कर जोरि कै, प्रभुके सन्मुख आय ॥
करत विनय अति दीनह्वै, पति हित हरिहिसुनाय ॥
सो०—इत यशुमति उर माहिं, उठी लहर अति प्रेमकी ॥
कान्हर आयो नाहिं, कहत रोय बलराम सों ॥

कहत राम सुनु यशुमति मैया । अबहीं आवत कुँवर कन्हैया ॥
नेक धीरधरु मति अकुलाई । यह सुनि कै बलकी बलिजाई ॥
पुनि यह कहत कान्ह नाहिन अब । झूठहिं मोहिं प्रबोध करत सब ॥
भई बिनासुत व्याकुल मैया । कहत कहां मेरो बाल कन्हैया ॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई । रोयउठे सब लोग लुगाई ॥
ब्रजवासी सब भये बिहाला । कहत कहां मोहन नँदलाला ॥
तुम बिन यह गति भई हमारी । आवत नहीं धाय बनवारी ॥
मालहिते जल मांझ समाने । तुमहिं विना युग याम बिहाने ॥
अबको बसै जाय ब्रजमाहीं । धृग धृग जीवन तुमहिं बिनाहीं ॥
अति व्याकुल रोवत नँदराई । विकल मनहुँ फणि मणी गँवाई ॥
यशुमति धाय चलत जल माहीं । राखति ब्रज युवती गहि बाहीं ॥
हलधर सबहिनको समझावें । विना श्याम कोउ धीर न पावें ॥

१ दुःख । २ बोझा । ३ कालीकीनाथ पकड । ४ कालीकी पत्नी । ५ समझावत । ६ दशा । ७ धिक्कार-तुच्छ । ८ दौड ।

दोहा–कहत यशोदा नंदसों, धृग धृग बारहिं बार ॥
और किते दिन जियहुगे, मरतनहीं मोहिंमार ॥
सो०–कर देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुखमें मरण सुख ॥
नंद भये बिन प्रान, मूर्च्छि परे सुनि तिय वचन॥
तबहिं धाय बल पिता जगायो। बार बार कहि कहि समुझायो ॥
वृथा मरत काहे सब कोई। कान्हर मारन हार न कोई ॥
हलधर कहत सुनहु ब्रजवासी। वे अन्तर्यामी अविनाशी ॥
सब गुणसागर आनँद राशी। रमा सहित जलहीके बासी ॥
मेरो कह्यो सत्य करि मानो। आवत श्याम धीर उर आनो ॥
यमुनाके भीतर तिहिकाला। उठ्योसलिल झक झोर बिशाला॥
बोलि उठे आतुर बलरामा। वे देखो आवत घनश्यामा ॥
सुनत वचन लखि कै उठि धाये। यमुना नीर तीर सब आये ॥
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढे। दरशातुर विरहानल बाढे ॥
प्रगट भये जलते तेहिं काला। ब्रज जन जीवन नँदके लाला ॥
कमल भार काली पर लीन्हे। नटवर भेष मनोहर कीन्हे ॥
भये सुखी सब ब्रजके बासी। लखिहरि वदन परम सुखरासी॥
छं०–हरि वदन लखिकै राशि सुखकी मुँदित ब्रजवासीभये॥
मनहुँ बूडत नाव पाई परम उर आनँद छये ॥
मात पितु लखि जो भयो सुख जात सो कापै कह्यो ॥
पुलकतनमन हरषि गद्गद प्रेम जल लोचन बह्यो ॥
चकित हरितन लखत इकटक मिलनको आतुरहियो ॥
श्याम निर्तत अहि फनन पर खौर चन्दनतनु कियो ॥
श्रवण कुण्डल लाल लोचन चारु मुकुट बिराजहीं ॥
मनहुँ मरकत गिरि शिखर मणि मोर तापर राजहीं ॥
पीतपट कटिकाछनी उर माल मणि भूषण सजे ॥

१ श्रीकृष्ण। २ नाशनहीं। ३ पानी। ४ दुःखसभरे। ५ देखकर। ६ मनको लुभानेहारा। ७ प्रसन्न। ८ नाचत।

नृत्य ताण्डव करत फण प्रति व्योमदिव दुन्दुभिबजे॥
भई जय ध्वनि गगन वर्षहिं सुमन सुर आनँद भरे॥
गन्धर्व गुण गण गगन गावत तान तालन अनुसरे॥
उरगनारी श्याम सन्मुख करत प्रस्तुति आवहीं॥
नाथ अब अपराध क्षमि कर कर कृपा पति पावहीं॥
राखे चरण निज शीश याके अति बड़ाई इन लई॥
ऐसी बड़ाई औरको प्रभु नाहिं तुम कबहूं दई॥
शेष इक ब्रह्माण्ड भरि शिर राखि मन गर्वित कियो॥
कोटि कोटिब्रह्माण्ड तवतन अधिक इन यह भरिलियो॥
सुर असुर नर नाग खग मृग कीट जन सब रावरे॥
क्षमिय अब अपराध अहिके शुभग सुन्दर सांवरे॥
दोहा—सुनि अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय॥
उतरि परे अहिशीशते, यमुनाके तट आय॥
सो०—तट पर कमल धराय, कालीको आयसुदियो॥
उरगद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय सदा॥
तब काली कह सुनहु कृपाला। तव वाहन डर डरत विशाला॥
धनि ऋषि शाप दियो है ताहीं। ताते .आय सकत ह्यांनाहीं॥
तबमैं भागि बच्यो इत आई। नातरलेत मोहिं सो खाई॥
चरण चिह्न लखि तव फण मेरे। परिहै गरुड़ आय पग तेरे॥
तू अबप्रति खगपतिहि डराई। अपने द्वीप करहु सुख जाई॥
याते बडो कौन सुखनाथा। अभयदान पद परस्यो माथा॥
जे पद कमल भजन परतापा। जन प्रह्लाद मिटे सन्तापा॥
ते पद चिह्न शीश परधारी। जन्म जन्मको भयो सुखारी॥
उरगिन सहित नाइ पद माथा। गयो उरग द्वीपहि अहिनाथा॥
जैजै ध्वनि नभसुरन बखानी। धन्य धन्य जनके सुखदानी॥

१ आकाश। २ पुष्प। ३ आज्ञा। ४ गरुड। ५ दुःख।

शरण राखि काली अहि लीन्हों। जलते काढ़ि कृपा करि दीन्हो ॥
फन पर चरण चिह्न प्रगटाई । कठिन गरुड़की त्रास[1] मिटाई ॥

दोहा-धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित[2] सुमन वर्षाय॥
गये देव निज निज सद्न[3], हृदय परम सुख पाय॥

सो०-द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुर लोकहि पठै ॥
आयो निकसि गोपाल, व्रजवासी जन सुखकरन॥

धाय मिले सगरे व्रजवासी । विरह ताप तनुकी सब नाशी ॥
माता दौरि कण्ठलपटानी । पुलकरोमतन गद्गदवानी ॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा । उरलगाय मेटत उर पीरा॥
कहिं कहि मेरो बाल कन्हैया । दुहूं करन सों लेत बलैया ॥
धाय नन्द उरसों लै लाये । गये प्राण मानहुं फिरि आये ॥
गद्गद बैन नयन जल ढारो । कहत जन्म फिरि भयो तुम्हारो ॥
बार बार उर सों लपटावत । दारुण उरकी ताप नशावत ॥
प्रेमाकुल देखी बल माता । मिले रोहिणी सों सुखदाता ॥
निरखि वदन कह यशुमति मैया । मै बरजौंनित तुमहिं कन्हैया ॥
यमुना तीर न्हान मति जाहू । तुम बरजो मानत नहिं काहू ॥
मैं निशि स्वप्ने मांझ डरान्यो । सोई कछू आय प्रकटान्यो ॥
कंस कमलके फूल मँगाये । व्रजवासी सब अतिहिडराये ॥

दोहा-मैं गेंदहि खेलत यहां, आयों यमुना तीर ॥
मोहिं डारि काहू दियो, कालीदहके नीर[4] ॥

सो०-देख्यो उरग विशाल, जाय तहां मैं डरो अति॥
तब पूंछ्यो मोहिं व्याल, किन पठयो तोको इहां॥

तब ऐसे मैं ताहि बतायो । कमल काज मोहिं कंस पठायो ॥
यह सुनताहिं अहि उठ्यो डराई। मोको फनपर लियो चढ़ाई ॥
कमल लियो निज पीठ लदाई। आपुहि आय गयो पहुँचाई ॥
ऐसे जननी बोध[5] कृपाला । सुनत वचन सब व्रजकी बाला ॥

१ डर । २ प्रसन्नतासे । ३ गृह । ४ जल । ५ समझाकर ।

लै लै हरिको डरसों लावें। कठिन विरहकी शूल मिटावें ॥
श्याम बिना बहुतै दुख पायो । सोहरि तिनको ताप नशायो ॥
लखे सखा सब आरत बाढे । प्रेमातुर मिलवेको ठाढे ॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई। मिले धाय सब कण्ठ लगाई ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया। जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया ॥
तुमहौ सब ब्रजके सुखदानी । कंस मारिहौ तुम हम जानी ॥
कहा भयो जो तुमहौ बारे। हैं तुम्हरे गुण सबते न्यारे ॥
भलो यदपि सिंहनको छोटो। कौनकाज गजलम्बो मोटो ॥

दोहा—तुम हम पर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय ॥
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हर्षाय ॥

सो०—जब हलधर अरु श्याम, मिले बिहँसि दोउ मनहिं मन॥
निरखि मगन नरबाम, भेद न कोऊ जानहीं ॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा । तुम जो कही करी सोइ श्यामा ॥
तब हरि कह्यो नन्दसों जाई । मेरे मनहिं बात यह आई ॥
आज बसैं सब यमुना तीरा। अति रमणीक सुगन्ध समीरा ॥
यहां कीजिये भोग विलासा। होत प्रात सब चलहिं अवासा ॥
कमल पठाय कंसको दीजै। सुनहु तात अब विलँबनकीजै ॥
गोप जाय आवैं पहुँचाई। कालिह चढ़ै नतु ब्रजपर धाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो। सब ब्रजबासिनके मन भायो ॥
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये। षट्रस भोजन बहुत मँगाये ॥
यमुनातीर गोप समुदाई। भोजन कियो बहुत सुखपाई ॥
नन्दराय तब शकट मँगाये । कोटि कमल तिनपर लदवाये ॥
बहुत भार दधि घृतके कीन्हे । ते अहिरन कांधे धर लीन्हे ॥
अपनी सरजे गोप सुहाये। तिनहिं संग करि नृपहिं पठाये ॥

दोहा—बहुत विनय करि कंसको, दीन्हों पत्र लिखाय ॥
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय ॥

१ पीडा। २ छोटे। ३ पृथक्। ४ स्त्री। ५ पवन। ६ घर। ७ छकडा।

सो०–गयो कमलके काज, कालीदह मेरो सुवन ॥
तुव प्रताप ते राज, आप गयो पहुँचाय अहि ॥

कोटि कमल नृप मांगि पठाये । तीनिकोटि तहँते हैं पाये ॥
सो राखे जल मांझ सजाई । आयसु होय तो देउँ पठाई ॥
तब गोपन सों कुँवर कन्हाई । ऐसे बोलि उठे मुसकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो । यह कारज हम कियो तुम्हारो ॥
कमल शकट दधि घृतके भारा । चले गोपले नृपके द्वारा ॥
राजद्वार शकटन पहुँचाई । जाय पौरियन खबरि जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाई । समाचार सब नृपहि सुनाई ॥
सुनत बात यह मनहिं डरान्यो । आपनिकसि आयो अतुरान्यो ॥
देखी शकट भीर अति भारी । भयो चकित सुधि बुद्धि बिसारी ॥
कमल देखि भय भयो विशाला । लगे ताहि मनो व्याल कराला ॥
नन्द विनय तब गोपन भाषी । दीनो पत्र भेंट सब राखी ॥
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई । नन्दसुवन यह कह्यो कन्हाई ॥

दोहा–हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम ॥
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥

सो०–सुनत श्याम सन्देश, देखि कमल अति भय विकल ॥
भीतर गयो नरेश, मन बाढ़ी चिन्ता विपुल ॥

मनहीं मन यह करत विचारा । यासों मेरो नाहिं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नशाये । काली ते ऐसे बचि आये ॥
ताहीपर कमलनलै आये । सहस शकट भरि मोहिं पठाये ॥
कबहुँ कहत गोपनको मारों । इनको हाँते तुरत निकारों ॥
फेर कछू मनमें भय पावै । करत विचार न कछु बनि आवै ॥
पुनि सँभारि धीरज उन कीन्हो । गोपन बोलि भीतरहि लीन्हो ॥
हृदय दुखित ऊपर सुखमानी । पहिराये दीने मनमानी ॥
सरोपाव नन्दहुको दीन्हो । कहियो काज बड़ो तुम कीन्हो ॥

१ पुत्र । २ कालीनाग । ३ कंस । ४ सर्प । मारे । ६ हजार ।

तेरे सुत बलराम कन्हाई । एक दिवस देखिहौं बुलाई ॥
यह सुनि अति पुरुषारथ कीन्हो । कालीदहके फूलन लीन्हो ॥
यइ कहि बिदा किये सब ग्वाला । भयो कंस उर शोच विशाला ॥
मनहीं मन सोचत हरिके गुन । रह्यो काठ ज्यों भीतरहीघुन ॥
दोहा—तब दावानल बोलिके, कह्यो मरम सबताहि ॥
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि ॥
सो०—जाय कीजियो छार, ब्रज सब ब्रजवासिन सहित ॥
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न विचारि उर ॥
दावानल सुनि नृपकी वानी । चल्योरिसाय गर्व उर आनी ॥
करौं भस्म इक पल महँ जाई । सहित गोप नँद सुवन कन्हाई ॥
नृपको काज आज करि आऊं । जो कहुँ एक ठौर सब पाऊं ॥
इहां गोप कमलन पहुँचाई । आये यमुन तीर हर्षाई ॥
नन्द तुरत सब निकट बोलाये । सुनत सकल ब्रज जन जुरि आये॥
गोपन कही नन्द सों आई । लिये कमल नृप अति सुखपाई ॥
दियो हर्ष तुमको पहिरायो । मुदित नन्द लै शीश चढायो ॥
अपने सब पहिराव दिखाये । लखि सब ब्रजवासिन सुखपाये ॥
हरिको नाम सुन्यो जब राजा । हरषि कह्यो कीनो उन काजा ॥
इक दिन बल मोहन दोउ भाई । देखहुँगो मैं इहां बुलाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुखपायो । हरषि भूप मो सुतन बुलायो ॥
करी कृपा अति नृप हरिपाहीं । सब नर नारि हरषि मन माहीं ॥
दोहा—कहत श्याम बलराम सों, हँसि हँसिकै यह बात ॥
नृप हम तुम देखन लिये, कह्यो बुलावन तात ॥
सो०—ब्रज जन परम हुलास, इक सुख हरि अहिते बचे ॥
मिट्यो कंसको त्रास, दुतिय कमल पठये नृपहिं ॥

अथ दावानलवर्णन लीला ॥

यहि विधि ब्रजजन अति सुख पायो । खान पान करि दिवस वितायो ॥

२ भेद । २ राख । ३ हर्षित । ४ पिता । ५ कालीनागते ।

सोये सब मिलि यमुना तीरा । राखि हृदय सुन्दर बलवीरा ॥
वहां असुर दावानल आयो । चाहतहै सब ब्रजहि जरायो ॥
देखे सब ब्रजजन इकठाहीं । कियो हर्ष अपने मन माहीं ॥
प्रकटी दावानल चहुँ ओरा । अतिहि प्रचण्ड पवन झक झोरा॥
दशहूं दिशिते घेरत आवै । तृण[१] तरु खग मृग जीव जरावै ॥
जागि परे सब ब्रज नर नारी । कहैं चहूँ दिशि लगी दवारी[२] ॥
भये चकित सब अति मन माहीं । काहू दिशि मग[३] दखित नाहीं ॥
चहत चलन भाजि नहीं निकासू । लेत सबै भारि शोचउसासू ॥
आयगई दव अतिहि निकटहीं । चले कहत सब यमुना तटहीं ॥
अब न देखियत कहूँ उबारा । बढी अनल पहुँची नभ[४] झारा ॥
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने । जरे सकल मन मांझ डराने ॥
छं०—अति विकल सब डरे ब्रज जन देखि अनल[५] भयावनो॥
भई धर[६] नभज्वाल पूरण धूम धुंध डरावनो ॥
लपट झपटत जरत तरुवर गिरत महि भहरायकै ॥
उठत शब्द अघात चहुँ दिशि बढत झरझहरायकै ॥
फटत फल फूटत पटकदल जरत बरत लताघनी ॥
काँस चटकत बाँस पटकत अँगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराह वन पशु विकल पन्थ न पावहीं ॥
जरत जहँ तहँ जीव खग मृग विपुल जित तित धावहीं
दोहा—दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहुँ दिशि घेर ॥
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥
सो०—धूम धुन्ध विकराल, भयो अँधेरो गगन सब ॥
बिच बिच चमकत ज्वाल, तडित माल जनु सघनघन॥
भये देखि ब्रजलोग दुखारे । तब सब हरिकी शरण पुकारे ॥
कहत श्याम तुम करो सहाई । जरत सकल ब्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे । कंस त्रासते तुमहिं उबारे ॥

१ तिनका । २ आग । ३ मार्ग । ४ आकाश । ५ अग्नि । ६ धरती ।

जहँ जहँ परी गाढ़ हम आई। तहाँ तहाँ तुम करी सहाई॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजै। हमहिं बचाय अग्निसे लीजै॥
व्याकुल गोप नन्द मन माहीं। करत विचार बनत कछु नाहीं॥
यशुमति सबहिन कहत पुकारे। दई परयोहै ख्याल हमारे॥
नाना रूप असुर बहु आये। कोउखग कोउ पशु रूप बनाये॥
कोऊ पवन रूपह्वै आयो। भयो तहां कोउ पुण्य सहायो॥
आज उरगसों बच्यो कन्हाई। बड़े भाग्य नृप त्रास नशाई॥
अब यह बाढ़ी अग्नि अपारा। होत सकल ब्रजको संहारा॥
किमि बचिहैं यह बालक दोऊ। मोंहि लखि परत उपाय न कोऊ॥

दोहा–सुनि जननीके वचन प्रभु, लखि सब ब्रज बेहाल॥
कह्यो सबन धीरज धरो, मति डरपौ लखि ज्वाल॥
सो०–कौतुक निधि गोपाल, को जानै तिनके गुणनि॥
दुख सुख जिनके ख्याल, जनके हित कारक सदा॥

तब हरि कह्यो डरो मति कोई। बिनवहु देव बहुरि सब सोई॥
जिन सहाय कीनी अबताई। सोई करैं सहाय सदाई॥
हरिहँसि सबसों आंखि मुँदाई। करिगये अग्निपान सुखदाई॥
ह्वैगइ चहुँ दिशि शीतलताई। रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई॥
खोलि देहु दृग सब हरि बोले। सुनतहि तुरत सबन दृग खोले॥
देखि चकित सब ब्रज नर नारी। कहत धन्य धनि तुम बनवारी॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला। लपट झपट अतिही विकराला॥
नहि बरस्यो नहिं सींच्यो काहू। गयो बिलाय कहां धौं दाहू॥
कैसे यह सब अग्नि बुझानी। हम यह कछू न काहू जानी॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हाई। वह करनी यह कहि न सुहाई॥
तृणकी आग प्रथम बहु जागै। फिरि तिहि बुझत बिलंब न लागै॥
सुनत श्यामकी कोमल बानी। भये सुखी सब त्रास नशानी॥
दोहा–जीव जन्तु खग मृग जिते, भये सुखी ततकाल॥

१ सर्प। २ नेत्र।

द्रुम वेली तृण हरित सब,प्रफुलित बन सुख माल॥
सो०-श्याम सहायक जाहि, ताहि कहौ डर कौनको॥
यह न बड़ाई वाहि, पांच तत्त्व उनके किये॥
कहत परस्पर ब्रजकी नारी। हैं सखि बड़े वीर बनवारी॥
देखत कोमल श्याम सलोना। यह सखि जानतहैं कछु टोना॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई। लायोतापर कमल लदाई॥
मांगे कमल कंस नृपराई। कोटि कमल तिहि दिये पठाई॥
दावानल नभ धरणि बराबर। घेर लिये ब्रजके नारी नर॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हों। रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हों॥
ये उत्पात मिटैं उनहींपै। और न होय सकै किनहीं पै॥
यह कोउ सखी बड़ो अवतारा। है यहही कर्त्ता संसारा॥
लखि हरि चरित यशोदा मैया। चकित निरखि सुख लेति बलैया॥
लखि सुत चरित मुदित नँदराई। करत गोप गण सकल बड़ाई॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा। हैं ब्रजवासिनके बडभागा॥
जिनके संग श्याम सुख शीला। करत रहत नित नव रस लीला॥
दोहा-एक दिवस निशि यमुन तट, बस सब गोपी ग्वाल॥
होत प्रात निज निज सदन, आये सहित गोपाल॥
सो०-हरि जनके सुखकार,विलसत विविध विलास ब्रज॥
सन्तन प्राण अधार, ब्रजवासी जन जाहिं बलि॥
हरि ब्रज जनके दुख विसरावन।करत चरित सुर मुनि मन भावन॥
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये। कौन कंस कब कमल मँगाये॥
कब हरि यमुना जलहि सभाये। कालीनाग नाथि कब लाये॥
कब दावानल जारन आयो। एक दिवस निशि कहां बितायो॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा। करत श्याम सोइ बाल विनोदा॥
माखन मांगत कुँवर कन्हाई। बार बार जननी सों जाई॥
आतुर दधिहि मथत नँदरानी। सद माखन हरिको रुचि जानी॥

१ दिन रात। २ घर।

कहत तनक तुम रहत ललारे। तुम्हें देउँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगी तुम भारी। बात बनावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहुकी कान्हहिं। कहत श्याम सों सुनत न कान्हहिं॥
झूठहि देत हुँकारी जननी। भूल गई सब हरिकी करनी ॥
तब लौं मथि दधि माखन कीन्हो। तुरतहि लै सुतके कर दीन्हो ॥

दोहा–लैलै अधरन परसि करि, माखन रोटी खात ॥
कहत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात॥

सो०–जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिव सनकादिकहुँ ॥
धन्य नन्दकी नार, ताको सुत कर मानई ॥

अथ प्रलम्बासुरवध लीला॥

नित नव लीला करत कन्हाई। तात मात ब्रज जन सुखदाई ॥
मुदित सकल ब्रजके नर नारी। निशिदिन मुख हरिचंद निहारी॥
इक दिन श्याम राम दोउ भाई। खेलत सखन संग बन जाई ॥
नाना विधि सब करत कलोलैं। भांति भांतिकी वाणी बोलैं ॥
कबहूं मोंर हंसकी नांई। बोलत हँसत श्याम सुखदाई ॥
कबहूं मधुरे स्वर सबगावैं। मध्य श्याम घन वेणु बजावैं ॥
कबहूं चढत तरुन पर जाई। कूदि परत गहि डार नवाई ॥
नाना विधिके खेलन खेलैं। बाल विनोद मोदरस केलैं ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो। कंसताहि दै पान पठायो ॥
सो छल रूप गोप वपु धारी। मिल्यो आय सब सखनमँझारी ॥
ताको ग्वाल न काहू जान्यो। यहतो असुर श्याम पहिचान्यो ॥
बलदाऊको दियो जनाई[1]। ताहि हतनेको[2] रच्यो उपाई ॥

दोहा–सखा बुलाये निकट सब, तिनहिं कह्यो नँदलाल ॥
फल बुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल॥

सो०–द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बांटि सब ॥
आधे इक दिशि आय, आधे एक दिशा भये ॥

---

१ बताय। २ मारनको।

निज निज जोट सखन जुरि लीन्हो। हलधर जोट दनुज सँगकीन्हो॥
आपसमें यह होड लगाई। जो हारै सो पीठि चढाई॥
भांडीर वनलौं लै जाही। फेर इहां पहुँचावै ताही॥
फलको नाम बुझावन लागे। बूझदियो बल सबते आगे॥
चले सखा चढि चढि निज जोरी। चढे दनुज बल धींच मरोरी॥
भांडीर वन पहुँचे जाई। फिरिसखा सब ठांव छुवाई॥
असुर[1] चल्यो लै बलको आगे। प्रकट्यो दनुज शरीर अभागे॥
तब बलदेव[2] कोप करि भारी। मुष्टि[3] एक ताके शिरमारी॥
बिकसि[4] गयो शिर गिर्‌यो अधीरा। उतरि परे तब श्रीबलबीरा॥
भयो पलकमेंसो बिन प्राना। देखत सुर मुनि चढ़े बिमाना॥
भई गगनै[5] ते जय जय बानी। फूलनकी वर्षा वर्षानी॥
बहुविधि अस्तुति बलहिं सुनाई। मुदित सकल सुर मुनि समुदाई॥

दोहा–ग्वाल बाल चकित सबै, दौरि गये बल पास॥
मृतक असुर तनु देखिकै, तब मन कियो हुलास॥
सो०–धन्य धन्य बलराम, धन्य तुम्हारे मात पितु॥
बड़ो कियो यह काम, कपट रूप मार्‌यो असुर॥

यह शठ गोप भेष बन आयो। हम काहू इहि जान न पायो॥
जो यह शठ नहिं जात निर्‌यातो[6]। तो काहू लरिकहिलै जातो॥
हौ तुम बड़े वीर दोउ भाई। जहँ तहँ हमको होत सहाई॥
वनके दुष्ट सकल तुम मारे। हौ तुम हम सबके रखवारे॥
ताहि कहो काको डर भैया। जासु मीत बलराम कन्हैया॥
देत ग्वाल सब बलहि बड़ाई। धन्य धन्य ब्रज जन सुखदाई॥
दुष्ट मारि बल मोहन लाला। आये सदन सहित सब ग्वाला॥
ग्वालन कही आय सब बाता। सुनत चकित ब्रजजन पितुमाता॥
करत सकल बलराम बड़ाई। जननी मुदित लिये उरलाई॥

१ दैत्यप्रलम्बासुर। २ दाऊजी। ३ मुक्का। ४ फटगयो। ५आकाश। ६ मार्‌योजातो ७ आयमिले तब हँसे कन्हाई।

बल मोहन दोउ बीर निहारी । दोऊ जननि जात बलिहारी ॥
भूखे जान बनहिंते आयो । दोउ भइयन भोजन करवायो ॥
जो सुख लहत नंदकी रानी । सो शारद नहिंसकै बखानी ॥

दोहा—सुतसनेहयशुमति मगन, निशि दिन जात नजान ॥
करत चरित सन्तन सुखद, भक्त वछल भगवान ॥

सो०—नित नव परम हुलास, ब्रजबासी हरि सँग लहत ॥
बिलसत विविध विलास, बाट घाट गृहबनसघन ॥

अथ पनिघटलीला ॥

पनिघट यमुनाके तटमाहीं । ठाढ़े श्याम कदमकी छाहीं ॥
सखा वृन्द चहुँ ओर बिराजैं । कोटि काम छबि निरखत लाजैं ॥
शीश मुकुटकी लटक सुहाई । सुरँग खौर केसर छबिछाई ॥
कुंडल झलक अलक घुघरारी । कंठ कनक कंठी द्युतिकारी ॥
चटकीली लटकी बनमाला । परसति चरण सरोज विशाला ॥
मुक्तमाल मणि माल सुहाई । उर विशाल पै अति छबिछाई ॥
अरुण अधर दशनन द्युति नीकी । मृदु मुसकान मोहनी जीकी ॥
चटकीलो पट पीत विराजै । कटि तटि क्षुद्र घंटिका राजै ॥
भुज विशाल भूषण युत सोहै । कर मुद्रिका मुदित मनमोहै ॥
तनु घन श्याम रसीले नैना । हँसि हँसि कहत सखन सों बैना ॥
कनक लकुटिसों पगलपटान्यो । भूषण सहित न जात बखान्यो ॥
गहि द्रुम डार तिरीछे ठाढे । अंग अंग अनुपम छबि बाढे ॥

दोहा—कबहुँ बजावत अधर धरि, करि मुरली ध्वनिघोर ॥
निकट बुलावत वन मृगन, कबहुँ नचावत मोर ॥

सो०—रहे गगन घन छाय, सुखदछांह शीतल किये ॥
वर्षाऋतुको पाय, निरखत सुत नँदरायको ॥

हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई । मनहुँ काम मसनंद[3] बिछाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई । शीतल अधिक सुगंध सुहाई ॥

१ सुवर्णकी । २ चरणकमल । ३ सेज ।

बहत यमुन बाहुलते पूरी । परत भँवर जहँ तहँ छबिरूरी ॥
उठत श्याम जल शुभगतरंगा । छबितरंग जिमि हरिके अंगा ॥
या छबि सों पनिघट हरि ठाढ़े । संग गोप बालकहित बाढ़े ॥
यमुना जल तिय भरन न जाहीं । ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं ॥
हरिके गुण मनमें सब जानैं । रोकत टोकत शंक न मानैं ॥
ताते जाय सकत कोउ नाहीं । दरश लालसा अति मनमाहीं ॥
सबके अन्तर्यामि कन्हाई । युवतिनके मनकी गति पाई ॥
तब इक बुद्धि रची नँदलाला । रसिक शिरोमणि मदनगोपाला ॥
सखन एक तरुतर[1] बैठाई । पनिघटते सब भीर मिटाई ॥
आपरहे द्रुम ओट छपाई । हेरत युवतिनमग चितलाई ॥

दोहा–इहि अन्तर आवत लखी, युवती इक घनश्याम ॥
आपरहे द्रुम ओट हरि, यमुना तट गई बाम ॥
सो०–नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरि शिर धर चली ॥
पाछेते चितचोर, घटलै दियो छुड़ाय महि ॥

गही चतुर ग्वालिनि भुज हरिकी । पाई कनक लकुटिया करकी ॥
सब सों तुम करिरहे ढिठाई । तैसेहिं मोसों लगत कन्हाई ॥
देन लगे तब हरि हँसि गागरि । लेत नहीं ग्वालिनि अति नागरि ॥
कहत कि रीतो घटनहिं लेहौं । जल भर देहु लकुटि तब देहौं ॥
कहा जो तुम नंद सुवन कन्हाई । हम हूं बड़े बापकी जाई ॥
एक गांव बस बास हमारो । मैं नहिं सहिहौं कह्यो तुम्हारो ॥
एक कहौ तो दश मैं कहिहौं । मैं कछु तुमसों डरपि न जैहौं ॥
यह सुनि हँसिदीन्हें नँदलाला । लियो चोरि चित मदनगोपाला ॥
कहत लकुटिया देरी मेरी । मैं भरि देहौं गागरि तेरी ॥
देखत रूप सुनत मृदुबानी । ग्वालिनि तनुकी दशा भुलानी ॥
लागी हृदय मदनकी सांटी[2] । मन पर गयो प्रेमकी घांटी ॥
करतेलकुटि गिरत नहिं जान्यो । विवश भई चित चेत हिरान्यो ॥

१ वृक्षकेनीचे । २ कामदेवकी साटी ।

दोहा–तब घट भरि हरि भावते, दीन्हो शीश उठाय ॥
नेकहुँ सुधि ता तनुनहीं, चली ब्रजहिं समुहाय ॥
सो०--कियो दृगन में धाम, सुन्दर नट नागर सुखद ॥
जित देखे तित श्याम, पंथ ताहि दीखै नहीं ॥

उतै अपर ग्वालिनि इक आई । कहत कहा तू रही भुलाई ॥
सूधे पंथ चलतहै नाहीं । कहा शोच तेरे मनमाहीं ॥
अबहीं हँसति भरन जल आई । कहाचली इत आप गँवाई ॥
ताकोदेखि कहत सुनु आली । मोपै श्याम मोहनी घाली ॥
मैं जल भरन अकेली आई । मेरी गागरि कृष्ण ढुढाई ॥
तब मैं कनक लकुटि गहिलीन्हों । उन मोतन लखिकै हँसिदीन्हों ॥
वहै हँसनि मोहिं परी ठगौरी । तबहीं ते मैं ह्वैगइ बौरी ॥
कहा कहौं तोसों अबआली । मेरेचित वह चितवन शाली ॥
बस्यो श्याम मेरे दृग माहीं । और कछू मोहिं दीसत नाहीं ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी । आप बिलोकन को अतुरानी ॥
ताहि बाँहगहि घर पहुँचाई । आपगई जलको अतुराई ॥
देख्यो जाय श्यामतहँ नाहीं । इत उत लखिशोचति मन माहीं ॥

दोहा–हरि देखत तरु ओटह्वै, ग्वालिनिमन दुख पाय ॥
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय ॥
सो०–मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी बिकल अति ॥
प्रकटे नंदकुमार, आय अचानक निकटही ॥

गहिलीन्हीं अंकम भरिग्वारी । ताके तनुकी तपनि निवारी ॥
तातन चितै कह्यो तूकोरी । तोहिं कबहुँ देख्यों नहिं गोरी ॥
मन हरिलीन्हों रूप दिखाई । बहुरि भये तरु ओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुखपायो ग्वाली । छकी प्रेमरस लखि बनमाली ॥
नाहिं जानतमैं को कित आई । भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पंथ भूलिगइ नागरि । इत उत फिरत शीशलिये गागरि ॥

१ नेत्र । २ मार्ग ।

और सखी इक इतते आई। देखि दशा तिन निकट बुलाई॥
कहा फिरै भूली मगमाहीं। बूझत सखी सुनत कछुनाहीं॥
चौंकपड़ी सपने ज्योंजागी। तासों वचन कहन तबलागी॥
श्याम बदन एकमिल्यो ढुटौना। तिनमोको कछु कीनोंटोना॥
मैंभरि गागरि शीशचढाई। + औचक मोहिं अंक भरिलाई॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी। देखीनाहिं कबहुँ ब्रजखोरी॥
दोहा–ऐसे कहि चितयो बिहँसि, मैं लखि रही भुलाय॥
तबहिं भयो अंतर कहूं, मेरो चित्त चुराय॥
सो०–कही सखी सों बात, ग्वालिनि लाज बिसारिकै॥
निरखि नंदको तात, भई जलदकी बूंद जिमि॥
सोसखि सावधान करिताको। चली आप आतुर यमुनाको॥
देखी श्याम युवति ढिगआई। ठाढे तरुकी ओट कन्हाई॥
तासु अंग छबिरहे निहारी। गोरे बदन चूनरी कारी॥
छूटी अलक बदन छबिछाई। मनहुं जलज अलि अवलि सुहाई॥
हाथन चूरी चारु बिराजैं। कनक मुँदरियन अति छबिछाजैं॥
सहज शृँगार उरोज उठोहैं। अंग अंग छुटि सुंदर सोहैं॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं। जाने कहूं गये बनमाहीं॥
जल भरिचली मनहिं पछिताई। गागरि नागरि शीश उठाई॥
औचक श्याम गही लट आई। यह कहि कहां चली अतुराई॥
चिबुक परस उरसों करलायो। ग्वालिनि मनहिं हर्ष अतिपायो॥
ऊपर कहत बंककर भौंहन। छांडिदेहुमेरी लटमोहन॥
उर परसत कछु सकुच न मानत। और ग्वालि सी मोको जानत॥
दोहा–छांड़ि देहु लट देखिहै, ब्रज युवती कोउ आय॥
हाहा मैं पांयन परति, तुमको नंद दुहाय॥
सो०–इतने हीको मोहिं, सौंह दिवावत बावरी॥

+ इनऔचकमोहिंअंकमेंलाई। १ मेघ। २ कमल। ३ भौंरा। ४ पंक्ति। ५ स्तन। ६ ठोढी।

पहिचान्यों नहिं तोहिं, ताते मुख देखत तनक ॥
यों कहि श्याम छांड़ि लट दीन्हीं। मुरि मुसकनि नागरिबश कीन्हीं
चली भवन मन हरि हर लीनों। जिय यह कहति कहा हरि कीनों
पगद्वै चलत ठिठकि रहि जाई। भूलगई मारग जिहि आई ॥
प्रेम मगन तनु सुधि बिसराई। रहे दृगनमें श्याम समाई ॥
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई। तब कछु जियमें गई लजाई ॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृह माहीं। उरते श्याम टरत क्षण नाहीं ॥
सखी संगकी बूझत आई। कहां यमुन तट बेर लगाई ॥
और दशा भइ है कछु तेरी। कहति नहीं हमसों सखि हेरी ॥
कहा कहों तुमसों री आली। मोह्यो मोहिं श्याम बनमाली ॥
सुनहु सखीरी वा यमुना तट। मैं जल भर्यो अकेली पनिघट ॥
लैगगरी शिर मारग डगरी। कितहूं ते आयो मो ढिगरी ॥
औचक आनि गही लट मेरी। कह्योनेक मुख देखन हेरी ॥

दोहा–मैं मृदु वचन अमोल सुनि, देखि वदन जलजात[1] ॥
जकी चकी सी ह्वै रही, उन परस्यो मो गात ॥
सो०–प्रफुलित हिये गुवारि, मनमोहनके रस विवश ॥
कुलकी लाज बिसारि, कही सखिन सों बात सब ॥

सुनत बात सब सखी सयानी। श्याम विलोकनको अतुरानी ॥
इक क्षण श्याम न विसरत काहू। सुनत भयो यह अधिक उछाहू ॥
घर घरते धाई सब नागारि। लैलै आई जलकी गागारि ॥
चलीं यमुन तट अति अतुराई। देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥
मोर मुकुट कटिकछनी सो है। कुंडल चटक लटक मन मोहै ॥
पीत बसन लखि तड़ित[2] लजाई। नयन विशाल अधर अरुणाई ॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई। ठगत फिरत हौ नारि पराई ॥
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्हों। तुमरो कहो कहा ठग लीन्हों ॥
कौन ठग्यो कहि कहा बखानै। औरहिके ठग तुमको जानै ॥

१ कमल। २ बिजुरी।

कहा ठग्यो सो हम नहिं मानैं । कहौ नाम धरि तब हम जानैं ॥
सर्वस ठगत पलकके माहीं । कहा ठग्यो सो जानत नाहीं ॥
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु । कैसे मोको ठग ठहरावहु ॥

दोहा–ठगलक्षण हमपै सुनहु, फाँसी मृदु मुसकान ॥
रूपठगौरीते ठगत, ब्रज तिय मन धन प्रान ॥

सो०–फिरत विकल बेहाल, लोक लाज कुलकान तजि ॥
ठगी नंदके लाल, भई विदित तिहुँ लोक तिय ॥

अपने लक्षण मोहिं लगावहु । जैसे तुम सब चितहि चुरावहु ॥
कहति कि प्रकटी तिहुँपुर बाता । ब्रजतिय ठगत नंदको ताता ॥
यह अति कहति कहत सब कोई । सुर नर मुनि वेदहु नहिं गोई ॥
तीन लोकको ठाकुर जोई । ब्रज बनितनवश कीन्हों सोई ॥
यों सुनि सब ग्वालिनिमुसकानी । कहौ सखी सुनि हरिकी बानी ॥
हरि तुम बात उलटि यह ठानत । तुम्हरी नागरता हम जानत ॥
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई । छांडि देहु अब यह लँगराई ॥
काहूकी ढारतहौ गगरी । काहू लट गहि करत अचगरी ॥
काहूको अंकम भरि लावत । ब्रज लोगनपै सबन हँसावत ॥
तुमते मग कोउ चलन न पावत । बाट घाट डरपत सब आवत ॥
यमुना भरन देत नहिं पानी । बहुत अचगरी अब तुम ठानी ॥
कहो तो यशुदहि जाय सुनावैं । फेरि तुम्हैं ऊखल बँधवावैं ॥

दोहा–यह सुनि हरि रिस करि उठे, इँडुरी लई छुड़ाय ॥
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बँधाय ॥

सो०–मोहिं कहत ठग चोर, आप भई साहुनि सबै ॥
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगली करन ॥

तब युवती सब हरि ढिग आई । कहत इंडुरी देहु कन्हाई ॥
नहिं तो तुमको गहि लै जैहैं । यशुमति पास न नेक डरैहैं ॥
बाट घाट तुम करत ढिठाई । काहु न नेक डरात कन्हाई ॥
इँडुरि लै फोरी सब गागरि । आज मिटावैं तुम्हरी लांगरि ॥

तब हरि चढे कदम पर जाई । इँडुरी दीन्ही जलहि बहाई ॥
बदन सकोरत भौंह मरोरत । मुरि मुसकनि सबके चितचोरत॥
कहत कहौं मैयासों जाई । सब मिलि लीजो मोहि बुलाई ॥
तुम सब जुरि मोहि मारन धाई । तब मैं इँडुरी जलहि बहाई ॥
ऐसो करि तुम मोको पायो । मानहु मोको मोल मँगायो ॥
यह सुनि युवति कहत मुसकाई । कहति यशोमति सों हम जाई ॥
वेदिन बिसर गये मनमोहन । बाँधे मात ऊखली गोहन ॥
खाई रहो तौ बदहिं कन्हाई । जाउ कहूं तो नन्द दुहाई ॥

दोहा–कान्हहिं सौंह दिवायकै, लै उरहन सब बाम ॥
ऊपर रिस अंतर सुखी, चलीं नंदके धाम ॥

सो०–मथति महरि निज धाम, दधि माखन हरिके लिये॥
तिहि अंतर ब्रज बाम, आवत देखी भीर अति ॥

मैं जानति हरि इनहिं खिझाई । तातै सब उरहन लै आई ॥
कहत युवति सब रिस भरि आई। ऐसो ढीठ कियो सुत माई ॥
भरन देत नहिं यमुना पानी । रोकत आय करत कुलकानी ॥
काहूकी गागरि ढरकावै । इँडुरी लै जलमाहिं बहावै ॥
काहूको घट डारत फोरी । गारी देत सहैं नित खोरी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं। हरिके गुण तुम जानति नाहीं ॥
अब नाहीं ब्रजबास हमारो । करत अचकरी सुवन[3] तुम्हारो ॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं । महरि सुतहि तुम बरजत नाहीं ॥
यशुमति सबहिन कहत निहोरी। कहा करौं सो तुमहि कहोरी ॥
जो हरिको मैं ह्यां गहि पाऊं । तो तुम सबको अबहि दिखाऊं ॥
तुमहूं जानति हौ गुण हरिके । ऊखल सों बाँधे मैं धरिके ॥
मारन लगी सांटि लै जबहीं । बर्ज्यो मोहिं तुमहिं तब सबहीं ॥

दोहा–अब घर आवहिं जबहिं हरि, तबहिं करौं सोइ हाल॥
लरिकाईते अचकरो, मैं जानत गोपाल ॥

१ यशोदा । २ घाट । ३ पुत्र ।

सो०-अब जो पकरन जाऊँ, ताहि गहन पाऊं कहां ॥
सुनतहि मेरो नाउँ, कोजानै भजि जाय कित ॥
यह अपराध क्षमो सब हमको । यहै कहत हौं मैं अब तुमको ॥
इहि विधि युवतिन बोध कराई । महरि सबनको घरन पठाई ॥
इतते घरन चलीं सब ग्वाली । उतते घर आवत बनमाली ॥
ह्वैगइ भेंट बीच मग आई । तुरत नयन हरि गये लजाई ॥
मात बुलावत जाहु कन्हाई । बहुत बड़ाई करि हम आई ॥
निरखि बदन हँसि कह्यो कन्हाई । मैं समुझाय लेउँगो माई ॥
सकुचतही आये घर मोहन । द्वारहिते लागे हरि जोहन ॥
देखि जननि घरकारज लागी । गोपिन उरहनके रिस पागी ॥
भीतर रोहिणि पाक बनावै । कहि कहि तिनसों बात सुनावै ॥
हरुवै हरुवै[1] तब हरि जाई । सुनत आप पाछे चित लाई ॥
यहै कहति यशुमति रिसि आई । गयो कहांधौं भाजि कन्हाई ॥
पनिघट रोंकत धूम मचावत । यमुना जल कोउ भरन न पावत ॥
दोहा-गारि देत बेटिन बहुन, वै आवत ह्यां धाय ॥
हाहामैं सबको करति, क्योंहू खोट छुटाय ॥
सो०-इँडुरी देत बहाय, सबकी गागरि फोरिकै ॥
कित धौं गयो पराय, यह कहि कहि खिरवत सुतहिं ॥
जाति पांतिसों कह लँगराई । मारेहु मानत नाहिं कन्हाई ॥
तब पाछेते हरि उठि बोले । मधुर वचन कोमल अति भोले ॥
तूमोहीं को मारन जानै । उनके गुणन नाहिं पहिंचानै ॥
कहति जुवै मानत तू सोई । तिनके चरित न जानत कोई ॥
कदमतीरते मोहिं बुलावैं । बातै गढ़ि गढ़ि आप बनावैं ॥
मटकत गिरै शीशते गगरी । नाम लगावत मेरे सिगरी ॥
फिरि चितई देखे हरि पाछे । सुन्दर श्याम पीतपट काछे ॥
कह तू कहां रह्यो मो पाहीं । मैं कह तोको जानत नाहीं ॥

[1] धीरेधीरे ।

हरि मुख देखतही नँदनारी । तुरतहिं भूलिगई रिस भारी ॥
कहतकि उरहन सब लै आवैं । झूठहि खोर कान्हको लावैं ॥
मैं जानत गुण उन सबहीके । बातन जोरि बनावत नीके ॥
वे सब योवनकी मदमाती । फिरत सदा हरिसों अठिलाती ॥
दोहा–कहां श्याम मेरो तनक, वे सब योवन जोर ॥
अब उरहन जो आवहीं, तौ पठऊं मुख मोर ॥
सो०–तूकित उनढिगजात, मैं बरजत मानत नहीं ॥
लावत झूठी बात, वे सब ढीठ गुवालिनी ॥
यह कहि चूम सुतहिं उरलायो। मन मोहन मन हर्ष बढ़ायो ॥
ब्रज घर घर यह बात जनाई । पनिघट रोकत कुँवर कन्हाई ॥
श्याम बरण नटवर वपुकाछे । मुरली मधुर बजावत आछे ॥
करत अचकरी जो मन भावै । यमुना जल कोउ भरन न पावै ॥
बैठत आप कदमकी डारी । सबन बुलावत दै दै गारी ॥
काहूकी गागरि गहि फोरै । काहूकी इँडुरी गहि बोरै ॥
काहूको अंकमगहि लावै । काहूको घट भूमि लुढावै ॥
नयन सैनदै चितहि चुरावत । काहूसों मन अपनो लावत ॥
ब्रज युवती सुनि सुनि उठि धावैं।बिनहारि दरश न क्षण कल पावैं॥
कोउ बरजै कोउ कहै कोटि विधि।सबके ध्यान श्याम सुन्दरनिधि
मन क्रम वचन तिन्हैं रति हरि सों।नातो नेह न मानत घरसों ॥
निशिदिन जागत सोवत माहीं।नंद नँदन क्षण विसरत नाहीं ॥
दोहा–यह लीला सब करत हरि, ब्रज युवतिनके हेत ॥
कृष्ण भजै जो भाव जिहि, तेहितैसो फलदेत ॥
सो०–चिन्तामणि जेहि नाम, चिंतत फलदायक जनन ॥
सबहींको सब काम, जैसोको वैसो सदा ॥
सुनि यह श्रीवृषभानु दुलारी । पनिघट ठाढे कुंज बिहारी ॥
देखनको चित अति अतुराई । कह्यो सखिन सों कुँवरि बुलाई ॥

चलहु यमुनतट ल्यावहिं पानी।सुनत बात यह सब हर्षानी ॥
इक इक कलश सबन गहिलीनों।तुरत गमन यमुना तट कीनों ॥
देखे तहां कुँवर नँदलाला । सुन्दरश्यामल नयन विशाला ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढ़ायो । प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो ॥
रहे रीझि हरि दीठि लगाई । भऱ्यो नीर प्यारी मुसकाई ॥
चलीघरहि यमुना जल भरिकै । सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै
मंद मंदगति चलति सुहाई । मोहन मनहिं मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे । बिवश भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै । गागरि शिरपै हरिमन मोहै ॥
डुलत ग्रीवे लटकत नकवेसर । वंदन बिन्दु आड दिये केसर ॥

दोहा–लोचन लोल विशाल अति, मुरि२ चितवत जाय॥
भ्रुकुटी धनुष कटाक्ष शर, हरि दृग मृगन लगाय ॥
सो०–अँग अँग छबि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी ॥
अंचल ध्वज फहराय, ठटकि चलत हरि मन हरत ॥

रीझे श्याम निरखि छबि प्यारी । संगहि चले लागि बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई । कबहुँ रहत पीछे चितलाई ॥
नाना भांतिन भाव बतावैं । प्यारिहि निज अभिलाष जनावैं ॥
कनक लकुटलै करके माहीं । आगे पंथ सँवारत जाहीं ॥
देखत जहाँ प्रिया परछाहीं । तहां मिलावत निजतनु छाहीं ॥
छबि निरखत तनु वारि जनावैं । पीतांबरलै शीश फिरावैं ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहि जाहीं । निरखत कुँवरी छबिललचाहीं ॥
गागरि ताकि कांकरी मारैं । उचटि उचटि तिय अंगन पारैं ॥
ओट पीतपट शीश नवाई । इहि मिस निकसतढिग है आई ॥
प्यारी अपने जिय अनुमाने । मेरे हित हरि भावनठाने ॥
सखियन मध्य नागरी जाई । नहिं पावत लग लगन कन्हाई ॥
कियो चरितलब रसिक बिहारी । सखिन सहित मोही सुकुमारी ॥

१ नार । २ बेंदी ।

दोहा-मिसकरि निकसे निकटह्वै, निरखि वदन मुसकाय ॥
मन हरिलीनो सबनको, दियो काम उपजाय ॥
सो०-भई विवश सुकुमार, अंग उमँग आँगी दराकि ॥
मोहे नंदकुमार, सुधि बुधि बिसरी देहकी ॥

सखिन संग पहुँची घर आई । अटकिरह्यो मन हरि सँग जाई ॥
पुनि पुनि उरयह करत विचारा। कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा ॥
गागरि निज निज गृह पहुँचाई। बहुरि सखी प्यारी ढिग आई ॥
बार बार सब कहत निहोरी। चलिये यमुना जलहि बहोरी ॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी। चित उरझो चितवन परवारी ॥
ठग सी रही मनहि मन शोचै। प्रेम विवश दृग बारि विमोचै ॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी। कहा भयो तो कोरी प्यारी ॥
शोचति कहा कहै किन सोरी। काहूलयो चोर कछु चोरी ॥
उत्तर हमैं देत क्यों नाहीं। कहा ठगीसी है मन माहीं ॥
गहि गहि भुजा कहति सब गोरी। चलहि न यमुना आवहि खोरी॥
तब सखियन वृषभानु दुलारी। लीन्हीं सबन निकट बैठारी ॥
जलजैनयन जल भरि अनुरागी। हरिके चरित कहन सब लागी ॥

दोहा-कहौ सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकी ओर ॥
गैल न छांड़त सांवरो, रसिया नंदकिशोर ॥
सो०-धरै न कोऊ नांव, इह शंकनिडरपत हियो ॥
एक भांतिको गांव, वह चंचल मानै नहीं ॥

मोको देखत जहां कन्हाई। मेरे संग लगत उठि धाई ॥
इत उत नयन चुराय निहारै। मोको मगमें आनि जुहारै ॥
आगे चलत लकुट करलाई। मेरो पंथ सँवारत जाई ॥
सो बहु मोहिं निहोरो लाई। फिर चितवै मोतन मुसकाई ॥
जबमैं यमुनाको जल भरिकै। चलति गागरी शिरपर धरिकै ॥
तब घट में वह कांकरि मारै। उचटि लगत तब अंग निहारै ॥

१ कमल।

मेरे उर अंचर फहराई । सोवह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूं पीताम्बर शिर फेरै । बार बार करि मोतन हेरै ॥
कबहूं आपनि छबि दरशावै । मेरो चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौं तब मोतनु हेरै । नेकु नहीं दृग इत उत फेरै ॥
जहां जाति मेरी परछाईं । तहां मिलाय रहत निज छाईं ॥
जब लग लागन पावत नाहीं । तब वाको जिय अति अकुलाहीं ॥

दोहा–मोतनु छूवै हरि चले, ताहि भरतहै अंक ॥
हौंसकुचत बोलौं नहीं, लोक लाजकी शंक ॥
सो०–ब्रज घर २ यह शोर, को जानै कहियत कहा ॥
चितवत यह चितचोर, विवश होत सखि प्राण तब ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी । भइ गति सांप छछूंदर + कैसी ॥
घरते निकसत बन नहिं आवै । लोक लाज कुल कानि मिटावै ॥
जो घर रहौ रह्यो नहिं जाई । तनु घरमें मन जहां कन्हाई ॥
कितो करों आवत इत नाहीं । बँध्यो पीत पट आँचर माहीं ॥
अबलो मेरे मन यह रांची । करिहौं प्रीति श्याम सँग सांची ॥
ब्रजके लोग हँसो किन कोई । कुल मर्य्याद जाउ किन सोई ॥
कहा लाभ सो कहहु सयानी । जामें होय जीवकी हानी ॥
सोनो कहा कानजिहि टूटै । अंजन कहा आंखि जिहि फूटै ॥
कहा कांच संग्रहते होई । जो अमोल मणि करते खोई ॥
विष सुमेरु कहु कौने काजा । सुखद बूंद इक ओषधि राजा ॥
कुलकी कानि कांच किरचाई । चिन्तामणिकी खानि कन्हाई ॥
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी । सिखवहु मोहिं सखी जिय जानी ॥

दोहा–मोको अब सूझै नहीं, बिनु वह मृदु मुसकान ॥
कापै न्यारो होतरी, चूनो हरदी सान ॥
सो०–मेटि लोककी कानि, पतिब्रत राखौं श्याम सों ॥
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ॥

+ सतावै ।

सुनत गोपिका राधा बानी। हरि अनुराग सिंधु मन मानी ॥
गद्गद कंठ पुलकतनु आये। लोचन जलज प्रेम तनु छाये ॥
भई प्रेम वश गोप कुमारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥
बारहिं बार कहत ब्रजनारी। धन्य धन्य वृषभानु दुलारी ॥
हम सब तोसों सत्य बखानै। तैं हरि भली भांति पहिचानै ॥
यह मोहन सबको मन मोहै। तिय लखि विवश न होय सुकोहै॥
अंग अंग प्रति अति छबि छाजै। समता काम कोटि द्युति लाजै ॥
सुमन श्याम दोउ पाणि पकरिकै। करत वेणु धुनि अधरन धरिकै ॥
तब यह दशा सबनकी होई। जड़ चेतन मोहत सब कोई ॥
वन मृग निकट धाय सब आवैं। खग ह्वै मौन न अंग डुलावैं ॥
तृण गहि दंत धेनु[1] रहि जाहीं। थनते क्षीर[2] पियत बछ नाहीं ॥
यमुना बहिबेते रहि जाई। जलचर प्रकटत बाहर आई ॥

दोहा—जडचेतन चेतन जडहि, सुनत होत कल बैन ॥
कै विष कै मद कै अमी, किधौं भर्‌यो रस मैन ॥
सो०—गृहवन कछु न सुहाय, सुनत श्रवण वह मधुर धुनि ॥
गृहकारज बिसराय, चकित थकित रहियत सबै ॥

बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई। मोहत सुन्दर रूप दिखाई ॥
नई २ छबि क्षण २ माहीं। झलकावत सब अंगन माहीं ॥
ऐसी को जु देखि नहिं मोहै। नंदसुवन सम सुन्दर कोहै ॥
वह सखि सबहीके मन भावै। सब कोउ वाहि देखि सुख पावै॥
लोक लाज कुल कौने कामहिं। जो पावैं सुन्दर बर श्यामहिं ॥
पै यह मोहिं अगम अति लागै। यह सुख मिलै नहीं बिन भागै ॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं। बिना सुकृत ये प्रापत नाहीं ॥
तुमहू इनको तप करिपायो। ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो ॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो। जो बर पावहिं नंददुलारो ॥
ताते मैं मनमें यह आवै। कीजे जो सबके मन भावै ॥

१ गौ। २ दूध।

मेरे उर अंचर फहराई । सोवह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूं पीताम्बर शिर फेरै । बार बार करि मोतन हेरै ॥
कबहूं आपनि छवि दरशावै । मेरो चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौं तब मोतनु हेरै । नेक नहीं दृग इत उत फेरै ॥
जहां जाति मेरी परछाई । तहां मिलाय रहत निज छाईं ॥
जब लग लागन पावत नाहीं । तब वाको जिय अति अकुलाहीं ॥

दोहा–मोतनु छूवै हरि चले, ताहि भरतहै अंक ॥
हौंसकुचत बोलों नहीं, लोक लाजकी शंक ॥

सो०–ब्रज घर २ यह शोर, को जानै कहियत कहा ॥
चितवत यह चितचोर, विवश होत सखि प्राण तब ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी । भइ गति सांप छछूंदर + कैसी ॥
घरते निकसत बन नहिं आवै । लोक लाज कुल कानि मिटावै ॥
जो घर रहौ रह्यो नहिं जाई । तनु घरमें मन जहां कन्हाई ॥
कितो करों आवत इत नाहीं । बँध्यो पीत पट आँचर माहीं ॥
अबलो मेरे मन यह रांची । करिहौं प्रीति श्याम सँग सांची ॥
ब्रजके लोग हँसो किन कोई । कुल मर्य्याद जाउ किन सोई ॥
कहा लाभ सो कहहु सयानी । जामें होय जीवकी हानी ॥
सोनो कहा कानजिहि टूटै । अंजन कहा आंखि जिहि फूटै ॥
कहा कांच संग्रहते होई । जो अमोल मणि करते खोई ॥
विष सुमेरु कहु कौने काजा । सुखद बूंद इक ओषधि राजा ॥
कुलकी कानि कांच किरचाई । चिन्तामणिकी खानि कन्हाई ॥
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी । सिखवहु मोहिं सखी जिय जानी ॥

दोहा–मोको अब सूझै नहीं, बिनु वह मृदु मुसकान ॥
कापै न्यारो होतरी, चूनो हरदी सान ॥

सो०–मेटि लोककी कानि, पतिव्रत राखौं श्याम सों ॥
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ॥

+ सतावे ।

सुनत गोपिका राधा बानी। हरि अनुराग सिंधु मन मानी॥
गद्गद कंठ पुलकतनु आये। लोचन जलज प्रेम तनु छाये॥
भई प्रेम वश गोप कुमारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥
बारहिं बार कहत ब्रजनारी। धन्य धन्य वृषभानु दुलारी॥
हम सब तोसों सत्य बखानैं। तैं हरि भली भांति पहिचानै॥
यह मोहन सबको मन मोहै। तिय लखि विवश न होय सु को है॥
अंग अंग प्रति अति छबि छाजै। समता काम कोटि द्युति लाजै॥
सुमन श्याम दोउ पाणि पकरिकै। करत वेणु धुनि अधरन धरिकै॥
तब यह दशा सबनकी होई। जड़ चेतन मोहत सब कोई॥
वन मृग निकट धाय सब आवैं। खग ह्वै मौन न अंग डुलावैं॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं। थनते क्षीर पियत बछ नाहीं॥
यमुना बहिबेते रहि जाई। जलचर प्रकटत बाहर आई॥

दोहा–जडचेतन चेतन जडहि, सुनत होत कल बैन॥
कै विष कै मद कै अमी, किधौं भर्‌यो रस मैन॥
सो०–गृहवन कछु न सुहाय, सुनत श्रवण वह मधुर धुनि॥
गृहकारज बिसराय, चकित थकित रहियत सबै॥

बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई। मोहत सुन्दर रूप दिखाई॥
नई २ छबि क्षण २ माहीं। झलकावत सब अंगन माहीं॥
ऐसी को जु देखि नहिं मोहै। नंदसुवन सम सुन्दर को है॥
वह सखि सबहीके मन भावै। सब कोउ वाहि देखि सुख पावै॥
लोक लाज कुल कौने कामहिं। जो पावैं सुन्दर बर श्यामहिं॥
पै यह मोहिं अगम अति लागै। यह सुख मिलै नहीं बिन भागै॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं। बिना सुकृत ये प्रापत नाहीं॥
तुमहू इनको तप करिपायो। ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो। जो बर पावहिं नंददुलारो॥
ताते मैं मनमें यह आवै। कीजे जो सबके मन भावै॥

१ गौ। २ दूध।

तप कीजै हरिके हितलागी। पूजि गौरिपतिसों वर मांगी ॥
नंदसुवन सुन्दर बर पावैं। और सकल कामना नशावैं ॥
दोहा–जप तप संयम नेमते, प्रभु प्रकटत पाषाण ॥
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥
सो०–कीजै यह दृढ़ नेम, प्रात जाय यमुना नदी ॥
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पतिकरि हरिहि॥
तपकरि योगी जन हरि ध्यावैं। मन बांछित फल तपकरि पावैं ॥
सकल कामनाके शिवदाता। कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मन बांछित सखि एहा। नंदसुवन पदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखीकी बानी। श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो। धन्य २ कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई। जाविधि नंद नँदन हितहोई ॥
वृथा जन्म जग जान न दीजै। यशुमति सुतसों हितकरिलीजै ॥
यहै मंत्र सबहिन दृढ कीन्हों। नँद नंदनसों पतिव्रत लीन्हों ॥
धन्य धन्य ब्रज गोपकुमारी। जिनके हित पति कृष्णमुरारी ॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी। लोक लाज तिनका सम जानी ॥
इकक्षण श्याम न उरते टरहीं। नेम धर्म व्रत हरि हित करहीं ॥
जिनको यश शारद श्रुति गावैं। ब्रजवासी जन कहा बतावैं ॥
दोहा–जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहू, ब्रज युवतिन मन माहिं ॥
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं ॥
सो०–ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रज तियनको ॥
हरि छबि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एकपल ॥

अथ चीरहरण लीला ॥

भवन रवन सबहिन बिसरायो। ब्रज युवतिन हरिसों मन लायो ॥
यहै वासना सब उर जामी। होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
काम वासना करि उर धायो। हरिके हेत तपहि मन लायो ॥

१ पाति। २ पत्थरते। ३ सरस्वती। ४ घर।

षटदशसहस गोपकी कन्या । करन लगीं तप हरि हित धन्या॥
रहत क्रिया युत तप को साधे । छांड़ दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं । प्रहर + प्रयन्त रहैं जल माहीं ॥
जपहिं उमापति हर वृषकेतू । सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीत भीत मनमें नहिं ल्यावैं । नयन मूंदिके ध्यान लगावैं ॥
बार बार यह कहैं मनाई । हम बर पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
जलतें बहुरि निकासि सब आई । पूजहिं गौरीश्वर शिव जाई ॥
चन्दन बिल्वपत्र जल धारा । अक्षत सुमन सुगंध अपारा ॥
प्रीति सहित सब शिवहि चढावैं । धूप दीपकरि स्तुति गावैं ॥

छंद—करहिं स्तुति गानबहुविधि, पाणि पंकज जोरहीं ॥
बारबार नवाय मस्तक, प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जयमहेश कृपालु शिव, आनन्दनिधि गिरिजापते ॥
कैलासपति कल्याण अगजग, नाथ सर्व नमामिते ॥
जटाजूट त्रिपुण्ड्र शशि कल, गंगयुत शोभित शिरे ॥
कमल नयन विशाल सुन्दर, चारु कुण्डल श्रुति धरे ॥
नीलकंठ भुजंग भूषण, भस्म अंग दिगम्बरे ॥
अर्द्धंग गौरिविशाल उर, शिरमालधर करुणाकरे ॥
कर्पूर गौरि प्रसन्न आनन, पंचवक्र त्रिलोचने ॥
कामप्रद सुखधाम पूरण, काम शोच विमोचने ॥
भगवान भौभव भय हरण, भूतादि पति शंभूहरे ॥
प्रणत जन पूरण मनोरथ, जगत पति मन्मथ अरे ॥
वृषभ वाहन त्रिपुर अरि, मृगराज धरछालाम्बरे ॥
शूलपाणि त्रिशूल मूलन, मूलकर शिवशंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तव पद, वन्दि मनवांछित लहैं ॥
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्णपति चाहति अहैं ॥

१ सोलहहजार। + प्रहरएक रहें जलकेमाहीं । २कामकेशत्रु । ३ त्रिपुरकेवैरी।

तप कीजै हरिके हितलागी । पूजि गौरिपतिसों[1] वर मांगी ॥
नंदसुवन सुन्दर वर पावैं । और सकल कामना नशावैं ॥
दोहा-जप तप संयम नेमते, प्रभु प्रकटत पाषाण[2] ॥
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥
सो०-कीजै यह दृढ़ नेम, प्रात जाय यमुना नदी ॥
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पतिकरि हरिहि॥
तपकरि योगी जन हरि ध्यावैं। मन वांछित फल तपकरि पावैं ॥
सकल कामनाके शिवदाता । कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मन वांछित सखि एहा । नंदसुवन पदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखीकी बानी । श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो । धन्य २ कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई । जाविधि नंद नँदन हितहोई ॥
वृथा जन्म जग जान न दीजै । यशुमति सुतसों हितकरिलीजै ॥
यहै मंत्र सबहिन दृढ कीन्हों । नँद नंदनसों पतिव्रत लीन्हों ॥
धन्य धन्य ब्रज गोपकुमारी । जिनके हित पति कृष्णमुरारी ॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी। लोक लाज तिनका सम जानी ॥
इकक्षण श्याम न उरते टरहीं । नेम धर्म व्रत हरि हित करहीं ॥
जिनको यश शारद[3] श्रुति गावैं। ब्रजवासी जन कहा बतावैं ॥
दोहा-जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहू, ब्रज युवतिन मन माहिं ॥
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं ॥
सो०-ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रज तियनको ॥
हरि छबि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एकपल ॥

अथ चीरहरण लीला ॥

भवॅन[4] रवन सबहिन बिसरायो । ब्रज युवतिन हरिसों मन लायो ॥
यहै वासना सब उर जामी । होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
काम वासना करि उर धायो । हरिके हेत तपहि मन लायो ॥

---

१ पति । २ पत्थरते । ३ सरस्वती । ४ घर ।

षट्दशसहस गोपकी कन्या। करन लगीं तप हरि हित धन्या॥
रहत क्रिया युत तप को साधे। छांड़ दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं। प्रहर + प्रयन्त रहैं जल माहीं ॥
जपहिं उमापति हर वृषकेतू। सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीत भीत मनमें नहिं ल्यावैं। नयन मूंदिके ध्यान लगावैं ॥
बार बार यह कहैं मनाई। हम बर पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
जलते बहुरि निकसि सब आई। पूजहिं गौरीश्वर शिव जाई ॥
चन्दन बिलवपत्र जल धारा। अक्षत सुमन सुगंध अपारा ॥
प्रीति सहित सब शिवहि चढावैं। धूप दीपकरि स्तुति गावैं ॥

छंद—करहिं स्तुति गानबहुविधि, पाणि पंकज जोरहीं ॥
बारबार नवाय मस्तक, प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जयमहेश कृपालु शिव, आनन्दनिधि गिरिजापते ॥
कैलासपति कल्याण अगजग, नाथ सर्व नमामिते ॥
जटाजूट त्रिपुण्ड्र शशि कल, गंगयुत शोभित शिरे ॥
कमल नयन बिशाल सुन्दर, चारु कुण्डल श्रुति धरे ॥
नीलकंठ भुजंग भूषण, भस्म अंग दिगम्बरे ॥
अर्द्धंग गौरिविशाल उर, शिरमालधर करुणाकरे ॥
कर्पूर गौरि प्रसन्न आनन, पंचवक्र त्रिलोचने ॥
कामप्रद सुखधाम पूरण, काम शोच विमोचने ॥
भगवान भौभव भय हरण, भूतादि पति शंभूहरे ॥
प्रणत जन पूरण मनोरथ, जगत पति मन्मथ अरे ॥
वृषभ बाहन त्रिपुर[३] अरि, मृगराज बरछालाम्बरे ॥
शूलपाणि त्रिशूल मूलन, मूलकर शिवशंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तव पद, वन्दि मनवांछित लहैं ॥
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्णपति चाहति अहैं ॥

---

१ सोलहहजार। + प्रहरएक रहें जलकेमाहीं। २ कामकेशत्रु। ३ त्रिपुरकेवैरी।

दोहा-तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जनमन पीर ॥
परम दान दीजै हमैं, सुन्दर वर बलवीर ॥
सो०-यह बरदान न आन, शिव तुमसों चाहत अहैं ॥
कृष्ण कमल पद ध्यान, रहै हमारे उर सदा ॥
यहि विधि ब्रज तिय नेम निबाहैं। शिवको पूजि कृष्ण पतिचाहैं ॥
नित प्रति प्रात यमुन जल खोरैं। प्रीति रीति सों मन नहिं मोरैं ॥
सविता[1] सों बहु भांति निहोरैं। गोदपसारि युगल कर जोरैं ॥
तेज राशि दिनमणि जग स्वामी। जगत चक्षु सब अन्तर्य्यामी ॥
प्रणत मनोरथ पूरण कारी। हम पर होहु दयालु मुरारी ॥
काम हमारे तनुहिं जरावै। नन्द सुवन बर हमको भावै ॥
होय हमारो पति नँदलाला। करहु कृपा सो दीनदयाला ॥
ऐसे हरि हित गोप कुमारी। करैं नेम व्रत तप तनु धारी ॥
गेह देहकी सुरति बिसारी। कृशतनु भई परम सुकुमारी ॥
बर्ष दिवस यों कहत बिहान्यो। प्रभु अन्तर्य्यामी सब जान्यो ॥
मोहित शिव पूजत ब्रजनारी। और कामना सकल निवारी ॥
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता। सकल देव द्वारा फल दाता ॥
दोहा-देखि नेम यह प्रेममय, गोपिनको गोपाल ॥
भये प्रसन्न कृपालु चित, जनहित दीनदयाल ॥
सो०-सो कारण जलन्हात, भये जलहिमें प्रकट हरि ॥
सुन्दरश्यामलगात, नवकिशोर वर वपु धरे ॥
न्हात जहां युवती सब आछे। मींजत पीठि सबनके पाछे ॥
चकित सबन[2] पाछे हरिहेरो। देख्यो कान्ह कुँवर नँदकेरो ॥
मनमें हर्षित भईं सब नारी। व्रत फल प्रकटे कुंज बिहारी ॥
नवल किशोर ध्यान मन लायो। सोई प्रगट रूप दरशायो ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी। लागीं अंग दुरावन पानी ॥
एक एकको भेद न जानै। हरिको सब अपने ढिग मानै ॥

१ सूर्य। २ दोनों।

कहत लाज लागत नहिं तुमको। बिना बसन देखतहौ हमको ॥
हँसि निकसे तब कुँवर कन्हाई। चीर हारलै चले पराई ॥
हांक देत सब शपथ दिवावैं। फिरहु बसन भूषण हम पावैं ॥
डारि बसन भूषण तब दीन्हे। गोपिन तुरत दौरिकै लीन्हे ॥
चीर फटे भूषण सब टूटे। लेत न बनै तहां नहिं छूटे ॥
एक एकको लाज लजाहीं। बसन अभूषण पहिरत जाहीं ॥

दोहा—लगे श्याम ढीठी करन, यह कहि २ पछितात ॥
अन्तरगति आनन्द अति, झूठहि खीझत जात ॥

सो०—लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति ॥
यशुमतिके ढिगजाय, कहत चलो कहिये सबै ॥

चलीं यशोमति पै सब ग्वारी। प्रेम विवश तनुदशा विसारी ॥
पुलक अंग अँगिया दरकानी। टूटे हार लिये निज पाणी ॥
चीर चीर नख घात बनाई। यह मिसकरि उरहनलै आई ॥
देखो महरि श्यामके ये गुन। ऐसे हाल किये सबके उन ॥
चोली चीर हार दिखराये। टेर करत इतको भजि आये ॥
और बात इक सुनहु न माई। ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई ॥
बिना बसन हम न्हाति जहां सब। मींजत पीठ जाय पाछे तब ॥
और कहत तुमसों सकुचावैं। उर उघारिके तुमहिं दिखावैं ॥
महरि विचारत कहत कहा सब। भयो श्याम यहि लायक धौं कब ॥
सुनि युवतिनके मुख यह बानी। बोली बिहँसि नंदकी रानी ॥
बात कहौ सो जो निबहैरी। विनाभीत नहिं चित्र लहैरी ॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति। चोरी रही छिनारो लावति ॥

दोहा—तुम चाहति हो गगनते, गहन तोरैया बाम ॥
सो कैसे करि पाइहौ, तुम लायक नहिं श्याम ॥

सो०—मैं बूझी सब बात, तुमसों हौं कहिहौं कहा ॥
वृथा फिरत अठिलात, मष्टै करौ सुनिहै जगत ॥

१ सौगंध। २ हाथ। ३ आकाशते। ४ चुप।

यहि अन्तर हरि आय गये घर। शीश मुकुट लीन्हें मुरलीकर ॥
अति कोमल तनु भूषण सोहैं। बाल भेद देखत मनमोहैं ॥
जननी बोलि बांहगहि लीनी। कहत सबनिसों रसरिसभीनी ॥
देखहुरी तुम सब इत आवो। इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहिं आवत। इनहींके नख उरन दिखावत ॥
मेरो कान्ह अबहिं सुत बारो। तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥
देखत हरिहि युवति भईं भोरी। कहत महरि कछु तुमहिं न खोरी॥
देन उरहनो तुमको आई। नीकी पहिरावन हम पाई ॥
आपसमें सब कहत सुनाई। देखहुरी यह भाव कन्हाई ॥
यमुना तीर मिले जब आई। कहां गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसेको जानै। और करत औरेही ठानै ॥
घर आवतही भये नन्हाई। ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

दोहा—देखि चरित नँदलालके, भईं बाल मति भोर ॥
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरकी और ॥

सो०—सकुचीं बहुरि सँभारि, विवश देखि अपनी दशा ॥
चलीं घरन व्रजनारि, हरि मुखकमल निहारिकै ॥

गईं घरन व्रज गोप कुमारी। चित हरिलीनो मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घर माहीं। धाम कामकी सुधि कछु नाहीं ॥
मात पिताको डर नहिं मानो। गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतही गोप कुमारी। गईं यमुन तट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनंदन। मोर मुकुट शोभित तनु चंदन ॥
मकराकृत कुण्डल उर माला। पीत वसन दृग कमल विशाला॥
दरश देखि अँखियां तृपतानी। भईं सुखी उरतपन बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली। यमुना निकट गये वनमाली ॥
कौन भाँति करि आज अन्हैबो। बनत नाहिं अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम वसन उतारैं। कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
मींजत पीठ औचकहि आई। वसन अभूषण लै भजिजाई ॥

कहौं फेरि कैसे तब पावैं । अब नहिं कान्ह घाट पै आवैं ॥

दोहा—कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनंद ॥
अन्तरगतिके वृत्तको, जानत सब नँदनंद ॥

सो०—जानी जाननराय, लाजान्तर युवती करत ॥
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममें ॥

और बात इक श्याम विचारी । ये जल भीतर न्हात उवारी ॥
जोतिय जलमें नांगी न्हाई । ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तबपावै । नाँगी परपति सम्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं । और लाज अन्तर निरवारौं ॥
करौं आज इनसों विधिसोई । इनको हित ममकौतुक होई ॥
जो कछु चूक दासते होई । आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै । भजै निरंतर जब हरिपावै ॥
अन्तर रहित भक्ति हरिप्यारी । कहत वेद सब सन्त पुकारी ॥
तब हरिमन यह कियो विचारा । इनके बसनहरौं इक बारा ॥
प्रभु सबकी तब दृष्टि बचाई । कदम वृक्ष चढि रहे लुकाई ॥
जब गोपिन हरिदेख्यो नाहीं । चकित विलोकी इत उत माहीं ॥
जाने सदन गये नँदलाला । न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥

दोहा—धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ॥
नग्न होय स्नान हित, पैठीं यमुना नीर ॥

सो०—ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति स्नान सब ॥
मुख छबि कही न जाहिं, कनक कंज फूले मनहुँ ॥

बार बार बूडत जलमाहीं । प्रेम सहित मन मुदित नहाहीं ॥
शिवसों विनती करत निहोरी । कबहूं रविबन्दैं करजोरी ॥
यहै कामना करि सब ध्यावैं । नँद नन्दनको पति करि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी । धरैं ध्यान उरकुंजविहारी ॥
मूंदहिं नयन दरश चितलावैं । शब्द विचार श्रवण सुखपावैं ॥

१ वृत्तांत । २ वस्त्र । ३ डुबकगये । ४ घर । ५ नंगी । ६ सुवर्णके कमल ।

यहि अन्तर हरि आय गये घर। शीश मुकुट लीन्हें मुरलीकर ॥
अति कोमल तनु भूषण सोहैं। बाल भेद देखत मनमोहैं ॥
जननी बोलि बांहगहि लीनी। कहत सबनिसों रसरिसभीनी ॥
देखहुरी तुम सब इत आवो। इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहिं आवत। इनहीके नख उरन दिखावत ॥
मेरो कान्ह अबहिं सुत वारो। तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥
देखत हरिहि युवति भईँ भोरी। कहत महरि कछु तुमहिं न खोरी॥
देन उरहनो तुमको आई। नीकी पहिरावन हम पाई ॥
आपसमें सब कहत सुनाई। देखहुरी यह भाव कन्हाई ॥
यमुना तीर मिले जब आई। कहां गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसेको जानै। और करत औरेही ठानै ॥
घर आवतही भये नन्हाई। ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

दोहा—देखि चरित नँदलालके, भई बाल मति भोर ॥
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरकी और ॥

सो०—सकुचीं बहुरि सँभारि, विवश देखि अपनी दशा ॥
चलीं घरन ब्रजनारि, हरि मुखकमल निहारिकै ॥

गईं घरन ब्रज गोप कुमारी। चित हरिलीनो मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घर माहीं। धाम कामकी सुधि कछु नाहीं ॥
मात पिताको डर नहिं मानो। गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतही गोप कुमारी। गईं यमुन तट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनंदन। मोर मुकुट शोभित तनु चंदन ॥
मकराकृत कुण्डल उर माला। पीत वसन दृग कमल विशाला॥
दरश देखि अँखियां तृपतानी। भई सुखी उरतपन बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली। यमुना निकट गये वनमाली ॥
कौन भाँति करि आज अन्हैबो। बनत नाहिं अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम वसन उतारैं। कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
मींजत पीठ औचकहि आई। वसन अभूषण लै भजिजाई ॥

कहौं फेरि कैसे तब पावैं । अब नहिं कान्ह घाट पै आवैं ॥
दोहा-कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनंद ॥
अन्तरगतिके वृत्तको, जानत सब नँदनंद ॥
सो०-जानी जाननराय, लाजान्तर युवती करत ॥
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममें ॥
और बात इक श्याम विचारी । ये जल भीतर न्हात उघारी ॥
जोतिय जलमें नांगी न्हाई । ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तबपावै । नाँगी परपति सम्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं । और लाज अन्तर निरवारौं ॥
करौं आज इनसों विधिसोई । इनको हित ममकौतुक होई ॥
जो कछु चूक दासते होई । आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै । भजै निरंतर जब हरिपावै ॥
अन्तर रहित भक्ति हरिप्यारी । कहत वेद सब सन्त पुकारी ॥
तब हरिमन यह कियो विचारा । इनके बसनहरौं इक बारा ॥
प्रभु सबकी तब दृष्टि बचाई । कदम वृक्ष चढि रहे लुकाई ॥
जब गोपिन हरिदेख्यो नाहीं । चकित विलोकी इत उत माहीं ॥
जाने सदन गये नँदलाला । न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥
दोहा-धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ॥
नग्न होय स्नान हित, पैठीं यमुना नीर ॥
सो०-ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति स्नान सब ॥
मुख छबि कही न जाहिं, कनक कंज फूले मनहुँ ॥
बार बार बूडत जलमाहीं । प्रेम सहित मन मुदित नहाहीं ॥
शिवसों विनती करत निहोरी । कबहूं रविसन्मुं करजोरी ॥
यहै कामना करि सब ध्यावैं । नँद नन्दनको पति करि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी । धरैं ध्यान उरकुंजविहारी ॥
मूंदहिं नयन दरश चितलावैं । शब्द विचार श्रवण सुखपावैं ॥

१ वृत्तांत । २ वस्त्र । ३ डुबकगये । ४ घर । ५ नंगी । ६ सुवर्णके कमल ।

भुज जोरत अंकम हितलागी । मगन प्रेमरस तिय बड़भागी ॥
प्रभु अन्तर्यामी सबजानैं । देखैं कदमचढ़े सुखमानैं ॥
कहत धन्यधनि ब्रजकी बाला । मेरे हित तप करत विशाला ॥
प्रीति रीति सबकी पहिचानी । क्षण क्षणकी सेवा हरिमानी ॥
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावै । मोहिं विरदराखे बनिआवै ॥
कियो बहुत श्रम ममहित कारण । अब इनको दुखकरौं निवारण ॥
उपजी कृपा समुझि जनपीरा । उतरे तरुते श्रीबलबीरा ॥

दोहा—प्रेम मगन युवती सबै, रहीं ध्यान मन लाय ॥
हरि सब भूषण वसन लै, चढ़े कदमपर जाय ॥

सो०—भूषण वसन अपार, सोरह सहस वधूनके ॥
हरे एकही बार, लै राखे तरु³ नीपपर ॥

कर्‍यो नीपतरु अति विस्तारा । फूले सुमन सुगंध अपारा ॥
लैलै बसन डार अटकाये । जहां तहां भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पट्टाम्बर सारी । श्वेत पीत चूनरि अरुणारी ॥
जहां तहां शाखन प्रतिसोहैं । देखत छबि वसन्त मनमोहैं ॥
सो तरुशाखा परम सुहाई । बैठे छबिकी राशि कन्हाई ॥
युवती सुकृति तरुण धरिमानो । पर्‍यो सुकृति पूरण फलजानो ॥
देखत कदम चढ़े नँदलाला । बसन बिना जलमें सब बाला ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं । तब जलबाहर निकसन लागीं ॥
जलते निकरि आयतट देख्यो । भूषण बसन तहां नहिं पेख्यो ॥
इत उत चितै चकित भईंभारी । सकुचिगईं फिर जल सुकुमारी ॥
नाभि प्रयन्त नीरमें ठाढी । भुजलगाय उरचिन्ता बाढी ॥
कँपत शीतमें अति अकुलानी । बार बार कहि कहि पछितानी ॥

दोहा—ऐसोको भूषण वसन, सबके एकहि बार ॥
तटते लये चुरायके, लगी न नेक अबार ॥

सो०—हम जानत यह बात, अम्बर⁴ हरि हर लेगये ॥

१ दूरकरौं । २ वृक्ष । ३ कदम वृक्ष । ४ वस्त्र ।

और कौनको गात, जो ब्रजमें ढीठो करै ॥

दीन होय तब युवति पुकारी । हौ कहँ श्याम जाहिं बलिहारी ॥
दरश दिखाय विनय सुनि लीजै । अम्बर देहु कृपा अब कीजै ॥
थर थर काँपत अँग सुकुमारी । देखि श्याम नहिं सके सँभारी ॥
बोलि उठे तब मदन गोपाला । कहा कहत मोसों ब्रजबाला ॥
कतहौ जलमें मरत जड़ाई । लेहु वसन भूषण इत आई ॥
तुम पट भूषण सुरति बिसारी । तब मैं लै कीन्हों रखवारी ॥
अब अपने पट भूषण लीजै । रखवारी कछु हमको दीजै ॥
जब ऐसे हरि बोल सुनायो । तब सबके मन धीरज आयो ॥
सुनि हरि वचन सकल हरषानी । लखे कदम ऊपर सुखदानी ॥
कहत सुनो सखि हरिकी बातैं । वसन चुराय करैं ये घातैं ॥
हम सब जलके बीच उघारी । माँगत हैं हमसों रखवारी ॥
तब हँसि बोलीं ब्रजकी बाला । सुनहु श्याम सुन्दर नँदलाला ॥

दोहा--तन मन धन अर्पों तुम्हैं, है जु तुम्हारे पास ॥
अब अम्बर दीजै हमैं, जानि आपनी दास ॥

सो०--तब हँसि कह्यो कन्हाय,जो तन मन मोको दियो ॥
लेहु वसन ह्यां आय, तौ मानो मेरो कह्यो ॥

सुनहु श्याम यह बात हमारी । नग्न कौन विधि आवें नारी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई । बिना वसन क्यों देह दिखाई ॥
यह मति आप कहां धौं पाई । आज सुनी यह बात नवाई ॥
पुरुष जात यह कहत न जानहु । हाहा ऐसो मन जनि आनहु ॥
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ । तौ तुम पट भूषण नहिं पैहौ ॥
जो तनमन दीन्हों तुम मोही । तौ राखतकित लज्जा ओही ॥
यह अन्तर मोसों जनि राखौ । मानि लेहु तुम मेरे भाषौ ॥
शीत सहतकत नवल किशोरी । लाज देहु जलहीमें बोरी ॥
जलते निकसि वेग इत आवो । हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो॥

१ नंगी ।

ज्यों जलमें रविते कर जोरो । त्यों ह्वै सन्मुख मोंहिं निहोरो ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी । ऐसी बात न कहौ मुरारी ॥
हाहा लागहिं पाँय तिहारे । पाप होत हैं जाड़न मारे ॥

दोहा--छांड़ि देहु यह टेक हरि, बरु भूषण तुम लेहु ॥
शीत मरत हम नीरमें, वसन हमारे देहु ॥

सो०--दूषण होत अपार, जो तियअँग देखहि पुरुष ॥
ताते नंदकुमार, नारी नग्न न देखिये ॥

तुमको छोह होत नहिं राई । बड़े निठुर हौ कुँवर कन्हाई ॥
ऐसो करौ जो तुमको सोहै । आज तुम्हारी पटतर कोहै ॥
आजहिते हम दासि तिहारी । कैसे अंग दिखावहिं नारी ॥
अंग दिखाये भूषण पैहौ । नातर जलमें बैठी रैहौ ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो । थोरे में मो भलो मनावो ॥
कत अंतर राखत हौ हम सों । बार बार मैं भाषत तुमसों ॥
लेहु आय अपने पटभूषण । यह लागै हमको सब दूषण ॥
मोहित तुम कीन्हो तप भारी । अब कत लज्जा करत हमारी ॥
मैं अन्तर्यामी सब जानी । करिहौं तुम्हरे मनकी मानी ॥
अब पूरण तप भयो तुम्हारो । अन्तर इतो दूरि करि डारो ॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी । सब युवती मनमें हर्षानी ॥
तब सबहिन यह बात विचारी । अबतो टेक परे बनवारी ॥

दोहा--कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ छाँड़त नाहिं ॥
वसन बिना कैसे बनै, कौन भांति घरजाहिं ॥

सो०--चलौ लीजिये चीर, इनहींको हठ राखिकै ॥
मनमोहन बलबीर, जो कछु कहैं सो कीजिये ॥

यह विचार जल बाहर आई । बैठि गई तट अतिहिलजाई ॥
बार बार हरि निकट बुलावैं । त्यों त्यों अधिक लाज को पावैं ॥
कहत श्याम अम्बर अब दीजै । हाहा इतनो हठ नहिं कीजै ॥

१ सूर्य ।

बहत समीर शीत अति भारो। मानेंगी उपकार तुम्हारो ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे। हम सबकी पति हाथ तुम्हारे ॥
कहत श्याम यह तजौ सयानी। छांडहु लाज करहु मम बानी ॥
अपने बसन लेहु ह्यां आई। देहौं तुमको नन्द दुहाई ॥
आवहु सकल लाजको त्यागे। करहु शृँगार आय मो आगे ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी। करिहैं श्याम आपनी ठानी ॥
करकुच अंग ढांकि भईं ठाढी। वदन नवाय लाज अति बाढी ॥
गईं कदमतर हरिके पासा। कहति देहु अब हमको वासा ॥
हरि बोले यों बसन न पावो। हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो॥

दोहा–जो कहिहौ करिहैं सबै, हँसि बोलीं ब्रज बाम ॥
लैहैं दांव हमहूं कबहुँ, सुनौ श्याम अभिराम ॥
सो०–उभय कमल कर जोरि, सलेजसहास निहारि हरि ॥
मांगत सकल निहोरि, कहत देहु अब वसन प्रभु ॥

लखि युवतिनकी प्रीति कन्हाई। रीझे भक्तनके सुखदाई ॥
धन्य धन्य बोले गोपाला। निश्चय प्रीति करी तुम बाला ॥
देखि निरन्तर गोप कुमारी। दीन्हे बसन अभूषण डारी ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं। प्रेम प्रीतिके रस मति पागीं ॥
तब हँसि बोले कुंजविहारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ॥
अन्तर शोच दूरि करि डारो। मेरो कह्यो सत्य उर धारो ॥
शरद रात तुम आश पुरैहौं। अंकम भरि सबको उर लैहौं ॥
अब तप करि तुम मत तनुगारो। मैं तुमते क्षण होत न न्यारो ॥
करसों परश सबन सुख दीन्हो। बिरह ताप तनुको हरि लीन्हो ॥
बिदा करी हँसि नँदके लाला। निज निज सदन गईं ब्रजबाला ॥
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो। मन मन कहति कृष्ण बर पायो ॥
ब्रजवासी जनके सुखदाई। आये अपने सदन कन्हाई ॥
दोहा–इहि विधि ब्रज सुन्दरिनको, हित करि सुंदरश्याम ॥

१ लज्जायुक्त। २ ब्रजकीस्त्री।

ब्रज विलास बिलसत बिविध, सकल लोक अभिराम ॥
सो०-सुंदर घन सुखरास, सब विधि कारि सबके सुखद ॥
नित नव करत विलास, मुदित सकल ब्रज लोग लखि ॥

अथ वृन्दावन वर्णन लीला ॥

हरि लखि मात पिता सुख पावैं । बाल भाव बहु लाड लडावैं ॥
नवलकिशोर शुभगतनु श्यामा । निरखत मुदित सकल ब्रजवासा ॥
ग्वाल बाल सब सम१करि जानैं । सखा प्राण प्रीतम करि मानैं ॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं । क्रीडा करैं विविध ब्रजमाहीं ॥
इकदिन सोवत सदन२ कृपाला । आये द्वार बुलावन ग्वाला ॥
चलहु श्याम बन धेनु चरावन । यह सुनि जननी३ लगी जगावन ॥
उठहु तात मैया बलि जाई । टेरत ग्वाल बाल बल भाई ॥
बदन दिखाय सबन सुख देऊ । दँतवन करि कछु करहु कलेऊ ॥
भई बेर बनको नँदलाला । अब मति सोवहु मदनगोपाला ॥
देखनको छबि अति अतुराई । सखा द्वार सब टेर लगाई ॥
सोवतते हरि जागत नाहीं । सुनत बात आलस मन माहीं ॥
कबहूं वसन ढांपि मुख सोवैं । कबहुँ उघारि जननि तनु जोवैं ॥
खोलत नयन पलक झुकि आवैं । सो छबि निरखि मातु सुख पावैं ॥

दोहा-उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मन्द ॥
पटगहि पुनि पुनि फेर मुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द ॥
सो०-कबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे ॥
बनको भई अबार, गई गाय आगे निकसि ॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई । यशुमति जल झारी भरिलाई ॥
दुहुँ भैयन करवाय मुखारी४ । पोंछे मुख जननी निज सारी ॥
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे । एक थार दोउ सुत बैठारे ॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा । करत प्रात दोउ भ्रात कलेवा ॥
करत निकट बैठे मनमोदा । दृग सुख लूटत महरि यशोदा ॥

१ बराबरके । २ घरमें । ३ यशोदा । ४ दांतन ।

मात प्रेमते अति तृपताई । अँचवन कर जु उठे दोउ भाई ॥
द्वारे टेर उठ्यो इक ग्वाला । बन कहँ वेगि चलहु नँदलाला ॥
बल मोहन आवहु दोउ भैया । आगे निकसि गई हैं गैया ॥
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराई । कछु अँचयो कछु नहिं दोउ भाई॥
मुरली मुकुट लकुट पट लीन्हो । निकसि दौरि बनहीं मन दीन्हो॥
केतिक दूरि गई चलि गैया । ग्वालहि बूझत जात कन्हैया ॥
कछु वन पहुँची ह्वैहैं जाई । कछु मग मिलिहैं कुँवर कन्हाई॥

दोहा-वन पहुँचत सुरभी लई, बल मोहन दोउ धाय ॥
कहत सबन सों जात कित, हमहूं पहुँचे आय ॥

सो०-तुम आये अतुराय, जेंवत पर लखिके हमैं ॥
तुम सँग रहत बलाय, अब हम दूरि चरायहैं ॥

यह सुनि सखा धाय सब आये । हरिको अंकम भरि उर लाये ॥
तुमहौ सबहिनके सुखदाई । हमको तजि मति जाहु कन्हाई॥
आज कुमुद¹ बन चलहु चरावन । शीतल सुखदसघन अति पावन॥
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई । नीकी कही बात यह भाई ॥
अपनी अपनी गाय बुलावो । एक ठोर करि सबन चरावो ॥
यह सुनि ग्वाल सुरभि गण घेरत । लै लै नाम गाय सब टेरत ॥
धौरी धूमरि राती कबरी । पियरी गोरी गैनी कजरी ॥
खैरी फुलही रौंची चौरी । धूरी हमरी मुंडी भौरी ॥
लीली कपिली सुवरन जेती । लाखी निकही रतनी तेती ॥
ऐसे सुरभी टेरि बुलाई । सब मिलि चले कुमुद वन धाई ॥
तब बल कह्यो दूरि मति जाहू । नंद रिसैहैं अरु यशुदाहू ॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई । बोलि लिये सब सखा कन्हाई ॥

दोहा-कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुद बन जाय ॥
बुरो मानि हैं नंद सुनि, और यशोदा माय ॥

सो०-लावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ॥
सुरभी चरत अघाय, वंशीवट यमुना निकट ॥

१ कमोदवन ।

यह कहि श्याम चले अगुवाई । फेरी गाय ग्वाल सब धाई ॥
बृन्दावनहिं चले मनमोहन । हर्षित सखा बृन्द तव गोहन[1] ॥
करत कुलाहल आनँद भारी । पहुँचे बृन्दावन बनवारी ॥
सुरभीगण[2] चहुँदिशि बगराई । कहत सखा सब हर्ष बढ़ाई ॥
जादिन अघ हति श्याम सिधाये । ता दिनते या वन अब आये ॥
देखत वन सब भये सुखारी । बहत मनोहर त्रिविध[3] बयारी ॥
विटपनकी शोभा चित दीन्हे । देखत श्याम सखन सँग लीन्हे ॥
नव किसलयदल सुमन सुहाये । मनहुँ बसन्त शृँगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी । फलके भार रहीं नवडारी ॥
मनहुँ देखि श्यामहि सुखपाई । देत भेंट तरु शीश नवाई ॥
सुमन[4] भँवर गुंजत छबि पावैं । स्तुति मनहुँ मधुर सुर गावैं ॥
एक पांव ठाढे सब आगे । जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ॥

दोहा—बेलि विविध लपटीं ललित, फूलि रहीं बहुरंग ॥
शोभितसहित शृँगारजिमि, नारि पतिनके संग ॥

सो०—हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहुँ ॥
आनँद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुँ ॥

कुंज पुंज मंजुल सुखदाई । शीतल सुमन सुगंध सुहाई ॥
हरि विश्राम हेतु बन जानो । रचे विचित्र सदन बहु मानो ॥
बोलत हैं कल खग[5] बहुरङ्गा । कीर[6] कपोत[7] कोकिला भृंगा ॥
मनहुँ भेरि सब आनँद गावैं । जहँ तहँ बर्रही[8] नृत्य दिखावैं ॥
तरुदल खरक पवन गति साजैं । मधुर सुरन बाजन ज्यों बाजैं ॥
क्रीडत मर्कट[9] शुभगतिलीने । करत कला ज्यों नट परवीने ॥
मृग गण चितवत आनँद बाढ़े । मनहुँ तमाशगीर सब ठाढ़े ॥
पाय श्याम घनहित बनराई । करी मनहुँ आनंद बधाई ॥

---

१ संग । २ गौवनकेझुंड । ३ शीतल मंद सुगंधयुत । ४ फूल । ५ पंछी ।
६ तोता । ७ कबूतर । ८ मोर । ९ बंदर ।

वनशोभा कछु वरणि न जाई । ऋतु वसंत जहँ रहत सदाई ॥
जहां स्वभाव काल गुण नाहीं । वैरभाव नहिं खग मृग माहीं ॥
सदा एकरस परम प्रकाशी । परमसुखद आनँदकी राशी ॥
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन । कोमल विमल शुभग अति पावन

दोहा-शोभा वृन्दा विपिनकी, वरणि सकै अस कौन ॥
शेष महेश गणेश विधि[1], पार न पावत तौन ॥

सो०-महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धामकी ॥
जहँ नित रहत बिहार, परब्रह्म भगवान हरि ॥

देखि श्याम वन भये सुखारी । बैठे तरुतर[2] विपिनै[3] विहारी ॥
वृन्दावनकी करत बड़ाई । बलदाऊ सों कहत कन्हाई ॥
मैं यह वट देखत सुख पावत । वृन्दावनमोको अति भावत ॥
कामधेनु सुरतरु विसरावत । रमा[4] सहित वैकुंठ भुलावत ॥
यह यमुना तट यह बन यावत । ये सुरभी अति सुखद सुहावत ॥
यहसुख त्रिभुवनकितहुँनपावत। तातें मैं तनु धरि इत आवत ॥
दाऊजू तुम सचकर मानौं । यह वृन्दावन जडमति जानौं ॥
चितवनमें आनँदकी रासा । प्रेम भक्तिको यहां निवासा ॥
परमधाम मम परम सुहावन । पावनहूंते पावन[5] पावन ॥
जे तरु वृन्दावनके माहीं । कल्पवृक्ष तिनकी सरि नाहीं ॥
कल्पवृक्षके तरु जब जाई । तब मांगे वांछित फल पाई ॥
वृन्दावन तरु चितत जोई । प्रेम भक्ति मम पावत सोई ॥

दोहा-जाके वशमें रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग ॥
प्रेम भक्तिसो लहत नर, वृन्दावन अनुराग ॥

सो०-श्रीमुख वरण्यो श्याम, श्रीवृन्दावनकोमहत[6] ॥
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके वचन वर ॥

सखा वृन्द सुनि श्रीमुख वानी । प्रेम मगन तनु दशा भुलानी ॥
चितवतहरिमुखपलकविसारी। जिमि चकोरगण शशिहि निहारी

१ ब्रह्मा । २वृक्ष । ३वृन्दावनविहारी ।४लक्ष्मी। ५पवित्रतेहूपवित्र। ६माहात्म्य ।

कहतचकितसबअतिसुखपावत।निज लीला हरि प्रगट जनावत ॥
पुनि पुनिपुलक कहत शिरनाई। सुनहु श्यामघन कुँवर कन्हाई ॥
बार बार तुमको कर जोरैं। हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरैं ॥
जहां जहां तुम तनुधरि आवो। तहां तहां जनि चरण छुड़ावो ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया। ब्रजते तुम्हैं नटारौं भैया ॥
तुम मेरे मनको अति भावत। तुमते मैं बहुतै सुख पावत ॥
या ब्रजसम त्रिभुवन कहुँ नाहीं। तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं ॥
मैं तुम हेतु देह यह धारी। तुमते ब्रजलीला विस्तारी ॥
है यह ब्रज मोको अति प्यारो। ताते कबहूं होत न न्यारो ॥
ऐसे हरि ग्वालनके माहीं। गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं ॥

दोहा–मधुर वचन सुनि श्यामके, सखा वृन्द सुखपाय ॥
प्रेम पुलकितनु मुदित मन, रहे सबै गहि पाय ॥
सो०-धनि धनि धनि तुम श्याम,धनि ब्रज धनि वृन्दा विपिन
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अज्ञ न जानहीं ॥

सुनहु श्यामघन नंददुलारे। तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे ॥
दुर्ल्लभ यह हरि संग तुम्हारो। कबधौं फेरि गोप तनु धारो ॥
नाजानिये बहुरि ब्रजनाथा। कब तुम फिरिहौ सुर मुनि साथा॥
कब तुम छाक छीनिकैखैहौ। कबधौं फिरि ऐसे सुख दैहौ ॥
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी। अब इक विनती सुनहु हमारी ॥
सुन्दर मुरली नेक बजावो। अधरसुधारस श्रवणन प्यावो ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह दिवावैं। मुरलीधुनि सुनि हम सुखपावैं ॥
तुम्हरे मुख यह बाजत नीकी। हम सबकी जीवन है जीकी ॥
सुनत सखनकी कोमल बानी। प्रेम सुधारस सों लपटानी ॥
गुण गम्भीर गोपाल कृपाला। भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्त सुखदाई। चितये कमलनयन समुदाई ॥
करतेलकुट निकट धरि दीनो। पाछे मुरलीको गहि लीनो ॥

१ मीठे। २ मूर्ख।

दोहा–पकरि दुहूं कर अधर धर, मधुर मुरलि धुनिगान ॥
मोहिलियो चर अचरनभ[1], जल थल श्यामसुजान॥
सो०–भई थकित[2] गति पौन, यमुना जल लीन्ही शयन[3] ॥
ह्वै गये खग मृग मौन[4], रहे जहां तहँ चित्रसे ॥
उपजावत गावत गति सुंदर। राग रागिनी ताल विविधवर ॥
सखा वृन्द सुनि तनमन वारैं। निरखत मुख छबि पलकविसारैं॥
चलत नयन भ्रुकुटी पुट नासा। करपल्लव मुरली सुरश्वासा ॥
मानहुँ निरतक भाव बतावैं। शुभगति नायक सैन सिखावैं ॥
कुंचित अलक[5] वदन छबि देई। मनहुँ कमल रस अलिगण[6] लेई ॥
कुंडल झलक कपोलन माहीं। मनहु सुधारस मँकर[7] भ्रमाहीं ॥
दशनदमकमोतिन लर ग्रीवा। मनहु सकल शोभाकी सीवा ॥
तिलक विचित्र भालछबि छाजै। मनहु महा छबि दशन बिराजै ॥
चमकत मोर चंद्रिका चारू। मनहु सकल शृंगार शृँगारू ॥
श्याम गात उर गजमणि माला। सँग शोभित वनमाल विशाला ॥
मरकत[9] गिरि मनो सुरसरि[10]धारा। बैठी पंगति कीर[11] किनारा ॥
कटि तटपीत तड़ित[12] दुति हारी। पद पंकज नूपुर रुचिकारी ॥
दोहा–ग्रीवा लटकनमुरलिके पर, शोभित छबिसमुदाय ॥
प्रेम मगन निरखत मुदित, गोप बाल सुखपाय ॥
सो०–सुन्दर श्याम सुजान, देत परमसुख सखनको ॥
वारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब ॥
रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा। लेत मुरलिमें सबको नामा ॥
हँसत ग्वाल सब दैकर ताला। लेत हमारो नाम गोपाला ॥
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो। ऐसे हमको गाय सुनावो ॥
हँसि मुरली तिनके कर दीन्हो। अधरनधर अमृत रस लीन्हो ॥
लैलै निज कर सकल बजावत। हरिके स्वरको रूप न पावत ॥

१ आकाश । २ पवनचलने सों रहिगयो । ३ बहिबेतें रहिगयो । ४ चुप-ह्वैगये । ५ घुंघरवारी अलक । ६ भौंरनके समूह । ७ मगर । ८ नार । ९ पन्नाको पर्वत । १० गंगा । ११ तोता । १२ बिजुली ।

आस पास सोहत सब बालक । मधि प्रभु प्रीति रीतिके पालक ॥
हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं । सब मिलि प्रेमानंद बढ़ावैं ॥
जैसे श्री मुरलीधर गायो । काहू पै सो रूप न आयो ॥
हँसि हँसि कहत परस्पर भाई । हरिकी समको सकै बजाई ॥
चतुरानन[1] पंचानन[2] ध्यावैं । सहसानन[3] नवनित[4] गुण गावैं ॥
सुरनर मुनि कोउ पार न पावैं । सो ग्वालन सँग वेणु बजावैं ॥
ब्रजवासी जनको प्रतिपाला । भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥

दोहा–कारण करण अनंत गुण, निर्गम नेत जिहि गाव ॥
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्ति प्रभाव ॥
सो०–वृन्दावन की रेनु, ब्रह्मादिक वांछित सदा ॥
जहां श्याम सुखदेनु, ग्वालन सँग चारत सुरभि॥

अथ द्विजपत्नीयाचन लीला वर्णन ॥

विहरत वृन्दावन बनवारी । विविध भांति लीला अनुसारी ॥
कबहूं सखन संग मिलि गावैं । कबहूं मुरली मधुर बजावैं ॥
कबहूं गैयन घेरत धाई । कबहूं यमुनाके तट जाई ॥
करत कुलाहल आनँद भारी । देत दिवावत रसकी गारी ॥
ऐसे लीला करत अपारा । भये क्षुधारत[5] गोपकुमारा ॥
कहत भये तब हरिसों जाई । हमको क्षुधा लगी अधिकाई ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी । अपने मन यह बात विचारी ॥
सुनि सुनि मेरे गुण गण गाना । करत रहत द्विजतिय मन ध्याना॥
तिनको दरशन आज दिखाऊं । तिनके मनकी ताप नशाऊं ॥
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई । यज्ञ करत ह्यां द्विजसमुदाई[6] ॥
तिनके निकट जाउ तुम भाई । प्रथम प्रणाम कीजियो जाई ॥
कहियो हमको कृष्ण पठायो । तुमपै भोजन मांगन आयो ॥
दोहा–यह सुनि ग्वाल गये तहां, जहां विप्रसमुदाय[7] ॥

१ ब्रह्मा । २ महादेव । ३ शेष । ४ वेद । ५ भूखे । ६ माथुरब्राह्मण । ७ अनेक ब्राह्मण ।

यज्ञ करत अहंमित[1] लिये, विद्याको बल पाय ॥
सो०-ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर[2] जोरिकै ॥
हमैं पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू ॥
वनमें राम कृष्ण दोउ भैया। आये इतहि चरावन गैया ॥
वे कछु आज भयेहैं भूखे। यह सुनि विप्र ह्वैगये रूखे ॥
कह्यो यज्ञहित करी रसोई। अहिरन पहिले देय न कोई ॥
यह सुनि ग्वाल सकल फिरि आये। हरिसों तिनके वचन सुनाये ॥
सुनि हलधरतनचितै कन्हाई। बोले वचन मन्द मुसुकाई ॥
येद्विज धर्म कर्म लपटाने। विना भक्ति मोको नहिं जाने ॥
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी। जाउ जहां इनकी सब नारी ॥
उनको है दृढ़ भक्ति हमारी। वे मानैंगी कही तुम्हारी ॥
उनसों भोजन मांगहु जाई। कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तब द्विज नारिन ढिग ये आये। हाथ जोरि तिनके शिरनाये ॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हैया। वनमें भूखेहैं दोउ भैया ॥
मांग्योहै कछु भोजन तुमसों। आज्ञा देहु सो कहिये उनसों ॥
दोहा-ग्वालनके सुनि वचन सब, हर्षि उठीं द्विजवाम ॥
कहत हमारो भाग्य धनि, भोजन मांग्यो श्याम ॥
सो०-करत रहीं नित ध्यान, सुनि सुनि जिनके गुण श्रवण॥
सफल जन्म निज जान, तिनको भोजन लै चलीं॥
षट्रसके व्यंजन विधि नाना। कोमल भांति अमित पकवाना ॥
खीर खांड सिखरन दधिन्यारो। माखन लियो श्यामको प्यारो ॥
कहँलग वरणों कहौं प्रकारा। प्रेम सहित लीन्हे भरि थारा ॥
बहुते ग्वालनके करदीने। बहुते अपने शिर धरि लीने ॥
नयनन दरश लालसा बाढी। उपजी चाह हृदय अति गाढी ॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी। देखनको प्रभु गोप विहारी ॥
ग्वालन सों पूंछत यह बाता। कितहैं हरि जनके सुखदाता ॥

१ अहंकार। २ हाथ।

जिनके पुरुष हते घरमाहीं। तिनको जान देत सो नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई। लोकलाज तनु दशा भुलाई ॥
तिनसों कहत भई ते नारी। हमको श्रीगोपाल हँकारी ॥
भोजन मांग्यो है हम पाहीं। तिनहिं देन ग्वालन सँग जाहीं ॥
तिनको दरश देखि सुख पैहैं। बहुरि तिहारे घर हम ऐहैं ॥

दोहा–यह सुनि पति अति क्रोध करि, तिनहिं दिखायो त्रास
कहत भई तुम बावरी, बैठति नाहिं अवास ॥

सो०–जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ॥
तिनहिं न भय यम काल, कौन भांति रोके रुकाहिं॥

हरिपै हमैं जान पिय देहू। कहारोंकि अपयश शिर लेहू ॥
देखन देहु नंदके लालहि। त्रिभुवन पति प्रभु मदन गोपालहि॥
इतनी बात मानि पिय लीजै। हा हा हमैं दान यह दीजै ॥
वेहैं यज्ञपुरुष भगवाना। अन्तर्यामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं बिसारी। कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहँ लगि कहौं बात समुझाई। जात दरशकी अवधि बिहाई ॥
जो तुम स्वामी जानत नाहीं। तो हम सत्य कहैं तुम पाहीं ॥
मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि। करिहो कहा रोकिकै खालेहि ॥
लेहुसँभारि देह यह सारी। जासों पिय तुम कहत हमारी ॥
को राखै इतने जंजालहि। मिलिहैं प्राण यशोदा लालहि ॥
जो निश्चय नहिं श्याम सनेहा। तौ यह कौन काजकी देहा ॥
सब सखियनके आगे जाई। देखोंगी छबि कुँवर कन्हाई ॥

दोहा–ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निवारि ॥
पहुँची सबते प्रथमहीं, जो रोकी ब्रजनारि ॥

सो०–कठिन प्रेमकी पंथ, तहां नेमकी गमनहीं ॥
कहत सकल सदग्रंथ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥

---

१ घर। २ घुराई। ३ बेए। ४ देइ। ५ गम्यनहीं।

ऐसे भोजनलै द्विज बाला। पहुँची वन जहँ मोहन लाला॥
नटवर भेष चित्र तनु कीने। ठाढे सखा संग भुजदीने॥
मोर मुकुट वैजन्ती माला। करमुरली दृग नयन विशाला॥
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं। कोटिकामछबि पटतर नाहीं॥
मुख मृदुहँसिनि लसनि पटपीरो। निरखत नयन ताप भयो सीरो॥
भोजन लै हरि आगे राखे। अपने भाग्य धन्य करि भाखे॥
तिन्हैं देखि हरि मन सुख मान्यो। वचनन करि तिनको सन्मान्यो॥
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई। गृहपति तजि तुम कित इत आई॥
कहियत विप्र वेद अधिकारी। हौ तिनकी तुम पतिव्रतनारी॥
वे सब यज्ञ करत वन माहीं। तुमबिन यज्ञ होय है नाहीं॥
यह तुम कछू भलो नहिं कीन्हो। पतिको कह्यो मानि नहिं लीन्हो॥
पति आयसु तिय पालै जोई। चारि पदारथ पावै सोई॥

दोहा–पति देवता तुतीय कहँ, वेद वचन परमान॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ, ताते यह जियजान॥

सो०–सुनि हरि वचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद॥
द्विजतिय परम सुजान, बोलीं सब कर जोरिकै॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी। तुमहीं सकल जगतके स्वामी॥
यज्ञपुरुष तुमहीं सुखधामा। तुमही सबके पूरण कामा॥
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावैं। तुमते चारि पदारथ पावैं॥
सकल धर्म ते शरण तुम्हारी। है सब जीवनको सुखकारी॥
यह हम सुनी पतिन मुख बानी। कहत वेद इतिहास बखानी॥
ताते शरण तुम्हारी आई। यह दूषण नहिं हमैं गुसाई॥
तव मायावश सकल भुलाने। ताते पतिन न तुम पहिंचाने॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै। हमको शरण आपनी दीजै॥
चारि पदारथ हूते भारो। है प्रभुदरशन शरण तुम्हारो॥
ताते नहीं निरदार कीजै। अपने चरण शरण रख लीजै॥
सुनि प्रभु द्विजपत्नी की बानी। भये प्रसन्न भक्त सुखदानी॥

१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो । हितकरि तिनको भोजनराख्यो ॥

दोहा—दै अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घरजाहु ॥
ह्वै हैं तुम्हरे दरशते, शुद्ध तुम्हारे नाहु ॥

सो०—हरि आयसु धरिमाथ, पाय भक्ति वरदान वर ॥
राखि हृदय ब्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजातिय सदन ॥

नँद नन्दनकी करत बड़ाई । द्विजपत्नी सब घरको आई ॥
देखत तिन्हैं विप्र समुदाई । भये पुनीत विमल मति पाई ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी । आप कहत हम अति अज्ञानी ॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीन्हो । तिन मांग्यो भोजन नहिं दीन्हो ॥
हम विद्या अभिमान भुलाने । अविगतिकी गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभुजन सुखदाई । भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं । बारबार यह कहि पछिताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशय बड़भागी । कृष्णचरण पङ्कज अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको । देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे बहु विधि तियन सराहीं । आदर करि लीन्ही घरमाहीं ॥
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावै । सो नर नारि अभयपद पावै ॥
नरनारी कछु नाहिं विचारा । प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥

दोहा—भाव तियनको धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ॥
सखन सहित भोजन करत, रुचि सों प्रीति समेत ॥

सो०—ब्रह्मलोक लौं शोर, ग्वालनके सँग खात हरि ॥
छीनि छीनिकै कौर, करत परस्पर हासरस ॥

अति हित भोजन तहँ हरि कीनो । सखा वृन्दको अति सुख दीनो ॥
वनमें फिरत चरावत गैयां । बैठे आय कदमकी छैयां ॥
भये सखा सिगरे इकठाहीं । गैयां बगर रहीं वनमाहीं ॥
दुपहर घाम जान मनमाहीं । लागे चलन सघन वनछाहीं ॥
बैठे ग्वालबाल चहुँ डरियां । आगे धरीं दूधकी घरियां ॥

१ पति । २ छीनको ।

मध्य श्याम सुन्दर नँदनन्दा । उडुगणमें[1] जिमि पूरणचन्दा ॥
मोर मुकुट कटि कछनी काछे । कोटि कामकी छबिको आछे ॥
कबहूं मुरली मधुर बजावैं । कबहुँ सखन मिलि सारँग गावैं ॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं । कोऊ टटकारी उच्चरहीं ॥
करत केलि ऐसे बन माहीं । देखि देखि सुरवृन्द[2] सिहाहीं ॥
कोऊ ताल बजावत नीके । उपजावत कोउ आनँद जीके ॥
कहत धन्य ये ब्रजकी बाला । विहरत जिन सँग कृष्ण कृपाला ॥

दोहा—धन्य विटप धनि भूमि यह, धनि वृन्दावन चन्द ॥
धनि ब्रज कहि वर्षैं सुमन, रीझ रीझ सुरवृन्द ॥
सो०—मन मन देव सिहाहिं, वन विहार हरिको निरखि ॥
श्रीवृन्दावन माहिं, हम न भये द्रुमलता तृण ॥

श्रीदामा तब कह्यो बुझाई । खेलहिंमें सब रहे भुलाई ॥
गैयां कितहिं चरति को जाने । यह सुनिकै सब खेल भुलाने ॥
जित तित हेरनँको[3] उठि धाये । गैयां जाय घेरि लै आये ॥
जे सुरभी आई नहिं जानी । चरत सघन वन मांझ सयानी ॥
तिनको तरु चढि कान्ह बुलाई । मुरली टेर सुनत उठि धाई ॥
ऐसी गैयां श्याम सधाई । मुरली सुनि सब हरिपै आई ॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं । हूंहूं करि सब हरिपै आवैं ॥
तिनपर कर फेरत मनमोहन । पीतांबर सों झारत छोहन ॥
करत प्यार तिनपर वनमाली । हस्तकमल की सब प्रतिपाली ॥
हरिको निरखि गाय सुख पावैं । तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं ॥
जब हरि गैयन करसों परसैं । लखि लखि कामधेनु मन तरसैं ॥
कहत कहा जो कामद कीनो । हमको विधि ब्रज जन्म न दीनो ॥

दोहा—धनि धनि ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवननाथ ॥
झारत पोंछत दुहत नित, हितकरि अपने हाथ ॥
सो०—मनहीं मन पछिताहिं, कामधेनु ब्रज धेनु लैखि[4] ॥

१ तारागणनमें । २ देवगण । ३ ढूढवेका । ४ देखकर ।

हम न भईं ब्रज माहिं, हरिपद पंकज परसती ॥
ऐसी लीला करत अनेका । वनमें ललित एकते एका ॥
वृन्दावन सब दिवस बितायो । संध्या समय निकट जब आयो ॥
तब हरि कह्यो चलो अब गेहू । गैयां सब आगे करि लेहू ॥
पहुँची सांझ आय नियराई । वनमें करहु अबेर न भाई ॥
यह सुनि गाय सबन अगुवाई । भली बात यह कही कन्हाई ॥
वनते निकरि चले सब ग्वाला । ब्रज आवत नटवर गोपाला ॥
सुरभी वृन्द गोप बालक सँग । अति आनँद गावत नाना रँग ॥
अधर ऽनूप मुरली सुर कौरी । ऊँचे सुरन बजावत गौरी ॥
सुन्दर श्रवण सुनत ब्रज धाई । गृहकारजातियें तजि सब आई ॥
कहत परस्पर मोहन आवत । देखि देखि छवि अति सुख पावत॥
पूरण कला उदित शशि जैसे । कुमुदिनि सर फूलीं तिय तैसे ॥
नयन चकोर रहे टकलाई । दिवस विरहकी ताप नशाई ॥
दोहा-प्रेममगन आनंद अति, कहत सकल ब्रज बाम ॥
देखहु सखि यशुमति सुवन, शोभित अति अभिराम ॥
सो०-श्यामल तनु पटपीत, जलज[2] माल बर्ही[3] मुकुट ॥
लई मनों इन जीत, घनदामिनि बग धनुष छबि ॥
भृकुटि बिकट दृग चंचलताई । अति छबि देति वरणि नहिं जाई॥
धनुष देखि बिच खंजन जानों । उडन करत डारि उडत न मानो॥
प्रफुलित नयन शरद अंबुजसे । मनोकुँडलि रविकरके परसे॥
गोपद रज पराग छवि छाई । तामधि अलि बैठ्यो जनु आई ॥
एक कहत देखहु वह शोभा । अति सुख देत लसत मन लोभा ॥
कमलवदन मुरली रस लेई । कुटिल अलक ऐसे छवि देई ॥
मानो अलिगर्ण साजी सैना । सहि न सकत चाहत निजऐना॥
अधर सुधा लगि अति दुखपाई। मुरली सों मनो करत लड़ाई ॥

१ ब्रजगोपिका । २ कमलमाल । ३ मोरमुकुट । ४ कमल । ५ भौंरा ।
६ भँवरोंके झुंड ।

शोभितनाशा परम सोहाई। तामें सखि उपमा यह पाई॥
मनहुँ अनंगे सहायक आयो। तिलप्रसून शर ताहि चलायो॥
सुनि यह युक्ति सकल हर्षाई। निरखत हरि मुख छबि सुखपाई॥
कृपादृष्टि हरि सबन निहारी। आये ब्रज जन मन सुखकारी॥

दोहा—कहत मुदित मन युवतिजन, धनि धनि सखि वे मोर॥
जिनके पांखनको मुकुट, कीन्हो नंदकिशोर॥

सो०—धनि धनि सखि वे बांस, जाकी मुरली अधर धरि॥
हरि पूरत निज सांस, को पुनीत ताके सदृश॥

निज निज सदन गये सब ग्वाला। आये घर हलधर गोपाला॥
देखि दुहूं मातन सुखपायो। हरषि दुहुनको कण्ठ लगायो॥
काहे आज अबार लगाई। यह कहि बार बार बलि जाई॥
रोहिणि सों कह यशुमति मैया। भूखे ह्वैहैं दोऊ भैया॥
मैं दोउनको देत न्हवाई। तुम भोजनको करहु चढाई॥
निकट लये मुरली कर लीन्ही। हरि करते लकुटी धरि दीन्ही॥
नीलाम्बर पीताम्बर लीन्हो। मुकुट उतारि श्याम तब दीन्हो॥
प्राण समान यशोमति जानी। धर्यो सँभारि सदन नँदरानी॥
छोरति अँग भूषण महतारी। मुक्तमाल बनमाल उतारी॥
कटि किंकिणि अंगद भुज छोरै। निरखि गौत आनंदन औरै॥
पट लै दोउनके अँग झारे। उरलगाय लीन्हे अति प्यारे॥
तुम दोउ मेरे गाय चरैया। और नकोऊ टहल करैया॥

दोहा—लीन्हे तुमहिं बिसाहि मैं, तब अति रहे नन्हाय॥
सुनि हँसि हरि बलसों कहत, कहत झूठही माय॥

सो०—यह तो समुझि न जाय, सांच झूंठकी बात कछु॥
यशुमति लेत बुलाय, मैं चोरी हँसि हँसि कहत॥

सुमँनासुत अंगन परसाई। तपत तरणिको जल लै आई॥

१ नासिका। २ कामदेव। ३ तिलपुष्पवत्बाण। ४ बदन। ५ सुगंधितपुष्पों-का तेल।

परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये । सरसवसनतनु पोंछि सुहाये ॥
षट्रस भोजन आय जिमाये । यशुमतिके सुख जायँ नगाये ॥
शीतल जल कपूर रस रचयो । लैझारी दुहुँ भैयन अँचयो ॥
भोर भयो सुख सोय उठे जब । पीरे पान दये जननी तब ॥
बीराखात मुदित दोउ भाई । ब्रजवासिन जूठनि सब पाई ॥
यशुमतिके सुख कौन गनावै । शारदहू कहि पार न पावै ॥
धन्य नन्द धनि यशुमति माता । महिमा नाहिं कहिसकै विधाता ॥
ब्रह्म सनातन हैं प्रभु जोई । जिनके पुत्र कहावत सोई ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी । तीनिलोक पति अन्तर्यामी ॥
विश्वम्भर निजनाम कहावैं । ताहि यशोमति माय खवावैं ॥
रात सुवावैं प्रात जगावैं । बालक ज्यों फुसलाय लड़ावैं ॥
दोहा-रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठौ याम ॥
महरि महरके प्राणधन, मोहन सुंदर श्याम ॥
सो०-हरि क्षण बिसरत नाहिं, ब्रजके नरनारी जिनहिं ॥
मगन प्रेम मन माहिं, निशिदिन जात न जानहीं ॥

अथ गोवर्द्धनलीला ॥

कृष्ण प्रेम ब्रज लोग समाने । देव पितर सब लोक भुलाने ॥
कार्तिक शुदि परिवा जब होई । इंद्रहि पूजत ब्रज सब कोई ॥
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई । सबके मनमें ध्यान कन्हाई ॥
सो तिथि अति समीप जब आई । तब यशुमतिके उर सुधि आई ॥
कहत नंदसों नन्दकिरानी । सुरपति पूजा तुमहिं भुलानी ॥
जाकी कृपा वसत ब्रज माहीं । एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं ॥
जाकी कृपा दूध दधि गाई । सहस मथानी मथत सदाई ॥
जाकी कृपा पुत्र हम पाये । जासु कृपा सब विघ्न नशाये ॥
भई सकल ब्रज मांझ बड़ाई । कुशल रहौ बलराम कन्हाई ॥
सुरपतिहैं कुलदेव हमारे । गोप गाय ब्रजके रखवारे ॥

१ श्रेष्ठवस्त्र । २ निकट । ३ इन्द्र ।

तिनकी तुम सब सुरति भुलाई। रहे दिवस पांचक अब आई ॥
कहो सकल गोपनके राई। इन्द्र यज्ञकी करो चेढ़ाई ॥
दोहा-भली दिवाई मोहिं सुधि, कहत महरिसों नंद ॥
भूलि गये हम देवको, काज मोहवश मंद ॥
सो०-हाथ जोरि नंदराय, विनय करत सुररायसों ॥
तुमको गयो भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु ॥
तबहिं नन्द उपनन्द बुलाये। श्रीवृषभानु सहित सब आये ॥
सबको देखि नन्द सुख पायो। महरि महर कहि शीश नवायो ॥
अति आदर सबहींको कीन्हों। सादर सबको बैठक दीन्हों ॥
मनहीं मन सब शोध कराहीं। कंस कछू मांग्यो तौ नाहीं ॥
राज अंश उनको जो होई। बिन मांगे हम दीन्हो सोई ॥
बूझत नंदहि सब सकुचाये। कौन काज हम सबन बुलाये ॥
तबहिं नन्द सबको समझायो। मैं तुमको यहि काज बुलायो ॥
सुरपति पूजाके दिन आये। सो तुम सबहिन मिलि बिसराये॥
मैंहूं राज काज लपटानो। निशिदिन लोभहिं मांझ भुलानो॥
इन्द्र यज्ञकी सुरति भुलानी। अति समीप दिन पहुँचो आनी ॥
ताते अब सब करो चढ़ाई। इन्द्रयज्ञ कीजे सुखदाई ॥
इन्द्रहिको हम सदा मनावैं। तिनहीं ते ब्रज जन सुख पावैं ॥
दोहा-यह सुनि मन हर्षे सबै, देवकाज जिय जान ॥
हम सब भूले सुरपतिहिं, मन लागे पछितान ॥
सो०-भली करी नँदराय, तुम हमको दीन्ही सुरति ॥
सुरपतिको शिरनाय, क्षमा करावत पाप सब ॥
बिदाहोय सब गोप सिधाये। घर घर बाजन लगे बधाये ॥
पूजाकी विधि करत सबै मिलि। जिहि जिहि भांति सदा आई चलि
अमित भांति पकवान मिठाई। होत बरनि घर वरणि न जाई ॥
नन्द महर घर बजत बधाई। गावत मंगल अति हर्षाई ॥

१ तयारी। २ अनेकप्रकार।

नेवज करत यशोदा आतुर। आठौ सिद्धि धरहिं अति चातुर॥
मैदाके अनेक पकवाना। बेसनके बहु करत विधाना॥
घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण। मिश्रीकरत पाकको चूरण॥
विविध भांति पकवान मिठाई। कहँ लगि नाम कहौं सब गाई॥
और नारि ब्रजकी सँग लागी। घृतपक करत सबै अनुरागी॥
जहां तहां कहुँ चढ़ी कढाई। यशुमति सबन सराहत जाई॥
जो सामा मांगति हैं जोई। रोहिणि ताहि देतिहै सोई॥
महरि करति रचि और निहारे। धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे॥

दोहा–सैंति सैंति अति नेमसों, धरति अछुते[1] जात॥
श्याम कहूं परसैं नहीं, यह मनमाहिं डरात॥

सो०–शंक करत मनमाहिं, सुरपति पूजा जानि जिय॥
यशुमति जानति नाहिं, सब देवनके देव हरि॥

खेलत ते सन्तन सुखदाई। भीतर आये कुँवर कन्हाई॥
जननी कहति इहां जनि आवै। लरिकनको यह देव डरावै॥
रहे ठिठुकि आंगनहिं डराई। मनहीं मन हँसि कहत कन्हाई॥
मैयारी मोहिं देव डिखैहै। इतनो भोजन वह सब खैहै॥
यह सुनि खीझि कहतिहै मैया। ऐसी बात न कहौ कन्हैया॥
जोरि जोरि कर देव मनावै। बालकको अपराध क्षमावै॥
बाहर चले श्याम अनखाई। युवति कहैं हरि गये रिसाई॥
जान देहु हरि अबहिं अयाने। देवकाज बालक कहँ जाने॥
छुइहै कहूं श्याम यह भोजन। उनकी पूजा जानै को जन॥
और नहीं हम काहू जानैं। कैसुरपति कै गोधन मानैं॥
यह कहि कहि इन्द्रहि शिर नावैं। राम श्यामकी कुशल मनावैं॥
और देव नहिं तुमहि सरीशा[2]। कह नहिं कृपा करी सुरईशा॥

दोहा–ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति विधान॥
द्वारे बैठे नंद जहँ, गये तहां को कान्ह॥

---

१ छुवेंनहीं। २ समान।

सो०-जुरे नंद ढिग आय, ब्रजके जे उपनंद सब ॥
बैठे अति सुखपाय, करत बात विधि यज्ञकी ॥

दीप मालिका रचि रचि साजत। पुहुप[1] माल मण्डली बिराजत ॥
ढोल निशान बाजने बाजैं। मुदित ग्वालगण जित तित राजैं ॥
गैयन चित्र विचित्र बनावैं। अंगन आभूषण पहिरावैं ॥
सात वर्षके कुँवर कन्हाई। खेलत मन आनंद बढाई ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं। मंगल गान मुदित मनगावैं ॥
सथिया रचि पुनि थापहिं हाथा। पूजा देखि हँसे ब्रज नाथा ॥
मो आगे सुरपतिकी पूजा। मोते और देव को दूजा ॥
ब्रजवासी मोको नहिं जानैं। मो अच्छत सुरपतिको मानैं ॥
अब यह मेटौं यज्ञ बिहाने। लीन्हो भाग बहुतदिन याने ॥
ब्रजवासिनपै आप पुजाऊं। गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊं ॥
यह विचार मनमें ठहराई। गये नन्द ढिग कुँवर कन्हाई ॥
हर्षि नन्द कनियां[3] पौढाये। बदन चूमि उरसों लपटाये ॥

दोहा-तब हरि बोले नन्दसों, मधुर मन्द मुसकाय ॥
करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
सो०-कौन देव सो आहि, काहेको पूजत तिन्हैं ॥
मैं नहिं जानत ताहि, कहौ मोहिं समुझाय सब ॥

नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई। इन्द्र सकल देवन को राई ॥
तिनको पूजत गोप सदाई। कुलमें यहै रीति चलि आई ॥
ताते तिन्हैं पूजियत ताता। जाते कुशल रहौ दोउ भ्राता ॥
यापूजाते सुरपति हरषैं। ह्वै प्रसन्न तब जल वे बरषैं ॥
तृण अनाज उपजत है जाते। गाय गोप सुख पावत ताते ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजै। जो गोधन धन कबहुँ नछीजै ॥
तब हरि कह्यो सुनो नँद ताता। ऐसे तुम जु कही यह बाता ॥
जहां इन्द्र पूजत नहिं प्राणी। तहां कहा वर्षत नहिं पानी ॥

१ पुष्पमाल। २ प्रसन्न। ३ गोद। ४ राजा।

जब हरि ऐसे वचनसुनायो। तब नन्दहिं उत्तर नाहिं आयो॥
सुनि हरिवचन रहे सकुचाई। मनहिं कहत चतुरङ्ग कन्हाई॥
है बालक अबहीं अति नान्हा। देव कार्य कहँ जानै कान्हा॥
तब चुचकार कह्यो नँदराई। सदन जाउ तुम कुँवर कन्हाई॥
दोहा-ऐसे में जिन जाहु कहुँ, भीड़ बड़ी है तात॥
को जानै किहि भावको, कित धौं आवत जात॥
सो०-सोय रहौ गोपाल, मेरे पलँगा जाय तुम॥
मैंहूं आवत लाल, पाछे ते तुम्हरे निकट॥
तब हरि मन इक बुद्धि उपाई। बैठे ओर महरि ढिग़जाई॥
तिनको हरि यों कहि समुझायो। आज मोहिं सपनो इक आयो॥
पुरुष पुनीत एक अतिचारू। चार भुजा तनु शुभग शृंगारू॥
तिन मोसों यों कह्यो बुझाई। इन्द्रहिपूजे कहा बड़ाई॥
मैं तुमको इक देव बताऊं। गिरि गोवर्द्धन प्रगट दिखाऊं॥
यह पूजा तुम इनहिं चढ़ावो। जाते मुँह मांगे फल पावो॥
तुम आगे भोजन वह खैहै। प्रगट आपनो रूप दिखैहै॥
चार पदारथके ये दाता। अन धन गोधनकेतिक बाता॥
ऐसे देव छांडि घरमाहीं। तुम पूजत सुरपतिहिं वृथाहीं॥
कोटि इन्द्र क्षणमें वै मारैं। क्षणहीमें पुनि कोटिसवाँरैं॥
गोवर्द्धन सम देव न दूजा। करहु जाय उनहींकी पूजा॥
ताते मो मनमें यह आई। पूजहु गोवर्द्धन सब जाई॥
दोहा-चकित गोप सब वचन सुनि, कहत अकथ यह बात॥
सुने न अबलौं देव कहुँ, प्रगट होयके खात॥
सो०-सुनी बात यह नंद, शोचत सब उपनंद मिलि॥
कहा कहत नँदनंद, समझ परत नहिं स्वप्न यह॥
सुनि यह बात सबन ब्रजपाई। देख्यो ऐसो स्वप्न कन्हाई॥
सुरपति पूजा देत मिटाई। गोवर्द्धनकी करत बड़ाई॥
कोऊ कहत कान्हकहै सांची। कोऊ कहै बात यह कांची॥
बालक जानै कहा पुजाई। कोऊ कहत कहै को भाई॥
कोऊ इन्द्रहि कहत सकाने। हमतो कछु यह बात नजाने॥

१ घर। २ पवित्र। ३ सुंदर। ४ डरपे।

हलधर कहत सुनो ब्रजवासी । को महिमा जानत अविनाशी ॥
इनको बालक करि मति जानो । जो हरिकह्यो सत्य करि मानो ॥
नन्द निकट जो गोप सयाने । हरिको बलप्रताप सब जाने ॥
कहत नन्दसों ते सुखपाई । कीजै सोइ जो कहत कन्हाई ॥
कहत नन्द तब सबन सुनाई । मेरे हू मनमें यह आई ॥
हरिको स्वप्न झूंठ नहिं होई । है प्रतीति मेरे मन सोई ॥
कालीको स्वप्न हरि देखो । भयो प्रातही तासु विशेषो ॥
दोहा–ताते सोई कीजिये, कान्ह कहैं जोइ बात ॥
सब ब्रजबासी पूजिये, गोवर्द्धन चलि प्रात ॥
सो०–यहै मंत्र ठहराय, बूझत हरिसों हर्षि सब ॥
कहौ कान्ह समझाय, कौन भांति गिरि पूजिये ॥
हर्षिकान्ह तब सबन बुलायो । इन्द्रयज्ञ हित तुम जु बनायो ॥
बहु व्यंजन पकवान मिठाई । सो सब शकटनलेहु भराई ॥
नाचत गावत सहित हुलासा । चलहु सकल गोवर्द्धन पासा ॥
तहां जाय गिरिवरहिं मनाई । पूजहु बहु विधि मंगल गाई ॥
मांगि मांगि तुमसों गिरिखैहै । मुँहमांगे तुमको फलदैहै ॥
मेरो कह्यो सत्य तुमजानो । मेरो स्वप्न झूंठ मतिमानो ॥
यह परचो तुम आंखिन देखो । तबहिं मोहिं सांचो करिलेखो ॥
जो चाहो ब्रजकी ठकुराई । तौ पूजो गोवर्द्धन राई ॥
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्ही । सबहिनबात मानि सो लीन्ही ॥
कहहिं परस्पर सब सुखपाई । चलहु गोवर्द्धन कहत कन्हाई ॥
ब्रज घरघर सबहोत कुलाहल । फिरत गोप आनन्द उमाहल ॥
मिलत परस्पर अंकम दैलै । शकटनसाजत भोजन लैलै ॥
दोहा–बहु व्यंजन पकवान बहु, बहुत मिठाई पाक ॥
रस गोरस मेवा विविध, अमित भांतिके शाक ॥
सो०–षट्रसके सब भोग, कछु शकटन कछु कांवरिन ॥

१ सलाह ।

गृह गृह ते ब्रजलोग, लै लै गिरिपूजन चले ॥
नन्द महरके घरकी सामा । कहँ लगि बरणि बताऊं नामा ॥
सहस शकट पकवान मिठाई । रस गोरस बहु भार भराई ॥
नन्द सदन ते लै बहु ग्वाला । चले अग्र उर हर्ष विशाला ॥
पटभूषण सब गोपन साजे । भांति अनेक बाजने बाजे ॥
नन्द महर अरु महरि जितेका । और गोप बहु भीर अनेका ॥
बलदाऊ अरु कुवँर कन्हैया । शुभग शृंगार किये दोउ भैया ॥
सखा वृन्द सुन्दर सब लीन्हे । कोटि काम छबि लज्जित कीन्हे ॥
शोभित नंद महरके साथा । चले सकल पूजन गिरिनाथा ॥
यशुमति अरु रोहिणि महतारी । नन्दगांवकी अरु जे नारी ॥
भूषण बसन सवाँरि सवाँरी । चलीं हर्षि उर आनँद भारी ॥
पुरवृषभानु आदि जे ग्रामा । चलीं सकल गोपन की बामा ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी । ललतादिक सब गोप कुमारी ॥

दोहा-नौसत साज शृंगार अति, पट भूषण बहु रंग ॥
यूथ यूथ जुरिकै चलीं, कीरति जूके संग ॥
सो०-सबके मन यह काम, देखनको हरि रूप दृग ॥
परम मुदित सब बाम[2], सबके मनमोहन बसे ॥

चन्द्र बदनसी सब मृगनयनी । सकल सुघर सब कोकिल बयनी ॥
नवयौवनमें सबहिं प्रवीना । सबको मन मोहन आधीना ॥
चलीं सकल गोवर्द्धन घाहीं । भई भीर अति मारग माहीं ॥
शकट वृन्द अरु गोप समूहा । जात चले युवतिनके यूहा ॥
कौतुक करत गोप गण राजैं । ताल मृदंग अनेकन बाजैं ॥
कोउ गावत कोउ नाचत जाहीं । कोउ ठाढे मग पावत नाहीं ॥
कोऊ शकटन साजि सँवारे । कोऊ एकन एक पुकारे ॥
गावत मंगल गोपकुमारी । निरखि श्याम छवि होत सुखारी ॥
होत कुलाहल अति मगमाहीं । कोऊ बात सुनत कछु नाहीं ॥

१ बरषानो । २ गोपी ।

कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं । अति उत्साह सबन मन माहीं ॥
सखन संग खेलत हरि जाहीं । सबकी सुरति श्यामके माहीं ॥
ब्रजवासिनकी भीर सुहाई । उपमा मोपै बरणि न जाई ॥
छं०-उपमा न मोपै जात वरणी, भीर अति सुन्दर भई ॥
बढ्यो आनँदसिंधुको सुख, विविध तनुधर सोहई ॥
छबि उजागर नगरकैधौं, सुकृत पुंज सुहावने ॥
तिनमध्य सबके श्याम नायक, सकल लायक पावने ॥
दोहा-नंदमहर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय ॥
पहुँचे गोवर्द्धन निकट, निरखि शिखर सुख पाय ॥
सो०-उतरे सहित समाज, चहूं ओर ब्रजलोग सब ॥
मधि शोभित गिरिराज, कोटिकामशोभा सरस॥
चहुँ दिशि फेर कोश चौराशी । उतरे घेर सकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवासिनकी भीर अपारा । लगे चहूँ दिशि चारु बजारा ॥
वस्तु अनेक वरणि नहिं जाई । बिन मोलहि सब सौंज बिकाई ॥
ठौर ठौर ब्रजयुवती गावैं । जहँ तहँ नट्वा नाच दिखावैं ॥
कहूं विदूषक२ हांस हँसावैं । हर्ष मांझ अति हर्ष बढावैं ॥
नर नारी सब परमहुलासा । अति आनंद उमँगि चहुँ पासा ॥
बूझत पूजन विधि नँदराई । अधिकारी तहँ कुँवर कन्हाई ॥
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलाई । प्रथम यज्ञ आनंद कराई ॥
पूंछि वेद विधि तिनसों लीजे । वाही विधि गिरिपूजा कीजे ॥
तबहिं विप्र नँदराय बुलाये । आदर सहित गोप लै आये ॥
हरिको कह्यो मानि तिन लीन्हों । प्रथमारम्भ यज्ञको कीन्हों ॥
परम रुचिर वेदिका बनाई । सामवेद ध्वनि द्विज बर गाई ॥
दोहा-देखनको धाये सबै, ब्रजके नर अरु बाम ॥
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावैं श्याम ॥
सो०-बड़े महर उपनंद, नंद आदि ठाढे सबै ॥

१ आनंदसमुद्र । २ मसखरा ।

कहत जो कछु नँदनंद, करत सकल सोई तहां ॥

पंचामृत बहु कलश भरायो । डारि शिखरते गिरि अन्हवायो ॥
बहुरो लै गंगाजल ढारयो । चंदन वन्दन तिलक सँवारयो ॥
भूषण वसन विचित्र चढाये । सुमन सुगंध माल पहिराये ॥
धूपदीप करि आरति साजीं । घंटा शंख झालरैं बाजीं ॥
करत वेद धुनि विप्र सुहाई । चकृत नभ¹ लखि सुर² समुदाई ॥
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई । थाप्योगिरि ब्रज तिलक चढ़ाई
देखि इन्द्र मन गर्व बढ़ायो । ब्रजवासिनके मन कह आयो ॥
पूजत गिरिहि मोहिं बिसराई । गिरि समेत ब्रज देउँ बहाई ॥
पावहिं मम अपमान सजाई । देखौं तब को करत सहाई ॥
अब देखौं मैं इनकी करनी । उपजी है इनकी बुधि मरनी ॥
गिरिको पूजत प्रेम बढ़ाई । स्वप्नेको सुख लेत मनाई ॥
कितकबार पुनि इनको मारत । ऐसे सुरपति मनहिं विचारत ॥

दोहा--कह्यो कृष्ण तब नन्दसों, भोजन लेहु मँगाय ॥
गिरि आगे सब राखिकै, अरु यह विनय सुनाय

सो०--यह सुनिकै नँदराय, लावहु ग्वालनसों कह्यो ॥
लीन्ही तहां मँगाय, सामग्री सब भोगकी ॥

नाना भांति जात पकवाना । विविध मिठाई अमित समाना ॥
षट्रस व्यंजन बहु तरकारी । दही दूध सिखरन रुचिकारी ॥
मधु मेवा फल फूल अनेका । सुंदर स्वाद एकते एका ॥
खीर आदि बहु भांति रसोई । कहँ लगि वरणिसकै सबकोई ॥
मूंग भात अरु बरा पकोरी । बहुतकदधि बोरी अरु कोरी ॥
कियो अन्नको कूट सुहावन । जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन ॥
परसि परसि गिरि आगे राखत । जैसी विधिसों मोहन भाषत ॥
गिरि पूजत जिहि भांति कन्हाई । तैसे सब ब्रजलोग लुगाई ॥
गिरि गोवर्द्धनके चहुँ पासा । कीन्हो बहु विधि सहित हुलासा

१ आकाश । २ देवता ।

ठौरहि ठौर बेदिका राजै। अन्नकूट चहुँ ओर बिराजै॥
तिनमधि गोवर्द्धन गिरि पावन। परम अनूप स्वरूप सुहावन॥
चंदन केसरि रोरी हाथा। शोभित अति चहुँ दिशिगिरिमाथा
दोहा-गिरिगोवर्द्धन रायकी, छबि नहिं परत लखाय॥
ब्रजवासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदाय॥
सो०-महिमा अमित अपार, श्रीगोवर्द्धन अचलकी॥
जेहि पूजत करतार, शारद विधि नहिं कहि सकै॥
प्रातहिंते परसत भोजन सब। गयो ढरकि दुर्गयाम तरणि तब॥
कह्यो श्यामसों तब नँदराई। जेवहिं गिरिसों कहौ कन्हाई॥
तब हरि कह्यो सबन समुझाई। भोग समर्प्पहु घंट बजाई॥
मनमें कछू खटक जिन राखो। दीन बचन सुखते कहिभाखो॥
नयन मूंदिकै ध्यान लगावो। प्रेम सहित करजोरि मनावो॥
हरि गोपन पूजा सिखरावैं। अपनी पूजा आप करावैं॥
जिनपर कृपा करत नँदनंदन। तिनसों आप करावत वंदन॥
सबन मानि हरि कही जो लीन्हो। बहु विधि गिरि आराधन कीन्हो॥
तब प्रगटे गोवर्द्धन नाथा। यज्ञपुरुष प्रभु श्रुतिके माथा॥
सहसभुजा तनु श्याम तमाला। मोर मुकुट बैजंती माला॥
नख शिख भूषण परम सुहाये। अंग अंग छबि झलकन छाये॥
भये देखि ब्रजलोग सनाथा। दियो दरश गोवर्द्धन नाथा॥
दोहा-जय जय जयकहि देव मुनि, वर्षत सुमन अकास॥
ब्रजवासी जय जय करत, भये अनंद हुलास॥
सो०-सहसौ भुजा पसारि, लागे भोजन करन गिरि॥
देखत ब्रज नर नारि, अति अद्भुत हरिके चरित॥
कहत मुदित सब लोग लुगाई। कान्हहिं की शोभा गिरिराई॥
जैसे कान्ह श्यामतनुसोहै। तैसोई गिरिवर मनमोहै॥
तैसेइ कुण्डल तैसेइ माला। तैसेइ चंचल नयन बिशाला॥

१ पर्वतकी। २ सरस्वती। ३ दोपहर। ४ सूर्य।

तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो। नख शिख रूप कान्हको जैसो ॥
द्वैभुज हरिके परम सुहाई। गिरिकी भुजा सहस अधिकाई ॥
देखि दर्श गिरिवरके रूरे। नंद यशोदा आनँद पूरे ॥
कहतकि बड़े देव हमपाये। देखहु परकट दरश दिखाये ॥
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो। जीवन जन्म सफल करिलेख्यो॥
ललता राधहि कहत बुझाई। मैं यह बात समुझिहै पाई ॥
यह लीला सब श्याम बनावैं। आपहि जेंवत आप जिमावैं ॥
मैं जानी हरिकी चतुराई। इंद्रहि मेटि आप बलि खाई ॥
हैं इनके गुण अगम अगाधा। मेरी बात मान तू राधा ॥

दोहा—इतहिं नंदको कर गेहे, गोपन सों बतरात ॥
उत आपहिधरिसहस भुज, रुचिसों भोजन खात॥

सो०—श्री राधासुखपाय, मुदित विलोकति श्याम छबि॥
भक्तनके सुखदाय, नित नव करत विनोद ब्रज ॥

इत गोपन सँग हर्षित राहीं। उत सबहिनको भोजन खाहीं ॥
ग्वालिन एक विलोकन हारी। रहिवृषभानु सदन रखवारी ॥
तासु नाम बदरीलागायो। तिन वरहीते भोग लगायो ॥
प्रेम सहित बहु विनय सुनाई। सबके अन्तर्यामि कन्हाई ॥
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी। लई तासुबलि भुजा पसारी ॥
भोजन करत परमरुचि मानी। गुणसागर लीला यह ठानी ॥
कहत नंदसों कुँवर कन्हाई। मैं जो बात कही सो आई ॥
अब तुम गिरि गोवर्द्धन जाने। मेरे वचन सत्य करि माने ॥
तुम देखत भोजन सब खायो। परगट तुमको दर्श देखायो ॥
तुम्हरी भक्ति भाव पहिंचानी। गिरि तुम्हरी पूजा सब मानी ॥
तुम अब मांग्यो चाहौ जोई। मांगिलेहु इनपै सब सोई ॥
नंद कहत धनि धन्य कन्हाई। यह पूजा तुम हमहिं बताई ॥

दोहा—प्रीति रीतिके भावसों, भोजन सबके खाय ॥

---

१ हजार। २ पकड़े। ३ प्रीतिकेभूखे।

ह्वै प्रसन्न अति नंदसों, तब बोले गिरिराय ॥
सो०—लेहु नंद वरदान, अब जो तुम हमसों चहौ ॥
मैं लीन्हो सुखमान, बहुत करी तुम भक्ति मम ॥
भली करी तुम मेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा ॥
तेरे सुत बल मोहन भाई। इनको कुशल अनन्द सदाई ॥
मैंहीं इनको स्वप्न दिखायो। मैंहीं सुरपतियज्ञ मिटायो ॥
अब जो सुरपति तुमहिं रिसाई। जल बर्षै ब्रज ऊपर आई ॥
तौ तुम अपने जिय मति डरियो। कान्ह कहै सोई तुम करियो ॥
अब तुम मम प्रसाद ले खाहू। अपने अपने घर सब जाहू ॥
ब्रजमें बसो निशंक सदाहीं। और कछू मांगौ हम पाहीं ॥
यह सुनि चकित सकल ब्रजनारी। भोजन कियो प्रथम गिरिधारी ॥
अब बोलत सुख वचन प्रमाना। ऐसे परछत देव न आना ॥
नंद कह्यो कह मांगों स्वामी। देखि दरश भयो पूरण कामी ॥
सकल सिद्धि सुख तुम्हरो दीन्हो। कृपासिन्धु मैं तुम्हरो कीन्हो ॥
मोहविवश प्रभु तुमहिं बिसारे। भूलि फिर्यो देवनके द्वारे ॥
छंद--फिर्यों भूल्यो देवद्वारन नाथ तुमहिं बिसारके ॥
पूजा तुम्हारी कहा जानें हम अहीर गँवारके ॥
आपही करि कृपा दीन्हों स्वप्नश्यामहिं आयकै ॥
दई बालककी बड़ाई नाथ यह अपनायकै ॥
अब हमैं डर कौनको प्रभु शरण तुम्हरी पायकै ॥
इन्द्र कह करिहै हमारो नाथ ब्रजपर आयकै ॥
तुमहिं करताहौ सबनके तुमहिं सबके ईश हौ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड तुम्हरे रोमप्रति जगदीश हौ ॥
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं ॥
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं ॥
सुतन लै दोउ डारि गिरिपद आप नँदचरणन परे ॥

१ प्रत्यक्ष। २ मालिकहो।

बिहँसि गिरि लखि प्रीतिपंकज पाणि दुहुँ माथे धरे॥
दोहा–नन्द गोप उपनन्द सब, श्रीवृषभानु समेत ॥
बार बार गिरिराजके, चरण परत अति हेत ॥
सो०–करि सबको सनमान, दै प्रसाद निज पाणिसों ॥
सबन कह्यो वरजान, ह्वै प्रसन्न गिरिराज तब ॥
चलहु वरन सब कह्यो कन्हाई। भये प्रसन्न देव गिरिराई ॥
भली भांति पूजा तुम कीन्ही। गिरिवर राज मान सब लीन्ही ॥
दोउ करजोरि भये सब ठाढ़े। भक्ति भाव सबके मन बाढ़े ॥
हरि करि परिकरमा सब गिरिको। परशत चरण चलत ब्रजघरको॥
देखि चकित गण गँधरव सुर मुनि। कहत धन्य ब्रजवासी गुण गुनि॥
धन्य नंदको सुकृत पुरातन। धन्य धन्य पर्व्वत गोवर्द्धन ॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि। बर्षि सुमन करि करि जैजै धुनि ॥
निज निज लोकन देव सिधाये। ब्रजवासी सब ब्रजको धाये ॥
मुदित सकल ब्रज लोग लुगाई। गोवर्द्धनकी करत बड़ाई ॥
कहत धन्य यशुमतिको जायो। बड़ो देवता कान्ह पुजायो ॥
अब इनते ब्रजमें सुख पैहें। गोप गाय सब सुखसों रैहें ॥
वर्ष वर्ष प्रति इन्द्र पुजायो। कबहूं प्रगट दर्शनहिं पायो ॥
दोहा–प्रगट देत हैं दर्शगिरि, सबके आगे खात ॥
परमहर्ष नर नारि सब, सबके मुख यह बात ॥
सो०–खेलत नित नव ख्याल, भक्तपाल नँदलाल ब्रज ॥
दुष्टनके उरशाल, सुरनरमुनि मोहत निरखि ॥
इन्द्र देखि गोवर्द्धन पूजा। कियो क्रोध मो सम को दूजा ॥
ब्रजवासिन मोको बिसरायो। मेरो बलि लै गिरिहि चढायो ॥
नेक नहीं शंका डर आनी। कछू कानि मेरी नहिं मानी ॥
तैंतिस कोटि सुरनको नायक। मेघ वर्ग सब मेरे पायक ॥
कियो अहीरन मम अपमाना। काधौं इन अपने मन जाना ॥
जानि बूझि इन मोहिं भुलायो। गिरिहि थापि शिर तिलक चढ़ायो॥

काहू उन्हैं दियो बहकाई। मरण काल ऐसी मति आई॥
तुरत उन्हैं अब देहुँ सजाई। देखौं धौं को करत सहाई॥
पर्वत पहिले खोदि बहाऊं। ब्रजजन मारि पताल पठाऊं॥
फूलि फूलि भोजन जिन कीन्हों। नेक न राखौं ताको चीन्हों॥
सकल गोप यह नयनन देखैं। बड़े देवताको फल लेखैं॥
ता पाछे ब्रज देउँ बहाई। भुवपर खोज रहै नहिं राई॥

दोहा–ऐसे सुरपति क्रोधकरि, मनमें गर्व बढ़ाय॥
प्रलयकालके मेघ सब, लीने तुरत बुलाय॥

सो०–तिनहिं कह्यो सुरराय, ब्रजपर वर्षौ जाय तुम॥
पर्व्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु ब्रज लोक सब॥

मोसौं अहिरन करी ढिठाई। मेरी बलि पर्वतहि खवाई॥
ताकारण मैं तुम्हहिं बुलाये। सैन समेत जाहु सब धाये॥
गिरि समेत सब देहु बहाई। भूतल खोज रहै नहिं राई॥
सुरपति वचन सुनत घनतमके। कायर क्रोध करत प्रभु मनके॥
केतक गिरि ब्रज हमरे आगे। तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे॥
क्षणहींमें ब्रज खोदि बहावैं। डूंगरको घर नाम मिटावैं॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी। रहत अक्षय वट तनक निशानी॥
आप क्षमा कीजै सुरराई। हम करिहैं उनकी पहुनाई॥
यह सुन सुनासीर² सुखपायो। हर्षि पान दै तिनहिं चढ़ायो॥
चले मेघ सब शीशनवाई। आये ब्रजके ऊपर धाई॥
क्षणहींमें रवि गगन³ छिपाने। देखत ही देखत अधिकाने॥
कीन्हों शब्द गरज घन भारी। अतिही घटा भयावन कारी॥

छंद–अतिही भयानक घटाकारी कज्जलहु पटतर नहीं॥
घेरि लीन्हों ब्रज चहूंदिशि पवन प्रलय झकोरहीं॥
गरजत गगन घन घोर तड़पत तडित⁴ बारहिं बारहीं॥
होत शब्द अघात ब्रज नर नारि चकित निहारहीं॥

१ पृथ्वी। २ इन्द्र। ३ आकाश। ४ बीजुरी।

गये वन जे गाय लै ते धाय फिर व्रज आवहीं ॥
अन्ध धुन्ध अपार खोजत धाम पन्थ न पावहीं ॥
सैंतत जहां तहँ वस्तु सब नर नारि मन शोचत महा ॥
वैर सुरपति सों कियो अब हौन धौं चाहत कहा ॥
दोहा-उमड़ि घुमड़ि घहराय घन, परन लगे जल जोर ॥
टेरत सुतको मात पितु, व्रज गलबल चहुँ ओर ॥
सो०-ब्रजजन सकल विहाल, बिललाने जित तित फिरत॥
श्याम करत यह ख्याल, देखि देखि मनमें हँसत ॥
अति व्याकुल जहँ तहँ नरनारी। कहत देत पर्वतको गारी ॥
आये पूजि गोवर्द्धन जाई। सुरपति निजकुल देव मिटाई ॥
दीन्हो गिरिवर यह फलभारी। लेहु सबै अब गोदपसारी ॥
चढ्यो प्रचारि कोप सुरराई। देत पलकमें व्रजहि बहाई ॥
जोपै बडे देव गिरिराजू। तौ किन आय बचावत आजू ॥
नंदसुवन यह पूजा ठानी। ताते इन्द्र चढ्यो रिस मानी ॥
कहति यशोमति सों ब्रजबाला। कहा काम यह कियो गोपाला ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे। ब्रज ते मेटि दिये तैं न्यारे॥
चढ्यो आय ब्रज ऊपर सोई। अब सहाय काहेन गिरि होई ॥
घन गरजत तरजत अति भारी। देखि देखि डरपत नरनारी ॥
सकल विकल भय मन पछिताहीं। लरिकन दुरवत गोदन माहीं ॥
भये शोच वश सब ब्रजलोगा। कहत बन्यो अब मरण सँयोगा ॥
दोहा-देखि देखि ब्रजकी दशा, नन्दमहरि पछिताति ॥
कियो निरादर इन्द्रको, मनमें बहुत डराति ॥
सो०-श्याम राम दोउ भाय, लिये निकट शोचत महरि ॥
जुरे गोप तहँ आय, मनहीं मन मुसुकात हरि ॥
कहत कृष्णसों सब ब्रजवासी। सुनहु श्याम सुन्दर सुखराशी ॥
तुमतो सुरपति यज्ञ मिटायो। ब्रजवासिनपै गिरिहि पुजायो ॥

१ मार्ग। २ छिपावत।

तुम्हरे कहे अहो ब्रज मण्डन । सुरपति मान कियो हम खण्डन
ताहीते सुरराज रिसाई । दिये प्रलयके मेघ पठाई ॥
वर्षत ते अवंबाके पायक । विषम बूंद लागत जनु सायक ॥
भीजत गाय गोप गोसुत सब । घरिक माहिं बूडतहै ब्रज अब ॥
राखि लेहु अब ब्रजके नायक । तुमहीं यह दुख मेटन लायक ॥
दावानलते राखे जैसे । अब जलते राखौ प्रभु तैसे ॥
बकी बिनाशन शकट सँहारन । तृणावर्त वत्सासुर मारन ॥
अघमर्दन बक बदन विदारन । तुमहीं ब्रज जनके दुख टारन ॥
दीजै अभय वेगि नँदलाला । वर्षत मेघ महा विकराला ॥
राखि लेहु बूडत ब्रज खेरो । अब चितवत हरि सब मुख तेरो

दोहा–जब जब गाढपरी हमैं, तब तुम कियो उबार ॥
इहि अवसर अब राखिये, मोहन नन्दकुमार ॥
सो०–ब्रजजनके सुखदान, देखि विफल ब्रजलोग सब ॥
हँसि बोले तब कान्ह, धरहु धीर उरँ डरहु मति ॥

चलहु सकल मिलि गिरिके पाहीं । उनको ध्यान धरहु मन माहीं ॥
करि लेहैं ब्रजराज सहाई । रहिहैं सुरपति मन पछिताई ॥
यह कहि हरि गोवर्द्धन आयो । अभय बाँहदै सबन बुलायो ॥
गाय वत्स ब्रज लोग लुगाई । गये सकल हरिके सँगधाई ॥
सबहीके देखत गहि धरते । उचकि लियो गिरिवर हरि करते
छिगुली छोर बाम कर राख्यो । तब हरि ब्रजबासिन ते भाष्यो ॥
करो सहाय देव गिरिराया । आवहु तुम सब इनकी छाया ॥
गाय गोप गोसुत नरनारी । भये सकल क्षण माहिं सुखारी ॥
चकित देखि सब लोग लुगाई । कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई ॥
प्रेम उमँग उर आनँद भारिके । परसत चरण धाय सब हरिके ॥
कान्ह कहत देखहु गिरिराई । कीन्हीकेहि विधि तुरत सहाई ॥
भक्तन हित हरि गिरिहि उठायो । तब ते गिरिधर नाम कहायो ॥

१ इन्द्र । २ बाण । ३ बछरा । ४ पूतना । ५ अघासुर । ६ हृदय ।

छं०–परेउ तबते नाम गिरिधर, वामकर गिरिवर धरचो ॥
देखि व्याकुल सकल ब्रजको, शोच इकक्षणमें हरचो ॥
करत जय जय गोप गोपी, सकल मन आनँद भरे ॥
श्याम सबके मध्य ठाढे, कर[1]जनख गिरिवर धरे ॥
परि अख[2]ण्डित धार मूशल, सलिलकी वर्षा करे ॥
अन्ध धुन्ध अकाश चहुँ दिशि, सबन झकझोरत खरे ॥
वज्रनीर गँभीर पुनि पुनि, गर्ज पर्वत पर गिरे ॥
करत अति उत्पात ब्रजपर, मेघ परलयको करे ॥
दोहा–बार बार चप[3]ला चमकि, झकझोरत चहुँ ओर ॥
अरर अरर आकाशते, जल डारत घन घोर ॥
सो०–हरि जनके सुखदाय, गिरि कीन्हों विस्तार अति ॥
सब ब्रज लियो बचाय, बूंद न आवत भूमिपर ॥
कहत गोप सब मनहिं डराई । गिरिवरनीके धरहु कन्हाई ॥
महाप्रलय पर्वत यह भारी । अतिकोमल भुज तनक तुम्हारी ॥
नखते गिरिवर धरिको धारै । ऐसे बल बिन कौन सँभारै ॥
देखि नन्द व्याकुल मन माहीं । महा भार गिरि कोमल बाहीं ॥
दाबत भुजा यशोमति मैया । बार बार मुख लेति बलैया ॥
देखि भार मन अति सुख पावै । पुनि पुनि गोवर्द्धनहिं मनावै ॥
नाथ आपनो भार सँभारी । करियो कान्हरकी रखवारी ॥
प[4]य पकवान मिठाई मेवा । बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥
मात पितहि हरि देखि दुखारी । तब इक बुद्धि करी गिरिधारी ॥
कह्यो नन्द सों निकट बुलाई । तुमहूं सब मिलि करहु सहाई ॥
लै लै लकुट राखि गिरि लेहू । मति राखहु उरमें सन्देहू ॥
गोवर्द्धन गिरि भयो सहाई । आप कह्यो मोहिं लेहु उठाई ॥
दोहा–यह सुनि जहँ तहँ गोप सब, रहेलकु[5]टि गिरिलाय ॥

१ अंगुरीके नहपर । २ एकसीबराबरगिरे । ३ बीजुरी । ४ दूध । ५ लट्ठ ।

कहत श्याम तब नन्दसों, भले लियो उचकाय ॥
सो०-ठाढे ढिग बलराम, देखि देखि लीला हँसत ॥
कौतुक निधि सुखधाम, करत चरितसंतनसुखद ॥
सात दिवस बीते यहि भांती । वर्षत जल जलधर दिनराती ॥
कोपि कोपि डारत जलधारा । मिटी न ब्रजकी नेकुलगारा ॥
जरत जलद जल बीचहि अंबर । वैसेइ गिरि वैसेइ ब्रज सुंदर ॥
धर जल पवन अनल नभ जाको । सुरपति कहा करिसकै ताको ॥
भये जलद जलते सबरीते । रह्यो एक गुण द्वैगुण बीते ॥
कहत बात आपस में बादर । पठयो इन्द्र हमैं दै आदर ॥
कह्यो देहु ब्रजजाय बहाई । कहिहैं कहा जाय अब भाई ॥
महा प्रलय जल वर्षे आनी । ब्रजमें बूंद न पहुँच्यो पानी ॥
भये मेघ मनमें सब कादर । अब करिहैं सुरराज निरादर ॥
अति भय तनुकी दशा भुलाने । गये इन्द्रपै सबै खिसाने ॥
कहत मेघ सुरपतिके पाहीं । सुनहु देव हम कहत डराहीं ॥
कै मारो कै शरण उबारो । ब्रज पै जोर न चलत हमारो ॥
दोहा-सात दिवस परलय सलिल, हम वर्षे ब्रजजाय ॥
ब्रजवासी भाये नहीं, निदर्यो हमैं बनाय ॥
सो०-निघट गयो सब वारि, एक बूंद पहुँचो न घर ॥
यह अचरज अति भारि, कहत लगतलज्जाहमैं ॥
यह सुनि चकित भयो सुरराई । पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई ॥
कहा भयो परलय को पानी । यह कछु ब्रजकी बात नजानी ॥
सुरपति मन यह करत विचारा । पर्वतमें कोइहै अवतारा ॥
तब सुरेश सब देव बुलाये । आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सबन शिरनायो । कौन काज सुरराज बुलायो ॥
तबहीं देवन सों सुरराई । ब्रजवासिनकी बात सुनाई ॥
बीते वर्ष देतहैं पूजा । सो अब देव कियो उनदूजा ॥

१ बादल । २ आकाश । ३ कायर ।

मोहिं मेटि पर्वतको थाप्यो । ताते मैं अतिरिस करि काप्यो ॥
दिये प्रलयके मेघ पठाई । आवहु ब्रज गिरि सहित बहाई ॥
ते वर्षे परलय जल जाई । ब्रजमें नीर न पहुँच्यो राई ॥
आये मेघ हार सब रोई । कारण कहा कहो सो मोई ॥
देवन कह्यो सुनो सुरईशा । प्रगट्यो ब्रजहिं ब्रह्म जगदीशा ॥

दोहा–तुम जानत प्रभु भूमि जब, दुखित पुकारी जाय ॥
कह्यो लेन अवतार तब, सो विहरत ब्रज आय ॥

सो०–कहै इन्द्र पछिताय, मैं भूल्यो जान्यों नहीं ॥
कीन्ही बहुत ढिठाय, भय कर मन व्याकुलभयो ॥

मैंसुरपति जिनहींको कीन्हो । तिन आगे चाहौं बलि लीन्हो ॥
रवि आगे खद्योत उजेरी । तैसी बुद्धि भई है मेरी ॥
कीन्ही बहुतै मैं अधिकाई । कहा करौं अब मन पछिताई ॥
सुरन कही सुनिये सुरराई । ब्रजहि चलौ नहिं आन उपाई ॥
वे हैं प्रभु दयालु करुणाकर । क्षमा करैंगे श्रीसुंदरवर ॥
सुनि विचार कीन्हो सुरराजा । यद्यपि वदन दिखावत लाजा ॥
तद्यपि वै स्वामी मैं दासा । करिहैं कृपा अवशि मोहिं आशा ॥
अब नहिं बनत रहे मुखे गोई । शरण गये जो होय सो होई ॥
यह विचार मनमें ठहराई । चल्यो शरण सुर संग लिवाई ॥
कामधेनु करि अग्र सुहाई । शोचत चल्यो ब्रजहि समुदाई ॥
अति सकोच सुरपति मन माहीं । आगे धरत परत पग नाहीं ॥
जगत पितासों करी ढिठाई । कहिहौं कहा वदन दिखराई ॥

दोहा–शरण शरण कहि चरण परि, परिहौं जाय उताल ॥
शरणागत पालन विरद, तजिहैं नाहिं गोपाल ॥

सो०–दीन वचन सुनि कान, करिहैं कृपा कृपालु प्रभु ॥
यहै करत अनुमान, सुरनायक आयो ब्रजहि ॥

देखि सुरनकी भीर अहीरा । अति डरपे डरभये अधीरा ॥

१ जुगुनू । २ मुखछिपाये । ३ व्याकुल ।

दौरि कृष्ण सों जाय सुनायो । सुरपति आप सैन सजिआयो ॥
कहत श्याम हँसि मतिहि डरावो । गिरिवरतजि कितहूं मति जावो॥
ब्रज बाहर सेना सबराखी । वाहनते उतर्यो सहसाखी ॥
सकुचत चल्यो कृष्णके पासा । कछुक दुखितमन कछुक उदासा॥
धाय पर्यो चरणन पर जाई । कृपासिंधु राखो शरणाई ॥
बिसर्यो तुमहिं तुम्हारी माया । अब तुम बिन नहिं और सहाया॥
शरण शरण पुनि पुनि कहि बानी । धोये चरण नयनके पानी ॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई । मोते चूक पडी अधिकाई ॥
मैं अपराध कियो अनजानी । क्षमा करो प्रभु जन सुखदानी ॥
जो बालक पितु सों बिरुझाई । लेत पिता तेहि गोद उठाई ॥
ऐसेहि मोहिं करो जन त्राता । जैसे सुतहित पित अरु माता ॥

दोहा–व्याकुल देखि सुरेश अति, दीनबंधु यदुराय ॥
अभय कियो करमाथधरि, भुजगहि लियो उठाय॥
सो०–लीन्हों हृदय लगाय, देखि दीनता इन्द्रकी ॥
शिर नहिं सकत उठाय, बार बार परशतचरण ॥

कहत इन्द्रसों कुँवर कन्हाई । तुमकत सकुचतहौ सुरराई ॥
हम तुमसों कीन्ही अधिकाई । तुम्हरी पूजा हम सब खाई ॥
भली करी ब्रज वर्षे पानी । हम कुछु तुमसोंरिस नहिं मानी ॥
यह दीन्ही मेरी ठकुराई । तुम नहिं जानत करी ढिठाई ॥
कहा भयो जो मेघ पठाये । मैं सब ब्रजके लोग बचाये ॥
तुम कुछ उरमें शोच न आनो । मैं तुम सों कछु बुरो न मानो ॥
भली करी ब्रज देखन आये । तुम मेरे मनमें अति भाये ॥
अपने मनकी शोच मिटाई । देवन सहित करौ सुख जाई ॥
सुनि हरि वचन देवगण हर्षे । जय जयकरि कुसुमांजलि वर्षे ॥
पुलकि अंग मुख गदगद बानी । कहत धन्य प्रभुजन सुखदानी ॥
अशरण शरण तुम्हारो बानो । यह लीला सब तुमही जानो ॥

१ फूलकी अंजली ।

धन्य धन्य सब ब्रजकेवासी। जिनके प्रेम विवश अविनाशी॥
दोहा–प्रभुहिं देखि अनुकूल मन, धीर कियो सुरराय॥
मिटी त्रास उरते तऊ, बार बार पछताय॥
सो०–कहत बारहीं बार, तुम गति अगम अगाध प्रभु॥
मैं भूल्यो संसार, जान्यों ब्रज अवतार नहिं॥
प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा। मोते मन्द औरको दूजा॥
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा। रवि आगे खद्योत प्रकाशा॥
मेरो गर्व कितक यह बाता। कोटिन इंद्र तुम्हारे गाता॥
मैं अपराध कियो यह भारी। प्रभु राख्यो निज ओर निहारी॥
दीनबन्धु तुम जन हितकारी। विरदबखानत वेद पुकारी॥
कृपा करी प्रभु दरशन पाये। भयो सुखी तनु ताप नशाये॥
येदिन वृथा गये बिनकाजा। तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा॥
धन्य धन्य प्रभु गिरिवर धारी। भंजन विपति भक्त हितकारी॥
दैत्य दलन प्रभु भार उतारन। सन्त धेनु द्विज हित तनुधारन॥
अब प्रभु मोहिं कृपा यह करिये। गिरिवर धर गिरि धरैपर धरिये॥
सुनि विनती हरि भये सुखारी। तबगिरि करते धर्यो उतारी॥
सुरन सहित सुरराज अनन्दे। कामधेनु लै प्रभुपद वन्दे॥
छं०–करत स्तुति जोरि सुरकर, धेनु आगे राखिकै॥
बंदि प्रभुपद पुलकि पुनि पुनि, नाम गोबिंद राखिकै॥
जै जै कृपालु मुकुन्द माधव, कृष्ण अगणित गतिहरे॥
गोपपति राजीवलोचन, करज नख गिरिवर धरे॥
वासुदेव ब्रजेन्द्र यदुपति, कंस अरिसुर रंजने॥
हरणि भव भय भार महि, अहिराज विषमद गंजने॥
बकी तिरणावर्त वत्सासुर, बका अघ नाशनं॥
अतिहि दुष्ट अरिष्ट धेनुक, असुर वंश विनाशनं॥
चोरि माखन खात ब्रज घर, भंजि तरु जन दुखहरे॥

१ भय। २ पटवीजन। ३ पृथ्वीपर। ४ कमलदललोचन। ५ कंसकेशत्रु।

योगीजन जप तप न पावत, धन्य ब्रज जन वश करे ॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना, धन्य ब्रज वृन्दावने ॥
धन्य गोपी गोप यशुदा, नंद गिरि गोवर्द्धने ॥
फिरत चारत धेनु निज पद, पद्मफणि अहिप्रति धरे॥
शकट भंजन भक्त रंजन, रास निर्त्तत गुणभरे ॥
जनक[1] सुरसरि[2] शिवसनकधन, श्रीनहीं छांडत घरी ॥
परसते पद भयो पावन, जयति जै जै जै हरी ॥
दोहा–करिप्रस्तुति मन हर्षि अति, परयो शक्र प्रभुपांय॥
है प्रसन्न सुरधेनु[3] सुत, बिदा कियो यदुराय ॥
सो०–पुनि पुनि प्रभुपद वन्द, सुरलोकहि सुरपति गयो ॥
ब्रजजन परमानन्द, चकित विलोकत श्यामतन ॥
कहत गोप सब आपसमाहीं । इन सम और जगतकोउनाहीं ॥
सात वर्षको बालक जोई । ताहि इतो बल कैसे होई ॥
हैं ये पारब्रह्म भगवाना । करत चरित्र देह धरि नाना ॥
दैत्य किते छल करि करि आये । ते सब इन कौतुकहि नशाये ॥
इन्द्र मेटि गिरिवरहिं पुजायो । तामें निजस्वरूप प्रगटायो ॥
इन्द्र प्रलय घन दियो पठाई । सात दिवस ब्रज बरषे आई ॥
अति विस्तार बड़ो अति भारी । लीन्हो गिरिवर कर पर धारी ॥
एक बूंद ब्रजमें नहिं आई । लीन्हो सब ब्रज लोक बचाई ॥
हारि मानि सुरपति भय पाई । आन परयो चरणन शिरनाई ॥
कामधेनु देवनकोल्यायो । ताहि अभय करि फेरि पठायो ॥
अचरज बात जात नहिं वरणी। मानुषसों यह होय न करणी ॥
परे गोप हरि चरणन आई । कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई ॥
दोहा–हम तुमको जानैं नहीं, हौ तुम त्रिभुवन राय ॥
ब्रजवासिन सुख देनको, ब्रजमें प्रगटे आय ॥

१ पिता । २ गंगा । ३ सुरभीगो ।

सो०–तुम करलेत सहाय, परत जहाँ संकट विकट ॥
लीन्हों हमैं बचाय, विषतें जलते अनलते ॥
करत विचार युवति सब ठाढीं। प्रेम उमँग मन आनँद बाढीं ॥
कैसे गिरिवर लियो उठाई । अतिकोमल तनुश्याम कन्हाई ॥
लेत धरत जान्यो नहिंकाहू । धन्य धन्य हरिको यह बाहू ॥
सातदिवस परलय जलढाऱ्यो। इन्द्रपरतचरणन जब हाऱ्यो ॥
करत सखा धनि धन्य गुपाला। कैसे गिरि कर धऱ्यो विशाला ॥
यह करतूति करत तुम कैसे । हम सँग सदा रहत हौ जैसे ॥
गाय चरावत हो मिलि हमसों । केतिक बलहै बूझत तुमसों ॥
धाय चरणगहि यशुमति मैया । मुख चुंबति अरु लेति बलैया ॥
अतिस्नेह नयन भरपानी । तनु पुलकित मुख गदगद बानी ॥
कैसे कर सुधऱ्यो गिरि ताता । अतिकोमल भुज तुम दिनसाता॥
बिहँसिमातसों कहत कन्हैया । तेरीसों सुनु यशुमति मैया ॥
मैं न उठावतरी श्रमपायो । नेक छुयो उठि आपुहि आयो ॥
दोहा–अब गिरिको पूजो बहुरि, सबसों कह्यो कन्हाय ॥
बूड़त ते राख्यो उनहिं, कीन्ही बहुत सहाय ॥
सो०–यह सुनि हर्ष बढ़ाय, बहुरो गिरि पूज्यो सबन ॥
अति हर्षित नँदराय, दिये दान विप्रन विपुल ॥
अक्षत रोरी पान मिठाई । पुष्पहार दधि दूध सुहाई ॥
यशुमति रोहिणि अरु ब्रजनारी। सजि सजि लाई कंचन थारी ॥
हरिको तिलक कियो दोउ माता। पुलकि प्रेम परिपूरण गाता ॥
बहुतकद्रव्य निछावर कीन्हो । भुजगहिलाय कण्ठसों लीन्हो ॥
ब्रजतिय हरिको तिलक बनावैं । फूल माल गरमें पहिरावैं ॥
इहि मिस अंग परसिसुखपावैं ।निरखि बदनछबि विधिहि मनावैं॥
होहिं हमारे पति गिरिधारी । मनमोहन सुंदर बनवारी ॥
यह कामना सकल उरधारी । हरि छबि निरखति गोपकुमारी॥
कह्यो नंदसों तब गिरिधारी । सुनहु तात अब बात हमारी ॥

१ सौनेकीथारी ।

गोवर्द्धनको करौ प्रणामा । चलिये अब सब निज निज धामा ॥
यह सुनि सबन गिरिहिं शिरनाई । चले ब्रजहि मनहर्ष बढ़ाई ॥
आये सदन सकलब्रजवासी । सहित श्याम सुंदर सुखराशी ॥

दोहा-घर घर ब्रज आनंद सब, गावत मंगलचार ॥
आये सुरपति जीति हरि, गिरिधर नन्दकुमार ॥
सो०-ब्रज मंगल ब्रज मोद, ब्रज आभूषण गिरिधरन ॥
नितनव करत विनोद, ब्रजवासी ब्रजदास हित ॥

अथ नन्दएकादशीवरुणलीला ॥

इन्द्रहि जीति श्याम घरआये । ब्रज घर घर आनंद बधाये ॥
तादिन दशमी भई सुहाई । कार्त्तिक शुक्लएकादशि आई ॥
भक्ति मुक्तिदायक अतिपावन । पाप शाप संताप नशावन ॥
नन्दएकादशि व्रत प्रतिपालैं । वेद विदित सब धर्म सँभालैं ॥
प्रथमहिं दशमी संयमकीन्हो । बहुरि एकादशिका व्रतलीन्हो ॥
निराहार निरजल दृढनेमा । नारायण पदपंकज प्रेमा ॥
और काज कछु मनहिं नलायो । भजनकरत सबदिवस बितायो ॥
निशि[१] जागरण करण विधिठानी । प्रभु मंदिर लीप्यो निजपानी ॥
पाटम्बर वरदिव्य बिछाये । विविध पुनीत सुगन्धसिंचाये ॥
बाँधी बन्दनवार सुहाई । सुमन सुगन्ध माल लटकाई ॥
चौक चारु बहुरंगन पूरयो । सिंहासन तहँ राख्यो रूरयो ॥
शालिग्राम तहाँ पधराये । भूषण बसन विचित्र बनाये ॥

दोहा-धूप दीप नैवेद्य करि, प्रभुपर पुष्प चढ़ाय ॥
करी आरती प्रेमसों, घंटा शंख बजाय ॥
सो०-प्रभु पदनायो माथ, करि परदक्षिण दंडवत ॥
तुम त्रिभुवनके नाथ, जोरि हाथ स्तुति करी ॥

आदर सहित करी नँद पूजा । प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा ॥
करत कीर्त्तन भजन सप्रीती । तीनियाँ[३]मयामिनि[४] जब बीती ॥

१ घर । २ रात्र । ३ प्रहर । ४ रात्रि ।

सबहिं महरि नँदराय बुलाई । कह्यो यशोमति सों समुझाई ॥
एकदंड द्वादशी सकारे । पारन की विधि करो सबारे ॥
यह कहि नन्द यशोमति पाहीं । लैझारी धोती कर माहीं ॥
गये न्हान यमुनाके तीरा । संगनहीं कोउ तहां अहीरा ॥
झारी भरि यमुना जललीन्हो । बाहर जाय देह कृत कीन्हो ॥
लैमाटी कर चरण पखारी । अति उत्तम सों करी मुखारी ॥
अचमन लै बैठे नंदपानी । बरुण दूत जल बाजत जानी ॥
नन्दहि लै गे पकरि पताला । बरुण पास पहुँचे तत्काला ॥
जान्यो वरुण कृष्णके ताता । भयो हर्ष मन सुणि यह बाता ॥
अन्तर्य्यामी प्रभु घनश्यामा । नंदलेन ऐहैं मम धामा ॥

दोहा—भयो बरुण अति हर्षमन, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
नन्दहि ल्याये भृत्य मम, भली भई यह बात ॥

सो०—सो प्रभु कृपानिधान, ऐहैं धनि धनि भाग्य मम ॥
जाहि धरत मुनि ध्यान, निगमनेतिजिहि गावहीं ॥

हर्ष सहित नंदहि जलँराई । भीतर महलन गये लिवाई ॥
सादर विनय वचन बहु भाषे । धीरज दै नीके नँदराखे ॥
रानी सबन नंदको देख्यो । जन्म सफल अपनो करि लेख्यो ॥
कहत कि धनि धनि भाग्य हमारे। नन्द हमारे सदन पधारे ॥
जिनके सुत त्रैलोक्य गुसाईं । सुर नर मुनि सबहीके साईं ॥
चितवत पंथ वरुण मन लाये । करुणामय अब आवत धाये ॥
यशुमति शोच करत मन माहीं। भई बेर आये नँदनाहीं ॥
खबरलेन तब ग्वाल पठाये । यमुनातट नहिं नंदहि पाये ॥
झारी धोती तट पर देखी । भये शोच सब ग्वाल विशेषी ॥
इत उत खोज ग्वाल फिरि आये। कहत महरि सों नंद न पाये ॥
झारी धोती तट पर पाई । सुनत महरि मुख गयो झुराई ॥
निशा अकेले आज सिधाये । काहू जलँचर धौं धरि खाये ॥

१ एकघडी। २ दांतन। ३ पिता। ४ नौकर। ५ वेद । ६ वरुण । ७ जलकेजीव।

दोहा-अति व्याकुल यशुमति भई, उठी रोय अकुलाय ॥
सुनि धाये ब्रज लोग सब, नंदहि खोजत जाय ॥
सो०-यमुना तट वन गांव, नंद नंद टेरत सबै ॥
ढूँढि फिरे सब ठांव, भये विकल ब्रज लोग सब ॥
सोवतते हरि हलधर आये । रोवत मात देखि दुख पाये ॥
बूझत जननी सों दोउ भैया । कतरोवति है यशुमति मैया ॥
बिलखि यशोमति वचन सुनाये । यमुनातट कहुँ नंद हिराये ॥
यह सुनि हरि बोले सुनुमाता । अबहीं आवतहैं नँद ताता ॥
मोसों कहि गये अबहीं आवन । मति रोवै मैं जात बुलावन ॥
प्रभु सर्वज्ञ सकलके स्वामी । जल थल व्यापक अंतर्यामी ॥
जाने नंद वरुणके धामा । वरुण प्रीति पुनि लखि घनश्यामा
वरुणलोक हरि तुरत सिधाये । सुनत वरुण आतुर उठिधाये ॥
देखत दरश परश सुख पायो । चरण सरोज आय शिरनायो ॥
कहत आज धनि भाग्य हमारे । त्रिभुवन पति मम धाम पधारे ॥
पाटम्बर पाँवड़े बिछाये । महलन बंदनवार बँधाये ॥
रत्न जडित सिंहासन धार्‌यो । तापर सादर प्रभु बैठार्‌यो ॥
छं०-बैठाय सादर प्रभुहिं धोवत, कमलपद निज करगहे ॥
जे पद सरोज मनोज[1] अरि उर, सरसदा प्रफुलितरहे ॥
जे पद पदम पदमालया[2] उर, रहत निज भूषण किये ॥
पायते पद जलज[3] जलपति[4], प्रेम परि पूरण हिये ॥
दोहा-विविध भांति प्रभु पूजिके, वरुण कह्यो गहिपाय ॥
कृपासिंधु अति कृपा करि, दरश दियो मुहिआय ॥
सो०-मैं कीन्हों अपराध, सो प्रभु उर नहिं आनिये ॥
क्षमा समुद्र अगाध, क्षमा करहु निज जानि जन ॥
जल रक्षक जे दूत कृपाला । ते लै आये नंद पताला ॥
यह कारज मैं उनको कीन्हों । तिन दूतन प्रभु नंद न चीन्हों ॥

१ श्रीशिव । २ लक्ष्मी । ३ चरणकमल । ४ वरुण ।

यद्यपि कियो उन पातक भारी। हैं वे सकल दंड अधिकारी॥
तदपि दूत वे मो मन भाये। जिनते प्रभुके दरशन पाये॥
देखि नाथ शुभ दरश तुम्हारा। मैं मान्यों उनको उपकारा॥
अब प्रभु हम सब शरण तुम्हारी। राखि लेहु श्रीगिरिधर धारी॥
पँयन परी आय सब रानी। बड़ भागिन आपनको जानी॥
रानिन सहित वरुण अनुरागे। अस्तुति करत जोरिकर आगे॥
धन्य नंद धनि धन्य यशोदा। धनि धनि तुमहिं खिलावत गोदा॥
धनि ब्रज गोकुलके नरनारी। पूरण ब्रह्म जहां अवतारी॥
गुणातीत अविगति अविनाशी। ब्रज विहार विलसत सुखराशी॥
शेष सहस मुख वरणि न जाई। सहज रूपको करत बड़ाई॥

दोहा—करि अस्तुति रानिन सहित,पुनि पुनि धरि पदशीश॥
लै प्रभुको नँदराय ढिग, तबहीं गयो जलीश॥
सो०—हरषि उठे नँदराय, देखि श्यामको शशि वदन॥
लखि प्रभुकी प्रभुताय, रहे मुदित चकित चितय॥

करत मनहिंमन नंद विचारा। यह कोउ आहि बड़ो अवतारा॥
भयो नंद मन हर्ष अपारा। ब्रह्म करत मो सदन विहारा॥
तबहिं कृपा करि जन सुखदाई। वरुणहिं दै जलराज बड़ाई॥
जाय नंदको कर गहि लीन्हो। चलहु तात ब्रजकहि हँसिदीन्हो॥
कह्यो प्रणाम वरुण सुख पाये। नंद सहित हरि ब्रज गृह आये॥
नंद आय ब्रजको जब देख्यो। तब वह चरित स्वप्न सों लेख्यो॥
देखि नंदको ब्रज नरनारी। गयो दुःख सब भये सुखारी॥
बूझत नंदहि गोप सयाने। कितहिं गये तुम हम नहिं जाने॥
हारे खोज सकल ब्रजवासी। भये बहुत तुम बिना उदासी॥
नंद महर तब सबसों भाष्यो। कालिह एकादशि व्रत मैं राख्यो॥
आज द्वादशी थोड़ी जानी। रैनि अछत गयो यमुना पानी॥
कढिलैं गयो यमुन जल माहीं। लै गयो वरुण दूत गहिबाहीं॥

१ वरुण।

दोहा-वरुण लोकते जायकै, लाये मोहिं गोपाल ॥
ये प्रगटे ब्रज आय कोउ, उत्तम पुरुष विशाल॥
सो०-महिमा कही न जात, कोटि भाँति वरणीवरुण॥
साँच कहत मैं बात, इनको नर मति मानियो॥

भयो अधीन बहुत जलराई। परयो चरण कमलनपर आई ॥
रानिन सहित धोय पदपूजे। जानि जगतपति भाव न दूजे ॥
ब्रज नर नारि सुनत यह गाथा। कहत भये सब सकल सनाथा ॥
यशुमति सुनत चकित यह बानी। कहत कहा यह अकथ कहानी॥
प्रभुकी मायामें अरुझानी। कहति नंदसों यशुदारानी ॥
मो बरजत निशि न्हान सिधाये। कुशल परी पुण्यनते आये ॥
हरिको चूमि लियो उरलाई। लाये नन्दहि खोज कन्हाई ॥
विप्रन बोलि दियो बहुदाना। घर घर बटी मिठाई पाना ॥
गावत मंगल नारि सुहाई। बाजी नंद अवास बधाई ॥
नंद कहत यशुमति सुन बौरी। तू अब कितहि करत मन भौरी ॥
जाको त्रिभुवन पतिसों ताता। ताहि सदा मङ्गल दिन राता ॥
कही गर्गमुनि वाणी जोई। प्रगटत जात बात सब सोई ॥

दोहा-इनते समरथ और नहिं, येहैं सबके नाथ ॥
ब्रजवासी आनंद सब, सुनि सुनि हरि गुण गाथ॥
सो०-धनि धनि ब्रज नर नार, कहत हमारे भाग्य सब ॥
हम सँग करत विहार, श्रीवैकुण्ठ निवास हरि ॥

अथ वैकुंठदर्शन लीला ॥

कहत परस्पर सब ब्रजवासी। हरिहैं श्रीवैकुण्ठ निवासी ॥
सो वैकुण्ठ अहै धौं कैसो। जन्म मरण भय जहां न ऐसो ॥
जाको वेद पुराण बखाने। हरिजहँ वसत सदा सुखमाने ॥
जो हरि हमहिं दिखावैं सोई। तौ बड़भाग्य होइँ सब कोई ॥
यह मनसा सबके मन आई। जानि लई भक्तन सुखदाई ॥

१ रात। २ घर।

तबहिं कृपाकरि सब ब्रजलोका । पहुँचाये वैकुण्ठ विशोका ॥
धर्म धाम जो वेदन गायो । दिव्य दृष्टि दै सबन दिखायो ॥
देखत भूलि रहे सब ग्वाला । पुर वैकुण्ठ अनूप विशाला ॥
भूमिवज्र[1] मणि द्युति छबिछाई । परम प्रकाश वरणि नहिं जाई ॥
वापी कूप तडाग[2] अमीके[3] । विविध नगन बांधे तटनीके ॥
रत्ननकी सोपान[4] सुहाई । जहां देव मुनि रहत लुभाई ॥
फूले कमल विपुल बहुरङ्गा । करत शब्दखग[5] गुंजत भृङ्गा ॥

दोहा–कल्पवृक्षके बाग वन, सुमन सुगंध अपार ॥
खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य स्वरूप उदार ॥

सो०–मंदिर वरणि न जाहिं, चिंतामणिमय खचित सब ॥
तैसे ताहि लखाहिं, जैसी जाकी भावना ॥

सकल चतुर्भुज तहँके वासी । शुद्धसतोगुण सब सुखरासी ॥
राम सहित तहँ प्रभु सुख शीरा । शोभित नव जलदान शरीरा ॥
भूषण वसन दिव्य परकाशी । सुन्दर सकल सकल अविनाशी ॥
वदन प्रकाश हास सुखकारी । कोटि चंद्र कीजै बलिहारी ॥
मणिन जटित शिर मुकुट विराजैं । भूषण वसन अनूपम राजैं ॥
दिव्य पारषद चँवर डुलावैं । नारद तुम्बर गुण गण गावैं ॥
चकित विलोकित सब ब्रजबाला । जान्यो प्रभु प्रभाव तिहि काला ॥
चारि भुजा तहँ प्रभुहि निहारी । शंख चक्र गद अंबुज धारी ॥
द्विभुज कान्हको रूप न देख्यो । मुरली लकुट पाणि नहिं पेख्यो ॥
नाहिं मुकुट शिर मोर पखौवा । कटि काछिनी न गुंज हरौवा ॥
नहीं भेष नटवर गोपाला । भये विरहवश तब सब ग्वाला ॥
ब्रजवासी सो रूप उपासी । तास्वरूप बिन भये उदासी ॥

दोहा–अकुलाने दृग[7] सबनके, देखनको तिहि काल ॥
मोर पंख धर गुंज धर, मुरली धर गोपाल ॥

---

१ हीराकीपृथ्वी । २ तालाब । ३अमृत । ४सीढी । ५पक्षी । ६कमल । ७नेत्र ।

सो०–ब्रज वासिनके ध्यान, नटवर भेष गोपालको ॥
अमित रूप भगवान, तदपि उपासन रूप यह ॥
बिरह विवश हरि ब्रजजन जाने। तबहीं तुरत सकल ब्रज आने ॥
कान्ह देखि सब भये सुखारी। रहे चकित शशिवदन निहारी ॥
कहत सबै मन अचरजपाये। कहाँ गये हम कैसे आये ॥
देख्यो स्वप्न सबै इकबारा। किधौं साँच यह करत विचारा ॥
यह चरित्र सब मोहन करहीं। पुर वैकुंठ दिखायो हमहीं ॥
धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी। ब्रह्म हमारे संग विलासी ॥
हरिके चरण परश सब धाई। करत गोप सब मुखन बड़ाई ॥
हँसि हँसि सबसों कहत कन्हाई। रहे कहाँ तुम सकल भुलाई ॥
आज कहाँ ऐसो तुम देख्यो। सोकिन मोसों कहत विशेष्यो ॥
हम कह देखत नंददुलारे। तुमहीं सकल दिखावन हारे ॥
भूतल नाग[1] पताल निहारो। सकल जगत तुम्हरो विस्तारो ॥
यह सुनि श्याम मंद मुसकाई। दिये सकल पुनि मोह भुलाई ॥
दोहा–करत चरित्र विचित्र प्रभु, ब्रजवासिनके माहिं ॥
लखि लखि शिव ब्रह्मादि सुर,मुनि जन मनहिं सिहाहिं॥
सो०–अति आनँद ब्रज लोग,हरिके नितनव चरितलखि॥
सबको सब सुख योग, ब्रजवासी प्रभु नंदसुत ॥
सदा श्याम भक्तन सुखदाई। भक्तन हित अवतार सदाई ॥
संकटमें जन जहां पुकारैं। तहां प्रगट तिनको निस्तारैं ॥
मुख भीतर जिन सुमिरन कीन्हों। तिनको तहां दरश हरि दीन्हों॥
सुख दुखमें जो हरिको ध्यावैं। तिनको नेक न हरि बिसरावैं ॥
देव दनुज[2] खग मृग नरनारी। भक्त विवश सबते गिरिधारी ॥
चितदै भजै भाव जो जैसे। ताको होत प्रकट हरि तैसे ॥
ब्रह्माकीट आदिके स्वामी। प्रभु हैं निरलोभीनिष्कामी ॥
वेद पुराण साखि सब बोलैं। भाव वश्य सबके सँग डोलैं ॥

१ नागलोक। २ दैत्य।

काम भाव ब्रज गोपी ध्यावैं । मन वच कर्म हरिसों मन लावैं ॥
इक क्षण हरिको नाहिं बिसारैं । भौन काज चित हरिसों धारैं ॥
गोरसलै निकसैं ब्रज माहीं । जहाँ श्याम तेहि मारग जाहीं ॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी । रीझे गोपी जन मन हारी ॥

दोहा–नवसत साज शृँगार तनु, गोरस लै ब्रजनारि ॥
बेंचन इहि मग आवहीं, मोसों प्रीति विचारि ॥
सो०–अब इन संग विहार, करौं दान दधि लायकै ॥
यह मन कियो विचार, हरि ब्रज मोहन लाड़िले ॥

अथ दान लीला ॥

दधिको दान रचौं इकलीला । भक्तनकी सुखदायक शीला ॥
दधिदानी निजनाम धराऊं । ब्रज युवतिन मन सुख उपजाऊं ॥
श्याम सखन तब लियो बुलाई । सबसों कहि यह बात सुनाई ॥
ब्रज युवती नित गोरस ल्यावैं । या मारगह्वै बेचन आवैं ॥
तिन्हैं खिझाय दान दधि लीजै । गोरस खाय जान तब दीजै ॥
यह सुनि सखा उठे हर्षाई । भली बात तुम श्याम सिखाई ॥
सबहिन मन अति हर्ष बढ़ायो। कहत श्याम दधिदान लगायो ॥
तबहिं जाय घेरयो वन घाटा । आवत नित ग्वालिनि यहि बाटा[1] ॥
कह्यो श्याम सबसों समुझाई । रहो तरुनकी[2] ओट लुकाई[3] ॥
जबहीं ग्वालिनि दधिलै आवैं । घेर लेहु कोउ जान न पावैं ॥
यह सुनि सखा घेर कै बाटा । बैठे ठाटठगनको ठाटा ॥
उतते बनि बनि ग्वालि नवेली । बेंचन दधिहि चलीं अलबेली ॥

दोहा–हँसत परस्पर आपमें, चलीं जाहिं जिय मोर ॥
पाय घातमें सघन सब, घेरिलई चहुँ ओर ॥
सो०–देखि अचानक भीर, चकित रहीं चहुँ दिशि चितै ॥
सहमी कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब ॥
शंकित ह्वै ग्वालिनि भइँ ठाढी । मनहुँ चित्रकीसी लिखि काढ़ी ॥

१ मार्ग । २ वृक्षनकी । ३ छिपरहो ।

हाथ पांव अँग भये अडोले । कछू वदन ते वचन न बोले ॥
तहँ हँसि ग्वालिनि दियो जनाई । मति डरपो जिय कान्ह डुराई ॥
इहाँ चोर ठग कोऊ नाहीं । अभय कान्हको राज्य सदाहीं ॥
आवत जात न भय कुछ कीजै । दधिको दानलगै सो दीजै ॥
नाम कान्हको जब सुनि पायो । तब युवतिनमन धीरज आयो ॥
बोलीं विहँसि तबहिं ब्रजबाला । कहाँ तुम्हारे प्रभु नँदलाला ॥
चोरी करि नहिं पेट अघायो । अब बनमें दधि दान लगायो ॥
तब अति बालक हते कन्हाई । सही जु कछु कीन्ही लरिकाई ॥
होउ जो कछु वा धोखे माहीं । परिहै समुझि अबहिं क्षण माहीं ॥
प्रगट भये तब कुँवर कन्हाई । देखि सखन बोले मुसकाई ॥
रहि युवती तुम पोच सदाई । करि आई हौ बहुत ढिठाई ॥

दोहा-तबलौं हम लरिकाहुते, सही बात अनजान ॥
सो धोखो अब मेटिकै, छांड़ि देहु अभिमान ॥
सो०-हम मांगत दधि दान, तुम उलटी पलटी कहत ॥
करत नन्दकी आन, दिये पाइहौ जान सब ॥

तब बोलीं ग्वालिनि मुसकाई । अब तुम डर हम तजी ढिठाई ॥
नन्दहुते कछु तुम्हें कन्हाई । भयो जानिये तब अधिकाई ॥
कालिहहि चोरि चोरि दधि खाते । घर घर देखतही भजि जाते ॥
रातिहि भयो स्वप्न कछु आई । प्रातहि भई आज ठकुराई ॥
भली कही नहिं ग्वालिनि बानी । तुम यह बात कछू नहिं जानी ॥
पिता चरित धन धाम जुहोई । पुत्र काज आवतहै सोई ॥
तुमसी प्रजा बसाई गावहिं । तौ हम ठाकुर क्यों न कहावहिं ॥
कह्यो तबहिं ग्वालिनि झहराई । बात सँभारे कहत कन्हाई ॥
ऐसो को बहिगयो हमारे । जो परजाहै वसहिं तुम्हारे ॥
कंस नृपत्तिके सब कहवावैं । कहा भयो जु बसत इक गावैं ॥
जो तुम याते हौ गरुवाने । तौ अब तजि हैं गांव विहौने ॥

१ तमक । २ प्रातःकाल ।

यह सुनि विहँसि कह्यो वनमाली। कहा बात यह कहत गुवाली॥

दोहा–गांव हमारो छांड़िकै, बसिहौ का पुर माहिं॥
ऐसो को तिहुँ लोकमें, जो मेरे वश नाहिं॥

सो०–का गनतीमें कंस, जाके हम कहवावहीं॥
देहु दानको अंश, रारि करत बे काजही॥

बड़ी बात छोटे मुखमाहीं। आप सँभारि कहत हौ नाहीं॥
तीनि लोक अस कंस भुवाला। भयो तिहारे वश क्यहि काला॥
यह तुम बात कहौ तिनमाहीं। जो कोउ तुमको जानत नाहीं॥
हम इन बातन भय नहिं मानैं। जैसेहौ तुम तैसे जानैं॥
हमसों लीजै दान सवाई। पहिले थैली लेहु मँगाई॥
पीताम्बर बोझन फटि जैहै। तब पाछे पछितावौ ऐहै॥
ऐसे कहि ग्वालिनि मुसुकानी। तब बोले हरि दधिके दानी॥
तू ग्वालिनि हमको कह जानै। हम नहिं झूंठी बात बखानै॥
झूंठी हौ तुमहीं सब ग्वारन। सतर होति हौ बिनही कारन॥
अजहूं मानि कह्यो किन लेहू। लेखो करो दान ममदेहू॥
नन्द सौंह यों जान न देहौं। बहुरो छोरि दही सब लेहौं॥
काहेको अठिलात कन्हाई। छांडि देहु मोहन लरिकाई॥

दोहा–पहिली परपाटी चलौ, नई चलौ क्यों आज॥
जानि पाइहैं कंस जो, तौ पुनि होय अकाज॥

सो०–हँसी घरी द्वैचारि, बीतन लाग्यो याम[१]युग॥
बनमें रोंकी नारि, बाढ़ि जाइहै बात पुनि॥

कहा कंस कहि मोहिं सुनावो। अबहीं वाको जाय बुलावो॥
लरिका कहि कहि मोहिं बखानत। मेरी लरकाई नहि जानत॥
मारि पूतना स्वर्ग पठाई। तृणावर्त महि दियो गिराई॥
वत्सा बका अघासुर मार्‌यो। गिरि गोवर्द्धन कर पर धार्‌यो॥
ऐसी है मेरी लरिकाई। जानि बूझि तुम देत भुलाई॥

१ दोपहर।

तुमहीं हँसी करति हौ ग्वारी । देव देवावति हौ हठि गारी ॥
बात जानके भाषत नाहीं । आपहि बैठी हौ बन माहीं ॥
चोरी सदा बेंचि दधि जाहू । बिनादान क्यों होत निबाहू ॥
अबतो आज पकरि मैं पाई । सबा[1]दिवसनको लेहुँ चुकाई ॥
सबै भली तुम करी कन्हाई । बधे असुर सो सुनी बड़ाई ॥
गिरि धारचो बलखाय हमारी । जानी हम सब बात तुम्हारी ॥
मांग लेहु अबहूं दधि खाहू । होत दान सुनि हमको दाहू ॥

दोहा—हमैं कहत हौ चोरटी, आप भयो जो साह ॥
बड़े भये चोरी करत, अब लूटत हौ राह ॥
सो०—लेहु दही बलिजाउँ, हमको होत अबार अब ॥
लिये दानको नाउँ, एक बूंद नहिं पाइहौ ॥

यह तुम मोको कहा सुनाई । दधि माखन सब लेहु छिनाई ॥
यौवन रूप अंगजो तुम्हरो । ताको दान लेउँगो सिगरो ॥
कंचन भार युवति तुमसिगरी । आवति जाति हमारी डगरी ॥
दही मही मोको दिखरावो । ताहि न यौवन रूप बतावो ॥
अंग अंगको दान गिनावो । लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
यह सुनि सबग्वालिनिझहरानी । भये कान्ह तुम ऐसे दानी ॥
अंग अंगको दान चुकावत । यौवन रूपहि दीठ चलावत ॥
जानि परी प्रगटी तरुणाई । यशुमति सों अब कहिहौं जाई ॥
उर आनँद ऊपर रिस करिकै । चलीं सबै मटुकी शिर धरिकै ॥
तब हरि पीतांबर क[2]ठिकसिके । धरचो धाय आँचर पट हँसिके ॥
रिसकै मटुकी लई छुड़ाई । दधि माखन सब दियो लुटाई ॥
गहि गहि भुजा सबन झकझोरी । अँगिया फारि तनीगहितोरी ॥

दोहा—कहत कह्यो मानत नहीं, ढीठ भई सब आय ॥
दान देत झगरो करत, यौवन रूप लदाय ॥
सो०—जोकहिहौ घर जाय, जन[3]नी नहीं पत्याइहै ॥
आवहुगी पछिताय, निबहौगी पुनि कालिहिकिमि ॥

---

१ दिननको । २ कमर । ३ यशोदामया ।

भये कान्ह तुम लिपट दुलारे । देखहु फारे बसन हमारे ॥
तापर मांगत यौवन दाना । यह अगलों कहुँ सुन्यो न काना ॥
दधि माखन सब दियो लुटाई । चलो कहैं यशुमति सों जाई ॥
यहकहिग्वालिचलींसबरिस भरि। अबहिं मँगावत हैं तुमको धरि॥
यह सुनिहरिहँसिभौंहसिकोरी। गईं उरहनो लै सब गोरी ॥
यशुमति सों सब जाय सुनायो। कहा महरि सुतको सिखरायो ॥
अतिही कान्ह भये अब ईतर । रोकत युवतिनको बन भीतर ॥
दही दूध सब दियो लुटाई । मांगत यौवनदान कन्हाई ॥
चोली फारि हार सब तोरे । गहि गहि आंचर पट झकझोरे ॥
ऐसो को कुल भयो महरिके । यौवन दान लियो जिन अरिके ॥
नित उतपात जात सहिनाहिन। कहँ लगि पीयर बन दै दाहिन ॥
कैसे गोरस बेंचन जैये । हरिपै मारग चलन न पैये ॥

दोहा–सुनत ग्वालिनीके वचन, बोली यशुमति मात ॥
मैं जानी तुम सबनके, उर अन्तरकी बात ॥
सो०–आप फिरत इतरात, कहत श्याम ईतर भयो ॥
उरन लाय नख घात, उरहनको दौरी फिरत ॥

दशहि वरषको कहाँ कन्हाई । कहँ सब तुम माती तरुणाई ॥
दोष लगावत श्यामहिं आनी । कैसे धौं कहि आवत बानी ॥
हरिपर फिरत सबै मडरानी । यौवन मदमाती इठलानी ॥
तुमको लाज लगतिहै नाहीं । जाहु सबै बैठो घर माहीं ॥
अहो महरि ऐसो नहिं कीजै । बिन बूझे गारी नहिं दीजै ॥
सुत ऐसो मग चलन न देहीं । मांगत दान लूटि दधिलेहीं ॥
तुमहूं खीझ करत सुतओरी । ऐसे ब्रजमें बसिहै कोरी ॥
तजि हैं आजहिं गांवतिहारो । बहुरि न सुनि हौनाम हमारो ॥
ऐसे कहा कहत डरपाई । बसत नहीं किन अनतहि जाई ॥

१ छातीपर ।

मेरो कहा कछू घटि जैहै । झूंठी बात नहीं कोउ सैहै ॥
यौवन दिन द्वै सचहिन बोरी । तुम बांधति आकाशहि डोरी ॥
मोसों कहति आप तुम जैसी । कोपतियाय बात सुनि तैसी ॥
दोहा–बोलत नहीं सँभारि तुम, सब मिलि भई गँवारि ॥
ऐसी कैसे हरि करैं, वृथा बढ़ावति रारि ॥
सो०–महरि मनहिं रिसियाय, हम झूंठी भाषैं नहीं ॥
जो तुम नहिं पतियाय, बूझि न देखो आनसों ॥
तुम सुतके कर्मन नहिं जानो । हठकरि टेक आपनी मानो ॥
दश गायन करि कहा बड़ाई । अहिर जाति सब एकहि माई ॥
महाढीठहरि मानत नाहीं । वनमें झगरत गहि गहि बाहीं ॥
सखा भीर सँग लीन्हे डोलैं । बन कुञ्जनमें करत कलोलैं ॥
नेकुसकुच शंका नहिं आनै । सोई करत जो कछु मन मानै ॥
यह सुनि कहत नंदकी नारी । कहत गैलकी बात इहांरी ॥
और चली कह इहां जातकी । सुहिरिस सुनिअनमिलतबातकी ॥
कहां बसत तुम कहां कन्हाई । कब हरिबाँह गही बन जाई ॥
कहत बात नहिं नेकलजाहू । सुनिहैं कहीं तिहारे नाहू[1] ॥
मेरो कान्ह अबहिं अति बारो । तुम नहिं अपनी ओर निहारो ॥
ऐसी बात कहतिहो आई । झूंठो दोष सह्यो नहिं जाई ॥
नेकुनहीं डर करत ईशको[2] । मनो भयो हरि वर्ष बीशको ॥
दोहा–धन्य धन्य तुम कहति हौ, मोको आवति लाज ॥
माखन मांगत रोय हरि, दोष देति बिन काज ॥
सो०–सुनहु महरि तुम बात, हरिसीखे टोना कछू ॥
बनहिं तरुण ह्वै जात, बालकहे आवत घरहि ॥
एक दिवस किन देखौ जाई । बनमें तरुकी ओट छिपाई ॥
हैं हरि दशकै बीश वरषके । देखहु अपने नयन निरखिके ॥
जादु चली मैं सब देख्यो है । एक एक दिन करिलेख्यो है ॥

१ तुम्हारे पति । २ परमेश्वरको ।

दश अरु बीश बनावन आई । ढीठ लगावति है वरमाई ॥
जराहिं बराहिं ये आंख तुम्हारी । जो हरिको नहिं सकत निहारी ॥
आप करत ढिग चरचाजाई । मोको आंखि दिखावन आई ॥
अहो महरि कहिये का तुमसों । कहे बिलग मानतहौ हमसों ॥
सुतकी कानि मानि तुम लीनी । गारी कोटिक हमको दीनी ॥
हमें कहा मोहन प्रियनाहीं । जीवहु युग युग हरि ब्रजमाहीं ॥
कहा करैं जब बहुत खिझावें । तब हम तुमहिं कहनको आवें ॥
भलो बोध हमको तुमकीनों । उलटहिदोष हमारो दीनों ॥
सुतको हटकत नेक नमाई । हमहीं सो रिस करतिसदाई ॥

दोहा—कहा करौं तुम आय सब, कहत अटपटी बात ॥
मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात ॥
सो०—मन आपन गुणिलेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नहिं ॥
समुझि उरहनो देहु, ऐसी मोसों मति कहौ ॥

महरि वचनसुनि ग्वालिनि सगरीं । निर उत्तरह्वै घरको डगरीं ॥
यह यशुमति गोपिनको झगरो । कृष्ण प्रेम रस सागर सिगरो ॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई । ब्रजवासी जनजीवनगाई ॥
ब्रज घरघर सबहिन सुनिपाई । मोहन दधिको दानलगाई ॥
सबगोपिनमिलि रुचि उपजाई । जैये दधिलै जहां कन्हाई ॥
यह अभिलाष सबन मनबाढ्यो । राख्यो गुप्त न बाहिरकाढ्यो ॥
श्याम सखन को लियो बुलाई । कह्यो सबनसों यों समुझाई ॥
कालिह उठहु सबग्वाल सबेरे । चलिकै वृन्दावन मग घेरे ॥
प्रातहि यमुनाके तट जाई । तरुचढि चढि सबरहौ लुकाई ॥
ब्रज युवती मिलि आपसमाहीं । नित प्रतिदधि बेंचनको जाहीं ॥
राधा चन्द्रावलिको यूथा । ललतादिक नागरी बरूथा ॥
गोरसलै जबहीं सब आवें । घेरि सबन तब दान चुकावें ॥
दोहा—सुनि मन हर्षे ग्वाल सब, भली कही हरि बात ॥

१ चलीं । २ इच्छा । ३ झुंड ।

सांझ भई चलिये सदन, कालिह उठहिंगे प्रात ॥
सो०—निज घर घर सब आय, मात पिताको सुख दियो॥
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खायकै ॥

प्रात उठे सब गोप कुमारा । जहँ तहँ बोले खुले किवाँरा ॥
सुनी श्याम ग्वालन की बानी । जागतहू सोवत पटतानी ॥
नंदद्वार बैठे सब आई । आवहु उठि घनश्याम कन्हाई ॥
ग्वाल टेर सुनि यशुदामाता । दिये जगाय श्याम सुखदाता ॥
मात वचन सुनि अति अतुराई । उठे सेजते कुँवर कन्हाई ॥
लैपट पीत मुकुट शिरधारी । मुरली करलै चले मुरारी ॥
सखन सहित यमुनातट आये । कहत सबनसों अतिसुखपाये ॥
भली करी उठि प्रातहि आये । मैं जानत सब तुमनबुलाये ॥
आवतहैहैं अब ब्रजभामिनि । घर घरते दधि लै गजगामिनि ॥
हँसे सखा सब तारि बजाई । मनमें अतिआनन्द बढ़ाई ॥
कहत सबनसों हँसिनँदलाला । जाय द्रुमन सब चढ़ौ गुवाला ॥
मुँहमूंदे सबरहौ छिपाने । जिहि विधि युवति नकोऊजाने ॥

दोहा—जबहीं जान्यो युवति सब, आईं वनहि मझाय ॥
कूदिपरो तब द्रुमनते, दे दे नंद दुहाय ॥
सो०—शंख शब्द घहराय, कीजै मुरली शृंग धुनि ॥
डरन जाहिं अकुलाय, जैसे युवती गण सबै ॥

घेर सखन इहि विधि डरपाई । बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई ॥
नितहिं हमारे मारग आई । दधिमाखन बेंचत हौ जाई ॥
हरिको दान मारि नित जावो । आजदिये बिन जान न पावो ॥
ऐसे श्याम सखन समुझावत । अपने मनकी प्रीति बढ़ावत ॥
ब्रजबनितन लखिकै सुख पाऊं । तुमसों नाहिंन कछू दुराऊं ॥
यहि मारग बेंचन दधि आवैं । अन्तर गति मोसों हित लावैं ॥
आवत हैहैं बन सब बाला । करत बात ऐसे नँदलाला ॥

प्रात उठीं सब गोप किशोरी । +चित्र विचित्र वसन तनु धोरी॥
अंग अंग आभूषण साजैं । केश सँवारि चारुदृग आँजैं ॥
अँगिया अंग अनूप सँवारी । चित्र विचित्र बसन तनु धारी ॥
वेंदी भाल मांग मोतिनकी । अंग अंगछबि नग ज्योतिनकी ॥
दर्शनदमक अधरन अरुणाई । चिबुकनीलकनकी छबिछाई ॥
दोहा-गोरे तनु मुख छबि सदन, नव यौवन ब्रज नारि ॥
लै लै दधि निकसीं सबै, सुखमाबढ़ी अपारि ॥
सो०-ब्रजके खेड़े जाय, भईं ग्वालि इकठौर सब ॥
निज निज यूथ बनाय, दधि मटुकी शिरपर धरे ॥
वेंचन दही चलीं ब्रजनारी । षट्दश सहस गोप सुकुमारी ॥
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई । कहत न एकहि एक जनाई ॥
करत जाहिं गुणगान विहारी । पगनूपुरकी धुनि अति भारी ॥
हरि जानी युवती आवत जब । कह्यो सखन द्रुम जाय चढ़ो अब॥
सुनत श्यामके मुखसों बैना । धाय चढ़ी द्रुम बालक सैना ॥
पञ्च सहस्र सखा समुदाई । जहां तहां द्रुमरहे लुकाई ॥
कछुक ग्वाल सँगराखि कन्हाई । निकसिगये आपुन अगुवाई ॥
ठाढे भये घेरि बनवांटी । लैलै करन सुमनकी सांटी ॥
इहि अन्तर आई ब्रजनारी । देखत बन लाग्यो कछु भारी ॥
पाछेहींते लई हँकारी । कहत तिन्हैं अबहीं तुमहारी ॥
एकसंग जुरिभई तरुणि सब । इत उत चकित चलीं चितवत सब॥
आगे दृष्टिपरे नँदनंदन । मुकुटशीशतनु चित्रित चंदन ॥
दोहा-लिये सखा सँग मग गहे, ठाढ़े यमुना तीर ॥
ठिठुकि रहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकीभीर ॥
सो०-भयो हर्ष उर माहिं, कहत वचन मुख भय सहित ॥
आगे कैसे जाहिं, मगमें ठाढो सांवरो ॥

+ सबकी सुरति श्यामकी ओरी ॥ १ मस्तक । २ दांत । ३ होंठ । ४ ठोडी । ५ पांचहजार । ६ फूलकी छडी ।

कोऊ कहत चलत क्यों नाहीं। कोऊ कहत घरहि फिरि जाहीं ॥
कोउ कहै काकरै कन्हाई। इनहूं सों कहँ जाहिं पराई ॥
कोऊ बोलि उठी ब्रजबाला। लूटिलई हमैं कालिह गुपाला ॥
अतिही ढीठ भयोहै कान्हा। मांगतहै गोरस को दाना ॥
सुनि ऐसो मोहन को ख्याला। घरको फिरीं सकल ब्रजबाला ॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई। कूदहु विटपन ते झहराई ॥
जात फिरीं युवती ब्रजगावहिं। घेरिलेहु कोउ जान न पावहिं ॥
तब ग्वालन वनमें चहुँधाई। झर झराय तरु डार हलाई ॥
शंख मृदंग मुरलि करतारी। कीने शब्द सबन यक बारी ॥
चकित द्रुमन चितईं सब बाला। डारन डारन देखे ग्वाला ॥
कूदि कूदि तरुतरुते धाई। घेरिलई तरुणी सब जाई ॥
कहा नितहि दधि बेचन जाहू। आजपकरि पायो सब काहू ॥

दोहा—दान लगत ह्यां श्यामको, सो सब लेहिं चुकाय ॥
अब तौ देहैं जान तब, तुमको नन्ददुहाय ॥

सो०—दधि लै जात प्रभात, आवति हौ निशि बेंचिकै ॥
दान मारि नित जात, भली करत यह बात नहिं ॥

ठाढे यमुना तीर कन्हाई। जाहु चलो निज दान चुकाई ॥
यहसुनिविहँसिकह्योइकग्वाली। नई बात इक सुनहु रि आली ॥
मांगत दधिको दान मुरारी। सिखै पठाये हैं महतारी ॥
सो ये सखा लेन सब आये। यमुना तट ते श्याम पठाये ॥
काहेको सब मिलि इतराहू। सूधे अपने मारग जाहू ॥
दधि माखन कछु चाहत कोऊ। सूधे मांगिलेत किन सोऊ ॥
सूधी बात कहो सुख होई। बांधत कहा अकाश खरोई ॥
दान बजार हाटमें पावो। यह निज कान्हैं जाय सुनावो ॥
बोले सखा सुनहुरी ग्वारी। हमजानी अब बात तुम्हारी ॥
गांव बसेकर यह दुख होई। नहिं सकात चीन्हे सों कोई ॥

१ भाजकै। २ वृक्षवृक्षते। ३ दुकान।

मारग अपनो दान उगाहू । कहत मांगि किन हम पै खाहू ॥
हाट बाट सब हमहिं उगैहैं । अपनो दान तुमहुंपै चैहैं ॥

दोहा–लेखो करि सब कान्हको, दीजै दान जगात ॥
चली जाहु सुखसों डगर, फेर कहै कोउबात ॥

सो०–तुमको कैसो दान, कौन कान्ह मांगत कहा ॥
परिहै अबहीं जान, रोंकत हौ बनमें तियन ॥

आये तबहीं निकट कन्हाई । संग सखनकी भीर सुहाई ॥
बोलि उठीं लखि नागरि सगरी। कहा श्याम तुम करत अचकरी॥
नारिन को रोंकतहौ बनमें । जैहै बात दूरिलौं क्षणमें ॥
आजहि दान पहिरि तुम आये । कहा छापिकणि तुमहिं पठाये ॥
वैसी चाल चलो नँदलाला । चलत बाप तुम्हरो जिहिचाला॥
वृथा न रारि करहु बनमाहीं । छांड़ि देहु दधि बेचन जाहीं ॥
कहत कान्ह दधि दान नदैहौ । बिना दान दीन्हे नहिंजैहौ ॥
लेहौं छीनि दूध दधि माखन । देखत ही रहिहौ सब आंखन ॥
मात पितालों उघटत बानी । नहिं जानत मोको दधिदानी ॥
जात नितहि नित बेंच चुराई । सब दिवसनको लेहुँ भराई ॥
मांगत छाप कहा दिखराऊं । काको तुमको नाम बताऊं ॥
ऐसो को मोको नहिं जानत । एक नहीं मोको तुम मानत ॥

दोहा–नीके हम जानत तुम्हैं, गोद खिलाये कान्ह ॥
वे दिन अब बिसराय सब, भये जगाती आन॥

सो०–करहु नहीं लगि बात, जो निबहै सुख पाइये ॥
ऐसी क्यों सहिजात, नितहि हमैं दधि बेंचनो ॥

अजहूं मांगिलेहु दधिदैहैं । खाहु सहज में हम सुख पैहैं ॥
दान वचन तुम हमहिं सुनायो । यहै हमैं सुनिकै नहिंभायो ॥
होत अबार जान अबदीजै । नईरीति मोहन नहिं कीजै ॥
गोरसलेत मात सब कोई । बहुरि धरयो रहिहै ऐसोई ॥

दान दिये बिन जान न पैहौ । जबदैहौ तबहीं सबजैहौ ॥
तुमसों बहुत लेन है हमको । सो नहिं अबहिं सुनावत तुमको ॥
नितहि हमारे मारग आवत । मोको कबहूं नाहिं जनावत ॥
दिन दिन को लेखो भरिलैहौं । अबतौ तुम्हें जान तबदैहौं ॥
ऐसी हठ कह करत मुरारी । बनमें रोकत नारि परारी ॥
आये दान पहिरि तुम कापै । चलहु न हम सब चलिहैं तापै ॥
तुम अपने घरहीके राजा । सबको राजा कंस विराजा ॥
जो कहुँ सुनत नेकुसी पैहै । बहुरि सँभारि अबहिं पगिजैहै ॥

दोहा—हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गांव ॥
ऐसी विधि जो कहत हौ, को रहिहै यहि ठांव ॥
सो०—करत फिरत उत्पात, लिये सखा सँग संतके ॥
नाहिंन नेक डरात, कठिन कंसको राज्यहै ॥

यह सुनि कान्ह उठे रिसि याई । लीन्हो कछु दधि दूध छिनाई ॥
बसन छोर तरु सों उरझाये । कछु दधि भाजन भूमि लुढाये ॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो । आजहि मोहिं हुजूर बुलावो ॥
मारौं एक पलकमें वाही । मोको कहा बतावत ताही ॥
अब तौ मोसों वैर बढायो । लेहौं दान आपनो भायो ॥
मेरे हठ क्यों निबहन पैहौ । देखो अब धौं कैसे जैहौ ॥
तुम देखत रहिहौ हम जैहैं । गोरस बेंचि बहुरि घर ऐहैं ॥
बोले ज्वाब न तुमको दैहैं । नेकहु तुमसे नाहिं डरैहैं ॥
सुनि गृहते जन ऐहैं जबहीं । नहिं संभारि सकिहौ हरितबहीं ॥
एक बूंद गोरस नहिं पैहौ । देखत ऐसेही रहिजैहौ ॥
धरिकै यशुमतिपै लैजैहैं । तहां श्याम पुनि वचन न ऐहैं ॥
मानो कह्यो हमारो अबहूं । हम पै दान न पैहौ कबहूं ॥

दोहा—गृहजन कहा बतावहू, कंसहि लेहु बुलाय ॥
देखतही तुम सबनके, पूजा करौं बनाय ॥

१ पराई । २ पुकारैंगी ।

सो०-जैहौ धौं केहि भाँति, अब देखहुँ गो मैं तुम्हैं ॥
बात कहत अनखाति, सूधे देती दान नहिं ॥

जो मानत नहिं कंसहि राजा । तौ अब भये तुमहिं ब्रजराजा ॥
तौ सिंहासन बैठत नाहीं । गाय चरावत कत बनमाहीं ॥
मोर पखनको मुकुट उतारो । नृप किरीट माथे पर धारो ॥
पहिरत कहा गुंजके हारा । नृप भूषण किन करत शृँगारा ॥
छत्र चमर शिर ऊपर राजैं । तजहु मुरलि अब नौबत बाजैं ॥
हमहूं यह लखिकै सुखलीजे । संगहि संग काज कछु कीजे ॥
झगरत कहा दहीके काजा । लखि हमको उपजतहै लाजा ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी नीकी । तुम्हरे चित रजधानी नीकी ॥
मेरो दासन दास कहावै । सपनेहूं यह ताहि न भावै ॥
कंस मारि शिर छत्र धराऊं । कहा तुच्छ यह साध पुराऊं ॥
ब्रजमें मेरो राज सदाई । और इहां काकी ठकुराई ॥
तुम कछु राज बड़ो करि मानो । मेरी प्रभुताको नहिं जानो ॥

दोहा-हमहूं जानतहैं तुमहिं, लरिकाई ते कान्ह ॥
काहेको अपने वदन, कीजत बहुत बखान ॥

सो०-फिरत चरावत गाय, कांधेकामरि कर लकुट ॥
देखीहै ठकुराय, कत बढि बढि बातैं करत ॥

यह कमरी कमरी तुम जानो । जितनी बुधि तितनी अनुमानो ॥
यापर वारौं चीर पटम्बर । तीन लोककी यह आडम्बर ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारी । सो कमरी कत निंदत ग्वारी ॥
कमरीके बल असुर सँहारौं । कमरीते संतन उद्धारौं ॥
या कमरीते सब सुख भोगा । जाति पाँति यह मम सब योगा ॥
सुनतहँसीं सब ब्रजकी बाला । यह तुम सांच कही गोपाला ॥
धनि धनि यह कामरी तुम्हारी । सब विधि तुम्हैं निबाहन हारी ॥
यहै ओढ़िकै गाय चरावो । यहैसेजकरि भूमि बिछावो ॥

---

१ खिरमिटी । २ मालकी ।

याहीते वर्षाऋतु टारो । शिशिरशीत याते निर्वारो ॥
याते ग्रीषम घाम बचावो । यहै उठगनी शीश बनावो ॥
यहै जाति यह गृह यहटाटी । यहै सिखावत सब परिपाटी ॥
हमजो कहन चहतही तुमसों । कही सो तुम अपने मुख हमसों ॥

दोहा–कहांजात अपनी प्रगटि, नीके हमैं हँसाय ॥
तापर मांगत दान दधि, युवतिन रोक कन्हाय॥
सो०–कामरि ओढ़नि हारि, तुम्हैं न छाजत पीत पट॥
कारे तनु पर चारि, कारी कामरि सोहई ॥

मोसों बात सुनो ब्रजतिय सब। सत्य कहत उपमा न जगत सब॥
बालक अरु तिय मुख नहिं दीजे । इनसों बहुत हेतु नहिं कीजे ॥
मूढ चढत नेकहि चुचकारैं । जो मनकरे सोई करि डारैं ॥
सोई गुण प्रगटत तुम जाहू । कतक कहत मैं तुम अठिलाहू ॥
जानहु कहा हमैं तुम ग्वारी । सदा छँछकी बेचन हारी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानैं । नंद महरके सुत पहिचानैं ॥
धेनु दुहत पुनि तुमको देखे । गाय चरावतहू बन पेखे ॥
चोरी करी वहौ पुनि जाने । खिरिका खोलत फिरत बिराने॥
ये ढँग छांडि भये अब दानी । यहै बात अब सबहिन जानी ॥
और सुनहु यशुमति जब बाँधे । ऊखल सों दोऊ भुजसाधे ॥
तब सहाय करि हमहिं बचाये । करके बंधन जाय छुड़ाये ॥
जानत यहै रहत ब्रज माहीं । हम ते दूरबसत कछु नाहीं ॥

दोहा–कहत कहा तुम बावरी, हँसी लगत सुनिबात॥
कब जनमत देख्यो हमैं, कौन मात को तात ॥
सो०–कबै चराई गाय, कत चोरी पकरयो हमैं ॥
कब बांधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥

तुमजानहु सुहिं यशुमति जाये । यशुमति नंद कहाँते आये ॥
मैं पूरण अविगति अविनाशी । बांधे सब मायाकी फांसी ॥

१ शरदीको । २ गरमीमें ।

यह सुनि हँसीं सकल ब्रजबाला । ऐसेउगुण जानत गोपाला ॥
जैसे निदर्‌यो तुम सब काहू । तैसे निदरत मात पिताहू ॥
तुमको यशुमति महर न जाये । तौ तुम कहौ कहांते आये ॥
घर घर माखन चोर्‌यो नाहीं । बांधे मात न ऊखल माहीं ॥
हाहा करि हम नाहिं छुडाये । ग्वालन संग न वच्छ चराये ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी । येसब बातें झूंठ तुम्हारी ॥
भक्त हेतु जन्मत जगमाहीं । कर्म धर्मके मैं वशनाहीं ॥
योग यज्ञ मनमें नहिं ल्याऊं । दीन गोहारि[1] सुनत उठि धाऊं ॥
भावाधीन रहौं सब पासा । और नहीं कछु मोको त्रासा ॥
ब्रह्मा कीट आदि[illegible]हीं । व्यापक हौं समान सब ठाहीं ॥

दोहा–कहां कहांकी बात कहि, डरपावतहौ नारि ॥
स्वर्ग पतालहि एक करि, बांधत बारहिंबार ॥

सो०–इहां सुनावत काहि, जो लायक तो आपको ॥
कौन प्रकृति यह आहि, वनमें रोकत हौ तियन॥

केतक दधिको दान कन्हाई । जिहि कारण युवती अरुझाई ॥
दधि माखन सबही तुमलेहू । रीती जान हमैं घरदेहू ॥
जो तुम याही में सुख पावो । काहेको बहुबात बनावो ॥
दधि माखन कह करौं तिहारो । सकल बणिजको दान निवारो ॥
जो जो बणिजनितहिं तुमलावो । लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहौ । जबलगलेखो मुहिं न बुझैहो ॥
करत बणिज तुम नये बनाये । नित उठि जात जगात बचाये ॥
सुनि वाणी हरि नागर नटकी । दैदै सैन युवति सब सटकी ॥
मनहीं मन अति हर्ष बढ़ाई । बोलीं हरि सों सब मुसकाई ॥
ऐसे कहौ बणिजको अटके । अबलौं श्याम कहां तुम भटके ॥
हमहूं कहि मन मांझ लजाई । कह मांगत दधि दान कन्हाई ॥
बणिजहेतु रोकी अब जानी । तबहीं क्यों न कही यह बानी ॥

---

१ पुकारि ।

दोहा–हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा बणिज हम पास॥
कहौ श्याम सो नाम धरि, देहिं दान हम तास॥
सो०–भूले कहा कन्हाय, बणिज कहा युवती करत॥
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये॥
कहौ तुमहिं बूझत कह हमहीं। लै लै नाम बतावो तुमहीं॥
तुम जानत मैं हूं कछु जानौं। तुमते माल सुनाहिं छिपानौं॥
डारि देहु जापर जो लागै। फिर न कछू तुमसों कोउ मांगै॥
इतनेहीं को लरत वृथाहीं। देखौ समुझि सबै मन माहीं॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी। समुझतहौ कछु इनकी बानी॥
इनहीं सों बूझौ सब कोऊ। कहा बतावत सुनिये सोऊ॥
हरिकी गूढ मधुर रस बातें। सुनि सुनि सुख पावत सब जातें॥
कोइ काहूको भेद न जानैं। लोक लाज डर सब कोउ मानैं॥
मन मन हर्ष भई सब सुंदर। जानैं हारि सब रसिकपुरंदर[1]॥
तब बोलीं हँसिकै ब्रजबाला। कहत नाहिं क्यों तुमहिं गुपाला॥
कहा माल देख्यो हम पाहीं। जिहि कारण रोकी बनमाहीं॥
बैल लदाये देख्यो हमको। कहौ हमैं बूझतिहैं तुमको॥
दोहा–लौंग जायफर लायची, गिरी छुहारो दाख॥
कहलादे हम जात हैं, सो कहिये किन भाख॥
सो०–दीजे बणिज बताय, ताकी देहिं जगात हम॥
तुमको नंददुहाय, जो अब वेग कहो नहीं॥
कौन बणिज कहि मोहिं बतावो। लोन मिरच कहि कहि बहँकावो॥
तुमतौ माल गयंद[3] लदायो। महिष वृषभ कहि मोहिं सुनायो॥
बड़े मोलकी वस्तु जो होई। कैसे दुरत दुराये सोई॥
मो आगे तुम कहा छिपावो। देहौ दान जान तब पावो॥
भये चतुर हरि तुम अब जानी। दधिको दान मेटि यह ठानी॥
देती इहां कछुक हम छोहन। खाते लै ग्वालन सँग मोहन॥

१ छिपीभई। २ रसिकनकेइन्द्र। ३ हाथी।

इन बातन अब खोयो सोऊ। यह कहि युवति हँसीं सब कोऊ॥
श्याम कही मैं जानत तुमको। सूधे दान न देहौ हमको॥
दधि माखन तौ लेहौं छोरी। झटिकै भुजगहि गहि झकझोरी॥
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी। कहत भये तुम ढीठ दुधारी॥
हरि रिसकरि अंकम गहि लीन्ही। इहि मिस भेंट प्रेमकी कीन्ही॥
टूटि गई प्यारी उरमाला। तब घेरे युवतिन नँदलाला॥
दोहा—गहि गहि अंकम लेत सब, झगरत रसहि बढाय॥
हँसत सखा सब तारिदै, पकरे गये कन्हाय॥
सो०—हांक दई नँदलाल, तबहिं सखन ललकारिकै॥
धाय परे सब ग्वाल, लीन्हे श्याम छुड़ाय तब॥
रिसकरि बोले ग्वाल सयाने। भई ढीठ हरिको नहिं जाने॥
हम भईं ढीठ भलो तुम कीन्हो। देहौं ज्वाब दई को चीन्हों॥
बन भीतर रोंकी सब बाला। देखौ हमैं कियो जंजाला॥
बात कहनको एहू आवत। बडे सुधर्मा आप कहावत॥
ऐसी लाख सखा की भरि सब। आवहुगे नृपजीत सबै तब॥
जानी बात तुम्हारी सबकी। तजहु ख्याल लरिकाई तबकी॥
जो युवतिनको हाथ लगैहो। कियो आपनो तौ तुम पैहो॥
जो यह बात घरन सुनि पैहैं। मात पिता हमको कह कैहैं॥
तोर्यो मुक्ताहार कन्हाई। घरहिं कहा कहिहैं हम जाई॥
आपन भई सबै तुम भोरी। हरिको दोष लगावत गोरी॥
जब तुम झपटी पीत पिछोरी। तब इन मोतिनकी लरतोरी॥
मांगत दान श्याम कबसेंती। तुम अठिलात ज्वाब नहिं देती॥
दोहा—लेहिं छोरि सबते अबहिं, देखतही रहिजाहु॥
झक झोरा झोरी करत, नँदनन्दनहिं डराहु॥
सो०—को त्रिभुवनके माहिं, मोहनकी सरि दूसरो॥
तुम सब जानत नाहिं, नँदनन्दन ब्रजराज सुत॥

१ कंसको। २ समान।

कहा बड़ाई इनकी सरमैं। इनको जानति नीकि कर मैं ॥
नृपति त्रास बसुदेव निकारे। नंद यशोमतिने प्रतिपारे ॥
आयेहैं शुभ घरके माहीं। काहू बदत ताहिते नाहीं ॥
पहिले जब उन भुजाङ्कोरी। तब हम झटकी पीत पिछौरी ॥
याते ढीठ कही तुमको हम। श्यामहिं झिरकन हार भई तुम ॥
इतने पर मानत नहिं हारी। तबते हमैं देतहौ गारी ॥
बहुत सही हम बात तुम्हारी। वणिज करत अरु झगरत ग्वारी॥
ब्रज ऊपर मन मोहन दानी। अबलौं तुम यह बात न जानी ॥
बोलि उठे तब कुँवर कन्हाई। अब नहिं छोडौं नंद दुहाई ॥
अब लौ दांव आपनो लेहौं। तबहीं जान सबनको देहौं॥
कौन बात यह कहत कन्हाई। मांगत कहा जान नहिं जाई ॥
फिरि फिरि करि करि नंद दुहाई। डरपावतहौ हमको आई ॥

दोहा–डरपावहु तुम जाय तिन्ह, जो कोउ तुम्हैं डराहिं॥
यहँ डरपावत कौनको, तुमते घटि हम नाहिं ॥
सो०–जैहैं यशुमति पाहिं, तोन्योहार भली करी ॥
यहौ बनत पै नाहिं, इतनो धन कहँ पाइहौ ॥

एक हार मोहिं कहा बतावो। सब अँग भूषण काहि दुरावो ॥
मोती मांग जराऊ टीको। करणफूल बेसर नगनीको ॥
कंठ शिरी दुलरी तिलरीगर। तापर और हार जो चौसर ॥
सुभग हमेल बिजोटा बाजू। कंकण पहुँचिन मुँदरिनसाजू ॥
कटि किंकिणि नूपुर पग देखौ। जेहरि बिछिया ये सब लेखौ ॥
शोभा साज और अँगमाहीं। सबको नाम लेत क्यों नाहीं ॥
याहुमें कछु बांट तुम्हारो। अचरज आय सुनोरी भारो ॥
भूषण देख न सकत हमारो। याही लिये भयो घटवारो ॥
आपनहूं कछु दई गढाई। महरि यशोमतिके नँदराई ॥
आई पहिरि जितो हम याहीं। याते दूनोंहै घरमाहीं ॥

१ व्यापार २ कमर।

देखि परत कछु बहुत लुभाने । बनधौं सूनो लखि ललचाने ॥
बाँटि कहा तौ लौं सब मेरो । जौ लौं तुम नहिं दान निबेरो ॥

दो०–आभूषणको कह कहत, बहुत वस्तु तुम पास ॥
मानौं मैं जानत नहीं, सो किन कहत प्रकाश ॥

सो०–लैहौं सबको दान, समुझि लेहिंगे बांटि पुनि ॥
पैहौ तबहीं जान, मैं तुमसों सांची कहत ॥

भये श्याम ऐसे रस नागर । युवतिनमें अब होत उजागर ॥
काल्हिहि गाय चरावन जाते । छाक मांगि ग्वालन सँग खाते ॥
कांधे कामरि लकुटी हाथा । बनमें फिरत बछरुवन साथा ॥
आज पीतपट¹ कटि कसि आवे । लैकर लकुटी बड़े कहाये ॥
भये कछू अब नवल सुजाना । मांगत युवतिनसों वह दाना ॥
देहौ दानकि झगरतिहौ तुम । बहुत तुम्हारी बात सुनी हम ॥
प्रथम दान जन जाल निवरिये । तापाछे तुम हमहिं निदरिये ॥
कहत कहा निदरेहौ तुम । सहजहिं बात कहति तुमसों हम॥
आदिहिते तुमको पहिचानैं । दान कहा सो हम नहिं जानैं ॥
ग्वालिनि चलीं सबै रिस करि करि। दधि मटुकी माथे पर धरि धरि॥
तव हरि गहि अंबर झरकारी । जाति कहां हौरी बनिजारी ॥
इतनो वणिज लिये तुम जाहू । बिना दान क्यों होत निबाहू ॥

दोहा–नाम तुम्हारे बणिजके, सब मैं देहुँ बताय ॥
देहु दान तब मोहिं तुम, देखहु सब ठहराय ॥

सो०–सब क्यों छोड्यो जात, एक होय तो छोड़िये ॥
तुम बिचारि यह बात, देखहु अपने चित्तमें ॥

एती वस्तु लिये तुम जावो । दान देति मेरो खिजरावो ॥
मत्तगयंद² तुरंगम³ तुमसों । कैसे दुरत दुराये हमसों ॥
हंस मोर केहरि⁴ मृग वारे । कनक कलश मदरससों भारे ॥
चमर सुगंध कपोत⁵ कीर⁶ बर । कोकिल विद्रुम⁷ वज्र⁸ धनुष शर ॥

१ पीतांबर । २ हाथी । ३ घोड़ा । ४ सिंह । ५ कबूतर । ६ तोता ।
७ मूंगा ८ हीरा ।

ऐतौ धन खग मृग तुम पाहीं । कैसे निबहत दान बिनाहीं ॥
सुनि यह चकित कहति ब्रजबाला । कहा बतावत तुम नँदलाला ॥
तिनको नामलेत हम पाहीं । जो हम स्वप्ने देख्यो नाहीं ॥
कहां तुरंगम गज हम पाये । कब हम कंचन कलश गढ़ाये ॥
मान सरोवर हंस रहाहीं । चमर धनुष शर कहा कहाहीं ॥
ये सब हम पै कहा बतावो । जहाँ होय तहँ दान चुकावो ॥
इतनो सबै तुम्हारे पाहीं । करि विचार देखौ मनमाहीं ॥
अपने सब अँग अंग निहारो । यौवनरूप औरहै न्यारो ॥

दोहा—करहु निबेड़ो बेग सब, काहे करत अबेर ॥
कहो तुम्हें कछु हम कहैं, घरको जाहु सबेर ॥
सो०—दीजे दान चुकाय, अब जान्यो अपनो बणिज ॥
कहौं फेरि समुझाय, जो कछु धोखो होय चित ॥

चमर चिकुर[1] भ्रू[2]धनुष सँभारे । शर कटाक्ष मृग दृग[3]कजरारे ॥
कंठ कपोत कोकिला बानी । रद[4]हीरा शुकनाक बखानी ॥
अधर सधर विद्रुमसो जानो । हैमयूर घुंघटपट मानो ॥
कंचन कलश उरोज[5] निहारो । यौवन मदसों भरो विचारो ॥
कटि[6]केहरिके रूप सुहाई । हंस गयंद चाल छबिछाई ॥
सौरभ[7] अंग सुगंध सुहायो । यौवन रूप न जात बतायो ॥
इतनो है सब वणिज तिहारो । होय अंशसो देहु हमारो ॥
खरी किये निबहौगी कैसे । लेहौं दान देहुगी जैसे ॥
यह सुनि हँसि बोलीं ब्रजनारी । अब समुझीं हरि बात तुम्हारी ॥
मांगत ऐसो दान कन्हाई । जानि परी प्रगटी तरुणाई ॥
याही लालच अंक भरतहौ । पुनि पुनि गहि आंचर झगरतहौ ॥
अपनी ओर देखितो लीजै । तापाछे बरियाई कीजै ॥

दोहा—याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन संग ॥
घेरतहो युवतीनको, प्रगट्यो अंग अनंग[8] ॥

---

१ बार । २ भौंह । ३ नेत्र । ४ दांत । ५ स्तन । ६ कमर । ७ सुगन्ध ।
८ कामदेव ।

सो०--बैठ रहौ घर जाय, यह मति चितमें मत धरौ ॥
घटि मर्यादा जाय, ऐसी बातन सौं लला ॥

यह सुनि विहँसि कह्यो वनमाली। कत हम पर रिस करत गुवाली॥
सुधे हम इक बात बखानी । तुमकत शोर करत अनखानी ॥
कबहुँ घटावसि हौ मर्यादा । कबहूं जोइ सोइ करत विवादा ॥
प्रातहिं ते झगरत विन काजे । दान निबेर जात नहिं साज ॥
हरि यों कबते भये सयाने । उलटहिं तुम हम पर सतराने ॥
बेटी बहू बड़े घरकी हौ । कत विलंब वनमें करती हौ ॥
बूझिय तुमसों हम जो बखाने । सो तुम कह आगे सतराने ॥
कहिये मोहन बात विचारी । कहवावत सर्वज्ञ विहारी ॥
परगट ऐसो दान सुनावत । हमरो ब्रज उपहास करावत ॥
परै बात महराने जाई । तुमहिं लाज कै हमहि कन्हाई ॥
ब्रजमें जो ये बात सुनैंगे । जाति पांतिके लोग हँसैंगे ॥
जान देहु अब हमहिं गोपाला । कहियो प्रात फेरि नँदलाला ॥

दोहा-बोलि उठ्यो इक सखा तब, सुनहु ग्वालिनी बात
प्रीति करत नँदलालसों, कत बावरी लजात ॥

सो०--हरि सँग करहु विहार, नवल श्याम नवला तुमहुँ॥
हँसनदेहु संसार, भलो मनावो कान्हको ॥

सुनि बोलीं ब्रजयुबति रिसाई । कहवावत यह बात कन्हाई ॥
आपुन यौवनदान बनावत । तापर जोइ सोइ सखन सिखावत ॥
वनमें सखन घेरि बैठाई । करत श्याम तुम अति लँगराई ॥
भूलिगये वे दिवस कन्हाई । घर घर माखन खात चुराई ॥
खीझतही हगनीर चुचाते । डरडारत घरको भजिजाते ॥
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा । हमहिं छुड़ाय लिये तब गोदा ॥
अब भये बड़े बडी चतुराई । तातें यौवन दान सुनाई ॥
लरिकाई की बात बखानें । कैसी भई कहा हम जानें ॥

१ ढीठता । २ हृदय ।

कब धौं खायो माखन चोरी । मैया धौं बाँध्यो कब डोरी ॥
केहु ताकी सुधि नहिं जाने । मान अमान न तब हम माने ॥
भले बुरेको ज्ञान न होई । अपनो पर कछु समझ न कोई ॥
खेलत खात गई हिय माहीं । बालपनेके दिवस बिहाहीं ॥

दोहा–अपनी सुरति करत नहिं, न्हात यमुनके तीर ॥
कदम्ब चढाये सबनके, जब मैं भूषण चीर ॥
सो०–जलमें रहीं छिपाय, बिना बसन नाँगी सबै ॥
पुनि पुनि हहा कराय, दिये वसन मैं सबन तब ॥

बिना बसन बाहर सब आई । हाथ जोरि मोहिं विनय सुनाई ॥
कैसी भांति भई तब सबकी । सो सुधि भूलि गई अब तबकी ॥
मोको कहति चोरि दधि खायो । ऊखल सों हम जाय छुड़ायो ॥
भेद बचन जब कहे बिहारी । सुनिकै हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥
कहत भये अति निलज कन्हाई । ऐसी कहत न सकुचत राई ॥
जाहु चले लोगनके आगे । झूठी बात बनावन लागे ॥
करत हँसी तुम सबन सुनाई । निज निज गृह सब कहिहैं जाई ॥
झूठी बात कहा हम जानें । हम तौ सांची सदा बखाने ॥
जैसी भांति भजै मोहिं कोई । मानस मैं ताको तैसोई ॥
जो झूठो मोको तुम जानौ । तौकत मेरे हित तप ठानौ ॥
जो तुम अपने मनये ठानी । मैं अन्तर्यामी सब जानी ॥
अब क्यों इतौ निठुर मन कीनों । काहे दान जात नहिं दीनों ॥

दोहा–दान सुने रिस होतिहै, यह नहिं हमैं सुहाय ॥
भली बुरी अरु जो कहो, सो सहिलेहिं कन्हाय ॥
सो०–छांडि देहु सब जाहिं, सुनिये मोहन लाल अब ॥
भई बेर बन माहिं, मात पिता खिझिहैं हमैं ॥

काहे को तुम करत अबारी । दधि बेचहु घर जाहु सवारी ॥
मैं कहु करौं तुम्हैं यह भावत । लेखो करि नहिं दान चुकावत ॥
शुद्ध सुभाव समुझि सब कोई । लेखो करिदेहौ मोहिंखोई ॥

तब सोइ तुमसों मैं लै लेहौं । तबहीं तुम्हें जान पुनि देहौं ॥
काहेको हम सों हारि लागत । जानि न परत कहा तुम मांगत ॥
बातन कछू जनावत नाहीं । लेखो कहा करत हम पाहीं ॥
निपटहिं परे हमारे ख्याला । इन बातन कह पाव तलाला ॥
अब तुम निपट करी बहुताई । सुनि हँसिहैं ब्रजलोग लुगाई ॥
मारग जानि रोंकहु हम जाहीं । घरते लीजो दान उगाहीं ॥
अबलौं यह कीयो तुम लेखो । हम तुम्हरो विचार सब देखो ॥
मोको ऐसी बुद्धि सिखावत । कर कंकण दर्प्पणहि दिखावत ॥
तुम्हरी बुद्धि दान हमलेहैं । काहेन तुम्हैं जान हम देहैं ॥

दोहा–आपभईहौ चतुर सब, मोको करति गँवार ॥
उगहत फिरिहैं दान हम, ठाढे ह्वै हैं द्वार ॥
सो०–तुम्हैं देहुँ घर जान, फेरि कहो पाऊं कहां ॥
जो नहिं पैहौं दान, नृपहि ज्वाब कह देउँगो ॥

भली भई नृप मान्यो तुम हूं । चलिहैं कंसहिपै अब हमहूं ॥
तबतेलेन कहत हैं दानहिं । नन्द महरकी करिकारि आनहिं ॥
हमहूँ अबलौं ऐसी जानी । भये श्याम घरही ते दानी ॥
अब जान्यो तुम कंस पठाये । नृपते दान पहिरि तुम आये ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बयना । हँसे कछू तिरछे करिनयना ॥
सो छबि निरखि कहत सबनारी । कहा हँसे मुखमोरि मुरारी ॥
सोंह कहो मनहिं जो आई । तुमको यशुमति महरि दुहाई ॥
और सौंह तुमको गोधनकी । सांची बात कहो तुम मनकी ॥
हँसे कहा हमसों कछु रीझे । कैधौं कछु मनही मन खीझे ॥
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला । कहत सुदामासों नँदलाला ॥
यह अचरज इनको तुम हेरो । कहत कहा तुम हँसि मुखफेरो ॥
ऐसी बातन सौंह दिवावत । ताते अधिक हँसी मोहिं आवत ॥

दोहा–तब श्रीदामा तियनसों, बोलि उठ्यो मुसकाय॥

हँसत श्याम तुम समझकै, बूझत सौंह दिवाय॥
सो०--हम न दिवावैं आन,हँसहु तुमहु निज संग मिलि॥
यहै आन सी बान, थोरेमें खिसियात तुम ॥
सहज हँसत नाहिन सकुचैये । नाहिन लोगन सौंह दिवैये ॥
वेहैं दानी प्रभु सबहीके । देहु दान मांगत कबहीके ॥
हम जानत वे कुँवर कन्हाई । प्रभु तुम्हरे मुख अब सुनिपाई ॥
होति नहीं प्रभुता इहि भांती । दही महीके भये जगाती ॥
वे ठाकुर तुम्हरी सेवकाई । जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई ॥
दधि खाये अरु भूषण तोरे । छांडि देहु अब दईनिहोरे ॥
जो कछु बचो सोऊ अब लीजै । वेगहि जान हमैं घरदीजै ॥
तब हँसि बोले श्याम सुजाना । तुम घर जाहु देइ कै दाना ॥
आयो हौं पठयो मैं जाको । देउँ कहा लैकै पुनि ताको ॥
अबहीं पठवै मोहिं बुलाई । तब ताके सन्मुखको जाई ॥
तुम सुख करौ जाय घरमाहीं । नृपकी गारि मारको खाहीं ॥
जब नृपवर मोको अटकावै । तब पुनि तुम विन कौन छुड़ावै ॥
दोहा–लेत नाम मुख नृपतिको, जा मुख निदर्यो जाहि॥
आपुन तो नृप नृपनके, अब कह समुझे ताहि ॥
सो०–लियो कंसको नावँ, ऐसी तुम्हैं न बूझिये ॥
भले श्याम बलि जावँ,जिहि निंदिये तिहि वंदिये॥
जब हम कंस दुहाई दीनी । तब तो नृप पर अति रिस कीनी ॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई । जो तुम ऐसे डरे कन्हाई ॥
कहाकह्यो कछु जान न पायो । कब हम कंसहि शीश नवायो ॥
कब हम नाम कंसको लीनो । कंस त्रास कबधौं हम कीनो ॥
निपट भई तुम ग्वारि गवाँरी । वसत हमारे गाँव मँझारी ॥
कितक कंस जाको हम जानैं । कहा त्रास ताको उर आनैं ॥
तुम्हरे मनै बात यह आवत । कंस नृपतिके हम कहवावत ॥
तो तुम कहौ कौन नृप जाके । आपुन कहवावत हौ ताके ॥

ताको नाम हमहु सुनिपावैं । हमहूं पुनि ताके कहवावैं ॥
या संसार लोक त्रय माहीं । दूजो कंस नृपति ते नाहीं ॥
सो नृप वसत कहां सोइ जानैं । तौ हम सब ताहीको मानैं ॥
यह सुनि हम अब अति डर पायो । कै धौं झूठहि हमहि डरायो ॥

दोहा–जा नृपके हमहैं अरी, कोनहिं जाननताहि ॥
जड चेतन नर नारि सब, तिहूं भुवन वश जाहि॥

सो०–बसत सुमनपुर माहिं, कहँ लगि तिन्हैं प्रशंसिये॥
सब मानतहैं जाहि, तिन पठयो मुहिं पानदे ॥

सुनत गूढ मोहनकी बानी । बोलीं ब्रज सुन्दरी सयानी ॥
जाति तुम्हारे नृपकी पाई । अब कों राखी कछू छिपाई ॥
जैसे तुम तैसे वोऊ हैं । एक रूप गुणके दोऊ हैं ॥
यह अनुमान कियो मनमें हम । एकै दिन जन्मे दोऊ तुम ॥
जैसी प्रजा तैसई राजा । बन्यो भलो अब संग समाजा ॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ । यापटतर कों और न कोऊ ॥
बोलत नाहिन बात सँभारी । ठगति फिरति ठगती तुम सारी ॥
भई ढीठ नहिं नेकु विचारौ । आवत मुख सोई कहि डारौ ॥
अपने गुण औरन पर डारी । जाति जनावत दैदै गारी ॥
हम भईं ठगिनी अरु बटपारी । तुम भये कान्ह सुधर्मा भारी ॥
अपने नृपको यहै सुनावो । ऐसिय चुगुली जाय लगावो ॥
राजा बड़ जान यह पाई । ल्यावहु हम पर भौंह चढ़ाई ॥

दोहा–तुमतो ठग आछे बने, बनमें रोंकी नारि ॥
हमैं कहौ काको ठग्यौ, को हम डाग्यो मारि ॥

सो०–तुमहीं जानत श्याम, यंत्र मंत्र टोना ठगी ॥
ठगत फिरत सब वाम, आपन ढँग औरन कहत॥

मौन गह्यो बातें सच पाई । यहै जानि हम पर चढ़ आई ॥
जो चाह्यो सोई कहि डारो । हम नहिं मानहिं विहग तिहारो ॥

१ पुष्पपुर । २ बडाईकरिये । ३ नारी ।

तुम मोहींको दोष लगायो । मैं तो नृपको पठयो आयो ॥
यौवनरूपलिये तुम इतहीं । आवत हौ इहि मारग नितहीं ॥
लोचन दूतन जाय सुनायो । तब नृप रिस करि मोहिं बुलायो ॥
शैशव महलनते नृप राई । बैठ्यो सिंहासन तरुणाई ॥
तुरतहिं मोहिं दान पहिरायो । दैवीरा तुम पास पठायो ॥
तिनको नाम अनंग भुवाला । उनको दान देहु ब्रजबाला ॥
तिनकी आनि कहत हौं कीने । पैहौ जान दानके दीने ॥
सुनि यह मोहनकी मुख बानी । प्रेम सिंधु युवती मगनानी ॥
काम नृपतिकी फिरी दुहाई । अटक्यो यौवन रूपहि आई ॥
को हम कहां रहति कहँ आई । यह सुधि बुधि तनु दशा भुलाई ॥
दोहा–त्रसित भई डर मदनके, नयन मूंदि धरि ध्यान ॥
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजै सरबसदान ॥
सो०–ऐसे कहि मन माहिं, देह दशा भूलीं सबै ॥
लेहु श्याम बलि जाहिं, यह धन तुम हित संचियो ॥
यौवन रूप नाहिं तुम लायक । सकुचत तुम्हैं देति ब्रजनायक ॥
नवल किशोर रूप गुण आगर । अहो श्याम सुन्दर बर नागर ॥
यह यौवन धन तुमढिग ऐसे । जलधि निकट जलकणिका जैसे ॥
ध्यान मग्न इहि विधि ब्रज नारी । मनहीं मन विनवत बनवारी ॥
अंतर्यामी हरि सब जानैं । मनहीं की करणी सब मानैं ॥
मनहीं सबन मिले सुखदाई । तनुकी सुरति सबन तब आई ॥
खुलि गये नैन ध्यान ते तबहीं । देखे मोहन सन्मुख सबहीं ॥
सब जान्यो हम बनमें ठाढी । सकुचि गईं अति अचरज बाढ़ी ॥
कहति परस्पर आपस माहीं । कहां हती हम जानत नाहीं ॥
श्यामबिना यह चरित करैको । ऐसी विधि करि मनहिं हरैको ॥
रहीं थकित सी सब ब्रजनारी । बोलि उठे तब कुंजबिहारी ॥
कहा ठगीसी हो ब्रजबाला । परयो कहा डर शोच विशाला ॥
दोहा–करयो दान लेखो कछू, रहीं जहां तहँ शोच ॥

१ बालक अवस्था । २ कामदेव । ३ समुद्र ।

प्रगट सुनावो सो मुहीं, दूरि करौ संकोच ॥
सो०–बहुरि न रोंकै कोय, यावनमें कोऊ तुम्हैं ॥
निशि बासर भय खोय, सुख सौं आवहु जावनित॥
हमैं और रोंकै सो कोहै । रोंकन हार सुवन नँदकोहै ॥
टोना डारत शीश हमारे । आप रहत ठाढेहै न्यारे ॥
जाके काम नृपतिको जोरा । ठगत फिरत युवतिन बरजोरा ॥
सुनहु श्याम बूझिय नहिं ऐसी । तुमको बानि परी यह कैसी ॥
कैसेहू अब कृपा करो हरि । जाहिं सबै अपने अपने घरि ॥
दान मान घरको सब जाहू । बहुरि न मैं रोकौंगो काहू ॥
मैं हूं जानत हौं कछु लेखो । तुमहूं आप समुझिमन देखो ॥
पिछिलो देहु निबेर आज सब । आगे पुनि दीजो जानौ जब ॥
अब मैं भली कहतहौं तुमको । जो मानौ ग्वालिन तुम हमको ॥
को जानै हरिचरित तुम्हारे । अहो रसिक बर नंददुलारे ॥
हमरो सर्वस मन अपनायो । अजहूं दान नहीं तुम पायो ॥
लेखो करि लीजो मन भायो । खाहु कछू दधि हम सुखपायो ॥
दोहा–सदमाखनलाये तुम्हैं, सखन सहित मिलिखाहु ॥
सुख पावैं हम देखिकै, लीजै दान उगाहु ॥
सो०–अब दधिदानी नाउँ, तुम्हरो प्रकट बखानिहैं ॥
खाहु दही बलि जाउँ, ल्याई हम तुम्हरे लिये ॥
तब हरि हँसि सब सखन बुलाई। बैठे रचि मण्डली सुहाई ॥
दोना बहु पलाशके लाये । शोभित सबके करन सुहाये ॥
सुन्दरहरि सुन्दर सब ग्वाला । सुन्दर दधि परसति ब्रजबाला ॥
भक्त भावके हाथ बिकाने । ग्वालन संग खात रुचिमाने ॥
निज निज मटुकिनते सब ग्वारी। देति करति उर आनँदभारी ॥
श्याम पतूखिनमों मुखनावैं । निरखि २ ग्वालिन सुखपावैं ॥
धन्य धन्य आपुनको जान्यो । सफल जन्म सबहिन करिमान्यो॥
कहत धन्य यह दधि अरु माखन । खात कान्ह जाको अभिलाषन ॥

१ कृष्ण । २ डाक । ३ हाथन ।

जो हम सोध करतही मनमें । सो सुखपायो हरिसंग वनमें ॥
अति आनंद मगन सब ग्वारीं । नंद नँदन पर तनमनवारीं ॥
प्यारीसों माखन हरि मांगत । देखों तुम्हरो कैसो लागत ॥
औरनकी मटुकीको खायो । तुम्हरे दधिको स्वाद न पायो ॥

दोहा—श्रीवृषभानु कुमारि तब, दधि ल्याई मुसकाय ॥
अपने कर अधरन परस, दीनो विहँसि खवाय॥

सो०—प्यारीको दधि खाय, अल्पचितै मोहनविहँसि ॥
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठोहै यह सबनते ॥

गोपिनके हित माखन खाहीं । प्रेम विवश नाहिं नेक अघाहीं ॥
वैसिय गोरस भरी कमोरी । परसत सबै होत नहिं थोरी ॥
ग्वालन सहित श्याम दधि खाहीं। परम हर्ष सबके मन माहीं ॥
हँसत परस्पर सखा सयाने । मीठा कहि कहि स्वाद बखाने ॥
हरि हँसि सबके चितहि चुरावें। परमानंद सबन उपजावैं ॥
विलसत ब्रज विलास बनवारी। दधिदानी प्रभु कुंजविहारी ॥
सुरगण तियन सहित नभ माहीं। निरखि २ मनमाहिं सिहाहीं ॥
धनि २ ब्रजकी युवति सभागी। खात ब्रह्म जिनते दधि मांगी ॥
जाकारण शिव ध्यान लगावैं । शेषसहस मुख जाको गावैं ॥
मन बुधि बचन अगोचर जोई । जाको पार न पावै कोई ॥
नारदादि जाके गुण गावैं । निगमनेति कहि अंत न पावैं ॥
गुणातीत अविगति अविनाशी । सो प्रभु ब्रजमें प्रकट बिलाशी ॥

छं०—प्रकटे सो प्रभु ब्रजमें बिलासी, जाहिमुनिजनध्यावहीं
योग जप तप नेम संयम, करि समाधि लगावहीं ॥
रूप रेख न वरण जाके, आदि अंत न पाइये ॥
भक्त वशसो ब्रह्म पूरण, गोप वल्लभगाइये ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके, रोम प्रति श्रुति गावहीं ॥
कीट ब्रह्म प्रयंत जल थल, आप सब उपजावहीं ॥

१ इच्छा ।

आप कर्त्ता आप हर्त्ता, आपही पालन करैं ॥
खातसो मधु दान दधिलै, गोपिकनके मन हरैं ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी, धन्य वन पावन मही ॥
धन्य मोहन दान मांगत, दूध दधि माखन मही ॥
धन्य ब्रज यक पलकको सुख, और यह त्रिभुवननहीं॥
कहत सुर मुनि हरषि पुनि २, सुमन सुंदर वर्षहीं ॥
कान्ह गोपी ग्वाल ह्वैनहिं, एकही बहुतनुधरै ॥
भक्त जनहित बिरद जाको, अमित लीला बिस्तरै ॥
ब्रजबिलासहुलास हरिको, नित्यनिगमागम कहै ॥
दास ब्रजवासी सदा यह, गाय आनँद पद लहै ॥
दोहा–दान चरित गोपालको, अति विचित्र रसखान॥
वेद भेद पावैं नहीं, कवि किमि करै बखान ॥
सो०–गावत सुनत सुजान, दधि दानी लीला रुचिर ॥
प्रेम भक्तिको दान, ब्रजवासी जन पावहीं ॥
ब्रज ललना यों हरिहि सुनावैं । दूध दही माखन अरु लावैं ॥
मटुकिनते लैलै इमदेहैं । खाहु श्याम तुम हम सुखलेहैं ॥
गोरस बहुत हमारे घर घर । लीजै दान पाछिलो भर भर ॥
यह गोरस जो तुमने खायो । सो तो दान आजको आयो ॥
लेहु सबै अपनो करि लेखो । फिर न पायहौ मांगे सेखो ॥
श्याम कही अब भई हमारी । मनहिं भई परतीत तुम्हारी ॥
प्रीति भई हमसों तुमसों अब । लेहैं मांगि चाहिहैं जब तब ॥
निधरक अब बेचहु दधि जाई । घाट बाट कछु डर नहिं राई ॥
ग्वालिन भई श्याम वश माहीं । घरको जात बनतहैं नाहीं ॥
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी । कहत एकसों एक विचारी ॥
सुनहु सखी मोहन कहकीनो । दान लियो कै मन हरिलीनो ॥
यह तो हम नहिं बदी सयानी । बूझो धौं इनसों यह बानी ॥

१ पृथ्वी । २ दही । ३ फूल ।

दोहा-बूझनको उमँगी सबै, मोहनसों यह बात ॥
निकट जात रहि जात पुनि, सकुच मगन ह्वैजात ॥
सो०-मनही मन सकुचात, कहिये कैसे श्यामसों ॥
कहत बनत नहिं बात, प्रेमाविवस तरुणीसबै ॥
सुनो बात मोहन इक हमसों। ढीठो बहुत कियो हम तुमसों ॥
क्षमा करो सो चूक हमारी। अहो श्याम हम दासि तुम्हारी ॥
हँसि हँसि कही कटुक हम बानी। तुम्हें खिझावत हित मन मानी ॥
कछू हमारे डरलों नाहीं। अति आनँद तुमसों मन माहीं ॥
दधिको दान और जो जान्यो। सबै तुम्हारो कर हम मान्यो ॥
कहो श्याम तुम यह कह कीन्हों। दान लियोकै मन हरि लीन्हों ॥
हम तुमसों कछु भेद न राख्यो। कीनों सबै तुम्हारो भाख्यो ॥
यह करनी तुमहीं अब जानौ। भली बुरी जो कछु करि मानौ ॥
जो जासों अंतर नहिं राखै। सो तासों क्यों अंतर भाखै ॥
नँदनंदन तुम अन्तरजानी। वेद उपनिषद साखि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी। तुमहित करि राख्यो मुहि घेरी ॥
तुमते दूर होत मैं नाहीं। रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥
दोहा-तुम कारण वैकुण्ठ तजि, प्रकटतहौं ब्रज आय ॥
वृन्दावन तुम्हरो मिलन, यह नबिसारयो जाय॥
सो०-एक प्राण द्वैदेह, अंतर कहूं न जानिहो ॥
यह न नयो अब नेह, कत भूतल ब्रज वास बसि॥
अब घर जाहु दान मैं पायो। जानत यह लेखो निबटायो ॥
हँसि हँसि जो भाषत बनवारी। कहत भई तब ब्रजकी नारी ॥
घर तन मनहिं बिना कित जाई। करत कहा मोहन चतुराई ॥
सब तन पर मनहीहै राजा। जो कछु करै होय सो काजा ॥
सोतो मन राख्यो तुम गोई। घरको जान कौन बिधि होई ॥
इन्द्रिय गण मनके आधीना। चलत नहीं पगनैन बिहीना ॥
जो तुम प्रीति करी मनमोहन। तो दुबिधा क्यों लाई गोहन ॥
यह तो तुम जानी ब्रजनाथा। घरहम जाहिं देहु मन साथा ॥

मन भीतरमें बास बनायो । तुमहींलै मोहिं तहां छिपायो ॥
कहत कहा यह दोष तुम्हारो । अजहूं तजौ होहुँ मैं न्यारो ॥
लेहु आपनो मन घर जाहू । लोक लाज डर जो पछताहू ॥
तौ अब हमैं छांडि किन देहू । हम करिहैं अंतर निजगेहू ॥

दोहा–जाते घटती होय निज, तजि दीजै सो बात ॥
दीनों मनमें बास तब, अब मनको पछितात ॥
सो०–जब मन दीनो मोहिं, तबहीं लीनो मोहि तुम ॥
जो लैहौ मन खोहि, तौ मैंहूं जैहौं अनत ॥

सुनहु श्याम ऐसी नहिं कहिये । सदा हमारे मनमें रहिये ॥
तुमहिं बिना धृकमन अरु धृकघर। तुमबिन धृक कुलकान लाजडर॥
धृक तुम प्रेम बिनापितुमाता । तुमविहीन धृक सुत पितु भ्राता ॥
धृक जीवन तुमबिन संसारा । धृक सुख तुमविन नंदकुमारा ॥
धृक रसना[1] तुम गुण नहिं गावै। धृक श्रुते[2] तुम्हरी कथा न भावै ॥
धृक लोचन जिन तुम न निहारे। धृक विचार जो तुम न विचारे ॥
धृक दिन रात तुम्हें बिन जाई । धृक श्वासा तुमबिनाबिहाई ॥
सो सब धृक जामें तुम नाहीं । तन धन मन तुमबिनावृथाहीं ॥
ऐसे कहि तनु दशा बिसारी । भई सनेह मगन सब ग्वारी ॥
कबहूं घरतन जान विचारैं । कबहूं हरिकी ओर निहारैं ॥
दधि भाजन लै शिरपर धारैं । कबहूं धरणी फेर उतारैं ॥
रीती मटुकिनमें कछु नाहीं । कबहुं विचार रहत मन माहीं ॥

दोहा–बिहँसिकह्यो तब साँवरे, जाहु घरन ब्रज नारि ॥
सकुचतपिछिले दानको, मैंलैहौं निरवारि ॥
सो०–ऐसे वचन सुनाय, सखन सहित हरि बनगये ॥
लैगये चित्त चुराय, युवतिन दान मनायकै ॥

इति श्रीब्रजविलासे ब्रजवासीदासकृते पूर्वार्द्ध समाप्तम् ॥

१ जीभ । २ कान ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ उत्तरार्द्धम् ।

अथ गोपिनके प्रेमकी उन्मत्त अवस्था लीला ॥

रीती मटुकी शिरपर धारी । चलीं सबै उठि गोपकुमारी ॥
एक एकको सुधि कछु नाहीं । जानति नहीं कहां हम जाहीं ॥
जड़ चेतन कछु नहिं पहिचानैं । बन गृह कछू विचार न मानैं ॥
लोक वेद मर्यादा दोऊ । आप सहित भूलीं सब कोऊ ॥
बेंचत दधि बनहींमें डोलैं । लेहु दही कबहूं कहि बोलैं ॥
कहत द्रुमन बोलत क्यों नाहीं । लेहौ दधिकै हम फिरि जाहीं ॥
तरु तरु सों पूंछत यहि भांती । बनमें फिरत प्रेम रस माती ॥
मिलत परस्पर विवश निहारी । कहति फिरत क्यों बनमें नारी ॥
तिन्हें कहति अपनी सुधि नाहीं । सो कछु नहिं समुझत मन माहीं
दधि भाजन रीते शिर धारैं । भरी प्रेम तनु दशा बिसारैं ।
कबहूं यमुनाके तट जाहीं । फिरति कबहुँ कुंजनके माहीं ॥
कबहूं वंशीबटतट आवैं । ठाढी ह्वै तहँ हरिहि बुलावैं ॥

दोहा–लीजै गोरसदान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय ॥
डरन तुम्हारे जात नहिं, तुम दधि लेत छिनाय॥

सो०–लेहु आपनो दान, पुनि रिस करि उठि धायहौ ॥
हमैं न देहौ जान, बनमें हम ठाढ़ी सबै ॥

बैठ गईं मटुकी धरि सबहीं । जानति घरसें आईं अबहीं ॥
सखा संग लीने हरि ऐहैं । दधि माखनको दान चुकैहैं ॥
दधिहि चुरावत अंचर तरिकै । दीठ गईं मटुकिनमें परिकै ॥
रीती मटुकी सबन निहारी । गईं भभरि उरमें सब नारी ॥
जहां तहां कह उठीं गुवाली । गोरस ढरकायो कहुँ आली ॥
कोउ कोउ कहत कान्ह ढरकायो । कोउ कहै सखन संग हरि खायो
भई सुरति कछु तब तनु माहीं । गईं घरहि हम तबते नाहीं ॥

सकुच भई कछु गुरु जन डरते । प्रातहिते हम आई घरते ॥
रहो कहां तबते बन माहीं । यहतो सुरत हमैं कछु नाहीं ॥
जब हरि सखन संग दधि खाई । गये बहुरि बन कुँवर कन्हाई ॥
तबलौंकीतो सुधि हम पाहीं । भई कहा पुनि जानति नाहीं ॥
जानपरी हमको तो यौरी । डारि गये शिर श्याम ठगोरी ॥

दोहा—श्याम बिना यहकौ करै, लायो दधिको दान ॥
तनु सुधि भुली तबहिंते, वाकी मृदु मुसकान ॥

सो०—मन हरिलीन्ह्यौ श्याम, ताबिन निबहैकौनविधि॥
ऐसे कहि सब बाम, घरको चलन बिचारहीं ॥

मन हरिसों तनु बरहि चलावैं । ज्यौं गज मत्त चलन छबि पावैं ॥
श्यामरूप रसमदसों मारचो । कुलमरयाद महावत टारचो ॥
कर्मनेहबंधन सों तोरचो । मुरै न लाज कुंजको मोरचो ॥
गुरुजन अंकुश जो सुधि आवै । सब तनु घरको पाँव चलावै ॥
ऐसे गई सदन ब्रजबाला । नहिं भावत क्षण बिन नँदलाला ॥
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसों । औरै बात बतावति तिनसों ॥
गारी देत सुनत नहिं कोऊ । श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावैं । नेक नहीं सो उरमें ल्यावैं ॥
बार बार जननी समुझावति । काहेको तुम हमहिं हँसावति ॥
जहां तहां काहे तुम जाओ । नहिं अपनी कुलकानलजाओ ॥
दधिबेचौ घर सूधे आवो । काहे इतनो बिलम लगावो ॥
बूझे ज्वाब देति तुम नाहीं । बसी कहा तुम्हरे मन माहीं ॥

दोहा—ऐसे सिखवत मात पितु, सो नकरति कछुकान॥
लागतहैं तिनके वचन, उरमें बाण समान ॥

सो०—तिन्हैं कहत मन माहिं, धृक २ इनकी बुद्धिको ॥
जिन्हैं श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हैं बनैं त्यागे भले ॥

जिनको हरिकी प्रीति न भावै । तिनको मुख जनि बिधि दिखरावै

१ गोपी । २ घर ।

ऐसे बिनय करति बिधि पाहीं । गुरु जनको निंदति मन माहीं ॥
नेक नहीं घरसों मन लागत । बिसरत श्याम न सोवत जागत ॥
नयन श्याम दरशन रस अटके । श्रवण वचन रसते नहिं भटके ॥
रसना[1] श्याम बिना नहिं बोलै । मन चंचल संगहि सँग डोलै ॥
नासा अंग सुगंध लुभानी । सुरत श्यामके रूप समानी ॥
चरण चलत चाहत दिशि तेही । जिहि दिशि सुंदर श्याम सनेही ॥
लोक लाज कुल कान मिटाई । रँगी श्यामके रंग सुहाई ॥
प्रात चली दधि लै ब्रज माहीं । इंद्रियगण मन बुधि वशनाहीं ॥
तनुलै निकसीं बेचन गोरस । रसनासों भटक्यो हरिको यस ॥
दधिको नाम भूलि गईं बाला । कहत लेहु कोऊ गोपाला ॥
भीजरह्यो मनमोहनको रस । व्याप गई उर माँहि दशोंदिस ॥

दोहा—फँसी सबै खग[2] वृन्दज्यों, हरि छबि लटकनजाल ॥
तरफरात तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल ॥
सो०—बोलत मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी[3] ॥
बिथुरी अलकलिलार, पग डगमग जित तितपरै ॥

दधि बेचत ब्रज वीथिन डोलैं । अलबल वचन बदन ते बोलैं ॥
गोरस लेन बुलावत जोई । तिनकी बात सुनत नहिं कोई ॥
क्षण कछु चेत करत मन माहीं । गोरस लेत आज कोउ नाहीं ॥
बोल उठत पुनि लेहु गोपालहिं । अटकि रह्यो मनवाहरि ख्यालहिं ॥
लेहु लेहु कोऊ बनमाली । गलिन गलिन यों बोलति ग्वाली ॥
कोउ कह श्याम कृष्ण बनवारी । कोउ कह लाल गोवर्द्धनधारी ॥
कोउ कह उठति दान हरि लायो । कबहूं भई कि तुमहिं चलायो ॥
देह गेहकी सुरति बिसारी । फिरति शीश मटुकी दधि धारी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई । दधिको नाम लेत तब सोई ॥
इहि बिधि बेचतही सब डोलैं । आप बिकानी बिनहीं मोलैं ॥
श्याम बिना कछु और न भावै । कोऊ कितनो कहि समुझावै ॥

१ जीभ । २ पक्षीसमूह । ३ मदिरा ।

हरि दरशन बिन मति भइ भोरी । अंतर लागि सुरतकी डोरी ॥
दोहा–पकरयो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम ॥
समुझाई समुझत नहीं, सिख दै थाक्यो ग्राम ॥
सो०–ज्यों दीपक घर माहिं, बाहर नहिं देख्यो परै ॥
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृण छू दावा¹भयो ॥
इहिविधि मगन सकल ब्रजनारी । कृष्ण प्रेम रस मद मतवारी ॥
सकल प्रेमकी मूरति पूरी । कोऊ तिनमें नाहिं अधूरी ॥
एकदशा सबहीकी जानो । कहँलगि सबको प्रेम बखानो ॥
तिनमें श्रीवृषभानु दुलारी । सकल शिरोमणि हरिकी प्यारी ॥
नेक नहीं हरिते सो न्यारी । तिनकी कथा कहत विस्तारी ॥
दधि भाजन माथेपर धारै । लेहु श्याम कहि वचन उचारै ॥
बूझति तिन्हैं और ब्रजनारी । बेचत कहा फिरत तू ग्वारी ॥
प्रातहिते लीन्हें दधि डोलै । मुखते नाम कान्हको बोलै ॥
कहा करत यह हमें बतावो । कछु हमको निजबात सुनावो ॥
उफनत तक्र² चुवत अँगमाहीं । ताकी सुरति तोहि कछु नाहीं ॥
इतसे उत उतते इत जाई । बुधि मर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानी यह बात बनाई । तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥
दोहा–तिन्हैं कहत मुहि नंदघर, कहाँ सुदेहु बताय ॥
जहां बसत वह साँवरो, मोहन कुँवर कन्हाय ॥
सो०–कैधौंयाही गाँव, कैधौं कहुँ अन्तर बसत ॥
कान्हर जाको नाँव, मैं खोजत वाको फिरौं ॥
बहुत दूर ते हौं मैं आई । मोहिं देहु नँद सदन³ बताई ॥
नंदहिके द्वारेपर ठाढ़ी । बूझत अति संभ्रमता बाढ़ी ॥
लोक लाज कुलकी सब नासी । मन बँध गयो प्रेमकी फाँसी ॥
तब यक सखी परम हितकारी । हरिकी प्यारीकी अति प्यारी ॥
प्यारीको निज ढिग बैठाई । शिक्षा वचन कहत समुझाई ॥

१ दावानल । २ छाछ । ३ घर ।

अहो राधिका कुँवरि सयानी । क्यों ऐसी अब भई अयानी ॥
ऐसे प्रकट प्रेम नहिं कीजै । देखि विचारि धीर उरदीजै ॥
हँसिहैं लखि सब ब्रज नरनारी । एकहि बार लाजतैं डारी ॥
ऐस कहा फिरत बिततानी । मात पिता गुरुजनहिं भुलानी ॥
जो पै कृष्ण प्रेम धन पैये । राखि गुप्त नहिं प्रकट जनैये ॥
ऐसी तोहिं बूझिये नाहीं । समुझ देख अपने मनमाहीं ॥
अजहूं चेत बात सुन मेरी । कहत कुँवरि तेरे हितकेरी ॥

दोहा—कृष्ण प्रेम धन पायके, प्रकट न कीजै बाल ॥
राखिय उर यों गोयके[2], ज्यों मणि राखत व्याल[3] ॥

सो०—तू अति नागरि नारि, पायो नागर नेह जो ॥
तौ कत देति उघारि, कहिहैं तोहिं गँवारि सब ॥

मैं जो कहति सुनलिके नाहीं । देहै ज्वाब कछू मो पाहीं ॥
कहिहै वचन कि मौनहिं रैहै । घर अपने जैहै किनजैहै ॥
लोगन मुख सुनिहैं पितु माता । ब्रजमें प्रकटी है यह बाता ॥
मानेगी मम वचनकि नाहीं । कै फिरिहै ऐसेहि ब्रजमाहीं ॥
जो यह प्रीति श्याम सों जोरी । लाज किये है है कछु थोरी ॥
ध्यान श्यामको धरि उर माहीं । लाज छांडि कत भ्रमत वृथाहीं ॥
मुख तौ खोल सुनहुँ तुव बानी । कैसी कहति परै कछु जानी ॥
कहा कहत मोसों तुम आली । मन मेरो लीनो वनमाली ॥
तबते मोको कछु न सुहाई । जित देखौं तित कुँवर कन्हाई ॥
अबलौं नहिं जानत मैं कोही । कहा कहत है अबतैं मोही ॥
कहां गेहको पितु अरु माता । कहँ दुर्जनको गुरु जन भ्राता ॥
कहां लाज कहँ कान बडाई । तू कह कहत कहां ते आई ॥

दोहा—बार बार तू कहत कह, मैं नहिं समुझत बात ॥
मेरे मनमें घर कियो, वा यशुमतिके तात ॥

सो०—रहत न मेरी आन, अपनी सों मैं करथकी ॥

१ छोडदीनी । २ छिपायके । ३ सर्प ।

तूतो बड़ीसुजान, कहा देत सखि दोष मोहिं ॥
मेरे हाथ नहीं मन मेरो । सुनै कौन सखि सिखवन तेरो ॥
इन्द्रिय गण मनकी अनुगामी । सब इन्द्रिनको मन यह स्वामी ॥
सो मन हरिलीनो ब्रजनाथा । इन्द्रिय गईं सबै मन साथा ॥
अब मेरे वशमें कोउ नाहीं । रहीं जाय सब हरिके पाहीं ॥
नयन दरशके लोभ लुभाने । श्रवण[1] शब्दके माहिं समाने ॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे । कहा होत सिखये सखि तेरे ॥
मेरे हाथ हाथमें नाहीं । कौन करै घूंघुट पटछाहीं ॥
अबतौ प्रकट भई जग जानी । वा मोहनके हाथ बिकानी ॥
मन मान्यो मोहन सों मेरो । जग उपहास करै बहुतेरो ॥
मेरे मन अब बस्यो कन्हाई । कैलघुता[2] कै होहु बड़ाई ॥
मैं अपनो मन हरिसों जोन्यो । नाच कछ्यो तब घूंघुट छोन्यो ॥
अब तो मेरे मन यह मानी । मिलौं श्याम सों ज्यों पैयपानी[3] ॥

दोहा—मेरो मन हरि सँग बस्यो, लोक लाज कुलत्याग ॥
और ताहि सूझे नहीं, भो जहाजको काग ॥
सो०—ऐसे सखिहि सुनाय, मौन गही पुनि नागरी ॥
देह दशा बिसराय, मगन भई रस श्यामके ॥

जाय पन्यो मन वाही ख्यालहिं। बोल उठी कोउ लेहु गोपालहिं ॥
कहत सखीसों तुको आली । कहँ वह दधिदानी वनमाली ॥
मंद सदन सखि मोहिं बताओ। नंदनँदन प्रिय वेगि मिलाओ ॥
विरह विवश अति व्याकुल बाला। मन हरि लीनो नँदके लाला ॥
दधि मटुकी लीने शिरडोले । द्वारे आय नंदके बोले ॥
इत उत जाय तहीं फिरि आवै। लेहु कान्ह दधि टेरि सुनावै ॥
भ्रम भ्रम विवश भईं सब ग्वाली। चलीं वनहिं खोजन वनमाली ॥
वंशीबट यमुना तट जाईं । कहत दान दधि लेहु कन्हाई ॥
फिरत विकल वन वन दधि लीन्हे। तन मन हरिको अर्पण कीन्हे ॥

१ कान । २ तुच्छता । ३ दूधपानी ।

कीन्हो दिनेकर[1] प्रेम प्रकाशा। लोक लाज डर तम[2]कर नाशा ॥
तनुकी दशा बरणि नहिं जाई। रोम रोममें रहे कन्हाई ॥
प्रेम अधिक ब्रज गोप कुमारी। गावत वेद पुराण पुकारी ॥

दोहा–कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र सुखखान ॥
कहत सुनत भव[3]भयहरण, रसिक जननके प्रान ॥

सो०–रसिक शिरोमणि राय, गोपी जन मनके हरण ॥
कहौं सु अब सुखदाय, रसलीला जो ब्रज करी ॥

देखि दशा राधाकी ग्वाली। शिक्षा करति हती जो आली ॥
चकित रही मन मांझ विचारी। या शिर श्याम ठगौरी डारी ॥
गई सखी सो हरि पै धाई। कहइ सुनहु प्रभु कुँवर कन्हाई ॥
ढूँढ़ति फिरति तुम्हें इकनारी। अति सुन्दरी नवल सुकुमारी ॥
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै। मुख द्युति चंद्र निरखि मनमोहै ॥
प्रातहिंते लीने दधि डोलै। लेहु गोपाल वदनते बोलै ॥
भ्रमत भ्रमत अति बिकल भईहै। वंशीवटकी ओर गईहै ॥
मन वच कर्म जान मैं पाई। तुममें वाको प्राण कन्हाई ॥
ताहि मिलो कबहूं सुखदाई। कहत सखी करिकै चतुराई ॥
तुम बिन विरह विकल अति बाला। मिलहुवेगि ताको नँदलाला ॥
सुनत श्याम मन हर्ष बढायो। सांची प्रीति जानि सुखपायो ॥
हरि हँसि विदा सखीको कीन्हो। आप दरश प्यारीको दीन्हो ॥

दोहा–परमहर्ष दोऊ मिले, राधानंद कुमार ॥
कुंज सदन मोहति मनो, तनु धरि छबि शृंगार ॥

सो०–श्यामा अरु घनश्याम, कोटि कामरति द्युति हरण ॥
ब्रजवासी उर धाम, युगुल किशोर बसो सदा ॥

सोहत कुंज कुटी सुखरासी। पिय घनश्यामवाम चपला[4]सी ॥
विरह तापतनु दूर निवारी। बोली मोहन सों तब प्यारी ॥
कहा कहौं तुम सों सुन्दर घन। कहत लजातवाम मनहीं मन ॥

१ सूर्य। २ अन्धकार। ३ संसार। ४ बिजलीसी।

होत चवाव सकल ब्रज माहीं । सुनत श्रवण रहि जात सुनाहीं ॥
जा दिन तुम गैया दुहि दीनी । हाहा करि दुहनी मैं लीनी ॥
सहजगही बहियां तुम मेरी । मैं हँसि तनक बदन तन हेरी ॥
तादिनते गृह मारग जित जित । करतचवाव सकल ब्रजजननित ॥
यहै कहै ब्रजमें सब कोऊ । राधा कृष्ण एक हैं दोऊ ॥
यह सुनि घर गुरु जन दुख पावैं । कटुक वचन कहि त्रास दिखावैं
निकसत द्वार जबहिं तुम आई । रहत सबै तव देखि लुगाई ॥
निंदत तुमको मोहिं सुनाई । सो मोपै हरि सह्यो न जाई ॥
कहत मनहिं सबको तजि दीजै । इनविमुखनको संग न कीजै ॥

दोहा—धृक धृकते नर नारि हरि, जिन्हैं न तुम पद प्रेम ॥
हित करि तुम जाने नहीं, कहा निबाहे नेम ॥
सो०—मैं लीन्हों दृढ़ नेम, सुनहु श्याम सुन्दर सुखद ॥
तुम पद पंकज प्रेम, यहै पतिव्रत पारिहौ ॥

हरि तुम बिन यह कासों कहिये । ब्रजबसकाके बोलन सहिये ॥
ताते विनय करति तुम पाहीं । वा पैंड़े तुम आवहु नाहीं ॥
जो आवो तो मुहिं न जनावो । मुरली धुनि मोको न सुनावो ॥
मुरली धुनि सुनि सुनहु कन्हाई । बिन देखे मुहिं रह्यो न जाई ॥
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी । बोले बिहँसि श्याम सुखदानी ॥
सांच कहत ब्रजके नरनारी । तुमनेकहु मोते नहिं न्यारी ॥
कहन देहु गुरु जन कह जाने । वै अपने सब सुरत भुलाने ॥
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ । तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ ॥
उभय देह लीला हित ठानी । घटहै भेद नहीं कछु पानी ॥
जल थल जहां तहां तनु धारों । तुम तज कहूं रहत नहिं न्यारों ॥
देह धरेको यहै विचारा । मानिय कुल कुटुम्ब व्योहारा ॥
लोक लाज गृह छाँड़ि न दीजै । मात पिता गुरुजन डर कीजै ॥

१ कडुवा ।

दोहा-प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम॥
प्रकट न कीजै बात यह, कहत विहँसिकै श्याम॥
सो०-सुनत श्यामके बैन, हर्ष भई मन नागरी॥
भयो हिये अति चैन, प्रीति पुरातन जानि जिय॥
अति आनन्द भई मन प्यारी। तव जान्यो हरि पति मैं नारी॥
भूलि गई काहे पछितानी। यह महिमा हरिकी जिय जानी॥
युग युग प्रभु लीला विस्तारी। जान लई वृषभानु दुलारी॥
हरि मुख अलप चितै मुसकानी। रही परम आनँद उर मानी॥
कहत सुनहु प्रिय अन्तर्यामी। तुम कर्त्ता हौ जगके स्वामी॥
मात पिता गुरु जन हित भाई। कहा नाथ यह नई सगाई॥
जो कर्त्ता औरै सुनि पाऊं। तौहौं प्रभु तिनको पतिआऊं॥
अरु परतीत जगतकी जानौ। तौ परमित छूटत डर मानौ॥
जो जाको सो तेहिको जानै। कैसे औरनको मन मानै॥
अब नाहिं तजौं कमल पद पासा। मन मधुकर कीनो जब बासा॥
यह सुनि हरि प्यारी उरलाई। बहु विधि करि प्रबोध समुझाई॥
तनु धरि लोक वेद विधि कीजै। प्रीति रीति उनमें धरि लीजै॥
दोहा-कहत श्याम अब जाहु घर, तुमको भई अबार॥
प्रीति पुरातन गोप उर, करिये जग व्यवहार॥
सो०-परम प्रेम उरलाय, घर पठई हरि भावती॥
चली संग सुख पाय, फिर फिर चितवत श्यामतन॥
चलीसंग सुख लूट किशोरी। लसत अंग अरगजी पटोरी॥
गजगति जाति भवन सुखपाई। रहेरीझिछबि निरखि कन्हाई॥
प्यारीमन आनंद बढ़ाये। सुख भर चली लूटसीपाये॥
मनहिं कहत अति उमँग उछाहू। यह धन प्रकट करौं नहिं काहू॥
सखियनहूं नहिं भेद जनाऊं। कृष्ण प्रेमधन गुप्तदुराऊं॥
श्याम कह्यो सोई उरधरिहौं। प्रीति पुरातन प्रगट न करिहौं॥

१ मंद। २ भौंरा। ३ हाथीकीचाल।

ऐसे मनहिं विचारति जाहीं। तहँ इकसखी मिली मगमाहीं॥
अंग अंग छबि लखि मुसकानी। कहति बिहँसि प्यारी सों बानी॥
कहु फूलीसी आवतिराधा। आज रूपकछु अंग अगाधा॥
बदन सिकोरति मोरति भौहैं। कहति कछू मनहीं मनमौहैं॥
देखियतकछू अंगरस भीने। सुलभ मनोरथ हरिसँग कीने॥
हमसों सो सब बात उघारो। दुरत नगंध दुरावन हारो॥
दोहा-फिरतहती व्याकुल अबहिं, जिनके दरशन लाग॥
कहां मिले नँदनंद सों, धनि धनि तेरो भाग+॥
सो०-नहिं पावतहैं जाहि, योगीजन जप तप किये॥
वश करि पायो ताहि, तैं कैसे कहु नागरी॥
कहा कहति सखि भई बावरी। करन कछू चाहत बवावरी॥
तूहँसि कहत सुने जो कोऊ। सोतो सांचि मानिहै सोऊ॥
चकित होति सुनि अचरजतेरो। है बचाव पुनि घर कहुँमेरो॥
ऐसे होय कहसि तू जैसे। गुरजनमें निबहौं पुनि कैसे॥
कहा भेद कछु तोसों मोसों। मैं दुराव करिहौं सखितोसों॥
कौनँद नंद कहति तू जिनको। मैं कबहूं देख्यो नहिं तिनको॥
कै गोरे कै बरण सांवरे। रहत ब्रजहिं कै अनत गांवरे॥
मैंतो नहिं जानति वै जैसे। तू बहु बात मिलावसि कैसे॥
जाहि चली जानी मैं तोको। कहा सुनावतिहै तू मोको॥
अबहीं फिरति हती बौराई। आजहि पढि लीनी चतुराई॥
याही ब्रज हम तुम अरु वोऊ। दूर नहीं जोहै कहुँ कोऊ॥
परिहौ कबहूं फंद हमारे। करिहैं तबहिं जुहार तुम्हारे॥
दोहा-निपुण भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय॥
आवतिहै वन कुंजते, बातैं कहति बनाय॥
सो०-रीझे श्याम सुजान, कहे देति अँगकी पुलक॥
मोसों करत सयान, सगिबगि रही सनेह जल॥
हँसत कहत कैधौं सत बानी। तेरी सों मैं कछुअ न जानी॥

+ सफल। १ प्रणाम। २ चतुर। ३ भीजरही।

कह्यो कहा मुहिं बहुरि सुनावै। तोहिं सौंह मेरी जु दुरावै ॥
कबहूं कछू भाव यह पायो। तैंदेख्यो कै किनहु सुनायो ॥
ऐसी कहत और जो कोऊ। सुनती मोपै उतर न सोऊ ॥
बूझत मोहिं लगावत ताही। सपनेहूं देख्यो नहिं जाही ॥
ऐसी मोहिं कहौ जिनकोई। झूठी बातनि पर दुखहोई ॥
उचटाये दैहै कछुमोखों। बहुरि नहीं बोलोंगी तोसों ॥
तोते और काहि हितपैहों। जाते हितकी बात जनैहौं ॥
यह परतीत नतो को होई। मैं राखति तोते कछुगोई ॥
चतुरसखी मनमें जब जानी। मोतें तौ कछुनाहिं छिपानी ॥
त्रास भई याके मनमाहीं। तासे बातकहति यह नाहीं ॥
तब यह कही हँसत मैं तोसों। जिन मनमें दुख मानै मोसों ॥

दोहा—मानी तेरी बात अब, कहँ तू कहँ वे श्याम ॥
हमहुँ उन्हें जानै नहीं, बसत कौन धौं गाम ॥
सो०—हम आगेकी आइ, भई सयानी लाड़िली ॥
हँसत कह्यो घर जाइ, तैंनहिं हरि कबहूं लखे ॥

सकुच सहित वृषभानु दुलारी। गई सदन गुरु जन डर भारी ॥
जननी कहत कहां हति प्यारी। डोलति फिरति अजहुँ है बारी ॥
घर तुहिं तनक देखियत नाहीं। दधिलै जात फिरत बन माहीं ॥
स्याम संग बैठति है जाई। आज तोहिं खिरकत हो माई ॥
काहे को उपहास करावति। दधिहि बेच सूधेकिन आवसि ॥
वृथा करति मैयारिस मोसों। को अब बात कहैरी तोसों ॥
ऐसी को बाढ़िगई बिधाता। श्याम संग फिरिहै सुनु माता ॥
कौने बात कही यह तोसों। ताको नाम लेहि किन मोसों ॥
धन्य मात धनि धनि तू माई। ऐसी बात कहति मुहिं लाई ॥
तू पर घर क्षण क्षण कित जाई। मैं बरजति नाहिं नेकु डराई ॥
श्यामा श्याम सकल ब्रज माहीं। है रहे लाज लगति तुहि नाहीं ॥

१ देखे।

बड़े महरिकी सुता कहावति । काहेको पितु मात लजावति ॥
दोहा–खेलनको मैं जाउँ नहिं, कहा कहतिरी मात ॥
मोपै जात सही नहीं, यहै अनोखी बात ॥
सो०–घर घर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी ॥
तू मोहीं रिसयात, तिनके मात पिता नहिं ॥
मनहीं मन समझति महतारी । अबहींतो मेरी है बारी ॥
कहा भयो तनु बाढ भई है । लडकाई अबहीं न गई है ॥
झूठहिं बात उड़ी यह सारी । श्यामा श्याम कहत नर नारी ॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ । अब हीं तो बालकहैं दोऊ ॥
सुनत सुता मुख रिसकी बानी । मनहीं मन कीरति[1] मुसक्यानी ॥
तब गहि उर लाई चुचकारी । परबोधति डरसों रिसटारी ॥
खेलहु संग लरिकिनिन माहीं । खेलनको मैं बरजत नाहीं ॥
श्याम संग सुनि होत दुखारी । झूठहि लोग लगावत गारी ॥
जाते कुलको दूषण होई । सुनि प्यारी कीजै नहिं सोई ॥
अब राधा तू भई सयानी । मेरी सीख लेहि जिय मानी ॥
जननीके मुखकी सुनि बानी । श्रीवृषभानु सुता मुसकानी ॥
मन मन विनय करत हरि पाहीं। सुनहु श्याम तुम सब घट माहीं ॥
दोहा–मात पिता मानत मनहिं, लोक लाज कुलकान॥
नहिं जानत तुमको सुखद, जगत ईश भगवान॥
सो०–लेत तुम्हारो नाव, सकुचति हौं इनके निकट ॥
यह समुझत पछताव, तुमविमुखनमें क्यों रहौं॥
तुम मोहिं कह्यो कानि कुल राख्यो। क्यों विषखाय सुधा[2]जिन चाख्यो
जिन्हैं नाथ तुम पद दृढ प्रेमा । कैसे तिनसों निबहत नेमा ॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी । नाथ तिहारे हाथ बिकानी ॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी । बोली जननी सों हँसि बानी ॥
तू अब कहति कहा मोकोरी । अकथ बात है माँ कछु तोरी ॥

१ कीरतके । २ अमृत ।

अब हरि संग न खेलौं जाई। जा कारण तू मोहिं सुगाई ॥
आवनदे बाबा घर माहीं। यह सब बात कहौं उन पाहीं ॥
देति गारि मोहिं श्याम लगाई। ऐसे लायक भये कन्हाई ॥
रोंकी मोको कालिह गलीमैं। सखिन संगमें जाति चली मैं ॥
लागे कहन बँसुरिया मेरी। तू लै गई चुराय सो देरी ॥
छाटि आठें मोसोंहै जिनसों। मोहिं लगावतिहै तू तिनसों ॥
सुन सुन कर राधाकी बानी। मुखनिरखत जननी मुसकानी ॥

दोहा–कहति मनहिं मन अबहिंलौं, नहींगई लरिकाय॥
बारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाय ॥

सो०–अब जैहै मचलाय, कापै जाय मनाय पुनि ॥
हारि मानि रहि माय, बालक बुधि जिय जानिकै॥

बोलि लई हँसिकै दुलराई। पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई ॥
कंठ लगाय लई अति हितसों। रही चकित शोभा लखि चितसों ॥
चतुर शिरोमणि हरिकी प्यारी। परम चतुर वृषभानु दुलारी ॥
बातनहीं माता वहराई। नीके राखि लई चतुराई ॥
कृष्ण प्रेम धन पायछिपायो। संग सखी तिनहूं न जनायो ॥
जैसे कृपण महा धनपावै। धरत दुराय न प्रगट जनावै ॥
सखी मिली जो मारग माहीं। कह्यो जायतिन सखियन पाहीं ॥
सुनहु सखी राधाकी बातैं। कैसी आज करी उनघातैं ॥
वृन्दावन ते अबहीं आई। हर्ष सहित मैं लखि मग पाई ॥
औरै भाव अंग छबिछाई। श्यामहि मिली भई मन भाई ॥
मोको देखतही हँसि दीनो। मैंहू हर्ष मनहिं मन कीनो ॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों। तबरिस करि फेर्‍यो मुख मोसों॥

दोहा–मोसों तब लागी कहन, कोहरि काको नांव ॥
कै गोरे कै सांवरे, बसत कौनसे गांव ॥

सो०–मैं तो जानत नाहिं, लेत नाम तू कौनको ॥

१ सूम। २ छिपाय। ३ मार्ग।

लखे न सपनेहु माहिं, सांच कहति कै हँसति मुहिं ॥

ऐसे कहि टेढी करि भौंहैं । चितईनेकु न मोतन सौंहैं ॥
वह निधरक मैं सकुच गईरी । और कहौं तौ करत खईरी ॥
तब मैं यह कहि घर पठईरी । मैं झूंठी तू सांच भईरी ॥
दोऊ एक भये अब आई । हमहूं सों यह बात दुराई ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै । कैसी धौं तहँ बुधि उपजैहै ॥
सुनिकै बात सखी मुसुकानी । प्यारिहि देखनको अतुरानी ॥
कहत सबै अबहीं हम जैहैं । तबहीं आय प्रगट करिदैहैं ॥
कहारहै यह बात छिपानी । दूध दूध पानी सों पानी ॥
आंखिन देखतही लखि जैहै । कैसे हमसों बात छिपैहै ॥
अपनो भेद नहीं वह कैहै । सुनिहौं कैसे गाल बजैहै ॥
लखहु चरित्र जाय तुम वाको । राधा कुँवरि नामहै जाको ॥
मैं बूझ्यो करि बहु चतुराई । नेकहु थाह न वाकी पाई ॥

दोहा—बड़े गुरुकी बुद्धि पढि, कहूं नहीं पतियात ॥
एकौ बात नमानिहै, सौ सौ सौंहैं खात ॥

सो०—रहिहैं सब पछिताय, सुनत वचन वाके वदन ॥
अब जैहै रिसियाय, बातन बैर बढाइ हो ॥

कहा बैर हमसों वह करिहै । बातन कैसे हमहि निदरिहै ॥
औरनसों जो करती ढारी । तोहमहूं जानती सयारी ॥
वाकी जाति भले हम पाई । हमहीं सों यह बात चुराई ॥
परिहै जब मेरे फँद आई । दूरि करौं वाकी ढँगराई ॥
जो नहि हमसन भेद कहैगी । सो पुनि कैसेकै निबहैगी ॥
हमसों बैर किये कह पैहै । बहुरि लिये मटकी शिर ऐहै ॥
चलौ सबै देखैं बरताको । है निधरक कैधौं डर वाको ॥
बूझे बात कहा धौं कैहै । हम सों मिलि है कै ढुरि जैहै ॥
रिस करि है कैधौं हँसि बोलै । बात छिपावै कैधौं खोलै ॥

१ छिप ।

सहज स्वभाव किधौं गरबानी । यह कहि चलीं अली सब स्यानी ॥
गईं निकट राधे के जबहीं । जान गई नागरि मन तबहीं ॥
वे सब मोपर रिस करि आई । तब इक मनमें बुद्धि उपाई ॥

दोहा—काहूको कीनो नहीं, आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही बोलत नहीं, बैठि गई निहुराइ ॥

सो०—लखि सब सखी सुजान, बैठि गईं ढिग आपईं ॥
औरै बात बखान, आपसमें लागीं करन ॥

राधा चतुर चतुर सब आली । चतुर चतुरकी भेंट निराली ॥
इन सौं गही मौन निठुराई । इन लखि लई तासु चतुराई ॥
सुहां चर्हीं आपसमें कीन्हीं । याकी बात सबै हम चीन्हीं ॥
कहा भेद हमसौं यह भाषै । उलटे हमहीं पर रिस राखै ॥
बूझहु याहि सुनट करि कोई । कहा आज इन मौन लयोई ॥
हम सों कहा ओट इन कीन्ही । साड सुई हमहीं कर दीन्हीं ॥
एक सखी सब बिहँसि सुनायो । कहौ मौन व्रत किन सिखरायो ॥
धनि वह गुरु मंत्र जिन दीन्हों । कान लगतही ऐसो कीन्हों ॥
कालिह और परभातहिं औरै । अबहिं भई कछु और कि औरै ॥
सुनि यह बात सबै हम धाई । चकित भई देखन तोहिं आई ॥
कहा मौन को फल अब कहिये । सुनें कछु तो हम हूं गहिये ॥
इक सँग सबै भई तरुणाई । मंत्र लियो तब हम न बुलाई ॥

दोहा—अब तुमहींको हम करैं, गुरु देहु उपदेश ॥
हमहूं राखैं मौन व्रत, करैं तुम्हैं आदेश ॥

सो०—हमको कियो अजान, चतुर भई तू लाडिली ॥
कहँसीख्यो यह ज्ञान, ऐसी विधि लागी करन ॥

रहत एक सँग हम तुम प्यारी । आजहिं चटक भई तू न्यारी ॥
कहा भयो तोहिं किनहिं सिखाई । नई रीति यह कहां चलाई ॥
हम तो तेरे हित की कारि हैं । और कहै तासों सब लरिहैं ॥

१ सखी ।

सुनत कुँवरि सखियन की बानी। बोली करत सबै यह जानी ॥
गुणागारि नागरी सयानी। बोली सहित निठुरई बानी ॥
तुम प्रीतम के बैरिनि मेरी। बूझति तुम्हैं कहो सखि हेरी ॥
याको कहति जुगैल मिलीरी। नहीं कही उन मोहिं भलीरी ॥
कह्यो मोहिं तुम श्याम मिलेरी। मैं चकरही सोंह मोहिं तेरी ॥
मेरे अँगछबि और बताई। तब मैं भई बहुत दुखदाई ॥
जिनको मैं सपने नहिं जानो। फिरि फिरि तिनकी बात बखानो॥
मेरो कछु दुराव है तुमसों। तुमहीं कहौ सखी सब हमसों ॥
कहां रहति मैं कहां कन्हाई। घर घर करत चवाव लुगाई ॥

दोहा--और कहे तो मोहिं कछु, नहिं व्यापहि मनमाहिं ॥
तुमहीं कहौ जो बात यह, तौ दुख होयकि नाहिं ॥
सो०--तुमपर रिस मो गात, ताते आदर नहिं कियो ॥
सुन प्यारीकी बात, रहीं सबै सुखतन चितै ॥

बोली एक सखी तिनमाहीं। हम तौ तोहिं कह्यो कछु नाहीं ॥
ताही पर होती रिस आई। जिन यह तोसों बात चलाई ॥
प्रथमहिं हमैं प्रकट यह करती। हमहूं ताहीं सों सब लरती ॥
क्यों सखि प्यारियदोष लगावै। झूठी बातन वैर बढ़ावै ॥
तेरे श्याम कहां इन देखे। काहू को सपने हू पेखे ॥
भेदहिं भेद कहत सब बातैं। दैदै सैन करत सब घातैं ॥
प्यारी सबके मनकी जानै। सबसों रूखे वचन बखानै ॥
कौन कौन को मुख सखि गहिये। जाको जो भावै सो कहिये ॥
मनते गहि गहि बात बनावै। झूँठीको सांची ठहरावै ॥
बिना भीतही चित्रित करो। बातन गहि आकाशहि फेरो ॥
नेक होय तौ सबहीं सहिये। झूठी सबै सुनत डर दहिये ॥
आवत बोल न सुनि सुनि बातें। रहियत मौन सबनते तातें ॥
दोहा--वृथा झेर मोसों करत, कहि कहि झूठी बात ॥

१ गुणको घर।

भलो नहीं उपहास यह, मैं सकुचत दिन रात॥
सो०–मिलै सखी जो श्याम, और कहा याते भली ॥
सुनियतहै अभिराम, नंद महरको सुवन[2] अति ॥
कैसेहैं वै कुँवर कन्हाई । जिनको नाम लेत यह माई ॥
नयनन भरि मैं देखे नाहीं । सुनियत सदा रहत ब्रज माहीं ॥
कहति लजाति बात इक तुमको । इक दिन मोहिं दिखावहु उनको॥
देखहुँ धौं कैसेहैं तिनको । तुम सब मोहिं कहति हौ जिनको॥
सुनि वृषभानु सुताकी बानी । हँसीं सबै गोपिका सयानी ॥
सुनुप्यारी तैं सीख हमारी । कहन देहि कहि करै कहारी ॥
तोको झूठ कहे कह पैहैं । आपन को वै पाप कमैहैं ॥
यह काहू पै जात छपायो । नेक सुगन्ध न दुरत दुरायो ॥
तैं काहेको कान्हहि देख्यो । खरक दुहावनहूं नहिं पेख्यो ॥
सुनहु सखी राधाकी बानी । कहत कछू यह अकथ कहानी ॥
रहति सदा ब्रज गांव मझारी । इन नहिं देखेरी गिरिधारी ॥
जो हम सुनी रही सो नाहीं । ऐसेहि वायु[3] बही ब्रज माहीं ॥
दोहा–सुनु प्यारी अब तोहिं हम, दिखरैहैं नँदनन्द ॥
तब वदिहैं यह राखिहौ, देखि उन्हैं छलछन्द ॥
सो०– जब ऐहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बतायहैं॥
ताहि देखिहैं बाम, है उनहूं अभिलाष अति ॥
तब तू चीन्ह लीजियो उनको । कहति नहीं देखे मैं जिनको ॥
हैं कैसे कारे कै गोरे । सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे ॥
तोहिं देखि ओऊ सुख पैहैं । तेरे हित बांसुरी बजैहैं ॥
नाना भाव करैंगे जबहीं । हम सब तोहिं कहैंगी तबहीं ॥
तुमहौ चतुर राधिका जैसे । वेऊ श्याम चतुरहैं तैसे ॥
हँसति कहति सब गोपकिशोरी । चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी ॥
कबहूं तौ फँद परिहौ आई । तबहीं देहिं चिन्हाय कन्हाई ॥

१ सुंदर । २ पुत्र । ३ पवन ।

सुनत व्यंग सखियनकी वानी । मन मन बिहँसत कुँवरि सयानी ॥
चतुराई नीके गहि राखी । सखियनसों हँसि ऐसे भाखी ॥
जो तुम जियमें औरै जानी । मेरी बात प्रतीत न मानी ॥
जो अब मोहिं श्याम सँग पावो । तब कीजो अपनो मन भावो ॥
कान्ह पीतपट¹ बेसर मेरी । लीजो छोरि तबहिं गहिएरी ॥
दोहा-यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी बदन निहारि ॥
आईही अति गर्ब करि,चलीं सखी घर हारि ॥
सो०-कहति परस्पर जात, निडर भई अति राधिका ॥
कबहूं तौ हम घात, परिहैं दोऊ आयकै ॥
तीसहु दिन जो चोर चोरैहै । साहहु पकरि कहू दिन पैहै ॥
बोली एक सखी तब तिनसों । भेद लियो चाहति तुम उनसों ॥
दूर धरो मनते यह भाई । बैठि रहो अपने घर जाई ॥
अति बड़ बोल गई कह कीन्हों । कैसी निठुर भई कछु चीन्हों ॥
वह नहिं फन्द तुम्हारे आवै । छन्द बन्द वाके को पावै ॥
वह सबहिनमें बड़ी सयानी । मेरी बात लेहु तुम मानी ॥
बोली अपर² सखी सुन मोसों । लीक खैंचि भाषत मैं तोसों ॥
फेर फार देखो हम धरिहैं । ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं ॥
अबतो भेद कियोहै प्यारी । हमहूं को यह रिसहै भारी ॥
तब लगि मनमें धीर न लैहैं । जबलग चोरी पकरि न पैहैं ॥
निशि बासर अब हम सब कोऊ । श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ ॥
ताही दिन तिनसों हम लरिहैं । जा दिन नीके पकरि निदरिहैं ॥
दोहा-सब ब्रज गोपिनके बसी, बात यहै मन आन ॥
हरि राधा दोऊ मिलैं, निशि बासर यह ध्यान ॥
सो०-सबहिन मुख यह बात, और कछू चरचा नहीं ॥
नन्दमहरको तात, सुता³ महर वृषभानुकी ॥
यहै चवाव करति सब गोपी । इनसों बात राधिका लोपी ॥

१ विश्वास । २ दूसरी । ३ बेटी ।

लरिकाईते हम सब जाने। कीन्ही प्रीति श्याम सों याने ॥
तब सतभाव न हती झुठाई। अब हरि संग सिखी चतुराई ॥
आज मौन धरि कियो दुराऊ। सदा होत किहि भांति बचाऊ ॥
दिन द्वैचार और अब टारो। रहौ स्वभाव शार जनि पारो ॥
करन देहु इनको लँगराई। आपुहि बात प्रगट ह्वै जाई ॥
तब इकसखी कही यों बानी। कहा कहत तुम बात अयानी ॥
तुम जुकहति वहजानति नाहीं। हैं हम सब वाके नखमाहीं ॥
सात बरसते प्रीति लगाई। तुमतो आज जानि है पाई ॥
वाकी चतुराई किन जानी। मीन कबहिंधौं पीवत पानी ॥
हरिके ढंग सिखी सब वोऊ। हैं बारह बानी वै दोऊ ॥
देखहु कालिह केहु पतियानी। फिरि आई हम सब खिसियानी ॥

दोहा–ऐसे सब ब्रज सुन्दरी, मिलिकै करति चवाव ॥
राधा हरि उरमें बसे, और न बात सुहाव ॥
सो०–यह रस जान अनूप, ब्रजवासी प्रभु प्रेमको ॥
करिकै कृष्ण स्वरूप, होय रहीं ब्रजकी तरुणि ॥

श्रीराधा प्रातहिं तहँ आई। जहाँ जुरी सब सखिन अथाई ॥
आवतिलखि सब रहीं चुपाई। पेखत बदन गई सकुचाई ॥
करति हुती उनहीं की बातें। सकुच गईं तरुणी सब तातें ॥
अति आदर करिकै बैठारी। कही कहां तू आई प्यारी ॥
कहा हमारी सुधि लैं लीन्हीं। बड़ी कृपा कछु हमपर कीन्ही ॥
मैं कह आज अनोखे आई। तुम जुकरति आदर अधिकाई ॥
पहुनी करि करिये पहुनाई। मैंतो आवति जाति सदाई ॥
कैसी कहति बात तू प्यारी। बैठनको नहिं कहैं कहारी ॥
तू आई करि कृपा हमारे। हमहूं कहा मौन व्रत धारे ॥
तबहँसि बोली कुँवरि सयानी। करी तर्क मोसों तुम जानी ॥
तादिनको बदलो यह कीनों। मोसों दाँव आपनो लीनों ॥

१ देखत।

यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी। कहन लगीं सब सुन्दरी प्यारी ॥

दोहा-दांव घात जानति तुमहिं, हमतौ शुद्ध स्वभाव॥
तोहिं मान आई सदा, तैसे मानति भाव ॥

सो०-तुम राखी मन लाय, तादिन बात भई जु वह॥
हम डारी बिसराय, मानलई तेरी कही ॥

चोर सबै चोरी करि जानै। ज्ञानी सब मन ज्ञानहिं मानै ॥
सुनि यह कुँवरि मनहि मुसकानी। कह्यो सखी यह सांच बखानी॥
जैसी जाके मनमें होई। बात कहति मुख तैसी सोई ॥
मैं तो सांच कही तुम पाहीं। कैसे धौं हरि जानत नाहीं ॥
हरषि सखिन तब उर सों लाई। कहत कहा तू रिस भरि आई ॥
हँसति कहति तोसों हम प्यारी। तू मति मानै बिलग कहारी ॥
तुमहीं उलटी पुलटी भाषौ। तुमहीं रिस करि उरमें राखौ ॥
तुमहीं हरिको नाम बखानौ। तबमैं सुन्यो कछू तुम मानौ ॥
जब हरि संग मोहिं कहुँ लहियो। तब मन भावे सो कछु कहियो ॥
अब कैसेहुँ स्नान चलौगी। कैमोसों कछु फेरि लरौगी ॥
वहै बात गठ बन्धन कीन्हीं। नहिं भूलिहौ जानि मैं लीन्हीं ॥
गहि गहि सबकी भुजा उठाई। चलहु न्हान कबकी मैं आई ॥

दोहा-यहि विधि हास हुलास करि, सखिन संगसुकुमारि॥
चली न्हान यमुना नदी, श्रीवृषभानु कुमारि ॥

सो०-सकल रूपकी रास, नव नागरि मृग लोचनी ॥
भरी अनंद हुलास, कृष्ण प्रेममें एक मति ॥

अथ स्नानलीला ॥

चलीं यमुन सब नवलकिशोरी। कनक[1] वरण तनु कोमल गोरी ॥
करत परस्पर सब सुकुमारी। हास बिलास कुतूहलभारी ॥
गईं यमुनतट गोप कुमारी। सँग सोहति वृषभानु दुलारी ॥
देखि श्याम जल लहरि सुहाई। पैठीं[2] सलिल न्हान अतुराई ॥

---

१ सुवर्ण। २ घुसी।

श्यामा सहित न्हात सबनारी। विहरत जल विहार सुखकारी ॥
कण्ठ प्रमाण नीरमें ठाहीं। छिरकत जल अतिआनँद बाढ़ीं ॥
करति विविध विधि हास बिलासा। एक एक गहि करति हुलासा ॥
लैलै कर सों नीर उछारैं। निरखि परस्पर मुख पर डारैं ॥
मानौं शशि सेना सजि आये। लरत जलजजल अस्त्र बनाये ॥
सुनि तहँ श्याम युवति मनरंजन। आये कोटि काम द्युति भंजन ॥
निरखत तट ठाढे छबि भारी। यमुना जल विहरत ब्रज नारी ॥
कबहुँ मधुर कल वेणु बजावैं। नान्हे सुरन माहिं कछु गावैं ॥
दोहा-काछे नटवर भेषवर, चित्रित चन्दन अंग ॥
ठाढे उमँगि कदम्बतें, कीने अंग त्रिभंग ॥
सो०-तब घन सुन्दर श्याम, ब्रजातियमन चातकसुखद ॥
नख शिख अति अभिराम, ध्यान काम पूरण सकल ॥
पदनख इन्दु[1] प्रभा द्युतिहारी। चरण कमल शीतल सुखकारी ॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई। करभरम्भ[2]लखि रहत सदाई ॥
कटि पटपीत काछनी काछे। केसर कमलन पटलर आछे ॥
क्षुद्रावली कनकछबि छाई। नाभिगँभीर बरणि नहिं जाई ॥
मनहुं मराल[3] बालकी श्रेनी। सर[5] समीप सोहति सुखदेनी ॥
बडे बडे मोतिनकी माला। बिचरोमावलि झलकि बिशाला ॥
मनहुं गंग बिच यमुना आई। चली धार मिलि तीन सुहाई ॥
बाहुदंड दोउ तट कमनीया। चन्दन अंग रेत रमनीया ॥
बनमाला तरु तीर सुहाये। फूलि रहे पचरँग छबि छाये ॥
कम्बु[6] कण्ठ त्रय रेख सुहाई। तीनि भुवन शोभा जनु छाई ॥
चिबुक[7] चारु गाढो मन मोहै। मुख छबि सिन्धु भँवर जनु सोहै ॥
अधरदशन द्युति बरणि न जाई। तडितबिम्ब[8] कहँ वह छबि छाई ॥
दोहा-शुक[10] नाशा खंजन नयन, भ्रुकुटि काम कोदंड ॥

---

१ चंद्रप्रभा। २ केला। ३ हंस। ४ पांति। ५ सरोवर। ६ शंख।
७ ठोढी। ८ बीजरी। ९ कुँदरू। १० तोता।

मणिकुंडल रबि छबि हरत,सोहत शीश शिखंड॥
सो०–उपमा गई लजाय, निरखि श्यामको रूपवर ॥
जहँ तहँ रहीं छिपाय, पटतरको पहुँची नहीं ॥
उपमा हरितन देखि लजानी । दुरी भूमि कोउ बन कोउपानी ॥
कोटि मदन अपनो बलहारे । मुकुट लकुट भ्रूमटक निहारे ॥
कुंडल निरखि भ्रमतरबिरहहीं । तपन हृदय क्षण धीर नगहहीं ॥
अलक नाशिका कर पद नयनन । अलिशुक कमल मीन खंजनगन॥
लखि सकुचाय रहत बन माहीं । कहत हमें कबि कहत बृथाहीं ॥
दशन दमकदामिनिलिजानी । क्षण प्रकटत क्षण रहत छिपानी ॥
समुझत सधर अधर अरुणाई । बिद्रुम[3] बंधू[4] बिम्बलजाई ॥
गगन[6] रह्यो शशि वदन निहारी । घटत घटत नित शोचत भारी ॥
चारुकंठ लखि अति सकुचानो । रहत शंख जल मांझ छिपानो ॥
बाहु देखि अँहि[7] विवर समाने । केहरि[8] कटि लखि बनहिंपराने ॥
गज गति गुलफ निरखि सरमाई । ऊंची आंख न सकत उठाई॥
निज इच्छा छबिहारि बपु धारी । दीनी पटतर भेटि मुरारी ॥
दोहा–अनुपम छबि कबि क्यों कहै, बिन उपमा आधार॥
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नंदकुमार ॥
सो०–अधर मनोहर बेन, मन्द मन्द बाजत मधुर ॥
उपजावत मन मैन, ब्रजसुन्दरि नव नागरिन ॥
जल विहार करि गोप किशोरी । निकरि चलीं तटको सब गोरी ॥
जानु जंघ जललौं सब आईं । चुवत नीर अचरन छबि छाई ॥
परे दृष्टि मोहन तट माहीं । ठाढे कदम बिटपकी छाहीं ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी । पंगु भई मति गति बहरानी ॥
इतहि लाज सखियनकी आई । दरशन हानि न उत सहिजाई ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी । लैहैं आज सखी सब जानी ॥

१ मोरपच्छ । २ भौंरा । ३ मूंगा । ४ दुपहरियाको फूल । ५ कुँदुरू ।
६ आकाश । ७ सर्प । ८ सिंह ।

जानि गई यह अली सयानी । जानि बूझि सब भई अयानी ॥
महुरो न्हान लगीं सब पानी । रहीं इतै करि आना कानी ॥
प्यारी कबहुँ श्याम तनुहेरैं । कबहूं दृष्टि सखिन ते फेरैं ॥
जानी सबै न्हात जल माहीं । मेरी दिशि चितवत कोउ नाहीं ॥
तब मनमें यह बात बिचारी । देखिलेहुँ अब छबि गिरिधारी ॥
यह दरशन कबधौं फिरि होई । ललकि लगीं अँखियां हठिदोई ॥

दोहा–निरखति श्यामा श्याम छबि, पार निमेषन मोर ॥
नैन बदन शोभित मनों, द्वैशशि चारु चकोर ॥

सो०–करत मुदित दोउ पान, रूप माधुरी अमियरस[1] ॥
तृप्त न क्योंहूं मान, बिवश भये मन दुहुँनके ॥

यद्यपि सकुच सखिनकी गाढी । तद्यपि रुकी न चितवन बाढी ॥
उमँगि गई सरिता[2]की नाहीं । सन्मुख श्याम सिंधुके माहीं ॥
भरी सलिल अनुराग अथाहा । भँवर मनोरथ लहर उछाहा ॥
कुल मर्याद करार ढहाये । लोक सकुचतरु तीर बहाये ॥
धीरजनाव गही नहिं जाई । रहे थकितपल पथिक डराई ॥
इकटक घोर अखंडित धारा । मिली श्याम छबि सिंधु अपारा ॥
कहति सखी सब आपस माहीं । नयनसैन दैदै मुसकाहीं ॥
देखहुरी प्यारी उत अटकी । नाजानिये कौन अँग लटकी ॥
कालिह हमहिं कैसे निदरी है । मेरे चित अब खुटक परीहै ॥
बात कहत भलै मुख तुलसी । देखहु अब देखत किमि हुलसी ॥
सुन्दरि पियके रूप लुभानी । वे बातें अब सबहि भुलानी ॥
इकटकरही नेक नहिं मटकी । कोजानै काहूके खटकी ॥

दोहा–भई भाव भोरे कछु, देखतही सुखदाय ॥
चित्र पूतरी सी रही, देहदशा बिसराय ॥

सो०–उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर बर ॥
प्यारी मुख दृगलाय, नैन नहीं मटकत कहूं ॥

---

१ अमृत । २ नदी ।

औरै भाव भई सखि प्यारी । बढ्यो प्रेम अंकुर तेरुभारी ॥
गई तासु जर सप्तपताला । पहुँच्यो अंतर शिखर विशाला ॥
वचनपत्र अवलोकन शाखा । सब जग छांह छई अभिलाषा ॥
गुणबिधि सुमन सुगंधि निकाई । लगीजाइ आनंद सुहाई ॥
पूरण आसनवनि भरभारा । फललाग्यो वर नंदकुमारा ॥
रहे रीझ तन मन धनवारैं । अरस परस दोउ खूबनिहारैं ॥
तब इकसखी कह्यो मुसकाई । प्यारी देखे कुँवर कन्हाई ॥
येईहैं सुन्दर सुखदाई । जिनकी ब्रजमें होत बड़ाई ॥
हमैं कहतही मोहिं दिखावहु । देखिलेहु अब मन सुखपावहु ॥
बहुत लालसाही मनतेरे । ताहीते हरि आये नेरे ॥
पूजी आशदरश अबपाये । हमहीं इनको बोलि पठाये ॥
राखौ चीन्हि इन्हैं अबनीके । ये मनभावनहैं सबहीके ॥

दोहा–भले शकुन आई इहां, भयो तुम्हारो काज ॥
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हैं ब्रजराज ॥
सो०–भयोनागरिहिशोच, सुनि सुनि सखियनकेवचन ॥
कहत करी मैं पोच, इन जानी अब बात सब ॥

मैं हरितन लखि रूपलुभानी । सोये देखि सबै मुसकानी ॥
कालिहकही इनसों मैं वैसे । देखी आज मोहिं इन ऐसे ॥
इन आगे मोबात नशानी । अबये करत मोहिं बिनपानी ॥
मोहीं पर मेरी चतुराई । परी उलटि डरअति सकुचाई ॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आयो । तब मनमें हरि पियको ध्यायो ॥
अहो श्यामसुन्दर सुखदानी । मैं प्रभु तुम्हरे हाथबिकानी ॥
अब सहाय सुंदर तुमकीजै । मेरी बात नाथ रखलीजै ॥
ऐसो उत्तर देहु जनाई । जाते मेरी पति रहिजाई ॥
ऐसो हरिको सुमिरि सयानी । तबइक वात्त मनहिं मनठानी ॥
इरमें भयोबुद्धि परकाशा । तबकीन्हो मनमाहिं हुलासा ॥

सखिन कह्यो अबघर चल प्यारी। भई यमुनतट बहुत अबारी॥
कबकी न्हान इहां हम आई। ऐसे कहि कहि सब पछिताई॥
दोहा-कियो दरश तुम श्यामको, घर चलिहौ कै नाहिं॥
चीन्हिरहौंमिलियो बहुरि, यहकहि सब मुसकाहिं॥
सो०-तब सखियनके साथ, चली सदनको नागरी॥
उरमें धरि ब्रजनाथ, प्रेम मगन बोली नहीं॥
हँसि बूझति इक गोपकुमारी। कहो श्याम कैसेहैं प्यारी॥
आयेरी तेरे मनमाहीं। हैंसुन्दर कछु कैधौं नाहीं॥
कैहमसों फिरि बात लुकैहौ। कै अब मनकी सांच जनैहौ॥
हम बरणो जैसे तुहिं पाहीं। कहु तैसे हरिहैं कैनाहीं॥
कहति मनहि वृषभानु दुलारी। मेरे ख्याल परीं सब ग्वारी॥
बातन बातन करति उघारी। ये चाहति अबहीं निरवारी॥
मोहूं ते ये चतुर कहावैं। मोको बातन मांझ भुलावैं॥
ऐसे इनसों बचन बखानो। इनको चातुरता गहिमानो॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई। कह करिहैं मोसों चतुराई॥
प्यारी पियके गर्वगहेली। अङ्ग अङ्ग सुख पुंज भरेली॥
मन्द मन्द गति हंस सुहाई। पगद्वै चलत ठठकि रहिजाई॥
मगन श्यामरस मुख नहिं बोलै। धरणी चरण नखन करि छोलै॥
दोहा--चितवत सूधे नेकनहिं, काहू तन अनखाय॥
रही गर्वपिय श्यामके, गरबीली गरबाय॥
सो०-सखिन कह्यो मुसकाय, क्यों प्यारी बोलत नहीं॥
कै हमसों अनखाय, लियो मौनब्रत आज पुनि॥
कैकछु बात कही नहिं जाई। कैतेरो मन हर्यो कन्हाई॥
कबहुँ जात पहिचान न तेरी। देखतही दृगतिनहिं ढरेरी॥
सांची बात कहौ अब प्यारी। शोच पर्यो मन तोहिं कहारी॥
कहा रहीही हरिहि निहारी। इकटक नैन निमेष बिसारी॥

१ घर। २ छिपावोगी।

सुनि सुनि सब सखियनकी बानी । बोली हरि भावती सयानी ॥
कहा कहति तुम बात अलेखे । मोसों कहति श्याम तुम देखे ॥
मैं देखे कैधौं नहिं देखे । तुमतौ बार हजारकपेखे ॥
तुमहीं हरिको रूप बतावो । मो आगे सब कहि समुझावो ॥
कैसे वरण भेष हैं कैसे । अङ्ग अङ्ग वरणौ तुम तैसे ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई । हमतौ ऐसे लखे कन्हाई ॥
छंद बंद कछु हमहिं न आवै । सांची बात सबनको भावै ॥
देखे हम नँदनंदन जैसे । वरणि बतावहुँ तुमको तैसे ॥

दोहा—श्याम सुभग तनुपीतपट, चटकीलोद्युति कारि ॥
शोभित घन पर दामिनी, मनु चपलई बिसारि ॥
सो०—मंद मंद सुखदात, गर्जत मुरली मधुर ध्वनि ॥
चितवत अरु मुसकात, बर्षत परमानंद जल ॥

बिविध सुमन दल उरमें माला । इंद्र धनुष मनु उदित बिशाला ॥
मुक्तावली बीच मनमोहैं । बाल मराल पांति जनु सोहैं ॥
अंग अंग छबि रूप सुहाई । कदमतरे ठाढ़े सुखदाई ॥
देखत मोहन वदन विभागा । उपजत है अँखियन अनुरागा ॥
लोचन नलिन नये छबि छाजैं । तामधि पुतरी श्याम बिराजैं ॥
मनहु युगल अलि भाग निवारे । पियत मुदित मकरंद सुखारे ॥
तामहँ चितवनमें जु सुहाई । गूढ भाव सूचित सुखदाई ॥
अधर बिम्ब जनु दाडिमदाना । शुक नासिका देखि ललचाना ॥
भृकुटी धनुष तिलक शिरधारी । मानहुँ मदन करत रखवारी ॥
मोर चन्द्र शिर सुमन सुहाये । काम शरन मनु पक्ष लगाये ॥
गड़त आनि युवतिन मन माहीं । निकसत बहुरि निकासे नाहीं ॥
वारिजवदन मनोहर बानी । बोलन मनहुँ सुधारस सानी ॥
दोहा—कुंडल झलक कपोल छबि, श्रम सीकरके दाग ॥
मानहुँ मनसिजमकरमिलि, क्रीडत सुधातडाग ॥

१ पुष्पदल । २ कमल । ३ पुष्प ।

सो०-भरे रूप रस राग, ऐसे शोभाके उदधि ॥
बिन अँखियनकोभाग, अवलोकत हरिकोबदन ॥
अँग अँग सब छबिके जाला। हम देखे इहि भांति गोपाला ॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जानैं। जो देखें सो सांच बखानैं ॥
सांचहि झूंठ करै जो कोई। तो वह झूंठ आपही होई ॥
हम इतननिसें नहीं दुराऊ। कहत यथारथ सब सतभाऊ ॥
यामें जो कोउ झूंठी मानैं। ताकी बात विधाता जानैं ॥
हम तौ श्याम निहारे ऐसे। तोहिं लगैं प्यारी कहु कैसे ॥
तुम देखे मैं सांच न मानौं। अपनी सी गति सबकी जानौं ॥
जिनको वार पार कछु नाहीं। द्वै अँखियन देखे किमि जाहीं ॥
जो तुम सब अँग अंग निहारे। धनि धनि तो ये नैन तिहारे ॥
मैं तौ लखि इक अंग भुलानी। भरि आयो दोउ आँखिन पानी ॥
कुंडल झलक कपोलन छाहीं। रही चकित उतनेके माहीं ॥
रूंधे नीर नैन ढकलाई। पहिचाने नहिं नेक कन्हाई ॥
दोहा-मैं तबते अपने मनहिं, यहै रही पछिताय ॥
देखनकोछबि श्यामकी, चहियत नयन निकाय ॥
सो०-अतिछबि अँखियांदोय, उमँगि चलत तापर सलिल ॥
कैसे दरशन होय, सखी श्यामके रूपको ॥
द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे। तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे ॥
तुम प्रति अंग बिलोकन कीन्हों। मैंनीके एकौ नहिं चीन्हों ॥
काहू को षटरस नहिं भावै। कोऊ भोजन को दुखपावै ॥
अपने अपने भाग्यनिकाई। जो बोवै सोइ लुनै बनाई ॥
जैसे रंक तनक धन पाये। होत निहाल आपने भाये ॥
मोहिं तुम्हैं अंतर है भारो। धनि तुम सब हरि अंगनिहारो ॥
तुम हरिकी संगिनि ब्रजबाला। ताते दरश देत नँदलाला ॥
सुनहु सखी राधा चतुराई। आपहि निंदति हमहिं बड़ाई ॥

१ समुद्र। २ नेत्र। ३ प्रत्येकअंग।

आपुन भई रंक हरि धनको । हमैं कहति धनवंत सबनको ॥
हम हरिकी संगति सब ग्वारी । आपुहि निर्मल होत नियारी ॥
धनि धनि धनि लाडिली पियारी । धृक धृक धृक धृक बुद्धि हमारी
तू पूरण हम निपट अधूरी । हमहिं असंत संत तू पूरी ॥

दोहा--धनि धनि तेरे मात पित, धन्य भक्ति धनि हेत ॥
तैं पहिचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ॥
सो०--धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भाग सुहागतव ॥
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोड़ी अचल ॥

जैसे तैं हरि रूप बखान्यो । हैसेोई यह हम जान्यो ॥
देखन को हरि रूप उजेरी । आंखि चाहिये जैसी तेरी ॥
मैं जु कहत लोचन भरि आये । सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अति पुनीत स्थल शुभ जानी । करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बासहरि तुव दृग माहीं । और बात दूजी कछु नाहीं ॥
ऐसे श्याम संग ब्रजबाला । कहति परस्पर गुण गोपाला ॥
तहां अचानक हरि पुनि आये । कटिकछनी नट भेष बनाये ॥
मुरली अरुण अधर पर राजै । कल ध्वनि मन्द मनोहर बाजै ॥
आप गये तिरछे मग माहीं । भावा धीन सकत रहि नाहीं ॥
तरुतमाल तनु तरुण कन्हाई । ठाढे भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकीबाला । लगीं विलोकन नँदकोलाला ॥

दोहा--रत्न जटित पग पाँवरी, नूपुर मन्दरसाल ॥
चरण कमल दल निकट मनु, बैठे बाल मराल[२] ॥
सो०--उदितचरणनख चंद, जनुमणि[३]व्योम प्रकाशकरि ॥
सुर नर शिवमुनि वृन्द, विरहताप ब्रजतियहरण ॥

जानु काम शत छबिन सँवारे । युवतिन करि मन बुद्धि बिचारे ॥
युगल जंघ छबि परम पुनीता । रंभा[४] खंभ मनहुँ विपरीता ॥

१ जोडी । २ हंस । ३ सूर्य । ४ केरा ।

ठाढे धरणि एक पगलाये। कंचन दण्ड एक लपटाये॥
तनु त्रिभंगकी लटक सुहाई। अटकिरही युवतिन मन भाई॥
व्रज युवती हरि पद मन लाये। निरखति मुनि दुर्लभ सचुपाये॥
कुलिशांकुश ध्वज चिह्न निकाई। इकटक रहीं चितै चितलाई॥
अरुण तरुण पङ्कज दल चारू। मानहु सुखमा करत विहारू॥
कटिकेहरिकी कटिहि लजावै। सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै॥
तापर कनकमेखला सोहै। मणिन जटित सुन्दर मनमोहै॥
मनहुं बालकन सहित मराला। बैठे पंगति जोरि रसाला॥
किधौं मदनके सदन सुहाई। बांधी बंधन वारि बनाई॥
व्रजतिय निरखि २ सुख लेहीं। नैनन पलक परत नहिं देहीं॥

दोहा-शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदन तडाँग॥
रोमावलि तटपर लसत, रस शृंगारको बाग॥
सो०-व्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीरकी॥
मन नहिं सकतिनिवारि, परयोजाय गहरे खसकि॥

उदर उदार बरणि नहिं जाई। रोमावलि तापर छबि छाई॥
रही अटकि छबि तासुनिहारी। परखत बनत न निरखत नारी॥
कोऊ कहति कामकी सरनी। कोऊ कहति योग नहिं बरनी॥
कहति एक अलि बालक पांती। जुरि बैठे सब एकहि भांती॥
कोउ कह नीरद नील सुहाई। सूक्षम धूम वार छबि छाई॥
एक कहति यह रविकी जाई। मरकत गिरि उर से प्रगटाई॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा। जाति नाभि हृद अगम अपारा॥
दुहुँ दिशि फेन स्वाति सुत माला। उपजत सुखमय लहर विशाला॥
शोभा बरणि सकति व्रजनारी। रहीं विचारि विचार विचारी॥
उर मुक्तनकी माल विराजै। तामधि कौस्तुभ मणिछबि छाजै॥
निर्मल नभ मानहु उडुराजी। शशिहि घेरि बैठी छबि साजी॥

१ वज्र। २ अंकुश। ३ कंधनी। ४ तालाव। ५ बादर। ६ यमुना। ७ मोती। ८ तारागणनकी पंक्ति।

भृगु पद देखि श्याम उर माहीं । मनहुँ मेघ भीतर शशि छाहीं ॥
दोहा—पीत हरित सित अरुणरँग, चटकीली वनमाल ॥
प्रफुलित है छबिकी बँवरि, मानहु चढी तमाल ॥
सो०—छबि बरणी नहिं जाय, कंबु कंठ मणि कंठकी ॥
व्रजतियरहीं लुभाय, हरि उरबर शोभा निरखि ॥
वृषभ कंध भुज दण्ड सुहाई । निंदत अहिगजशुंडि निकाई ॥
कर पल्लवन मुद्रिका सोहै । बाहु विभूषण लखि मन मोहै ॥
जनु शृंगार विटपकी डारी । फूल रही उपजतछबि भारी ॥
हरि मुख निरखत गोपकुमारी । पुनि पुनि प्रणम करतिबलिहारी॥
कहति परस्पर अति मन लोभा । देखहु सखी मदनकी शोभा ॥
चिबुक चारु अधरन अरुणाई । पान रेख तापर छबि छाई ॥
मंद हँसन द्युति दशन निकाई । उपमा कापै जात बताई ॥
अनुपम छबि चित लेत चुराये । जगमोहनी हमारे भाये ॥
गोल कपोल अमोल नवीने । मानहुँ मुकुर नील मणि कीने ॥
बाजत मुरली करकी फेरन । चंचल नयन चपलकी हेरन ॥
मणिन जटित कुंडलकी डोलन । प्रतिबिम्बत सब मुकुर कपोलन॥
सो छबि कापै जात बखानी । लखि व्रज तिय बिन मोल बिकानी ॥
दोहा—सुभगनाशिका चपलदृग, कुटिल भ्रुकुटिकीरेख ॥
जनु युग खंजन बीचशुक, उडि न सकतघनदेख ॥
सो०—घुंघुरारेकेच श्याम, वारिजमुख ढिग भ्रमरजनु ॥
शीश मुकुट अभिराम, कोटि काम शोभाहरन ॥
रूप सुधानिधि बदन बिराजै । दुहुँ कर अधर मुरलिका बाजै ॥
मानहुँ युगल कमल पद माहीं । लेत भराय सुधा शशि पाहीं ॥
हरि मुख निरखत नयन भुलाने । इकटकरहै तृप्ति नहिं माने ॥
घोषकुमारि लखति नँदनन्दन । श्याम सुभग तनु चित्रित चन्दन॥
कनक वरण पटपीत बिराजै । देखि सखी उपमा यह राजै ॥

१ शंख । २ सर्प । ३ वृक्ष । ४ दर्पण । ५ तोता । ६ वार । ७ कमल । ८ छाजे।

निर्मल गगन शरद घनमाला। तापर स्थित दामिनि जाला॥
अंग अंग छबिपुंज सुहाये। निरखति युवती जन मन लाये॥
कोऊ भाल तिलकछबि अटकी। मुकुट लटक छबि परकोउ लटकी॥
कोऊ अलक लखति चितलाई। कोउ लखि भ्रुकुटि सुरति बिसराई॥
कोउ लोचन छबि लखिललचानी। चितवनमें कोऊ उरझानी॥
कोऊ कुंडलझलक लुभानी। कोउ कपोलद्युति निरखि बिकानी॥
कोउ नाशा कोउ अधर निकाई। कोउरद चमकनि मांझ भुलाई॥

दोहा-कोउ बोलति कोउ मृदु हँसति, कोउ मुरली ध्वनिलीन
कोउ मुरली पर ग्रीव कोउ, लटकन पर आधीन॥

सो०-चारु चिबुक दर ग्रीव, कोऊ गडि तामें रहीं॥
हरि मुख शोभा सीव, थकीं निरखि जहँ सो तहां॥

कोउ सुंदर उरबाहु विशाला। निरखि थकीं कोउ भूषण बाला॥
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी। जंघ गुल्फपर कोउ बलिहारी॥
युगल कमल पदनखकी शोभा। ब्रजवासी जन मनकी लोभा॥
हरि प्रति अंग निरखि ब्रजनारी। देहगेहकी सुरति बिसारी॥
अति आनन्द मगनमन भूली। शशिमुख लखि जनु कुमुदिनि फूली॥
किधौं चकोर रहे टकलाई। पियत सुधा छबि शीतलताई॥
कैरवि कुंडल छबिहि निहारी। विकसत कमल मदन बरनारी॥
कैचकई गण मन सुखमानी। निरखिरहीं अति रति हर्षानी॥
कैधौं नव घनतन छबि देखी। भये चातकी मुदित विशेखी॥
किधौं मृगी मुरली ध्वनि मोही। श्याम लखति युवती द्रुम सोही॥
हरि छबि अरुझनिमें अरुझानी। सुरझ न सकति युवति बितरानी
रूप राशि सुखराशि कन्हाई। प्रेम राशि जनके सुखदाई॥

दोहा-छबिसागर सुखकी अवधि, गुण मंदिर रसखान॥
मोहि लियो मनतियनको, रसिक नरेश सुजान॥

सो०-मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि॥

१ दांत।

अनुपम छबि दरशाय, गये सदन आनंदघन ॥

रहीं ठगीसी गोपकुमारी । मन हरि लेगये नवल बिहारी ॥
पुनि पुनि कहति भई सुख मानी । धनि धनि राधा कुँवरि सयानी ॥
बड़ भागिनि तोसों नहिं प्यारी । तेरेही वशरी गिरिधारी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा । धनि जोरी धनि प्रीतिललामा ॥
एक प्राण द्वैदेह तुम्हारे । तुमबिन रहि न सकत हरि न्यारे ॥
तोको देखि बहुत सुख पावैं । मुरलीमें तेरे गुणगावैं ॥
तेरी प्रीति सांचि हरि जाने । ताते तेरे हाथ बिकाने ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी । दुराचारनी हम सब नारी ॥
जैसे घट पूरण नहिं डोलै । होय अघधिलौं सोढकडोलै ॥
परमसुजान नारि तैं धीरा । राख्यो परखि हृदय हरि हीरा ॥
धनी न अपने धनहिं बतावै । धरतछिपाय न प्रकट जतावै ॥
धन्य सुहाग भाग्य तुव प्यारी । कृष्ण सदा पति तूहै नारी ॥

दोहा—सुनि सुनि वाणी सखिनकी, प्यारी जिय अनुराग ॥
पुलकि रोम गद्गद हियो, समुझि आपनो भाग ॥

सो०—वचन कह्यो नहिंजाय, प्रीति प्रकट चाहत कियो ॥
हरि उर रहे समाय, बाहर करत प्रकाश नहिं ॥

सुनहु सखी तुम करति बड़ाई । सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई ॥
मोहिं कहति श्यामहिंतैं जान्यो । हरिको भले परखि पहिचान्यो ॥
तबते यही शोच मन माहीं । कैसे हरि पहिचाने जाहीं ॥
नयन दोय छबि अमित अगाधा । तापर पलक करतिहै बाधा ॥
क्षणहींमें भरि आवत पानी । श्याम स्वरूप परै किमि जानी ॥
रोम रोम अँग लखिये कोई । पलक परत औरै छबिहोई ॥
क्षण क्षणमें शोभा पलटावै । कहौ सखी उर कैसे आवै ॥
देखनको दृग अति अकुलाहीं । प्रगट लखत पहिचान न जाहीं ॥
यह सखि नहीं परति कछु जानी । विरह सँयोग लाभ कै हानी ॥

१ सोटी । २ हृदय । ३ नेत्र ।

कै दुख सुख कै समरस होई । मुहिं समुझाय कहौ सखि सोई ॥
घृतसे होम अग्नि रुचि जैसे । मिटति नहीं नयननिगति तैसे ॥
उत छबिखानि नई छबिवाने । इत लोभी दृग तृप्त नमाने ॥
दोहा–बिन पहिंचाने कौन बिधि; करौं श्याम सों प्रीति॥
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति ॥
सो०–यह जानी मैं बात, हैं आनँदकी खानि हरि ॥
पहिंचाने नहिं जात, कहा करौं द्वैलोचननि ॥
बड़ो क्रूर बिधना यह आली । समझ परी देखत वनमाली ॥
कर पद उदर ग्रीव कटिकीनी । मुखरद श्रुति नाशा शुभ दीनी ॥
भाल शिखर नख केश बनाये । अधर जीव अरु वचन सुहाये ॥
रचि पचि रुचिर अंग सब कीने । रोम रोम प्रति नयनन दीने ॥
जो ब्रज दीनो जन्म हमारो । देखन को मनमोहन प्यारो ॥
तौ कत नयन दिये शठदोई । विधि ते निठुर और नहिं कोई ॥
जो विधना को बशकर पाऊं । तो अब पद्धति और चलाऊं ॥
रोम रोम प्रति नैन बनावैं । इकटकरहैं पलक नहिं लावैं ॥
तौ कछु बनै कह्यो सखि तेरो । होय मनोरथ पूरण मेरो ॥
हरि स्वरूप लखि जानि न जाई । वह छवि द्वै लोचन न समाई ॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरो । एकहु अंग न नीके हेरो ॥
जो देखौं तौ प्रीति करोरी । देखन हीकी साधन गोरी ॥
दोहा–दुरत दुराये कौन विधि, सखि तुम सौं यह बात॥
देखे बिन नँदनन्दके, धीरज धरत नगात ॥
सो०–उड़्यो फिरत दिनरात, इन नयननके संग लगे ॥
क्षण नहिं मग ठहरात, आकरुई जिमि वात बश ॥
सुनुरी सखी दशा यह मेरी । जबते हरि मूरति मैं हेरी ॥
संगहि फिरौं दरशनहिं पाऊं । मनहीं मन पुनि पुनि पछिताऊं ॥
जब मैं अपने जिय यह आनों । निकट जाय हरि छबि पहचानों ॥
तब प्रतिबिंब मेरोई आई । होत तहां मोको दुखदाई ॥

मेरे मन हरि मूरति भावै। सन्मुख दृष्टि तहां यह आवै॥
मेरिय देह होत मुहिं बैरी। कितौ दुरावति दुरत न हैरी॥
मैं अंतर तजि लखत कन्हाई। यह अति अंतर देत बढाई॥
सखी दोष नहिं काहू केरो। करत श्याम यह सब झकझेरो॥
नीके दरशन कबहूं देहीं। नइ नइ छबि करि मन हरि लेहीं॥
चपला हूते चपल बलेरी। दशन चमक चौंधत है एरी॥
कबहूं अंगन मुकुर बनावैं। कबहूं कोटि अनंग लजावैं॥
कैसे सब छबि देखि जुपइये। कौन भांति यह साध पुरइये॥
दोहा–मगन दरशरस लाड़िली, पुनि पुनि पुलकित गात॥
तृप्त नमानति देखि छबि, कहत लखे नहिं जात॥
सो०–लीनो सखियन जान, हरि रँग राती लाड़िली॥
सुंदर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे॥
कहति धन्य प्यारी बड़भागी। नीके तू हरि सँग अनुरागी॥
तू है नवल नवलहरि ओऊ। रूप अगाध सिन्धु तुम दोऊ॥
हम जानी यह बात अगाधा। तू हरिकी अर्द्धंगिनि राधा॥
मिले तोहिं करिकृपा कन्हाई। दिये सकल दुख दूरि मिटाई॥
कहुप्यारी हमसों अबसांची। कहबने यह बात नकांची॥
छांड़िदेहु अब यह चतुराई। कहां मिले कहु तोहिं कन्हाई॥
खरकमिले कै कुंजन माहीं। कै दधिबेचन जात जहांहीं॥
कै जब डरँग डसनते बाची। कहु कैसे तू हरि रँगराची॥
सुनि सखियन की बात सयानी। बोली परम नागरी बानी॥
कबरी श्याम मिले नहिंजानौं। सुनहु सखी मैं सांच बखानौं॥
गृह बन कुंज सुरति नहिंमोहीं। दधि बेचन कै खरकबिमोहीं॥
आजकै कालिह कहौं कह आली। किये। बास डरमें बनमाली॥
दोहा–नयननते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात॥
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरजकी बात॥

१ दांत। २ दर्पण। ३ काम। ४ सर्प।

सो०-मिले मोहिं जबश्याम, सुनौ सखी तुमसों कहौं ॥
करिकै उरमें धाम, तबते मन मेरो हरयो ॥
मैं यमुना जल भरन सिधाई । औचकहरि तहँ परे लखाई ॥
मोतन चितै रहे मुसकाई । कहा कहौं सखि नैन निकाई ॥
जीत आपने बल जनुकीनी । शरद सरोजनकी छबिहीनी ॥
जीते सकल रूप गुण जाती । नीलकोकनद अरु सत पाती ॥
[1]निशि[2] मुद्रित दिवस प्रकाशे। क्षण प्रति होत मलिन द्युतिनाशे ॥
वै आनंद कंद सुखमूले । रहत दिवस निशि छबिसों फूले॥
निरखि नयनमें दशा भुलाई । उन मुसकान मोहनी लाई ॥
शिथिल अंग भये जैसे पानी । तबहीं ते उन हाथ बिकानी ॥
सूधे मारग गई भुलाई । ज्यों त्यों करि पहुँची घरआई ॥
तादिनते अँखियां ये मेरी । सुख दुख भूलिभई हरिचेरी ॥
बसीं जाय वा चितवनमाहीं । अब वह छबि क्षण बिसरत नाहीं॥
कै इन नैननि आय समानी । यह चितवनकछु जात न जानी॥
दोहा-नहिंजानत हरि कह कियो, मंदमधुर मुसकाय ॥
मनसमुझतरीझतनयन, सुखकछुकह्योनजाय ॥
सो०-तबते कछु न सुहाय, कासोंकहियेबात यह ॥
अमल परयोहग आय, अवलोकनहरिविधुवदन[3] ॥
निकसे सखी एकदिन आई । द्वार हमारे कुँवर कन्हाई ॥
मैं ठाढीही अजिर[4] अकेली । देखिरही छबि यह अलबेली ॥
चंचल नयन चितै चितचोरै । सुभग भृकुटि बिबबंक मरोरै ॥
कोटि मदन तनुद्युति सँगबाहीं । फेरत कमल कमलकर माहीं ॥
मोहित लागि भये तहँ ठाढे । कियो भाव कछु आनँद बाढे ॥
लेकर कमल भाव सों लायो । पीताम्बर निजशीशफिरायो ॥
मैं गुरुजन डर शंका आनी । बोलि न सकी कछू मुखबानी ॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये । वैसहि उनको फेरि पठाये ॥

१ शरदको कमल । २ रात्रि । ३ चंद्रवदन । ४ आंगन ।

मेरे मन हरि मूरति भावै। सन्मुख दृष्टि तहां यह आवै॥
मेरिय देह होत मुहिं बैरी। कितौ कुरावति दुरत न हेरी॥
मैं अंतर तजि लखत कन्हाई। यह अति अंतर देत बढाई॥
सखी दोष नहिं काहू केरो। करत श्याम यह सब झकझेरो॥
नीके दरशन कबहूं देहीं। नइ नइ छबि करि मन हरि लेहीं॥
चपला हूते चपल घनेरी। दशन[1] चमक चौंधत है एरी॥
कबहूं अंगन मुकुर[2] बनावैं। कबहूं कोटि अनंग[3] लजावैं॥
कैसे सब छबि देखि जुपइये। कौन भांति यह साध पुरइये॥

दोहा–मगन दरशरस लाड़िली, पुनि पुनि पुलकित गात॥
तृप्त नमानति देखि छबि, कहत लखे नहिं जात॥

सो०–लीनो सखियन जान, हरि रँग राती लाड़िली॥
सुंदर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे॥

कहति धन्य प्यारी बड़भागी। नीके तूहरि सँग अनुरागी॥
तूहै नवल नवलहरि ओऊ। रूप अगाध सिन्धु तुम दोऊ॥
हम जानी यह बात अगाधा। तू हरिकी अर्द्धंगिनि राधा॥
मिले तोहिं करिकृपा कन्हाई। दिये सकल दुख दूरि मिटाई॥
कहुप्यारी हमसों अबसांची। कहेबने यह बात नकांची॥
छांड़िदेहु अब यह चतुराई। कहां मिले कहु तोहिं कन्हाई॥
खरकमिले कै कुंजन माहीं। कै दधिबेचन जात जहांहीं॥
कै जब उरग[4] डसनते बाची। कहु कैसे तू हरि रँगराची॥
सुनि सखियन की बात सयानी। बोली परम नागरी बानी॥
कबरी श्याम मिले नहिंजानौं। सुनहु सखी मैं सांच बखानौं॥
गृह बन कुंज सुरति नहिंमोहीं। दधि बेचन कै खरकबिमोहीं॥
आजकै कालिह कहौं कह आली। कियो बास उरमें बनमाली॥

दोहा–नयननते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात॥
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरजकी बात॥

१ दांत। २ दर्पण। ३ काम। ४ सर्प।

सो०-मिले मोहिं जबश्याम, सुनों सखी तुमसों कहौं ॥
करिकै उरमें धाम, तबते मन मेरो हरयो ॥
मैं यमुना जल भरन सिधाई । औचकहरि तहँ परे लखाई ॥
मोतन चितै रहे मुसकाई । कहा कहौं सखि नैन निकाई ॥
जीत आपने बल जनुकीनी । शरद सरोजनकी[1] छबिहीनी ॥
जीते सकल रूप गुण जाती । नीलकोकनद अरु सत पाती ॥
पै निशि[2] मुद्रित दिवस प्रकाशै। क्षण प्रति होत मलिन द्युतिनाशै ॥
वै आनंद कंद सुखमूले । रहत दिवस निशि छबिसों फूले॥
निरखि नयनमें दशा भुलाई । उन मुसकान मोहनी लाई ॥
शिथिल अंग भये जैसे पानी । तबहीं ते उन हाथ बिकानी ॥
सूधे मारग गई भुलाई । ज्यों त्यों करि पहुँची घरआई ॥
तादिनसे अँखियां ये मेरी । सुख दुख भूलिभई हरिचेरी ॥
बसीं जाय वा चितवनमाहीं । अब वह छबि क्षण बिसरत नाहीं॥
कै इन नैननि आय समानी । यह चितवनकछु जात न जानी॥
दोहा-नहिंजानत हरि कह कियो, मंदमधुर मुसकाय ॥
मनसमुझतरीझतनयन, सुखकछुकह्योनजाय ॥
सो०-तबते कछु न सुहाय, कासोंकहियेबात यह ॥
अमल पयोदग आय, अवलोकनहरिविधुवदन[3] ॥
निकसे सखी एकदिन आई । द्वार हमारे कुँवर कन्हाई ॥
मैं ठाढीही अजिर[4] अकेली । देखिरही छबि यह अलबेली ॥
चंचल नयन चितै चितचोरै । सुभग भ्रुकुटि बिबबंक मरोरै ॥
कोटि मदन तनुद्युति सँगबाहीं । फेरत कमल कमलकर माहीं ॥
मोहित लागि भये तहँ ठाढे । कियो भाव कछु आनँद बाढे ॥
लेकर कमल भाव सों लायो । पीताम्बर निजशीशफिरायो ॥
मैं गुरुजन डर शंका आनी । बोलि न सकी कछू मुखबानी ॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये । वैसहि उनको फेरि पठाये ॥

१ शरदको कमल । २ रात्रि । ३ चंद्रवदन । ४ आंगन ।

तू तौ चतुर हुती अतिनारी । सेवा कछू करी नहिंप्यारी ॥
गुप्त भाव तोसों हरिकीनों । बातनभुरैं नहीं क्यों लीनो ॥
काहे कमल भावसों छायो । काहे पीताम्बरहिं फिरायो ॥
तैं कछु उत्तर तिन्हैं जनायो । घर आये केहि विधि बिसरायो ॥

दोहा—कहाकरौं गुरुजन सखी, भये मोहिंदुखदाय ॥
सकुचिरहीतिनकीसकुच, मुखकछु बचनबनाय॥

सो०—इतनो कियो सयान, मैं तब बैठी कर पराशि ॥
उरलाई हित मान, सन्मुख करि करि आरसी ॥

अन्तर्यामी चतुर कन्हाई । जानि लई मेरी चतुराई ॥
आपन हँसि उत पाग सँवारी । रहे कमल हिरदय पर धारी ॥
रहे चितै अतिहित चितलाई । मोतें सखी न कछु बनि आई ॥
कहा करौं कछु दोष न मेरो । नयो नेह उत गुरुजन घेरो ॥
रही देखि मन आनँद भरिकै । दियो कमल उर आसन करिकै॥
आंचर फेरि निछावरि कीनों । अर्घ्य सलिल आंखिन सों दीनों॥
उमँगि कलशकुच प्रगट भयेरी। टूटि टूटि कुच बंद गयेरी ॥
अब मनहोत लाज अति भारी । सखी समुझि करणी बहसारी ॥
ऐसी मेरी मति अज्ञानी । प्रभु सों मंगल करि मैं मानी ॥
अति सुख मान गये सुखदाई । तबते मोमन कछु न सुहाई ॥
कहति सखी राधा सुनि मेरी । सेवा मान लई हरि तेरी ॥
अब काहे पछितात अनेरी । तोहित श्याम जात करिफेरी ॥

दोहा—नीके कीन्हे भाव सब, तू अति नागरि बाम ॥
उन लीन्हें सब जानिकै, चतुर शिरोमणि श्याम ॥

सो०—भावहिको सन्मान, गुरु[१] जनके मधि चाहिये ॥
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा ॥

तेरे वशहि भये दधिदानी । हम यह बात भले करिजानी ॥
तैं वंदी[२] उन पाग सँवारी । उनको तुम उन तुमहिं जुहारी ॥
मिली आरसी में तुम उनको । उन उरधरी कमल मिस तुमको॥

१ बडेनमें । २ प्रणाम ।

जाने कहा भेद यह कोऊ । एक प्राण है तनु तुम दोऊ ॥
सुनहु सखी मोहन सुखराशी । अँखियां रहति दरशकी प्यासी ॥
निकसत जब सुन्दर इत आई । कमल नयन करवेणु सुहाई ॥
नाजानिये सखी तिहि काला । सब तनु श्रवण विलोचन जाला ॥
सुरत शब्द प्रति रोमन माहीं । नख शिख ज्यों चख देख्यो चाहीं ॥
इतने पर समुझत नहिं बैना । चितै रहत ज्यों चित्रित मैना ॥
सुनहु सखी यह सांचकि सपनो । कै दुख सुख कै संभ्रम अपनो ॥
कहा करौं गुरुजन डर मानो । मन मेरो उन हाथ बिकानो ॥
जबते द्वार दरश मोहिं दीनों । तबते मन अपनो करिलीनों ॥

दोहा—भाग्य दशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान ॥
मैं सेवा नहिं करीसकी, गुरुजनको डरमान ॥
सो०—यहै चूक जिय जान, मोहन मन हरि लेगये ॥
अब लागी पछितान, फेरि कौन विधि पाइये ॥

जबते प्रीति श्याम सों कीनी । तबते नींद दृगन तजि दीनी ॥
फिरत सदा चित चक्र चढ्योसो । रहतहिये अति शोच बढ्योसो ॥
मिलहिं कवन विधि कुँवर कन्हाई । यहै विचार विचारत जाई ॥
यह दुख सखी कौनसों कहिये । पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये ॥
सुन प्यारी तू हरि रँगराची । बात कहैं तोसों हम सांची ॥
तोते चतुर और नहिं कोऊ । तुम अरु श्याम एक भये दोऊ ॥
बाकी नहीं कछू अब बांची । कहौं बात मैं रेखा खांची ॥
ऐसी भई आप तू भोरी । उनको मनतैं नाहिं लियोरी ॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो । तब उन तेरोहू अपनायो ॥
अब काहेको करत सयानी । नंद नँदन वर तू पटरानी ॥
तोसी और कौन बड़भागी । तेरे संग श्याम अनुरागी ॥
विलसौ श्याम संग सुख मानी । अब कत वृथा रहत बौरानी ॥
दोहा—श्याम करी मोहिं बावरी, मन करि लियो अधीन ॥

बंशी ज्यों वाकीपलक, अटके मोहग मीन ॥
सो०-अब मोहिं कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं ॥
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि शिर ॥
बार बार मैं तोहिं सुनाई । तेरे मन यह बात न आई ॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी । मैं पाई इतनी कहँ एरी ॥
देखतही हरि रूप लोभानी । मोते सुधि बुधि सबहि हिरानी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी । गद्गद वचन श्याम रस पागी ॥
पुनि पुनि कहति यहै मुख बानी । मन हरि लियो छैल दधि दानी ॥
तब इक सखी सखीसों बोली । तू कत होति जानकै भोरी ॥
यह पुनि पुनि मनको निदरानी । गुप्त बात तिन प्रगट बखानी ॥
तुम जानत श्यामा है छोटी । है यह ज्ञान बुद्धिकी मोटी ॥
रहत सदा हरिके सँग माहीं । हमसों कहत करति सो नाहीं ॥
किये रहति हमसों हठ ओटी । बात कहत मुख चोटी पोटी ॥
भये श्याम याहीके वश अब । देखि छकैं बेंदी छोटी छब ॥
भली बनी सुन्दर अब जोटी । वे खोटे उनते यह खोटी ॥
दोहा-कहति सखी यह कहा तु, निपट गँवारी बात ॥
को प्यारी सम दूसरी, जाके वशबलभ्रात[2] ॥
सो०-रूप शील गुणधाम, यह सबमें ब्रज आगरी ॥
दृढ ब्रत लीन्हों श्याम, धन्य न याते और कोउ ॥
प्रीति तुम ही की है नीकी । कहो बात सखिअपने जीकी ॥
मैं रीझी या पर अति भारी । क्यों खोटी जो कृष्ण पियारी ॥
जो हरि कोटि मदन मन मोहैं । सो मोहन याको मुख जोहैं ॥
जैसे श्याम नारि यह वैसी । भेद करै सो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवलके नागर । सुन्दर यह जोरी छबिसागर ॥
सुनहु सखी ऐसे पै राजैं । एक प्राण द्वैतनु सुख काजैं ॥
एकहु पलक कबहुँ नहिं न्यारे । सोवत जागत जान हमारे ॥

१ लोहकोकांटो जासों मच्छीपकरे हैं । २ कृष्ण ।

पूरब नेह नयो वह नाहीं । देखहु सखी समुझि मन माहीं ॥
मेरो कह्यो मानि यह लीजै । इनसों भाव प्रीति करिकीजै ॥
इनकी प्रीति प्रीतिके माहीं । बिना प्रीति ये जान न जाहीं ॥
जब लग इनसों प्रीति न मानै । तब लग इनकी प्रीति न जानै ॥
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहौ । तौ करि इनसों प्रीति निबाहौ ॥

दोहा—सखी वचन सुनि सखिनके, भयो हिये अति चैन ॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन ॥

सो०—धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जानेउ भले ॥
हम सब निपट अजान, बात कहत औरै कछू ॥

हम इनको ऐसे नहिं जाने । ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने ॥
श्यामा श्याम एक हैं एरी । तैं इतने उपहास सहेरी ॥
वे दोउ एक दूसरी तूरी । तेरिहु प्रीति श्यामसों पूरी ॥
इनसों तेरी प्रीति पुरानी । तबते प्रीति पुरातन जानी ॥
धन्य श्याम धनि धनि तुवश्यामा । हम सब वृथा भई बिन कामा ॥
श्याम राधिका सहज सनेही । सहज एक दोऊ हैं देही ॥
सहज रूप गुण पूरण कामी । सुन्दर सहज सहज बन धामी ॥
देखि दुहुँनकी प्रीति बिशाला । भई विवश सब ब्रजकी बाला ॥
श्यामा श्याम रंग रस पागीं । सोवत ते मानहुँ सब जागीं ॥
उपजी प्रीति दुहुँनकी सांची । दूरि गई दुविधामति कांची ॥
भई युगल रस बश सब गोपी । लाज शंक मर्यादा लोपी ॥
सबके नैन रूप रस अटके । श्रीश्यामावर नागर नटके ॥

छं०—नवल नागर श्याम श्यामा, प्रेम मन सबके फँसे ॥
नयन नासा श्रवण रसना, अंग प्रति दोऊ बसे ॥
उठत बैठत चलत सोवत, जात निशिबासर घरी ॥
नहीं बिसरत ध्यान कबहूं, सकल ब्रजकी सुन्दरी ॥

दोहा—गईं सकल निज निज सदन, युगल प्रेम रस लीन ॥

१ राधा कृष्णके । २ रात दिन ।



बिछुरत नहिं एकौ घरी, जैसे जल अरु मीन ॥
सो०–रहे श्याम उर छाय, बिन देखे दृग कल नहीं ॥
गृहकारज न सुहाय, गुरुजन त्रास न सुरति कछु ॥
वे कछु कहैं करैं कछु औरैं । सासुननँद तब मारन दौरैं ॥
कहैं यहै पितु मात सिखायो । ऐसोई ढँग तुम्हैं बतायो ॥
कहा तुम्हारे मन यह आई । अपनी सुधि बुधि कहां गँवाई ॥
तुम कुल बधू लाज नहिं आवै । कहँ लगि कोउ तुम्हैं समुझावै ॥
कबकी यमुना न्हान गई हौ । ऐसी अब तुम निडर भई हौ ॥
तुम राधाको संग करति हौ । हरिके पाछे बही फिरति हौ ॥
बड़े महरकी सुता कहावैं । यह सब बात उन्हैं बनिआवैं ॥
उनको सब उपहास उठावत । व्रज घर घर प्रति यही कहावत ॥
ऐसे तुमहूं नाम धरै हौ । व्रज लोगनमें हमैं हँसैहौ ॥
हम अहीर व्रज पुरके वासी । ऐसे चलो होय नहिं हाँसी ॥
लोक लाज कुलकानिहिं करिये । फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये ॥
ऐसे कहि गुरु जन समुझावैं । लाज काज मर्याद सिखावैं ॥
दोहा–सुनि युवती गुरुजन वचन, विहँसि रहीं धरि मौन ॥
हरि राधा उपहासकी, महिमा जानै कौन ॥
सो०–कहत तैसिये बात, जैसी मति जाके हिये ॥
सुख उलूकही रात, रविको तेज न मानहीं ॥
विषको कीट विषहि रुचि मानै । कहास्वादरसस्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन । नन्द नँदन सुर श्रुतिशिवकोमन ॥
तिनकी महिमा कह ये जानैं । जिनके गुण मुनि गर्गबखानैं ॥
धनि धनि राधा कुँवारि सयानी । श्यामहि मिली कर्म मन बानी ॥
श्याम कामके पूरण हारैं । पूरण करि तिनको उर धारैं ॥
धन्य धन्य श्यामाबनवारी । यह रस लीला व्रज बिस्तारी ॥
ऐसे गोपी गण करि ध्याना । करत श्याम श्यामा गुणगाना ॥

१ उलूपक्षी ।

श्याम रूप श्यामा अनुरागी । रोम रोम ताही रँग पागी ॥
गई सदन मन लागत नाहीं । मन मोहन बिन क्षण युग जाहीं ॥
मनहीं मन गुरु जन पर खीजै । इन बिमुखनको संग न कीजै ॥
कौन भांति करि इन सों छूटौं । क्यों वह दरश सरससुख लूटौं ॥
बार बार जिय अति अकुलाई । कैसेहुँ हरिबिन रह्यो न जाई ॥

दोहा–धृक गुरुजन कुलकानि धृक, धृक लज्जा धृक धाम ॥
धृक जीवन बहु दिननको, बिनु सुन्दर घनश्याम ॥

सो०–पलक कलप सम जाय, ब्रजबासी प्रभु दरश बिन ॥
सदन न नेक सुहाय, मन हरि लीन्हो सांवरे ॥

अथ बाटकेमिलनेकी लीला ॥

श्रीवृषभानु कुँवरि बर गोरी । कृष्ण प्रेम उनमत्त किशोरी ॥
तनु बिह्वल मन हरिके पासा । दुरत न हृदय प्रेम परकाशा ॥
चली यमुन जल आप अकेली । रूप राशि गुण राशि नवेली ॥
दृगन श्याम दरशनकी आसा । मनहीं मन यह करति हुलासा ॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊं । तौ उरको संताप नशाऊं ॥
राखौं बांधि हृदय सों लाई । भुजकी दृढ करि दाम बनाई ॥
जैसे लियो चोरि मन मेरो । तैसे लेउँ छोरि उनकेरो ॥
छोड़ौं नाहिं करै जो कोरी । ऐसे जान विचारति गोरी ॥
इतते प्यारी यमुनहिं जाई । उतते आवत घरहिं कन्हाई ॥
नीलजलजतनु शोभित आछे । नटवर भेष काछनी काछे ॥
दूरिहिते देखतही जान्यो । जीवन प्राण तुरत पहिचान्यो ॥
रही मनोहर बदन निहारी । कोटि मदन जापर बलिहारी ॥

दोहा–मन आनँद हुलस्यो हियो, रोम पुलक दृग बारि ॥
बोली गद्गद वचन मुख, तनु बिह्वल संभारि ॥

सो०–चित चोरे कहँ जात, मैं ढूंढति तबते तुम्हहिं ॥
कहँ सीखी यह बात, अहो नंदके लाडिले ॥

१ घर । २ रस्सी । ३ मेघ ।

जानत जैसे माखन चोरी । तब वह बात हती कछु औरी ॥
बालकहते कान्ह तब तुमहूं । भोरी सहज हुती मनहमहूं ॥
मुख पहिंचान मान सुख लेती । यशुमति कान जान तब देती ॥
बसौं बास सब ब्रज इक ठौरी । गोरस काज कान नहिं तोरी ॥
अब भये कुशल किशोर कन्हाई । भईसजग हम सब तरुणाई ॥
माखन ते अब चितकी चोरी । लागे श्याम करन बरजोरी ॥
नख शिख अँग चिह्न चोर तुम्हारो । लीन्हो मन धन छीनि हमारो॥
सो अब जात कहां तुम लीन्हे । भुजापकरि ढाढे हरिकीन्हे ॥
तुमको नीके करि हम चीन्हे । बनिहै अब मेरो मन दीन्हे ॥
ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत । मोसों सूधे वचन न बोलत ॥
अब तौ मोहिं बूझि घर जैहौ । बिना दिये मन जान न पैहौ ॥
प्यारीयों झगरति पिय पाहीं । देहगेहकी सुधि कछु नाहीं ॥

दोहा–बीच करी कुल लाज तब, सम्मुख आई धाय ॥
बखसि नागरी चूक यह, मोहिं कह्यो समझाय ॥
सो०–चितलै गयो चोराय, चूक परी हरि ते बड़ी ॥
छाँडिदेहु डरपाय, बड़े महरिकी कुँवरि तुव ॥

कुलकी लाज अकाज कियोरी । कहा करौं अति जरतहियोरी ॥
तबयों कहति पीयसों प्यारी । सुमहु प्राणपति गिरिवरधारी ॥
देखे विना तुमहिं दुख पाऊं । सो यह तुम बिन काहि सुनाऊं ॥
गुप्त रहन मोको तुम भाष्यो । सो आयसु मैं शिर धरि राख्यो ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती । प्राणनाथ तुमहित सब भांती ॥
तुमतेविमुख जननके माहीं । रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं ॥
मात पिता अति त्रास दिखावैं । निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं ॥
भवन मोहिं माटीसों लागे । इक क्षण शोच नाहिं उरत्यागे ॥
कहँ लगि अपनी विपति बताऊं । तुम बिन दुखको अंत न ठाऊं ॥
सुंदर श्याम कमल दल लोचन । करहुकुसंगतिको दुखमोचन ॥

अब यह विनय श्याम सुनि लीजै। चरणन ते न्यारी नहिं कीजै ॥
कुलकीकानि कहां लगि मानो। यह मन मोहन तुमहिं लुभानो ॥
छंद–मन लुभानो तुमहिं मोहन, और तेहि भावै नहीं ॥
विनलखे गिरिधरण सुंदर, कहूं सुख पावै नहीं ॥
लोक डर कुल लाज गुरु जन, कानि कहँलौ कीजिये॥
सिंह शरण कृपालु जंबुके, त्रास क्यों सहिजीजिये ॥
दोहा–निरखि श्याम प्यारी वदन, सुनिकै वचन सिहाय ॥
प्रेम अधीन विलोकि अति, हर्षि लई उरलाय ॥
सो०–शीतल पंकज पान, परश हरयो तनु विरह दुख ॥
प्रेम विवश भगवान, बोले प्यारी सों हरषि ॥
कत दुख पावतिहौ तुम प्यारी। यह लीला तुमहित विस्तारी ॥
बसत सदा मैं तुम मन माहीं। तुम मम उरते बाहर नाहीं ॥
श्रीवृन्दावन घन सुखकारी। है बिहार थल तुम्हरो प्यारी ॥
शीतल सघन कुंज छवि धामा। हम तुम संगमिलैं तहँ भामा ॥
दीजो सैन मोहि कहँ आई। तब तुम पै ऐहौं मैं धाई ॥
अब गृह जाउ आइहैं कोऊ। यों संकेत बढ्यो हित दोऊ ॥
ब्रज यमुना मग बिच दोउ ठाढे। प्रेम सकोच अतिहि मन बाढे ॥
बिछुरत बनत न रहत तहांहीं। चितवत सखिन चपल चहुँघाहीं॥
तबहिं युवति ब्रजते कछु आई। कछु यमुनाते ब्रजमें जाई ॥
दुहुँदिशि तरुणिन आवत जानी। मनहीं मन राधिका लजानी ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई। मिलेहांकदै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तबते सब ग्वाला। ऐसे टेरि कह्यो नँदलाला ॥
दोहा–गये भाव करि श्याम यह, लियो नागरी जान ॥
कहिहौं यहै सखीन सों, कीन्हो यह अनुमान ॥
सो०–देखि सखी मोहिं संग, अबहिंआय सब बूझि हैं ॥
जानति इनको रंग, मन मन शोचति लाडिली ॥

१ सियार। २ टेर।

उन युवतिन मोहनको देख्यो । जात राधिका ढिगते पेख्यो ॥
कहन लगीं आपसमें बातें । देखहु सखि प्यारीकी घातें ॥
बात करति मिलि संग बिहारी । हमहिं लखत दीन्हेहैं टारी ॥
बूझतही कछु बुद्धि उपैहै । सांची एकहु नाहिं जनैहै ॥
इतहु उतहुते आई नारी । कहति कहां तू जाति पियारी ॥
अबहिं लखे तुवढिग वनवारी । कहां गये पछितात कहारी ॥
कहा दुराव मनत अब कीन्हे । हमहूंते तबहीं लखि लीन्हे ॥
कान्ह कहा बूझतहै तुमको । सांची बात कहो तुम हमको ॥
मन लै गये तुम्हारे चोरी । सोपायो अपनो तुम गोरी ॥
श्यामहिं मिलि अपनो मन लीन्हो। देखतहमैं टारियो दीन्हो ॥
सदा चतुरई फबतिउ नाहीं । अबतौ आइपरी फँद माहीं ॥
हमहिं बहुत तुम निदरि रहीहौ । कहां रहत हरि कित निबहीहौ ॥

दोहा–कहत रही जब तबहिं तुम, हरि सँग देखहु मोहि॥
तब कहियो जो भावही, लीन्होबेसरि खोहि ॥
अब हम लेहिं छिनाय, बेसरिदेहो कै नहीं ॥
कीकरिहो चतुराय, और कछू हमसों अबहुँ ॥

तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी । तुम सब भई अजान कहारी ॥
मैं मूरख तुम चतुर बडेरी । ऐसेहि बेसरिलैहो मेरी ॥
यही कहन मोको तुम आई । इतउतते मिलि उठि तुम धाई ॥
बेसरि एक लेहुगी कोको । पीताम्बर दिखरावहु मोको ॥
पीताम्बर अरु बेसरिलीजै । प्रगट जाय तब ब्रजमें कीजै ॥
तारी एक बजाति कर दोऊ । इतनो ज्ञान करो सब कोऊ ॥
सुनु राधा तोसों हम हारी । धन्य धन्य तेरी महतारी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जानैं । बश कीन्हो घनश्याम सुजानैं ॥
अबहीं टारि पठायो तिनको । हम देखे तेरे ढिग उनको ॥
तापरनिदरतिहै तू हमसों । कहत न बनत हमैं कछु तुमसों ॥

१ शोभित ।

अँग अँग बिरंचि कपट चतुराई । निज कर विधना तोहिं बनाई ॥
इतनी बुद्धि श्यामके नाहीं । जितनी है प्यारी तो माहीं ॥
दोहा-श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घर जाय ॥
बेसरि छोरति हैं सखी, बिन काजै उठि धाय ॥
सो०-जान्यो तुम्हरो ज्ञान, दौरि परीं मोपर सबै ॥
जो तुम हती सुजान, गहती बाँह दुहूनकी ॥
कहु प्यारी सांची अब हमसों । कछु तो श्याम कहत हैं तुमसों ॥
हाहा बात कहो सो प्यारी । भेद करो तो सौंह हमारी ॥
तुष ढिगते मोहन हम हेरत । गये उतै ग्वालनको टेरत ॥
तू क्यों ठढ़ीकिरही मग माहीं । कहा कह्यो मोहन तुव पाहीं ॥
सहज होय हमसों यह भाषो । उर में कछू रोष मति राखो ॥
मैं यमुना तट जात रहीरी । ब्रजते आवत तुम्हें लखीरी ॥
परखन लगी तुमहिं मगमाहीं । तिरछे आय गये हरि पाहीं ॥
मैं तुमहीं तन रही निहारी । उन पूछो ग्वहिं ग्वाल कहांरी ॥
मैं सुनि सन्मुख दीठि[२] न खोली। हां नाहीं कछु मुख नहिं बोली ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई । तुम मेरी बेसरि को धाई ॥
सुनि यह बात युवति सकुचानी । कछु तो परति सांचसी जानी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई । यह तो हमहुँ श्रवण सुनि पाई ॥
दोहा-तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुनु लाड़िली सुजान ॥
हम मानी तेरी कही, तूमति रिस जिय आन ॥
सो०-लीन्ही कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाडिली ॥
झूठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै ॥
अब चलिये यमुनाके धामा । संग चलैं हमहूं सब श्यामा ॥
चूक परी हम सों यह तेरी । नाम लियो बेसरि को एरी ॥
अहो सखी तुम निपट अनैसी । जानति हौ मोहिं आपहि जैसी ॥
झूंठहि धाई दोष लगावन । अब लागीं मोको दुलरावन[३] ॥

१ क्रोध । २ दृष्टि । ३ प्यार ।

क्षणक बुद्धि तुम्हरी धौं कैसी । हौ तुम बड़ी पेटकी जैसी ॥
यह सुनि हँसत चलीं ब्रजनारी । गईं यमुन ते गृहको प्यारी ॥
ऐसे सखियन को बहरायो । कृष्ण[१] सनेह न प्रगट जनायो ॥
नागरि श्यामा श्याम सनेही । चतुर श्याम श्यामाके लेही ॥
श्यामा श्याम बसत तनु माहीं । बसत श्याम श्यामा मन माहीं ॥
नंद सँकेत गये घर दोऊ । मात पिता कछु जान न कोऊ ॥
कैसे हूं करि दिवस बितायो । निशिनिघटे रस बिरह सतायो ॥
अति आतुर दोऊ मन माहीं । क्यों हू नींद परति है नाहीं ॥

दोहा–बिरह नदी निशि तम सलिल[२], पैरतथके निहारि ॥
चूड़ोमणि तमचर[३] कह्यो, मिल्यो पार भिनसारि ॥

सो०–सुनितमचर की टेर, अति आनंद दुहून मन ॥
आतही उठे सबेर, लगी चटपटी मिलनकी ॥

अथ संकेतकेमिलनेकी लीला ।

श्याम उठतलखि जननी[४] जागी । हरि मुख कमल निरखि अनुरागी ॥
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे । आज कहा तुम उठे सबारे ॥
उत्तम जल भरि दीनी झारी । अतिआतुर हरि करी मुखारी[५] ॥
बिवस श्याम प्यारी[६] रस छाके । मगन ध्यान वृषभानु सुताके ॥
उत वृषभानु सुता सुकुमारी । उठी मात वह भाव विचारी ॥
ग्रीवाँसों मोती लर तोरी । आंचर बांधि मात की चोरी ॥
यहै ब्याज अपने उर धारयो । कुंज धाम बन जान विचारयो ॥
आंगन गई भवन फिर आई । गई भवन ते फिरि अँगनाई ॥
जात बनै न रह्यो नहिं जाई । इत उत फिरत भवन बितताई ॥
मनहिं कहत कब मिलहु कन्हाई । कालिगये[७] बनधाम बुलाई ॥
मात कह्यो क्यों उठी सवाँरी[८] । जाति कहां प्रातहिंतू प्यारी ॥
आज कहा इत उत तू डोलै[९] । मुखतें कछू बचन नहिं बोलै ॥

१ कृष्णराधिका । २ पानी । ३ मुर्गा । ४ यशोदा । ५ दातून । ६ राधिका-जीके । ७ गर्दन । ८ सबेरे । ९ टहलत ।

दोहा–अति नागरि मोती लरी, राखी प्रथम दुरायें[2] ॥
ताहीमिसि करिके सकुच, बोलति नहीं डराय ॥
सो०–पुनि पुनि चितई मात, लखी ग्रीव भूषण बिना ॥
तब जानी यह बात, खोई कहुँ मोती लरी ॥
जननी भई तबहि रिसहाई । कंठ लरी तैं कहां गँवाई ॥
मोतिनको गजरा छबिछायो । बड़े मोलको परम सुहायो ॥
तेरे लिये महरै[4] बनवायो । मैंतोको हित करि पहिरायो ॥
कौने लियो कहांतैं गेर्‍यो । कालहि तेरे तौ गर हेर्‍यो ॥
बूझे तोहिं जवाब न आवै । कह शोचति किन बेग बतावै ॥
सुनि राधिका मातकी बानी । मन बिहँसत ऊपर भय मानी ॥
बोलति नहीं हृदय हरषाई । कहति भली सुधि मोको आई ॥
अबहीं मोको खीज पठैहै । यामिसि भेंट श्याम पैहैहै ॥
कहत मातसों तब भय मानी । मोहिं नहीं सुधि कहां हिरानी ॥
कालिह सखिन सँग यमुना न्हाई। तहां कहूं धौं तिनहिं चुराई ॥
कैधौं गिरी कतहुँ जल माहीं । यहतौ मैं कछु जानति नाहीं ॥
कालिहिते शोचति पछिताई । तेरे डरते कह्यो न जाई ॥
दोहा–नेकु नींद नहिं निशि परी, तेरी सौं सुनि मात ॥
याही डरते आज हौं, उठी बड़ी परभात ॥
सो०–सुनत सुताके बैन, महिरि चकित मुख लखिरही[5] ॥
कृष्ण[6] प्रिया गुणऐन[7], कोऊ पार[8] न पावई ॥
तब जननी करि क्रोध कहीरी । मैं बरजति तोहिं हार रहीरी ॥
फिरति नदी बन डगरन माहीं । काहूकी शंका तोहिं नाहीं ॥
बहुत तात तोहिं लाडलडाई । नोखी सुता महरकी जाई ॥
बरजति मैं जुकरति तू सोई । भली करी मोतिन लर खोई ॥
एक एक नग परम सुहायो । लाखटकादै मैं जुमँगायो ॥

१ अतिचतुर । २ छिपाय । ३ माता । ४ पितावृषभानु । ५ देखरही ।
६ राधिका । ७ गुणोंकागेह । ८ थाह ।

जाके हाथ परोसो दैहै । घरबैठे निधि पाय गवैहै ॥
भरि भरि नयन लेति है माता । मुखते कछू न आवति बाता ॥
रीतो गरो निहारति जबहीं । हियो उमँगि आवत है तबहीं ॥
कहा करों जो खोइ गईरी । तू कित खोजत बिकल भईरी ॥
लैहों और मँगाय नवासों । देतिनहीं क्यों और डिबासों ॥
करिहै कहा सेंति जो राखै । तादिनलेहि फितकधौं माखै ॥
रोषति कहा औरहै नाहीं । दैनिकासि पहिरो गर माहीं ॥

दोहा–सुन राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहि ॥
चौकी हार हमेल कछु, नहिं पहिराऊं तोहि ॥

सो०–लाखटकाकी हानि, करी आज तैं लाड़िली ॥
अब नहिं देहों आनि, जबलौं वह लावै नहीं ॥

अबतौ घर बैठन जब पैहो । जलज सरोज खोजलै ऐहो ॥
जाधौं देखि कहूंजो पावै । तबहीं तोहिं भलाई आवै ॥
यमुना गई संग तबकोही । बूझति नहीं जाय किन ओही ॥
कौन कौनको तोहिं बताऊं । कहँ लग सबके नाम गनाऊँ ॥
चंद्रावलि ललतादिक नारी । हतीं सकल ब्रज गोपकुमारी ॥
देखहु जाय यमुन तट हेरी । जहां राखि मैं न्हाति रहीरी ॥
युवती एक रही टकलाई । पूछि देखिहौं वाको जाई ॥
जैहै कहां जलज लरि मेरी । तिनहीं लई भली सुधिएरी ॥
आज अबेर लगेगी मोहीं । ढूंढोंगी ब्रज घर घर ओहीं ॥
ऐसे करि माता मति भोरी । हरषि चली वृषभानु किशोरी ॥
निधरक चली सदन ते प्यारी । मन अटक्यो मन कुंजबिहारी ॥
मनहीं मन यों शोचति जाई । कैसे हरि सों देहु जनाई ॥

दोहा–बार बार नँदनंद इत, आतुर जोहँत राह ॥
प्यारी मुख शशि उदैकी, नैन चकोरन चाह ॥

सो०–भरे विरह रस माहिं, क्षणमें घर द्वार क्षणक ॥

१ कौन २ थी । २ हार । ३ बहलाकर । ४ राधिका । ५ गृह ।
६ कृष्ण । ७ देखत ।

फिर फिर आवहिं जाहिं, लगी चटपटी प्रेमकी ॥
जननी करति रसोई आतुर। लखि लखि जात श्यामघन चातुर ॥
कहा अबेर करति तू मैया। भूख लगी मोहिं कहत कन्हैया ॥
यशुमति कह्यो तात बलिजाई। अब विलंब नहिं बैठहु आई ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई। बोलि लेहु अरु हलधर भाई ॥
सादर कह्यो श्याम बल भैयो। दाऊजी जेवनको अइयो ॥
मोको अबहिं नहीं रुचि मैया। सखन संग तुम खाहु कन्हैया ॥
संग सखन लै तब मन मोहन। जेवनको बैठे सब गोहन ॥
खटरस व्यंजन सरस सँवारे। परसि धरे रोहिणि पनवारे ॥
श्याम सखनको आयसु दीनो। आपुनिहूं कर कौरहि लीनो ॥
तबहीं कोकिलके समबानी। बोलि उठी राधा सुखदानी ॥
नंद महरि पिछवारेहिं आई। झूठहि ललताको गुहराई ॥
वृन्दावन मग जाति अकेली। आवहु वेगि तुमहुँ सँग हेली ॥
दोहा–बिन जेये मोहन उठे, करते कौर गिराय ॥
जेंवतही[1] छांडे सखा, चले बनहिं अतुराय ॥
सो०–देखि चकित दोउ मात, चौंक रहे सिगरे सखा ॥
कहति कहा चले जात, अति आतुर गोपाल तुम ॥
अबहीं ग्वाल गयो कह मोही। बनमें गाय वियानी लोई ॥
मैं जेवन बैठों बिसराई। सो सुधि मोहिं अबहिं है आई ॥
तुम जेवहु मैं देखहुँ जाई। करी श्याम तिनसों चतुराई ॥
लोही मेरी गाय वियानी। यह कहि चले हर्ष उर आनी ॥
हँसत सखा सब मन मन माहीं। नहीं गाय बछरा ह्याँ नाहीं ॥
है प्यारी रानी ह्यां राधा। हम जानी यह बात अगाधा[2] ॥
जननी नहीं कछू यह जानी। बार बार कहिके पछतानी ॥
भूखे श्याम गये उठि धाई। राज करौ यह गाय बिसाई ॥
दई सैन दै वन श्रीश्यामा। पहुँचे जाय तहाँ घनश्यामः ॥

१ भोजनकराने। २ दढ़ीदुस्तर–अथाह।

देखत हर्ष भये मन दोऊ। फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अंकम माला। कनक वेलि जनु लगी तमाला ॥
मिलि बैठे दोउ कुंज सुहाई। कोटि काम रति[2] छबिहि लजाई॥
दोहा-नवल कुंज नवनागरी, नव नागर नँदनन्द ॥
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनन्द ॥
सो०-विलसत मदन विलास, कोटि मदन गणके मथन ॥
युगल रूपकी रास, नित्य विलास विलासनिधि[3] ॥
नागर श्याम नागरी श्यामा। शोभित कुंज कुटी छबि धामा ॥
चितवत ढुर[1] ढुर नैन लजोहैं। सो छबि बरणसकै कबि कोहैं ॥
रीझे श्याम नागरी छबिपर। नागरि निरखत श्याम शुभगबर॥
देह दशाकी सुरति बिसारैं। अरश परस दोउ रूप निहारैं ॥
शोभित वदन महाछबि छाये। सिथल अंग श्रमबिंदु[4] सुहाये ॥
इंद्रिय वृन्द राजीव कमल जनु। फूलि रहे मकरन्द[5] भरे मनु ॥
बैठे कुंजद्वार, सुखदाई। कोमल किसलय सेज सुहाई ॥
लटकति चहुँदिशि कुसुमितवेली। फूलि रही तरुडार नवेली ॥
हरित भूमि छबि बरणि नजाई। बहत समीर[6] सुखद पुरवाई ॥
आये उमहि मेघ सुखकारी। परत बूंद शीतल श्रमहारी ॥
भीनत सुरँग चूनरी सारी। मन सकुचत लखि रसिकविहारी॥
बूंद बरावत मोहन पातन। हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन ॥
दोहा-भीजे रस रँग प्रेम सुख, जल भीजे दोउ गात ॥
भीजे अम्बर कुंज गृह, श्यामा श्याम सुहात ॥
सो०-यह अचरजकी गाथ, को मानै को कहिसकै ॥
गोपसुताके साथ, रमत ब्रह्म द्रुम कुंजतर ॥
इहविधिकरिविलास वन माहीं। कह्यो श्याम श्यामाके पाहीं ॥
अब गृह जाहु सांझ नियराई। मात पिता करिहैं दुचिताई ॥
यह रस रीति गुप्तकी नीकी। तुम प्यारी अति मेरे जीकी ॥

१ ढोरकर-पकड़।२कामदेवरति।३सुखसागर।४प्रस्वेदकण।५रस।६वायु।७राधिका।

करते कौर डारि मैं आयो। तुमरी बोलसुनत उठि धायो ॥
मेरे प्राण बसत तुम पाहीं। इक क्षण तुमको बिसरत नाहीं ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी। करति मनहिं मन आनँद भारी ॥
अति सनेह बोली सकुचाई। सुनहु प्राण प्रीतम सुखदाई ॥
कहा करौं पग जात न थरको। मन अटक्यो नहिं मानत डरको ॥
दृग तुमको देखत सुख पावैं। गृह गुरु जन मोहिं नेकु न भावैं ॥
बरजहु अपनी चितवन तुम हरि। और मंद मुसकान मनोहरि ॥
तुमरीनिकु सहज यह बानी। सहियत हैं हम सर्वसहानी ॥
वशीकरण हैं इनके माहीं। बिवस भयो मन मानत नाहीं ॥
दोहा–ऐसी विधि परगट करत, दंपति निज अनुराग ॥
भये परम आनन्द रस, वदन आपने भाग ॥
सो०–श्याम लई उरलाय, प्रिया बोधि पठई घरहि ॥
चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥
करति जननि अवसेर विशाला। पहुँचे सदन श्याम त्रिहिकाला ॥
लीने धाय लाय उर मैया। कहति लालकी लेहुँ बलैया ॥
करते कौर डारि उठि भागे। सुनत गाय ब्यानी अनुरागे ॥
लोही गाय आपनी ब्यानी। ताते प्रीति अधिक उर आनी ॥
वह तौ नाहिंन मेरी गैया। वृन्दावन भरम्यों सुन मैया ॥
गोवर्द्धन यमुना तट सारो। वृंदावन ढूँढत सब हारो ॥
कोऊ सखा संग तहँ नाहीं। फिरयो अकेलो वनके माहीं ॥
युवती एक मिली धौं कोही। सो पहुँचाय गई घर मोही ॥
सुनि यशुदा मन अति अकुलानी। धोये पदलै तात्तोपानी ॥
तुरत श्यामको भोजन दीनो। निरखि मुखारविंद सुख लीनो ॥
लीलासागर कुँवर कन्हाई। सदा सदा भक्तन सुखदाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुण आगर। नँदनंदन सुन्दर सुखसागर ॥
दोहा–अति श्रीकीरति नँदनी, रूप राशि गुण खान ॥

१ हाथ। २ तुम्हारेप्रेममेंलगरह्यो। ३ आंख। ४ आपस। ५ राधिका।
६ रूपकासमूह–अत्यंतरूपवती।

चली श्याम सुखदै भवन, नागरि नवल सुजान ॥
सो०-लई खोलके हाथ, आंचरते मोती लरी ॥
सखी मिली इक साथ, बूझत कह तू लाड़िली ॥
तासों व्योरा[1] कहि समुझायो । गई हती यह काज बतायो ॥
कह्यो सखी तब सुनरी प्यारी । ऐसी निधरकभई कहारी ॥
व्रज घर घर तू फिरति अकेली । संग नहीं कोउ सखी सहेली ॥
मोको संग बोलि नहिं लीनी । ऐसी तैं करनी यह कीनी ॥
प्रातहि गई अबहिं तू आई । बीतो दिवस निशा नियराई ॥
पायो हार किधौं पुनि नाहीं । देखहु मोहिं साद मन माहीं ॥
चतुर सखी मनमें यह जानी । मिलवतिहै यह झूठी बानी ॥
यह तौ गई श्यामके पासा । आवतिहै करि भोग विलासा ॥
कह प्यारी किन हार चुरायो । कैसे जाय कहांते पायो ॥
व्रजयुवतिन सबहिन मैं जानौं । कहौ तौ सबके नाम बखानौं ॥
ताको नाम लेहि किनलीन्हों । प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों ॥
चोर तुम्हारो कुँवरकन्हाई । तिनसों जाय विलस तू आई ॥
दोहा-रस[2] वश कीन्हे श्यामतैं, कहा बनावति बात ॥
कहे देत रस रँग भरे, अरु सौहैं[3] सब गात ॥
सो०-कहबहकावति मोहिं, कहां हार कहँ ग्वालिनी ॥
तबते जानति तोहिं, जबतें तैं हरि सँग कियो ॥
इन बातनि कछु पावति हेरी । तोहिं यहै नितभावति हेरी ॥
देखत मोहिं अकेली जबहीं । नई बात उपजावति तबहीं ॥
बिनही देखे झूंठ लगावै । नाहक मोसों वैर बढ़ावै ॥
सौंह दिये बूझति मैं तोहीं । जोर कहातिकै देख्यो मोहीं ॥
जब जानी प्यारी विरुझानी[4] । तब वह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी । तू जीती मैं तोसों हारी ॥
चली भवन वृषभानु दुलारी । अति अवसेरै[5] कहत महतारी ॥

१ व्यवस्था । २ रस । ३ सौगन्ध । ४ अनखानी । ५ चिंता ।

गई प्रात राधा नहिं आई। दिवस गयो निशियामै विहाई॥
हार काज मैं त्रासै दिखाई। ताते रूखरही कहुँ जाई॥
ह्वैहै धौं काके घर माहीं। कहां जाउँ मैं ढूँढन ताहीं॥
जाहु हार यह कहि पछिताई। सुता सनेह अधिक अकुलाई॥
सुनि है बात महर कहुँ जबहीं। मोपर अति रिसकरि है तबहीं॥
दोहा-शोचति जननी विकल अति,मन न लहति विश्राम॥
उर डराति ताही समय, गई कुँवरि निज धाम॥
सो०-देखतिही उठि धाय, हरषि लई उर लायके॥
सुता माय उरलाय, शोच मिटयो धीरज भयो॥
लैरी मात हार मैं पायो। जाकारण मोहिं त्रास दिखायो॥
मनहीं मन कीरति सकुचाई। पोच करी मैं याहि रिसाई॥
अति पुनीति राधिका प्रवीनी। कृष्ण मिलनहित यह मति कीनी॥
अगमअगोचर है प्रभु जोई। ब्रज वनितनवश कीने सोई॥
जो प्रभु शिव सनकादिक ध्यावै। ब्रज गोपिन सँग सो सुख पावै॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी। निगमन हूंते अगम न भारी॥
प्रीति विवस सबते गिरिधारी। राजा रंक पुरुष कहँ नारी॥
देवकि उदर प्रीति वश आये। प्रीतिहिते यशुमति पय प्याये॥
प्रीतिविवस वन धेनु चराई। प्रीतिविवस नँद कुँवर कन्हाई॥
प्रीतिहिके वश दही चुरायो। प्रीतिविवस ऊखल बँधवायो॥
प्रीतिविवस गोवर्द्धनधारी। प्रीतिविवस नटवर वनवारी॥
प्रीतिविवस गोपिन सँगकामी। प्रीतिविवस वृन्दावनधामी॥
दोहा-श्याम सदा वश प्रीतिके, तीन भुवन विख्यात॥
बिना प्रीति नहिं पाइये, नंदमहरको तात॥
सो०-प्रीति करहु चित लाय, ब्रजवासी प्रभुपदकमल॥
कहत सुनत श्रुति गाय, प्रभु रीझत हैं प्रीतिको॥

१ एकपहररात्रि। २ डर। ३ वृषभानु। ४ शुचि। ५ चतुर। ६ जाननेयो-ग्यनहीं-अदेख। ७ वेर।

अथ प्यारीके घर मिलनेकी लीला ॥

भये श्याम नागरि[1]वश ऐसे । फिरति छांह संगहि सँग जैसे ॥
बदनकमलरस रूप लुभाने । रहत मिली मुख जो भहराने ॥
वचन नादरस भृंग जो गीधे । नैन कटाक्ष बंक शर बीधे ॥
कबहुँ श्याम यमुनातट जाहीं । विन प्यारी देखे अकुलाहीं ॥
कबहुँ कदम चढ़ि मग[3] अवलोकैं । कबहुँ जाय वन कुंजविलोकैं[4] ॥
गृह वन लगत कहूं मन नाहीं । मिलन प्रकार चहत चितमाहीं ॥
तय वृषभानु पुरातन आवैं । मुरली मधुर बजावैं गावैं ॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी । मनहीं मनहि सिहात विशेखी ॥
अति अनुराग[5] भरे दोउ नागर । गुण सागररस रूप उजागर ॥
अरस परस दोउ चाहत ऐसे । शशि चकोर अंबुज[6] अँलि[7] जैसे ॥
चली यमुन वृषभानु दुलारी । शोभित संग नवल ब्रजनारी ॥
देखे नंद सुवन तेहि खोरी । व्याकुल प्रेम विकल मति भोरी ॥

दोहा–सखिन संग लखि नागरी, मन डरपी सकुचाय ॥
श्यामपरे फँद कामके, कौन कहै समुझाय ॥
सो०–सखियनके संकोच[8], बोल सकत नहि मुख वचन ॥
हृदय भयो अति शोच, देखि विरह व्याकुल हरिहि ॥

इतहि सखिनसों बात बनावैं । उतहि श्यामको भाव जनावैं ॥
मुख मुसकाय सकुच पुनिलीने । सहज अलक निरवारन कीने ॥
एक सखी यमुनासों आवति । ताहि भेंटि यों वचन सुनावति ॥
मेरे सदन आइयो आली । हर्षभये यह सुनि वनमाली ॥
प्यारी गुप्त भाव जो कीनो । श्याम सुजान जानसो लीनो ॥
हर्षि गये तब निज गृह मोहन । प्यारी चली सखिनके गोहन[9] ॥
चतुरसखिन मनमें लखि लीनो । भौंव[10] कछू हरिसों इन कीनो ॥
हरुवै आपुसमें बतरानी । हरितनलखि कछु यह मुसकानी ॥

---

१ राधिका । २ हरिण । ३ रस्ता । ४ देखें । ५ प्यार । ६ कमल । ७ भौंरा । ८ लाज । ९ साथ । १० प्रेम ।

पुनि मुसकाय कमल मुख फेर्‌यो । सदन बुलाय सखीको टेर्‌यो ॥
गये श्याम उत हर्ष बढ़ाई । ये अति चतुर करी चतुराई ॥
और भाव कैसो मन कोऊ । आजरैनि मिलि हैं ये दोऊ ॥
लै यमुना ते जल अतुराई । सखिन संग प्यारी घर आई ॥
दोहा-भाव दियो निशि आयहैं, मेरे मोहन आज ॥
अति हर्षित अंगन सज्जित, भूषण वसन समाज॥
सो०-सहज रूपकी खान, अंग शृँगारत लाडिली ॥
कोकरिसकै बखान, त्रिभुवनपति हरिवल्लभा ॥
अंगसिंगार कियो हरिप्यारी । वेणी रचि निज पाणि सँवारी ॥
मोतिन संग जराऊ टीको । कियो बिंदु बंधनको नीको ॥
लोचन अंजन रेख बनाई । श्रवणन तरवनकी छबि छाई ॥
नासानथ अतिही छबि छाजै । नागवेल रँग अधरन राजै ॥
शुभग अंग सब नौसत साजैं । सुरँग सुगंध वसन शुभ भ्राजैं ॥
मनमोहनको पंथ निहारैं । कबहुँकि उत्कंठा जिय धारैं ॥
भयो बालशशि अस्तनिहारी । कहति आज ऐहैं गिरिधारी ॥
आवन पैहैं कैधौं नाहीं । कैआवत ह्वैहैं मग माहीं ॥
कैधौं तात मात भय करिहैं । कै आवत मेरे घरडरिहैं ॥
आवैंगे कैधौं हरि नाहीं । यों शोचति प्यारी मन माहीं ॥
कबहूं रचि रुचि सेज सँवारे । हरि ऐहैं मन हर्ष विचारे ॥
सुमन सुगंध सेज पर धारै । पुनि पुनिकर अभिलाष निहारै ॥
दोहा-आवैं कबहुँ अचानकहुँ, जो मो गृह घनश्याम ॥
डारति अति अनुराग भरि, सुभग पांवडे धाम ॥
सो०-प्रगटे कृपानिधान, यों अभिलाषा करत हीं ॥
को कहिसकै बखान, भयो जुसुखलखिदुहुँनगन ॥
वह छबि कापै जाति बखानी । वहरसझिझक मंद मुसकानी ॥
वह मृदु मधुर मंद मुसकानी । वह संयोग प्रेम सकुचानी ॥

१ गृह । २ रात्रि । ३ नयन । ४ नाक । ५ ओष्ठ । ६ फूल ।

वह शोभा वह चितवन बांकी । वह रस प्रेम सुभग दुहुँ धांकी ॥
वह सुख श्रीराधा माधवको । जो कहिसकै आहि जग कविको ॥
जाकी महिमा वेद न जाने । कविताको केहि भांति बखाने ॥
श्यामा श्याम सेज परसोहैं । अरसैं परस दोऊ मन मोहैं ॥
गुण आगर छवि सागर दोऊ । कोटि काम रतिसम नहिं सोऊ ॥
मत्त प्रेमरस विवस बिहारैं । युगल परस्पर अंग सँवारैं ॥
लटपटि पाग सँवारति प्यारी । अलक सुधारत श्रीगिरिधारी ॥
रसविलास दोऊ अनुरागे । आलिंगन चुंबन रस पागे ॥
हास विलास विविध रसरीती । इह सुखरैनियाँमन्नयबीती ॥
अतिरसमत्त युगल अलसाने । पुनिपौढ़े दोऊ लपटाने ॥

दोहा–निशि निघटी नमतामिटी, उडुगणज्योतिमलीन ॥
गये कुसुमकुम्हिलायके, भई दीप छवि छीन ॥
सो०–बिकसे सरस सरोज, भयो पवन शीतल सुरभि ॥
धरी उतारि मनोज, पनच आपने धनुषते ॥

सरसवचन बोली तब प्यारी । जागहु प्राणनाथ बनवारी ॥
भयो प्रातको समय कन्हाई । प्राचीदिशि पीरी पर आई ॥
चंदन मलिन चिरइचुहचानी । अलिछूटे कुमुदिन सकुचानी ॥
बोलेतमचर जहँ तहँ बानी । मिले कोक कोकी सुखमानी ॥
उठहु प्राणपति सदन सिधारौ । है ब्रज घर घर बैर हमारौ ॥
लगीं रहति परखति ब्रजनारी । जागहिं जिन गुरुजनभय भारी ॥
सुनत उठे मोहन मुसकाई । चले सदन अपने अतुराई ॥
गृहतें निकसत सखियन जानी । देखिदरशतनु दशा भुलानी ॥
प्रगट दरशदै गये कन्हाई । यह उनकी मनसाध पुराई ॥
शीश मुकुट मोतिनकी माला । पीत वसन कटि नैन विशाला ॥
श्याम बरन तनु सुन्दरताई । अंग २ छवि बरणि न जाई ॥

१ संसार । २ हिलमिल । ३ दोनों । ४ तीनप्रहररात्रि । ५ नक्षत्रगण । ६ फूले । ७ कमल । ८ भौंरा । ९ मुर्गा ।

देखि रूप मन रह्यो लुभाई। निकस गये गृह कुँवर कन्हाई ॥
दोहा-बार बार जिय लाड़िली, यह शोचति पछितात ॥
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात ॥
सोठा-देखे जिन सखि कोय, श्याम गये मोसदनते ॥
मैं राखो है गोय, अबलागि यह रससखिनसों ॥
देखौं जाय पवँरिहै प्यारी। जहां तहां ठाढीं ब्रजनारी ॥
सकुच गई चिंता उपजाई। बार बार मन मन पछिताई ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही मेरी। सो इन आज प्रगट करिहेरी ॥
निकसे श्याम हमारे घरसों। इन जान्यों ह्वैहैं अटकरिसों ॥
नितही नित बूझति ये आई। मैं निदरचो इनको सतराई ॥
अबतौ श्याम प्रगट इन देख्यो। करिहैं मोसों बहुत परेख्यो ॥
यह तौ दाँव भलो इन पायो। अब कैसे करि जाय छिपायो[1] ॥
अबहीं बूझहिंगी सब आई। कहकरिहौं इनसों चतुराई ॥
प्रगट करोंतो होय अनीती। राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीती ॥
शोच परचो कछु बात न आवै। बार बार मन प्रभुहि मनावै ॥
प्राणनाथ हरि होउ सहाई। जाते मेरी पति रहिजाई ॥
जैसे बोध सखिनको होई। दीजै नाथ बुद्धि अब सोई ॥
दोहा-ऐसे शोचति लाड़िली, कबहूं प्रभुहि मनाय ॥
कबहूं प्रभुको सुख समुझि, प्रेम मग्न ह्वैजाय ॥
सो०-भयो बोध[2] उर आय, सुमिरतही मनभावनो ॥
कहिहौं सखिन बुझाय, मन मन हरषी नागरी ॥
परम कुशल राधे हरि प्यारी। रच्यो सखिनको बोध विचारी ॥
अति आनंद पुलकितनु आयो। शोच मोह उरते[3] बिसरायो ॥
जो छबि सुन्दर कुँवर कन्हाई। गये प्रात सखियन दरशाई[4] ॥
इनसों सोई रूप बखान्यों। यह विचार प्यारी उर आन्यों ॥
प्यारी पियके गर्व गहेली। अंग अंग छबि पुंज भरेली ॥

१ छिपाय। २ ज्ञान। ३ हृदय। ४ देखाय।

बैठी सदन विराजतरूरी । श्याम सनेह सुधारस पूरी ॥
कहति परस्पर सखि परहासा । कहति चलौ राधाके पासा ॥
ह्वैहै निधरक धरमें वैसी । देखहिं चलौ बदन छबि कैसी ॥
कैसे अंग अभूषण कैसे । कछु बदले कैधौंहैं वैसे ॥
आज रैनि हरि सों रति मानी । कहिहै कहा सुनैं चलि बानी ॥
राधा गृह गवनी ब्रज नारी । गईं जहां वृषभानु दुलारी ॥
देखि नागरी मुख नहिं बोली । जान्यों आईं करत ठठोली ॥
दोहा-सहज रही बोली नहीं, कछू बदन[१] सों बैन ॥
निकट बुलायो सखिनको, नयननहीकी सैन ॥
सो०-इतलीनों इन जान, परमचतुर आली[२] सबै ॥
यह कछु रच्यो सयान, देख हमैं बोली नहीं ॥
अपनो भेद कछू नहिं दैहैं । कहा बोध रचिकै धोंकैहैं ॥
अपनि जांघ बल चीर चुरावैं । कैसेहुं प्रगट न काहु जनावैं ॥
निधरक भई श्याम सँग पाई । भूलहु मति याकी लरिकाई ॥
निरखौ भ्रुकुटी त्यौर निहारी । कहैं कहा धौं बात सँवारी ॥
राखति गर्व तुमहुँ सब कोऊ । देखहु बोल नहीं किन कोऊ ॥
कह्यो बिहँसि तब इक ब्रजनारी । सुनो अहो वृषभानु कुमारी ॥
आज कहा मुख मूंद रहीहै । कापररिसकरि मौन[३] गहीहै[४] ॥
हमसों कहति नहीं सो एरी । हम तौ संग सखी हैं तेरी ॥
कै देवनको ध्यान धरोरी । कै सुभाव कछु यहै परयोरी ॥
जब आवति हम तेरे प्यारी । तब तब यहै धरन तैं धारी ॥
तुम दुराव कित राखति हमसां । हमहूं कछु राखति हैं तुमसां ॥
ऐसो शोच कहा मन माहीं । जो जवाब तोहिं आवत नाहीं ॥
दोहा-कछु दिन ते तेरी प्रकृति[५], अरी परी यह कौन ॥
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधे मौन ॥
सो०-अपने मनकी बात, कछु हमसों भाषति[६] नहीं ॥

१ मुख । २ सखी । ३ मत । ४ चुपसाधीहै । ५ स्वभाव । ६ कहतिनहीं ।

ऐसें कहि मुसकात, प्यारीसों सब नागरी ॥
मनही मन जानति सब प्यारी। मोसों हँसी करति ब्रजनारी ॥
परम प्रवीन[1] सकल गुनखानी। बोली मधुर मनोहर बानी ॥
सुनहु सखी बूझत कह हमसों। कहा बुझाय कहौं मैं तुमसों ॥
आज प्रात इक चरित नयोरी। जात इतै कछु दृगन[2] लख्योरी ॥
नीके नेकु न देखन पाई। तबहींते मन रह्यो लुभाई ॥
कै घनश्याम[3] कि श्याम[4] कन्हाई। यहै शोच उर रह्यो समाई ॥
बकपंक्ती कै हैं गज मोती। पीत दुकूलकि दामिनि[5] जोती ॥
इन्द्र शरासन[6] कै बनमाला। शीश मुकुट कैधौं अरि व्याला ॥
मन्द मधुर जलधरकी गाजन। कैधौं पग नूपुर ध्वनि बाजन ॥
देखे आज श्याम जबहींते। परयो यहै धोखो तबहीते ॥
कहा कहौं हारकी चपलाई। ऐसो रूपगयो दरशाई ॥
भरी श्यामरस कुँवरि सयानी। कहति सखिनसों निधरकबानी ॥
दोहा–सखी कहति सब आपुसें, सुनहु न याकी बात ॥
प्रगट करन आईं जु हम, आपुहि प्रगटति जात ॥
सो०–हम देखे जिय श्याम, तैसीही इनहूं लखे ॥
दोष देति विन काम, यह सूधी हमहीं कुटिल ॥
इतनहि रहौ और जिन भाखौ। जो चाहौ अपनी पति राखौ ॥
इनसों तुम चाहति हौ जीतौ। मनते गर्व करौ यह रीतौ ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी। को याकी बुधि सकै बखानी ॥
हम याकी दासी सरिनाहीं। देखहु सखी समुझ मनमाहीं ॥
हम देखत कछु और सुभाऊ। यह देखति हरिको सतभाऊ ॥
याकी प्रस्तुति कहा बखाने। इनहीं भले श्याम पहिचाने ॥
तब हँसिकह्यो सखिन सुनिप्यारी। तैं जो लखे सु हैं बनवारी ॥
प्रातहिं तै जो आज निहारे। गये कान्ह वे मेघनकारे ॥
मोर मुकुट शिरमोर न होई। कटि पटपीत न दामिन सोई ॥

१ परमचतुर। २ आंखन। ३ कालेबादल। ४ श्रीकृष्ण।
५ बिजुली। ६ धनुष।

मुक्तमाल बनमाल सुवेसू । नहिं वकपाँति न धनुष सुरेसू ॥
पगनूपुरध्वनि गर्जन नाहीं । मत राखौ धोखो मनमाहीं ॥
देखे तैं प्रातहिं गिरिधारी । काहेको शोचति मन प्यारी ॥
दोहा–धनि धनि ब्रजकी नागरी, हरि छबि लखति अनूप॥
मोहिं होत धोखो तबहिं, जब देखति वह रूप ॥
सो०–तुम देखति हरि गात, कैसे दृग ठहराय सब ॥
मोपै लख्यो नजात, करिहारी के तौ यतन ॥
तुम दरशन पावति री कैसे । मोहू श्याम दिखावहु तैसे ॥
वे तौ अतिछबि चपल कन्हाई । तुम कैसे देखति ठहराई ॥
कैसो रूप हृदयमें राख्यो । मोसों सखी सांच सब भाख्यो॥
मैं देखत पावति हरिनीके । रहति सदा अभिलाषा जीके ॥
धनि धनि तू वृषभानु दुलारी । धनि तुम पिता धन्य महतारी ॥
धनि सो दिवस रैनि सो वारा । जब तैं लीनो री अवतारा ॥
धनि तेरे वश कुंजविहारी । धनि तैं वश कीने गिरिधारी ॥
भाव भक्ति मति रति धन सोऊ । एक सुभाव धन्य तुम दोऊ ॥
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं । तू हरिको हरि तोको भावैं ॥
एक जीव द्वैदेह तुम्हारी । वे तो में तू उनमें प्यारी ॥
उनकी पटतर[3]को तू दीजै । तेरी पटतर उनको लीजै ॥
सुधा सुधागुण क्यों बिलगाई । गूंगेको गुरु कह्यो न जाई ॥
दोहा–तू उनके उर[4]में बसी, वे तेरे उर माहिं ॥
अरस परश ज्यों देखिये, दर्पण[5] दर्पण छाहिं ॥
सो०–कही कौनपै जाहिं, तुम दोउ निर्मल गात अति ॥
वे तेरे रँग माहिं, तू उनके रँगमें रँगी ॥
नीलाम्बर श्यामा छबि तेरे । तुम छबि पीतवसन[6] उनकेरे ॥
घन[7] भीतर दामिनी[8] बिराजे । दामिनि घनके चहुँ दिशि राजै ॥

१ उपमारहित । २ चतुर । ३ समानता । ४ हृदय । ५ शीशा । ६ पीलेवस्त्र ।
७ बादल । ८ बिजुली ।

तुम अनूप दोऊ समजोरी। नंदनँदन वृषभानु किशोरी ॥
सुनि २ सखियनके मुखबानी। बोली राधाकुँवरि सयानी ॥
सुनि ललतासांची कहिमोसों। मैं बूझति सकुचतहौं तोसों ॥
मोसों मानत नेह कन्हाई। मेरीसों कहि मोहिं सुनाई ॥
तुमतौ रहत श्यामसँग नितही। मिलति जाय उनसों जित तितही॥
उनके मनकी सब तुम जानौ। हाहा मोसों साँच बखानौ ॥
सुनि राधा इतरात कहारी। तोते और कौन है प्यारी ॥
तेरे वश नँदनन्दन ऐसे। रहत पवन पंखा वश जैसे ॥
ज्यों चकोर शशिके वश माहीं। है शरीरके वश परछाहीं ॥
नाद विवस मृग देखिय जैसे। मन मोहन तेरे वश तैसे ॥

दोहा–मिली खिरक तू श्यामको, दई धेनु दुहि तोहिं ॥
तेरे बश हरि तबहिंते, कहा भुरावति मोहिं ॥
सो०–वरणौं कहा सनेह, नेकहु तुम न्यारे नहीं ॥
हौ तुम एकहि देह, वे दक्षिण तुम वाम अँग ॥

अथ गर्वव्याजविरह लीला ॥

सुनि प्यारी ललता मुख वानी। मैं ऐसी जिय में यह आनी ॥
और नहीं कोऊ मो सरकी। हों राधा आधा अँग हरिकी ॥
अपनेही वश पिय को करि हौं। अनत जात देखहुँ तौ लरिहौं ॥
ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी। घर घर गई सकल ब्रजनारी ॥
इह अन्तर आये गिरिधारी। गर्भ विभंजन जन सुखकारी ॥
हरि अन्तर्यामी अविनासी। जानी प्यारी गर्व उदासी ॥
उझकि झाँकि प्यारी तन हेर्यो। प्यारी देखतही मुख फेर्यो ॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं। उझकत फिरत घरन ब्रज माहीं॥
मिसही मिस युवतिन को हेरो। नेक नहीं छाँड़त घन घेरो ॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर। तुम आवत मानत नाहीं डर ॥
ऐसे प्रेम गर्व करि प्यारी। प्राणनाथ तन नाहिं निहारी ॥

१ स्त्रीन।

जान्यो द्वारे लगे कन्हाई । बैठि रही अभिमाने जनाई ॥
दोहा-हृदय श्याम सुख धाममें, राख्यो गर्व बसाय ॥
ठौर तहां पायो नहीं, रहे श्याम सकुचाय ॥
सो०-जहाँ रहत अभिमान, तहाँ बास मेरो नहीं ॥
सो राधा उरजान, आप लगे पछितान हरि ॥
तुरतहि गमन तहांते कीनों । नहीं दरश प्यारीको दीनों ॥
चकित भई प्यारी मनमाहीं । यहां श्याम आये क्यों नाहीं ॥
आपन आप द्वार पुनि देख्यो । तहां नाहिं नँदलालहि पेख्यो ॥
झांकतही फिरगये कन्हाई । मनहीं मन श्यामा पछिताई ॥
मोते चूकपरी अति भारी । ताते मोहन मोहि बिसारी ॥
एक तौ बैठि रही गर्वानी । दूजे मैं हरि सों झहरानी ॥
मेरी बुद्धि जानि कै हीनी । मोसों श्याम निठुरता कीनी ॥
वे बहुनायक कुंज बिहारी । मोसों उनके कोटिकनारी ॥
कासे कहौं हरिहि को लावै । को अब मोको हरिहि मिलावै ॥
भई विरह व्याकुल अकुलाई । बदन सरोजगयो कुम्हलाई ॥
तब आपुनको निठुर कहावै । सुमिरि प्रीति उर भरि २ आवै ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै । नैन सरोजनसों जल ढारै ॥
दोहा-भई विकल अति नागरी, विरह व्यथाकी पीर ॥
खान पान भावै नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर ॥
सो०-घर बाहर न सुहाय, सुख सब दुखदायक भये ॥
रह्यो शोच उरछाय, ब्रजवासी प्रभु मिलनको ॥
राधा सदन सखी पुनि आई । देखि दशा मन अति भरमाई ॥
अति व्याकुल तनु बदन मलीना । नीर बिहीन मीन जिमि दीना ॥
कर गहि २ बूझति ब्रजनारी । कहा भयो तोकहँरी प्यारी ॥
ऐसे विवस भई तू जाहे । हमैं सुनाय कहत नहिं काहे ॥
अति प्रसन्न देख्यों तोहि तबहीं । क्यों मुरझाय गईरी अबहीं ॥

१ घमंड । २ पानी । ३ मछरी ।

बहुरि लखेधौं कतहु कन्हाई। उनहू तोहिं ठगौरी लाई॥
श्याम नाम सुनि श्रवणन जागी। जान्यो हरि आये अनुरागी॥
आतुर सखी कंठ लपटानी। चूक परी मोते कहि बानी॥
अब अपराध क्षमो रिसत्यागी। करुणा करि मोहि करहु सभागी॥
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी। रहीं शोचि राधिकहि निहारी॥
शीतल जलसों मुख पखरायो। पोंछि आँचरन वचन सुनायो॥
आज भई कैसी गति तेरी। परम चतुर ब्रजमें तू हैरी॥
दोहा–भयो अलिनके वचन सुनि, कछू चेत उर आय॥
तब जानी एतो सखी, गई हृदय सकुचाय॥
सो०–क्यों तुम वदन मलीन, काहे तू ऐसी भई॥
कहु प्यारी परवीन, बार बार बूझति सखी॥
बोली तब सखियन सों प्यारी। तुमसों कहो दुराव कहारी॥
मैं तो हरिके हाथ बिकानी। उन मोहिं तजी कुटिलमतिजानी॥
अपनी कथा श्यामकी करनी। प्रगट कहों तुमसों सब वरनी॥
बैठीही मैं सदन अकेली। झांके आय द्वार हरि हेली॥
मैं मनमें कछु गर्व बढ़ायो। आदर करि नहिं भवन बुलायो॥
उन मेरे मनकी सब जानी। अन्तर्यामी सारँग पानी॥
कमलनैन वे गर्व प्रहारी। जाति रहे सखि मोहिं बिसारी॥
तबते विरह विकल अति कीनो। अहंकार यह फल मोहिं दीनो॥
चित नरहै कितनो समझाऊं। अब कैसे करि दरशन पाऊं॥
भयो भवन वन मो कहँ आली। नहीं सुहात बिना वनमाली॥
सुनहु सखी लागति मैं पाऊ। अब हरि मिलैं सो करहु उपाऊ॥
बिन मनमोहन कुँवर कन्हाई। भये सुखद सब मो दुखदाई॥
दोहा–गिरिकन्यापति तिलककर, दाहत अनल समान॥
शिवसुत बाहन भखनको, भयो हलाहलपान॥

१ कानन। २ धुलाया। ३ सखिन। ४ घर। ५ कृष्ण।
६ महादेव। ७ अग्नि।

सो०-जलधि सुता¹सुत हार, भयो इंद्र आयुध² सखी ॥
मलयज³ मनहुँ अँगार, शाखामृग⁴रिपु वसनवर ॥
सखी दशा मेरी यह हेरी। भयो काम अब मोको वैरी ॥
वारिज भव सुत प्रियकी चाली। अब नहिं हरिसों करिहौं आली॥
ऋतु विचारि जो मानहिं करिये। ओड जरि जाहु न उरमें धरिये ॥
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा। मोहिं मिलावहु सखि ब्रजनाथा॥
सुनि राधे करनी यह तेरी। हमसों भेद किया तैं एरी ॥
उनके गुण जैसे नहिं जाने। अबहींते ऐसे ढँग ठाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई। नहिं राखी मर्याद बड़ाई ॥
तैंहीं उनको मूंड चढ़ायो। तब नहिं हमको भेद जनायो ॥
भवन विपिन सँग डोलन लागी। वे बहु तरुणि रवण अनुरागी ॥
निज कर अपनो महत गँवायो। परवश परि कौने सुखपायो ॥
मेरो कह्यो अजहुँ मन माहीं। हित करि मानेगी धौं नाहीं ॥
धीरज धरि कत मरत वृथाही। तूहू मान करति क्यों नाहीं ॥
दोहा-बात आपनी आपने, कर है देखु विचार ॥
भई कहा ऐसी विवस, एरी एकहिवार ॥
सो०-पुरुष मवँ⁵राजियजान, भोगी बहुत प्रसून को ॥
विना किये बहु मान, कौने पिय निज वश किये ॥
कहति सखी तुम तौ यह बाता। कंप होत सुनि मेरे गाता ॥
मैंतौ मान श्यामसों कीनो। ताते इतनो दुख मोहिं दीनो ॥
अबतौ भूलि मान नहिं करिहौं। श्याम मिलहिं तौ पाँयन परिहौं॥
विनती करि करि उनहिं सुनाऊं। यह अपनो अपराध क्षमाऊं ॥
चूकपरी मोते मैं जानौं। उनको यह अपराध न मानौं ॥
वे आवतिहैं मेरे नीके। मैंहीं गर्वधर्यो सखि जीके ॥
मेरे गर्वते कहा सरचोरी। मिट्यो हृदय सुख दुःख भयोरी ॥
जाते हानि आपनी होई। कहौ सखी कीजै क्यों सोई ॥

१ मोती। २ अस्त्र। ३ चंदन। ४ बंदर। ५ गर्व।

मानबिना नहिं प्रीति रहैरी । प्रगट देखि मोहिं कहा कहैरी ॥
धाय मिलेकी गति तेरीसी । भई अधीन फिरति चेरीसी ॥
अपनो भेद उन्हैं लैं दीनो । तब दुराव हमहूं सों कीनो ॥
भयबिन प्रीति होति नहिं प्यारी। सच मानहिं सखि सीख हमारी॥
दोहा–पुनि पुनि सिखवति तुम सखी, मान करनको मोहिं॥
मन तौ मेरे हाथ नहिं, मान कौन विधि होहि ॥
सो०–उमगभरत दिनरात, श्यामगुणन अभिलाष करि ॥
मन नहिं मानत बात, मानसजौं कैसे सखी ॥
मन मोसों अब बाम भयोरी । कहा करौं हरि संग गयोरी ॥
अब अपनो हित उनहिं न जानौं । मुदित मूढ अपमान न मानौं ॥
इन्द्रिय सब स्वारथ रस पागी । गईं संग मनहीके लागी ॥
घर फूटे क्यों रह्यो परैरी । मनहिं बिना को मान करैरी ॥
अब कोऊ मेरे सँग नाहीं । रही अकेली मैं तन माहीं ॥
तापर भयो काम अब वैरी । बिरहे अग्नि तनु जारत हैरी ॥
इतने पर तुम मान करावति । कहौ कौन सखि यह कहनावति॥
मैं तौ चूक आपनी मानी । मोहिं मिलावहु श्यामहिं आनी ॥
अबतौ क्योंहू मान न करिहौं । ऐसी बात कहै तिहि लरिहौं ॥
आली मोहिं नँदनंदन भावै । सोइ हितू जो आनि मिलावै ॥
अब जो मिलहिं श्याम बड़भागी। फिरति रहौं संगहिसँग लागी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी । दारुण विरह विथा उर जागी ॥
दोहा–देखि दशा सहि नहिं सकी, अली उठी अकुलाय॥
हम राधाकी प्रिय सखी, रचिये वेगि उपाय ॥
सो०–कहैं श्यामसों जाय, ऐसी चूक परी कहा ॥
दीजै याहि मिलाय, झुरि झुरि अति पीरी परी ॥
सखिन कह्यो तब सुनरी प्यारी। मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी॥
अबहिं जाय हम श्यामहि लावैं । नेकु धीर धरु तोहिं मिलावैं ॥

१ देह। २ विछोहव्यथा। ३ मुर्झायें।

पटसों पोंछि बदन बैठाई । तरक बात बहु भाषि सुनाई ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारैं । बार बार मुख कान्ह उचारैं ॥
सावधानकरि सखी सयानी । दौरी गई यहँ अनुरानी ॥
लखि हरि मुख ललतामुसकानी। हरि लखि हँसे दुहूं मन जानी॥
तब हरि ललतासों मुसकाई । बूझत चितवत नैन चुराई ॥
अति आतुर आई कत धाई । काहे बदन गयो मुरझाई ॥
बोली ललता तब मुसिकाई । सुनहु चतुर नँदनंद कन्हाई ॥
आज एक अचरज लखि पायो । परम विचित्र न जात बतायो ॥
अतिही अद्भुत[1] रचना जाकी । वर्णत बनत भांति नहिं ताकी ॥
रीझरही मैं ताहि निहारी । रीझौंगे लखि कुंजविहारी ॥

दोहा–मैं आई तुमसों कहन, चलहु दिखाऊं नैन ॥
देखि परम सुख पायहौ, जो मानौ मोबैन ॥
सो०–एक अनूपम[2] बाग, स्वर्ण वर्ण नहिं जाय कहि ॥
उपजत लखि अनुराग[3], अतिविचित्र बानकबन्यो॥

युगल कमल अति अमल विराजै। तापरराजहंस[4] छबि छाजै ॥
द्वै कदली तरु तापरसोहैं । बिनदल फल उलटे मन मोहैं ॥
तापर मृगपति करत बिहारू । मृगपति पर सरवर इकचारू ॥
द्वै गिरिवर सरवर परराजै । तिन परएककपोत[6] विराजै ॥
निकट सनाल कमल द्वै फूले । शोभितते अधिदिसकौझूले ॥
फूल्यो पुनि कपोत परनीको । एक सरोज[7] भावतो जीको ॥
तापर एक अमीफललाग्यो । कीर एक तापर अनुराग्यो ॥
तहां एककोयल द्वैखंजन । तिनपर धनुर्ष[8] शुभगमन रंजन ॥
धनुपर शशि द्वैनागिनकारी । मणि धारिएक नागिनीभारी ॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो । घटत नेहजल कछु कुम्हलायो ॥
चलि घनश्यामसींचसोदीजै । शोभा देखि सफल दृग कीजै ॥

१ अद्भुत । २ जिसकी उपमा नहोय । ३ प्यार । ४ प्राण । ५ छाती ६ गला । ७ कमल । ८ भृकुटी ।

करि विचार देखो मनमाहीं । बनी ललित सब अंगनिमाहीं ॥
दोहा–सुनहु कान्ह सुंदर नवल, छैल छबीले श्याम ॥
तुम्हैं मिलनको नवल वह, अति व्याकुल है बाम॥
सो०–कहा भयो जो मान, कियो प्रेमके लाडते ॥
अति सुंदरी सुजान, प्यारी जीवन जीयकी ॥
वरणौं श्रीवृषभानुदुलारी । चित दे सुनौ लाल गिरिधारी ॥
कहो प्रथम वेनी रुचिराई । ललित पीठ पाछे छबि छाई ॥
अहिनी मनहुं कुटिल गति त्यागी । शशिमुख सुधा चुरावन लागी॥
रेखा अरुण सिंदूर सुहाई । शोभित शीश न जाति बताई ॥
मानहु किरण लाल रबिकेरी । तिमिरसमूह बिदारि उजेरी ॥
शोभित कुटिल भृकुटि अतिनीकी । मन हरिलेति भावती जीकी ॥
जगत जीत करि निजवशचारी । मनहुँ मदन धनुधरे उतारी ॥
केसर आड ललाट सुहाई । मनहु रूपकी बाड बँधाई ॥
चपल नैन बिच नाक सुहाई । शोभित अधरनकी अरुणाई ॥
मनौ युगल खंजन शुक शोभा । देखि एकबिंबाफल लोभा ॥
दशन कपोल चिबुक दरग्रीवा । वरणि नजाति महाछबिसीवा ॥
शुभग अंग सब भूषण सोहैं । कोटिकाम तिय निरखत मोहैं ॥
दो०–अति कोमल सुकुमार तनु, सकल सुखनकी सीर ॥
तुम बिन मोहन लाल पिय,व्याकुल अधिक शरीर॥
सो०-भरि भरिलोचन नीर,श्याम श्याम मुख कहि उठति॥
चलहु हरहु यहपीर, मैं आई लखि धायकै ॥
प्यारी बिकल सुनत सुखदाई । सहि नहिं सके उठे अकुलाई ॥
चले बिहँसि ललताके साथा । प्रेमहिके वश श्रीव्रजनाथा ॥
प्रेम बिवस प्यारी पहँ आये । देखि दशा[3] मन अति पछताये ॥
परी बिकल तनुदशा बिसारी । प्यारी मुख देखत गिरिधारी ॥
नीलांबर निज करते टारी । लीनों सन्मुख बदन सुधारी ॥
जलदपटल मानहु बिलगाई । दियो चंद निकलंकदिखाई ॥

१ राधिका । २ कुँदुरू । ३ व्यवस्था ।

भयो चेत परसत पियपानी । सन्मुख दृष्टि परतसकुचानी ॥
लई उमँगिभर अंक कन्हाई । बिकल देखि अँखियां भरिआई ॥
युगल परस्पर लखि सकुचाये । इतनेहि बिरह दोउ मुरझाये ॥
कंचन बेलि तमाल सुहायो । मनहु प्रेमबश सुधासिचायो ॥
हरषि दुहूंदिश मुसकन फूले । परमानंद फलन करिझूले ॥
मुरछन विरह तुरत बिसराई । लखि यह मिलन सखी हरषाई ॥

दोहा—वह चितवन वह हँसि मिलन,वह शोभा सुख भार॥
भई विवस ललता निरखि, इकटक रही निहार ॥

सो०—रहे परस्पर देख, अति आतुर दोऊ छबिहिं ॥
परन नदेत निमेष, तृप्त न क्योंहू मानहीं ॥

ललता कहत सखिनसों बानी । देखहु सखि राधा अनुरानी ॥
कैसे अंग अंग छबि देई । मिले श्याम मन धीर न लेई ॥
तृषावंत जिम अचवतनीरा । सोऊ तौ धारत पुनि धीरा ॥
यह आतुर छबिलै उर धारै । नेक न दृग इत उतको टारै ॥
ज्यों चकोर चंदहिटकलावै । याकी सर सोऊ नहिं पावै ॥
होम अग्नि घृतगति है जैसी । याकी दशा देखिये तैसी ॥
यदपि श्याम श्यामा सँग प्यारी । छबि निरखत अति आनँद भारी ॥
हाव भाव करि पियमन मोहै । विविध विलास वदन छबिसोहै॥
विरह विकल मति तदपि भ्रमावै। मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै ॥
तृषामध्य जिमि सलिलहि देखी । उपजति अधिकै प्यास विशेखी ॥
चितवत चकित रहत चितमाहीं । स्वप्नकि सत्य ईश यह आहीं ॥
बुधि वितर्क बहु भांति बनावैं । देखहु अन देखे ठहरावैं ॥

दोहा—कबहुँ कहति हौं कौनहौं, को हरि करत विचार ॥
यह सुख भावत कौनको, सकुचित रहत निहार ॥

सो०—निपट अटपटी बात, समुझि परत नहिं प्रेमकी ॥
उरझि सुरझि उरझात, उरझनहीं में सुरझ अति॥

१ पानी । २ खंडन मंडन ।

उत हरि रूप इतै दृग प्यारी । लखि सखि मनहुँ करत हैरारी ॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ । नेकहुहारि न मानत कोऊ ॥
इति सुदृष्टि करिकामसुहाई । सेना सजि सजि दृगन चलाई ॥
उत अति भूषण जाल अपारा । अंग अंग रचिव्यूह सँवारा ॥
इतहि कटाक्ष बाण अति चोखे । बारहिं बार हनत रण रोखे ॥
उतनहिं बदन बिथा अतिसूरे । पुलकि अंग मानहुसरि पूरे ॥
इत अनुराग उतहि छबि छाई । क्षण क्षण अधिक २ अधिकाई ॥
छबि तरंग सरिता अधिकानी । लोचन जलनिधि तृप्त नसानी ॥
उत उदार छबि अंग श्यामके । इतलोभी अति नैम बामके ॥
ललता संग सखिनको लीने । दंपति सुख देखत दृग दीने ॥
लखि यह मिलन सखी अनुरागी । कहतिकि धनि२दोउ बड़भागी ॥
धन्य नवल नवला यह जोरी । धनि २ प्रीति नहीं रुचिथोरी ॥

दोहा—धन्यमिलन धनि यहलखन,धनि२धनि अनुराग ॥
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥
सो०—धनि २ पुनि२भाषि, हरषि चलीं सिगरी अली ॥
युगल रूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल ॥

अथ परस्पर अभिलाषलीला ॥

शोभित श्याम राधिका जोरी । अरस परस निरखत तृणतोरी ॥
हरिरीझे प्यारी छबि देखी । भये बिबस उर हर्ष बिशेषी ॥
कबहुँ पीत पट डारत वारी । कबहुँ मुरलि वारत गिरिधारी ॥
कबहुँ माल मुक्तनकी[1] वारैं । कबहूँ तनमन वारि निहारैं ॥
कबहुँ निहारत देख मनमाहीं । राधा सम शोभा कहुँ नाहीं ॥
इनको पलक ओट नहिकीजै । रूप सुधा नैननिपुट पीजै ॥
कबहुँ निरखि सुख हरि सकुचाहीं । कोटि काम जिनके वश माहीं ॥
चपल नैन दीरघ अनियारे । हाव भाव नाना गतिभारे ॥
कोटि कुरंग कमल बलिहारी । खंजन मीन डारिये वारी ॥

१ मोतियोंकीमाला । २ सकुचत । ३ अरुण ।

भयो चेत परसत पियपानी । सन्मुख दृष्टि परतसकुचानी ॥
लई उमँगिभर अंक कन्हाई । विकल देखि अँखियां भरिआई ॥
युगल परस्पर लखि सकुचाये । इतनेहि बिरह दोउ मुरझाये ॥
कंचन बेलि तमाल सुहायो । मनहु प्रेमबश सुधासिंचायो ॥
हरषि दुहूंदिश मुसकन फूले । परमानंद फलन करिझूले ॥
मुरछन विरह तुरत बिसराई । लखि यह मिलन सखी हरषाई ॥

दोहा–वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभा सुख भार॥
भई विवस ललता निरखि, इकटक रही निहार ॥

सो०–रहे परस्पर देख, अति आतुर दोऊ छबिहि ॥
परन नदेत निमेष, तृप्त न क्योंहू मानहीं ॥

ललता कहत सखिनसों बानी । देखहु सखि राधा अतुरानी ॥
कैसे अंग अंग छबि देई । मिले श्याम मन धीर न लेई ॥
तृषावंत जिम अचवतनीरा । सोऊ तौ धारत पुनि धीरा ॥
यह आतुर छबिलै उर धारै । नेक न दृग इत उतको टारै ॥
ज्यों चकोर चंदहिटकलावै । याकी सर सोऊ नहिं पावै ॥
होम अग्नि घृतगति है जैसी । याकी दशा देखिये तैसी ॥
यदपि श्याम श्यामा सँग प्यारी । छबि निरखत अति आनँद भारी ॥
हाव भाव करि पियमन मोहै । विविध विलास वदन छबिसोहै॥
विरह विकल मति तदपि भ्रमावै । मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै ॥
तृषा मध्य जिमि सलिलहि देखी । उपजति अधिकै प्यास विशेखी ॥
चितवत चकित रहत चितमाहीं । स्वप्नकि सत्य ईश यह आहीं ॥
बुधि वितर्क बहु भांति बनावैं । देखहु अन देखे ठहरावैं ॥

दोहा–कबहुँ कहति हौं कौनहौं, को हरि करत विचार ॥
यह सुख भावत कौनको, सकुचित रहत निहार ॥

सो०–निपट अटपटी बात, समुझि परत नहिं प्रेमकी ॥
उरझि सुरझि उरझात, उरझनहीं में सुरझ अति॥

१ पानी । २ खंडन मंडन ।

उत हरि रूप इतै दृग प्यारी। लखि सखि मनहुँ करत हैरारी॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ। नेकहुहारि न मानत कोऊ॥
इति सुदृष्टि करिकामसुहाई। सेना सजि सजि दृगन चलाई॥
उत अति भूषण जाल अपारा। अंग अंग रचिव्यूह सँवारा॥
इतहि कटाक्ष बाण अति चोखे। बारहिं बार हनत रण रोखे॥
उतनहिं वदन विथा अतिसूरे। पुलकि अंग मानहुसरि पूरे॥
इत अनुराग उतहि छवि छाई। क्षण क्षण अधिक २ अधिकाई॥
छबि तरंग सरिता अधिकानी। लोचन जलनिधि तृप्त नसानी॥
उत उदार छवि अंग श्यामके। इतलोभी अति नैन बामके॥
ललता संग सखिनको लीने। दंपति सुख देखत दृग दीने॥
लखि यह मिलन सखी अनुरागी। कहतिकि धनि२दोउ बड़भागी॥
धन्य नवल नवला यह जोरी। धनि २ प्रीति नहीं रुचिथोरी॥

दोहा—धन्यमिलन धनि यहलखन,धनि२धनि अनुराग॥
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग॥
सो०—धनि २ पुनि२भाषि, हरषि चलीं सिगरी अली॥
युगल रूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल॥

अथ परस्पर अभिलाषलीला॥

शोभित श्याम राधिका जोरी। अरस परस निरखत तृणतोरी॥
हरिरीझे प्यारी छवि देखी। भये विवस उर हर्ष विशेषी॥
कबहुँ पीत पट डारत वारी। कबहुँ मुरलि वारत गिरिधारी॥
कबहुँ माल मुक्तनकी[1] वारैं। कबहूँ तनमन वारि निहारैं॥
कबहुँ सिहात[2] देख मनमाहीं। राधा सम शोभा कहुँ नाहीं॥
इनको पलक ओट नहिंकीजै। रूप सुधा नैननिपुट पीजै॥
कबहुँ निरखि सुख हरि सकुचाहीं। कोटि काम जिनके वश माहीं॥
चपल नैन दीरघ अनियारे[3]। हाव भाव नाना गतिभारे॥
कोटि कुरंग कमल बलिहारी। खंजन मीन डारिये वारी॥

१ मोतियोंकीमाला। २ सकुचत। ३ अरुण।

लोचन नहिं ठहरात श्यामके । काहू अँग सुख रंग बामके ॥
भये श्याम प्यारी वश ऐसे । फिरति गुड़ी डोरी वश जैसे ॥
इकटकनैन अंग छबि सोहै । भये विवस लखि रूप विमोहै ॥

दोहा–उठे उठत हैं तुरतही, बैठे बैठत पास ॥
चले चलत सँग बामके, ज्यों तनु छाँह बिलास ॥
सो०–रही सुरति कछु नाहिं, देह दशा भूली सबै ॥
अभिलाषा मन माहिं, प्यारीही के रूपकी ॥

मगन श्याम श्यामा रस माहीं । निजस्वरूपकी सुधि कछु नाहीं ॥
राधारूप देखि सुख पावैं । पुनि २ मन अभिलाष बढ़ावैं ॥
मांगलेति भूषण प्रिय पाहीं । अपने अंग सँवारत जाहीं ॥
सजितरवन कुण्डलहि उतारैं । बेसरलै नासा पर धारैं ॥
बेनी गूंथ मांग पुनि करहीं । शीश फूल अपने शिर धरहीं ॥
बेंदी भाल सँवारत तैसी । शोभित है प्यारीकी जैसी ॥
प्यारी दृगतें अंजन लेहीं । अति हित करि अपने दृग देहीं ॥
भूषण वसन सजत सब वैसे । प्यारी अंग विराजत जैसे ॥
प्यारीको पियकी छवि भावै । हाहा करि यों वचन सुनावै ॥
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊं । मैं पिय तुमरो रूप बनाऊं ॥
हँसतहि हँसत मांग सब लीनो । पियको भेष नागरी कीनो ॥
गोरे कान्ह साँवरी राधा । निरखि परस्पर पूरत साधा ॥

दोहा–कबहुँ मुरलिलै नागरी, अधर धरति मुसकाय ॥
मंद मंद पूरति सुरन, रिझवति पियहि बजाय ॥
सो०–कबहुँ बजावत श्याम, अरस परस अधरन धरत ॥
पूरत है मन काम, सकल काम पूरण युगल ॥

हरिको अपने रूप निहारी । आपहि हरि स्वरूप लखि प्यारी
यह अभिलाषा उर तब धारी । कहति सुनो पिय गिरिवर धारी ॥
तुम बैठो माननि हठ ह्वैके । तुमहिं मनाऊं मैं पद छ्वैकै ॥

१ राधा । २ नथुनी । ३ नासिका ।

मोको यह अभिलाष विशेषी। सुख पैहौं नैननि यह देखी ॥
सुनत श्याम मन मन मुसकाई। मुरि बैठे करि मान रुखाई ॥
तब प्यारी मन अति अनुरागी। हरिसों मान छुड़ावन लागी ॥
कहति मानतजि प्राण पियारी। मोते चूक परी कह भारी ॥
कहतिहिमें तुम रिस कर मानी। कहा प्रकृति तुव परी सयानी ॥
वृथा हठीली मान न कीजै। अबकारि कृपा मोहिं सुख दीजै ॥
बार बार कर गहि गहि भाखे। शीश नवाय चरणपर राखे ॥
आनन आनन जोरि निहारे। पुनि पुनि वचन अधीन उचारे ॥
क्यों इतनो हठ करत नवेली। बोलत क्यों नहिं गर्व गहेली ॥

दोहा–श्याम कियो हठ जानिकै, यह विचारठहराय ॥
प्यारीके उर रसविरह, नेकु देहुँ उपजाय ॥
सो०–बैठिरहे निठुराय, नहिं बोलत मानत नहीं ॥
पुनि २ परसति पाय, हाहा करि २ लाड़िली ॥

नहीं हँसति नहिं मुखतन जोवे। बार बार नख भूमि करोवे ॥
लखि यह चरित हँसति मन प्यारी। चकित रहत हँसिवदन निहारी
कहति सुनहु पिय अब हँस बोलो। तजहु मान यह घूंघट खोलो ॥
मोहन अब यह खेल मिटावो। कोटि चन्द्र छबि बदन दिखावो॥
नागरि हँसति हृदय सुख भारी। सूधे नहिं चितवत गिरिधारी ॥
लखि त्रियरूप पीयको प्यारी। वदन विलोकति चकृत भारी ॥
अपनो रूप पुरुषको देखी। भई मगन रस विरह विशेखी ॥
मैं नारी वे पुरुष विहारी। किधौं पुरुष मैं हौं वे नारी ॥
बढी विरह संभ्रमता भारी। भई विकल तनु दशा बिसारी ॥
निरखत श्याम विरहकी शोभा। बोलत नाहिं अधिक मनलोभा ॥
कबहुँ कहत यह ख्यालन त्यागत। मान करत नीके नहिं लागत ॥
कबहुँ अंक भरि उरसों लावति। कबहूं फिर पर पाँयमनावति ॥
दोहा–कबहूँ पाछे ह्वै रहति, कबहूं आगे जाय ॥
कबहुँ उठति बैठति कबहुँ, कबहुँकलोति बलाय ॥

सो०-कबहुँ कहति है पीय, कबहूं प्यारी कह कहति ॥
धीरज धरत नहीय, भई समीपहि विरहवश ॥
भई विरह व्याकुल जबबाला। हर्षि हँसे तब पिय नँदलाला ॥
लई तुरत प्यारी उरलाई। कहति ख्यालहीमें अकुलाई ॥
तुमहीं मान करत मोहिं भाख्यो। भई विवसकत धीरज राख्यो ॥
मैं तो तुमको भाव बतायो। तुम काहे मनमें डरपायो ॥
देखि विरह व्याकुल मुरझाई। बार बार हरि अंकमलाई ॥
अमिय वचन कहि शीतल कीनी। विरह ताप उरसे हरिलीनी ॥
तब नागरि मन लखि सुखपायो। मिट्यो विरह मन हर्ष बढ़ायो ॥
कहति भलो पियमान दिखायो। मेरे मन अभिलाष पुरायो ॥
प्रियके रूप श्याम छबि देखी। पुनिपुलकितमुदित विशेखी ॥
दंपति हर्ष मनहिं मन कीनो। तब नव कुंज चलन चित दीनो ॥
प्यारी मुकुर[1] पाणि लै देख्यो। नटवर रूप आपनो पेख्यो ॥
हँसतहि हँसत मेटि सब डार्यो। सहज रूप अपनो पुनि धार्यो ॥
दोहा-चले हर्षि वन कुंजको, युगल नारिके रूप ॥
इक गोरी इक साँवरी, शोभा परम अनूप[2] ॥
सो०-अंग अंग छबि जाल, अति विचित्र भूषण वसन ॥
श्रीराधा नँदलाल, शोभा अवधि विलास निधि ॥
जात चले ब्रज वीथिन[3] दोऊ। लखि नहिंसकत नारिनर कोऊ ॥
नंदनँदन त्रिय छवितनु काछे। शोभित हैं राधा सँग आछे ॥
बार बार पिय रूप निहारी। मनहीं मन रीझतिहै प्यारी ॥
कहति सखी देखे जिन इनको। बूझेत कहिहौं कह तिनको ॥
तिहूं भुवन शोभा सुखकी निधि। करिहौं तिनको गोपकवनविधि ॥
पगनूपुर विछियां छबि छाजैं। गजगति चलत परस्पर बाजैं ॥
श्याम गौर सुंदर सुख जोरी। मर्कत मणिकंचन छबि थोरी ॥
भुज भुज कंठ परस्पर राजै। या छविकी उपमा नहिं छाजै ॥

१ शीशा। २ उपमारहित। ३ ब्रजकी गलियां।

जात युगल वनको सुखपाई। उतते चंद्रावलि सखि आई ॥
दूरहिते लखि रही निहारी। इकटकनैन निमेष निवारी ॥
पुनि पुनि मन विचार कर जोहै। एक राधिका दूसरि कोहै ॥
ब्रज युवतिन इकरकर जानै। यह धौं कौन नहीं पहिंचानैं ॥
दोहा–और गांवते यह कहूं, आई है ब्रज माहिं ॥
अतिहि सलोनी सांवरी, अबलौं देखी नाहिं ॥
सो०–राधे मन सकुचाय, चंद्रावलि आवंति निरखि ॥
रही श्याम मुख चाहि, ब्रजहीको फेरतिहरिहि ॥
कहति जाहु पिय फिर सुख वाहीं। करते कर छूटत है नाहीं ॥
उत आवति लखि सखिहिलजानी। इतहि श्यामके नेह भुलानी ॥
दुख सुख हर्ष न हरि रस माती। उत चंद्रावलि इन रँगराती ॥
कहति निकट देखहुधौं जाई। बूझौं याहि कहांते आई ॥
देख श्याम सुख छवि मुसकानी। करी चतुरई इन पहिंचानी ॥
इनतेनिधरक और न कोऊ। कैसी बुद्धिरची इन दोऊ ॥
ये दोऊ अति चतुर सयाने। निज करि इन्हैं विधाता जानैं ॥
और कहा इनको कोउ जानैं। मोसों नहीं परत पहिंचानैं ॥
सकुच छांडि अब इनहिं जनाऊं। जान बूझ काहे निदराऊं ॥
जो इनको मैं टोकत नाहीं। जैहैं जीत मनहिं मन माहीं ॥
यह चतुरई चले छलि दोऊ। प्रगट करौं इनके गुणसोऊ ॥
ऐसे बहुरि इन्हैं नहिं पाऊं। आज प्रगट कहि लाजलजाऊं ॥
दोहा–कहु राधे यह कौनहै, संग साँवरी नारि ॥
कबहुँ इन्हैं देख्यो नहीं, अति सुन्दरि सुकुमारि ॥
सो०–कोहै इनको नाथ, कौन गोपकी ये सुता ॥
भलो बन्योहै साथ, जैसी यह तैसी तुमहुँ ॥
मथुराते यह आजुहि आई। है इनते कछु प्रीति सगाई ॥
एक दिना ललता सँग माहीं। दधि बेचन हम गई तहांहीं ॥

उनहीके सँग भई चिन्हारी । तबहीकी पहिंचान हमारी ॥
वही सनेह जानिकै आई । ऐसीशील स्वभाव सुहाई ॥
मैं गृहते इत आवन लागी । येऊ सँग आय अनुरागी ॥
सुनिराधा यह सहज सुहाई । शील सनेह रूप अधिकाई ॥
इनको ब्रजमें क्यों न बुलायो । अपनेनिकटहि आन बसायो ॥
कैवृषभानु पुराकै गोकुल । राखहु इनहिं बुलाय सहित कुल
तुमहौ नवल नवलहैं येऊ । दोऊ मिलि श्यामहिं सुखदेऊ ॥
ऐसीहै यह नारि सुहाई । और नारि मनलेति चुराई ॥
हमहूं को अब इनहिं मिलावो । नीके इनके वदन दिखावो ॥
हमहिं देखि सकुचतकत प्यारी । हमसों घुंघट करत कहारी ॥

दोहा–ऐसे कहि चंद्रावली, गह्यो श्याम कर[२] जाय ॥
यह कहुँ अबलौं नहिं सुनी, तिय सों तिय सकुचाय॥
सो०–आपहि वदन[३] उघारि, घूंघट पट हातौ कियो ॥
मुख छबि रही निहारि, माने करि लोचन[४] सफल॥

बारहि बार कहति मुसकाई । चितवतक्यों नहिं वदन उठाई ॥
मथुरामेंहै बास तुम्हारो । कहा नाम मुख वचन उचारो ॥
कियो राधिका यह उपकारो । दुर्लभ दर्शन भयो तिहारो ॥
कछु इक मैं पहिंचानत तुमको । काहे को सकुचतिहौ हमको ॥
कबहुँचिबुक[५] गहि बदन उठावैं । कबहुँ कपोल[६] परम सुखपावैं ॥
कबहूँ चुटकि कहति मुख फेरौ । नैन उठाय नेकुइतहेरौ ॥
नैन नैन सों हरि नहिं जोरैं । रहेलजाय भावसों भोरैं ॥
चंद्रावली देखि मुसकानी । हँसि बोली राधासों बानी ॥
ऐसी सखी मिली ये तुमको । तौकाहेन बिसारौ हमको ॥
जबसों इनसे प्रीति लगाई । बहुत भई तुमको चतुराई ॥
अबलौं इनको कहां दुरायो । हमसों कबहूं नाहिं जनायो ॥
त्रिभुवनकी सुखमा सब गुणनिधि । एकहि इन्हैं बनाईहै विधि ॥

१ पास । २ हाथ । ३ मुख । ४ आंखैं । ५ ठोढी । ६ गाल ।

दोहा-तुमहुँ कुशल येहू कुशल, क्यों न प्रीति दृढ़ होय ॥
जानेहौं चले जाहुवन, आप स्वारथी दोय ॥
सो०-दंपति कियो विचार, सुनि चंद्रावलिके वचन ॥
यासों नाहिं उबार, हर्षि मिले उरलाय तब ॥
चले कुंजगृह हरषि विशाला। उभय बामविच मदनगुपाला ॥
वाम भाग प्यारी को लीने। दक्षिण भुजा सखी पर दीने ॥
दिपि दामिनिबिचनवघन मानौ। रतिसमेत लखि मदन लजानौ ॥
कैधौं कंचन लता सुहाई। ललित तमाल विटप लपटाई ॥
गये कुंजवन घन छबिछाई। सुमन पुंज अलि गुंज सुहाई ॥
वर्ण वर्ण कुसुमित[2] तरु नाना। करती कोकिल मंगल गाना ॥
बहत समीर[3] त्रिविध सुखदाई। पावन मंगल भूमि सुहाई ॥
लखि छबि पुंज कुंज अनुरागे। सहचारि सहित युगल बड़ भागे॥
नव दल कुसुम तुल्य कमनीया। बैठे नवल रमण रमणीया ॥
करत बिलास बिविध मन माने। कोटि कोटि रति काम लजाने ॥
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी। निरखत छबिहसखी तृण तोरी ॥
सने रसिक दोऊ रसकाई। बसेनिशा[4]वन कुंज सुहाई ॥
दोहा-तैसोइ विपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगन्ध ॥
तैसिय निर्मल चांदनी, तैसोइ सुख संबन्ध ॥
सो०-तैसोइ कुंज निवास, तैसोई यमुना पुलिन ॥
सकल सुखनकी रास, तैसेइ रँग भीने युगल ॥
बनहिं धाम सुख रैनि बिहाई। उठे प्रात दोउ छबि अधिकाई ॥
बैठे युगल रंग रस भीने। आलस युत अंगन भुज दीने ॥
अरस परस दोउ छबिह निहारैं। रीझ परस्पर तन मन वारैं ॥
अरुण नैन नख रेख सुहाई। बिन गुण माल हृदय छबि छाई॥
लट पटि पाग रस मसी भौहैं। कुंडल झलक कपोलन सोहैं ॥
प्रिया बदन छबि श्याम निहारत। उरझीलट मुक्तन निरवारत॥

१ दोनोंके। २ फूलेहुये। ३ वायु। ४ रात।

आलस नैन सुरति रस पागे । नंदनँदन पिय सँग निशि जागे ॥
टूटे हार मरगजी सारी । नख शिख सुन्दर पिय अरु प्यारी ॥
चले कुंज ते युगल बिहारी । ब्रजवासी लखि लखि बलिहारी ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा । जीते सुन्दर रतिपति कामा ॥
सुन्दर अवलोकनि मृदु बोलनि। सुन्दर चालि डगमगी डोलनि ॥
सब विधि सुन्दर सुख निधि दोऊ। सुन्दर उपमाको नहिं कोऊ ॥

दोहा—अति विचित्र नँदलालकी, लीला ललित रसाल ॥
जो सुख दुर्लभ शिव सनक, सोबिलसत ब्रजबाल ॥

सो०—गये युगल ब्रज धाम,सखी सहितनिशि रस बिलसि
बसत प्रिया उर श्याम, श्याम हृदय प्यारी सदा ॥

अथ शृंगारभूषण वर्णन लीला ॥

बैठी भवन शृँगार किशोरी । बहुरो अंग शृँगारत गोरी ॥
मानहु सबन देति पहिराये । रति रणजीति पियासों आये ॥
कटि तटि किंकिणि बसन नवीने। बाजूबंद भुजन को दीने ॥
कर कंकण उर हार सुहाये । तरुवनि चारु श्रवण पहिराये ॥
नकवेसर[२] अंजन दृग दीनों । बेंदा ललित भाल पर कीनों ॥
रची मांग सम भाग सुहाई । तामधिरेख सिंदूर बनाई ॥
प्रभु सों बिमुख जानिकै कादर । बांधति कुच मनौ किये निरादर॥
दियो बिहँसि अधरनको बीरा । सन्मुख रहे प्रहाररसधीरा ॥
शोभित सदन शृँगार सुहाई । श्रीवृषभानु कुँवरि छबि छाई ॥
नख शिख कुसुमबिशिखकी[१] सैना । किये कान्ह वश पंकज नैना ॥
शीशफूल शिर अति छबि छाजै । मनहुँ भाग मणि प्रगट बिराजै ॥
सुभी जराव फूल अरुणाई । हरति प्रात रविकी छबि ताई ॥

दोहा—चंद्रवदन मृगशिशुनयन, भृकुटी[३] कुटिलकलंक ॥
अलक झलकछबिदेति जनु, शोभित रजनी अंक ॥

सो०—कुन्दकली समदाँत, तिल प्रसून[४] नाशा शुभग ॥

१ कामदेव । २ नथुनी । ३ भौंह । ४ तिलपुष्प ।

जीव बन्धुकी भांत, अधर अनूपम चिबुक तिल॥

लखि कलकंठ कपोतलजाहीं। पीकलीक झलकति जेहि माहीं॥
बाहु मृणाल लाल छवि छाये। कोमल पाणि सरोज सुहाये॥
कुच युग चक्रवाक जनु नीके। लसत रोमावलि तट२ नीके॥
त्रिबली तरल तरंग सुहाई। अति गति नाभि मनोहरताई॥
कृषकटि किंकिणि युत छवि छाई। पृथु नितंब शोभा अधिकाई॥
रंभे खंभ युग जंघ निकाई। पग नूपुर झनकार सुहाई॥
चाल विलोकि काम गज लाजैं। मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजैं॥
वरणे को पद पंकज शोभा। हरि मन भ्रमर रहत जहँ लोभा॥
निगम नेति नित गावत जाको। राधा वश कीनोहो ताको॥
ज्यों चकोर चंदाको आतुर। त्यों नागरि वश गिरिधर चातुर॥
देखे विन क्षण रह्यो न जाई। सदा प्रेम वश त्रिभुवन राई॥
झझकिझरोखा झांके आई। करति शृंगार प्रिया मन भाई॥

दोहा–अंग अंग भूषण वसन, रुचि रुचि सकल शृँगारि॥
लै दर्पण देखति छबिहि, श्रीवृषभानु दुलारि॥
सो०–दीठ झरोखालाय, रहे श्याम इकटकनिरखि॥
उर आनंद बढ़ाय, देखत प्यारीकी छबिहि॥

इककर दर्पण इककर अँचरा। पुनि पुनि दृगेन सवाँरतकजरा॥
कबहुँ शीशके फूल सँवारें। कबहूं कुटिल अलक निरवारें॥
कबहूं आड रचति केसरिकी। कबहूं छवि देखति वसरिकी॥
कबहूं रचति सुमन सों वेणी। कबहुँ मांग मुक्तनकी श्रेणी॥
कबहूं रिस करि भौंह सिकोरैं। कबहूं नैन नैन सों जोरैं॥
इकटक दर्पण ओर निहारैं। नेकु वदन इत उत नहिं टारैं॥
निरखि आपनी छबि सुकुमारी। रही विवस प्रतिबिंबे निहारी॥
अति आनंद भई मति भोरी। बिसरी सुरति देहकी गोरी॥
कहति मनहिं मन अति सकुचाई। यह सुंदरी कहांते आई॥

१ कबूतर। २ केला। ३ आंखन। ४ छाया।

करते मुकुर दूरि नहिं टारैं । कछू रोषकरि हृदय विचारैं ॥
कहूं श्याम देखे जोयाहीं । तुरत होंय याके वशमाहीं ॥
जो मोहन यासे अनुरागे । कहा चले मेरी या आगे ॥
दोहा-यह आई किहि लोकते, अति सुंदर वर नारि ॥
ब्रजमें तौ ऐसी नहीं, कोऊ गोपकुमारि ॥
सो०-कोऊ ल्यायो याहि, कैधौं आई आपही ॥
सो वैरी मम आहि, जो लाई याको ब्रजहि ॥
सुनी कहूं इन हरिकी शोभा । आई है ताहीके लोभा ॥
जैसे सुन्दर कुँवर कन्हाई । तैसी सुन्दरि यह ब्रज आई ॥
मनहीं मन पुनि २ पछिताई । पूंछति प्रतिबिंबहि सकुचाई ॥
तूहै कौन कहांते आई । यहां कौन तोको लै आई ॥
नाम कहाहै सुन्दरि तेरो । तुम जहँ रहत कौनसो खेरो ॥
कहौ न मुख ते वचन सुनाई । मति सकुचौकहि सौंह दिवाई ॥
हम तुम दिनेनि एकहै गोरी । तू कछु रूप अधिकनहिं थोरी ॥
इहां अकेली तू क्यों आई । काहू संग और नहिं लाई ॥
सुन्यो नहीं अन्याव इहांको । ऐसे कहि डरपावति ताको ॥
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी । लेति तियनके भूषण छोरी ॥
जो अपनी पति चहत सयानी । तौ घर जाहु मानि मम बानी ॥
लेहुवसनते अंग छिपाई । देखैं नहिं कहुँ श्याम कन्हाई ॥
दोहा-तेरे हितकी कहतिहौं, मानचहै मतिमान ॥
आईहै ब्रज आजही, तू उनको कह जान ॥
सो०-ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवनमें कोऊ कहूं ॥
जैसो ब्रजमें कान्ह, मनभायो सबसों करत ॥
नेक नहीं काहू डरमाने । मथुरापति जेहि रहति सकाने ॥
उनके गुणनीके मैं जानों । तोसों अपनी दशा बखानों ॥
हम मथुरा दधि बेचन जाहीं । घेरि लई उन मगके माहीं ॥

१ मेरा । २ आयु । ३ वस्त्र । ४ व्यवस्था ।

गोरस लियो छोरि बरिआई । हार तोरि दीने बगराई ॥
हम अनेक तू एक किशोरी । ताते जाहु वेगि गृह गोरी ॥
सुनि सुनि श्याम प्रियाकी बानी । मनही मन विहँसत सुखमानी ॥
प्यारी चकित रूप निज देखी । श्याम चकित सुन वचन विशेखी ॥
जान दूसरी तिय प्रिय पाहीं । जात निकट मोहन सकुचाही ॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारै । बोलत नहिं डर हर्ष विचारै ॥
देखत मुकर[1] प्रिया कर माहीं । अंकमलेवे[2] को ललचाहीं ॥
प्यारीके रसवश गिरिधारी । लेति दृगन भर भर छबि भारी ॥
सुनि २ वचन हृदय सुख पावै । पुलकि अंग आनंद बढ़ावै ॥
छंद-वचन सुन आनंद अति मन, निरखि छवि सुख पावहीं ॥
धनि धन्य राधा रूप धनि, हरि नैन इकटकलावहीं ॥
धन्य वह प्रतिबिंब धनि छवि, धन्य मुकुर निहारहीं ॥
धन्य श्रम धनि प्रेम पूरण, धन्य तन मन वारहीं ॥
धन्य सुख जेहि लागि राधा, कान्ह ब्रज तनु धारहीं ॥
रमा सहित बिलास नित, वैकुंठ वास बिसारहीं ॥
मिलन बिछुरन सुख विरह रस, क्षणहिं प्रति उपजावहीं ॥
ब्रज विलास हुलास हरिको, नित नयो श्रुति गावहीं ॥
दोहा--नवल प्रीति नित नवल सुख, नित नवरूप रसाल ॥
नित नवरस बिलसत नवल, श्रीराधा नँदलाल ॥
सो०-कहत रसीली बात, ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिंबसों ॥
त्यों त्यों सुनि हरषात, ब्रजवासी प्रभुरस भरे ॥
प्यारी निज प्रतिबिंब निहारे । भई विवस नहिं सुरति सँवारे ॥
बारबार पूछति तापाहीं । क्यों सुन्दरि तू बोलति नाहीं ॥
हँसे हँसति हेरति है हेरे । फेरति भौंह भौंहके फेरे ॥
करति परस्पर हम सों हांसी । अपनो नाम न कहत प्रकासी ॥

१ दर्पण । २ गोद ।

परमचतुर तुमको मैं जानी। हमसों तुम कछु करत सयानी॥
अतिही सुन्दर रूपतिहारो। देखि होत मन मुदित हमारो॥
शोभित बेसरि नाक सुहाई। अति अनूप[1] अधरन अरुणाई॥
दर्शन[2] दमक दामिनिहिं लजावति। चिबुकनीलकण अति छबिपावति
काहे ऐसे मुख की वानी। हमैं सुनावति नाहिं सयानी॥
कहौ वचन काकी हौ घरनी[3]। काकी सुता सहज मन हरनी॥
कैरिस कै रस कै इत हेरति। मेरे सन्मुख लोचन जोरति॥
कछु रिस कछु धरको मनमाहीं। धीर धरत नागरि जिय नाहीं॥
दोहा–यह तौ बोलतिहै नहीं, अति गरवीली वाम॥
देखत ही यहि रीझिहैं, छैल छबीले श्याम॥
सो०–भई सौति यह आय, अब हरि याके वश भये॥
यौंवियोग उपजाय, उपजायो उर विरह दुख॥
रहीदीठ दर्पणहिं लगाई। टरति नहीं छबिकी अधिकाई॥
उरमें भयो विरह दुख भारी। देखि दशा रीझे गिरिधारी॥
कबहुँ चलत तिय ढिगाहि कन्हाई। कबहुँरहत लखि छबिहिभुलाई॥
औचकि पाछे ते सुखदाई। मूंदे नयन कमल कर आई॥
चौंकि चकित भइ मनमें प्यारी। जाने आये छैल बिहारी॥
डरतिरही मनमें मैं जाको। मिले आय सुंदर हरि ताको॥
तब कछु सुरति भई मन माहीं। वह तोहै मेरी परछाहीं॥
सकुच दुराव[4] करति पिय पाहीं। मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं॥
जान बूझके पिय घनश्यामहिं। लेति विपुल सखियनके नामहिं॥
श्याम प्रिया लोचन करि लायो। अति हित बेनी कर परसायो॥
शोभा कहा कहै कवि कोऊ। मेचक मणि सुमेरु अँग दोऊ॥
ताबिच मनहुँ पन्नगी[5] आई। रही कनक[6] गिरिसों लपटाई॥
दोहा–वेष्टित भुज मूंदे करन, दीरघ खंजन नैन॥
जनु मख लीनो धाय अहि, नहिंसमात फणिऐन॥

१ उपमारहित। २ दांत। ३ स्त्री। ४ छिपाव। ५ सर्पिणी।
६ सुवर्णका पर्वत।

सो०–करति सखिन सों रोष, मन हर्षत खीतझ वदन॥
भरी चतुरई कोष, लूटति मनकामन फलन ॥

अति आनंद भरे दोउ राजैं । उपमा कहत कवीश्वर लाजैं ॥
मर्कत मणि कुंदन सँग जोरी । किधौं लिये घन तडित अकेली ॥
कैशोभा सुख तनु धरि सोहै । ब्रजवासीभक्तन मन मोहै ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई । रहे मूंदि छबि वरणि न जाई ॥
अतिहि विशाल चपल अनियारे। नहिं समात प्रिय पाणि पसारे ॥
खिन खोलत खिनढकत बिहारी। मुख रिस मन मुसकात पियारी॥
ज्यों मणिधर मणि प्रगट कन्हाई।फिरिफिरि फणतर धरत छिपाई
श्याम उँगरियन अंतर माहीं । चंचल नैन दुरे दरशाहीं ॥
मर्कत मणि पिंजरा में मानौं । तरफरात बिब खंजन जानौं ॥
करकपोल ढिग तरलतरोना । शोभा सहज सुभाय करोना ॥
मनोयुग कमल मिलन शशि आये। विवरविषंग सहायकलाये ॥
कुँवरि नागरी नागर नायक । उपमा काहि कहौं को लायक ॥

दोहा–अपने कर प्रिय कर पकरि, लीने नैन छुडाय ॥
रवि शशि चार सरोज जनु,द्वैचकोरमिलिभाय ॥
सो०–कीन्हे सन्मुख आन, पाणि पकरिके लाड़िली ॥
भले भलेजू कान्ह, मैं सखियन धोखे रही ॥

भले आय औचक बिन जाने । मूंदि रहे दृग अतिहि पराने ॥
कैसे दौरि पैठि गृह आये । नेकहु आवत जान न पाये ॥
तुमहौ तिय मन हरन कन्हाई । तुम्हरी गति कछु जानि न जाई॥
तब हरि हर्षि प्रिया उर लाई । मुकुर कथा सब भाषि सुनाई ॥
सुनि नागरि हरि तन मुसकानी। चितैनयन कछु मनहिं लजानी॥
मैं तौ अपने मन्दिर माहीं । सहज लखत दर्पणमें छाहीं ॥
तुम्हरी महिमा पियको जाने । इक सुंदर अरु परम सयाने ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई । रसिक पुरंदर जन सुखदाई ॥

१ राधिका। २ प्रभाव।

हर्षित गये सदन नँदलाला । इत नागरि उर हर्ष विशाला ॥
जब प्रतिबिंब सुरत जिय आवै। समझ सुदृष्ट सकुच तब पावै ॥
तिहि अंतर सँग सखिन लिवाई । चंद्रावलि राधा ढिग आई ॥
लखि प्यारी अति आदर कीनो। तुरतसबनको बैठक दीनो ॥
दोहा–सादर सन्मानीं सबै, दिये हर्षि कर पान ॥
पिय सँग सुख चाहतकरन, रहति सकुच पुनि मान॥
सो०–गद्गद सुर मुख बैन, बार बार भाषति हरषि ॥
झलक प्रेम जलनैन, पुलकि गात पूरे सबै ॥
कहति सखी सुन राधा गोरी । आज कहा अति हर्षकिशोरी ॥
हम तेरे नितही प्रति आवैं । इतनो आदर कबहुँ न पावैं ॥
पायो आज परचो कछु तैरी । कैधौं मिले श्याम कहुँ हैरी ॥
उमग्यो प्रेम हर्ष उर माहीं । हमैं सुनावति है क्यों नाहीं ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी। बोली पिया हर्षिकै बानी ॥
आये आज सखी हरि मेरे । कहे जात नहिं गुण उन केरे ॥
जैसी भांति मिले हरि हमसों । सोहित कहौं सुनहु सखि तुमसों॥
मैं अपने सब अंग शृँगारति । लिये मुकुरकर वदन निहारति॥
पाछे आनि भये हरिठाढे । चतुर शिरोमणि छविसों बाढे ॥
भाव एक भोरे मैं साजा । ताहि कहत सखि आवत लाजा॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी। जानि औरतिय मनहिं डरानी ॥
पाछे ते यह जान कन्हाई । मूंदे नैन औचकहि आई ॥
दोहा–तबहीं चौंकि चकृत भई, मैं समझी निज भोर ॥
लगी देन उरहन तुम्हैं, भई फिरतिहौं चोर ॥
सो०–सुनि राधा मुख बात, हिय हर्षी सब गोपिका ॥
पुलकि प्रफुल्लित गात, कहत धन्य तू लाड़िली ॥
श्याम संग सुख लूटति हैरी । अब उनसों नहिं छूटति हैरी ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी । भली भई तू हरि रसपागी ॥

१ उर । २ लज्जा । ३ हाथमेंदर्पणलिये । ४ गद्गद । ५ प्रेमी ।

अब हरि तोते अति रति माने। तेरो अन्तर हित पहिंचाने ॥
आवत जात रहत घर तेरे। क्षण नहिं रहत तोहिं बिनहेरे ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउनीके। परम भावतेहौ सबहीके ॥
आज लाल मेरे गृह आये। बड़े भाग्य मैं हितकरि पाये ॥
देख दरश नैनन सुख पायो। करौ आज आनंद बधायो ॥
यह उपकार तुम्हारो आली। मोहिं मनायदिये वनमाली ॥
तुरत लाय हरि मोहिं मिलायो। मैं अपने अपराध क्षमायो ॥
नंदनँदन पिय नैन समाये। भावत नहीं नेक बिसराये ॥
सुनि यह राधाकी रसबानी। देति अशीष सखी हरषानी ॥
नंद नँदन वृषभानु किशोरी। चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी ॥

दोहा-प्रेम भरे छबिसों भरे, भरे अनंद हुलास ॥
युगल माधुरी रस भरे, ब्रजमें करत विलास ॥
सो०-करत अनेक विहार, रूप रसिक गुणनिधि युगल ॥
राधानंद कुमार, ब्रजवासी जन सुख करत ॥

अथ नयनअनुराग लीला ॥

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी। लोक सकुच कुलकान[2] विसारी ॥
सासु ननँद गारी दै हारीं। सुनत नहीं कोउ कहत कहारी ॥
सुत पति नेह जगत यह छोर्यो। ब्रज तरुणिन तिनकासम तोर्यो ॥
वेद लोक मर्यादा डारी। ज्यों अहिकेंचुरि फिरत निहारी ॥
ज्यों जलधार परै तृण नाहीं। जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढ़ि धावै। जैसे सती बहुरि नहिं आवै ॥
जैसे भजे नन्दनन्दनको। नेकहुडर पुनि नहिं गुरु जनको ॥
तैसइ प्रेम विवस गिरिधारी। ज्यों गज पंकज[3] सकहिं निहारी ॥
ब्रज वनिता मन नहिं विसरावैं। क्षण प्रति तिन्हें देखि सुखपावैं ॥
आये पुनि तेहि ओर बिहारी। सखिन सहित बैठी जहँ प्यारी ॥
भीर देखि सकुचे मन माहीं। ताते निकट गये हरिनाहीं ॥

१ श्रीकृष्णराधिका। २ लाज। ३ कमल।

ताही मग निकसे सुखदाई । सुंदर नटवर रूप दिखाई ॥

दोहा-शीश मुकुट कुंडल श्रवण, उर चटकीली माल ॥
पीत वसन कटि काछिनी,तनु द्युति श्याम तमाल॥

सो०-चलत लटकनी चाल, बंक[1] विलोकनि मृदु हँसनि ॥
अंग अंग छबि जाल, रसिक नवल नागरि छयल॥

औचक देखि श्याम ब्रजनारी । भई चकित तनुदशा बिसारी ॥
जात चले ब्रज खोरि अकेले । कोटि कामकी छबि परहेले ॥
पगद्वै चलत बहुरि फिरिहेरैं । कमल सनाल कमल कर फेरैं ॥
मृगमद[2] तिलक अलक[3] घुंघरारी ।तन वन धात चित्र रुचि कारी ॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं । नैन सैन दैदै मन मोहैं ॥
निरखत ब्रज युवतीं विथकानी[4]। दुखसुखव्याकुलमन अकुलानी ॥
गये कलपतरु छांह कन्हाई । रूपठगौरीं तियन लगाई ॥
लागीं कहन परस्पर वानी । लोचन मन अनुराग कहानी ॥
सुनहु सखी यह नंददुलारो । हठि कर यह मनलेत हमारो ॥
क्षण २ प्रति छबि और बनावै । शोभा कछू कहत नहिं आवै ॥
मनतौ इनहीं हाथ विकानो । हम सखि यह कछु भेद न जानो॥
नैननिसाट करी नैननिसो । कियो मोल सैनानि वैननिसो ॥

दोहा-बेचि दियो मन आपुही, मृदु मुसकन धन पाय ॥
परी रही हौं बीचही, नयना बड़ी बलाय ॥

सो०-भये श्यामको जाय, अब रुचि मानी मनहिं मन ॥
मैं पचिहारि बुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे ॥

अब मनहित हरिहीसों कीनो । भेद हमारो सब कहि दीनो ॥
मनतो गयो नैनहूं मेरे । तिनहूं बोलि किये हरिचेरे ॥
अब यह रहत वहां सब जाई । सोई करतजु कहत कन्हाई ॥
जितहि चलत वे तितही जाहीं। हरिके सन्मुख रहत सदाहीं ॥
भये वे जाय गुलाम श्यामके । रहे नकाहू और कामके ॥

१ टेढी । २ कस्तूरी । ३ बालोंकीलट । ४ थकितभई ।

ताको कछु अपमान न जाने । फूले रहत अधिक सुखमाने ॥
जग उपहास सुनत बहु तेरो । लाज शंक दीनो सब डेरो ॥
आरज पथ मर्याद बड़ाई । लोकवेद कुलकान गँवाई ॥
मैं समुझाय रही बहुतेरो । नेकहु कह्यो सुनत नहिं मेरो ॥
ललित त्रिभंगी छबिपर अटके । मोसों तोरि सगाई सटके ॥
हरि अब छोडत तिनको नाहीं । बैठे रहत आप तिन माहीं ॥
राखे बांधि अलक की डोरी । भाज जाहिं मति कबहुँक दौरी ॥
दोहा—अब ये लोचन श्यामके, सखी हमारे नाहिं ॥
बसे श्याम रस रूपये, श्याम बसे इन माहिं ॥
सो०—कहा करैं सखि श्याम, नैननहीको दोष यह ॥
हठ करि भये गुलाम, तनक मंद मुसकान पर ॥
बोली अपर[1] एक ब्रजनारी । सखिलोचन लोभी अति भारी ॥
जबहिं लखत कमनीय कन्हाई । तबहिं संग लागत उठि धाई ॥
मेरो हटक्यो नेकुनमानैं । लखत जाय वह छबिललचानैं ॥
ज्यों खग[2] छूटत फंद बधिक[3]ते । भागचलत उड़ि वेग अधिकते ॥
पाछो फेरि न फिरत डराई । जाय सघन[4] वन मांझ समाई ॥
त्यों दृगमोते छूटि पराने । हरि छबि बिन घनजाय समाने ॥
अब वे इतको नाहिं निकारें । वह छबि निरखि हरषिउरधारें ॥
यदपि सुधा छबि पियत अघाई । तदपि तृप्ति नहिं मानतराई ॥
भई सखी नैनन गति ऐसी । भरे भवन[5] तस्कर[6]की जैसी ॥
देखि श्याम छबितन अधिकाई । अति लालची रहे ललचाई ॥
लेत न बने तजो नहिं जाई । चकित भयेनिज सुधि बिसराई ॥
रहे विचारहि मांझ भुलाने । नहिं कछु लियो न त्याग पराने ॥
दोहा—नैन चोर हरि मुख सदन, छबि धन भांति अनेक ॥
तजतबनतनहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक ॥
सो०—सखि ये नैना चोर, हरि मुख छबि चोरन गये ॥

१ दूसरी । २ पक्षी । ३ बहेलिया । ४ गह्वर । ५ सर्ववस्तुपूर्णगृह । ६ चोर ।

बांधे अलकनिडोर, हरिकी चितवन पाहरू ॥

भली भई हरि इनहिं बँधायो । निदरि गये तैसोफल पायो ॥
ये नहिं मानत कह्यो हमारो । सखि इनहीं सब काज बिगारो ॥
कहति और इक गोप कुमारी । सखि ये नैनकिधौं बटपारी ॥
कपट नेह हमसों करि भारी । करीहमैं गुरुजनते न्यारी ॥
श्याम दरश लाडू कर दीनो । हमैं आपने वश करलीनो ॥
प्रेम ठगौरी शिर पर छाई । फिरति संगही संग लगाई ॥
विरह फांस गरडारि हमारे । करी विकल नहिं अंग सँभारे ॥
कुल लज्जा संपदा हमारी । सो इन लूटि लई सखि सारी ॥
कहँरति परी मोह बन माहीं । लगन गांठ दृग छूटत नाहीं ॥
क्योंहू नेह जीव नहिं जाई । सुमिरि नैन गुण मन पछिताई ॥
कासों कहैं सखी यह बाता । भये नैन हमको दुखदाता ॥
हमको विरह दुसह दुख देहीं । आप सदा दर्शन सुख लेहीं ॥

दोहा–इहिविधि निदरति दृगनको, भरी प्रेम ब्रजनारि ॥
होत मग्न सुख विरह रस, नयननिश्यामनिहारि ॥

सो०–यही भजन यह ध्यान, श्याम रूप रस गुण कथा ॥
नहिं जानति कछु आन, निशिदिन ब्रजकी सुंदरी ॥

कोऊ कहति नैन खग मेरे । फँसे अलक फंदा हरि केरे ॥
छबि कण चारा लखिललचाने । फंद गये चितवन लपटाने ॥
हरि छबि अटकि परे दृग आई । अतिहि विलाप भये बिबसाई ॥
रहत दीन सन्मुख टकलाये । दुख सुख समुझ सबै बिसराये ॥
कहवावत हैं बड़े सयाने । वह छबि लेन गये अतुराने ॥
सोतो कछू हाथ नाहिं आयो । आपन यों इन जाय बँधायो ॥
ऐसोको त्रिभुवन जो जाई । आवै सखी समुद्र अथाई ॥
हार जीत ये नैन न जानैं । मान पमान कछू नहिं आनैं ॥
परे रहत शोभाके द्वारे । नेकहु लाज नहीं उर धारे ॥

१ ठग । २ बेचैन । ३ तलफति । ४ अड ।

जाकी बान परी सखि जैसी। धरी टेक उरमें तिन तैसी॥
इन अँखियन यह टेक परीरी। लुब्ध तज्यों कमलन भ्रमरीरी॥
जो शुक नलनीके वश आई। जिमि कपि मुठी छोड़ि नहिं जाई॥
दोहा–लोभै वश जिमि मीनै मृगे, आप बँधावत आय॥
रूप लालची नैन तिन, भये श्याम वश जाय॥
सो०–सकै न काहू छिधु, लोकलाज कुलकानगिर॥
श्याम सलोने सिंधु, मिले त्रिवेनी ह्वै नयन॥
सखी नैन अब हरि सँग लागे। मन क्रम वच उनसे अनुरागे॥
सन्मुख रहत सदा सुख पाये। भूल गये मग दहने बाये॥
ज्यों मणि देखि उरग सुख पावैं। ज्यों चकोर चंदहिं लटकावैं॥
मुदित रंक जैसे धन पाई। तैसी इनकी गति अब माई॥
अब ये नैन फिरत नहिं फेरे। किये सखी हम यत्न घनेरे॥
देखे सुभग श्याम इन जबते। निठुर भये हमसों ये तबते॥
जब मैं घूंघट पटहि धरेरी। तबये शिशुकी अरन अरेरी॥
हरि अँग संग लागि उठि धाये। मनहुँउनहिं प्रतिपालकराये॥
मृदु मुसकन रस पाय मिठाई। क्षणहींमें मति गति बिसराई॥
अति हठ परे न नेक बिसारैं। निमिष रुदन जल धीर न धारैं॥
लाज लकुट उरसें डर पाये। वेसखि एकहु डर न डराये॥
फिरेन मैं बहु भांति बुलाये। गये तनक हरिके फुसलाये॥
दोहा–अब हम तलफत उन बिना, भरत यही अफसोस॥
अथ खोटो सखि आपनो, कहा पारखहि दोस॥
सो०–प्रेम विवस त्रिय वृन्द, ऐसे दोषति दृगनको॥
तबहिं छैल ब्रजचन्द, टेर सुनाई बाँसुरी॥

अथ मुरली लीला॥

कृष्ण प्रेमरस पूरण तातें। करत हुतीं नयननकी बातें॥
परी श्रवण इहि अंतरजाई। हरिकी मुरली टेर सुनाई॥

१ लोभित। २ भौंगी। ३ मछली। ४ हरिण। ५ कान।

भई चकित सुनिसब ब्रजगोरी । परी आय जनु शीश ठगोरी ॥
भूलि गई सुधि अँखियन केरी । ह्वैगईं मानौ चित्र लिखेरी ॥
दुख सुख मनलो बरणि नजाई । इकटककरहीं पलक बिसराई ॥
देह दशा सब तुरत भुलानी । स्वेद चल्यो बहि मानहुँ पानी ॥
भई बिवस मतिकी गति भूली । प्रेमहि डोरि गोपिका झूली ॥
कबहूँ सुधि कबहूं सुधिनाहीं । कबहूं मुरलीनाद सुनाहीं ॥
कछुकसँभारि धीर उरधारी । कहति परस्पर[1] गोपकुमारी ॥
अँखियनते मुरली हरिप्यारी । भै बैरिन यह सौत हमारी ॥
ब्रजमें धौं कितते यह आई । भई कठिन हमको दुखदाई ॥
आवतही ऐसे ढँग जाके । भये श्याम तुरतहि वश ताके ॥

दोहा–जारसको हम तप कियो, षटऋतु सब ब्रजवाम ॥
सोरस मुरलीलेति अब, सहजहिवशकरि श्याम ॥

सो०–गावत मीठी तान, मुरली सँग अधरन धरे ॥
अब याके वश कान्ह, और न बिवस करी वही ॥

ऐसी त्रिभुवन कौन सयानी[2] । जो नमोहि सुनि याकी बानी ॥
यहतौ भलीनहीं ब्रज आई । नई सौति हरिके मनभाई ॥
अब याके वश गिरिवरधारी । नेक अधरते[3] करत न न्यारी ॥
याहीके अब रंगरँगेरी । मधुर वचन सुनि रीझगयेरी ॥
करपल्लवन[4] माँहि बैठाई । रहत ग्रीव तापर लटकाई ॥
बारहि बार अधररस प्यावै । तासों अति अनुराग जनावै ॥
देखहुरी याकी अधिकाई । पियत सुधारस हमहिं दिखाई ॥
परी रहत बनमें धौंकैसी । भई ढीट आवतही ऐसी ॥
दिनही दिन अधिकात जातरी । सखी नहीं यह भलीबातरी ॥
आवतही हमरो धनलीनो । चाहत और कहा धौं कीनो ॥
मैं जो कहत सुनौरी गोरी । सजगरहौसब नवल किशोरी ॥
मुरली दूरिकराये बनिहै । कछू दिननमें हमैं न गिनिहै ॥

१ आपसमें । २ स्त्री । ३ ओष्ठ । ४ अँगुरी । ५ ठोढ़ी ।

दोहा–फिरिहैं याके सँग लगी, लोक लाज गृह त्याग ॥
जब जब जहँ यह बाजिहै, मोहनके मुँह लाग ॥
सो०–करिहै नानारंग, यह जानति टोना कछू ॥
यामुरलीके संग, देखहु हरि कैसे भये ॥
यह सुनि कहत एक ब्रजनारी। सखी बात यह कहति कहारी ॥
अब यह दूरि होति है कैसे। जाके वश नँदनन्दन ऐसे ॥
एक पांय ठाढे ता आगे। रहत त्रिभंग अंग अनुरागे ॥
अधर सेजपर शयन कराई। करपल्लवन पलोटतपाई ॥
कबहुँकमिल गावतहैं तासों। होति बिवस पुहुमी सबजासों ॥
मुरली अति मोहनको भावै। ताके गुणन सखी को पावै ॥
जानत रागरागिनी जेते। हरि सँग मिलि गावतिहैं तेते ॥
नाना विधिकी गतिन बजावैं। तान तरंग अमित उपजावैं ॥
जैसेही रीझत मन मोहन। तैसिय भांतिरिझावत गोहन ॥
रहति सदा मुखहीसों लागी। अधर पियूष स्वाद रसपागी ॥
मधुर मधुर कल वचन सुनाये। पुनि पुनि हरिके मनहिं चुराये ॥
ऐसो को अब हरिके करते। दूरकरै याको निज वरते ॥
दोहा–अब मुरली छूटै नहीं, याके वश भये श्याम ॥
प्रगट कियो सब जगतमें, मुरलीधर निजनाम॥
सो०–हरिको करि वश माहिं, मुरली लूटै अधररस ॥
उर डर मानति नाहिं;हम सबते बोलति निठुर॥
निठुर वचन अब हमहिं सुनावैं। हरिको मन हमते उचटावै ॥
आरजपथ कुल कान छुडावै। हम सबहिनको निलज करावै ॥
ऐसे ढँग मुरलीके आली। हमते निठुर किये वनमाली ॥
यह तौ निठुर काठकी जाई। प्रगट किये अपने गुण आई ॥
अपनोही स्वारथ यह जानै। कपट राग हरिके संग गानै ॥
मुरली निठुर किये बनवारी। मुरली ते हरि हमहिं विसारी ॥

१ नींद। ४ अहित।

बनकी व्याधि कहां यह आई। ऐसे कहि कहि सिय पछताई ॥
कहा भयो मोहन मुखलागी। अबली प्रकृति नहीं इन त्यागी ॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे। मुरली प्रगट भई यह कैसे ॥
कहां रहत काकीहै जाई। कौन जात कैसे इत आई ॥
मात पिताहैं याके कैसे। जैसी यह तेऊहैं ऐसे ॥
बोली अरु इकतिया सयानी। अबलों तुम यह बात न जानी ॥

दोहा—सखि तुम अबलों नहिं सुन्यो, मुरलीको कुलधर्म ॥
सुनो सुनाऊं मैं तुम्हैं, याकि जात अरु कर्म ॥
सो०—तुमसों कहौं बखान, मैं जानति याके गुणन ॥
सुनि सुख पैहौ कान, या मुरलीकी कुलकथा ॥

बनमें रहति बांस कुल जाई। यह तौ याकी जात सुहाई ॥
जलधरपिता धरणिहै माता। तिनके गुणन करौं विख्याता ॥
बनहूंते तिनको घर न्यारो। निपटहि जहां उजाड अपारो ॥
गुणन एकते एक उंजागरि। मात पिता अरु मुरली नागरि ॥
पर अकाज विश्वास न आनैं। येहैं इनके कुलहिबखानै ॥
ना जानिये कौन फलआली। कृपा करी या पर बनमाली ॥
सुनहु सखी याके कुल धर्मा। प्रथम कहौं मेघनके कर्मा ॥
वेवर्षत जल सब जगमाहीं। गिरि बन सर सरिता सब ठाहीं ॥
चातक सदा रहत करि आसा। एक बूंदको मरत पियासा ॥
धरणी सबहीको उपजावै। आपन सदा कुमारि कहावै ॥
उपजत पुनि विनशत ताहीमें। सो कछुछोहनहीं ताहीमें ॥
ताकुल सुता मुरलिका जानौं। अब आगे गुण प्रगट बखानौं ॥

दोहा—तनुहीते प्रगटत अनल, ऐसी याकी झार ॥
प्रगट भई जा वंशमें, करति जारि तिहिं छार ॥
सो०—ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बांसकी ॥

१ स्वभाव। २ पैदाकीहै। ३ स्वातीका। ४ लडकी। ५ अग्नि। ६ राख।

आई निज कुल द्रोहि, और कौन याते निठुर ॥
याकी जाति श्याम नहिं जानी। बिन जाने कीनी पटरानी ॥
कहिये चलौ श्याम सों जाई। सुनत तजैंगे कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहा यह बात बखानो। श्यामहिं कहा भलो तुम जानो ॥
निज कुल जारत बिलम न लाई। ह्वैहैतासों कौन भलाई ॥
जाको हम यह कुतु तपकीनो। सोफल तुरत मुरलि यह दीनो ॥
जेसन्मुखते बिमुख कहावैं। बिमुख तुरत उत्तम फल पावें ॥
घरके बन बनके घर कीन्हे। कपटी परम श्यामको चीन्हे ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी। वे कपटी बहुतरुण बिहारी ॥
ज्यों चकोर चन्दा हित मानैं। चन्द्र नहीं नेकहु उर आनैं ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै। जलको तनक दया नहिं लागै ॥
ज्यों पतंग उडजोति जरैरी। जोति नहीं कछु कृपा करैरी ॥
चातक एक मेघको जानैं। वह कछु ताकी प्रीति न मानैं ॥
दोहा—इन सबहिनते हरि निठुर, तैसिय मिली सहाय ॥
अब मुरली अरु श्यामकी, जोरी बनी बनाय ॥
सो०—ये अहीर वह बैन, काहिन प्रीति बढावहीं ॥
दुहुँअनको मन ऐन, जैसे वे तैसी वह ॥
मुरलीने हरिको पहिचान्यो। हरिको मन मुरली सों मान्यो ॥
निठुर निठुर मिल बाल बनावैं। याहीके बल धेनु चरावैं ॥
वाहीकी लकुटी कर धारी। वाही की वंशी अति प्यारी ॥
हम सों बैर सदा हरिकीनों। दधिले मारगजान न दीनों ॥
पुनि भेदहिमन हन्यो हमारो। कीनो कुल कुटुंबते न्यारो ॥
बहुरि बोलिअँखियनको लीनी। तापर सौति मुरलिया कीनी ॥
सुनि सजनी¹बिन काज जरोरी। कर्म करे सो कोउ न करोरी ॥
यह महिमा²करता सब करई। कौने बिधि धौं का पर परई ॥
हम तपकर इतनो पचिहारी। सो घर कुलते भई नियारी³ ॥

१ जराय। २ छडी। ३ अलग।

वनकी घास इतो सुख पावै । श्याम अधर शिर छत्र धरावै ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी । और नारि हरिको न सुहानी ॥
बनते लाय सुहागनि कीन्ही । जाति पांति कुल कछू न चीन्ही ॥
दोहा–तप तीरथ जो पूरवहि, कठिन किये हरि हेत ॥
अब मुरली ताकछूको, बैठि अधर फल लेत ॥
सो०–मेटत पिछलो दाग, जो तप करितायोतनहिं ॥
धनि २ मुरली भाग, अब गरजति अधरन चढ़ी ॥
मुरली कौन सुकृत[1] फल पायो । सब कलंक[2] हरि परशिगँवायो ॥
तनु[3] कठोर मन जड़[4] रस हीनी । अंतर सूनो सार विहीनी ॥
लघुता[5] अंग न कछु गरबाई । बाँस वंश कछु नाहिं निकाई ॥
छिद्र विशाल विपुल तनु छाये । हरिहि परशि सब भये सुहाये ॥
विधिते प्रबल भई यह मुरली । हरि मुख कमल वरासन जुरली ॥
चार वेद विधि श्रुति मति भाखे । नीति सहित जड चेतन राखे ॥
आठ बदन मुरली कहि नादा[6] । उलटि दई हरिकी मर्यादा ॥
जडनँ[7] चेत चेतन जडकीने[8] । थिरचर कर चर थिर कर दीने[9] ॥
एकबार श्रीपति सिखरायो । तबते ज्ञान विधाता पायो ॥
याको तो नँद सुवन कन्हाई । लगे रहत हैं कान सदाई ॥
याते को अरु अबल प्रवीना । कियो सकल जग निज आधीना ॥
कहिये काहि औरको ऐसी । भई श्याम सँग मुरली जैसी ॥
दोहा–अति सुर नर मुनि सूर शशि, खग मृग सलिल समीर
या मुरलीके वश सबै, ध्वनि सुनि धरत न धीर ॥
सो०–रही विश्वभर जीति, मोहन मुख लगि बांसुरी ॥
मेटि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी ॥
सखि मुरली को दोष न देहों । करि विचार अपने मन लेहों ॥
हरि हित इन श्रमकीनो जोई । सो श्रम और कौन पै होई ॥

१ उत्तमकर्म । २ पाप । ३ देहकडी । ४ मूढ़ । ५ अल्पदेह । ६ शब्द ।
७ निर्जीवकोसजीव । ८ सजीवकोनिर्जीव । ९ चलअचल ।

जो अकुलीन तऊ बड़ भागी । कियो कठिन व्रत हरि हित लागी
जब अतिदृढ याको हरि जान्यो । तब बन भीतरते गृह आन्यो ॥
जब याकी करतूत सुनोगी । तब धनि २ करि याहि गनोगी ॥
जन्मत हीते करमति गाढी । बनमें रही एक पग ठाढी ॥
शीत उष्ण वर्षा सह लीनी । नेकहु मनसा मलिन न कीनी ॥
कसकी नहीं नेक जब काटी । पत्र मूल शाखा जब छांटी ॥
राखी डार धाम में आनी । शोच शोच सबदेह सुखानी ॥
मुरयो न मन तन अंगद गाये । बिंधे बेह[1] अँग अँग करवाये ॥
ताय सुलाख परखि हरि लीनी । तब मुरली पटरानी कीनी ॥
मुरली सही इती कठिनाई । तब पाई ऐसी ठकुराई ॥

दोहा–मुरली तप फल भोगवै, वृथा करत तुम आर ॥
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणी पियार ॥

सो०–तुम ते यह नहिं होय, जो करनी[2] मुरली करी ॥
ताकी सम नहिं कोय, अति श्रम करि हरि वश करे ॥

परम पुनीत प्रीत जब जानी । तब मुरली हरिके मन मानी ॥
देखहुरी याकी अधिकाई । कहँ लगि याकी करहिं बड़ाई ॥
जबहीं श्याम अधर को परसै । तब अति हर्षि नादरसबरसै ॥
तान तरंग रंग उपजावै । अति आनँद सब जगत जनावै ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई । छूटत मौन रहत मुरझाई ॥
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको । अधरामृत जीवन है जाको ॥
मुरली जो हरि हित तप कीनो । परम चतुर पूरण तप लीनो ॥
तब लगि हरिको नहिं पतियानी । सहे कष्ट बोली नहिं वानी ॥
जब लग जीवन करि नहिं पायो । अधरामृत रस मनको भायो ॥
जबहरि सों वांछित फल पायो । तब सबपर अधिकार जनायो ॥
या सम और चतुर को आली । जिन वश किये श्याम वनमाली ॥
क्यों नहिं त्रिभुवन को मन मोहै । जाके वश पति त्रिभुवन को है ॥

---

१ छिद्र । २ तपस्या ।

दोहा–मुरलीकी सर मत करौ, कह्यो हमारो मान ॥
धनि धनि ताहि बखानिहै, सुनताको यश कान ॥
सो०–अधरामृत करि पान, अमर भई अब मुरलिका ॥
तिहुँ पुर होत बखान, शारदादि यश गावहीं ॥
हमहूंसबमिलके तप कीनो । ताको फल हम को हरि दीनो ॥
लीने भूषण वसन चुराई । युवतिन लाज छुड़ाय बुलाई ॥
तब अंम्बर[1] दे धन्य बखानो । हम भोरी इतनोइ सुखमानो ॥
अपनो अपनो भाग्य सखीरी । मुरली सों बिनकाजखिजौरी ॥
अब मुरली सों हेत[2] करौरी । नहिं जीतौगी मताहि लरौरी ॥
मुरली हम ते तप अधिकाई । मुरलीके वश कुँवर कन्हाई ॥
तनक आश दरशन की हैरी । सोऊ पुनि करते जेहैरी ॥
हैं बहुतेरी रवण कन्हाई । यहू मिली इकतिनमें आई ॥
मुरली को जिन डाह करौरी । तुम नहिं अपने प्रेम टरौरी ॥
प्रेमहि ते हरि मानरहैंगे । वेसुजान सबजानिरहैंगे ॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताही । तज्यो जात कैसे अब वाही ॥
मुरली सों का काज हमारो । जीवहु मोहन नन्ददुलारो ॥
दोहा–हम हित कीनों श्यामसों, मेटि लोक कुल कान ॥
ताही सों हित चाहिये, जासों है पहँचान ॥
सो०–हमकोहै वह आश, वैहैं अंतर्यामि हरि ॥
करिहैं नाहिं निराश, उर अंतरकी जानिकै ॥
कहा भयो मुरली हरि राखी । अपने कर सों ताहि सुलाखी ॥
गुणके काज क्षणक दुख पाई । दे अधरामृत तुरत जिवाई ॥
हम ते अधिक कियो उन नाहीं । करि विचार देखहु मनमाहीं ॥
वर्ष पांच सातक के जबते । कियो सनेह श्याम सों तबते ॥
पुनि षट् ऋतु तपसों मन लायो । अबलौं विरहानल[3] तनु तायो ॥
कैसे ये सब फलन फलैंगे । क्यों नहिं हमसों श्याम मिलैंगे ॥

१ वस्त्र । २ प्रीति । ३ विरहकीअग्नि ।

तब यों कह्यो एक ब्रजनारी। मुरली श्याम अधरपर धारी॥
जो अवगुण होतो या माहीं। तो याको हरि छुवते नाहीं॥
सुनो सखी यहहै इहलायक। अतिही भली श्रवण सुखदायक॥
तुमको कहति वृथा जोइ सोई। जैसी यह ऐसी नहिं कोई॥
जो यह भली बुरी गुण केरी। तो याको हरि श्याम मिलेरी॥
काहिन प्रीति करें हरि ऐसी। है यहतिहूं भुवन में जैसी॥

दोहा—एक युवति अरु गुण भरी, बोलति मधुरे बैन॥
श्रवण सुधाप्यावततहूं, क्यों हरि अधर धरैन॥

सो०—हरि बरजो मतिकोय, देहु बजावन बाँसुरी॥
विरह विरससे होय, रसकीने रस होत है॥

आप भले तौ जगत भलोई। नातर सखी भलो नहिं कोई॥
मुरली लगी श्यामके मुखरी। तोहू है हमसों सन्मुखरी॥
सुनहु कान दे कहति कहारी। श्रीराधा श्रीराधा प्यारी॥
तुम जानति हरि हमहिं बिसारी। तुम हरिसों नहिं नेक नियारी॥
जब जब मुरली श्याम बजावैं। तब तब नाम तुम्हारोइ गावैं॥
मुरली भई सौति जो आई। तो हरितेरिहि टहल कराई॥
तू अर्द्धंगिन वह है दासी। मेरे मन यह बात प्रकासी॥
मुरली तुम्हरो नाम बतावें। वाके मुखहरि तुमहिं बुलावें॥
तुम प्यारी हरि हरि तुम प्यारे। मुरली यह यश कहत पुकारे॥
हर्षी सकल सुनत यह वानी। हम मुरली ऐसी नहिं जानी॥
वृथा वैर यासों हम मान्यो। याको शील अबै हम जान्यो॥
मुरलीसों ऐसे सुखपाई। करति सकल ब्रज नारि बड़ाई॥

दोहा—धनि धनि वंशी बांसकी, धनियाके मृदुबोल[2]॥
धनिल्याये गुणयाँचिकै[3], वनते श्याम अमोल[4]॥

सो०—धनि धनियाको वंश, धनि मुरली हरि मुखलगी॥
सखिन सहित परशंस, श्रीमुख श्रीराधा कह्यो॥

१ योग्य। २ मधुरवचन। ३ परख। ४ जिसकी कीमत नहीं।

मुरली श्री मुरलीधर केरी। महिमा कापै जात निवेरी ॥
जाको यश गुण गँधरव गावैं। वेद भेद जाको नहिं पावैं ॥
सुनत नाद त्रिभुवन मन मोहै। देव दनुज नर खग मृग जोहै ॥
वाणी ललित श्रवण सुखदाई। बाजति हरि मुख लाग सुहाई ॥
ब्रह्मादिक मनमोह करावै। शिव सनकादि समाधि भुलावै॥
माया योग कृष्णकी जोई। शोभित अधर मुरलिका सोई ॥
हरिकी श्वास जासुकी बानी। ताके गुण कोसकै बखानी ॥
जब मुरली नँदनंद बजावैं। ब्रज ललना सुनिकै सुखपावैं ॥
चकित होत तनु दशा भुलावैं। प्रेम विवस सुधि बुधि बिसरावैं
जकी थकी जहँ तहँ रह जाहीं। मानहुँ लिखी चित्रकी आहीं ॥
कबहूं दुख कबहूं सुख मानैं। कबहुँ निंदहिं कबहुँ बखानैं ॥
ऐसी दशा होत घट घट की। बाजति मुरली जब नटवरकी ॥

छं०-जबहिं मुरली श्यामकरगहि, अधरराखिबजावहीं ॥
तरलतानत रंग अगणित, गति अमित उपजावहीं ॥
रहत सुनि [1]ध्वनि मगन जल थल, जीवजहँसोंतहँसहीं॥
कहत ब्रह्मानंद जासों, पाय संग पूजत नहीं ॥
सब सयान समान ज्ञान, गुमानतबहींलै अहैं ॥
लोक वेद म्रयाद पतिव्रत, चार फल जबलौं चहैं ॥
तबहिं लौं मन चपल बुधिबल, सकल रुचि धन धर्मकी
सुनी स्वप्नेहु नाहिं जबलौं श्रवण मुरली श्यामकी ॥

दोहा-धनि धनिते नरनारि जग, धनि धनि तिनकेभाग॥
ब्रजवासी प्रभु बांसुरी, जिनके मनमें लाग ॥

सो०-राखत हैं यह आश, जन ब्रजवासी दासहूं ॥
करहु हिये मम वास, मुरलीधर मुरली धरे ॥

१ शब्द। २ मुर्ली। ३ अपार।

अथ रासलीला।

वंदौं युगल[1] चरण सुखदायक। श्रीरस रास नायका नायक[2]॥
नन्द नँदन वृषभानु नन्दनी। सुर नर मुनि ब्रह्मादि वन्दनी॥
रास रसिक रस रास बिलासी। नित्य धाम वृन्दावन बासी॥
रूपराशि आनन्द निधाना। मंगलप्रद सुन्दर भगवाना॥
बहुरि रासपति पद शिरनाऊं। रास चरित मंगल अब गाऊं॥
वेदव्यास जो रास बखानो। सो गन्धर्व व्याह विधि जानो॥
ब्रज गोपिन हरि हित तप कीनों। श्याम होंय पति यह व्रतलीनों॥
नन्दनँदन तिनको वर दीनो। चीरहरण लीला तब कीनो॥
करिहैं तुम्हरे मनकी भाई। शरदरैनि शुभ लग्न धराई॥
सो जब शरद सुखद ऋतु आई। राका[3] रजनी परम सुहाई॥
भक्त मनोरथ पूरण कारी। गावति विरद विदित श्रुतिचारी॥
गये श्याम वृन्दावन माहीं। जहँ बसंतऋतु रहत सदाहीं॥

दोहा–श्री वृन्दावन धामकी, शोभा परम[4] पुनीत॥
वर्ण सकै कवि कौन विधि, मन बुधि वचन अतीत॥

सो०–सब चैतन्य स्वरूप, भूमिलता द्रुम गुल्म तृण॥
धारि रह्यो जड रूप, सुन्दर श्याम विहार हित॥

जाकी महिमा शिव मुनि गावैं। ब्रह्मादिकरज छुवन न पावैं॥
जाकी महिमा श्रीमुखवानी। संकर्षण[5] प्रति श्याम बखानी॥
चिंतामणिमय भूमि सुहाई। कोमल विमल रम्य सुखदाई॥
सकल सुमंगलकी जननीसी। कृष्ण चरण पंकज रमणीसी॥
फिरत श्याम जहँ नांगे पायन। चरण चिह्न अंकित सब ठायन॥
पावनहूकी पावन कारी। ब्रजवासी प्रभुकी अति प्यारी॥
वर्ण वर्ण वर विटप[6] सुहाये। परम अनूपम जाहि बनाये॥
सदा सुमन[7] फल संयुत सोहैं। अमित सुगंध स्वाद मन मोहैं॥
नवपल्लव[8] दल परम सुहाये। जगमगात नग जोतिलजाये॥

१ दोनोंचरण। २ श्रीकृष्ण-राधिका। ३ निर्मलरात्रि। ४ अत्यंत-पवित्र। ५ बलदेवजी। ६ वृक्ष। ७ पुष्प। ८ नवीनपात-डार।

विपुल कांति शोभित बहु रंगा। अति विचित्र छबि उठति तरंगा॥
परमप्रकाश दशहु दिशि माहीं। कोटि सूर शशि पटतर नाहीं॥
पत्र पत्र प्रतिबिंब श्यामको। मोहति लखि मन कोटि कामको॥

दोहा–ठौर ठौर शोभित परम, तैसिय लता बितानि॥
वृन्दावन तरु वेलि सब, नख शिख छबिकी खानि॥

सो०–और सकल सुखधाम, वैकुंठादिक श्यामके॥
यह विहार विश्राम, ताते अति सुंदर सुखद॥

विपुल कुंज मंजुल छबि छाई। जिन्हैं सँवारत काम सदाई॥
बहत समीर धीर सुखदाई। शीतल परम सुगंध सुहाई॥
चित्र विचित्र विहंग[२] मृग नाना। बोलत डोलत विविध विधाना॥
गुंजत भृंग[३] लुब्ध मकरंदा[४]। अति छबि पुंज मंजुवन वृंदा॥
तैसिय यमुना परम सुहाई। पुलिनि पुनीत वरणि नहिं जाई॥
देति महाछबि झलकनरेती। मानहुँ परम कांतिकी खेती॥
फूले वनज विपुल बहु रंगा। गुंज करत मधुमाते भृंगा॥
श्रीवृन्दावन छबि समुदाई[५]। सम्यक वरणि कौन पै जाई॥
जाकी पटतरको नहिं आना[६]। वन अनूप अद्वैत बखाना॥
ऐसी कछु परत है हेरी। है अस्थूलवपु[७] प्रभुकेरी॥
गोपीजन इन्द्रियगण तामें। है चैतन्य आप हरि जामें॥
नित्य धाम ताही ते गायो। यह पटतर मेरे मन भायो॥

दोहा–सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि, वृन्दाविपिन उदार॥
शारद नारद शेष शिव, वर्णत विधि श्रुति चार॥

सो०–सुखद नकोऊ आन, वृन्दावन सम दूसरो॥
सकल विश्व सुखदान, सुख पावत मोहन जहां॥

तहँ वितस्तिइक शंख सुहायो। मणिमय शुभग श्रुतिनमें गायो॥
तापर अद्भुत[८] कमल विराजै। षोडश पत्र चक्र सम राजै॥

१ समान। २ पक्षी। ३ भौंरा। ४ पुष्परस। ५ सम्पूर्ण। ६ दूसरा। ७ देही। ८ अलौकिक।

योजन पंच तासु परमाना। रास स्थान सुवेद बखाना ॥
मध्य करणिका अति रमणीया। बैठे तहां कान्ह कमनीया ॥
शोभा अमित नेति श्रुति बानी। ताते गिरा कहति सकुचानी ॥
कोमल श्यामळ अंग सुहाये। निरखि कोटि शत कामलजाये ॥
नटवर वेष साज सब साजे। अंग अंग भूषण छबि छाजे ॥
सखीशिखंड मनोहर माथे। बीच बीच मुक्तामणि गाथे ॥
जलजमाल वनमाल सुहाई। कुंडल अलक झलक छबि छाई ॥
कटि पट पीत काछिनी काछे। ललित शृंगार सुभग तनु आछे ॥
मणिन जटित नूपुर पग नीके। चरण कमल भावत जन जीके ॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते। नख उपमा पूजत नहिं तेते ॥

दोहा—अति अद्भुत लावण्य निधि, श्रीवृन्दावन चन्द ॥
निगम नेति किमि वरणिये, रसिक नवल नँदनन्द ॥
सो०—जेहि गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूर्णानन्द हरि ॥
सो पूरण अवतार, वृन्दावन रस रास पति ॥

देखि श्याम बन धाम कन्हाई। तैसिय शरदरैनि छबिछाई ॥
प्रफुलित कुमुदिनि बन चहुँपासा। ललित मालती करत सुवासा ॥
जैसोइ यमुना पुलिनि सुहायो। तैसोइ पूरण शशि[1] छबि छायो ॥
तैसिय जग मग ज्योतिद्रुमनकी[2]। तैसिय ललित सुगंध सुमनकी[3] ॥
लखि बन सुख समुदाय कन्हाई। हर्षि रास रुचि मन उपजाई ॥
तब कर लई सकल गुण मुरली। ललित योग मायासी मुरली ॥
नाद ब्रह्मकी उत्पति जासों। निगम अगम उपजै पुनि तासों ॥
विश्वविमोहन मंत्र कलासी। हरि मुख कमल लसति कमलासी ॥
राग रंग रस रास विलासी। सकल गुणनिमें आनँद रासी ॥
श्याम अधर धर ताहि बजाई। त्रिभुवन मन मोहन ध्वनि छाई ॥
धरणि पताल जीव सब मोहे। नभ सुरगण सुर सुनतविमोहे ॥
चकित चंद मृग मारग भूले। वर्षत अमृत कलक अनुकूले ॥

१ चंद्र। २ वृक्ष। ३ पुष्प।

दोहा–शिव विरंचि सनकादि मुनि, तजि तजि ब्रह्मसमाधि ॥
भये नाद मुरली मगन, चकित श्रवण रहे साधि ॥
सो०–रहे सबै मन भूल, सिध चारण गंधर्व सुर ॥
तनु सुधि रही न मूल, सुनि मुरली नँदनन्दकी ॥
थकित पवन गति गवन[1] भुलानी। रह्यो प्रवाह नदिन थकि पानी ॥
झरना झरहिं पषाणे[2] कठोरा। नाचि उठे चहुँदिशि वन मोरा ॥
थकितविलोकत[3] मृग[4] सब ठाढे। खग[5] रहे मौन मनहुँ लिखि काढे॥
रही धेनु तृण गहि मुख माहीं। थकित वत्स पय[6] पीवत नाहीं ॥
सरकि सकत नहिं अहि ध्वनि मोहै। उकठे विपट रहत सब सोहै॥
तरु[7] बेली सब चंचल पाता। नव अंकुर दल प्रफुलितगाता ॥
सुनि ध्वनि शेषनाग अकुलाने। नाग सकल सोवतते जाने ॥
जड चेतन[8] गति भइ विपरीता। हरि मुख मुरली सुनत पुनीता ॥
जो नर नारि तिहूं पुर माहीं। भये नाद वश तनु सुधि नाहीं ॥
सुनि ध्वनि चकित भई अति भारी। जे ब्रज सुन्दरि गोपकुमारी ॥
यदपि मुरलि ध्वनि त्रिभुवन परशी। तदपि यथा विधि तिनहीं दरशी ॥
यारसकी तेई अधिकारी। नंदनँदन प्रियकी अति प्यारी ॥
दोहा–सुनतहि बौरीसी भई, विसरी सबी सयान ॥
लगी ठगौरीसी मनहुँ, मुरलीकी ध्वनि कान ॥
सो[9]०–रह्यो न उरमें धीर, बाजी बाजी कहि उठीं ॥
आकुल विकल शरीर, सुनि मुरली ब्रजकी तरुणि॥
षट्दश सहस गोपिका गोरी। मुरली सुनत भई सब भोरी ॥
कोउ धरणी कोउ गगन[10] निहारैं। कोउ मनहीं मन बुद्धि विचारैं ॥
घर घर तरुणि सबै बितताती। आरज पँथ गृहकाज भुलानी ॥
लै लै तिनके नाम बजावैं। मुरलीमें हरि सबन बुलावैं ॥
रहि न सकीं ध्वनि सुनि अकुलाई। जो जैसे तैसेइ उठि धाई ॥

१ चलना। २ पत्थर। ३ देखत। ४ हरिण। ५ पक्षी। ६ दूध। ७ वृक्षबेल। ८ निर्जीवसजीव। ९ सोरह। १० आकाश।

लोक लाज गुरु जन डर डारयो। चलीं सकल गृह काज बिसारयो
काहू दूध उफनते छाँडे। काहू दधिहि जमावत भांडे ॥
काहू करति रसोंई त्यागी। कोऊ पतिहि जिमावत भागी ॥
बालक गोद सँभारन लीनो। दूध पियावतही तजि दीनो ॥
कोउ शृंगार करति उठि धाई। उलटे भूषण[1] वसन बनाई ॥
बाजूबंद पगनसों बांधे। लै मंजीर उरनमें सांधे ॥
किंकिणि डारि लई गरमाहीं। हार लपेटत करसों जाहीं ॥

दोहा–शीशफूल कर्णनधरे, कर्ण फूल धरे भाल ॥
चलीं सकल मुरली सुनत, भ्रमतें ब्रजकी बाल ॥
सो०–अंजन करि दृग एक, एक रह्यो अंजन विना ॥
रह्यो न कछू विवेक[2], भईं विवस मुरली सुनत ॥

मुरलीसों हरि टेर बुलाई। उपजी प्रीति सकल उठि धाई ॥
मुरली ध्वनि मारग[3] गहि लीनो। और कछू डर शोच न कीनो ॥
प्रेम स्वरूप सकल ब्रजनारी। पंच भूत अवगुण ते न्यारी ॥
रोंकि रहे सुत पति पितु माता। तेकिमि रुकहिं अगम यह बाता ॥
चलीं ध्यान धरि हरि उर माहीं। गृह वन कुंज रुकी कहुँ नाहीं ॥
जो प्रारब्ध कर्म वश कोई। राखी रोकि पतिन गृह सोई ॥
भयो विरह दुख तिनको ऐसो। कोटिन जन्म कर्म फल जैसो ॥
पुनि धरिध्यान हरिहि उरलायो। कोटि स्वर्ग फल मानहुँ पायो ॥
यों करि भोग त्याग तनु[4] बाला। दिव्य देह धरि मिलीं गुपाला ॥
इहि विधि बन सब चलीं किशोरी। लोक वेद मर्यादा तोरी ॥
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे। जरत भवन तजियत है जैसे ॥
एक एककी सुधि कछु नाहीं। झुंडन[5] चलीं श्याम पहँ जाहीं ॥
दोहा–गृह गुरु जन तजि लाज तजि, ब्रजसुन्दरी निकाय ॥
मुरली ध्वनि रस रँगरलीं, मिलीं श्याम बन जाय ॥

१ वस्त्राभूषण। २ ज्ञान। ३ रस्ता। ४ देह। ५ समूह।

सो०–नटवर वपु गोपाल, अधरसधर मुरली धरे ॥
सन्मुख सब व्रज बाल, देखि श्याम आनँदभरी ॥

ब्रज युवतिन लखि मुदित बिहारी। मोर मनहु छवि घटा निहारी॥
कनक वर्ण शशि मुख सब बाला। पहुँची निकट जाय नँदलाला ॥
विपिन सुहावन अति छबि बाढी। भई जाय सन्मुख सब ठाढी ॥
रहे चकित हरि छबि अवलोकी। अटपट तनु शृंगार विलोकी ॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो। मनहीं मन अति हर्ष बढ़ायो ॥
अति आदर करि कुँवर कन्हाई। बोले मंद मधुर मुसिकाई ॥
वाके वचन प्रेमरस साने। प्रेम प्रतीत कसोटी माने ॥
कहो अहो तिय ब्रज कुशलाई। निशि काहे वनको उठि धाई ॥
अर्द्धरात कछु डर नहिं कीनो। ऐसो कहा काज मनदीनो ॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं। निज पति तजि धाई वन माहीं ॥
वेदपंथ निदस्यो तुम भारी। जाहु अजहुँ घर वेगि सवारी ॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं। बहुरो तुमको त्रास दिखैहैं ॥

दोहा–निज पति तजि परपतिभजैं, तियकुलीन नहिं होय॥
मरे नरक जीवत जगत, भलो कहै नहिं कोय ॥

सो०–युवतिनको पतिदेव, कहत वेद हमहूं कहत ॥
करहु तिनहिं की सेव, जो तुम चाहो सुख लहो ॥

और कछू जियमें जिन राखो। करिये वेद वचन जो भाखो ॥
तजिके कपट करहु पति सेवा। तियको पति तजि और न देवा ॥
क्रूर कुपूल भाग बिन रोगी। वृद्ध कुरूप कुबुद्धि वियोगी ॥
ऐसेहु पतिको तिय जो त्यागे। बड़ो दोष ताके शिर लागे ॥
ताते मानहु कही हमारी। जाहु सकल घरको ब्रजनारी ॥
मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं। ऐसे कहि कहि हरि पछिताहीं ॥
कैसे उन तुम आवन दीनी। कैसीधौं यह विधि तुम कीनी ॥
कैधौं कहि आई उन पाहीं। कै धौं वे जानत हैं नाहीं ॥
नव यौवन तुम सब सुकुमारी। निशि बसबो वन अनुचित भारी॥

जो यह बात सुने ब्रज कोऊ। हमैं तुम्हैं दूषण दिशि दोऊ॥
अब ऐसी कीजौ मति कबहूं। करि विचार देखौ मन तुमहूं॥
बार बार युवतिन भरमाई। ऐसे सबसों कहत कन्हाई॥
दोहा–निठुर वचन सुनि श्यामके, युवति उठीं अकुलाय॥
चकित भई मन गुनरहीं, मुख कछु वचन न आय॥
सो०–वदन गयो मुरझाय, जनु तुषार कमलनपरो॥
शोच रहीं शिरनाय, खोई निधि जनु पाइके॥
विरह विकल चिंता अति बाढी। रहीं चित्र पुतरीसी ठाढी॥
कपट खेल यह गिरिधर ठान्यो। प्रेम विवस युवतिन नहिं जान्यो॥
मनहीं मन विहँसत नँदलाला। भई विरह व्याकुल ब्रजबाला॥
सहि नहिं सकीं दुसह यह पीरा। बोलीं गद्गद गिरा अधीरा॥
सुनहु श्याम सुंदर वर नायक। यह जिन कहो नाहिं तुम लायक॥
कोमल सुभग कमल मुख ताते। कैसे कहत कटुक यह बाते॥
लैलै नाम बुलायो सबको। धर्म सिखावतहौ अब हमको॥
छाँड़ि देहु पिय यह चतुराई। करहु हेत जेहि भांति बुलाई॥
कर्म धर्म श्रुति नाहिं बखाने। जो कोउ कर्म धर्म विधिजाने॥
हम तो लोक वेद विधि त्यागी। चरणकमल तुम्हरे अनुरागी॥
सकल धर्म मय चरण तिहारे। वसत सदा सो हृदय हमारे॥
कहवावतहो अन्तर्यामी। काहे यह समझत नहिं स्वामी॥
दोहा–अब यह तुमको उचित नहिं, सुनहु श्याम सुखरास॥
मन हमरो अपनाइके, हमको करत निरास॥
सो०–पाप पुण्य कहनाथ, यह तो हम जाने नहीं॥
बिकी तुम्हारे हाथ, अधरामृतके लोभलगि॥
अरु यह मृदु मुसकान तुम्हारी। सकल धर्मकी मोहनहारी॥
ऐसीको तिय ब्रजके माहीं। जाको मन इन मोह्यो नाहीं॥
जैसिय मुरली मिली सहाई। जिनि विधिकी मर्याद मिटाई॥

१ पाला। २ अधीरवाणी।

अब तो मृदु मुसकन मन मोहै। पाप पुण्य जानति नहिं कोहै॥
हमतो पति इक तुमको जानैं। धृक जो और दूसरो मानैं॥
कोटि करो अब भवन[1] न जाहीं।तुम तजि हमहिं और प्रिय नाहीं॥
जानतहो सब अन्तर्यामी। काहे यह समुझत नहिं स्वामी॥
मन वच कर्म तुम्हारी दासी। मृदु मुसकान तुम्हारी प्यासी॥
जरत सकल विरहानल ज्वाला। सींचहु अधरामृत नँदलाला॥
दीन कृपानिधि नाम तुम्हारो। हमते दीन न और विचारो॥
मृदु मुसकान दान अब दीजै। दारुण विरह दूर पिय कीजै॥
जो नहिं मानत विनय हमारी। तो यह तनु करिहैं बलिहारी॥

दोहा–विरह विकल लखि गोपिकन,कृपासिंधु भगवान॥
उमँगि उठे दृग भरि लिये, दीनवचन सुनि कान॥
सो०–धनि धनि धनि व्रज बाल,कहत मनहिंमन हर्षहरि॥
सदय हृदय गोपाल, बोले दुहुँ कर जोरि तब॥

बोले प्रभुता डारि गोपाला। धन्य धन्य तुम व्रजकी बाला॥
तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारे। दूर करो यह दोष हमारे॥
मैं निर्दय बहु वचन बखाने। तुम अपने जिय एक न आने॥
मो कारण गृह कुटुँब बिसारो।धनि धनि धनि यह नेम तुम्हारो॥
लोकलाज शंका सब त्यागी। मनवचक्रम मोसों अनुरागी॥
यों कहि विहँसि मिले नँदलाला। अंकम भरि लीनी सब बाला॥
यदपि अकाम सदा सुखरासी। तदपि भये रस प्रेम विलासी॥
एकहि बार युवति सब भेटी। दुसह ताप विरहानल[2] मेटी॥
कह्यो विहँसि सबसों गिरिधारी।करहु रासरस मिलि सुखकारी॥
कृपादृष्टि अवलोकत नयनन। हँसिहँसि सींचत अमृत वयनन॥
चहुंदिशि हर्ष भरीं सब ग्वारी। मध्य श्याम सुन्दर बनवारी॥
विहरत बन विहार सुखदाई। नवल गोपिका नवल कन्हाई॥
दोहा–हँसत करत बहुरस चरित,युवतिवृन्द[3] लिये संग॥

१ घर। २ विरहाग्नि। ३ गोपियोंके झुंड।

गये यमुन तट श्याम तब, क्रीडत कोटि अनंग ॥
सो०--सोहति अतिकमनीय, कोमल उज्ज्वल रेत तहँ ॥
करी परम रमणीय, यमुनाजी निज पाणि रचि ॥
बहत समीर त्रिविध सुखदाई। कुसुम धूरि धुंधरि छबि छाई ॥
उड़त सुगंध लपटचहुँओरा। गुंजत भँवर चारुचित चोरा ॥
बैठे तहां श्याम सुखसागर। कोटि काम मन मथन उजागर ॥
करत बिलास हास रसलीला। कोटि अनंग रंग सुखशीला ॥
परिरंभन चुंबन कुच परसत। हिय हुलास आनँदरस बरसत ॥
काम भाव गोपिन हरिधायो। कियो सबनके मनको भायो ॥
अस अद्भुत रस प्रेम बढ़ायो। बहुरि रासरस रँग उपजायो ॥
सुनिप्रिय वचन सकल अनुरागी। भूषण वसन सँवारन लागी ॥
लखि उलटे भूषण सकुचानी। निरखि परस्पर तिय मुसकानी ॥
नवसत साज भई सब ठाढी। परम प्रेम आनँद रस बाढी ॥
वंशीवट छबि धाम अनूपा। कोटि कलपतरु सम सुखरूपा ॥
तहां रच्यो रस रास कन्हाई। भइ कपूरमय भूमि सुहाई ॥
छंद--भई भूमि कपूरमय रज, बरषि जल कुमकुमसिंची ॥
परम कोमल शुभग शीतल, ज्योति मणि कंचन खिची ॥
हर्षि तहँ घनश्याम सुंदर, रासमंडल विधि रची ॥
वर्णिकापैजाय सो छबि, निरखि शारदगतिलची ॥
एक एकहि युवतिके बिच, मधुर मूरति श्यामकी ॥
तिन मध्य जोरी रासनायक, राधिकाघनश्यामकी ॥
एक रूप अनेक वपुधारि, सबनिके बिच राजहीं ॥
करी यह लीला प्रगट प्रभु, मरम कोउ न जानहीं ॥
भईं मंडल जोरि ठाढ़ी, गात नहिं मुख छबि भनी ॥

१ कामदेव। २ ठंढी, मंद, सुगंध, वायु। ३ सरस्वती। ४ भेद।

सहस बत्तिस उदित मानौ, मध्य घनदामिनिबनी ॥
दोहा–तेहि अवसर ललना सहित, आये सुर मुनि सर्व ॥
देव नटी किन्नर वधू, तुंबरादि गंधर्व ॥
देखत चढ़े बिमान, हर्षि हर्षि बर्षत सुमन ॥
करत मुदित मनगान, धन्य धन्य ब्रजयुवतिकहं ॥
सुरगण सब बाजंत्र बजावैं । निरखत ब्रज सुंदरि छबिपावैं ॥
नूपुर कंकण किंकिणि बाजैं । मन्दमधुर मुरली सुरगाजैं ॥
ताल मृदंग वीन मुँहचंगा । सुर मंडल सारंग उपंगा ॥
तंत्र अनेक विविध गति साजैं । मिले एक सुरसों सब बाजैं ॥
निर्तत पियसँग चंचल बाला । जनु क्रीडत घन दामिन जाला ॥
बिच बिच श्याम बीच ब्रजगोरी । मर्कत मणि कंचनकी जोरी ॥
शुभग तमाल तरुण नँदलाला । कनकलता सम सब ब्रजबाला ॥
करसों कर जोरें छबि छाजें । कोटि काम छबि निरखत लाजें ॥
वृन्दावन उर मनहुँ बिशाला । लसत रास मंडलकी माला ॥
हरि ब्रज नारि परस्पर सोहैं । कोटि काम रतिको मनमोहैं ॥
मटक चलत गति नागर नटकी । लटकन मुकुट लटक घूंघटकी ॥
जनु वन घन दामिनी वरूथा । निरख नचत मोरनके यूथा ॥
छं०–नचत मानौ मोरयूथन[२], मुकुट लटकन यों फबै ॥
चलत गतिलै नागरिन[३] सँग, श्याम नट नागर जबै ॥
धरणि[४]पगपटकनि झटकिकर, भौंहमटकनिकहिपरै ॥
ग्रीव चालन हलन कुंडल, कर जुफेरन मनहरै ॥
मणि कंठ मुक्तामाल उर, बनमाल चरणनलौंबनी ॥
वदनपंकज अलक श्रमकण[५],झलकछबिसकैको भनी ॥
पटपीत फरकन काछनी,कटि[६]लालकिंकणिसोहई ॥

१ नाचत । २ झुंड । ३ गोपिकाओंको । ४ पृथ्वी । ५ प्रस्वेदबिन्दु ।
६ करिहांव ।

मलय चित्रित बाहु भूषण, श्याम तन मन मोहई ॥
लखि रहतनँदलाल तियछबि, विविधविधबेणीगुही ॥
शुभग पाटी मांग मुक्ता, शीश फूलनि छबिरही ॥
जटित माल जरावबेंदी, उदित द्युति भ्रुवबंककी ॥
ललित बेसरिनाक अंजन, नैन श्रुतिताटंककी ॥
अधर दशन कपोल चिबुकन, कंठ भूषण अतिबने ॥
करत रास विलास अद्भुत, हरत मन मोहन मने ॥
दोहा–कबहुँललितगति लै चलत, नवल सुघर नँदनन्द ॥
निरख हर्ष तैसेइ चलत, नवल नागरी वृन्द ॥
सो०–कबहुँ विचक्षण वाम, लटकिलेतिनूतन[2] गतिहिं ॥
रीझरसिक घनश्याम, तापर तन मन वारहीं ॥
निरतत अरस परस पियप्यारी। बोलत बलिहारी बलिहारी ॥
कोउ कलध्वनि[3]पियके गुणगावै। कोउ अभिनय करि भाव बतावै ॥
कोउ संगीत कला गुण धारी। कोउ उघटत चटकत कर तारी ॥
निर्तत ताल भेद गति लीना। सुघर एकते एक प्रवीना ॥
जात रसिकपिय विक विन मोलैं। जब थेइ ताथेइ ताथेइ बोलैं ॥
तान तरंग रंग उपजावैं। लेत उपज अति रस वर्षावैं ॥
कबहुँक उघटत छैल कन्हाई। फिरत लुब्ध जिमि बाल सुहाई ॥
गिरत मणिनके भूषण तनते। झरत फूल जनु रूप लतनते ॥
लटकि २ निर्तत अलबेली। ग्रीव ग्रीव मंजुल भुजमेली ॥
कोउ पियके सँग मिल करिगावै। कोउ मुरलीको छीन बजावै ॥
काहू श्यामलेत भुज भरिकै। तजैं कमलमुख चुंबनकरिकै ॥
रमत रास पिय संग छबीली। परम प्रेम रसरंग रँगीली ॥
छंद–रस रँगरँगीली प्रेमके वश, रास रस पिय सँगकरैं ॥

---

१ चंदन। २ नवीन। ३ मनोहरवाणी।

निरखि देव प्रसून वर्षहिं, हर्षि उर आनँद भरैं ॥
धन्य ब्रज धनि बाल ब्रजकी, धन्य वन पुनि २ कहैं ॥
करत रास विलास पूरण, ब्रह्म जहँ परगट अहैं ॥
शंभु अज सनकादि नारद, मुदित गुण गण गावहीं ॥
निरखि छबि निधि श्याम श्यामा, ब्रह्म सुख बिसरावहीं
देवनारि बिसारि पति गति, परस्पर कह शोचहीं ॥
ब्रजवधू विधि हमनकीनी, निरखि सुख मन लोभहीं॥
कह भयो जो ऊरधबसी, अरु अमरपदभी जो लहो ॥
करत सुख जो श्याम सँग, ब्रजनारि सो त्रिभुवन नहीं ॥
बार बार मनाय विधना, कहति यह बर दीजिये ॥
होय दासी ब्रज वधुनकी, कृष्ण पदरति कीजिये ॥
दोहा—धनि २ कहि वर्षहिं सुमन, मुदित[2] सकल सुरनारि॥
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रजगोपकुमारि ॥
सो०—धनि धनि रास विलास, धनि सुंदरता धन्य सुख॥
धनि वृन्दावन वास, सुर ललना विथकी कहत ॥
रमत रासरस गोपकुमारी। नन्दनँदन पियकी सब प्यारी ॥
करति गान कोकिला लजावैं। हावभावकरि पियहि रिझावैं ॥
राग रागिनी समय सुहाये। सहज वचन जिनके मनभाये ॥
गति सुगंध निर्तत सब गोरी। सहज रूपनिधि नवल किशोरी ॥
पगियह पटकि भुजन लटकावें। फंदा करन अनूप बनावें ॥
निरखिलेत उपजत छबिभारी।रीझरहत लखि छबि गिरिधारी ॥
वेनी छुटी लटें वगराँहीं। अलकें वेसरसों उरझाहीं ॥
श्रम जलबिंदु वदन द्युतिकारी। मनहुं सुधाकण चंदमक्षारी ॥
अति वशहोत निरखि मनमोहन। फिरत सबनके गोहनेगोहन ॥

१ ब्रह्मा। २ प्रसन्न। ३ बिथुरी। ४ अमृतविन्दु। ५ साथ साथ।

नारि नारि प्रति रूप प्रकासे । एकहि रूप सबनको भासे ॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो । कियो सबनके मनको भायो ॥
निर्तत अंग थकित भई नागरि । रूप प्रेमगुण परम उजागरि ॥

छंद–भई निर्तत थकित तरुणी, रूप गुणन उजागरी ॥
उमगि तब उर लाय लीनी, श्याम लखि नव नागरी ॥
गिरत उरते हार टूटे, निरखि प्रभुहि जनावहीं ॥
लेलि बीचहि गहि तिन्हें, मोहिमांझ परन न पावहीं ॥
अति प्रीति श्रम जल पति पटसों, पोंछि पवन डुलावहीं
उरझि बेसरिसों रही लट, कमल कर सुरझावहीं ॥
देखि विह्वल गात भूषण, शिथिल अंग सँवारहीं ॥
कहि२ वचन मृदु परस्पर, निज पाणि श्रमहि निवारहीं ॥

दोहा–ऐसी विधि ब्रज सुंदरिन, देत परमसुख श्याम ॥
लखि पति गति स्वाधीन अति, भई गर्विता वाम ॥

सो०–परमप्रेमकी खान, रूपशील गुण आगरी ॥
क्यों न करें अभिमान, जिनके वश त्रिभुवन धनी ॥

कहति भई निज निज मन माहीं। हमसम अरु न युवति जग माहीं ॥
अब गिरिधर हम वश करिपाये। करत हमारे मनके भाये ॥
अब हमते नाहिं ह्वै हैं न्यारे । रहिहैं सदा समीप हमारे ॥
जोइ जोइ हम कहिहैं सोइ करिहैं । सदा हमारे संग बिचरिहैं ॥
कोउ पिय अंश भुजनको दीनो । कहति वचन यों गर्वहि लीनों ॥
सुनो श्याम मैं अति श्रमपायो । अब तो मोपै जात न गायो ॥
एक कहति मम पाँय पिराहीं । मोपै नृत्य होत अब नाहीं ॥
एक कंठ भुजमेलि सयानी । रही लटक बोलत नहिंवानी ॥
ऐसे भाव गर्वके कीन्हे । अंतर्यामी हरि सब चीन्हें ॥

१ धरती । २ हस्त ।

गर्व देखि मोहन मुसकाने। मैं अवगति मोको नहिं जाने॥
करत सदा भक्तनमन माहीं। एक गर्व श्यामहिं न सुहाई॥
सो युवतिनके मनमें जानी। दूरि करन हित यह जिय आनी॥
दोहा-प्रेम अभूषण कनकसम, मलिन गर्व ते होय॥
विरह अग्नि ताये विना, निर्मल होय न सोय॥
सो०-यह विचार जिय आन, लेवृषभानुकुमारि सँग॥
ह्वैगये अन्तर्द्धान, ब्रजवासी प्रभु संगते॥

अथ अन्तर्द्धान लीला॥

प्रेम बढावनहित सुखदाई। अन्तर कर बनदुरे कन्हाई॥
गोपिन जब हरि देखे नाहीं। चकित भईं तब सब मन माहीं॥
कहति एक कित कुँवर कन्हाई। उठीं सकल जहँ तहँ अकुलाई॥
भईं विकल कछु मरम न पायो। पाय महाधन मनहुँ गमायो॥
खोजत जहँ तहँ दृष्टि पसारें। अति आतुर चहुँ ओर निहारें॥
तब सबहिनमिलिकै यह जानी। लैगइ हरिको कुँवरिसयानी॥
कछू हर्ष कछुरिस उर धारी। देति भईं हँसि रसकी गारी॥
इन समान कपटी कोउ नाहीं। करत सदा दुविधा हम पाहीं॥
चलहु खोज कुंजनमें लैहैं। जान कहां हमते वन पैहैं॥
ढूंढन चलीं सकल वन माहीं। चरण चिह्न खोजत सब जाहीं॥
देखति जहँ तहँ फिरत अधीरा। कोउ वन घन कोउ यमुनातीरा॥
कोउ कुंजन कोउ पुंजन हेरें। श्याम श्याम करि कोऊ टेरें[४]॥
दोहा-इहि विधि सब खोजत फिरें, विरहातुर ब्रजबाल॥
भईं विकल पावत नहीं, कहु खोजत नँदलाल॥
सो०-यदपिकियो हरि ख्याल, नेक दुरे वन कुंजमें॥
तदपि भईं बेहाल, युवति श्याम देखे विना॥
पलकांतर विधिको दिन जिनको। वन अंतर अतिबड दुख तिनको

१सोना। २चौकन्ना। ३राधिका। ४पुकारें। ५बेचैन। ६पलकमात्रब्रह्माकादिनसा।

भई विरह व्याकुल चितजवहीं । हरिपद चिह्न लखति भई तबहीं ॥
कुलिश¹ कमल ध्वज अंकुश जामें । जगमगात बन धन महि तामें ॥
निकट चिह्न प्यारी चरणनके । अरुण कमल दल सुभग वरणके ॥
वन्दन करन लगीं रज जोई । शिव विरंचि याचतहैं सोई ॥
कछु यक धीर धरयो मन माहीं । खोजलेति ताही मग जाहीं ॥
कुँवर कान्ह प्यारी सँगलीन्हे । फिरत सकल कुंजन रसभीने ॥
कबहुँ कुसुम वनमाल बनावैं । निरखि हर्षि प्यारिहि पहिरावैं ॥
कबहूं सुमन सवाँरत वेणी । परम शुभग शोभाकी श्रेणी ॥
कबहुँ सरोज सुगंध सुँघावैं । नागरिमन अभिलाष बढावैं ॥
कंठ कंठ भुज दोऊ जोरैं । घनदामिनि छूटति नहिं छोरैं ॥
अति प्यारीके रसवश मोहन । भौंह निहारत डोलत गोहन ॥

दोहा—पतिहित लखि अनुकूल अलि, हरषि लाडलीहीय² ॥
ताते उपज्यो गर्वजिय, मैं अति प्यारी पीय ॥
सो०—एक प्राण द्वैदेह, तहाँ गर्व कहँ पाइये ॥
यामें नहिं संदेह, देह धरेको भाव यह ॥

तब प्यारीके मन यह आई । मेरेही वश कुँवर कन्हाई ॥
मेरे हित बांसुरी बजाई । मेरे हित सब तियन बुलाई ॥
मेरे हित रस रास उपायो । सबहिन तजि मोसों मन लायो ॥
मो सम सुन्दर चतुर उजागरि । और नहीं युवती कोउ नागरि ॥
ऐसे गुणति मनहिं मन माहीं । ठठकि रहति गहि पिय की बांही ॥
बैठि जात कबहूं मग माहीं । कहति कि मेरे पांय पिराहीं ॥
चलन कहत तुम जहां कन्हाई । मोपै पगन चल्यो नहिं जाई ॥
नृत्य करत मैं अति श्रम पायो । ताते पग नहिं जात उठायो ॥
सुनहु मित्र मोहन सुखदाई । कंध लेहु पिय मोहिं चढ़ाई ॥
ऐसे तिय जब वचन बखाने । गर्व जानि गिरिधर मुसकाने ॥
जहां गर्व तहँ रहत न कबहीं । अंतर्द्धान भये हरि तबहीं ॥

१ वज्र । २ हृदय ।

तुरतहि विकल भई अति प्यारी। देखत दुरे चरित गिरिधारी ॥
दोहा—चकित भई तब नागरी, गये किते भजि श्याम ॥
मनहीं मन पछितात अति, भूली तन सुधि वाम ॥
सो०—मैं कीनों अभिमान, नारि बुद्धि ओछी सदा ॥
वे पिय परमसुजान, जान लई मो जीवकी ॥
भई विकल समुझत निज करनी। सो वह दशा जाय नहिं वरनी ॥
बिरह बिथा बाढी अति तनमें। परम अकेली रोवति वनमें ॥
नैन सलिल भीजत तनु सारी। कासि कासि पिय कहति पुकारी॥
हाहा नाथ अनाथ न कीजै। वेगि श्याम मोहिं दरशन दीजै ॥
मैं तुम कृपा पाय गरबानी। ताते सकी सँभार न बानी ॥
सो अपराध क्षमा प्रभु कीजै। यह दूषण मन माहिं न लीजै ॥
वेगि कृपा करि मिलहु दयाला। अहो कमल दल नयन रसाला ॥
विरह बिकल यों वदत अकेली। रोवत सुन खग मृग द्रुम बेली ॥
तहँ खोजति आईं सब नारी। दूरिहि ते देखी तिन प्यारी ॥
मुख शशि ज्योति रूपकी राशी। जनु घन ते बिजुली चपलासी॥
द्रुम शाखा अविलंबिन ठाढी। रुदन करति विरहा दुख बाढी॥
व्याकुल चकित चहूं दिशि जोवैं। कमल चरण नख भूमि करोवैं॥
दोहा—जिततितते धाईं सबै, ब्रजसुंदरि अकुलाय ॥
व्याकुल अति लखिलाड़िली, लीनी कंठलगाय ॥
सो०—कहां गये गोपाल, बार बार बूझति सबै ॥
मुरछि परी तब बाल, मुखते वचन न आवई ॥
देखि दशा सब तिय अकुलानी। बैठारी अंकम गहि पानी ॥
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं। काहे मुरछि परी महिमाहीं ॥
या वनमें कैसे तू आई। कहां गये तजि तोहिं कन्हाई ॥
निरखि वदन सबहिन दुखकीनों। मनहु अमी निधि अमृत दीनों॥
कोऊ लगीं सँवारन अलकैं। कोउ अंचरते पोंछति पलकैं ॥

१ छिपे। २ अपनी। ३ आंशु। ४ शीघ्र। ५ हेरें। ६ गोद

नयन नीर कछु सुधि नहिं देही। अतिव्याकुल बिन श्याम सनेही ॥
बूझति युवति कहां बनवारी। चलिहैं तहां तोहिं लै प्यारी ॥
सुनत नाम पियको अनुरागी। विरह मोह निद्राते जागी ॥
जान्यो आये कुँवर कन्हाई। नयन उघारि मिलनको धाई ॥
जो देखै तौ सब ब्रजवामा। अतिही बिलखि उठी तब श्यामा॥
कहत मोहिं त्यागी नँदनन्दन। तुमहूं नहीं मिले जगवन्दन ॥
मैं अपने जिय गर्व भुलानी। नहिं उनकी महिमा कछुजानी ॥
दोहा—बोली पिय सों मन्दमति, मैं अभिमान बढ़ाय ॥
लीजै कंध चढ़ाय मुहिं, मोपै चल्यो नजाय ॥
सो०—वे प्रभु परमसुजान, बिहँसि कह्यो मोहिं चढनको ॥
ह्वैगये अन्तर्द्धान, अपनी चूक कहा कहैं ॥
गये श्याम धौं कितबनमाहीं। मेरी दृष्टिपरे कहुँनाहीं ॥
कहति बिकल नयननजलढारी। मोको त्यागगये गिरिधारी ॥
मुरछि परी धरणी अकुलाई। श्याम विरह दुख सह्यो नजाई ॥
देखि दशा व्याकुल सबनारी। कहति निठुरपी अति बनवारी॥
त्रिया पुरुषसों मान जुकरहीं। पुरुष नहीं ऐसी उरधरहीं ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे। नाहिं बूझिये उनको ऐसे ॥
कहति राधिकासों ब्रजनारी। मिलिहैं श्याम धीर धरु प्यारी ॥
चली आप खोजन सब बनमें। विरह विकल कछु सुधिनहिंतनमें॥
टेरत जहँ तहँ घोषकुमारी[2]। अहो रासपति कुंजविहारी ॥
कहां दुरे पिय हमते भजिकै। जात प्राणतुम बिनतनुतजिकै ॥
क्षमाकरौ प्रभु चूक हमारी। मिलहु कृपाकरि वेग मुरारी ॥
तुम बिन हमको सुनहु कन्हाई। क्षण क्षण कलपसमान बिहाई ॥
दोहा—जरत सकल तुम दरश बिन, विरह अग्नितनुवाम ॥
मंद मधुर मुसकानिसुधा, बरषि बझावो[3] श्याम ॥
सो०—सकल विश्व सुखधाम, गावत तुमको जगत सब ॥

१ प्रभाव। २ ग्वालसुतायें। ३ शीततांह।

तिन्हैं होत कत बाम, जो दासी बिन मोलकी ॥

सदा हमारी रक्षा कीनी । गरल अनल जलते रखलीनी ॥
अबकत निठुर होत हो प्यारे । विरह जरावत गात हमारे ॥
कतहि फिरत वन चरण उघारे । गड़िहैं कुश कंटक अनियारे ॥
तुम पद बसत हमारे हियमें । ते कंटक शालतहैं जियमें ॥
अहो नाथ यह कह जिय धारी । सुखदेके दुख देत मुरारी ॥
ऐसे कहति सकल बन डोलैं । अलबल वचन वदनते बोलैं ॥
अति अकुलाय गई मन माहीं । जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं ॥
बूझति वन विटपनसों धाई । तुम कहुँ देखे कुँवर कन्हाई ॥
अहो कदम अहो अंब तमाला । हमहिं बताओ कित नँदलाला ॥
अहो जुही मालती निवारी । लखे कहूं इतजात बिहारी ॥
हे चंपक हे श्रीफल कदली । हे दाड़िम हे जामुनबदली ॥
तुम देखे मनमोहन लाला । श्याम कमलदल नयन विशाला ॥
हे पलाश हम दासि तुम्हारी । कहो कहां सुखरास विहारी ॥

दोहा—हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करो निज नाम ॥
लेत नहीं यशहेपर्नस, क्यों न कहत कित श्याम ॥

सो०—हेमन्दार उदार, हेपीपर हर पीर मम ॥
कह कित नन्दकुमार, सुन्दर घन तन साँवरो ॥

हे चन्दन तनु जरत जुड़ावो । नन्दनँदन पिय हमहिं बतावो ॥
हे अवनी चितचोर हमारे । कितराखे नवनीत पियारे ॥
तुमते दूरि कहूं हरिनाहीं । क्यों न मिलाय देत हम पाहीं ॥
कहि धौं कुंद मुकुंद कहांहैं । हमको देहु बताय जहांहैं ॥
हेबँट नटनागरहि बताओ । कहूं निकट नँदसुवन दिखाओ ॥
कहु धौं मृगी मया करि हमको । पूछति हम हाहाकरि तुमको ॥
देखियत डह डहे नयन तुम्हारे । तुमकहुँ मोहन लालनिहारे ॥
हे दुख दमन परम सुखकारी । कहियत गति सर्वज्ञ तुम्हारी ॥

१ विष । २ अग्नि । ३ गड़त । ४ कटहर । ५ बरगद ।

जहां होइँ बलबीर विहारी। कहति जाय किन बिथा हमारी ॥
हे तुलसी तुमतौ सब जानो। क्यों नहिं हरिसों प्रगट बखानो॥
तुमतौ सदा श्यामकी प्यारी। कहत नहीं यह दशा हमारी ॥
बोलत नहिं कोउ कहत तरुनको। लेगये श्याम इनहुँके मनको ॥
दोहा-इहि विधि वन घन ढूँढ सब, ब्रजतिय विरह उदास॥
इत उतते फिर आवहीं, कुँवरि राधिका पास ॥
सो०-मनहुँ नीर विन मीन, अति व्याकुल तरफत परी॥
श्यामविरह अतिदीन, कनकलतासी नागरी ॥
व्याकुल कहति सकल ब्रजबाला। अजहूं नहिं आये नँदलाला ॥
कहा करें अब कितको जैये। श्याम बिना कैसे सुख पैये ॥
तब सब बहुरि यमुनतट आई। जहां रसिक पियरास रमाई ॥
बैठीं सब राधा ढिग बामा। कहन लगीं हरिके गुण ग्रामा ॥
सबके ढिग हरि सोहत कैसे। दृष्ट बन्द करि नटवर जैसे ॥
युवति नहीं कोउ उनको देखें। हरि सबहीकी लीला पेखें ॥
देखि देखि मन अति सुख पावैं। परमप्रीति रस रीति बढावें ॥
करत चरित्र विचित्र विहारी। सदा श्याम भक्तन सुखकारी ॥
विरह अग्नि तनु गर्व जरावें। निर्मल प्रेम भक्ति उपजावें ॥
गोपी जन सब हरिकी प्यारी। नेकनहीं कहुँ हरिते न्यारी ॥
कहति श्याम ब्रज प्रगटे जबते। देत सबनको सब सुख तबते ॥
तिनमें हम सब उनकी दासी। क्यों हमतज हरिभये उदासी ॥
दोहा-व्याधहुते करनी कठिन, हमते ठानी श्याम ॥
वेणु बजाय बुलाय सब, बधतमृगीज्यों बाम ॥
सो०-कीजै कौन उपाय, मोहन मुख देखे विना ॥
मरति मसोसा खाय, यह मन गीध्यो माधुरी ॥
सदा हमारे मनको भावे। तिरछी चितवनचितहि चुरावै ॥
जब अति बालक हुते मुरारी। बालविनोदें किये सुखकारी ॥

१ बहेलिया। २ हरिणी। ३ चरित्र।

खेलतमें बहु असुर सँहारे। विघन अनेकन ब्रजके टारे॥
अद्भुत चरित मनोहर कीन्हो। गिरिवरधर ब्रजको रख लीनो॥
हलधर सखन संग मुरली धरि। गोचारन बन जात जबहिं हरि॥
तब हमको बीतत दिन जैसे। जानतहै हमरो मन तैसे॥
कुंडल मुकुट केश घुंघरारे। गोरज रंजित दृग अनियारे॥
पीत वसन बनमाल बिशाला। वेणु बजावत मधुर रसाला॥
सखन मध्य गौअनके पाछे। चंदन चित्र सुभगतनु आछे॥
सांझ समय आवत जब देखें। तब हम जन्म सफल करि लेखें॥
ऐसे कथत सकल ब्रजनारी। हरि गुण रूप कथा विस्तारी॥
समुझत कहत श्याम गुणरूपा। उपजी उर अति प्रीति अनूपा॥

दोहा—भूलि गई सुधि देहकी, भयो विरह दुख औन॥
केवल तन्मय ह्वै गई, नहिं जानति हम कौन॥

सो०—भृंगी कीट समान, मगन ध्यान रस नागरी॥
बिसरो सकल सयान, भई आपुही कृष्णतनु॥

लागीं करन चरित सब हरिके। पूरण प्रेम भई गिरिधरके॥
ये लीला उनहींको सोहैं। नेक नहीं जानति हम कोहैं॥
एक भई दधि चोर कन्हाई। एक पकरि गहि भुजलै आई॥
एक यशोमतिको वपु धरिकै। बांधतिहै ऊखलसों हरिकै॥
इक भइ गाय एक गोपाला। बोलति वैसेइ बचनरसाला॥
कारी धौरी धूमरि कहिकै। हटकत फिरत लकुटकर गहिकै॥
कहति एक अंबर गिरिधारी। गाय गोप सब रहौ सुखारी॥
कहति एक मूंदो सब लोचन। मैं करिहौं दावानल मोचन॥
एक यमल अर्जुन तरु भंजै। एक बकासुर वदन विभंजै॥
एक वस्त्रको नाग बनाई। तापर निरत करत हरषाई॥
एक दहीको दान चुकावै। एक त्रिभंग ह्वै वेणु बजावै॥
मगन भईं ब्रज यारस माहीं। तनु अभिमान रह्यो कछु नाहीं॥

१ मारे। २ बाल। ३ अरुण। ४ वंसी। ५ नाश।

दोहा—अंतरनेकु रह्यो नहीं, भईं श्याम ब्रज बाम ॥
तब अंतर नहिं करि सकै, भये निरंतर श्याम ॥
सो०—प्रगट भये तत्काल, तिनहीं मधि नँद लाड़िले ॥
सुन्दर नयन विशाल, गोपीजन वल्लभ सुखद ॥
प्रेम मगन अति आतुरताई। श्रीवृषभानु कुँवरि उर लाई ॥
देखि प्रगट दरशन गोपाला। मिलीं धाय आतुर ब्रजबाला ॥
जो धन राशि परी कहुँ पावै। लोभी जन लूटनको धावै ॥
लपटी एक धाय उर माहीं। एक मिलत ग्रीवा दे बाहीं ॥
कोऊ परी चरण पर आई। कोऊ अंग रही लपटाई ॥
कोऊ गहि उर पंकज लावैं। तन विरहकी ताप नशावैं ॥
कोउ लटकी गहि भुजा नवेली। जनु शृंगार विटप छबि बेली ॥
कोऊ मुख छबि रही निहारी। कोऊ रही चरण उर धारी ॥
कोऊ दृग भरि कहत भले हरि। एक पीत पट छोर रही धरि ॥
हरिसों मिली लसति यों भामिन। जनु बन घन घेर्‌यो बहु दामिन॥
कहुँ अंजन कहुँ कुंकुम रेखा। कहूं पीककी लीक सुवेखा ॥
युवतिन मध्य लसैं हरि प्यारे। कृपा दृष्टि सब ओर निहारे ॥
दोहा—पुनि बैठे हरि हर्षि तहँ, युवति वृन्द चहुँ पास ॥
सबके सन्मुख राजहीं, सुन्दर छबि घनरास ॥
सो०—बोले बिहँसि गोपाल, हँसत कियो यह ख्याल हम॥
कतहिं भईं बेहाल, तुम प्राणन तें मोहिं प्रिय ॥
सकुचीं सुनि प्यारी यह वानी। मन जान्यो नहिं प्रगट बखानी ॥
कहि २ कोमल वचन कन्हाई। सबको दुख डार्‌यो बिसराई ॥
अति आनंद सबनको दीनो। सफल मनोरथ सबको कीनो ॥
जाके साधहुती जिय जैसी। पूरन करी श्याम मन तैसी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले। बढ़्यो अनंद सकल दुख भूले ॥
तब हरिसों सब नवलकिशोरी। पूछन लगीं बिहँसि कर जोरी॥
प्रेम प्रीति की रीति सुहाई। हमैं कहो समुझाय कन्हाई ॥

इक जो प्रीति परस्पर कहिये । एक एक ही दिशि ते लहिये ॥
एक दुहुनको मानत नाहीं । ताको कहा कहत जग माहीं ॥
उत्तम प्रीति कहावति जोई । कहहु श्याम हमसों तुम सोई ॥
हम अबला जानति कछु नाहीं । ताते पूछति हैं तुम पाहीं ॥
सुनि गोपिनके वचन रसाला । भये प्रेम वश परम कृपाला ॥

दोहा–यदपि जगत गुरु अजित प्रभु, ज्ञानराय ब्रज चंद ॥
प्रेम विवस हारे तदपि, अपने मुख नँदनन्द ॥

सो०–कहत भये तब कान्ह, सुनहु प्राणवल्लभ[1] प्रिया ॥
नहिं तुम सम कोउ आन्ह, निपुण प्रेमके[2] पंथमें ॥

तद्यपि तुम पूछति हो जैसे । प्रगट करौं लक्षण सब तैसे ॥
एक जो प्रीति परस्पर होई । स्वारथ हेतु करत सब कोई ॥
जैसे पशू पशूको जाने । आपुसमें अतिहित करमाने ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावे । जासों सब संसार बँधावे ॥
दूजी प्रीति एक दिशि जोई । करति धर्म अधिकारी सोई ॥
जैसे मात पिता चित धरिके । रक्षत हैं सुतके हित करिके ॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत । उत्तमगति ताते जन पावत ॥
जो यह दोउनको नहिं जाने । गुण दूषण कछु उर नहिं आने ॥
तिन्हें सुनो मैं कहत बखानी । कै कृतज्ञ कै पुनि अज्ञानी ॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई । अनायास उपजत उर सोई ॥
दुहुँदिशि हठिकरि प्रीति बढ़ावे । नहिं निमित्ततामें कछु आवे ॥
अन्तर नेक परै नहिं कोई । प्रीति पुनीत जानिये सोई ॥

छंद–नहीं अंतर नेकु जा मधि, प्रीति उत्तम सो कही ॥
करी मोसों तुम सबन सोइ, मैं ऋणी तुमरो सही ॥
करहुँ जो उपकार तुमप्रति, कोटि कोटि कोटिन जग भरी ॥
कबहुँ होहुँ न उऋण तुमते, हे प्रिया ब्रजसुंदरी ॥

१ प्राणप्यारी । २ प्रेममार्ग । ३ छोटी । ४ अकस्मात् । ५ रस । ६ बीच । ७ कर्जा ।

करै ऐसी कौन जैसी, तुमन जो करनी करी ॥
लोक वेद मर्याद ममहित, तोरि तृण सम परिहरी ॥
करहु मनते दूर अब यह, दोष मैं तुमते कियो ॥
प्रिया अंतर परमसुखमें, विरह दुख तुमको दियो ॥
दोहा–ऐसे प्रेमाधीनह्वै, कहि कहि वचन रसाल ॥
दूरकरी युवतीनके, मनते गासै गुपाल ॥
सो०–बाढ़्यो परमानंद, ब्रज बासिन प्रभु वचन सुनि ॥
परम मुदित तिय वृंद, प्यारी प्रिय नँद नन्दकी ॥

अथ महामंगल रासलीला ॥

सुनि पियके मुखकी रसबानी। गोपी जन सब मन हरषानी ॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उरलाये। मनते सब सन्देह मिटाये ॥
देखि सबनकी प्रीति कन्हाई। बहुरिरासरस रुचि उपजाई ॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो। वही भाव सबके मन भायो ॥
यह जान्यो सबहिन तबहीते। करतरासरस पिय सबहीते ॥
अन्तर्धान चरित सब भूली। वैसेइ आनँदके रस फूली ॥
बहुरि रास मंडल विधि जोरी। बिच बिच श्याम बीच बिचगोरी॥
वैसेइमधि नायक हरि राधा। वहै परस्पर प्रीति अगाधा ॥
वैसेइ मुरली श्याम बजाई। वैसेइ थकित भयो उडुराई ॥
वैसेइ सुर विमान नभ सोहैं। वैसेइ सुर मुनि गँधरब मोहैं ॥
वैसेइ खग मृग नव द्रुम वेली। वैसेइ यमुना पुलिन सुहेली ॥
वैसेइ पवन त्रिविध सुखदाई। वही रास रस रूपनिकाई ॥
छंद–करैं वैसोइरासरसपुनि, युवति अति छबिछाजहीं ॥
गौर अंग किशोर वेष, सुदेसमुख शशि राजहीं ॥
जोरि पंकज पाणि बाहु, मृणाल मंडन साजहीं ॥
मध्य सबके श्याम श्यामा रूप राशि विराजहीं ॥

१ खटक-चिन्ता। २ चन्द्र।

मुकुट कुंडल बसन भूषण, वरण अंगन राजहीं ॥
अंग अंग अनंगरतिलखि, कोटि कोटिन लाजहीं ॥
चरणनूपुर किंकिणी कटि, वलय नूपुर बाजहीं ॥
बीन ताल मृदंग चंग, उपंग सुर सुख साजहीं ॥
दोहा–अरस परस निरखत छबिहि, भरे प्रेम आनन्द ॥
नवल नागरी ब्रजबधू, नव नागर नँदनन्द ॥
सो०–रहे निरखि सुर भूल, सहित सुन्दरी मग्न सुख ॥
पुनि पुनि वर्षत फूल,धन्य धन्य ब्रजकहि मुखन ॥
सोहति हरिमुख मुरली कैसे । करि दिग्विजय नृपति वर जैसे ॥
बैठि पाणि सिंहासन गाजै । अधर छत्र शिर ऊपर राजै ॥
चमर चहूं दिशि चिकुर सुहाये। वेत पाणि कुंडल छवि छाये ॥
बलि वलि बरजतहैं सब काहू। कहत निकट कोऊ मति जाहू ॥
दूरहिते सब करत जुहारै । सन्मुख आदर सहित निहारै ॥
मधुकर पिक बंदी गुण गावैं । मागध मदन प्रशंसि सुनावैं ॥
मान महीपति बलमथि मान्यो । युवती यूथ जीति गहि आन्यो ॥
बिनहिं पनच बिनही कोदंडा । सुर शर भेद कियो ब्रह्मंडा ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी । बोलत हैं सब जय जय बानी ॥
नारि पुरुष जड जंगम जेते । किये सकल अपने वश तेते ॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानी। विधि कृत मेटि आपनी ठानी ॥
निज निज ठकुरायनकी रेखा । बांचि सकल वश भये विशेखा॥
दोहा–रच्यो राजसूयज्ञ रस, रास बिपिन शुभ धाम ॥
तहँ अधिकारी साँवरो, मोहन सुन्दर श्याम ॥
सो०–सबहिनको सुखदेत, दान मान रस प्रेमको ॥
बढ्यो माधुरी हेत, परमानंदित लोग सब ॥
गावत गोपी सँग सब जुरली । बाजत मधुर मधुर सुर मुरली ॥
राग रागिनी प्रगट दिखावैं । जे सब रूप अनूपम गावैं ॥

१ अल अचल । २ वन ।

अति प्रवीन पियको मन मोहैं । नृत्य करति सुन्दर सब सोहैं ॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा । रीझत निरखि सकल ब्रज वामा॥
लै गति चलत परस्पर दोऊ । सो छबि बरणि सकै कवि कोऊ॥
होडा होडी रंग बढ़ावैं । तडपलेत शोभा अति पावैं ॥
उरझी कुंडल बेसर सों लट । पीत वसनबन माल रही सट ॥
उरझे मन मन वैनन वैना । लटकीली छवि उरझे नैना ॥
नाचत युगल चपल गिरिधारी । प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी ॥
उरझी गोपी जन लखि शोभा । नहिं निरवार सकत मन लोभा ॥
अति रस रंग बढ़्यो सुख भारी । थेइ थेइ बदति मुदित ब्रज नारी।
मगन सकल रस सिंधु निहारें । रीझ रीझ तन मन धन वारें ॥
छं०—मगन सब रसरास सुखनिधि, हर्षि तनमनवारहीं ॥
हिय हुलास न जायकहि छवि, राज युगल निहारहीं ॥
कीनो जु तप जिहिं हेतु बारह,मास सो पति पाइयो॥
तबसंगकीनों व्याहको, सब सखिन मंगल गाइयो ॥
ललित कुंज वितान सुभग, लतानि मंडप द्युतिबनी॥
बहु रंग वंदनवार चहुँ दिशि, चारु सुमनन छबिघनी ॥
अति विचित्र पवित्र यमुना, पुलिन शुभ वेदीरची ॥
वर्णन सकै छबि कौन विधि, तिहुँ लोक शोभा कीसची
दोहा—तहँ नँदनन्दन लाड़िलो, श्रीवृषभानु कुमारि ॥
दूलह दुलहिन राजहीं, शोभा अमित अपारि ॥
सो०—भरीं परम उत्साह, ललतादिक ब्रज सुन्दरी ॥
प्रीति रीतिकी चाह, लागीं करन विवाह विधि ॥
मोर मुकुट रचि मौर बनायो । सो शिर धर गिरिवर धर आयो॥
तनु घनश्याम पीत पट सोहै । घन दामिनि ताके ढिग मोहै ॥

---

१ निछावरकरैं । २ सुखसमुद्र ।

बनमाला गरमाँहि बिराजे । निरखत इंद्र धनुष द्युतिलाजे ॥
ललित अंग तनु भूषण जाला । कुंडल झलकन नयन विशाला ॥
सकल कला गुण रूप निधाना । त्रिभुवन सुन्दर परमसुजाना ॥
जाके मन्मथ[1] सैन बराती । फूले विटप सुमन बहु भांती ॥
करिकोलाहल पिक शुक बोलैं । मंजुमोर निर्तत सँग डोलैं ॥
नभसुरपति दुंदुभी बजावैं । नाचत किन्नर गँधरब गावैं ॥
वर्षत सुरगण सुमन सुहाये । ब्रजतिय करति सकल मन भाये ॥
कुँवर लाडिली शुभग सँवारी । गोरे अंग चूनरी सारी ॥
नखशिख मणि भूषण छबिछाजैं । मुख शोभा लखि उडुपति लाजैं ॥
प्रीतिरीति जहँ हित करि गानी । सो शुभ घरी विधाता बानी ॥
छंद—शुभ घरी सो बानी विधाता, हेतु जिहि दृढ़ ब्रत लियो ॥
शरद निशि पून्यो विमल शशि निरखि अति प्रफुलित हियो ॥
अधर मधु मधुपर्क कहिकै, पाणिगृहण सुविधि करी ॥
पढत नभ विधि वेद वाणी, सुरन जय ध्वनि उच्चरी ॥
तब अलिनहँसिकै गांठि जोरी, प्रेम गांठ हिये परी ॥
सहससोरह संग सखियां, फिरति भांवरि रस भरी ॥
बढ़्यो अति आनंद उरमधि, साद सब पूरण भई ॥
मदन मोहनलाल दूलह, राधिका दुलहिनि नई ॥
दोहा—निरखि देव वरषैं सुमन, हरष न हिये समात ॥
वृन्दावन रस रास सुख, लखि सुरवधू सिहात ॥
सो०—हमसों यह सुखदूरि, कहत परस्पर सुरन गण ॥
क्यों उड़ि लागै धूरि, धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज ॥
सोहति युवति वृन्द मधि जोरी । नवनागर वर[2] नवल किशोरी ॥
शोभा अमित पारको पावै । निरखत बनै कहत नहिं आवै ॥

---

१ कामदेव । २ हल्ला । ३ निर्मल ।

दूलह श्याम दुलहनी राधा । रूपसिंधु दोउ परम अगाधा ॥
रागभीनि रँगभीने दोऊ । अति आनंद उमँगि सब कोऊ ॥
प्रेमरंग भीनी व्रजनारी । निरखि युगल छबिहोहिं सुखारी॥
भरी प्रीतिरस गारी गावैं । लखि २ पिय प्यारी सुख पावैं ॥
हाव विलास मोह उपजावैं । बार बार दंपति गुणगावैं ॥
विविध भांति दुंदुभि नभ बाजैं। निरत कला रंभादिक साजैं ॥
हंस मोर पिक चातक बोलें । वनमृग निकट संग सब डोलें ॥
वारति तिय भूषण हरषाई । बनके मृगन देति पहराई ॥
तब इक सखी भई नँदराई । इक वृषभानु रूप धरि आई ॥
अतिहित मिले महर दोउ धाई । तब विनती वृषभानु सुनाई ॥

छं०—तब जोरिकर वृषभानु विनयो, सुनहु श्रीनंदरायजू ॥
हम भये सकल सनाथ अब, सब कृपा तुम्हरी पायजू॥
अतिबडे पुण्यते मिले तुमसे, सगे सुखके सिंधुजू ॥
शिरमोर गोकुल चंद आनँद, कंद सब जग वंदजू ॥
तुमगेहमंजनहेत कन्या, हम न तुम सम योगजू ॥
निज दासकरि सब जानिये, वृषभानुपुरके लोगजू ॥
अष्टसिधि नवनिद्धि संपति, सकल सुखके खानजू ॥
ऐसे विनयकरि नंदके, चरणन गहे वृषभानुजू ॥
तबनंद अति आनंदभरि, बोले सहित अनुरागजू ॥
सुनहु श्रीवृषभानुजू, तुम धन्य अति बडभागजू ॥
तुमसे समुद्र न सो सुनहु, संबंध मांगिन पाइये ॥
परम निर्मल यश तुम्हारो, लोक लोकन गाइये ॥
अति नेह कान्हर सों तुम्हारो, प्रीति पहली यह भई॥
दईकन्या करि कृपा, गुण रूप सुख शोभामई ॥
पूरे मनोरथ सकल अब हम, बडे सब भांतिन भये ॥

वृषभानु नंद अनंद प्रमुदित, परस्पर चरणन नये ॥
दोहा–मन मन हरषित नागरी, नागर नवल किशोर ॥
लखिरसरीति सखीनकी, प्रेमप्रमोद न थोर ॥
सो॰–विलसत अति आनंद, व्रजविलास व्रज नागरी ॥
प्रीति बिवस व्रज चंद, कोकहिसके सुहाग सुख ॥
करत मनोरथ सब मन भाये। त्रिभुवन पति दूलह करि पाये ॥
ब्याहरीति सब करि व्रजनारी। गावति यशुमति को रस गारी ॥
तब कंकण छोरन विधि कीनी। रचि पचि गांठि चतुर तिय दीनी॥
कहत श्याम सों छोरौ कंकन। परमानंद मुदित गोपीजन ॥
बड़े चतुर तौ खोलहु गिरिधर।यह न होय धरिबो गिरिको कर ॥
कै छोरो कै दोउ कर जोरौ। दुलहनि के परि पांय निहोरौ ॥
बड़े कहावत हौ व्रजनाथा। काहे कँपन लगे दोउ हाथा ॥
छोरहु वेगि कि सुनहु कन्हाई। पठवहु यशुमति माय बुलाई ॥
दोउ परस्पर कंकण छोरैं। प्रेम उमँग उर हर्ष न थोरैं ॥
पचिहारे कंकण नहिं छूटत। निरखि हर्षि व्रज तिय सुख लूटत ॥
कहत सहाय करो जिन कोऊ। कंकण छोरहिं आपहि दोऊ ॥
दुलहनि दूलह कंकण खोलें। कै वृषभानु बबाको बोलें ॥
दोहा–कमल कमल परशो जनो, पाणि लाड़िली लाल ॥
लखि कवि कुल सांचे लगत, रोम कटीली नाल ॥
सो॰–दूलह नंदकुमार, दुलहन श्रीराधा कुँवरि ॥
सन्तन प्राणअधार, अविचल यह जोरी सदा ॥
यह रस रास चरित हरि कीनो।व्रज युवतिन वांछित फल दीनो॥
व्रजतिय सुख हित कुंजविहारी। करी मास निशिबद उजियारी ॥
साद नहीं युवतिन मन राखी। श्रीभागवत कह्यो शुक भाखी ॥
वेद उपनिषद साख बतावैं। ब्रह्मा शंभु सहस मुख गावैं ॥
नारद शारद ऋषिय अनंता। कहत सुनत गावत सब संता ॥

१ भोगत। २ लीला।

सोरह सहस गोप सुकुमारी । तिनके संग लाल गिरिधारी ॥
कियो रासरस रहस अगाधा । पूरण करी सबन की साधा ॥
हाव भाव रस रास विलासा । नैन सैन सुख वचन प्रकासा ॥
भुज भरिमिलन अधर रस चाखन।नृत्य गान रस रुचि संभाषन॥
क्षण क्षण बढति अधिक रस रीती।इह विधि रैनि करत सुख बीती॥
भयो समय ब्राह्मी[1] शुभ काला । रास रमत भईं श्रम सब बाला ॥
तब श्री यमुना गे नँदलाला । सोहत संग सकल ब्रजबाला ॥

छंद-सोहत सकल ब्रजबाल सँग, नँदलाल तब यमुनागये ॥
शरदनिशिरसरास करि, पूरण मनोरथ सब भये ॥
जैसे महा मद मत्तगज[2], वरयूथकरिणिन[3]सँग लिये ॥
फिरत बनसर[4]सरित[5] क्रीडत, निदरि अतिनिर्मल हिये
जिमि नंदसुत जगबंद आनँद, कंदरसनिधिश्यामये॥
मेटि वेदमर्याद ब्रज तिय, प्रेम सब आनंद भये ॥
रमत वृन्दावन यमुनरस, केलि अति सुख मानई ॥
दास ब्रजबासी प्रभू गुण, नाग नर सुर गानई ॥

दोहा–धनि वृन्दावन धन्य सुख, धन्य श्याम धनि रास॥
धनि धनि मोहन गोपिका, नित नव करत विलास॥

सो०–नहिं सुरपुरसमतूल, वृन्दावन सुख एक पल ॥
कहिं कहिं बरषे फूल, सुरगण मन आनँद भरे ॥

यमुना जल क्रीडत नँदलाला । सोलह सहस संग ब्रजबाला ॥
मधि राजत दोऊ बहँ जोरी । दंपति गौर सांवरी गोरी ॥
कोऊ कटिलौं जल सुख साजै । कोउ उर ग्रीवालौं छबि छाजै ॥
ताकी उपमा कवि किमि कहहीं। अति आदर छबि पार न लहहीं॥
छिरकत पाणि परस्पर सोहैं । नंद नँदन पियको मन मोहैं ॥

१ ब्रह्ममूहूर्त। २ हाथी । ३ हथिनी । ४ तालाब । ५ नदी ।

सलिल शिथिल सोहत नँदनन्दन। सुन्दर भाल कुमकुमा चन्दन ॥
पँचरँग भयो यमुनजल जाते। छबि मय लहरि उठतिहै ताते ॥
रूप छटासी तिय गण जामैं। करत विहार लिये घनश्यामैं ॥
एक एक अँग भरि भरि लेहीं। हास विलास करत छबि देहीं ॥
एकनले अथाह जल डारैं। सुख व्याकुलता रूप निहारैं ॥
इक भाजत इक पाछे धावैं। एक श्याम ढिग पकरिले आवैं ॥
कंठ लगाय लेत पियताहीं। सो सुख कविसों कह्यो न जाईं ॥
दोहा–करत केलि यमुनासलिल, ब्रज ललना सँग श्याम॥
निशि श्रम मिटि आलस गयो, भये सुखी सुखधाम ॥
सो०–अलख लखी नहिं जाय, अविगतिकी गतिको कहै॥
योगी सकत न पाय, सो भोगी ब्रजतियनको ॥
जल विहार विहरत सुख पाई। रास रंग मनते नहिं जाई ॥
युवती मंडल करि कर जोरें। श्यामा श्याम मध्य करि खोरें ॥
वही भाव मनमें उपजावें। निरखि निरखि मोहन सुख पावें॥
विहरति नारि हँसत नँदनन्दन। अंकम भरि भरि लेत अनन्दन ॥
प्यारी श्याम अंजली डारे। सो छबि तिय सुख पाय निहारे॥
मानहु कमल औंर इन्द्रियबर। छिरकतहै मकरंद परस्पर ॥
जल क्रीडा सुख करत कन्हाई। वर्षत सुमन देव झरि लाई ॥
लीला सागर परम अपारा। कवि किहिविधि कर पावै पारा ॥
करि जल संग केलि ब्रजनारी। आये जलतट निकसि विहारी ॥
भीजे पैट लपटे तनु माहीं। पट अंतर लट चीरचुचाहीं ॥
ठाढे यमुनातीर कन्हाई। पुलिन पवित्र परम छबि छाई ॥
निरखत निर्मल तनुकी शोभा। अरसपरसविहँसत मन लोभा ॥
दोहा–तबइक तरुको विहँसिके, आयसुदीनो श्याम ॥
नाना भूषण वसन बर, तिन वर्षे अभिराम ॥
सो०–निज निज रुचि अनुहार, लै लै ब्रजकी सुन्दरिन॥

१ पानी। २ जिसकीगतिजानी नजाय। ३ वस्त्र।

कीनो नवल शृँगार, उर आनँद नहिं जाय कहि ॥
करि शृँगार तनु नवल किशोरी। हरि सन्मुख ठाढीं सब गोरी ॥
निरखि श्याम छवि मन ललचाहीं। विदा करत घरको सकुचाहीं॥
हँसि बोले तब मदनगुपाला। जाहु सदन अब सब ब्रजबाला॥
अति आदर दै दै सुखदाई। पाणि परस सब सदन पठाई ॥
निशि सुखटरत न काहू मनते। चलीं सदन सब वृन्दावनते ॥
अति आनंद रह्यो उर भरिकै। भांवरिदे आईं सँग हरिकै ॥
मनके सफल मनोरथ कीने। नंदसुवन हित पति करि लीने ॥
गईं सदन सब हर्ष बढ़ाये। घर घर लोगन सोवत पाये ॥
जगस्वामी हरि यह मति ठानी। ब्रज युवतिन सबहिन घर मानी॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे। निज निज कारजमें सब लागे ॥
नंद धामगये नँदके लाला। काहू नहिं जान्यो यह ख्याला ॥
यहरहस्य लीला गिरि नारी। संत जनन मन आनँद कारी ॥
छंद–यह रहस लीला श्यामकी, सब संत सुर मुनि भावनी॥
ज्ञान ध्यान पुराण श्रुति मति, सार[1] परम सुहावनी ॥
यह मंत्र यंत्र अनंत व्रत फल, ध्यान दंपतिको रहै ॥
भाव करि नित भावमन, बिनु भाव यह सुखही लहै॥
धन्य श्रीशुकदेव मुनि, भागवत यह रस गाइये ॥
निगम नेति अगाध श्री, गुरु कृपाविन नहिं पाइये ॥
सरुचि[2] कहि जे सुनें सीखें, प्रीति करि जे गावहीं ॥
ऋद्धि सिधि सब कह गनाऊं, भक्ति अनुपम पावहीं ॥
उरबढै रसनेमदृढपद, प्रेम राधा श्यामको ॥
अहहि अचल निवासवृन्दा विपिन घन निज धामको॥
यहै आशा राखिकै उर, दास ब्रजवासी कही ॥
कृपा कीजै श्याम श्यामा, शरण पद पंकज गही ॥

१ श्रेष्ठ। २ हितपूर्वक।

दोहा—चरित ललित गोपालके, रास विलास अनेक ॥
कापै बरणे जात सब, इतनो कहां विवेक ॥
सो०—निकसीतरे अघाय, ज्योंपिपीलिका सिंधुते ॥
कह्यो यथा मति गाय, तिम ब्रजवासी दासहू ॥

अथ मानचरित्र लीला ॥

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी । करत नित्य नव चरित बिहारी ॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी । भक्त मनोरथ सदा विलासी ॥
नित वृन्दावन धाम सुहायो । नित्य रासरस वेदन गायो ॥
भक्तन हेतु विविध तनुधारें । भक्तन हित लीला विस्तारें ॥
सदा भक्त वश कृष्ण कृपाला । दयासिंधु प्रभु दीनदयाला ॥
शरदरैनि रसरास उपायो । युवतिन प्रति निजरूप बनायो ॥
सफल मनोरथ सबको कीनों । पतिहित कारि सबको सुखदीनो ॥
तब कृपालु उरमें यह आनी । सदा भक्त वांछित फलदानी ॥
गोपिन गर्व रासमें कीनों । सो मैं अन्तर करि हरि लीनों ॥
रही साध इनके मन माहीं । हमको श्याम मनायो नाहीं ॥
ते ब्रज भक्त परम हित मेरी । करौं साध पूरण इन केरी ॥
अब इक मान चरित्र उपाऊँ । पाँयन परि परि सबन मनाऊं ॥
दोहा—करिविभेदरसरीतिमें, देहुँ मान उपजाय ॥
इनके मुख मंडित वचन, कहवाऊं सुखदाय ॥
सो०—सकल गुणनके धाम, परमविचक्षण रसिक मणि ॥
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रस वश सदा ॥
श्री राधा मनमोहन प्यारी । नव नागरि नवरूप उजारी ॥
रास नृत्य रिझये गोपाला । तारस मगन फिरत नँदलाला ॥
करत भवन शृंगार पियारी । औचक तहां गये गिरिधारी ॥
देखि प्रिया पियको हँसि दीनो । हर्षि श्याम अंकम भरि लीनों ॥
रहे थकित छवि अंग निहारी । जात कमल मुख पर बलिहारी ॥

१ मनोहर । २ ज्ञान । ३ चींटी । ४ नवीन ।

इहि अंतर पियके उर माहीं। देखी तिय निज तनु परछाहीं॥
झझकि उठी प्यारी भइ न्यारी। अति सनेह¹भ्रम सुरत बिसारी॥
और नारि पियके उर जानी। आपुन विषे प्रीति घटिमानी॥
राखत सदा हियेमें याहीं। ल्याये मोहिं दिखावन ताहीं॥
कियो मान यह भ्रम उपजाई। कहत वचन पियसों अनखाई॥
अब जानी पिय बात तुम्हारी। ऊपरहीकी प्रीति हमारी॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत। यह प्यारी उरमाहिं बसावत॥

दोहा—धनि धनि याको भाग्यहै, बसति तुम्हारे हीय॥
याही सों हित राखिये, अब मनमोहन पीय॥

सो०—भलीकरी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनिकै॥
यह प्यारी सुखदानि, उरतें जिन न्यारी करौ॥

ऐसे कहि मुसकाय किशोरी। कछु रिसकर जिय भौंहसिकोरी॥
चकित श्याम लखि सन्मुख वानी। कहत कहा नागरी सयानी॥
सांच कहति कैधौं करि हांसी। कत रिसकरि तियहोत उदासी॥
समझी नहीं कहा जिय आई। झझकि उठी कै अति भ्रमपाई॥
हँसि भुज गहन लगे मन मोहन। बैठत क्यों नहिं मम प्रिय गोहन॥
मोहिं छियो जिन दूर रहौजू। बसत हिये किन ताहि गहौजू॥
तुम्हीं चतुर अरु बड़े सयाने। हम दासी अरु ये पटरानी॥
उरमें मनभावती बसाई। हँसी करनको हमैं बताई॥
लखि लखि प्रिया बदन सुखकारी। हँसत मनहिं मन कुंजबिहारी॥
कहति कहा भामिनि भइ भोरी। तो²बिन उरको बसत किशोरी॥
तू मम श्रवण नयन सुखवानी। जीवन प्राण अधार सयानी॥
वृथा क्रोधकर जियमें आनै। मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै॥

दोहा—सुनो श्याम हिरदे बसत, सो छिपिये न छिपाय॥
ज्यों शीशीके माहिं जल, परगट परत लखाय॥

सो०—बातैं कहत बनाय, यह देखत हमसों हँसत॥

१ संदेह। २ राधिका।

जैहैं कहुँ अनखाय, डरते तब पछितायहै ॥
जो वह कहै करौ तुम सोऊ । वह नागरि तुम नागर दोऊ ॥
मतहिं खिझावो मोहिं कन्हाई । भली करी लै सौत दिखाई ॥
जाहु चले अब मैं सुखपायो । ऐसे कहि मन मान बढायो ॥
रिस करि मौन रही गहि प्यारी । देत मनहिं मन वाको गारी ॥
शोचत श्याम देखि मन माहीं । बोल सकत नहिं प्रियहि डराहीं ॥
कहत वृथा जिय मान न कीजै । नहिं अपराध जान जियलीजै ॥
क्यों रिस करति प्रिया मन माहीं । मेरे उर तेरी परछाहीं ॥
यह सुनि कुँवरि राधिकारानी । बोली रिसकरि पियसों बानी ॥
कहा बनावत बातैं हमसों । जाहु चले बोलों नहिं तुमसों ॥
यह कहि ओटगई ह्वै प्यारी । भये विरह वश तब गिरिधारी ॥
अति व्याकुल तन मन अकुलाहीं । बार बार शोचत मन माहीं ॥
गयो सरोज वदन कुम्हलाई । तहां एक सखि दूती आई ॥

दोहा—सो हरिसों बूझति भई, कहहु न मोहिं सुनाय ॥
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय ॥
सो०—क्यों तनु रहे भुलाय, अति व्याकुल देखत तुम्हैं ॥
रह्यो वदन कुम्हलाय, ऐसो शोच कहा पर्‌यो ॥

बोले श्याम सखी हित जानी । विरह विकल कहिजात न बानी ॥
कियो मान वृषभानु किशोरी । मैं कछु नहिं अपराध कियोरी ॥
लखि मेरे उर निज परछाहीं । रूसरही करिकोप वृथाहीं ॥
मैं कहिकै बहुभांति मनाई । नहिं प्रतीति राधा उर आई ॥
बिन समुझे इतनो हठ कीनो । तबते मोहिं मदन दुखदीनो ॥
ऐसे कहि शोचत बलवीरा । लेत नयन भरि सांस अधीरा ॥
परम चतुर दूतिका स्यानी । विरह विकलता पिय जियजानी ॥
कह्यो धीर धरिये वनवारी । चलिये बनको कुंजविहारी ॥
मैं प्यारीलै तुमहिं मिलाऊं । आज कहातौ तुमसों पाऊं ॥
गई सदनते लै बन धामहिं । तहँ बैठारि धीर धरि श्यामहिं ॥

मैं ले आवति राधाप्यारी। कितक बात यह सुनहु बिहारी॥
मेरे आगेकी वह बारी। कहा मान करिहै सुकुमारी॥
दोहा–ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम॥
श्रीवृषभानु लली जहां, चंपल चली ब्रज धाम॥
सो०–मन मन रचत सयान, नई बनाऊं बातइक॥
अबहिं छुड़ाऊं मान, मोसों धों कहिहै कहा॥
हरिसों रूस मान करि वैसी। अबही कहा भई यह ऐसी॥
करत विचार यहै मन माहीं। गई सखी राधाके पाहीं॥
कुँवरि किशोरी परम सयानी। मुख देखतहि दूतिका जानी॥
सहजहि बोल ताहि ढिगलीनी। सहजहि कह्यो मया कितकीनी॥
तुरतहि कहि तब सखी सुनायो। तुमको बन घनश्याम बुलायो॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई। काहेको मुहिं श्याम बुलाई॥
तू आई याही के लीन्हें। मैं अब श्याम भले करिचीन्हें॥
कहा कहौं तो कोरी आली। तुहूं भली अरु वे वनमाली॥
उनकी महिमा कहत न आवै। अब इक नई नारि मनभावै॥
ताको लै उरमाहिं बसाई। तोहिं उहांते टारि पठाई॥
आज कहा कछु कलह भयोरी। कैधौं कछु तैं मान ठयोरी॥
तबहिं आज अनमनी बतानी। यह तौ कछु मैं बात न जानी॥
दोहा–मोसों नाहिं कछु हरिकह्यो, सहज पठाई लैन॥
कहँ धौं परी पुकार वहँ, तुम चलि देखहु नैन॥
सो०–कहत सुनाय सुनाय, लै लै तेरो नाम सब॥
तैं धौं लियो छुड़ाय, कहिकाके काके गथहि॥
काहेको गथ लियो परायो। अपनो नाम कुनाम धरायो॥
डारि देहु जाको जो लीनो। तेरे बहुत दईको दीनो॥
तबहीं ते उन शोर लगायो। ता कारण हरि तोहिं बुलायो॥
हरि तेरी दिशिते झगरेरी। तूकत उनसों रोष करैरी॥

१ शीघ्रतासे। २ निकट। ३ प्रभावं।

यह कछु मोसी बात सुनाई । मैं काको धनलियो छिपाई ॥
काहेको हरि झगरत माई । इती मया मोपै कहँ आई ॥
जैसे हैं तैसे हरि जाने । नहिं उनके गुण परत बखाने ॥
बैठि किधौं तू घर जा अपने । मैं उनपै अब जाउँ न सपने ॥
हौं कह तोहिं मनावन आई । मान करो तुम और सवाई ॥
परछन लै सबको ब्रज बैठी । कहा करत बातें यों ऐंठी ॥
देति जवाब सबनि किन जाई । मोपै कह इतनो सतराई ॥
तबते सबसों लरत कन्हाई । जब मैं तोहिं बुलावन आई ॥
दोहा–बार बार कह कहतरी, तू मोको डरपाय ॥
मैं नाहिं काहूको लियो, झूठहि दोष लगाय ॥
सो०–लरत कौनसों श्याम, कौने करी पुकार अब ॥
कहे न तिनको नाम, सांच तबहिं मैं मानिहौं ॥
तब वदिहौं ऐसे कहि हेरी । श्याम निकट बैठे जब वैरी ॥
कहँ लगि सबके नाम बताऊं । एक एक करि तोहिं गिनाऊं ॥
नभ जल धरणि वनहुमें आये । कहँ लगि मोतें जात सुनाये ॥
जो नहिं तिनकी गथहि चुराई । तौ तू कत बन चलत डराई ॥
परी वान तोको यह कैसी । भली कहत अलिलगति अनैसी ॥
श्याम बिना क्यों न्याव चुकेरी । तिनहीं सों तू रोष करेरी ॥
कोटि करो एकै पुनि ह्वैहो । वे अरु तुम कछु जियके ह्वैहौ ॥
मानकही चलु श्याम बुलाई । श्रवण[1] लागि हरि मोहिं पठाई ॥
जिनकी यह सब सौज तुम्हारे । ते जन हरि पहँ जाय पुकारे ॥
इंदु कहत मो वदन विगोयो । अलिकुल अलकनको दुखरोयो ॥
हरिण मीन छबि हगन दुराई[2] । खंजन हूं तहँ देत दुहाई ॥
शुककी छविनासा[3] हरिलीनी । बैननकरी कोकिलाहीनी ॥
दोहा–अधरबिंब दाडिमदशन, लूटे कंठ कपोत ॥
लई तरणि छबि छीनके, तरल तरौना जोत ॥

१ कान । २ छिपाई । ३ नासिका ।

सो०—चक्रवाक कुच दोय, कटि हरि कदली जंघलिय ॥
गज मराल गति जोय, चरण पाणि पंकज हरे ॥
ये सब हरिसों करत लराई। तैं जुकरी इनसों अधिकाई ॥
अति अनीत लखि कुँवर कन्हाई। पठई मोहिं लेन तोहिं आई ॥
प्रतिउत्तरअपनो कहचलिकै। इहांरही कह बैठि मचलिकै ॥
सुनि पियके गुण तिय हँसि दीनें। कछु सकुची मन मान जुलीनें॥
चतुर सखी जियकी सब जानी। तबहीं हरषि कही यह बानी ॥
बानि कहा अब तोहिं परीरी। जब तब लखि निज छांह डरीरी॥
तादिन दर्पण लखि भ्रमकीनो। सोदृग मूंदि मेटि हरि दीनो ॥
आज देखि पिय निज परछाहीं। कियो इतोहठ कुँवरि वृथाहीं ॥
यह सुनि समुझ मनहिं सकुचाई। सहचरि कंठ बिहँसि लपटाई ॥
रसकरि तुरत मान बिसरायो। सुनि घनश्याम श्याम सुख पायो ॥
हँसिकै कह्यो सखी सों जारी। तू हरि सों कहि आवत प्यारी ॥
मैं अँग भूषण वसन सँवारी। आवति बनहिं जहां बनवारी ॥
दोहा—यह सुनि हर्षी दूतिका, गई जहां घनश्याम ॥
अति व्याकुल तनु सुधि नहीं, विहल कीनों काम ॥
सो०—बैठत उठत अधीर, क्योंहूं सुख पावत नहीं ॥
बढति विरहकी पीर, श्रीराधा राधा रटत ॥
राधाविकल विरह गिरिधारी। कहूँ माल कहुँ मुरली डारी ॥
कहूँ मुकुट कहुँ पीत पिछोरी। नहिं कछु सुरति भई मति भोरी ॥
कबहुँ मूंदि दृग ध्यान लगावें। कबहूं प्यारीके गुण गावें ॥
कबहूं लोटत कुंजन माहीं। कबहूं बैठि द्रुमनकी छाहीं ॥
ठाढेटेकि कबहुँ द्रुम डारी। तकतपियापंथ पलक बिसारी ॥
देखि दशा दूतिका सयानी। कही श्याम सों आतुर बानी ॥
काहेको कदरात बिहारी। मैं ल्याई वृषभानु दुलारी ॥
विरह विषाद दूरि कर डारो। नकधीर अपने मन धारो ॥

१ देखि। २ दुःखित। ३ पीतांबर। ४ पकड। ५ मार्ग।

सुनि प्यारीको नाम कन्हाई । मिले दूतिका सों उठि धाई ॥
कहांप्रिया कहि अति अकुलाये । नयन सरोज नीर भरि आये ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी । आवत प्रिया अबहिं बनवारी ॥
मँजु प्रतिज्ञा तुमते कीनी । विधना आज राखि सो लीनी ॥
दोहा–अब अपने मन हर्षिकरि, दूरि करो सन्देहु ॥
आवतिहै वृषभानुजा, भुज भरि अंकम लेहु ॥
सो०–सुख शोभाकी खान, नहीं कुँवरि वृषभानुसी ॥
तुम सम धन्य न आन, बड़भागिन तुम वश भये ॥
रसिक पुरंदर प्रभु सुखदानी । सुनत खिहात दूतिका बानी ॥
पुलकत अंग धीर नहिं धारें । पुनि पुनि प्यारी पंथ निहारें ॥
निज करि सुमन सुगंध लगावे । कुंज भवन रुचिसेज बनावे ॥
अति कोमल तनु जान पियारी । सेज कली चुनि करत नियारी ॥
जो द्रुम लता लटकि तनु लागैं । तेऊपरं धरि मन अनुरागैं ॥
प्रेम प्रीति रस वश जग स्वामी । करत चरित मानहुँ अति कामी ॥
देखि श्यामकी आतुर ताई । हँसति सखी मन हर्ष बढ़ाई ॥
जान प्रेम वश हरि सुखरासा । गई बहुरि प्यारीके पासा ॥
करि शृंगार नवल तनु गोरी । राजतश्री वृषभानु किशोरी ॥
सहज रूपकी राशि[२] कुमारी । भई अधिकछबि भूषण भारी ॥
अंग अंग छबि पुंज विराजें । निरखि स्मदन तिय कोटिकलाजें ॥
त्रिभुवनकी छबि मनहुँ बटोरी । विधिकीनी वृषभानु किशोरी ॥
दोहा–देखि रूप मन मगन सखि, बोली वचन सँभार ॥
धन्य धन्य राधा कुँवरि, तुव गुण रूप अपार ॥
सो०–तोसमान नहिं तीय, तिहुंपुर सुन्दरि नागरी ॥
वसत सदा पिय जीय, तू मोहन मन भावती ॥
चलहु वेगि अब सहित हुलासा । लाग रही पियकी इत आसा ॥
तेरोइनाम जपत मन लाई । गावत तुव गुण कुँवर कन्हाई ॥

१ अश्रु । २ समूह ।

तुम तनु परस पवन जो जाही । उठि आतुर परिरंभत ताही ॥
तेरो रूप आनि उर अन्तर । धरत ध्यान दृग मूंदि निरंतर ॥
रमी श्याम तन मन तू जाते । राधा रमण नाम है ताते ॥
सुनि सहचरिके मुखकी बानी। पुलकि प्रफुल्लित मृदु मुसिकानी॥
पियको प्रेम समुझि सुखपाई। चली मिलन गज गति हर्षाई ॥
मुख शशिकनकलतासी गोरी। बाल हरण छबि नयनकिशोरी ॥
भूषण वसन अनूप सुहाई। अंग अंग शोभित छबि छाई ॥
अंग सुगंध मनोहर ताई। भँवर भीर चहुँ ओर सुहाई ॥
हँसि हँसि कहत सखीसों बातें। झरत सुमन जनु रूप लतातें ॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी। गई जहां पिय कुंज विहारी ॥

दोहा-परम प्रेम दोऊ मिले, श्रीराधा नँदनन्द ॥
गुण आगर नागर युगल[3], छबिसागर सुख कन्द ॥
सो०-जो प्रभु परम अपार, वेद भेद जानत नहीं ॥
सो ब्रज करत विहार, वर्णि पार को पावही ॥

कुंजन मंजु सुफल छबि छाई। भँवर गुंज सुख पुंज सुहाई ॥
फूलनसेज रुचिर रचि कीनी। चित्र विचित्र रंग रस भीनी ॥
फूले खग[4] गण करत कलोलैं। जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलैं ॥
फूली वृन्दावन तरु डारी। तन मन फूले पिय अरु प्यारी ॥
सहचरि सहित मनोहर जोरी। राजत युगल किशोर किशोरी ॥
हाव भाव करि रस उपजावैं। हासविलास करत सुख पावैं ॥
सखी कह्यो तब कै अबनीके। सकुचि हँसी प्यारी सँग पीके ॥
नयन कोर पियको हिय[5] ताक्यो। तबहिं श्याम पीतांबर ढांक्यो ॥
यह छबि निरखि सखी बलि जाई। अचल रहौ जोरी सुखदाई ॥
धनि राधा धनि कुँवर कन्हाई। धन्य मान रस केलि सुहाई ॥
धन्य कुंजवन धनि मँहि[6] पावन। धन्य लता द्रुम[7] सुमन सुहावन ॥

१ वसी। २ दूती। ३ कृष्ण-राधा। ४ पक्षी। ५ हृदय। ६ पृथ्वी। ७ वृक्ष।

धन्य सखी धनि सब ब्रजवासी। तिनसँग विहरत प्रभु सुखरासी ॥
दोहा-गये श्याम श्यामा सदन, सखी सहित सुख पाय॥
मानचरित रस केलि करि, ब्रजवासी बलि जाय ॥
सो०-मानचरित्र अनूप, जे सुभाव गावहि सुनहिं ॥
ते न परैं भवकूप, राधा कृष्ण प्रतापते ॥
करत चरित नाना गिरिधारी। सुखसागर भक्तन हितकारी ॥
जाको शिव अज ध्यान लगावैं। सनकादिक मुनि जप कर ध्यावैं ॥
जा प्रभु को यश परम विशारद। गावत अहिपति नारद शारद॥
अखिल अनीह अकाम अभोगी। योग समाधि न पावत योगी ॥
सो प्रभु सबके अन्तर्यामी। युवतिन प्रेम भक्ति वश कामी ॥
बहु नायकह्वै करत विहारा। ब्रज पुर घर घर नन्दकुमारा ॥
रस लीला नाना उपजावैं। काहु रुठावैं काहु मनावैं ॥
अरस परस तिय सब यह जानैं। हरि हैं सबके धाम लुभानैं ॥
अवधि बदत काहू सों जाई। काहूके घर बसत कन्हाई ॥
सांझ कहत जाके घर आवन। जात प्रात ताके मनभावन ॥
ब्रज गोपी जिनको पति जानें। कोउ आदरहिं कोउ अपमानें ॥
खंडित वचन सुनत सुखदाई। यह लीला हरिके मन भाई ॥
दोहा-ब्रजमें करत विहार हरि, ब्रज वनितनके संग ॥
अखिल काम पूरण करण, भरे प्रेम रस रंग ॥
सो०-कोटि काम कमनीय, सुंदर सुखसागर नवल ॥
रमणी मन रमणीय, ब्रज भूषण ब्रज लाड़िलो ॥
ब्रज [3]वीथिन नँदनन्दन ठाढे। अंग अंग सुन्दर छवि बाढे ॥
ललता आइ गई तिहिं पैंडे। मन मोहन रोकी मग बैंडे ॥
देखत छवि ललता ललचानी। बोली विहँसि श्यामसों बानी ॥
कत रोकत मग मैं बिन काजैं। जाहु चले जितही हित साजैं ॥
छांडहि इतो सनेह जनायो। कबहुँ हमारे धाम न आयो ॥

१ उपमारहित। २ ब्रह्मा। ३ गलिन। ४ दर।

हरि हँसि कह्यो आज निशि ऐहैं। तरीसों हम अनत न जैहैं ॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई। छोड़ि दई मग छैल कन्हाई ॥
ललता गई सदन सुख मानी। ऐहैं श्याम आज यह जानी ॥
सांझहिते हरिपंथ निहारे। धाम आपने सेज सँवारे ॥
भूषण वसन नवल तनु साजैं। खंजनसे दृग अंजन आँजैं ॥
सुमन सुगंध अनूपम गाई। रुचि रुचि राखति माल बनाई ॥
कबहूं ठाढ़ी होति दुवारे। कबहूं लखति गगनके तारे ॥
दोहा-कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात ॥
गये आशदै मोहिं पुनि, कहाधरी जिय बात ॥
सो०-वे बहु नायक श्याम, किधौं लुभाने अनत कहुँ ॥
मन मन शोचत बाम, कारण कह आये नहीं ॥
कैधौं कछु ख्यालहि चितदीनों। कैधौं मात पिता डर कीनों ॥
कैधौं सोय रहे अलसाने। कै मोघर आवत सकुचाने ॥
ऐसे शोचत रैनि बिहानी। जहँ तहँ बोले तमचुर बानी ॥
तब बैठी अपनो मन मारी। कछु शोच कछु रिस उर धारी ॥
हरि निशि गये सखी शीलाके। सुन्दर श्याम धाम लीलाके ॥
तहँ सुख सोवति रैनिगमाई। प्रात होत ललता सुधि आई ॥
चले सहज शीलासों कहिकै। जिय सँकोच ललताको गहिकै ॥
आये ललता सदन बिहारी। चितै रही मुखकी छबि प्यारी ॥
अंजन रेख अधर पर राजैं। पीक लीक नयनन छबि छाजैं ॥
सोहत ललित कपोलन नीको। लाग्यो अंजन काहू तीको ॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी। दिखरायो मुख सन्मुख आनी ॥
कहति देखि निज वदन सुधारो। लाल कहूं तव प्रात सिधारो ॥
दोहा-पीक पलक अंजन अधर, देखि श्याम सकुचाय ॥
रहे निचौंहैं नयन करि, वचन कह्यो नहिं जाय ॥
सो०-ज्योंज्योंसकुचत श्याम, त्योंत्योंहठ नागरिकरत ॥

१ रात। २ आकाश। ३ भरोसा। ४ मुर्गा। ५ दर्पण।

देखहु छबि अभिराम, हाहासुख कत फीरियत ॥
सकुचत कहा बोलिके सांचे । आये तो मो गृह रँग राचे ॥
रैनि नहीं तो प्रातहि आये । धनि धनि वह जिन स्वांग बनाये ॥
तुम जिन मानहु विलग कन्हाई । मैंतो करति अनन्द बधाई ॥
क्यों मोहन दर्पण नहिं देख्यो । सूधे मोतन काहे न पेख्यो ॥
ठाढे कत बैठत क्यों नाहीं । कहु कछु चूक परी हम पाहीं ॥
रहे मूक[1] है कहा ठगेसे । सोहत हो अलसात जगेसे ॥
उत्तर मोहिं देत क्यों नाहीं । मैं तबहीं तें बकत बृथाहीं ॥
तब चितये दृग कोर[2] कन्हाई । भाव अतिहि आधीन जनाई ॥
ग्वालि प्रवीण जानि सब लीनों । तुरत रोष उरते तजि दीनों ॥
हँसि करि मोहन कंठ लगाये । भले श्याम ऐसेहू आये ॥
श्रमित अंग जागे निशि जाने । अति सनेह मनहीं मन माने ॥
अंग सुगंध मर्द अन्हवाये । बसन अभूषण दे बैठाये ॥

दोहा–रुचि भोजन दै सेज पर, पौढ़ाये घनश्याम ॥
रस बश करि नव नागरी, किये सफल मन काम ॥

सो॰–सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजबासी दासको ॥
प्रेम प्रीति वश आय, सो गोपी वल्लभ भये ॥

कहत सोंह करि रसिक बिहारी । तुम प्रिय मोहि प्राणते प्यारी ॥
सदा बसत तुम मोमन माहीं । तुम बिन लहत अनत सुख नाहीं ॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावें । चतुर बचन कहि चितहि चुरावें ॥
यहै भाव युवतिनसों भाखें । सबहिनके मनकी रुचि राखें ॥
कुल मर्याद लोक डर त्यागी । सब गोपी हरिसों अनुरागी ॥
बिन देखे रसभाव बढ़ावें । नयनन देखतहीं सुखपावें ॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी । यह लीला ब्रजमें विस्तारी ॥
ललताको सुखदे सुखसागर । चले सदन अपने नट नागर ॥
उतते मग आवति चंद्रावलि । देखि रही सुंदरि छबि सांवलि ॥

---

१ गूंगे । २ आंखकीकोरसे ।

वने विशाल कमल दल लोचन। चितवन चारु काम मद मोचन ॥
इत मुसकाय श्याम तेहि हेरी। खोरि सांकरी भइ भट भेरी ॥
बिहँसि कह्यो चंद्रावलि प्यारी। कहां रहत हरि हमहिं बिसारी ॥
दोहा—तुम कैसे बिसरत प्रिया, हँसि बोले घनश्याम ॥
आज आय सुख लेहिंगे, रैनि तुम्हारे धाम ॥
सो०—सुनि हरषी जिय बाम, चली सदन मुसकायके ॥
लखि सुख पायो श्याम, मुदित गये अपने भवन ॥
चंद्रावलि मन अधिक उछाहू[1]। फूली फिरत कहत नहिं काहू ॥
सुखके करत मनोरथ नाना। वासर[2] कलप समान विहाना ॥
भये अस्त रवि निशि नियरानी। उडुगण[3] ज्योति देखि हरषानी ॥
हरि सुखमाके भवन सिधाये। चंद्रावलिके भवन न आये ॥
सूने घर देखी सो ग्वाली। आतुर गये तहां वनमाली ॥
सुखमा लखि हरिको सुखपायो। अतिही आदर करि बैठायो ॥
कोक कला कोविद वर नारी। हाव भाव मोहे गिरिधारी ॥
बसे तहां मोहन सुखपाई। चंद्रावलिकी सुरति भुलाई ॥
इत चंद्रावलि सेज सँवारै। बार बार हरि पंथ निहारै ॥
कबहूं भवन कबहुँ अँगनाई। कबहूं रहति द्वार टकलाई ॥
कबहूं शोच करत मन माहीं। आवहिंगे मोहन कै नाहीं ॥
कबहूं आलस कछु जिय जानी। धोवतिहै नयनन लै पानी ॥
दोहा—कबहुँ कहत हरि आयहैं, उरमें हर्ष बढ़ाय ॥
कबहुँ विरह व्याकुल जरति, अति आकुल अकुलाय ॥
सो०—कबहुँ कहत सुख पाय, बहुरमणी रमणीय पिय ॥
बसे अनत कहुँ जाय, मोसों झूंठी अवधि बदि ॥
ऐसेहि ऐसे रैनि विहानी। सुनी श्रवण वायस[4]की बानी ॥
भई काम दुख बाम उदासी। जाने श्याम कपटकी रासी ॥
कहति बाम कर मनके माहीं। श्याम नाम खोटो सब आहीं ॥

१ उत्साह। २ दिन। ३ नक्षत्र। ४ कौआ।

कोकिल श्याम श्याम अलि देखौ। श्याम जलद अहि श्याम विशेखौ ॥
तिनहींकी करनी हरि लीनी। मोसों प्रीति कपटकी कीनी ॥
ऐसे क्रोध विरह सब बाला। सुखमा सदन गये नँदलाला ॥
प्रात भये उठि चले तहांते। आलस भरे नयन रँगराते ॥
चंद्रावली सदन चलि आये। ठाढे अजिर रहे सकुचाये ॥
मन्दिर ते रिसभरी सुवारी। नखते शिखलौं रही निहारी ॥
मन मन कहत कुटिल अति गिरिधर। प्रात होत आये मेरे घर ॥
कियो मान मनमें अति भारी। आंगनमें ठाढे बनवारी ॥
और नारिके चिह्न विलोकी। रोकतिरिसहि रुकत नहि रोकी॥
दोहा-तब बोली करि मान तिय, कहा काम मम धाम ॥
ताहीके घर जाइये, बसे जहां निशि श्याम ॥
सो०-प्रात दिखावन मोहिं, आये रंग बनायके ॥
मैं सुख पायो जोहिं, भले सनेही लाल अब ॥
बिन गुण शोभित है उरमाला। बीच रेख सुख चन्द्र रसाला ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई। नागबेलि रँग पलक रँगाई ॥
लटपटि पाग महावर लाये। आलस नयन अरुण जल छाये ॥
चंदन भाल मिल्यो कहुँ बन्दन। यह छबि अधिक बनी नँदनन्दन॥
बलय गाढ बर पीठ धरेहौ। जान्यो नागरि अंक भरेहौ ॥
इतने पर डाहन मुहिं आये। सौंह करन को इत उठि धाये ॥
जाउ तहीं जासों मन मान्यो। जैसेहो तैसे मैं जान्यो ॥
विहँसि कह्यो तब लाल बिहारी। तुमते और कौन मुहिं प्यारी ॥
तुमबिन मोहिं कहूं कल नाहीं। बसत सदा मन तेरे माहीं ॥
यह चतुरई कहां पढ़ि आई। चीन्हे हो गुण राशि कन्हाई ॥
यह कहि गई भवनमें भामिन। रीझे श्याम देखि छबि कामिन ॥
सन्मुख जाय भये पुनि ठाढ़े। द्वारकपाट दिये पुनि गाढ़े ॥
दोहा-पौढ़ि रही तिय सेजपर, बदन मूंद अनखाय ॥

१ मेघ । २ पान । ३ बरोठा । ४ लाल ।

हरि तन पुनि चितयो नहीं, उरमें प्रेम बढ़ाय ॥
सो०—प्रभु गति लखी न जाय, जो चाहैं सोई करैं ॥
पौढ़ि रहे सँग जाय, पौढ़ी तिय जहँ मानकर ॥
जो देखे तौ संग कन्हाई। चली बहुरि तिय उठि झहराई ॥
खोलि किवार अजिरमें आई। देखे ठाढ़े तहां कन्हाई ॥
विनय करत नयननकी सैनन। चकित भई देखत तिय नैनन ॥
भीतर भवन गई पुनि प्यारी। तहां अंक भर लई मुरारी ॥
तब नागरि रिससबै भुलाई। चेटक करि वश करी कन्हाई ॥
मान छुड़ाय हुलास बढ़ायो। तियको सुख दीनो सुखपायो ॥
तब निज धाम गये गिरिधारी। चंद्रावलि उर आनँद भारी ॥
तहां सखी दश पांचक आई। चंद्रावलि बैठी जेहिं ठाईं ॥
औरै वदन और अँग शोभा। निरखि रही दृग ह्वै मन लोभा ॥
कहत पिया कह हर्ष बढायो। कहै न लूट कहूं कछु पायो ॥
क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी। यह छबि कही न जाय तुम्हारी ॥
हमसों कहा दुरावति प्यारी। हमजाने तोहिं मिले बिहारी ॥
दोहा—चंद्रावलि करि चतुरई, ज्वाब सखिन नहिं देह ॥
रही मूंद मुख मंद हँसि, भीजी श्याम सनेह ॥
सो०—रह्यो ध्यान उरछाय, वह लीला बिसरे नहीं ॥
मुखसों कह्यो न जाय, गूंगेको गुड़सों भयो ॥
तब बोलीं बूझति कह आली। युवती मनमोहन वनमाली ॥
है लीला अद्भुत सब जिनकी। कही न जात बात सखि तिनकी ॥
हाहा कहि चंद्रावलि हमसों। हमहूं सुने श्याम गुण तुमसों ॥
कैतोहिं मिले यमुनके तीरा। कैतोहिं मिले भवन बलवीरा ॥
तब चंद्रावलि गद्गद बानी। हर्ष सहित हरिकथा बखानी ॥
सुनि हरि चरित ललित सुखकारी। भई प्रेमवश सब ब्रजनारी ॥
चंद्रावलि धनि धन्य कही तब। कहन लगी हरिके गुणगण सब ॥

१ छिपावति।

नंदनँदन सब लायकहैंरी । सबहिनके सुखदायकहैंरी ॥
बसे रैनि काहूके जाई । काहू देत प्रात सुख आई ॥
काहूको मन आय चुरावें । काहूसों अपनो मन लावें ॥
काहूके जागत सिगरी निशि । काहूको उपजावतहैं रिशि ॥
व्रजवासी प्रभुके मन भावें । तैसेइ तैसे चरित उपावें ॥

दोहा-यह लीला आनँद भरी, सकल रसनको सार ॥
भक्तनहित हरि करतहैं, गाय तरत संसार ॥

सो०-घर घर करत विहार, व्रज युवतिनके संग हरि ॥
गावतिहैं श्रुति चार, व्रजवासी प्रभुके यशहिं ॥

श्रीराधा वृषभानु दुलारी । नन्द नँदन पियकी अति प्यारी ॥
सहज रहै अपने मनमाहीं । नन्द सुवन निशि अन्त न जाहीं ॥
नन्द भवनके मेरे गेहा । रहै सदा चित यही सनेहा ॥
श्याम बसे काहू नारीके । आये सदन प्रात प्यारीके ॥
रति रँग चिह्न अंग परवाने । सोहत नयन अरुण अलसाने ॥
प्यारी देखि रही मुख पियको । जान्यो रंग लग्यो कहुँ तियको ॥
तब मन बिहँसि कह्यो श्रीराधा । आज बन्यो पियरूप अगाधा ॥
पर उपकार हेतु तनु धार्यो । पुरवन सबकी साध विचार्यो ॥
कहां पढी यह नीति बतावो । हमहूंको सो ठाम सुनावो ॥
कहो कहां काको सुखदीनों । धनिधनि यह उपकार जु कीनों ॥
धनि यह बात आज मैं जानी । क्यों नहिं कहियत प्रकट बखानी ॥
धन्य मोहिं यह दरश दिखायो । धनि धनि जासों नेह लगायो ॥

दोहा-भली दिखाई आज यह, अद्भुत छबि अभिराम ॥
सूर[1] उदय लोचन कमल, चन्द उदै पर श्याम ॥

सो०-उर कुच कुंकुम दाग, अधर दशन छबि राजई ॥
रँगी महावर पाग, यह शोभा अनुपम[2] बनी ॥

क्यों उठि भोर यहांको आये । काहेको इतने सरमाये ॥

१ सूर्यनारायण । २ उपमारहित ।

तुमहूं भले भलीहैं वेऊ । कीनो भलो भले मिलि दोऊ ॥
कीनोहै इतनो हित जिनते । तौ अब कित बिछुरेहो तिनते ॥
जाहुतहीं वे सुनि दुख पैहैं । बहुरो तुमसों मन न मिलैहैं ॥
तिनहींको सुख दीजै मोहन । जिनसों निशि बिलसे मिलि गोहन ॥
तिय सन्मुख नहिं लखत कन्हाई । बदन नवाय रहे सकुचाई ॥
कबहुँ नयनकी कोर निहारैं । कबहुँ चरण नख भूमि उखारैं ॥
प्रगट त्रसित मनमत मुसकाई । खंडित वचन सुनत हरषाई ॥
पियको सुख प्यारी नहिं जानै । रोष करतहू पिय मनमानै ॥
जोइ आवत सोइ कहत बदनते । जाहु जाहु पिय कहत सदनते ॥
तुम जानतजिय हमहिं सयाने । और बसत सब लोग अयाने ॥
रैनि बसत कहुँ भोर हमारे । आवत नाहिं लजात ललारे ॥

दोहा-तबहिं श्याम वाणी मृदुल, बोले अति सकुचाय ॥
किन देख्यो कौने कह्यो, झूंठहि तुमसों आय ॥
सो०-कहति झूंठ यह बात, खोटी ब्रजनारी सबै ॥
तुमते प्रिय को आन, सौंह करौं जो मानिये ॥

बिनहीं बोले रहिये जू पिय । कत ऐसे वचनन दहिये हिय ॥
झूठीं सबै एक तुम सांचे । नीके लाज छांडिकै नांचे ॥
सौंह कहूं सुनिबो करि पायो । सो अब इहां काम है आयो ॥
ऐसे खिजत पीयसों प्यारी । आई तहां और ब्रजनारी ॥
सखियन देखि कुँवरि मुसुकाई । उर अन्तर है रिस अधिकाई ॥
तिन्हें कह्यो सैनन में प्यारी । देखहु हरिकी छबिहि निहारी ॥
मौनहि रहे श्याम सकुचाई । युवति विलोकति छबि अधिकाई ॥
कहति सबै हँसि हँसि ब्रजबाला । कहँ पाई छबि यह नँदलाला ॥
तबहिं सखिन सों कह्यो किशोरी । करत इते पर सौंह लखोरी ॥
निशि औरनके चितहिं चुरावत । दरशन देन प्रात इत आवत ॥
तुमहीं अंग चिह्न पहिचानो । सही परै सो बात बखानो ॥
कृपा करैं तहँ हीं पग धारें । नहीं काज इहँ वेगि सिधारें ॥

दोहा—प्यारी उर अतिरोष लखि, अरु सखियनकी भीर ॥
तब वहँते बहरायके, द्वार गये बलबीर ॥
सो०—सोच करत उरमाहिं, भरे विरह आनन्दरस ॥
जाय सकत कहुँ नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत ॥

अथ मध्यममानलीला ॥

जबहीं श्याम गये द्वारे तब । कियो मान प्यारी अपने मन ॥
कहति सखिन सों देखो तुम अब । बहुरि दोष देती मोको तब ॥
ऐसे श्याम गुणनके आगर । चोरत चित्त फिरत अति नागर ॥
ऐसे ख्याल मोहिं दिखरावें । जान देहु अब यहँ जिन आवें ॥
इहां काज उनको कछु नाहीं । मैं बैठी अपने घर माहीं ॥
जाव तुम्हुँ अपने सब कामहिं । यों कहि प्रिया गई उठ धामहिं ॥
नख शिख रोष भरी पिय प्यारी । यौवन[1] रूप गर्व उर भारी ॥
चली सखी यह दशा निहारी । द्वारे पर देखे बनवारी ॥
कहति सुनौ मोहन पिय हमसों । प्रिया रोष कीनो अति तुमसों ॥
तुम्हरे आवत अति रिसपाई । यह तुम कहा करी चतुराई ॥
सुनत बात यह कुँवर कन्हाई । भये चकित अति गये झुराई ॥
जान्यो मान कियो फिर प्यारी । भये विरहव्याकुल तनु भारी ॥
दोहा—तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावत नाम ॥
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कच्यातकतश्याम ॥
सो०—तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखायकै ॥
अब लागे पछतान, प्रथम विचार करयो नहीं ॥
यह सुनि धीरज कियो कन्हाई । तब इक युवती और बुलाई ॥
तासों कहि सब बात जनाई । दूती करि हरि ताहि पठाई ॥
कहत श्याम तोसों यह बानी । बेगि[2] मिटे जिय मान सयानी ॥
दूती गई करति मन साधा[3] । बैठी तहां जाय जहँ राधा ॥
प्यारी मान ठान दृग बैठी । हृदय रोष भौंहैं करि ऐंठी ॥

१ युवावस्था । २ शीघ्र । ३ विचार ।

उरमें सौति शाल अति शाले। नेक नहीं इत उत कहुँ हाले ॥
दूती कछु थाह नहिं पावे। विना भीत कहँ चित्र बनावे ॥
मनहीं मन दूती पछिताई। अति आतुर मोहिं श्याम पठाई ॥
यह इत उत कहुँ नाहिं निहारै। कहा करौं मन मांझ विचारै ॥
तब कहि उठी दूतिका नारी। मान कियो वृषभानुदुलारी ॥
कहा करौं मोहन अति कीन्ही। उनकी बात आज मैं चीन्ही ॥
ऐसे मैं उनको नहिं जाने। अब कैसे उनसों मन माने ॥
दोहा—घर घर डोलत फिरत निशि, बोलत लगतनलाज ॥
आय दिखाये प्रात मुख, नटकेराति रँगसाज ॥
सो०—मैं आई अब बाज, जित चाहो तितही फिरो ॥
उनको यहां नकाज, राज करो ब्रजमें सदा ॥
दूती सुनि प्यारी की बानी। अन्तर प्रेम रोष लपटानी ॥
कह्यो यखुनते मैं गृहआई। सखी एक यह बात सुनाई ॥
तब मैं रहि न सकी घरमाहीं। अली प्रकृति हरिकी यहनाहीं ॥
अब द्वार ते हरि न टरतहैं। पर घर जानकि सौंह करतहैं ॥
मन पछितात कहत घनश्यामा। भूले हुँ ऐसो करहुँ नकामा ॥
तूजिनमान तजै सुन मोसों। यहै कहन आई मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावैं। परघर जानकि बात मिटावैं ॥
अब मोको यह बात लखाई। जाहिंन परघर कुँवर कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी। द्वारेहैं हरि तब यह जानी ॥
उमगि उठ्यो रससुनि मनमाहीं। बाहर प्रगट कियो सोनाहीं ॥
काहको हरिद्वार खेरी। कौन राखे जाय घेरी ॥
तूरहि मान कितहि रिस पावति। यह हरिसों मैंही कहि आवति॥
दोहा—लई तीयके हीयकी, चतुर दूतिका जान ॥
अति आतुर हरिपै गई, कहति आनकी आन ॥
सो०—कही मनाके लाल, नेकु मरम नहिं पाइये ॥

१ नटके। २ स्वभाव। ३ विख्यात। ४ राधा।

दीठ न जोरति बाल, सूधे मुख बोलति नहीं ॥
अपनी सी बहुतै मैं भाषी । सुनि उनमौन हृदय धरराखी ॥
नेकनहीं उत्तर मुख बोलैं । अति रिस कंपत इत उत डोलैं ॥
मैं जु कही सो सुनहु कन्हाई । भई बूंद बारूद किनाई ॥
भरि भरि लेत नयन दृगकोरैं । नहीं डरत बैठी मुखमोरैं ॥
तिरछी करि करि भौंहन तानै । कोटि कोटि अवगुण मुखगानै ॥
ऐसीहै यह दीठि[1] तुम्हारी । कहा बसीठि[2] करै कोउनारी ॥
सुनहु रसिक बर कुँवर कन्हाई । आपहि लीजे जाय मनाई ॥
याको नाम भयो गढ़वाई । लीजे ताहि सुरंग लगाई ॥
यह सुनि विरह भरे बनवारी । मुरछिपरे धरसुरति बिसारी ॥
सखी उठाय लये अँकवारी । चौंकत बिकल होत बलिहारी ॥
नागर बड़े कहावत हौजू । धीर धरो सुखपावत हौजू ॥
बातन नेकु तोहि गहि पाऊं । तौतबहींमैं तुमहिं मिलाऊं ॥
दोहा—धीरजदै घनश्यामको, दूती गई उताल[3] ॥
जाय कह्यो प्यारी निकट, प्यारे श्याम बेहाल ॥
सो०—मुख नहिं बोलत वयन, अतिव्याकुल तेरे विरह ॥
भरि भरि डारत नयन, कहा कहौं न सँभार कछु ॥
बारहि बार कहति पछितानी । देखु जो तू कुँवरि सयानी ॥
तूही प्रिया भावती हरिकी । और नहीं कोऊ तो सरकी ॥
तेरेहि रसवश कुँवर कन्हाई । तेरे तनक विरह कुम्हलाई ॥
तेरेहि रूप अधीन खरेरी । तेरेहि चितवनके चेरेरी ॥
तेरेइरंग बसन तनुधारें । तेरेइरँगको तिलक सँवारें ॥
चन्द्रवदन तेरो लखि गोरी । मोरचन्द्र शिर मुकुट कियोरी ॥
तेरोइ चरित सुनै अरु गावै । तू मानै भावै जिनभावै ॥
अति अनुराग श्यामको तेरो । करि बिचार नीके मैं हेरो ॥
जो जाको नीकेकरि जानैं । सो तासों तैसो हित मानैं ॥

---

१ दृष्टि । २ दूत । ३ घबराईहुईशीघ्रतासे ।

यहै प्रीतिकी रीति पियारी। कहेतु बोलि लेहुँ गिरिधारी॥
तूकहँगई कहन कह आई। मैंजानति हरि तोहिं पठाई॥
म.नत कौन कही अब तेरी। जानतिहौं हरि चरित्त बडेरी॥
दोहा-अबधौं को तिनसों मिलै, जिन्हें परी यह बान॥
उरमें राखत आन कछु, कहत करत कछु आन॥
सो०-हैं वे कपटनिधान, बहुनायक पूरे गुणन॥
जिनको करत बखान, जिन वामन ह्वै बलिछल्यो॥
मान किये अब नाहिं बनेरी। देखु विचार हिये अपनेरी॥
जाके गुण गण सुर मुनि मोहैं। सो तेरे गुण गणि मणि पोहैं॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावें। सोतेरे दरशन सुख पावें॥
शिव विधि जाके द्वार खरेरी। सो प्रभु तेरे द्वार परेरी॥
जाके पद कमलाकर लीने। सो प्रभु पद चितत मनदीने॥
अति आतुर नँदलालहियेरी। सोंह करति हौं शशिमुखेरी॥
सुनु प्यारी अति हठ नहिं कीजै। सर्वसवारि श्यामपर दीजै॥
यह योवन वर्षाको पानी। गर्व नकीजै याहि सयानी॥
सब सुख हरिके संग कियेरी। कृष्ण विमुख कै काज जियेरी॥
पूरब पुण्य सुकृत फल तेरो। भामिनि मान कह्यो करमेरो॥
हरिके रस रँग जो मनभीजै। रूपसुधा जो नयनन पीजै॥
सौंह चरण तेरकी कीजै। सफल दरश तिय तो यों जीजै॥
दोहा-वृथा जान नहिं दीजिये, हरिसों करिकै मान॥
उठति वैसके दिननको, सुन तिय यहै सयान॥
सो०-हिलि मिलि करहिकलोल, मैं तेरे हितकी कहति॥
लेहिं श्यामको बोल, परे द्वार विलपत दई॥
सोई चतुर सुलक्षण नीकी। सदा भावती जो पियजीकी॥
यौवन गुण द्युति अरुहित पीको। है सुन्दर तेरे शिर टीको॥
तेरे हित सब ब्रजकी बाला। किया बुलाय रास नँदलाला॥
तू तनु श्याम प्राणरी प्यारी। परछांई अरु सब ब्रजनारी॥

तोसी और नहीं ब्रजगोपी । तेरेइ रूपवसे तिय ओपी ॥
सुंदर श्याम सकल सुखदायक । कहा भयोरी जो बहुनायक ॥
तो समान वृषभानु ललीको । शशिहि कहा डर कुमुदकलीको[1]॥
ऐसे जब दूती समुझाई । तब बोली तिय कछु मुसुकाई ॥
बादहि बकति आय मेरे घर । बेधति हैं ऐसे वचनन शर ॥
इतकी इत इतकी उत जाई । मिलवत झूंठी बात बनाई ॥
जो चहिहैं तो आपुहि ऐहैं । सौंह करैं अरु हाहाखैहैं ॥
प्रीति रीति कछु जानत नाहीं । जोइ आवत सोइ कहत वृथाहीं[2]॥

दोहा–जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लियो तब जान ॥
मानत नाहीं लाड़िली, श्याम मिलाऊं आन ॥

सो०–कह्यो सखी मुसकाय, नहिं मानत मेरो कह्यो ॥
श्याम मनावें आय, मैं जानी तब मानिहैं ॥

अरी मानवे बहुतें तेरे । लगत मानती कोई हेरे ॥
हांसी खेल औरको माई । तुलत न तेरे विरस रुखाई ॥
ऐसेही रहि जो लगि जाऊं । यह सुख हरिको आनदिखाऊं ॥
पिय मन नूतन चोप बढाऊं । अतिरस रूप अनूप उपाऊं[3] ॥
यह कह गई श्याम पै आली । कहत आज सुनिये वनमाली ॥
मानति नाहिं मनायो प्यारी । को जानें जियमें कह धारी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई । सुनितैं अधिकहोतरिसहाई ॥
तुम आतुर वैसी गति वाकी । आवति जाति बीचमें थाकी ॥
आपहि चलि लीजिये मनाई । और भांति नहिं वनत बनाई ॥
वहै बयारि जैसिये जबहीं । पीठ आडिये तैसी तबहीं ॥
मोसी जो पठवहु तुम कोरी । नहिं मानत वृषभानु किशोरी ॥
हौंतो कहति तुम्हारे हितकी । पाई है कछु वाके चितकी ॥

दोहा–चले बनतहै लाल अब, और यतं नहिं कोय ॥
काछ काछिये जौन हरि, नाच नाचिये सोय ॥

---

१ कमलकली । २ वृथा । ३ उपाय ।

सो०–आप काज महकाज, बड़े कहि गये बात यह ॥
तजहु श्याम उर लाज, करि विनती तियसों मिलहु॥
चलो चले तुम्हरे हठ जैहैं। देखत प्रेम उमँग उर ऐहैं ॥
सखी संग तब नवल विहारी। गये भवन बैठी जहँ प्यारी ॥
आगे भये सकुचिकै ठाढे। अति आधीन प्रेम रस बाढे ॥
नेक नहीं इत उत कहुँ डोलैं। चित्र लिखेसे मुख नाहिं बोलैं ॥
यदपिलाल गाढे अति जीके। सकल सयानप भूले नीके ॥
प्यारी देखि पियहि मुसकानी। जिय डरपे मोते यह जानी ॥
अति आनन्द भयो मन माहीं। चुपही रही कह्यो कछु नाहीं ॥
मन मन कहत न अब उचटाऊं। आदर कर पियको बैठाऊं ॥
मोसों श्याम बहुत सकुचाने। अब नहिं जैहैं धाम बिराने ॥
सहचरि कह्यो देखुरी प्यारी। कबके ठाढेहैं गिरिधारी ॥
मान मनायो प्यारी पियको। तूपिय जिय पिय जीवन जीको ॥
प्राणहिं तनुहिं रूसिबो कैसो। यह कहुँ भयो सुन्यों नहि ऐसो ॥
दोहा–करि आदर बैठारि पिय, हँसलै कंठ लगाय ॥
घर आये नहिं कीजिये, ऐसी कित सकुचाय ॥
सो०–है तू नागरि बाम, मनमें कह ऐसी धरी ॥
वे ठाढेहैं श्याम, तू मुखते बोलति नहीं ॥
तब हँसि कह्यो भली पिय बैसो। अबजिन काम करहु कहुँ ऐसो॥
अबकी चूक नहीं मैं मानी। और दिनाको रहिये जानी ॥
मेरी सौंह करो मो आगे। तज सँकोच बोलो डर त्यागे ॥
कह्यो सौंहकर मोहन तबहीं। और तियन पर जात न कबहीं ॥
नंद भवन ते अबहीं आये। तुम्हरो रोष देखि सकुचाये ॥
ऐसी अब काहेको बोलो। अबलोंकी करनी नहिं खोलो ॥
अब जु कालिते अनत सिधारे। तौ तुमहीं जानोगे प्यारे ॥
तब हरि हँसि कर शिरपर राखे। बाराहि बार सौंह कर भाखे ॥

१ लाजकर। २ घर।

सहचरि हँसि कर साखि रहीजू। सखी आज तै बात यहीजू ॥
पानदिये प्यारी तब लालहि। आई सखी सकल तेहि कालहि॥
सौंह करी सबहिन यह जानी। हँसे श्याम श्यामा मुसकानी ॥
आदर कर सबको बैठायो। निरखि युगल सबहिन सुख पायो॥
दोहा-कह्यो सखिनसों हँसि प्रिया,भरि आनँद उत्साह ॥
तुमहूं सब मिलके कहो, भये श्याम अब साह ॥
सो०-लखिलखि सखी सिहात,यह सुख लाड़िलि लालको
बसे श्याम तहँ रात, प्रात चले अपने सदन ॥
चले धामनिज श्याम सकारे। देखे ठाढे नन्द दुवारे ॥
सकुच फिरे घर जात लजाने। मधुदाके घर जाय समाने ॥
चकित बाल जब श्याम निहारे। कहत लाल यह ख्याल तुम्हारे ॥
कहां हुते गवने कित माहीं। कबहूं दरशदेति हौ नाहीं ॥
रहत कहां हौ सकल लुभाने। आयपरे इत कहां भुलाने ॥
कहौ कहाहौ कछू डरेसे। आलस भरे जम्हात खरेसे ॥
बसेकहूं निशि तिय संग जागे। नयन अरुण अतिरस रँगपागे ॥
मलयज उरज छाप उर धारे। द्वैशशि मनहुँ उदित उजियारे ॥
नयन कछू सकुचतसे ऐसे। शशिके उदय सरोरुह जैसे ॥
पुतरी अलि उडसकै न जानो। उरझरहै अँग गात न मानो ॥
डग मगातसे डग पग डोलो। रसमसे गात शृँगार अमोलो ॥
अंग अंग शोभाके सागर। धनि धनि बसे जहां रतनागर ॥
दोहा-बिहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुमबात ॥
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥
सो०-सुनि हरषी जिय नारि, पुलक गात आनंद उर ॥
ऐहैं आज मुरारि, सांझ परे मेरे सदन ॥
प्रातहिते मन हर्ष बढ़ायो। नव शत साज शृँगारबनायो ॥
बार बार दर्पण मुख देखे। भूषण बसन अंग अवरेखे ॥

१ चन्दन। २ कमल।

कद्रू सुत छबि छाजत वेणी। मांग सुधारत दधि सुत श्रेणी ॥
भुवन तीन सुत रेख सँवारे। धनपति पुरको नाम सुधारे ॥
हीरावलि उर पर लै धारे। श्याम मिलन सुख मनहिं बिचारे॥
रचि रचि सुमनन सेज बनावें। केसर चन्दन अगर मिलावें ॥
बहु नायक नँदसुवन कन्हाई। गये अनत याको बिसराई ॥
बासेर ऐसे करत बिहानो। एक याम निशिको नियरानो ॥
परयो शोच विरहा अकुलानी। श्याम न आये कहँ धो जानी ॥
गये सांझहीको कहि आवन। अजहूं नहिं आये मनभावन ॥
कैधों आवत हैं अब धाये। किधों परे कहुँ फंद पराये ॥
वे बहु रमणी रमण बिहारी। कैधों मेरी सुरत बिसारी ॥

दोहा—कुमुदाके घर हरि रहे, बढ्यो अधिक उरहेत ॥
भीजे दोऊ प्रेमरस, अरस परस सुखलेत ॥
सो०—मुदित श्यामसँग बाम, क्षण सम बीततयामतिह ॥
याको युग समयाम, बीतत नैभतारे गनत ॥

वैसे वहां याहि इहि रीती। भयो भोर रजनी सब बीती ॥
मनहीं मन युवती पछितानी। मोसों श्याम कुटिलई ठानी ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई। रही बैठि सदनहिं मुरझाई ॥
आई तहां सहज इक आली। देखी विरह विकल तनु ग्वाली ॥
लोचन जलज भरे जल ढारे। मन मारे महिनखन बिदारे ॥
बूझन लगी निकट सो जाई। कहा भयो तोकोरी माई ॥
आनँद रहित आज मुख तेरो। देखत होत विकल मन मेरो ॥
सोसौं बात भई है कैसी। मोहिं सुनाय कहत किन तैसी ॥
तब बोली मधुरे तिय बानी। अंचर पोंछ नयन को पानी ॥
कहा कहौं तोसोंरी आली। कपटी कुटिल कठिन वनमाली ॥
मोसों गये अवधि बदि माई। अनतहि लुब्ध रहे कहुँ जाई ॥
कियो नहीं मेरे गृह आवन। भये सखी नयना दोउ सावन ॥

१ नागिन। २ दिन। ३ पहर। ४ आकाश। ५ रात। ६ पृथ्वी।

दोहा-ऐसे गुण हरिके सखी, निपट कपटकी खान ॥
अब उनसों मोसों कहा, बने लिये पहिचान ॥
सो०-तोहिं मिलें जो आज, मेरीसों कहियो उन्हें ॥
गहौ कछु जियलाज, बचननके सांचे बड़े ॥
उन्हैं गई मैं कछू बुलावन । आपहि अजिर गये करि पावन ॥
मोपै कृपा आप यह कीन्ही । तासों कहौं तबहि मैं चीन्ही ॥
कालिह कहूं जागे तिय गोहन । जात हुते अपने घर मोहन ॥
द्वारे नन्दहि देखि डराने । मेरे गृह आये सकुचाने ॥
डग मग पग दृग नींद भरेरी । बारहिं बार जम्हात खरेरी ॥
जब मैं कही कहांते आये । तब मोतन सन्मुख मुसकाये ॥
उत्तर नहीं दियो सकुचाई । श्याम करी तब यह चतुराई ॥
कह्यो धाम मेरे निशि आवन । आपहि श्रीमुख वचन सुहावन ॥
रैनि जागि मैं सेज सँवारी । ताते जरी विरहिकी मारी ॥
इतनी कहत द्वार हरि आये । ग्वालिनि भीतरते लखिपाये ॥
देखतही रिसमें झहरानी । कही सुनाय श्यामको बानी ॥
धन्य धन्य यह घरी विधाता । आये मेरेजू सुखदाता ॥

दोहा-ऐसे कहि चुपह्वै रही, मुरि बैठी रिस गात ॥
मधुरे वचननसों कहति, निकट सखीसों बात ॥
सो०-आयेहैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे ॥
इनसों मिलिहै कौन, फिरत कहा कोऊ बहो ॥
कृपा करहिं अब इतहि न आवैं । उतही जाँय जहां सुखपावें ॥
सखी लखे सब अंग श्यामके । जागे कहुँ निशि संग बामके ॥
कहुँ चदन कहुँ बन्दन रेखा । कहुँकाजर कहुँ पीक सुवेखा ॥
लखि स्वरूप हरितन मुसकाई । मान कियो यह दियो जनाई ॥
मन मन शोचत कुँवर कन्हाई । परे कठिन तियके फँद आई ॥
मेरो नाम सुनतही ऐंठी । मान कियो मोसों फिर बैठी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई । सैननहीं सों सखी बुलाई ॥

सो कहि चली जाति घरमाई । तू बैठी जो मान दृढाई ॥
अनतहि ठाढे भये कन्हाई । तहां सखी सहजहि चलि आई ॥
निरखि वदन दोउन हँसि दीनो । सखी कह्यो तुम यह कहकीनो ॥
तब हँसि कह्यो सखीसों गिरिधर । मैं मनायलेहों तू जा घर ॥
यहसुनि बिहँसि गई कहि आली । जाय मनाय लेहु बनमाली ॥
दोहा-रसिकनके मणि जानमणि, विद्या मणि गुण पाय॥
आपनहूं तहँ ते गये, तिनको दरश दिखाय ॥
सो०-रही अकेली बाम, फिरकै चितयो द्वारतन ॥
तहां न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो ॥
तब जानी फिरि गये कन्हाई । रहीतिया मनमें पछिताई ॥
भई विरह व्याकुल अति नारी । मिटगयो मान हृदय दुखभारी ॥
कहत कहामैं यहमति ठानी । आवतही हरिसों झहरानी ॥
भीतरलों आवन नहिं दीनों । कहा क्रोध मोको वह कीनों ॥
ज्यों त्यों कर मेरे घर आये । सो देखतही मैं उचटाये ॥
बार बार ऐसे पछिताई । मनही रही मसोसाखाई ॥
श्याम गये निहचै जब जानी । न्हान चली तब यमुना पानी ॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई । कोऊ सखी न संग बुलाई ॥
पहुँची यमुना तुरत अन्हाई । चली बहुरि घरको अतुराई ॥
भये श्याम मारगमें ठाढे । पांच वर्षके है छवि बाढे ॥
आगे है नागरिसों बोले । सुन्दर कोमल वचन अमोले ॥
कहां जाति है री तू नारी । चलु बोलति जाकी तूप्यारी ॥
दोहा-बनहिं बुलाई श्याम तोहिं, लेन पठायो मोहिं ॥
सुनत वचन चकृत भई, रही बाल मुख जोहिं ॥
सो०-श्याम नाम सुनि कान, अति आनँद उरमें भयो ॥
अगम चरितको जान. ब्रजबासी प्रभु कान्हके ॥
करगहि लियो चली हरषाई । गोप कुमार जान गृहलाई ॥

१ देखि ।

कहत श्याम बन धाम बुलाई । या बालककी लैन पठाई ॥
पूछौं याहि भेद बनको सब । कहा कह्योहै हरियासों अब ॥
अति आनंद भयो मन बालहि । अंतहपुर लैगई गुपालहि ॥
तहां चरित्र कियो नँदलाला । भये तरुण सुन्दर ततकाला ॥
भुज गहि लई हर्षि उर लाई । चकित भई नागरि सकुचाई ॥
छांडि देहु मन मुदित कहत तिय । ऐसे चरित करत धन धन पिय ॥
ऐसे हरि भामिनी मनाई । सुख दे गये सदन सुखदाई
परमहर्ष मन भई गुवारी । रैनि विरह तनु ताप निवारी ॥
समुझि समुझि कै पिय गुन मनसें । पुनि पुनि हर्षित पुलकित तनमें ॥
हरियेचरित करत ब्रज डोलैं । यशुमति ढिग बालक जिमि बोलैं ॥
निजगृह गये सदा नँदलाला । परम विचित्र श्यामके ख्याला ॥

दोहा–ब्रजबासी प्रभुकी कथा, अति विचित्र सुखखान ॥
कहत सुनत गावत गुणत, हरषत संत सुजान ॥

सो०–ब्रजनायक घनश्याम, नट नागर गुण आगरे ॥
ब्रजबासी सुखधाम, गोपीपति नँद लाड़िले ॥

अथ गुरुमानलीला ॥

सखिन संग वृषभानु किशोरी । चली न्हान प्रातहि उठि गोरी ॥
जाकेघर निशिबसे कन्हाई । ताघर ताहि बुलावन आई ॥
ठाढी भई द्वार पर आई । कढे तहांते कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ । रहे चकित इत उतते दोऊ ॥
फिरी सदनको तुरतहि प्यारी । न्हान जानकी सुरति बिसारी ॥
भई बिकल तनु रिस अति बाढ़ी । रह गईं सखी निरखि सब ठाढ़ी ॥
रह गये ठाढे श्याम ठगेसे । सकुचाने उर शोच पगेसे ॥
जब देखे हरि अति मुरझाये । तब सखियन भुज गहि समुझाये ॥
उलटि भई सब हरिकी धाई । दैकै बांह प्रिया जहँ ल्याई ॥
देखी श्याम आय तहँ राधा । बैठी मान दृढ़ाय अगाधा ॥

१ प्रसन्न । २ गृह ।

रिसहीके रस मगन किशोरी। भई श्याम मति देखत भोरी ॥
ठाढ़ चकित चित्त अकुलाहीं। मुखते वचन कहे नाहिं जाहीं ॥
दोहा-व्याकुल लखि नँदलालको,सखियन कियो बिचार॥
अब दोऊ जैसे मिलें, करिये सो उपचार ॥
सो०-अति रिस नारि अचेत, कोसुनिहै कासों कहैं ॥
इत ये धरत न चेत, परी रुठावनबानइन ॥
प्यारी निकट गई सब आली। ठाढ़ पौरे रहे बनमाली ॥
कहत मानकीनों तैं प्यारी। न्हान जानते फिरी कहारी ॥
तोहिं लखत हैरी गिरिधारी। अतिही डर तनु सुरति बिसारी ॥
मुरछि परे धरणी अकुलाई। तरुतमाल जनु गयो झुराई ॥
तेरी सों कछु चितयो उनको। नेकहु चैन रह्यो नहिं तिनको ॥
तेरे नयन अरी अनियारे। किधौं बान खर सान सँवारे ॥
भौंहकमान तान यों मारे। क्यों कर राखे प्राणपियारे ॥
घायल जिमि मूर्छित गिरिधारी। अमी वचन अब सींचत प्यारी ॥
बहुनायक वे तू नहिं जानें। तिनसों कहा इतो दुख मानें ॥
बाँह गहो हरिको ढिग लावैं। अब वे निज अपराध क्षमावैं ॥
गहत बाँह तुमहीं किन जाई। मोसों कहा गहावन आई ॥
कालिहिसोंह मोहिं उनदीनी। आजहि यह करणी पुनि कीनी ॥
दोहा-देखि चुकी उनके गुणन, निज नयनन सुखपाय ॥
तिन्हें मिलावति मोहिं अब, बांहगहावति आय ॥
सो०-मिलों न तिनसों भूल, अब जोलों जीवन जिवहुँ ॥
सहों बिरहकी शूल, बरु ताकी ज्वाला जरों ॥
मैं अब अपने मन यह ठानी। उनके पंथ न पीऊं पानी ॥
कबहूं नयन न अंजन लाऊं। मृगमद[3] भूलि न अंग चढाऊं ॥
हस्तवलै पटनील न धारौं। नयनन कारे घन न निहारों ॥
सुनौं न श्रवणन अलि पिकबानी। नीलेतनुपरसों नाहिं पानी ॥

१ दुआर। २ अमृतवचन। ३ कस्तूरी।। ४ कान। ५ भौंरा। ६ हस्त।

सुवत प्रियाकी बात सुहाई । हर्षत उठे पौरि कन्हाई ॥
सखी कहति यों हठ नहिं लीजै । हरिसों ऐसा मान न कीजै ॥
तूहै नवल नवल गिरिधारी । यह यौवन हैदी दिन चारी ॥
क्षण क्षण जों करको जलछीजै । सुनरी याको गर्व न कीजै ॥
नंदनँदन पिय मुख सुखकारी । तूकरि नयन चकोर पियारी ॥
हुतो प्रेम धन यह तौ प्यारी । सो अब कहु तैं कियो कहारी ।
कहति हुती रूसों नाहिं कबहीं । सो अब रूसतिहै जब तबहीं ॥
सुनिहैं सुघर नारि जो कोई । करिहैं हँसी प्रेमकी सोई ॥

दोहा–मान कियो जो भावते, सो न भाव वो होय ॥
डरते रिसवत प्रेम कित, अंत भावतो सोय ॥
सो०–लाख कहे किन कोय, पिय सनेह जो गाइहै ॥
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचो किनहुँ ॥

तुम वे एक न दोय पियारी । जलते तरँग होति नहिं न्यारी ॥
रस रूसनो ओसकन जैसो । सदा नरहिये चहिये तैसो ॥
तजि अभिमान मिलहिं पिय प्यारी । मान राधिका कही हमारी ॥
चुप न रहत कह करत मनावन । तुम आईहो बात बनावन ॥
बहुत सखी घर आई यातें । सुरति दिवावत पिछली बातें ॥
मोसों बात कहतहौ काकी । जाहु घरन अब कछुहै बाकी ॥
को उनकी यहँ बात चलावत । हैंवे अब तुमहीं को भावत ॥
तुम पुनीत अरु वे अति पावन । आईहो सब मोहिं मनावन ॥
यह कहि रही रोष भरि भारी । गई सखी जहँरहे बिहारी ॥
कह्यो जाय हरिसों हरषाई । आज चतुरई कहां गँवाई ॥
विन निज जांघन चलहिं ललारे । कैसे चहत कियो सुखप्यारे ॥
हौ मनमोहन तुम बहु नायक । नागर नवल सकल गुण लायक ॥

दोहा–मान तजै नहिं लाडिली, थाकीं सबै मनाय ॥
बेगि यत्न कछु कीजिये, रचिये आप उपाय ॥

१ योग्य ।

सो०-रच्यो दूतिका रूप, तब मनमोहन आपही ॥
करातिय स्वांग अनूप, गये जहां प्रिय माननी ॥
बैठे निकट सखी मिलजाई। कहत अबत ढिग बात सुहाई ॥
बन घनश्याम धाम तुप्यारी। करि बैठी यों मान कहारी ॥
मैं उतगई तोहिं नहिं पाई। हरिकी दशा देखि फिरि आई ॥
अति आरति मन कुंजबिहारी। इकले खड़े गहे द्रुम डारी ॥
तेरोइनामरटत मुख माहीं। और कछू तिनको सुधिनाहीं ॥
देखत बिथा भई मुँहि गाढी। चल तू होहि नेक ढिंग ठाढी ॥
कुंज भवन ठाढे दोउ देखों। तब मैं नयन सफल करिलेखों ॥
अब हरि कहत कृपा मोहिं कीजे। जो बूझिये दंडसो दीजे ॥
अति आतुर प्रीतमको लेरी। हठतजि हाहाकहि सुनिमेरी ॥
तुव कारण वृषभानु दुलारी। मेरे पांय परत गिरिधारी ॥
अब मैं पांय परतिहौं तेरे। करु अपराध क्षमा हरि केरे ॥
चाहत कियो श्यामको जोई। उन्हें जानि मोसों करि सोई ॥
दोहा-क्षण क्षण परशत चरणकर, क्षण क्षण लेत बलाय ॥
कहत प्रिया अब मानतजु, पुनि पुनि हाहा खाय ॥
सो०-लखिलखिसखीसिहात, चरित ललितनँदलालके ॥
मनहीं मन मुसुकात, भरी प्रेम आनन्द रस ॥
तब चितयो प्यारी नयनन भर। आयो उघरि लाल लीला धर ॥
श्याम चतुरई मोसों माडत। वे गुण तुम अजहूं नहिं छांडत ॥
इन छंदन में मानत हौ जू। नीके सब गुण जानतहौ जू ॥
रस वादिन मोको करि पाई। वे बातैं सब देहु भुलाई ॥
यह कहि बहुरि भई रिस हाई। रहे श्याम ठाढे सकुचाई ॥
गहे ग्रीव पट अति आधीना। जलके निकट दीन जनु मीना ॥
फिरि पौढी दै पीठ श्यामको। हृदय बिरह दुख अधिक बामको ॥
कर आरसी अग्र लै धारैं। पटँ अंतर हरि बदन निहारैं ॥

१ वृक्षलता। २ मछली। ३ वस्त्र।

रिसवश धरत नहीं मन धीरा । तलफत हिये बिरहकी पीरा ॥
इत नागरि उत नागर ओऊ । भली चतुरई बाढ़े दोऊ ॥
जिते जिते मुख फेरति प्यारी । तितही ढरि आवत गिरिधारी ॥
जोइ जोइ बात भावतिहि भावैं । सोइ सोइ बातें श्याम चलावैं ॥

दोहा-करिहारे छलछंद सब, छुवन न पावत छांह ॥
हठ छांडत नहिं लाडिली, हरि शोचत मनमांह ॥

सो०-देखि श्यामको दीन, बिरह बिवस प्यारी निकट ॥
सखियां परमप्रवीन, तब सब समझावन लगीं ॥

लखुरी कमल नयन तो आगे । कबके हहा करत अनुरागे ॥
तेरे भयते कुँवर कन्हाई । आये तियको रूप बनाई ॥
मधुर मधुर वचनन बनवारी । तोहिं मनावति हैं री प्यारी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे । कियो कहा चाहति है आगे ॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये। आदर नहिं चुकिये घर आये ॥
वेतौ वनके भवँर बिहारी । तोसी और वेलिको प्यारी ॥
करिसन्मान बिहँसिकर वैसो । कीनो कहा निठुर मन ऐसो ॥
पावत कहा मान के कीने । कहा गमावत आदरदीने ॥
होत कहा घूंघट पट खोले । कहा नशात तनकमन बोले ॥
ऐसी कहा कीजियत है री । प्रीतम छांड़ि राखियत वैरी ॥
निज वश मदन गुपालहि जानी । ऐसी कहा अधिक इतरानी ॥
सिखकी कहत अनसिखी आवै । कहातोहिं कोई समुझावै ॥

दोहा-जो नहिं मानति श्यामसों, मानहि रहिहै हाथ ॥
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ[1] ॥

सो०-ऐसे कहिहै कौन, मान पिया हम कहतिहैं ॥
त्रिभुवन ठाकुर जौन, सो तेरे वशह्वै पर्यो ॥

ऐसो समय बहुरि नहिं पैहै । सुनुरी फिरि पाछे पछितैहै ॥
यह-योवन है धन स्वप्नेको । मान मनायो पिय अपनेको ॥

१ कामदेव ।

अब ये दिन रूसनके नाहीं। प्रिया विचार देखु मनमाहीं॥
पावस ऋतु कीयोरी फेरो। गर्जत गगन भयो घनघेरो॥
बोलत दादुर चातक मोरा। चहुँ दिश करति पवन झकझोरा॥
बरषत मेघ भूमि हित लागी। नारि सकल प्रीतम अनुरागी॥
जे बेली ग्रीषमऋतु दाहीं। ते हुलसी तरुसों लपटाहीं॥
सरिता उमँगि सिंधुको जाहीं। मिलत सरी सर आपसमाहीं॥
भयो समो यह दिवस चार को। नंद नँदन प्रिय सँग विहारको॥
सुनि सखियनके बचन किशोरी। उमग्यो प्रेम रही रिस गोरी॥
रिस करि कह्यो जाहु उठि ताके। रस कर हाथ बिकाने जाके॥
सुख सों भलो मनावत मेरो। रहत सदा अनतहि चितघेरो॥

दोहा—सँध बखानत जगत सब, विरद तुम्हारोलाल॥
गहे रहत मनातियनके, विहँसि कह्यो यों बाल॥

सो०—भये प्रफुल्लित श्याम, विरह ताप तनुको गयो॥
हर्षि उठीं सब बाम, प्यारी मुखविहँसत निरखि॥

तब बोले हरि दोउ कर जोरी। तेरी सौं वृषभानु किशोरी॥
तूही हित चित जीवन मोको। सदा करत आराधन तोको॥
तू ममतिलक तुही आभूषण। पोषण तेरेइ वचन पियूषण॥
तेरोइ गुण मैं निशिदिन गाऊं। अब तज मान हृदय सुख पाऊं॥
कर जोरे विनती करि भाख्यो। कहत शीश चरणनपर राख्यो॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी। तब बोली उठि सखी सयानी॥
सुनहु श्याम तुमहो रस सागर। रूप शील गुण प्रीति उजागर॥
तुमते प्रिया नेकनहिं न्यारी। एक प्राण द्वैदेह तुम्हारी॥
प्यारीमें तुम तुममें प्यारी। जैसे दर्पण छांह निहारी॥
रसमें परै विरस जहँ आई। होय परति तहँ अति कठिनाई॥
अबकै हमसब देति मनाई। परसो प्यारी चरण कन्हाई॥
अबरुठायहो जो गिरिधारी। राम रामतो बहुरि हमारी॥

१ आकाश। २ बादल। ३ मेढक। ४ स्पर्शकरो।

दोहा–जब परशे प्यारीचरण, परम प्रीति नँदनन्द ॥
छुट्यो मान हर्षी प्रिया, मिटयोविरह दुखद्वन्द ॥
सो०–उर आनन्द बढाय, प्रेम कसौटी कसि पियहिं ॥
अवगुण मन बिसराय, मिलीप्रियाउठिश्यामसों ॥
हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी । भई सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखी अन्हवाये । रुचिर शृँगार शृँगार बनाये ॥
मधुर मिष्ठ भोजन मन भाये । दोउन एकहि थार जिमाये ॥
दिये पान अचवन कर वाये । सुमन सुगंध माल पहिराये ॥
लैबीरा अपने कर प्यारी । दीनो वदन बिहँसि गिरिधारी ॥
तबहिं सफल यौवन हरि जान्यो । परमहर्ष उर अन्तर मान्यो ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी । तब सखियन आरती उतारी ॥
अतिआनन्द भरे दोउ राजैं । अरस परस निरखत छबि छाजैं ॥
पाये वश करि कुंज बिहारी । बिहँसि कह्यो तब पियसों प्यारी॥
सुनहु श्याम वर्षाऋतु आई । रचहु हिंडोला शुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साध हमारे । सब मिल झूलहिं संग तुम्हारे ॥
सुनतियवचन श्याम सुख पायो । ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ॥
छं०–तिय मान हरि ऐसे छुड़ायो, भक्तहित लीलाकरी ॥
निगम नेति अपार गुण, सुख सिंधु नट नागर हरी ॥
यह मानचरित्र पवित्रहरिको, प्रेम सहितजोगावहीं॥
करहिं आदर मान तिनको, संत जन सुख पावहीं ॥
दोहा–राधा रसिक गोपालको, कौतूहल रस केलि ॥
ब्रजवासी प्रभु जननको, सुखद कामतरुवेलि ॥
सो०–सफल जन्म है तास, जे अनुदिन गावत सुनत ॥
तिनको सदा हुलास, ब्रजवासी प्रभुकी कृपा ॥

अथ हिंडोरावर्णनलीला ॥

भक्त वश्य प्रभु कुंजबिहारी । भक्तनहित लीला अवतारी ॥

सदा सदा भक्तन सुखदाई। करत सदा भक्तन मन भाई ॥
प्रेम भक्ति हठ ब्रजकी बाला। भये वश्य तिनके नँदलाला ॥
जो जो सुख तिनके मन भावें। सो सो ब्रजमें श्याम बनावें ॥
समय समयके सुखद विहारा। करैं तियन सँग नन्दकुमारा ॥
ग्रीषम गत पावसऋतु आई। परम सुहावन जन सुखदाई ॥
श्रीराधा मनकी रुचि जानी। तबहिंडोल लीला मन आनी ॥
यमुना पुलिन गये मनभावन। वृन्दावन धन परम सुहावन ॥
सखिन सहित सोहति सँगप्यारी। कोटिक करत मनोजविहारी ॥
अति आनन्द उमँगि चहुँ ओरा। घुमड़ि रहे पावस घन घोरा ॥
जहां तहां बगपांति उड़ाहीं। चपला[1] चमक रहीं घन माहीं ॥
गर्जत मधुर श्रवण सुखदाई। सैसिय बहत समीरैं[2] सुहाई ॥

दोहा–नाना रँग खग फूल फल, लगे नगनके चार ॥
गजमुक्तनके झूमका, झालर झवा अपार ॥

सो०–शोभित लता वितान, अति उतंग तरु सुमन युत ॥
रहे पान मिलपान, विविध नगन मालहु जड़े ॥

कनक वर्णमय[3] भूमि सुहाई। छबिहिंडोर नाहिं वर्णि सिराई ॥
तापर रसिक छबीले दोऊ। उपमा को त्रिभुवन नाहिं कोऊ ॥
नन्दनँदन वृषभानु किशोरी। गौर श्याम सुन्दर छबिजोरी ॥
चढे उमँगि आनँद उर भारी। निरखत छबि नभ सुर नरनारी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै। श्याम सुभग तनु त्रिभुवन मोहै ॥
प्यारी अंग बैंजनी सारी। शोभित चहुँ दिशि चारु किनारी ॥
युगल अंग भूषण छबि छाये। रुचि रुचि सखि शृंगार बनाये ॥
उर रतनके हार विराजैं। सुमन हार अतिशय छबि छाजैं ॥
उत कुंडल इत तरवनकी छबि। रह्योलजाय निरखि छबि को रवि ॥
सखिगण क्षण तृण तोर निहारें। वारत प्राण रीझ रिझवारें ॥
भरि उछाह ऊंचे सुर गावें। पिय प्यारीको हर्ष झुलावें ॥

१ बिजुली। २ पवन। ३ स्वर्णवर्ण।

ताल मृदंग बांसुरी बीना। बाजत सरसमधुर सुरलीना॥
दोहा–यह सुख सुनि ब्रज सुन्दरी,अपर सकल नवबाल॥
वृन्दावन झूलति कुँवरि,राधा अरु नँदलाल॥
सो०–चलीं सकल अतुराय, नवसत साज शृंगार तनु॥
गृहकारज बिसराय, मन मोहनके रस पंगी॥
चुनि करि पहिरि चूनरी सारी। अरुण चुहचही कोर किनारी॥
यूथ यूथ मिलि हरि पै आवें। तिन्हें प्रिया पिय निकट बुलावें॥
आदर वचन सप्रेम सुनावें। सबके मनकी साद पुरावें॥
एकन लेत निकट बैठाई। एकै चढत पींग पर धाई॥
एक बुलावति अति सचुपाई। गावति एक मलार सुहाई॥
राग रंग सुख बरणि न जाई। रह्यो छाय घन लिधि बन जाई॥
युवति वृन्द चहुँ ओर सुहाई। भूषण भीर वर्णि नहिं जाई॥
बसन सुगंध सने बहुरंगा। भवँर भीर छांडतनहिं संगा॥
हरि मुखशशि लखि शुभग अनंगा। उमगि मनो छविसिंधुतरंगा॥
देत चाव भरि जब झकझोरा। होति अधिक छवि बढतहिंडोरा॥
ऊंचो मिलत द्रुमन सों जाई। लेत जहां ते सुमन कन्हाई॥
ज्यों ज्यों पैंगबढति अति भारी। त्यों त्यों डरति कुँवरि सुकुमारी॥
दोहा–राखु राखु सखियन सहित, सोंह दिवावत जात॥
जब नहिं सकत सँभारि तनु, तब पियसों लपटात॥
सो०–हँसत परस्पर बाल, तबहिंडोल राखत पकरि॥
करत चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रस भरे॥
इक उतरत इक चढत हिंडोरे। इक आतुर चढिवेकोदोरे॥
एक कहति मोहिं देहु उतारी। एक चढनको बिनवति नारी॥
सबके मनकी रुचि हरि राखें। मधुर वचन सबसों हँसि भाखें॥
कबहुँ अकेले झूलत मोहन। गावति युवती सब मिल गोहन॥
कबहूं युवतिन देत चढ़ाई। आप झुलावत कुँवर कन्हाई॥

१ लीन। २ लाल। ३ झुंडझुंड।

कबहूं मुरली मन्दे बजावें। कबहूं संग सखनके गावें ॥
बिच बिच दल कोकिला टेरे। रहे सजल घन झुकि अतिनेरे ॥
परत फुवार मंद श्रमहारी। बहत त्रिविध अति सुखद बयारी ॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी। राधा नाम रटत बनवारी ॥
ऐसे गोपिनसों मन मोहन। करत केलि कौतूहल गोहन ॥
अति आनन्द सबन उपजावें। निरखि सुमन सुरगण वरषावें ॥
जय जय जयध्वनि बोलत बानी। धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी ॥

छंद—कहत ब्रज धनि अमर अंबर, सकल मन आनँद भरे॥
कहत मन मन इहे चाहत, हमन विधि ब्रज द्रुम करे॥
भक्त हित प्रभु अज सनातन, ब्रह्म तनु धर अवतरे ॥
वर्णि क्रापे जात सो सुख, करत जो नित ब्रज हरे ॥

दोहा--नित लीला आनन्दनित, नित नव मंगल गान ॥
धनि धनि जिनके चित रहत, ब्रजवासी प्रभु ध्यान ॥

सो०--हरिके चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत ॥
रहत सदा नँदलाल, ब्रजवासी तिनके निकट ॥

अथ फाल्गुनवर्णनलीला ॥

जय जय जय श्रीनित्य विहारी। नित्यानन्द भक्त हितकारी ॥
ब्रह्मरूप अवतरे मुरारी। नितनव करत बिहार बिहारी ॥
नित्य नवल गिरिधर अभिरामा। नित्य रूप राधा ब्रज बामा ॥
नित्य रास जल केलि बिहारा। नित्य मानखण्डन व्यवहारा ॥
नित्य कुंज सुख नित्य हिंडोरा। नित्य प्रेम सुख सिंधु हिलोरा ॥
नित्य नवल हितहरि सँगजोरी। नित्य नवल छबि मन्मथ चोरी ॥
नित बृन्दावन घन सुखदाई। सदा बसंत रहत जहँछाई ॥
सदा सुमन नवपल्लव डारी। सदा त्रिविध मारुत सुखकारी ॥
सदा मधुप मधुमाते डोलैं। कोकिल कीर सदा कलिबोलैं ॥

१ धीरेसे। २ कृष्ण। ३ पुष्प। ४ ठंढी, मंद, सुगंध हवा। ५ भ्रमर।
६ सुवा। ७ मनोहरवचन।

सुनि सुनि नारि हृदय सुख पावैं। मनहीं मन अभिलाष बढावैं ॥
वारि वारि कहि पियसुख पावैं। ऋतु वसन्तआई समुझावैं ॥
फागु चरित अतिसाद हमारे। खेलैं मिलि सब संगतुम्हारे ॥

दोहा—ब्रज वनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहु ब्रजराज॥
देखहु वन शोभा निरखि, अतिहि विराजत आज॥

सो०—खेलतहैं दोउ फाग, मानहु मदन बसन्त मिलि ॥
लखि उपजत अनुराग, यह रस अधिक सुहावनो॥

द्रुमन मध्य टेसूतरु फूले। करत प्रकाश अग्निसम तूले ॥
मानहु निज निज मेरु सुहाई। हर्षि सबन होलिका लगाई ॥
कुंज कुंज कोकिल सुखदानी। बोलति विमल मनोहर बानी ॥
निलज भई जनु ब्रजकी नारी। गावति गृहपति चढीं अटारी ॥
नाना खग केकी शुकनारी। जहँ तहँ करत कुलाहल भारी ॥
मनहु परस्पर नर अरुनारी। देत दिवावत हैं सबगारी ॥
प्रफुलित लताविलोकतजितही। अलि मधुमत्त जातचलि तितही॥
मानहु गणिका देखि सुहाई। मतवारे लपटतहैं धाई ॥
पुहुप पराग अबीर सुहाई। लिये समीर फिरतहैं धाई ॥
संयोगिनरस अनरस विरहन। कर छोड़तमनभायो सबहिन ॥
नवपल्लवदल सुमन सुहाये। वर्ण वर्ण विटपन छबिछाये ॥
जनु ऋतुराज संग छवि बाढे। बहुरँग भेर लसतजनुठाढे ॥

दो०—भँवर गुंज निरझरशबद, बजत दुंदुभी चारु ॥
रची मण्डली मदन जनु, जहँ तहँ विविध बिहारु॥

सो०—वृन्दाविपिन समाज, कहँ लगि वर्णि बखानिये ॥
कान्ह तुम्हारे राज, क्रीडत सब आनँद भरे ॥

रचहु फाग सुख अब नँदलाला। कर जोरे विनवति सब बाला ॥
सुनि गोपिनके वचन कन्हाई। रची फागलीला सुखदाई ॥
विहँसि कह्यो तब श्री गिरिधारी। सजहु समाज जाय तुम प्यारी ॥
हमहूं सखन संगलै आवैं। फागु रंग ब्रजमाहिं मचावैं ॥

यह सुनि मुदित भई ब्रजबाला। गये सदनको मदन गोपाला॥
सखा बृन्द सब श्याम बुलाये। सुनत सकल आतुर जुर आये॥
हँसि हँसि उन्हैं श्याम समुझायो। आयो फागुन मास सोहायो॥
भैया हो सब खेलैं होरी। भरो अबीर गुलालन झोरी॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे। होरी साज सजन सब लागे॥
कंचन कलश अनेक सुहाये। केसर टेसू रंग भराये॥
अतर अरगजा विविध विधाना। लिय सुगंध भाजन[2] भरनाना॥
पीत अरुण बँर[3] वसन बनाये। नेह सुगन्धन अति मन भाये॥

दोहा-अंग अंग भूषण ललित, उर सुमननकी माल॥
नयन सैन शोभा हरन, बनी मण्डली ग्वाल॥
सो०-पान भरे मुख लाल, उसकाये बाहैं झँगा॥
फेंटन भरे गुलाल, पिचकारी कञ्चन बरन॥

फेटा पीत श्याम शिरसोहै। तुर्राकी झलकन मन मोहै॥
तापर मोर चंद्र छबि न्यारी। कोटि चंद्र रवि छबि बलिहारी॥
केसर खौर भाल शुभकारी। बीचतिलक की रेख शृंगारी॥
भौहैं कुटिल नयन रतनारे। कुण्डल झलक केश घुंघरारे॥
चारु कपोल मनोहर नाशा। मन्द हँसनि द्युति दर्शन प्रकाशा॥
अँधरे अरुण चिबुक छबिसीवां। कटि अति ललित कंबुकलग्रीवां॥
झँगा झीन रँग पीत सुहायो। शोभित तनु छबिसों लपटायो॥
घेरदार संजाफ जरीकी। झमकिरही छबि उमँग भरीकी॥
तैसिय कमल चरणपर पनहीं। कंचन मणिमय मोहत मनहीं॥
कर चूडामणि जटित अँगूठी। लसत अँगुरियन भांति अनूठी॥
बाहु बिजौटा जटित रतनको। चन्दन चित्रित श्याम ललनको॥
झलकत झीन झँगाके माहीं। सो छबि कहत बनत मुख नाहीं॥
दोहा-कटि पर पट पीरोकसे, कनक किनारे चार॥

---

१ सोनेकेकलश। २ वर्तन। ३ सुंदर। ४ बाल। ५ नाक।
६ दांत। ७ ओष्ट। ८ बजुला।

तापरखोंसे मुरलिका, उर मुक्तनके हार ॥
सो०-तापर ललित बिशाल, माल गुलाब प्रसूनकी ॥
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नँद लाडिलो ॥
बन्यो यूथ सब रंग रँगीलो । मधि नायक नँद नंद छबीलो ॥
खेलत श्याम चले ब्रजहोरी । उड़त अबीर गुलालन झोरी ॥
बाजत ताल मृदंग सुहाई । डफ मुहचंग बीन सहनाई ॥
और नगारनकी कल जोरी । बीच बीच मुरली सुरचोरी ॥
कोउ नाचैं कोउ भाव बतावैं । होरी गीत मिले सुरगावैं ॥
ब्रज वीथिन वीथिन सब डोलैं । होहो होरी मुखते बोलैं ॥
मिलत गलिनमें जो नरनारी । बचत नहीं दीन्हें बिन गारी ॥
अबिर गुलाल तासुपर डारैं । भरि भरि पिचकारिन रँग मारैं ॥
बोलत होरी वचन सुहाई । करि छांडत सब मनकी भाई ॥
गोरस केसर माते डोलैं । घरन घरनके फटका खोलैं ॥
जो कोउ भाजि रहति घर बैठी । जारिआई आनत तिहि पैठी ॥
अटन चढीं देखैं ब्रजनारी । छज्जन ते छूटहिं पिचकारी ॥
दोहा-गावत होरी गीत सब, देहिं दिवावहिं गारि ॥
डारत अबिर गुलालकी, झोरी भरि भरि नारि ॥
सो०-इत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उड़ावहिं ॥
पिचकारिनके जाल, वर्षत भरि केसर ललित ॥
होत कुलाहल आनँद भारी । रंग अबीरन महल अटारी ॥
है गइ ब्रजकी बीथिन[1] बीचा । अबिर गुलाल कुंकुमाकीचा ॥
ऐसे संगलिये सब ग्वाला । करत फागु कौतुक नँदलाला ॥
भीज रहे केसरि रँग बागे[3] । नख ते शिख गुलाल ते पागे ॥
आनँद भरे मुदित सब गावत । गुणी जननके बाल नचावत ॥
बरसानेको चले कन्हाई । यह सुधि कुवँरि राधिका पाई ॥
तुरत सखी सब बोलि पठाई । सुनत सकल आतुर उठि धाई ॥

१ मोतिन । २ गलियन । ३ वस्त्र ।

नवसत सकल मनोरथ साजैं। बरण बरण वर वसन बिराजैं॥
बेंदी भाल बिराजत रोरी। मुख तँबोल तनुकी छबि गोरी॥
होरी खेल सुनत सब चोपी। आईं प्रिया निकट सब गोपी॥
हँसि हँसि सबसों कहति किशोरी। चलौ श्याम सँग खेलैं होरी॥
पकरि आज मोहनको लीजै। मन भाई तिनसों सब कीजै॥
दोहा-ललतादिक ब्रज नागरी, मिलि सब सजो समाज॥
तिनमें श्रीकीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज॥
सो०-परमरूप की रास, गुणागार नवनागरी॥
राजति भरी हुलास, मन मोहन मन भावनी॥
नख शिखलों सब सुन्दर ताई। रही छाय छबि पुंजनिकाई॥
भूषण जाल लाल नग केरे। शोभित अंगन सुभग घनेरे॥
सुख छबि बर्णिसकै सो को है। जाहि देखि मोहन मन मोहै॥
लसति नवल तनु सुंदर सारी। केसरिया कीनी जर तारी॥
गुलगबको लहँगा चटकीलो। वेरवनी अति छबिन छबीलो॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजैं। होरी साज सजे सबराजैं॥
रंग गुलाल संग सब लीनो। सोहति युवति यूथ रँग भीनो॥
मृगमद केसर मेल मिलाई। भरि भरि लीने कलश भराई॥
हाथनमें लीने नवलासी। चलीं श्याम घन पै चपलासी॥
युवति यूथकै संग किशोरी। बढ़ी जाय आगे ब्रज खोरी॥
उतते आये मदनगुपाला। सोहत संग भीर नव बाला॥
देखि परस्पर आनँद बाढ़्यो। दुहुँदिशि गोलभयो रुपिठाढ़्यो॥
दोहा-भरि भरि पिचकारी हरषि, इतते धाये ग्वाल॥
नवलासी लै लै करन, सिमिटि चलीं उतबाल॥
सो०-भो भँटभेरो आन, परी मार बिच रंगकी॥
करत न कोऊ कान, मन भाई मुखते कहत॥
भरि भरि मूंठि गुलाल चलावैं। होहो होरी वचन सुनावैं॥

१ मस्तक। २ बिजुलीसी। ३ मिलाप।

केसरि रँग लै लै पिचकारी । तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी ॥
दुहुँ दिशि चलत झराझर जेरी । भइ गुलालकी घटा अँधेरी ॥
आय परत जाके जो बैंडे । सोकेसरिके कलश उलैडे ॥
लगिलगिरहे चीर अंगनसों । पहिचाने नहिं परत रँगनसों ॥
मुख शोभा कछु कहति न जाई । रही गुलाल झलक छबिछाई ॥
कबि उपमा कहि कहा बखाने । शशि सरोज दोऊ सकुचाने ॥
सकुच रहित गारी सब गावैं । दुहुँ दिशि लै लै नाम बुलावैं ॥
बाजत बीन रबाब तँबूरा । ताल पखावज ढोलक तूरा ॥
नवलासी चपलासी गोरी । मारति ग्वालन कहि कहि होरी ॥
यक भागे यक ढूंढन लागे । एक अबीर डारि मुख भागे ॥
मच्यो खेल रँग रस अति भारी । सखियन बोलि कह्यो तब प्यारी ॥

दोहा—छल बल कर कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय ॥
आंख आंज मुख माँडि तब, छांड्यो हहाकराय ॥
सो०—हैं अति लंगर कान्ह, ऐसे ये नहिं मानिहैं ॥
बसन चुराये आन, लेहिं दाँव सो आपनो ॥

तब यक तिय हलधर वपु काछ्यो । चली ओढि नीलांबर आछ्यो ॥
निकस यूथते ह्वै कै न्यारी । निकसी जित ठाढ़े बनवारी ॥
हरि जान्यों आये बलदाऊ । चले अकेले लेन अगाऊ ॥
गये निकट ताके हरि तबहीं । धरे जाय औचक तिन तबहीं ॥
आई धाय और सब नारी । लीने पकरि श्याम अँकवारी ॥
हँसि हँसि कहत सकल ब्रजबाला । ढीठो बहुत दई तुम लाला ॥
सोफल आज तुम्हैं सब देहैं । दांव आपनो नीको लेहैं ॥
ठाढे हँसत दूर सब ग्वाला । कहत गये पकरे नँदलाला ॥
हँसति कुँवरि राधा दुर ठाढ़ी । पिय मुख निरखि सकुच उर बाढ़ी ॥
किनहूँ लियो पीत पट छोरी । काजर दियो किनहुँ बरजोरी ॥
काहू बेनी शीश सँवारी । मुख गुलाल लावति कोउ नारी ॥

काहू उर अरगजा लगायो। काहू रंग शीश ढरकायो ॥
दोहा-गये छूटि मोहन तबै, गोहन चले पराय ॥
आन मिले निज सखनमें, रहीं नारि पछिताय ॥
सो०-करमींजति पछितात, कहति परस्पर बालसब ॥
भली बनीथी घात, दांवलेन पाईं नहीं ॥
गये आजु तुम भजि नँदलाला। जैहौ कहां कालिह गोपाला ॥
करि राखी जैसी तुम हमसों। सो हम दांव लेइँगी तुमसों ॥
पीताम्बर अपनो यह लीजै। पठै ग्वाल काहूको दीजै ॥
कै आपही आय लै जाहू। अब हम नहीं पकरि हैं काहू ॥
हँसत सखा सब तारी दैकै। बेनी छोरत हैं कर लैकै ॥
कहत जाहु फिरि कुँवर कन्हाई। पीताम्बर लै आवहु जाई ॥
भाजत हार हियेते टूटै। पीताम्बर गहनेदै छूटै ॥
तबहिं कह्यो हरि नंददुहाई। अबहिं पीत पट लेत मँगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो। युवति भेष करि ताहि पठायो ॥
गयो सुमिलि युवतिनके माहीं। हँसत जाय ठाढो पट पाहीं ॥
कहत देहु पट धरैं दुराई। अब नहिं पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
अब यह पट हरिको तब देहैं। दांव आपनो जब हम लेहैं ॥
दोहा-ऐसी कहि पटलै लियो, आयो चमकि गुवाल ॥
फेरयो करसों श्याम लै, चकित भईं सब बाल ॥
सो०-लखि हरिकी चतुराय, भईं थकित ब्रजबाल सब ॥
धिरवत कहत सुनाय, भली बनाई आज तुम ॥
गये आज बचिकर चतुराई। अब बदिहैं जो बचहु कन्हाई ॥
अब तो लाग लगीहै हमसों। जब लगि दाँवलेति नहि तुमसों ॥
पकरि नचावहिं तुमहिं बिहारी। तब कहिहौ हमको ब्रजनारी ॥
कहत श्याम अब भये सयाने। इन बातन कछु भय नहि माने ॥
जान लियो हम कपट तुम्हारो। अब तुम कह कर सकत हमारो ॥
अबहीं ग्वालन देहुँ लगाई। छांडौं अपनी विनय कराई ॥

नेक कान मानतहौं तिनकी । सखी कहावति हौ तुम जिनकी ॥
यह सुनि तब युवती मुसकानी । कहा करत हौ श्याम सयानी ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह कन्हाई । जो नहिं विनय करावहु आई ॥
सखन सहित तब मोहन करषैं । लैलै पिचकारिन रँग बरषैं ॥
उत सब युवती ह्वै इक ठौरी । लैलै नवलासी सब दौरी ॥
दियो सबनको मारि हटाई । भाजि चले तब कुँवर कन्हाई ॥

दोहा-भाजे भाजे कहत सब, तारीदै ब्रजबाल ॥
　　जो तुम जाये नंदके, ठाढे रहौ गुपाल ॥
सो०--फिरे बहुरि घनश्याम, सखा वृन्द सब फेरिकै ॥
　　शिथिल करी ब्रज बाम, झोरिन मारि अबीरकी ॥

ऐसे खेलत रस मिलि होरी । इत मोहन उत कुँवरिकिशोरी॥
गोपी ग्वाल संग सब लीने । मोहन सकल रंग रस भीने ॥
कबहुँ परस्पर गावत गारी । कबहुँ करत रस वाद विहारी ॥
कबहुँ अबीर गुलाल उड़ावें । कबहूं रंग सलिल बरषावैं ॥
अरस परस छबि निरखत दोऊ । परमानन्द मगन सब कोऊ ॥
चढे विमानन नभ सुर देखैं । जन्म सफल ब्रजको करि लेखैं॥
पुनि पुनि हर्षि सुमन वर्षावैं । जय जय करि प्रभुको यश गावैं॥
ऐसे श्याम रंग रस राख्यो । ललिता आय बीच तब भाष्यो ॥
आज श्याम तुम औचक आये । हम काहू जानन नहिं पाये ॥
बहुत करी तुम आय ढिठाई । भई सांझ अब कुँवरकन्हाई ॥
कालिह १मात है बार हमारी । देखैंगी मनसाय तुम्हारी ॥
ऐहैं नन्द गांवलौं प्यारी । रहियो सजग लाल गिरिधारी ॥

दोहा-प्यारी करते पानलै, दीने सखी सुजान ॥
　　भात अवधि बदि खेलकी, राख्यो दुहुँ दिशि मान ॥
सो०-घर आये घनश्याम, सखन संग गावत हँसत ॥
　　गई प्रिया निज धाम, सखिन सहित आनँद भरी॥

१ राधा । २ आकाश । ३ पुरुषार्थ । ४ कृष्ण ।

परमानन्द सकल ब्रजनारी। कृष्ण केलि सुखकी अधिकारी॥
लोक लाजको भय नहिं मानैं। कृष्ण विलास सदा उर आनैं॥
श्रीराधिका कुँवारि सुखदाई। प्रात सखी सब बोलि पठाई॥
कियो विचार सबन मिलि गोरी। नन्द गांव खेलैं चलि होरी॥
मिलि मोहन सों यह सुखकीजै। फगुवा नन्दमहर सों लीजै॥
सामा सकल खेलकी लीनी। रंग गुलालन सों बहु कीनी॥
मथि मथि विविध सुगंधन लीन्हे। भांति अनेक अरगजा कीन्हे॥
भरि भरि भाजन कनक सुहाये। अमित सुगंध न जाहि गनाये॥
ले कांवरिन अनेक अपारा। चले संग सजि सुभग शृँगारा॥
ग्वालिनि यौवन गर्व गहेली। श्रीराधा सँग चलीं सहेली॥
कुंकुम उबटि कनक तनु गोरी। रूप राशि सब नवलकिशोरी॥
एक वयस[1] सुन्दर सब राजैं। निरखत कोटि मदन तिय लाजैं॥

दोहा—नवसत साज शृँगार तनु, अंग अंग सब ग्वारि॥
चंद्रावलि ललतादि सब, अमित गोप सुकुमारि॥
सो०—को कवि वरणैं पार, प्यारी सब नँदलालकी॥
शोभा अमित अपार, उपमाको त्रिभुवन नहीं॥

सुमन सुगंधन गूंथी वेणी। लटकत कनक छबी छबि श्रेणी॥
मोतिन मांग बनी अतिनीकी। केसरि आड़ जड़ाऊटीकी॥
कुटिल भौंह अलकैं घुंघरारी। मन मोहन मन मोहनहारी॥
खंजन नयन मधुप मृग हारे। अंजन रेख सुभग अनियारे॥
श्रवणनतरवण रवि सम ज्योती। नकबेसरिलटके गज मोती॥
दशन कुंद बिंबाधर[2] सोहैं। चिबुकनीलकण छबि मन मोहैं॥
कंठ कपोत मोति उर हारा। जनुयुग गिरि बिच सुरसरि धारा॥
कुचचकवा मुख शशिभ्रमभूले। बैठे बिछुरि मनहुँ दुहुँकूले॥
कर कंकण चूरी गजदंती। नखमणि माणिक मेटत कंती॥
नाभी हृदय कहा कवि वरणै। कटि मृगराज लेत जनु निरणै॥

१ उमर। २ कुंदरू।

चरणन नूपुर बिछिया बाजैं । चालमराल चलत कल राजैं ॥
लहँगा कसब पीतरँग सारी । चमक चहूं दिशि लाल किनारी ॥
दोहा–नख शिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम ॥
तिनमें श्रीराधा कुँवरि, राजत अति अभिराम ॥
सो०–लई सखन गहि हाथ, पीरे सुमननकी छरी ॥
होरी हरिके साथ, नंद गाँव खेलन चलीं ॥
प्रेम प्रीतिके रसवश पागीं । नंदनँदन पियकी अनुरागीं ॥
बाजे सुघर बजावें गोरी । गावहिं कोकिल कंठ निहोरी ॥
करतिकेलि कौतुक मन माहीं । अबिर गुलाल उड़ावत जाहीं ॥
लीनोघेरे नंदगृह जाई । बसत तहां मन हरन कन्हाई ॥
शोभित रूप लतासी गोरी । गावत फाग नंदकी पोरी ॥
सुनि सुन्दर वर बाहिर आये । हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये ॥
एकन एक भई सब नारी । होरी खेल मच्यो अति भारी ॥
मृगमद कुंकुम चंदन घोरे । लैलै पिचकारी करदोरे ॥
गोपी ग्वाल भरे झकझोरी । अबिर गुलालन मारहिं गोरी ॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई । मंहिकेसरिकी कीच सुहाई ॥
बाजे सरस मधुर सुर बाजैं । गान सुनत गण गँधरब लाजैं ॥
पकरत एक एक छुटि भाजैं । गारी देत एक तजि लाजैं ॥
दोहा–हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनंद ॥
सखिन संग उत लाड़िली, इतै सखा नँदनंद ॥
सो०–औचक धाई बाम, गहन हेतु नँदनंद तब ॥
गहि पाये बलराम, निकसि गये हरि भाजिके ॥
अति निशंक सब ब्रजकी गोरी । तामें अवसर पायो होरी ॥
भरि भरि केसरिरंग कमोरी । लैलै हलधरके शिरढोरी ॥
अबिर उड़ाय अँधेरो कीनो । ललता गहि दृग काजर दीनो ॥
व्यंग्य वचन सब कहत सुहाई । लेहु रोहिणी मात बुलाई ॥

१ बलदेवजी । २ पृथ्वी । ३ पकड़न ।

हास विलास विविध कहि गावे। इत उत बल कहुं जान न पावें ॥
फगुआ मन भावतो मँगाई। हलधर झांडे विनय कराई ॥
हँसत सखन मिलि कुँवर कन्हाई। आये दोऊ आंख अँजाई ॥
तब हलधर दुचिते हरि कीने। युवतिन धाय श्याम गहिलीने ॥
सिमटे सखा छुडावन धाये। युवतिनसे हरि छुटन न पाये ॥
लैलै नवलासी नव बाला। दिये हटाय मारि सब ग्वाला ॥
श्यामहिं जीत युवति लाई। भई सबनके मनकी भाई ॥
रस लम्पट नँदनंद कन्हाई। दीनी आपुन आनि गहाई ॥

दोहा–लै आईं प्यारी निकट, हँसति कहति ब्रजबाल ॥
कहिये अब कैसी बनी, बहुत करत हौ गाल ॥
सो०–एक कहति मुसकाय, बसन हरेते आपुही ॥
हमहूं बसन छुड़ाय, लेहिं दांव अब आपनो ॥

काहू कह्यो करिहौ कह मेरो। सोई पाय भयो अबनेरो ॥
ऐसे कहति रूप अनुरागीं। मुरली छीनि बजावन लागीं ॥
एकनिलियो पीत पट छोरी। एकरंग गागरिलै दौरी ॥
हरिके हाथ गये चन्द्रावलि। कज्जललै आई संजावलि ॥
ललता लोचन अंजन लागी। एक श्रवण लगि कछु कहि भागी॥
एक चिबुक गहि बदन उठावै। एक गुलाल कपोलन लावै ॥
घेरि रहीं परिखाकी नाईं। करति सबै निज निज मन भाई॥
काहू बेनी गूथ सँवारी। काहू मोतिन मांग सुधारी ॥
पहिरावति लहँगा कोउ सारी। काहूलै अँगिया उरधारी ॥
निरखि निरखि प्यारी मुसुकाई। राखत आपन कृष्ण बड़ाई ॥
काहू बदन अभूषण लीन्हे। नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हे ॥
वधू वधू कहि सबहिन गायो। प्यारी निकट आनि बैठायो ॥

दोहा–निरखि बदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय ॥
गहि प्यारी निज पाणि तब, दीनो पान खवाय ॥

१ पीतांबर। २ हाथ।

सो०-सखियां करत कलोल, गांठि जोरि आँजर दई ॥
ब्रजमें रह्यो अडोल, यह जोरी युग युग सदा ॥
लीन्हे मध्य श्याम सब ग्वारैं । मग्न भई अब वपु न सँभारैं ॥
पिय प्यारी मुखकी छबि जोहैं । अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥
रंगन भरे रँगीले दोऊ । त्रिभुवन छबि पटतर नहिं सोऊ॥
एक नयनकी सैन मिलावैं । एक युगल छबि लखि सुख पावैं॥
गावति एक महरिको गारी । बजै मँजीरा डफ करतारी ॥
भरि भरि मूठ गुलाल उड़ावैं । ग्वालनिकटकहुँ लगन न पावैं ॥
रही गुलाल घटा छबि छाई । फूली मानहुँ सांझ सुहाई ॥
तब ललताको यशुमति माई । घर भीतरसे बोलि पठाई ॥
हँसिकै महरि बहुत सनमानी । विनती करि बहुरि मृदुबानी ॥
आज भई भोजनकी बिरियां । देखहु अब राधाकी डरियां ॥
खान पान करि श्रमहि निवारो । बहुरि खेलियो निकट सबारो ॥
ल्यावहु अब लाडलिहि लिवाई । कीरति जीकी सौंह दिवाई ॥
दोहा--तब यशुमति पहँराधिकाहि, ललता चलीलिवाय ॥
सकुच जानि घनश्याम अति, छूटे हाहा खाय ॥
सो०-हँसे ग्वाल मुखहेरि, तनु शोभा देखत खरे ॥
बलको लीनो टेरि, बन्यो आजु अति साँवरो ॥
कहत सखा सब दैदै सोहन । ऐसेहि चलौ नंदपै मोहन ॥
चले भुजागहि तहां लिवाई । छबि अनूप वह बरणि नजाई ॥
उत सब युवतिनके चितचोरे । चले लाल इतके अति भोरे ॥
अति छबि देखि हँसे नँदराई । जननी सुनति दौरि तहँ आई ॥
निरखि हरषि लीन्हे उरलाई । अति आनंद हृदय न समाई ॥
बार बार करलेत बलैया । किन यह कीनो हाल कन्हैया ॥
ये ऐसी सब ब्रजकी बाला । सकुच हँसे मनहीं नँदलाला ॥
तुरत श्याम सोइ वेष उतारयो । कटिपट पीत मुकुट शिर धारयो॥

युवतिनसहित कुँवरि औ श्यामा । आई नंद महरिके धामा ॥
भूषण वसन नवीन बनाये । यशुमतिले सबको पहिराये ॥
अति सनेह वृषभानु दुलारी । अपने हाथ शृँगार सँवारी ॥
निरखि रूप प्रमुदित नँदरानी । वारति राई नोन सिहानी ॥
दोहा-विविध भाँति मेवा मधुर, और मिठाई पानि ॥
सादर सबकी गोदमें, भरे हरषि नँदरानि ॥
सो०-रह्यो नंद गृहछाय, होरीको आनंद अति ॥
कहति यशोमति माय, फगुआकहांसो दीजिये ॥
ललकि कह्यो और कछु नाहीं । लैहैं कान्हर फगुआमाहीं ॥
देखे बिन रहि सकहिं जु उनको । तो मांगे देहैं हम तुमको ॥
बाढ़ौ वंश महर नँदराई । चिरजीवहु बलराम कन्हाई ॥
जिनसे यह सुख ब्रजमें लीजत । यह अशीश सबही मिलि दीजत ॥
अति आनंद मगन ब्रजवासी । अष्टसिद्धि नवनिधि सब दासी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला । न्हान चले यमुनाके कूला ॥
जहँ वर विटप विविध रँग फूले । गुंजत भ्रमर मत्त रस भूले ॥
शीतल सुखद छांहु छबि छाई । फूल डोल तहँ रच्यो कन्हाई ॥
झूलत रंग भरे पिय प्यारी[1] । गावत मिले गोप अरुनारी ॥
ऐसे दूर खेल श्रम कीनो । अति आनंद सबनको दीनो ॥
तब यमुना जल श्याम नहाये । महिदेवन[2] शिर तिलक बनाये ॥
दियो दान तिनको नंदलाला । बर्षत सुर सुमननकी माला ॥
छं०-बरषतमालप्रसून सुरगण, निरखि छवि आनँदभरे ॥
श्रीनंद सुत सुख धाम पूरण, काम सब ब्रज जन करे ॥
लूटि सुखरस फागको सब, मुदित निजनिज गृहगये ॥
गोप बाल गोपाल बल, निज धाम आये छबि छये ॥
दोहा-कियो जो फाग विहार हरि, शारद लहैं न पार ॥
ब्रजवासी सो किमि कहैं, लीला सिंधु अपार ॥

१ कृष्ण-राधिका । २ भूदेव-ब्राह्मण ।

सो०-जन मनके सुखधाम, चरित ललित गोपालके ॥
गावत सुनत सुजान, ब्रजवासी जन रति लहत ॥

अथ सुदर्शनशापमोचनलीला ॥

पूरण ब्रह्म कृष्ण भगवाना । ब्रज विलास जो कीन्हे नाना ॥
शिव विधि शारद नारद शेषा । कहि नहिं सकहिं गणेश अशेषा ॥
कीन्हे चरित रहस्य अपारा । ब्रज युवतिन मिलि रस शृंगारा ॥
साध नहीं काहू मन राखी । करी सकल जो जाने भाषी ॥
ब्रजविलास रस केलि बड़ाई । भांति अनेक मुनीजन गाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुणनायक । जो कछु करहिं सो सबही लायक ॥
सखा संग सबको सुख दीना । मन भायो गोपिन को कीनो ॥
महरि नंद पितु मात कहाये । तिनके हेत देह धरि आये ॥
बालकेलि रस सुख करि भारी । दियो परमआनंद मुरारी ॥
गिरिधर ब्रज जल सगरे राखे । इंद्रादिक सुर जय जय भाषे ॥
गाय बच्छ बन माहिं चराये । कालीनाग नाथि लै आये ॥
करे चरित्र अनेक कृपाला । भक्तन हित प्रभु दीनदयाला ॥

दोहा-भक्तनके हित लेतहैं, प्रभु युग युग अवतार ॥
असुर मारि थापत सुरन, हरत भूमि भव भार ॥

सो०-गावत संत अपार, यशपुनीत पावन करन ॥
पूरि रह्यो संसार, करता हरता आप हरि ॥

इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई । नंद हृदय यह मति उपजाई ॥
चलिये आज सरस्वति तीरा । पूजन शंकर सकल अहीरा ॥
लिये संग बल मोहन दोऊ । गोपी ग्वाल चले सब कोऊ ॥
करत कुलाहल आनँद भारी । पहुँचे तहां सकल नर नारी ॥
सरित[1] पुनीत कियो अस्नाना । महिदेवन[2] दीनो सब दाना ॥
देखि देव थल अति अभिमानी । सादर पूजे शंभुभवानी ॥
पूजा करत सांझ है आई । श्रमित भये सब लोग लुगाई ॥

१ नदी । २ द्विजनको ।

खान पान करि सहित हुलासा। कियो रैनि तहँ बनमें बासा ॥
सोये हरि हलधर सुखराशी। तब सोये सब ब्रजके बासी ॥
आधी निशि अजगर यक आयो। नंद महरके पग लपटायो ॥
उठे पुकारि चौंकि नँदराई। आये ब्रजवासी सब धाई ॥
अजगर देखि डरे सबकोई। लगे छुड़ावन छुटत न सोई ॥
दोहा-हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोड़ै पांय ॥
कृष्ण कृष्ण करि नन्द तब, गुहराये अकुलाय ॥
सो०-अति ब्याकुल गये ग्वाल, बोले श्याम जगायकै ॥
कह्यो महायक ब्याल, लपटानो पग नंदके ॥
सुनत उठे आतुर गोपाला। निकट जाय देख्यो खइब्याला ॥
परश्यो ताहि कमल पद पावन। पाप शाप संताप नशावन ॥
छुवत चरण तिन लइ जमुहाई। धर्यो दिव्यतनु वरणि न जाई ॥
लाग्यो हाथजोरि गुणगावन। जय जय जगतईश जगपावन ॥
सब देवनके देव मुरारी। जय जय जय ब्रजगोप बिहारी ॥
ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हो। सोवह बहुत अनुग्रह कीन्हो ॥
जाते प्रभुको दर्शन पायों। जन्म जन्मको पाप नशायों ॥
ऐसी विनती प्रभुहि सुनाई। आयसुपाय चल्यो शिरनाई ॥
बहुरि नन्दको शीश नवायो। देखि महर अति अचरजपायो ॥
पूंछ्यो जाय नन्द तब भेवा। तुमतो दिव्यरूप कोउ देवा ॥
सर्प शरीर धर्ष्यो क्यों आई। सो सब हमसों कहौ बुझाई ॥
नन्द वचनसुनि मन सुखपाई। तब उन अपनी कथा सुनाई ॥
दोहा-हौं यश गायक श्यामको, नाम सुदर्शन होय ॥
सुन्दर विद्याधरनमें, मोते और न कोय ॥
सो०-इकदिन ऋषिके धाम, गयो धरे अभिमान मन ॥
कियो न तिन्हैं प्रणाम, रूप द्रव्यके गर्वसे ॥
ऋषि अंगिरा बड़े विज्ञानी। जानि मोहिंजड अति अभिमानी ॥

१ दुःख। २ सुंदर। ३ दाया।

दीनो शाप कोप करियेहा । जाय होहु शठ अजगरदेहा ॥
ऐसेकह्यो मोहिं ऋषि जबहीं । अजगर भयों तुरत मैं तबहीं ॥
देखि दुखित म्वहिं परम कृपाला।भये बहुरि मुनिराय दयाला ॥
तब फिरिकृपा कह्यो यहमोहीं । कृष्ण दरशहैहैं जब तोहीं ॥
परशि चरण रज पाप नशैहैं । बहुरि आपनो तनु तब पैहैं ॥
तेपद आजु परशि सुखदाई । भयों पुनीत रूप निजपाई ॥
जो पदरज ब्रह्मा नहिं पावैं । शिव सनकादि सदा चितलावैं ॥
मुनि प्रसाद सोरज मैंपाई । कहँ लगि मुनिकी करौं बड़ाई ॥
दीनदयालु जगत हितकारी । सन्त समान कौन उपकारी ॥
ऐसे विद्याधर सुखमानी । नन्दहि अपनी कथा बखानी ॥
बहुरिकाल चरणन शिरनाई । गयो लोकनिज बहु हर्षाई ॥

दोहा–नंदादिक आनंदसब, महिमा देखि पुनीत ॥
कहत परस्पर कृष्ण गुण, गई तहां निशि बीत ॥
सो०–आये सब ब्रज धाम, प्रात होत आनंद सों ॥
संग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजवासी दासके ॥

अथ शंखचूडवध लीला ॥

यकदिनसुन्दर मदन गोपाला । श्रीबलदेव और सँग ग्वाला ॥
दिवश अन्त निशि समय सुहाई । उदित उडुप[1] उडगण[2] छबिछाई ॥
प्रफुलित चारु मालती सोहै । कुमुद सुगंध पवन मनमोहै ॥
गुंजत भँवर मत्तरस लोभा । चले तहां देखन बनशोभा ॥
ग्वालन मिलि गावत दोउ भाई । कबहुँ बजावत वेणु[3] कन्हाई ॥
ब्रजवनितागण चहुँदिशि घेरे । चले सुनत बंशी की टेरे ॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई । मग्न भई छबि लखि अधिकाई ॥
पहुँचीं श्रीवृन्दावन जाई । गोपी ग्वाल संग समुदाई ॥
विहरत वन विहार दोउ भाई । गोपी ग्वाल साथ सुखदाई ॥
मंद मंद गति इत उत डोलैं । मृदुमुसकाय लेत मन मोलैं ॥

१ चन्द्र । २ नक्षत्र । ३ वंशी ।

रूप राशि निधि छबि दोउ बीरा। बैठे जाय यमुनके तीरा ॥
पाछे सखा वृन्द सब सोहैं। सन्मुख गोपी जन मनमोहैं ॥
दोहा-करत सबै मिलि मुदित मन, भरे प्रेम रस माहिं ॥
भये मगन उनमत्त जिमि, रही देह सुधि नाहिं ॥
सो०-बाजत ताल मृदंग, बीन चंग मुरली मधुर ॥
छाय रह्यो रस रंग, उठत तरंगैं तानकी ॥
प्रेम मगन सब घोष कुमारी। हरिछबि निरखति सुरति बिसारी
शिथिल वदन कच शीश सुहाये। विह्वल तनमन श्याम सोहाये ॥
को हम कहां नहीं कछु जाने। नयन श्यामके रूप लोभाने ॥
रही श्रवण मुरली ध्वनि छाई। गृह वनकी कछु सुधि नहिंराई ॥
चन्द्रवदन चपलाक्षी गोरी। हरि मुख नाद सुनत भईं भोरी ॥
तहँ यक्ष औचक इक आयो। शंखचूड नामी तिहिं गायो ॥
सो वह धनद अनुग अभिमानी। प्रभु प्रभाव नहिं जान अज्ञानी ॥
देखतही बलराम कन्हाई। सब गोपिन लीनो अगुवाई ॥
घेरलेत जिमि गाय अहीरा। उत्तर दिशिलै चल्यो अभीरा ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं। भयोचेत तब कछु मन माहीं ॥
कहीं जाति हम काके साथा। भई विकल जिमि परम अनाथा ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं। महादुखित अति भयसों भागीं॥
दोहा--सुनत श्रवण आरत वचन, उठि आतुर दोउ भाय॥
अति समीप गोपीनके, तुरतहि पहुँचे जाय ॥
सो०-मैं आयो हौं धाय,मत डरपौ तिनसों कह्यो ॥
अबहीं लेत छुड़ाय, तुम्हैं मारि या दुष्टको ॥
शंखचूड फिरिकै तब देख्यो। काल मृत्यु सम दुहुँवन पेख्यो ॥
भयो त्रसित तब मूढ अभागो। युवतिन छांडि जीवलैभागो ॥
गोपिन पास राखि बलभाई। ता पाछे पुनि चले कन्हाई ॥
अतिही निकट धाय कै लीनो। मूका एक तासु शिर दीनो ॥

१ चौराहा। २ बाल। ३ दुःखितवाणी। ४ कृष्ण, बलराम। ५ गोपिनको।

भयो प्राण विन अधम अन्याई । प्रभु प्रताप उत्तम गतिपाई ॥
हती एक मणि ताके शीशा । सोलै आये हरि जगदीशा ॥
दीनीसो बलको नँदलाला । प्रमुदित भई देखि ब्रजबाला ॥
गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई । बहुरि कियो सुख वनमें आई ॥
सो दुख सबको तुरत भुलायो । परमानन्द सबन उपजायो ॥
करत विविध विधि हास बिलासा । गृह आये पुनि सहित हुलासा ॥
नव किशोर सुन्दर सुखदाई । ब्रज जीवन बलराम कन्हाई ॥
ग्वाल बाल गायनके साथा । क्रीडा करत ललित ब्रजनाथा ॥

दोहा–देखि देखि हरिके चरित, परम विचित्र उदारि ॥
निशि दिन सब प्रमुदित रहत, ब्रजवासी नर नारि ॥

सो०–हरण सकल भय भीर, दुष्ट दलन जनहित करन ॥
नँदनंदन बलबीर, ब्रजवासी प्रभु साँवरो ॥

अथ वृषभासुरवधलीला ॥

नंदनँदन संतन हितकारी । कमल नयन प्रभु कुंज बिहारी ॥
मुरली मुकुट धरे ब्रजराजैं । कोटि काम निरखत छबिलाजैं ॥
नित नवसुख ब्रजमें उपजावैं । सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावैं ॥
सुनि सुनि अगम कृष्ण गुणगाहा । कंस असुर उर दारुण दाहा ॥
जो जिहि भाव ताहि हरि तैसे । हितको हित जैसे को तैसे ॥
हित अनहित यह प्रभुकी लीला । सदा श्याम सुन्दर सुख शीला ॥
रीझ खीझ हरिको जो ध्यावैं । परमानन्द अभय पद पावैं ॥
रहै कंस उर ध्यान सदाहीं । नँदनंदनपल बिसरत नाहीं ॥
शत्रु भाव शोचत दिन राती । नन्दसुवन मारों किहि भांती ॥
असुर अरिष्ट नाम बल भारी । एक दिवस नृपलियो हँकारी ॥
तासों कहि सब मर्म बुझायो । बल सराहि ब्रज ताहि पठायो ॥
नंदनँदन मारनके काजा । चल्यो असुर करि गर्व समाजा ॥

दोहा–नृपको शीश नवायकै, कह्यो अरिष्ट सुनाय ॥

१ खेल । २ खलनकेनाशा । ३ भेद । ४ कृष्ण ।

कितक काज महराज यह, मैं करि आवत जाय॥
सो०–तुम असुरनके राज, इतनेको शोचत कहा ॥
पलमें मारों आज, बालक नंद अहीरके ॥
वृषभ रूप सोइ असुर बनाई। आयो तुरत ब्रजहि सलुहाई ॥
गिरि समान तनु अति विकराला। महाकठिन दोउ सींग विशाला ॥
पूंछ उठाय डकारत आवै। खोदि खुरन सों क्षार उड़ावै ॥
दृग आरक्त फेन मुख डारै। कबहुँ सींगसे भूमि विदारै ॥
कबहुँ तरुनसों रगरत जाई। इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीव चहूं दिशि धावै। जहां तहां गैयन बिडरावै ॥
बार बार गर्जत अति भारी। सुनत डरे सब ब्रज नर नारी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे। कृष्ण कृष्ण कहि टेरन लागे ॥
कालस्वरूप वृषभ इक आयो। सबन कृष्ण सों जाय सुनायो ॥
प्रभु सर्वज्ञ तुरत पहिचान्यो। वृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो मोहन सब पाहीं। मत डरपौ चिंता कछु नाहीं ॥
चले असुर सन्मुख मन मोहन। गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥
दोहा–आगे ह्वै हरि हांकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ का तनु तरुघसत, फिरत बिडारत गाय ॥
सो०–मोहिं न लख इत आय, तो तनु उपजी कंडु जो ॥
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नंदकी सौंह करि ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी बानी। मनमें गर्व कियो यह जानी ॥
याही बालकके वध काजा। आदरदै पठयो स्वहिं राजा ॥
भले शकुन मैं ब्रजमें आयों। जो याको तुरतहि लखि पायों ॥
अबहीं याहि पलकमें मारों। नृपति काज करि जाय जुहारों ॥
ऐसे अपने जिय अनुमानी। चल्यो श्याम सन्मुख अभिमानी ॥
टूटि परयो हरि ऊपर आई। लिये सींग गहि कुँवर कन्हाई ॥
यह आवत हरिकी दिशि धाई। हरि पाछे लै जात हटाई ॥

१ पर्वत। २ धूरि। ३ आंखें।

पाछे पेलि श्याम तिहि दीनों। बहुरो वृषभासुर बल कीनो॥
आवत जात असुर जब हारयो। ग्रीव मोडि तब धरणि पछारयो॥
परयो असुर पर्वत आकारा। मुखते चली रुधिरकी धारा॥
असुर मारि उत्तम गति दीनी। जय जयध्वनि देवननभकीनी॥
भये सुखी सब सुर समुदाई। बरषि सुमन प्रस्तुति मुख गाई॥

दोहा–चकित भये लखि परस्पर, कहत सकल ब्रजबाल॥
हम जान्यो कोउ वृषभ[2]है, यह तो असुर कराल॥

सो०–दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब॥
भक्तनको रक्षपाल, ब्रजवासी नँदलाडिलो॥

जब अरिष्ट मारयो गिरिधारी। भयो कंस सुनि बहुत दुखारी॥
आये ऋषि नारद तिहि काला। कह्यो कंस सों सुन भूपाला॥
जिन मारे सब असुर तुम्हारे। ते नहिं होहिं नंदके बारे॥
मैं जान्यों निश्चय यह भेऊ। हैं वसुदेव पुत्र वे दोऊ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई। सोवह हती यशोमति जाई॥
भयो कछू यह सुनु छल राजा। को जानै कर्ता[3] के काजा॥
यह तौ पुत्र भयोहो जबहीं। कही हुती तोसों मैं तबहीं॥
अपनी सों बहुतै तुम कीनों। सो क्यों मिटै जो बिधि लिखि दीनों॥
करहु यत्न तुम अबहूँ सवारे। यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे॥
डरयो कंस सुनि मुनिकी बानी। भयो शोच वश मूढ अज्ञानी॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ। छोड़े हुते वंदिते दोऊ॥
बहुतबुरो मान्यों तिन पाहीं। राखे बहुरि वन्दिके माहीं॥

दोहा–कैसे मारों कह करौं, निशि दिन यहै विचार॥
शालि रहे नृप कन्स उर, हलधर नंदकुमार॥

सो०–अब धौं पठऊं काहि, मनहीं मन शोचत खरो॥
काहु न मारयो ताहि, असुर गयेते सब मरे॥

१ रक्त। २ बैल। ३ विधि।

अथ केशीवधलीला ॥

असुरन माहिं बड़ो बलधारी। केशीअसुर बीर अति भारी ॥
कंस ताहि तब बोलि पठायो। अति आदरकरि ढिग बैठायो ॥
कहत कंस केशी सुनु मोसों। जीकी बात कहत मैं तोसों ॥
मो समान राजा कोउ नाहीं। मेरी आन सकल जग माहीं ॥
ये सेवक मेरे नहिं ऐसे। जैसे मैं चाहत हौं तैसे ॥
जासों कहौं बात मैं जोई। करि आवै कारज वह सोई ॥
तातें मोहिं यही पछितायो। तब केशी कहि वचन सुनायो ॥
ऐसो कहाकठिन प्रभु काजा। जाको तुम शोचतहो राजा ॥
तुमहो सब असुरनके नायक। और कौन दूजो तुम लायक ॥
जाहि क्रोध करि चितवो जबहीं। ताको नाश होय नृप तबहीं ॥
आयसु कहा मोहिं किन दीजै। सो कारज अबहीं हम कीजै ॥
यह सुनि कंस हर्ष जिय आन्यो। केशी को बहु भांति बखान्यो ॥

दोहा–असुर वंश सबही हते, काहि कहौं ब्रजजान ॥
नंदमहरके छोहरा, करि आवैं बिन प्रान ॥
सो०–कियो न तिन कछुकाज, आगे जे पठये असुर ॥
यह सुनिकै अति लाज, मारे सब नँद बालकन ॥

तातें कछु ह्वैहै मैं जानत। बड़ो बीर तोको मैं मानत ॥
ता कारण ब्रज तोहिं पठाऊं। बहुत और कहि कहा सिखाऊं॥
जिहि तिहि विधि छलबल करि कोऊ। मारि आव नँद बालक दोऊ ॥
कै लै आव बांधि दोउ भैया। कहत जिन्हैं बलराम कन्हैया ॥
यह सुनि गर्व असुर भटकीनों। चल्यो ब्रजहि नृप आयसु दीनों ॥
मनहिं कहत देखौंधौं ताही। कंस नृपति डरपत सब जाही ॥
अश्वरूप ह्वै ब्रजमें आयो। अति बल गरजि चहूंदिशि धायो॥
वेगवन्त अति वपुष विशाला। झारत ग्रीव पूंछ विकराला ॥
बारहि बारहि सो ध्वनिकरही। ब्रजके लोगन मारत फिरही ॥

१ मारे। २ घोडा।

जित तित भाजि चले नरनारी। भये विकल सब अति भय भारी॥
कह्यो जाय आतुर हरि[1]पाहीं। अश्व एक आयो ब्रजमाहीं॥
अति विकराल न जात बतायो। कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो॥
दोहा–ब्रज आयो केशी असुर, जानि लियो नँदलाल॥
सन्मुखताके हरषिकै, चले कंसके लाल॥
सो०–शीश मुकुट बनमाल, कटि कसि बांध्यो पीतपट॥
उर भुज नयन विशाल, असुर विदारन सुरसुखद॥
जब केशी देखे हरि आवत। भयो क्रोध करि सन्मुख धावत॥
अति बल दोऊ चरण उठाये। प्रभुके उरको चपल चलाये॥
देखत डरे सकल ब्रजवासी। गहे बीचहीं हरि अविनाशी॥
छूटन असुर बहुत बलकीनों। ठेलि श्याम पाछे तब दीनों॥
गिरो धरणि पर मूर्च्छित भारी। उठ्यो क्रोधकरि बहुरि सँभारी॥
दावँ घात करिकै बहु धावै। पुनि पुनि चरण चपेट चलावै॥
अतिहि वेग हरि जात बचाई। करत युद्ध कौतुक सुखदाई॥
देखत सुर मुनि चढे अकाशा। कछु हर्षैं मन कछु इक त्रासा[2]॥
तकत गोप गोपी भय बाढे। चकित चित्र लिखेसे ठाढे॥
वदनपसारि असुर तब धायो। चाहत हरिको मुखमें नायो॥
तबहिं श्याम यह बुद्धि उपाई। दियो हाथ ताके मुखनाई॥
दांतनदाबि सक्यो सो नाहीं। वृक्ष समान भयो मुख माहीं॥
दोहा–एक हाथ मुख नाइकै, तुरत केश गहि धाय॥
बली सुवत नँदरायके, पटक्यो असुर फिराय॥
सो०–शब्द भयो आघात, धरक्यो उर सुनि कंसको॥
नंदमहरके तात, जान्यो केशीको हन्यो॥
देखत सुरगण भये सुखारी। वर्षे सुमन सुमंगलकारी॥
प्रफुलित भये सकल व्रजवासी। बढ्यो हर्ष उरँ[3] मिटी उदासी॥
गावत जय यश प्रभुहि सुनाई। असुर निकंदन जन सुखदाई॥

१ कृष्ण। २ भय। ३ हृदय।

धाय धाय हरिको सब भेटैं। धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटैं॥
बड़ो दुष्ट मोहन तुम मारयो। ब्रजबासिनको प्राण उबारयो॥
कान्हहिं सदा सहाय हमारी। धन्य धन्य मोहन गिरिधारी॥
लिये लाय उर यशुमति मैया। पुनि पुनि मुखकी लेत बलैया॥
नंद देखि आनँद अति कीनों। बहुत दान विप्रनको दीनों॥
हरिको लै पुनि पुनि उर लावत। मुख चूंबत लखि छबि सुख पावत॥
केशी मारि श्याम गृह आये। भये सकल आनन्द बधाये॥
घर घर सब ब्रजलोग लुगाई। नंद नँदनकी करत बड़ाई॥
ब्रजवासी प्रभु जन प्रतिपालक। संतन सुखद असुर कुल घालक॥

दोहा-धनि धनि ब्रजमें अवतरे, भक्तनके हित आय॥
सुखसागर शोभा अधिक,बलनिधि त्रिभुवन राय॥

सो०-बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवो जोरी युगल॥
देत अशीश मनाय, ब्रजबासी प्रभुको सबै॥

अथ व्योमासुरवधलीला॥

दूजे दिन सुंदर ब्रजनाथा। गये बनहिं गायनके साथा॥
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये। शोभितसंग सुभग मन भाये॥
गईं गाय बनमें अगुवाई। जहँ तहँ चरन लगीं सुखपाई॥
ग्वालन संग श्याम अनुरागे। चोर मिहिचनी खेलन लागे॥
भये मग्न तनु सुधि कछु नाहीं। दौरत दुरत फिरत मगमाहीं॥
तबहिं कंस केशीबध सुनिकै। बार बार शोचत शिर धुनिकै॥
व्योमासुर इक अति बलवाना। माया चरित बहुत सो जाना॥
पठयो ताको तब ब्रज माहीं। मारन कह्यो श्यामको ताहीं॥
गोप वेष धरि सो ब्रज आयो। ढूंढत हरिको बनमें पायो॥
गयो समाय सखनके माहीं। ताको किनहूं जान्यों नाहीं॥
व्योमासुर इक बुद्धि उपाई। प्रथम बालकन लेहुँ चुराई॥
इकलोकरि जब हरिको पाऊं। तब मारौंकै गहि लै जाऊं॥

१ बनाई। २ पकड।

दोहा-दुरनें जाहिं बालक जहां, तहां असुर सँग जाय ॥
आवहि एकहि एकलै, पर्वत माहिं दुराय ॥
सो०-रहि गये थोरे ग्वाल, जब यों बहु बालक हरे ॥
तब जान्यों नँदलाल, व्योमासुरके कपटको ॥
धर्‌यो ध्यान तब कुँवर कन्हाई । हरिसों ताकी कहा बसाई ॥
तुरत असुरलै भूधर पटक्यो । प्राण देह तजि स्वर्गहि सटक्यो ॥
असुर मारिकै दीनदयाला । बालक शोधन चले गोपाला ॥
ऋषि नारद आये त्यहि काला । देखि श्याम मुख लख्यो बिशाला ॥
उपज्यो प्रेम हर्ष उर पावन । बीन बजाय लगे यश गावन ॥
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी । आदिपुरुष प्रभु अन्तर्यामी ॥
अलख अनीह अनन्त अपारा । को जानै प्रभु रूप तुम्हारा ॥
सकल सृष्टिके सिरजन हारे । पालन लय सब ख्याल तुम्हारे ॥
युग युग यह अवतार गुसाईं । भक्तनहित प्रभु लेत सदाईं ॥
धरणी भार पाप भइ भारी । सुरन संग ले जाय पुकारी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी । राखि लेहु प्रभु शरण उबारी ॥
राज अनीति सुरन तब भाषी । शशि अरु सूर[3] भये सब साखी ॥
दोहा-क्षीरसिन्धु अहि फेणु प्रभु, श्रवणन परी पुकार ॥
तब जान्यों सुरसन्त महि, दुखित दनुजके भार ॥
सो०-कह्यो भूमि अवतार, सिंधु मध्य वाणी प्रकट ॥
श्रीपति प्रभु असुरारि, जगत्रार्ता[4] दाता अभय ॥
मथुरा जन्मि गोकुलहि आये । मात पिता सोवतही पाये ॥
नन्द यशोदा बालक जान्यों । गोपिन काम रूप करि मान्यों ॥
पय पीवतही बकी विनाशी । भयो असुर सुनि कंस उदासी ॥
यहि अन्तर जे दनुज[6] पठाये । ते प्रभु सब कौतुकहि नशाये ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके बासी । जिन वश किये ब्रह्म सुखराशी ॥
मन बुधि वचन तर्क ते न्यारे । निगमहुं अगम न परत विचारे ॥

१ छिपन । २ पृथ्वी । ३ सूर्यनारायण । ४ जगरक्षक । ५ पूतना । ६ असुर ।

ते व्रज युवतिन बनहिं विहारे। कमल नयन प्रभु नन्ददुलारे ॥
नील जलज तनु सुन्दर श्यामा। मोर मुकुट कुण्डल अभिरामा ॥
मुरलीधर पीताम्बर धारी। वनमाला धर कुंजविहारी ॥
बसहु रूप यह उर धर पाऊं। बहुरि नाथ प्रभु विनय सुनाऊं ॥
यह अवतार जबहि प्रभु लीनो। आयसु सुरन यहै प्रभु दीनो ॥
दैत्य दहन सन्तन सुखकारी। अब मारहु प्रभु कंस प्रचारी ॥

दोहा-जब यह गाथा गायकै, नारद कही सुनाय ॥
बोले प्रभु करि तब कृपा, सुधा वचन मुसुकाय ॥

सो०-जाहु वेगि मुनिराय, करहु सुरनको काज यह ॥
पठवहु मोहिं बुलाय, नृप आयसुते मधुपुरी ॥

जब प्रभु हँसि यह आयसुदीनो। तब प्रणाम प्रभुको ऋषि कीनो॥
हरषि चले मुनि नृपके पासा। यहै बुद्धि मन करत प्रकाशा ॥
यहै बात हलधर समुझाई। जो वाणी ऋषि गये सुनाई ॥
तुम प्रभु अखिल लोकके कारन। जन्मे हौ भुव भार उतारन ॥
परमपुरुष अविगति अविकारा। अविनाशी अद्वैत अपारा ॥
सिन्धु रूप जनहित सुखकारी। त्रिभुवन पति श्रीपति असुरारी॥
संकर्षण जब ऐसो भाष्यो। सुनि सुनि श्याम हृदय सब राख्यो॥
तब हँसि कही भ्रातसों वानी। जो तुम कहत बात मैं जानी ॥
कंसनिकन्दन नाम कहाऊं। केश गहौं पुहुमी घसिटाऊं ॥
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये। बालक बहुरि शोधि सब लाये ॥
व्योमासुर मार्यो नँदलाला। भये मुदित सब देखि गुवाला ॥
धन्य धन्य सब प्रभुको भाषे। कहत आज तुम हम सब राखे ॥

दोहा-गाय गोप हलधर सहित, भये परम आनंद ॥
सांझ समय वनसे चले, व्रजको श्रीनँदनंद ॥

सो०-आये नंद अवास, प्रभु व्रजवासी दासके ॥
गये कंसके पास, ऋषिनारद मथुरापुरी ॥

१ नीलकमल। २ अमृतवाणी। ३ पृथ्वी। ४ नंदगृह।

नारद गये कंसके पासा । मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये । हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये ॥
कैसो मुख ऋषि मन क्यों मारे । कह चिन्ता मन बढ़ी तुम्हारे ॥
नारद कही सुनो हो राऊ । कह बैठे कछु करौ उपाऊ ॥
त्रिभुवनमें नाहीं कोउ ऐसो । देख्यो नन्दसुवन मैं जैसो ॥
करत कहा रजधानी ऐसी । उपजी तुमको बात अनैसी ॥
दिन दिन भयो प्रबल बहु भारी । हम सब हितकी कहत तुम्हारी॥
तब बोल्यो नृप गर्वित बानी । यह नारद तुम कहा बखानी ॥
यदपि कहत हौ तुम हित केरी। तदपि बराबारि नहिं वह मेरी ॥
कोटि दनुज मोसम मो पासा । जिनको देखि सुरन मन त्रासा ॥
कोटि कोटि जिनके सँग योधा । जीतसके को जिनको क्रोधा ॥
तिनके बल कहँ कहूं बताई । देखत जिनको काल डराई ॥

दोहा–रहत द्वार संतत खरी, कोटि भटनकी भीर ॥
अतिप्रचंड कोदंडधर, महाबली रणधीर ॥
सो०–महामत्त गज एक, त्रिभुवन गामी कुबलिया ॥
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गनै ॥

कहा ग्वालके बालक दोऊ । तदपि बली उपजेहैं वोऊ ॥
प्रजालोग ब्रजके सब मेरे । सेवा करत सदा रहे नेरे ॥
तातेसकुचत हौं उन काजा । बालक सुनत होत मोहिं लाजा॥
भलीकरी यह बात बुझाई । मनकी डारौं खटक मिटाई ॥
सुनहु और नारद मुनि हमसों । कहत मतेकी वाणी तुमसों ॥
उनपर सैना कहा पठाऊं । नन्द सहित सहजहि बोलवाऊं॥
डारौं गजके चरण खुदाई । और प्रजा ब्रज देउँ बसाई ॥
यहै बात मेरे मन आई । तब सुनि मुनि बोले मुसुकाई ॥
जो तुम अपनो गर्व सँभारो । तो जानो अब तुम उन मारो ॥
त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे । यह कहि मुनि विधि धाम पधारे॥

१ स्वर्ग, पाताल, मर्त्य ।

कंस आपने जिय यह जानी। नारद हितकी बात बखानी ॥
अब मारों नहिं गहर लगाऊं। मथुरा जिहि तिहि भांति बुलाऊं ॥
दोहा—यहै शोच उरमें परचो, नहिं विचार कछु और ॥
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥
सो०—कबहुं विचारत हीय, आपहि चढ़ि धाऊं व्रजहि ॥
पुनि सकुचतहै जीय, व्रजवासी प्रभु गुण समुझि ॥
जन्महिते वेहैं असुरारी। सातहि दिनके बकी सँहारी ॥
कागासुर बल गयो बढाई। सो मुरझाय गिरचो फिर आई ॥
शकट तृणा क्षणहीमें मारे। ख्यालहि और असुर संहारे ॥
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई। आयो नहिं जीवत फिरि कोई ॥
अब उनको सहजही बुलाऊं। ऐसोको जिहि लेन पठाऊं ॥
जाय नन्दसों कहै बुझाई। श्याम राम सुन्दर दोउ भाई ॥
सुनि सुनि अति नृपके मन भाये। देखनको मधुपुरी बुलाये ॥
ऐसे करि जब वे ह्यां ऐहैं। बहुरो जियत जान नहिं पैहैं ॥
यह विचार उर में ठहरायो। तब आतुर अक्रूर बुलायो ॥
सुनि अक्रूर मनमें भय पायो। किहि कारण नृप वेगि बुलायो॥
आतुर गयो पवँरि पर धाई। जाय पवँरिया खबरि जनाई ॥
सुनतहि बोलि महलमें लीनो। सकुचि गमन सुफलकसुतकीनो॥
दोहा—कछु डर कछु जिय धीर धरि, गयो नृपतिके पास॥
देखि डरचो मुख शोचवश, उरते लेत उसास ॥
सो०—हाथ जोरि शिरनाय, अनबोल्यो सन्मुख रह्यो ॥
लीनो ढिग बैठाय, मर्भ वचन कहि कंस तब ॥
आपहि और तहां कोउ नाहीं। बोल्यो नृप सुफलकसुत पाहीं ॥
कहि जु गये नारद ऋषि बानी। सो सब कहिकै प्रगट बखानी ॥
सुनि अक्रूर कहत सत तोको। श्यामराम शालत उर मोको ॥
ज्यहि त्यहि विधि अब उनको मारौं।यह कछु दोषहृदय नहिं धारौं॥

१ विलंब। २ मथुरा।

पठवों काहि जाहि व्रज जोई। कहै प्रीति करि नंदहि सोई॥
बल मोहन तुव तनय सुहाये। तुमहिं सहित नृपराज बुलाये॥
सुन गुण रूपहि अगम अगाधा। है नृप को देखन की साधा॥
काली पीठ कमल ले आये। तब ते नृपके मनमें भाये॥
सो बखसीस इन्हें अब देहैं। इनके वचन सुनत सुख पैहैं॥
यह कहिकै उनको लै आवै। भेद सुकोऊ जान न पावै॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो। तब अक्रूरहि धीरज आयो॥
मन मन कहत कहा यह भावै। आपुहि अपनो काल बुलावै॥

दोहा—कियो विचार अक्रूरतब, कहत जु कछु मैं और॥
तौ मारैगो मोहि यह, अबहीं याही ठौर॥

सो०—कह्यो मानिहै नाहिं, काल याहि आयो निकट॥
यह विचारि मन माहिं, सुफलकसुत बोल्यो हरषि॥

सुनहु नृपति नीके मन आनी। धनि धनि नारद सत्य बखानी॥
बड़े शत्रु हमको वे दोऊ। उपजे नंदभवन में कोऊ॥
कीजै वेग नृपति यह काजा। तुम सर और कौन म्वहिं राजा॥
मुखते आयसु जो करि पाऊं। भोर वेगि तिहि व्रजहि पठाऊं॥
सुफलकसुत यह कही सयानी। तब हर्ष्यो नृप सुनि यह बानी॥
फिर फिर कहत हिये गरबाई। प्रात बोलि मारौं दोउ भाई॥
आधी निशि लौं यह मन कीनो। तब अक्रूर बिदा करि दीनो॥
पर्यो सेज आलस जिय जानी। सेवाकरन लगीं सब रानी॥
नेक पलक लागी झपकाई। लखे स्वप्न बलराम कन्हाई॥
काल सरिस दोउ देख डरानो। झिझकि उठ्यो भर्म्यो सकुचानो॥
देखे जागत ह्वां नहिं दोऊ। चकित भई रानी सब कोऊ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई। क्यों झिझके स्वप्ने नृपराई॥

दोहा—महाराज झिझके कहा, स्वप्ने आज सकाय॥
कहिये काको शोच अति, जीमें रह्यो समाय॥

१ अक्रूर।

सो०-तब मनमें सकुचाय, सहजहि रानिनसों कह्यो ॥
भेद न गयो जनाय, मन शंका उर धकधकी ॥
सावधान प्रतिपाल कराये । जहँ तहँ योधा सकल जमाये ॥
श्याम राम भय पलक न लावै । अंतर शोच न प्रगट जनावै ॥
जाग्यो आप संग सब नारी । भई यामनिशि युगते भारी ॥
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई । ठाढो होत कबहुँ अँगनाई ॥
घरियाली सों पूछि पठावै । बार बार निशि खबर मँगावै ॥
शोचत सब प्रातहि कह करिहै । क्रोध भरचो नृपका शिर परिहै ॥
कही घरी निशि गणिकन बाकी। इक इक क्षण युग यह गति ताकी ॥
कहत ब्रजहि धौं काहि पठाऊं । जासों कहि नँदसुवन मँगाऊं ॥
पठवों अक्रूरहिको जाई । ल्यावै ब्रजते ठगि दोउ भाई ॥
इत देख्यो सपनो नँदराई । बल मोहन कहुँ गये हिराई ॥
ग्वाल बाल रोवत पछिताहीं । कहत श्याम तौ अब ब्रज नाहीं ॥
संगहि खेलत रहे हमारे । निठुर होय कहुँ अन्त सिधारे ॥

दोहा-दूत एक कोउ आयकै, सँगलै गयो लिवाय ॥
वाहीके दोउ ह्वैगये, ब्रजवासिन बिसराय ॥

सो०-अतिव्याकुल नँदराय, मुराझि परे धरणी सुनत ॥
विवश यशोदा माय, श्याम विरह व्याकुल खरी ॥
व्याकुल नरनारी ब्रजवासी । पशु पक्षी सब परमउदासी ॥
रोवत गिरत धरणि दुख पागे । अति अकुलाय नंद तब जागे ॥
धक धकात उर श्रवत[1] नयन जल।सुत अँग परसन लागे शीतल ॥
ससकत सुनत अतिहि अतुरानी। कह भरमें पूछत नँदरानी ॥
नन्दनहीं कछु भेद जनायो । श्यामहिं लखि धीरज उर आयो ॥
अति प्रभात रवि उगन न पायो। सुफलक्क[2] सुत उत कंस बुलायो ॥
सुनतहि द्वारपाल उठि धायो । सोवतते अक्रूर जगायो ॥
कह्यो वेगि चलिये नृपपासा । समुझि मनं निशि चल्यो उदासा ॥

१ नयनोंसेपानी टपकत। २ अक्रूर।

ठाढो नृपति द्वारही पायो। देखत दूरिहिते शिरनायो ॥
अति आदर करि निकट बुलायो। शिरोपाव[1] नृप तुरत मँगायो ॥
अक्रूरहि निजकर पहिरायो। बहुत कृपाकरि वचन सुनायो ॥
ल्यावहु नन्द महरि सुत दोऊ। तुम सम और चतुर नहिं कोऊ ॥
दोहा–सुख हरष्यो अक्रूर सुनि, हृदय गयो बिलखाय ॥
असुर त्रास[2] जियमें परयो, वचन कह्यो नहिं जाय ॥
सो०–दीनो रथहि चढ़ाय, जाहु वेगि ब्रज नृप कह्यो ॥
लै आवहु दोउ भाय[3], अबहिं बिलम्ब न कीजिये ॥
तब अक्रूर कह्यो कर जोरी। सुनहु देव विनती इक मोरी ॥
बल मोहन प्रातहि दोउ भैया। वनको जायँ चरावन गैया ॥
जो उनको घरमें नहिं पाऊं। जाते प्रभु यह बात सुनाऊं ॥
आज नन्द गृह बसिहौं जाई। प्रातहि लै आवहुँ दोउ भाई ॥
ऐसे जब अक्रूर जनायो। कंस बात यह मानि पठायो ॥
शोशनाथ तब रथ चढि हांक्यो। सुफलक सुत ब्रज सन्मुख ताक्यो॥
बहु प्रशंसि सब मल्ल बुलाये। चाणूरादि सकल चलि आये ॥
तिनसों कह्यो सुनौ सब बीरा। ब्रजमें रहत जु नन्द अहीरा ॥
कहियत बली तासुसुत दोऊ। राम कृष्ण जिनकह सब कोऊ ॥
बहुत असुर मेरे उन मारे। तातेहैं वे शत्रु हमारे ॥
उनको मैं मधुपुरी बुलायों। सुफलक सुतको लेन पठायों ॥
उनको मति जानौ तुम बारे। हैंवे महाकठिन बल भारे ॥
दोहा–रंगभूमि ताते रचौ, चित्र विचित्र बनाय ॥
सावधान ह्वैकै तहां, रहौ मल्ल सब जाय ॥
सो०–ऊंचो एक मचान, तहाँ और सुन्दर रच्यो ॥
जहां असुर परधान, बैठैं सब मेरे निकट ॥
योधा और अनेक बुलावो। सावधान करि सब बैठावो ॥
तातै और पौरके बाहर। रहै कुबलियागंज[4] तिहिं ठाहर ॥

१ पहिराव, वस्त्रालंकार। २ कंसभय। ३ कृष्ण, बलदेव। ४ दशसहस्र हाथीकाबलवाला।

राखो द्वार तीसरे जाई। गरुव कठिन अति धनुष धराई ॥
बहुभट तहां रहैं रखवारी। अस्त्र शस्त्र धारी बलभारी ॥
ऐसे सजग रहौ सब कोऊ। जब आवैं वे बालक दोऊ ॥
प्रथम धनुष उनसों चढ़वावो। उन्हैं कहौ यह धनुष उठावो ॥
जब वे धनुष उठावैं नाहीं। घेरि लेहु उनको तिहिठाहीं ॥
ताही ठौर मारि दोउ लीज्यो। भीतरलौं आवन नहिं दीज्यो ॥
जो कदाचि ह्वांते चलि आवैं। तौ गजते आवन नहिंपावैं ॥
डारो गजके चरण रुँधाई। तुमको राखत अबहिं जनाई ॥
जो छल बल करिकै बचि आवैं। रंगभूमि आवन नहिंपावैं ॥
तौ सब मल्ल मारि उनलेहू। मोसमीपै आवन नहिं देहू ॥
दोहा–ठौरहि ठौर सजायकै, सजगरहौ यहि भांत ॥
जिहिं तिहिं विधि मारौं उन्हैं, नहीं दूसरी बात ॥
सो०–मन मन मौज बढ़ाय, ऐसे आयसुदे सबन ॥
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूरकी ॥

अथ अक्रूरआगमन लीला

सुफलकसुत मनशोच अपारा। हैनृप कंस बड़ो हत्यारा ॥
मंत्र कियो मिलि मेरे साथा। पठयो मोहिं लेन ब्रजनाथा ॥
कैसे आनितेउँ मैं जाई। मो देखत मारै दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथकीनो ठाढ़ो। पच्यो विचार हृदय अति गाढ़ो ॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरिकै। आयो नीर लोचनन ढरिकै ॥
अति बालक बलराम कन्हाई। कहा करौं कछु नाहिं बसाई ॥
मोहिं मारि वरु वन्दि करावे। यह विचारकरि रथ न चलावे ॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ल्यावे। चलत फिरत कछु बनि नहिं आवे ॥
प्रभु कृपालु सब अंतर्यामी। सुफलकसुतमन पूरण कामी ॥
सुमिरत कृष्णहृदय यह आई। वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवन राई ॥
अखिल जगतके कारण कर्ता। उत्पति पालन अरु संहर्त्ता ॥
भूमि भार कारण अवतारा। को जानै गुणरूप अपारा ॥

१ निकट।

दोहा--धन्य कंस जिन मोहिं ब्रज, पठयो लेन गोपाल ॥
जाय रूप वह देखिहौं, निगम[1] नेति नँदलाल ॥
सो०--यह बिचार उर आनि, रथ हांक्यो अक्रूर तब ॥
भयो शकुन शुभवानि, मृगगण आये दाहिने ॥
दहिने देखि मृगनकी माला[2] । सुफलकसुत उरहर्ष विशाला ॥
कहत आज इन शकुन नजाई । भुज भरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई ॥
श्याम सुभग तनु परमसुहावन । इंदुबँदन[3] बय ताप नशावन ॥
अंग त्रिभंग किये गोपाला । सारसद्दते नयन विशाला ॥
मोर मुकुट कुण्डल बनमाला । कटिकछनी पट पीत विशाला ॥
तनु चंदनकी खौर बनाये । नटवरवेष मनोज[4] लजाये ॥
ह्वैहैं गैयनके सँगठाढे । ग्वालन मध्य महाछबि बाढे ॥
सो दरशन लखि होब सनाथा । धरिहौं जाय चरण पर माथा ॥
जे शुभ चरण पितामह[5] ध्यावैं । महिमा[6] जिनकी वेदबतावैं ॥
जिन चरणन कमला[7] रतिमानी । शंभु धर्योशिर जिनको पानी[8] ॥
सनकादिक नारद यशगावैं । जिन चरणनयोगी चितल्यावैं ॥
बलि जिनकी मर्यादन पाई । हारि मानि निजपीठ नपाई ॥
दोहा--शिला[10]शाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर ॥
आज देखिहौं ते चरण, सकल सुखन की सीर ॥
सो०--अरुण कंजके रंग, अंकित अंकुश कुलिश ध्वज ॥
गोप बालकन संग, गो चारत बन पाइहौं ॥
परिहौं जाय चरणपर जबहीं । भुजन उठाय भेटिहौं तबहीं ॥
परसत उर आनँद उपजैहैं । अंगन पुलकि तनोरुह ऐहैं ॥
देखत दरश परश सुख ह्वैहैं । प्रेम[11] सलिल लोचन भरिजैहैं ॥
कुशल पूछि हैं म्वहिं सुखदानी । कहि नहिं सकिहौं गद्गद बानी ॥
बारहिं बार वचन मृदु कैहैं । सुनि सुनि श्रवणे[12] परम सुखपैहैं ॥

१ वेद । २ हरिणोंकेयूथ । ३ चन्द्रवदन । ४ कामदेव । ५ ब्रह्मा । ६ प्रभुता । ७ लक्ष्मीजी । ८ चरणोदक-गंगाजी । ९ थाह । १० अहल्या ११ प्रेमाश्रु । १२ कान ।

यों अक्रूर ध्यानमें अटक्यो । भूल्यो पंथ फिरत रथ भटक्यो ॥
हरि अनुराग भर्यो उर माहीं । रही देहकी सुधि कछु नाहीं ॥
सांझ भई गोकुल नहिं पायो । नहिं जानत कोहों कहँ आयो ॥
किन पठयो कहँ जात न जानी । रथ बाहनकी सुरति भुलानी ॥
भयो हर्ष उर प्रेम विशाला । दशहूं दिशि पूरण गोपाला ॥
हरि अंतर्यामी सब जानी । भक्त बछल है जिनकी बानी ॥
भक्त भाव करि जो कोउ ध्यावैं । मिलत तिन्हैं नहिं विलम लगावैं ॥

दोहा–ग्वाल संग वृन्दा विपिन, चारत धेनु सुजान ॥
चले हर्षि हलधर सहित, भक्त हेतु जिय जान ॥

सो०–यमुन पार करि गाय, गौरी गावत हर्षि हरि ॥
गायन तहां मँगाय, लागे गोदोहन करन ॥

गायन दुहन लगे सब ग्वाला । आपहु दुहत भये नँदलाला ॥
भक्त हेतु यह सुख उपजायो । तहां दरश सुफलकसुत पायो ॥
रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल । उतरि पर्यो भूपर अति आकुल ॥
भयो मनोरथ मनको भायो । दौरि श्याम चरणन शिरनायो ॥
पुलकि गात लोचन जल धारा । हृदय प्रेम आनंद अपारा ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो । भक्त हेतु मिलि कंठ लगायो ॥
भयोजु सुख सो सोई जानै । ब्रजवासी किहि भांति बखानै ॥
जो अक्रूर चरित मन कीनो । तैसिय भाँति दरश हरिदीनो ॥
मधुर वचन श्रवणन सुखदाई । पुनि पुनि पूछत कुँवर कन्हाई ॥
आनन चारु निरखि सुखकारी । तब बोल्यो अक्रूर सँभारी ॥
कुशल नाथ अब दरश निहारी । दैत्य दलन भक्तनहितकारी ॥
भेदहि भेद कंसकी बानी । सुफलकसुत सब प्रगट बखानी ॥

दोहा–सुनत वचन अक्रूरके, मुसकाने ब्रजचन्द ॥
फरकि भुजा भूभारकी, टारन असुर निकन्द ॥

सो०–मिले राम पुनि आय, परमप्रीति अक्रूरसों ॥

१ गौ । २ शोभायमानमुख ।

उर आनँद न समाय, वासुदेव दोऊ निरखि ॥
कहि कहि उठत इहै नँदलाला । हमहिं बुलायो कंस भुआला ॥
लेबेको अक्रूर पठाये । कालहि करि अति कृपा मँगाये ॥
सुनतहि भये चकित सबग्वाला । कहा कहतहैं मदन गोपाला ॥
भये प्रेम वश मति अकुलानी । भरि आयो नयननमें पानी ॥
निरखि सबनको मुख सुखदानी । तब बोले करि श्याम सयानी ॥
चलहु कालिह देखहिं नृप कंसा । मति आनौ जियमें कछु संसा ॥
यह कहि चले हर्षि ब्रज बालन । कछू हर्ष कछु संशय ग्वालन ॥
अति कोमल बलराम कन्हाई । हँसि लीन्हें अक्रूर उठाई ॥
सुमनहुते हरवे सुख दलियां । दोउ लसत सुफलक सुत कनियां ॥
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी । पहुंचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रज लोग चकाने । कंस दूत सुनि नन्द सकाने ॥
स्वप्नो समुझि शोच उर छायो । मन मन कहत कहाँ धौं आयो ॥
दोहा–आतुर उठि आगे चले, लेत नन्द उपनन्द ॥
देखन आये बरनते, सुनत नारि नर वृन्द ॥
सो०–श्याम राम उरलाय, स्यंदन तजि सुफलक सुवन ॥
आवत लखि नँदराय, भये हर्ष विस्मय विवश ॥
सादर तिनको शीश नवाये । कुशल प्रश्नकरि गृह लै आये ॥
चरण धोय बैठक शुभ दीनी । विविध भाँतिभोजन विधि कीनी ॥
संकर्षण अरु कुँवर कन्हैया । मिलिगये अक्रूरहिं दोउ भैया ॥
क्षणक होत नहिं नेक नियारे । मनहुँ दुलार उनहिं प्रतिपारे ॥
तब अक्रूर संग लै दोऊ । भोजन कियो लखत सब कोऊ ॥
हरि इत उत फेरत नहिं आखैं । सब ब्रजलोग मनहिं मन भाखैं ॥
उठे अँचै तब पान खवाये । आदर सहित पलँग बैठाये ॥
पुनि करजोरि नंद यों भाख्यो । कहा कृपा करि पग इतराख्यो ॥
तब ऐसे अक्रूर सुनायो । बल मोहनको नृपहि बुलायो ॥
तुमको कह्यो संगलै आवैं । सुनि सुनि गुण मेरे मन भावैं ॥

देखनको अभिलाष जनायो। ताते वेगहि प्रात बुलायो॥
ब्रजके लोग सुनत यह बानी। भये चकित सुधि बुद्धि हिरानी॥
दोहा—चकित नन्द यशुमति चकित, मनहीं मन अकुलात॥
हरि हलधरको सैनदे, सबै बुलावत जात॥
सो०—माया रहित मुकुंद, जाके योग वियोग नहिं॥
सदा एक आनंद, अविगति अविनाशी पुरुष॥
प्रेम भक्तकी कछु डर लाजा। कीनो चहैं भूमि सुर काजा॥
जाते नहिं काहू तनु हेरत। बोलत नहीं नयन नहिं फेरत॥
जनु पहिचान कबहुँ की नाहीं। लखि लखि सब डरपत मन माहीं॥
हरि सुफलक सुतसों मन लायो। यहै कहत नृप हमहिं बुलायो॥
हुती साध हमहू मन माहीं। कबहुँ नृपति बोल्यो क्यों नाहीं॥
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी। यहसुनि विकल सकल नरनारी॥
श्याम नहीं कछु मनमें आने। भये नेहतजि तुरत बिराने॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई। कितते आयो यह दुखदाई॥
महाक्रूर अक्रूर नामको। जैहै प्रात लिवाय श्यामको॥
जान कहत या संग कन्हाई। कैसे प्राण रहैंगे माई॥
चिलखि वचन शोचति सब ठाढी। मनहुँ विचित्र चित्र लिख काढी॥
अब हम संग तुम्हारे जैहें। भली भाँति नृप देखन पैहैं॥
दोहा-ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बयन॥
बढी श्यामबिछुरन व्यथा, ढरत उमँगजलनयन॥
सो०—फिरत विकल सब ग्वाल, पूछत एकहि एकसों॥
चलन कहत नँदलाल, मन मलीन व्याकुल सबै॥
ब्रजके लोग विकल सब देखैं। तब अक्रूर सबन परितोखैं॥
चिन्ता अतिहि करो मन माहीं। इनको कछू और डर नाहीं॥
भंजन धनुष यज्ञके काजा। मधुपुरि इनहिं बुलायो राजा॥

१ प्रीति। २ समझावैं।

जिन गिरि कर धारि ब्रजहि बचायो। बहुरि हमैं बैकुंठ दिखायो ॥
जाहि गयो सुरपति शिरनाई। ल्यायो नाथि कालि अहि जाई ॥
वरुणधाम देखी प्रभुताई। करति हते सब तुमहि बड़ाई ॥
कहा कंस ताको भय मानैं। इनकी महिमा येही जानैं ॥
कितक धनुष हरि तुरत चढैहैं। देखत इनहिं कंस सुख पैहैं ॥

दोहा—जो करि है कछु कपट तौ, सब समरथ गोपाल ॥
हरि हलधर भैया उभय, पे कालहुके काल ॥
सो०—हर्ष सबै अहीर, हरिप्रताप उरमें समुझि ॥
सब लायक बल वीर, धीर धरौ यह जानिकै ॥

बार बार यशुमति अकुलाई। कहत रहौ सुत कुँवर कन्हाई ॥
अबहीं तात बहुत तुम बारे। मथुरा बसत मल्ल हत्यारे ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं। तुमबिनलाल मात मरि जाहीं ॥
कहत राम सुनु यशुमति मैया। तूमतिबौरो जान कन्हैया ॥
मतिहि कंसभय व्याकुल होहीं। एक भरोसो हरिको मोहीं ॥
प्रथमहिं बकी कपट करि आई। अतिहि प्रबल विषकुचलपटाई ॥
चारहि दिनके तबहिं कन्हाई। तौ देखतही ताहि नशाई ॥
शकट तृणावृत वत्स अन्याई। अघ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एकहि पलमें सकल सँहारे। विष जलते सब सखा उबारे ॥
गोवर्द्धन जिन करपर धारयो। महाप्रलयको जल सब टारयो ॥
हरि सम बली और कोउ नाहीं। तू मत शोच करै मनमाहीं ॥
हम बालक कह तुमहिं सिखावैं। धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवैं ॥

दोहा—सुनि चरित्र गोपालके, उर आयो अवरोहि ॥
जो कछु करैं सो सत्य प्रभु, आवत है सबसोहि॥
सो०—कह्यो नंद तब आय, मैं लैजैहौं संग हरि ॥
धनुषयज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहि बहुरि ॥

१ लड़का।

अथ मथुरागमनलीला ॥

ऐसेहि सबकी रात बिहानी । भयो प्रात चिरिया चुहचानी ॥
महर कह्यो सब गोप बुलाई । दधि घृत भार सजौ बहु जाई ॥
नृपति भेंट हित करहु सँजोई । हरिके संग चलौ सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने। चहत श्याम मधुपुरि निज जाने॥
पर्यो शोर ब्रज घर जहँ ताई । हरि मुख देखनको सब धाई ॥
सजत ग्वाल चलबेको साजा । गैया फिरत दुहनके काजा ॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं । जोतहुतात तुरत रथ अबहीं ॥
सुफलकसुत आयसु जब पायो । सहित सँकोच रथहि पलनायो॥
सुफलक ढिगते दोऊ भाई । होत नहीं न्यारे कहुँ राई ॥
देखतही यशुमति अकुलानी । परी धरणि बिलपति बिललानी॥
विकल कहति मोहिं तजो दुलारे । जात किये सूनो ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी लाई । मोहे मेरे बाल कन्हाई ॥

दोहा–यह सुफलकसुत बूझिये, तुम्हीं हरे मोबाल ॥
वृद्ध समयकी लकुटिया, मेरे मदन गोपाल ॥

सो०–देखहु मनहिं बिचारि, लाभ कछू यामें तुम्हैं ॥
दियो धरम डरडारि, क्रूर भये इत आयकै ॥

चलत जात चितवत ब्रजनारी।विरह बिकल तनु सुरत बिसारी॥
जहँ तहँ चित्र लिखीसी ठाढी । नयनन नीरनदी जिमि बाढी ॥
लगत निमेष[1] कूल दोउ नाहीं । भ्रमति नाव[2] पुतरी ता माहीं ॥
ऊरध श्वास समीर झकोरत । चित्र कपोल तीरतरुतोरत ॥
काजलकीच कुचील किये तट । अधर कपोल उरज अंचलपट ॥
रहे जहां तहँ पथिक जकेसे । चरण हस्त मुख वचन थकेसे ॥
श्याम विरह व्याकुल ब्रजबाला । नीरहीन जिमि मीन बिहाला ॥
सूखत अधर मदन मुरझाने । जनु हिम[3] परस कमल कुम्हिलाने
कहति परस्पर वचन अधीरा । गदगद वचन ढरत दृग नीरा ॥
जीवन धन प्राणनको प्यारो । लिये जात अक्रूर हमारो ॥

१ पलक । २ घुंघट । ३ पाला ।

सुनहु सखी अब कीजै सोई । जाते बहुरि शूल नहिं होई ॥
गयो दूर रथ रह्यो न जैहै । पुनि पाछे पछितायो ऐहै ॥

दोहा–परिहरि यश आशा जियन, लाज पंचकी कान ॥
करिये विनती श्यामसों, सखी समय पहिचान ॥

सो०–होनी होय सो होय, पाँय परशि हरि राखिये ॥
नातरु मरिहैं रोय, समय चूक उर शालिहै ॥

प्रभु अन्तर्यामी सुखदानी । विरह बिकल गोपी जन जानी ॥
चितये नयन कमल दल लोचन । सकल शोच संताप विमोचन ॥
मृदु मुसकानि ठगोरी डारी । श्याम ठगी सब ब्रजकी नारी ॥
रहि गईं चितवत वचन नआयो । चढ़े श्याम रथ अवसर पायो ॥
हरिको नाम सुमिरि मन माहीं । चढ़े अक्रूर तुरंत तहांहीं ॥
देखत महरि यशोमति धाई । पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई ॥
मोहन नेकु देखि इत लैहौ । बिछुरत लाल भेंटम्बाहिं दैहौ ॥
राखहु तात बोध करि मैया । बहुरौ चढ़हु विमान कन्हैया ॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो । बहुरौ ब्रजमें होत अँधेरो ॥
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो । अपनी गाय जाय सब घेरो ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई । किये यत्न बहु प्राण न जाई ॥
बिलपति बिकल राम महतारी । अति व्याकुल सब ब्रजकी नारी ॥

दोहा–देखि दुखित ब्रज लोग सब, और यशोदा माय ॥
तब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलैंगे आय ॥

सो०–धरणीके हितकारि, मथुरातन चितये बहुरि ॥
कह्यो दृगन सनकारि, रथ हांकन अक्रूर सों ॥

बार बार यशुदा यों भाखै । कोऊ चलत गोपालहि राखै ॥
सुफलकसुत बैरी भयो आई । हरे प्राण धन बाल कन्हाई ॥
हरहु कंस बहु गोधन सारो । कै करि मोहिं बन्दिमें डारो ॥
ऐसेहू दुख श्याम सभागे । खेलहिं मों नयननके आगे ॥
यह कहि महि लोटत अकुलानी । अतिही दुखित नन्दकी रानी ॥

गोपी जन विरहानल डाढीं। रहि गईं प्रेम वियोगनिठाढीं ॥
जिमि कुमुदिनि गण नीर विहीना। रविहि प्रकाश त्रासते दीना ॥
श्यामविमुख क्षणक्षण कुम्हिलानी। बहुरो मिलन कठिन जियजानी॥
बल बुधि थकित श्रवत जल लोचन। चलि नहिं सकीं रहीं मद मोचन
गवँडेलौं सब गईं बिहाला। ब्रज तजि गमन कियो गोपाला ॥
लै गये मधु अक्रूर निकारी। माखी ज्यों सब दीन बिडारी ॥
देखत रहीं थकी टकलाई। जब लगि धूरि दृष्टिमें आई ॥

दोहा--भये ओट जब दृगनते, मुर्च्छि परीं बिलखाय ॥
कहति गयो रथ दूरि अब, धूरि न परति लखाय॥

सो०--कहा करैं ब्रज जाय, मन हरि लैगयो साँवरो ॥
परत न आगे पाय, पाछेही लोचन लखत ॥

वदन विकल विरहारसमातीं। भईं न पवन सङ्ग उडि जातीं ॥
रजहू नहीं विधाता बानी। जातीं चरण कमल लपटानी ॥
भईं नहीं यक रथको अङ्गा। जाती चली तहां लगि सङ्गा ॥
बिछुरे आज श्याम सुखराशी। तौ परतीतिदृगनकी नाशी ॥
उड़ि नहिं गये श्याम सँग लागे। कृष्ण मयी नहिं भये अभागे ॥
रसिक प्रेमके जगत बखाने। रूप लालची सब कोउ जाने ॥
सो करनी कछु इन नहिं कीनी। वृथा मीनकी छबि हरि लीनी ॥
धनि धनि मीन प्रीतिपँथ साँचे। सखि ये नयन हमारे काचे ॥
अब ये शूल सहत जिय शोचत। उमँगि उमँगि भरि भरि जल मोचत॥
हरि बिन अब लखिहैं ब्रज सूनो। समय चूक सहिये दुख दूनो ॥
भई अजान सबै मन माहीं। काहू चलत गह्यो रथनाहीं ॥
वृथा लाज करिकाज बिगारयो। सख्यो कुलहविरहा दुख भारयो॥

दोहा—यों ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहिदीन ॥
लै आईं सब नंद गृह, कृश तनु वदन मलीन ॥

सो०--ब्रजतिय परम उदास, हरि बिन सुख संपतिसपन॥

१ कमलसमूह।

रहैं प्राण इहि आश, श्याम कह्यो मिलिहौं बहुरि॥
खग मृग विकल जहां तहँ बोलैं। गाय वत्स राँभत सब डोलैं॥
तरुवेली पल्लव कुम्हिलानी। ब्रजकी दशा न परति बखानी॥
चले नंद गोपन सँगलैकै। ब्रजबासिनको धीरजदैकै॥
बाल सखा हरिके सुखदाई। दरशन लागि चले सब धाई॥
उत अक्रूर शोच मन माहीं। कियो काज मैं नीको नाहीं॥
बल मोहन भैया दोउ बारे। अति कोमल नवनीत पियारे॥
करिकै जननी जनक दुखारी। व्याकुल सबै घोषकी नारी॥
मैं लै जात कंसपै तिनको। मों देखत मारैगो इनको॥
धृक धृक धृक कुबुद्धि यह मेरी। जाहुँ लिवाय इन्हैं ब्रज फेरी॥
कंस आज मारे बरु मोहीं। हरिको जाय देहुँ नहि ओहीं॥
यहि अंतर यमुना नियराई। ठाढ़ो कियो तहां रथ जाई॥
अंतर्यामी हरि भगवाना। भक्त हृदय संशय पहिचाना॥

दोहा--भूख लगी तब हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देहु॥
करि यमुना स्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु॥

सो०--सुनत वचन मृदुकान, सुफलक सुत पुनि तुरतहीं॥
कछु मेवा पकवान, भोजन दुहुँ भैयन दियो॥

आप स्नान करन मन दीनो। यमुना पैठि संकल्प कीनो॥
जबहीं शीश नीरमें डारयो। तब अचरजयक भाव निहारयो॥
राम कृष्ण रथपर सुखदाई। जल भीतर शोभित दोउ भाई॥
चकित भयो जलते शिर काढयो। देख्यो रथ बाहर सो ठाढयो॥
बहुरो बूडि सलिलमें पेख्यो। वैसोइ फेरि तहां रथ देख्यो॥
क्षण जलमें क्षण प्रकट निहारै। पुनि पुनि संभ्रम बुद्धि विचारै॥
स्वप्नकिधौं जाग्रत यह होई। कैधौं मों मतिमें भ्रम कोई॥
कैधैं जलमें रथकी छाया। कैधौं यह हरिकी कछु माया॥
भयो विकलमति थिर कछु नाहीं। देखन लग्यो बहुरि जल माहीं॥

१ पानी।

जब अक्रूर बहुत अकुलायो । निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो ॥
देखत भयो तहां जल माहीं । सकल देव ठाढे हरि पाहीं ॥
अस्तुति करत चरण चित दीने । नमित कंधपर सम्पुट कीने ॥
दोहा–शेष सहसफणिमणियुत, जग मग ज्योति अनूप ॥
श्वेत चरण पटपीत युत, राजित हलधर रूप ॥
सो०–नव नीरद तनु श्याम, पीत वसन लावण्य निधि ॥
भुज प्रलम्ब अभिराम, शेष अंक हरि सोहहीं ॥
चारु अरुण पङ्कजदल नयना । चितवन चारु चारु मृदुबयना ॥
चारु तिलक बर बाल विराजैं । चारु कुटिलकुन्तल छवि छाजैं ॥
चारु तिलक नासिका सुहाई । चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
सुन्दर श्रवणचिबुक दरग्रीवा । चारु बसन बिहसनछवि सीवा ॥
उर विशाल श्री चिह्न बिराजैं । उदर सुघर रोमावलि राजैं ॥
नाभि गँभीर क्षीण कटि देशू । भुज विशाल बरचारु सुबेशू ॥
जंघ गुल्फ अति चारु सुहाई । पद कमलन नख शशि छबिछाई ॥
नख शिख अनुपम रूप बिराजै । दिव्याभरण सकल अँग छाजै ॥
कुंडल मुकुट जटित मणि माला । मुक्तमाल वनमाल विशाला ॥
यज्ञोपवीत पीताम्बर काँधे । कौस्तुभ मणि अङ्गद बरबाँधे ॥
कर पल्लवन मुद्रिका राजै । शङ्ख चक्र गद पद्म बिराजै ॥
क्षुद्रघंटिका अति श्रुति कारी । मणिन जटित नूपुर छबि भारी ॥
दोहा–नन्दसनन्दादिकनते, दिव्य पारषद आहिं ॥
कर जोरे ठाढ़े सबै, परिचर्य्याके माहिं ॥
सो०–ठाढ़ी जोरे हाथ, माया निज माया सहित ॥
भक्त भक्तके साथ, अंबरीष प्रहलाद बलि ॥
शिव अज सहित शिवा अरुवानी । सनकादिक नारद अरु ज्ञानी
भक्तन सहित सुरासुर जेते । कर जोरे ठाढे सब तेते ॥
चन्द्र कुबेर वरुण दिक्पाला । मनु विश्वकर्म धर्म यम काला ॥

१ तोंदी । २ मुंदरी ।

बंदन करत चरण धरि माथा । गावत वेद सकल गुण गाथा ॥
जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो । कृष्ण प्रभाव प्रगट सब जान्यो॥
चिंता सकल चित्तकी नाशी । जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी ॥
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो । तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो ॥
अति आनंद बढ्यो मन माहीं । अस्तुति करन लग्योतिहि ठाहीं ॥
धन्य धन्य प्रभु अंतर्यामी । नारायण त्रिभुवनके स्वामी ॥
सकल विश्व तुमहीं विस्तारो । विश्वरूप है रूप तुम्हारो ॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी । लीला सगुण गुणनकी राशी ॥
प्रभु तुम सब देवनके देवा । जानै कौन तुम्हारी भेवा ॥
छंद-कोजान तुम्हरो भेव हरि, तुम सकल देव मयी प्रभो॥
आदि कारण सबहिंके तुम, विश्व[२] सब तुम्हरो विभो ॥
नाग नर सुर असुर अग जग, दास सब तुम्हरो हरी ॥
रहति माया सब तुम्हारी, जाहि तुम ज्यहिं विधि करी॥
योग यज्ञ अनेक कर्मनकरि, तुम्हें सब ध्यावहीं ॥
जैसो जाको भाव तैसो, तुमहिं ते फल पावहीं ॥
अति अगाध अपार तुम गति, पार काहू नहिं लह्यो ॥
शंभु शेष गणेश विधना, नेति निगम[३]नहू कह्यो ॥
भक्त हित धरि विविध तनु तुम,चरित अद्भुत विस्तरो ॥
मच्छ कच्छ वराह वपु होय, वेद गिरि तुम उद्धरो ॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि, शरण हित बामन भये॥
भृगु वंश मणि अभिराम तनु धरि, मानमय क्षत्रिय हये॥
राम रूप निपाति रावण, अरु बिभीषण नृप कियो ॥
कंस अरि यदुवंश भूषण, कृष्ण वपु छविनिधि लियो॥
बौद्ध रूप दयालु कल्किहिंसादि, कर्मन भावहीं ॥

१ समूह । २ संसार । ३ वेद ।

निःकलंकमलेच्छहा, दशरूप श्रुति तव गावहीं ॥
दोहा–तव गुण रूप अनंत प्रभु, हौं अजान जगदीश ॥
यों स्तुति अक्रूर करि, नायो पद पर शीश ॥
सो०–तबहिं श्याम सुखदाय, अंतरहित जलते भये ॥
निकरयो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि ॥
लखी कृष्णकी जब प्रभुताई । बढ़यो हर्ष अति उर न समाई ॥
भूले नेम न कछु कहिजाई । मगन ध्यान बलराम कन्हाई ॥
कहत मनहिं मन यह अविनाशी। पूरण ब्रह्म सकल गुणराशी ॥
हरण करण समरथ भगवाना। नाहिन इन समान कोउ आना ॥
कितक कंस भेदी उर सन्शा । येकरिहैं ताको निरवन्शा ॥
चलयो हांकि रथ तब हर्षाई । नँद उपनंद मिले तहँ आई ॥
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं । करि सयानमन मन मुसकाहीं ॥
कही तात तुम अब हरषाने । प्रथमहिं कछू बहुत मुरझाने ॥
कहौ सांच हमसों सोइ बानी । तब स्तुति अक्रूर बखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु धनिश्रीकंता । गुणन अगाध अनादि अनंता ॥
निगम नेति कहि जाहि बखानैं । सहस्रानन नित नव गुण गानैं ॥
करिकै कृपा जानि निज दासा। दियो दरश संशय सब नासा ॥
दोहा–अब म्वहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवनके नाथ ॥
कर्ता हर्ता जगतके, सकल तुम्हारे हाथ ॥
सो०–कहाबापुरोकंस, कहा मल्ल कह कुवलिया ॥
अब करिये निर्वंश, वेग नाथ ऐसे खलन ॥
सुनि मोहन सुफलक सुत बानी । भये प्रसन्न भक्त सुखदानी ॥
जात चले रथपर दोउ भाई । सम्मुख दृष्टि मधुपुरी आई ॥
तरणि किरण महलन छबि छाई । जगमगात नभ सुंदरताई ॥
अक्रूरहि बूझत घनश्यामा । कहियतहै मधुपुर ये नामा ॥
श्रवणन सुनत रहत हे जाही । देख्यो आजु दृगनते ताही ॥

१ म्लेच्छोंके हतनेहारे ।

कंचन कोटि कंगूरासोहैं । बैठे मनहु मदन मन मोहैं ॥
वन उपवन पुरके चहुँ पाहीं । अति भावत मेरे मन माहीं ॥
लखि लखि हरि मथुराकी शोभा।पुनि पुनि पुलकत करिमन लोभा
तहां जन्म जियमें करि जाने । ताते अधिक हर्ष उर माने ॥
बाजतिनौबति नृपति दुवारा । होत शब्द घरियाल उदारा ॥
सुनि सुनि मन आनंद बढावैं । नगर शोर सुनि रुचि उपजावैं ॥
कनक खचित मणि जटित अटारी।धवलनवल अति ऊंचि सवाँरी॥
दोहा-ध्वजपताक तोरण कलश, जहँतहँ ललितवितान ॥
मुक्ता झालरि झलमलैं, कोकरिसकै बखान ॥
सो०-निरखि निरखि हर्षात, मन मोहन अक्रूरको ॥
बलहि देखावत जात, लसित लालकर पल्लवन ॥
कह अक्रूर सुनहु ब्रजनाथा । भई आजु मधुपुरी सनाथा ॥
तुमहिं विलोकि विराजति ऐसी । पति आगमतिय सोहति जैसी ॥
कसी कोट कटि किंकिणि मानौ। उपवन वसन विविध रँग जानो॥
मंदिर चित्र विचित्र सुहाये । जनु भूषण रचि रंग बनाये ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं । मनहु चरण नूपुर ध्वनि साजैं ॥
धामन ध्वजा विराजतहैं जिमि। संभ्रम गति अंचल चंचल तिमि॥
उच्च अटन षट ऋतु छबि छाजै। जनु उर आनँद उमँगि विराजै ॥
भूलीं अति सुख संभ्रम ताते । प्रगटे कनक कलश कुच जाते॥
मोखा द्वार दरीची द्वारा । लागे विद्रुम कुलिश किंवारा ॥
मनहु तुम्हारे दरशन लागी । नयननरहीं निमेषनत्यागी ॥
मुक्ता झालरि खिरकि विराजैं । हँसति मनो आनन्दन साजैं ॥
जगमगि ज्योतिरही छबि झूली। जनु तुम पंथ निहारत भूली ॥
दोहा-नीके हरि अवलोकिये, पुरी परम रुचि रूप ॥
असुर कंसको जीतिकै, होहु इहांके भूप ॥
सो०-सुनि बिहँसे नँदलाल, ललित वचन अक्रूरके ॥
पहुँच्यो रथ ततकाल, जाय निकट मथुरा पुरी ॥

नगर निकट पहुँचे जब जाई । सुफलक सुवन सहित दोउ भाई ॥
गौर श्याम रथ पर दोउ राजैं । कोटिनकाम निरखि छबिलाजैं ॥
कंस दूत लखि जहँ तहँ धाये । समाचार सब नृपति सुनाये ॥
आये बल मोहन दोउ भाई । सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई ॥
गहि कर खड्ग चर्मलै धायो । रंगभूमिके महलनआयो ॥
गज मुष्टिक चाणूर बुलाये । और सुभट सब बोलि पठाये ॥
तिन सन कह्यो सजग सब होऊ । ठावँहि ठावँ रहौ सब कोऊ ॥
बहुतक असुर निकट बैठाये । धनुषपास बहु सुभट पठाये ॥
पठवत दूत दूत परधाई । आये कहँ लगि देखौ जाई ॥
गर्जै कंस सेन सब साजे । द्वारे विविध बाजने बाजे ॥
पीरो भयो हृदय डर मानो । सूखत अधर बदन कुम्हिलानो ॥
नंदमहरके सुत सुनि आवत । मन मन मारन गर्व बढावत ॥

दोहा--पर्‍यो शोर मथुरा नगर, आवत नंदकुमार ॥
सुनि धाये नर नारि सब, गृहको काम बिसार ॥
सो०--लाजकानडरडार, कोउ खिरकि नकोउ अटनपर॥
कोऊ खडी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत ॥

कियो प्रवेश नगरमें जाई । असुर निकन्दन जन सुखदाई ॥
इन्दुवरण रथपर दोउ बीरा । सुभग श्यामबर गौर शरीरा ॥
शीश मुकुट कुण्डल छबिछाजै । कुण्डल एक राम श्रुति राजै ॥
नीलपीत बर बसन निकाई । मुक्तमाल बनमाल सुहाई ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे । धाय धाय रथके सँगलागे ॥
युगल रूपलखि होहिं सुखारे । यकटकलोचन टरहिं नटारे ॥
चढी अटारिन देखहिं नारी । बढ्यो प्रेम आनँद उरभारी ॥
निशिदिन सुनि गुणगण अभिलासी।अति आरत दरशन की प्यासी॥
शशि आनन मृदुवेष किशोरा । भये निरखि दोउ नयन चकोरा॥

१ तरवारि । २ योद्धा । ३ अनेकप्रकारकीगालिके । ४ राक्षसोंकेनाशकर्त्ता । ५ चन्द्रवर्ण । ६ मधुर ।

पुलकि गात दृग आनँद पानी । कहत सप्रेम परस्पर बानी ॥
येईसखि बलराम कन्हाई । सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई ॥
नन्द गोपके येदोउ ढोटा । गौर श्याम सुन्दर बरजोटा ॥

दोहा-मणि कंचनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस ॥
कै प्रगटे ब्रजदेन सुख, त्रिभुवनके अवतंस ॥

सो०--धनि धनि गोकुल ग्राम, धन्य श्याम बलराम धनि॥
धनि धनि ब्रजकी बाम, प्रगट प्रीतिपाली जिन्हन ॥

सुनति हुती पुरुषारथ जिनके । देखहु रूप नयन भरि तिनके ॥
अतिहि अनूप वेष नटसोहै । कहहु सो को छबि देख न मोहै ॥
पूरब जन्म सुकृत कोउ कीनो । सो विधि यह नयननफल दीनो ॥
अति अभिराम श्याम छबि धारी । इनहीं प्रथम पूतना मारी ॥
शकटा तृण इनहीं संहारे । बत्स बका अघ पुनि इनमारे ॥
इन्द्रकोप वर्षन ब्रजकीनो । इनहीं गिरिकर धारिनख लीनो ॥
जलते काली इनहिं निकार्यो । पुनि अरिष्ट केशी इन मार्यो ॥
गौर शरीर नाम बल सोई । धेनुक अरु प्रलम्बहा सोई ॥
अब अक्रूर पठै नृपराई । इहां बोलि पठये दोउ भाई ॥
रंगभूमि रचि कियो अखारो । कहा करन धौं हृदय विचारो ॥
जननी धीर धर्यो धौं कैसे । अति बालक पठयेहैं ऐसे ॥
देहिं अशीश मांगि विधिपाहीं । न्हातहु बारखसहु तनुनाहीं ॥

दोहा-लेत बलैया वारिकै, आंचर यह कहिनार ॥
करिहै इनसों कपट नृप, तौ ह्वैहै जरिछार ॥

सो०--सफल भये मनकाम, देखि दरश इनको सखी ॥
कुशल जाहु निज धाम, देत अशीश सुनाय सब॥

कहत युवति यक सुनहु सयानी । मैं जो सुन्यो सो कहत बखानी ॥
ये बसुदेव कुँवर सखि दोऊ । ऐसे लोग कहत सब कोऊ ॥
कंस त्रास करि मात पठाये । नन्द सखा गृह जाय दुराये ॥

१ पुत्र । २ सुधर्म । ३ माता ।

करि दुलार यशुमति पय प्याये । हित करि तिनके बाल कहाये ॥
गौर अंग नयनन रतनारे । जो प्रलम्बको मारन हारे ॥
कुंडल एक बाम श्रुति धारी । तेरोहिणी सुवन सुखकारी ॥
अति अभिराम महाबल धामा । ताते नाम धर्यो बलरामा ॥
श्याम सुभगतनु उर बनमाला । शिश मुकुट दृग नयन विशाला ॥
जिन्हैं हेत करि सँग व्रज बामा । मान्यो नाह सकल सुखधामा ॥
जिनके चरण छुवत बड़ पापी । पाई सुगति सु दर्शन शापी ॥
अमित प्रभाव कृष्ण सब कहहीं । जिनके नाम अधमगति लहहीं ॥
कहत देवकी सुत सब तिनसों । कंस राज भय मानत जिनसों ॥

दोहा—आयेहैं अक्रूर सँग, तात मात सुख देन ॥
रंगभूमि रिपु जीतिकै, करिहैं यदुकुल चैन ॥

सो०—सुनिसुनि मुदित सुनारि, अति प्रिय वाणी तासुकी ॥
मांगत गोद पसारि, विधिसों ऐसो होय सब ॥

देत सबन सुख यों मन भावन । उतरे जाय बाग इक पावन ॥
गोपन सहित नन्दतहँ राख्यो । तब सुफलकसुत सों हरि भाख्यो
कहहु तात आगे तुम जाई । आये श्याम राम दोउ भाई ॥
बहुरि नृपति जब हमैं बुलैहैं । करि विश्राम हमहुँ तब ऐहैं ॥
तब अक्रूर जोरि युग पाणी । बोल्यो सुनत श्यामकी वाणी ॥
मोहिं न्यारो क्यों करत गोसाईं । राखो निकट दासकी नाईं ॥
कंस दूत मोको जनि मानो । निज सेवक अपनो करि जानो ॥
अरु मेरे मनमें यह आशा । [1]अलिपावन कीजै मो बासा ॥
तब हँसिकै बोले घनश्यामा । ऐहौं एक दिना तुम धामा ॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये । बिदा होय नृप पास सिधाये ॥
रथते उतरि परे दोउ भाई । ग्वाल बाल सब लिये बुलाई ॥
सखा भ्रात सँग सहज हुलासा । गये यमुनतट नगर निवासा ॥

दोहा—बाल वयस शोभित सुभग, बाल सखनके संग ॥

१ अरुण । २ सुत ।

गौर श्याम शोभा निरखि, लज्जित कोटि अनंग ॥

सो०–अति विचित्रको जान, ब्रजवासी प्रभुके चरित ॥
अमित गुणनकी खान, जन रंजन दुष्टन दलन ॥

अथ रजकवध लीला ॥

नृपतिरजक अम्बर नृप धोवै । आवत देखि श्याम तनु जोवै ॥
हँसत गर्व बातैं यों चालै । कंसराजके उर ये शालै ॥
लघु लघु वयस गोपके जाये । बहुत अचगरी करि ये आये ॥
तृणावर्त प्रभु रह्यो हमारो । इनहीं ताहि शिला पर मारो ॥
अति खोटो जिहि नाम कन्हाई । प्रथम ताहि डारै मरवाई ॥
है बलभद्र तैसई खोटो । गोरो अंग महा बल मोटो ॥
ताहू को मारैगो राजा । बोले हैं याही के काजा ॥
ऐसे कहत परस्पर बानी । प्रभु अंतर्यामी सब जानी ॥
ग्वालन सहित गये तेहि पाहैं । कह्यो कछू अंबर हम चाहैं ॥
तिनको पहिरि नृपति पै जैहैं । देहैं बहुरि तुम्हैं जब ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृप सों पैहैं । तामें कछु तुमहूं को दैहैं ॥
कै पहिलेही लेहौ हम सों । बूझत हैं तैसी हम तुम सों ॥

दोहा–हँस्यो वचन सुनि श्यामके, कह्यो गर्व करि बैन ॥
बलिके बकरा ह्वै रहे, आयेहैं पट लैन ॥

सो०–राखैं घरी बनाय, ह्वै आवहु नृप द्वारलौं ॥
तब लीजो पट आय, जो भावै सो दीजियो ॥

वन वन फिरत चरावत गैया । अहिर जाति कामरी उढैया ॥
नटको भेष साजके आये । नृप अम्बर पहिरन मन भाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा । पहिरावन लेबेकी आसा ॥
नेक आश जीवनकी जोऊ । खोवन चहत अबहिं पुनि सोऊ ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई । देहु वसनहै तुमहिं भलाई ॥
हम माँगतहैं सहजहि तुमसों । तुमकत करत इती रिस हमसों ॥

१ कामदेव । २ लीला । ३ धोबी । ४ वस्त्र । ५ डमर । ६ कपडा ।

सहज बालको रिस नहिं कीजै । मांगे देहु मानि गुण लीजै ॥
भौंह ऐंठ तब रजक रिसानो । ये नृप बसन नहीं तुम जानो ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारैं । नन्दहिपकरि बन्दिमें डारैं ॥
जाहु चले ह्यांते अबनीके । कैहैहो अबहीं बिनजीके ॥
करत अचगरी मोसों आई । दुहुँन मारिहौं कंस दुहाई ॥
यह सुनि कियो श्यामसो ख्याला । भुजापकरि पटक्यो ततकाला ॥
दोहा–तुरत गयो तनु तजि स्वरग, कीन्हो रजक निहाल ॥
जन्म मरणते रहगयो, ऐसो गुण गोपाल ॥
सो०–लखिकै गये पराय, संगी ताके सब रजक ॥
लीन्हे बसन लुटाय, श्याम प्रथमहीं नृपतिके ॥
रजक मारि सब बसन लुटाये । आप पहिरि ग्वालन पहिराये ॥
बिबिध रङ्ग बहु भांति नबीने । निज निजरुचि ग्वालनसबलीने ॥
चले तहांते सब हरषाई । मिल्यो एक दरजी पुनि आई ॥
प्रभुको देखि बहुत सुखपायो । चरण कमलको माथ नवायो ॥
छाट बाट जो बसन सुहाये । ते उनकरि सम तुरत बनाये ॥
ताको कृतहि मान प्रभु लीन्हो । अभय दानदै निज पद दीन्हो ॥
पुनि यक माली हुतो सुदामा । ताके द्वार गये घनश्यामा ॥
तुरत आइ तिन पद शिरनायो । हरि हलधरलखि हर्ष बढायो ॥
आदर सहित सदनमें आने । चरण धोय निज भाग्य बखाने ॥
नृपतिहेतु जो हार बनाये । ते सप्रेम प्रभु को पहिराये ॥
हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई । जय जय श्रीपति प्रभु यदुराई ॥
मोको बहुत अनुग्रह कीन्हो । दीन जानि अपनो करि लीन्हो ॥
दोहा–सुनि सप्रेम ताके बचन, रीझे श्याम सुजान ॥
माली पूरण काम करि, दियो भक्ति बरदान ॥
सो०–सखन सहित दोउ भाय, बहुरि हर्षि आगे चले ॥
तहां पंथमें आय, कुबिजालै चन्दन मिली ॥

निरखि श्याम छबितनु सुधि भूली । बोली हर्षि प्रेम रस फूली ॥
हो प्रभु दीनबन्धु सुखदाई । तुम्हैं नाथ चन्दन मैं ल्याई ॥
मोहिं कल्पना यह जगवन्दन । चरचौं अंग तुम्हारे चन्दन ॥
दासी कुल कुबिजा ममनाऊं । नृपके उर चन्दन नितलाऊं ॥
तुमहिं जानिकै प्रभु तिहिं ठाहीं । अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं ॥
आजहि दरश प्रकट प्रभु पायो । मोजियकी संताप नशायो ॥
अब यह मलय कृपा करि लीजै । पूरण काम नाथ मम कीजै ॥
अन्तर्यामी प्रभु सुखदानी । भाव भक्ति कुबिजा पहिचानी ॥
भावहिके वश त्रिभुवन राई । हित करि कुबिजा निकट बुलाई ॥
वन्दन करि पूजे दोउ भाई । रही श्याम छबि निरखि भुलाई ॥
तब हरि हलधरसों हँसि भाष्यो । हेत बहुत इन हमसों राख्यो ॥
हमहूं कछु याको हित कीजै । सूधे अङ्ग नेक करि दीजै ॥

दोहा–पगराख्यो पग पीठपर, धरेउशीशकर श्याम ॥
नेक उठाई चिबुक गहि, भई सुन्दरी बाम ॥

सो०–को करिसकै बखान, जाहि बनाई आपुहरि ॥
भई रूप गुणखान, कुबिजामन आनन्द अति ॥

महाकुरूप कूबरी तैसी । परसत तुरत भई रति जैसी ॥
तब कुबिजा अपने मन मान्यो । मिले मोहिं मोहन पति जान्यो ॥
पुनि पुनि कमल चरण शिरनाई । हाथ जोरि बहु विनय सुनाई ॥
जिमिकीनी म्वहिं कृपा कृपाला । तिमि ममसदनै चलहु नँदलाला ॥
अपने चरण कमल तहँ धरिये । सफल मनोरथ मेरो करिये ॥
तासों बिहँसि कह्यो घनश्यामा । कंस देखि अइहौं तवधामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई । चले धनुष देखन दोउ भाई ॥
ग्वाल सखा सँग सुभग सुहाये । कामसेन बर रूप बनाये ॥
पुरजन भीर चहूंदिशि भारी । चढीं अटारिन देखहिं नारी ॥
निरखि श्याम सुख इन्दुउदारा । जनुपुर उदधि तरङ्ग अपारा ॥

१ अभिलाषा । २ बलदेवजी । ३ ठोढी । ४ छुवत । ५ घर । ६ समुद्र ।

जहँ तहँ कहत सकल पुरबासी। भई सुन्दरी कुबिजा दासी ॥
श्याम कछू चेटकसो कीन्हो। अंग सुधारि रूप बर दीन्हो ॥

दोहा--रजकमारि लूटे बसन, करी कूबरी चारु ॥
बाल भाव मोहत मनहिं, हैं कोउ देव उदारु ॥

सो०--सुनत रहे दिन रैन, पुरुषारथ इनको भवन ॥
तैसे देखे नैन, ब्रजबासी प्रभु नन्दसुत ॥

गये धनुषशाला दोउ बीरा। देखत चकित भये भटभीरा ॥
अस्त्र सँभारि उठे अकुलाई। देखि थके सुन्दर दोउ भाई ॥
धनुष समीप असुर सब ठाढे। अति बलवन्त धीर नर गाढे ॥
सहजहि घेरि लिये दोउ भैया। बोलि उठे सब सुनहु कन्हैया ॥
सुनियत अतिबल भुजातुम्हारी। यह कोदण्ड[1] चढावहु भारी ॥
तिनसों बिहँसि कह्यो सुखरासी। कहा करत हमसों यह हासी ॥
कहां बाल हम बैस किशोरा। कहां धनुष अति गरुअ कठोरा ॥
शूरवीरठाढे सब लहिये। तिनसों धनुष चढावन कहिये ॥
खेलन कहो खेल कछु हमको। सोहम खेल दिखावैं तुमको ॥
ऐसे श्याम हँसत तिन माहीं। अरु अक्रूर गये नृप पाहीं ॥
समाचार सब जाय सुनाये। नन्द सहित बल मोहन आये ॥
यह कहि घर अक्रूर सिधारे। रजक जाय तिहि काल पुकारे ॥

दोहा--मारे बिन दूषण हमैं, नन्द गोपके बाल ॥
लीन्हे बसन लुटायकै, पहिराये सब ग्वाल ॥

सो०--सुनतहि उठ्यो रिसाय, बोल्यो सबन बुलायनृप ॥
करी प्रथमहीं आय, देखौइन ढीठ बड़े ॥

अब मारिहौं अवशि दोउ भाई। लेहुँ आज सब ब्रजहि लुटाई ॥
देहु बन्दिमें नन्दहि ल्याई। गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं सादर करि इनहि बुलायो। आगे दै इन रजक मरायो ॥
देखहु कोउ जान नहिं पावैं। असुर जाय सबको गहिल्यावैं ॥

[1] धनुष।

ऐसे कंस कहत रिस पाई । तबहीं दूतन खबरि जनाई ॥
कुबिजासों चन्दन हरि लीन्हो । ताको रूप अनूपम दीन्हो ॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई । यह सुनतहि कछु गयो सुखाई ॥
बहुरि धीर धरि असुर पठाये । ते यह कहत श्याम पहँ आये ॥
पहिले तोरि धनुष गोपाला । बहुरि बुलायो निकट भुवाला ॥
सुनि असुरनके वचन कन्हाई । बोले मनहीं मन मुसकाई ॥
याहीको नृप हमहिं बुलायो । जोरेउ वैर जानि यह पायो ॥
गहन लगे ते बालक जानी । तबहिं श्याम कछु रिस उर आनी ॥

छंद–उर आनिरिस गहि पाणि तुरतहि, असुरलैमारे सबै ॥
अतिहि वेगि उठाये धनुषहि, तोरि महिडारेउ तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा, मार मार पुकारहीं ॥
नंदसुत रणवीरहो, धर धीर असुर सँहारहीं ॥
एक झटकत एक पटकत, तेन मटकत फिरतहीं ॥
एक अटकत एक लटकत, एक सटकत जाहिं तहीं ॥
ताल चटकतचर्मकि छटकत, देखि भटकत नट भले ॥
एक पकरि फिराय हटकत जातते नृप पहँ चले ॥

दोहा–ख्यालहिमारे असुर सब, तोरि धनुष नँदलाल ॥
चले सामुहे पवँरिताकि, जहांकुवलिया ब्याल ॥

सो०–देखत चढ़े बिमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि ॥
डारत सुमन सुजान, ब्रजवासी प्रभुपद हरषि ॥

रंगभूमि हरि हलधर आये । संग सखा सब ग्वाल सुहाये ॥
आप आपनी छबि सब छाये । रवि शशि उडगँण उदित सुहाये ॥
देख्यो द्विरद द्वार पर ठाढो । मनहुँ गर्वको गिरिवर गाढो ॥
कंधकेशरी गर्व प्रहारी । बल तन हँसे गयन्द निहारी ॥

१ पकरनलगे । २ हाथी । ३ नक्षत्र ।

ताक्षणकी छबि कही न जाई। कसत पीत पट कटि लपटाई ॥
श्याम सुभग लट घूंघुर वारी। पाग पेच मिलि पाग सँवारी ॥
मधुपुरकी युवती सब बाढी। कहत परस्पर महलन ठाढी ॥
लखहु सखी अँग अंग लुनाई। रूप राशि मन हरण कन्हाई ॥
कोटि मदन छबि विधि लुनलीनी। तब यह मूरति सांवरि कीनी ॥
अतिहि कुशल ये लखि सुखदाता। हम अभागिके क्रूर विधाता ॥
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागीं। निशिदिन रहत प्रेम रस पागीं॥
बनवीथिन कुंजन बिच डोलैं। रास हास रस करत कलोलैं ॥

दोहा–होंय हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज ॥
जैसे तोरेउ धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज ॥

सो०–सुरन मनावत जात, अति कोमल नँदलाल लखि॥
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिताके पुण्यते ॥

देखि मतंग द्वार मतवारो। गजपालहि बलराम हँकारो ॥
सुनहु महावत बात हमारी। लेहु द्वारते बारण टारी ॥
जान देहु हमको नृप पासा। नातरह्वैहै गजको नासा ॥
कहे देत नहिं दोष हमारो। मति जानै तू हरिको बारो ॥
त्रिभुवन पति दुष्टन संहारी। धरणी भार उतारन कारी ॥
सुनत बोल गजपाल रिसानो। रे गोपाल तुम्हैं मैं जानो ॥
त्रिभुवन पति अब गाय चराये। गांडे खान गजनसों आये ॥
बादत बडे शूरकी नाई। जैहैं प्राण अबहिं क्षण माई ॥
तोरेउ धनुष भयो अति गारो। नहिं जानत यह गज अति भारो॥
दश सहस्र गजको बल याही। डरपत है ऐरापति ताही ॥
जब लगि यासों लरि नहिं लैहौ। तब लगि कैसे भीतर जैहौ ॥
ऐसे कहि अंकुश कर लीन्हो। गज गजपाल साम्हुहे कीन्हो ॥

दोहा–तबहिं कोपि हलधर कह्यो, सुनुरे मूढकुजात ॥
गज समेत पटकौं अबहिं, मुँह सँभारि कहु बात ॥

१ मथुरापुरी। २ शोभा। ३ हाथी-कुवलिया। ४ बोलत। ५ गर्व।

सो०-नेक न लागि है बार, बारण मारिजैहै अबहिं ॥
तासों कहत पुकार, मान अजहुँ मेरो कह्यो ॥
यह सुनि गज गजपालचलायो। झटकि सूंड बहुरो गज धायो ॥
लीन्हो लपटि सूंडके माहीं। देखत शूरबीर चहुँघाहीं ॥
तब बलरामकोपकारि भारी। वज्र समान थाप इकमारी ॥
तनुसमेटिकर करि सकुचान्यो। दईकूक मद्रंध्र सुखान्यो ॥
तबहीं उचटि भये बलन्यारे। असुर सेन देखतहियहारे ॥
हँसत निकट ठाढे दोउ भाई। देखि महावत रहेउ लजाई ॥
थकित रहेउ हाथी जब जान्यो। तब मनमें गजपाल डेरान्यो ॥
जो ये बालक बधे न जाहीं। मारै कंस मोहिं पलमाहीं ॥
अंकुश मस्तक शीश परदीन्हो। बहुरि गयन्दहि तातहि कीन्हो ॥
भयो क्रोध हाथी मनमाहीं। गंडस्थल मद अंबु चुचाहीं ॥
पवन वेगते आतुर धायो। गरजि घुमरि दोउनपर आयो ॥
महा कोप करि गहे कन्हाई। पेरउदशन दै धरणि धसाई ॥
दोहा-डरपि उठे तेहि काल सब, सुर मुनि पुर नर नारि
दुहूं दशन बिच ह्वै कढे, बलनिधि प्रभु दैत्यारि ॥
सो०-उठे गजहिके साथ, बहुरि ख्यालईहांकदै ॥
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके ॥
हांक सुनत अति कोप बढायो। झटकि सूंड बहुरो गजधायो ॥
रहे उदरतर दबकि मुरारी। गये जान गजरहेउ निहारी ॥
पाछे प्रगट बहुरि हरि टेरेउ। बलदाऊ आगे ते घेरेउ ॥
लागे गजहि खेलावन दोऊ। चकित भये देखत सब कोऊ ॥
चहुंघा फिरत चक्रकी नांई। सूंड पूछ क्षण क्षण ह्वै जाई ॥
नेक नहीं अवसर गज पावै। चारों दिशि हरि फिरत नचावै ॥
घात करत मनहीं मन माहीं। गजरिसबिकल इन्हैं दिसनाहीं ॥
कबहूं पूंछ पकरिकै झेलैं। ज्यों बालक बछरन सँग खेलैं ॥

१ गज। २ पेट।

कबहूं इत उत ते दोउ बीरा। भजत मारिके मुष्टि गँभीरा॥
कबहुँ उदरतर है कढि जाहीं। नेक छुवन पावत गज नाहीं॥
नीलपीत पट कटि फहराहीं। चपल नयन दीरघ बरबाहीं॥
खेलत गज चंचल सँगराजैं। निर्तत मदन मनहुंगति साजैं॥

छंद—जनु मदन निर्तत साजि गति, इमि श्याम अरु गज खेलहीं॥
पूंछ कर गहि कबहुँ आगे, कबहुँ पाछे पेलहीं॥
गजहि लखि पुर नारि नर सब, बिकल विधिहि मनावहीं॥
वेगि मारैं श्याम गजको, हम निरखि सुख पावहीं॥
दीन्हो महावत बहुरि अंकुश, क्रोधकरि हाथी चल्यो॥
जबहिं हरि गहि पूंछ पटक्यो, नेकनहिं भूपरहल्यो॥
लये खैंच मृणाल ज्योंरद, सुमन झर देवनकरी॥
दास ब्रजवासी हरषि सब, असुरकी सेना डरी॥

दोहा—हँसत हँसत मारेउ प्रबल, द्विरद कुवलियाश्याम॥
सखन सहित ठाढे मुदित, छबि निरखत ब्रजबाम॥

सो०—मारेउ गज बल भ्रात, जहँ तहँ सब कोऊ कहत॥
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजवासी दासके॥

अथ मल्लयुद्ध लीला॥

चले जहां सब मल्ल गोपाला। द्विरद दंत धरि कंध विशाला॥
गौर श्याम सुंदर दोउ भाई। श्रमसीकर मुख कमल सुहाई॥
छबि अपार बलनिधि गंभीरा। संग गोप बालककी भीरा॥
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो। नभ खगं ज्यों पिंजर अकुलान्यो॥
भाजनको मन मांझ बिचारा। भाजि न सक्यो लाजको मारा॥
गये रंग महि मोहन जबहीं। ज्यहिजस भाव दरशतेहि तसहीं॥
उठे शंक सब मल्ल अधीरा। बल समूह देखे दोउ बीरा॥

---

१ लंबी। २ पृथ्वी। ३ दांत। ४ पक्षी।

दुष्टी दैत्य हते तहँ जेते । रूप भयानक दरशे तेते ॥
कंस समीप भूप जे आये । तिन्हें राजवंशी दरशाये ॥
साधु सिद्ध देखहिं शुभ धामा । इष्ट देव पूरण सब कामा ॥
देखे सुर गण गगन सुखकारी । सब देवनके देव मुरारी ॥
ग्वाल बाल सब देखत ऐसे । सदा संग खेलत ब्रज जैसे ॥
दोहा-महलनते देखैं प्रभुहि, सकल सुंदरी बाम ॥
कोटि काम शोभाहरण, नव किशोर सुखधाम ॥
सो०-देखत अति विपरीति, कंस नृपति नँदलालको ॥
कंपि उठ्यो भय भीति, प्रकटकालदरशनभयो ॥
सर्ब भाव पूरण भगवाना । अबलहिं अबल बलहिं बलवाना ॥
ललितहि ललित साधुको साधू । छलन छली सब गुणन अगाधू ॥
जो जन जैसो ध्यान लगावैं । ताको तिहि बिधि दरश दिखावैं ॥
कहत देखि सब सुन्दर जोटा । येई नंद महरके ढोटा ॥
रजक मारि नृप बसन लुटाये । कीन्हे कुबिजा अंग सुहाये ॥
इनहीं असुर समूह सँहारेउ । धनुष तोरि हाथी इन मारेउ ॥
धरे कंध गजदंत बिराजैं । बालक गोप सखा सँग राजैं ॥
देखत असुर भीर चहुँपासा । जिनके वशमें भूमि अकाशा ॥
लीन्हे घेरि कंस भय मानी । तब चाणूर कहत हँसि बानी ॥
आवहु श्याम इतहि पग धारो । सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो ॥
सब कोउ तुम्हरे बलहि बखानै । हारि जीत काकी को जानै ॥
कहा भयो जो गज तुम मारो । लरहु आज हम संग अखारो ॥
दोहा-कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ॥
हम बालक भोरे अबहिं, हमैं खेलसों काम ॥
सो०-कहिये बात विचार, हमैं तुम्हैं लरिबो कहा ॥
अपगति यह व्यवहार, आप देखि देखहु हमैं ॥
जान देहु हमको नृप पाहीं । काहे को रोकत मगं माहीं ॥

१ आकाश । २ राह ।

नृप हमको कारि हेत बुलायो। तुम यह हमको कहा सुनायो॥
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे। तुमको बालक कहिये कैसे॥
किये कर्म ब्रजमें तुम जैसे। देखे सुने नहीं कहुँ तैसे॥
गिरि गोवर्द्धन कर पै धारेउ। जलते कालीनाग निकारेउ॥
औरो असुर बीर बल भारे। सुनियत खेलतही तुम मारे॥
सोबल आज देखि हम लेहैं। आगे जाय तुम्हैं तब देहैं॥
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई। त्यों त्यों भय व्याकुल अकुलाई॥
कहि कहि बारहिं बार पठावैं। मल्लनको बहु त्रास सुनावैं॥
क्यों रे सकुच करत मन माहीं। मारत शत्रु वेग क्यों नाहीं॥
जो दोउ बालक आज न मारो। करों सकुल तौ नाश तुम्हारो॥
नृप सँदेश सुनि मल्लडराने। कहत परस्पर मन सकुचाने॥

दोहा--लोन नृपतिको मानकै, नंदसुवनसों आज॥
लर मरिये कै मारिये, करैं कंसको काज॥
सो०--लेहु सुयश नृपपास, अब विलंब नहिं कीजिये॥
कछू क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब॥

हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं। घटि न कछु हम ते बल माहीं॥
पशुपालक तुम कुवँर कन्हाई। जीते बहुतक पशुनखिलाई॥
अबलगि नहीं मल्ल कोउ भेट्यो। अबतौ हम सँग परयो चपेट्यो॥
मल युद्ध तुम सों हम लरिहैं। अबनरपतिको कारज करिहैं॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं। भुजा ऐंठि रज अंग चढ़ावैं॥
ठोंकैंताल गॉज ज्यों गरजैं। गहैंगाँसै हरि तनताकि तरजैं॥
आपुसमें सब करत विचारा। डारहुमारि उभय सुकुमारा॥
सुनि सुनि हरि हलधर मुसकाहीं। बोले बहुरि बिहँसितिहिपाहीं
सुनिये सकल मल्ल समुदाई। यहै तुम्हारे मन अब आई॥
नृपपै हमैं जाय नाहिं देहौ। बड़ो सुयश हमसों लरिलेहौ॥
निपट खोज अब परे हमारे। यह नबसी उर भली तुम्हारे॥

१ कंस। २ विभुत। ३ दांव।

हम न कहैं तौ तुम चित जैसी । कहत कहा कीजै अबतैसी ॥
दोहा–जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखि उठीं सबनार ॥
देखौरी मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमार ॥
सो०–अति कोमल अति चार, बाचैं कैसे हूं दई ॥
कहत नयन जलढार, क्यों जननी पठये इहां ॥
अतिहि निठुर उर जाति अहीरा । लोभ लागि पठये दोउबीरा ॥
येतौ बालक अतिहि अजाना । कियो कहा उन यह अज्ञाना ॥
होन चहत अबधौं यह कैसी । कहत कंस यह बात अनैसी ॥
कहत सबै हमको यह भावै । करि सहाय विधि इनहिं बचावै ॥
तोरयो धनुष हन्यो गज जैसे। जीतहिं श्याम इनहुँको तैसे ॥
जोरि जोरि कर विधिके आगे। अंचर छोरि छोरि सब मांगे ॥
तब चाणूर कृष्णपै आयो । सहज श्याम कटिपट लपटायो ॥
भुज भुज जोरि भये भिडि ठाढे । तकि तकि दाँव चलावत गाढे॥
ऐसेई मुष्टिक बलरामा । भिड़े बढाय बाद बल धामा ॥
दोऊ वीर लरत अति सोहैं । देखत सुर नरके मन मोहैं ॥
दीरघ नयन कमलते आछे । ललितलाल कछनी कटिकाछे॥
तनु चन्दन चित्रित छबि जाला । वृषभ[1] कन्ध उरबाहु विशाला॥
दोहा–शिरसोंशिर भुजसों भुजा, दृष्टिदृष्टि सों जोरि ॥
चरण चरण गहि झपटिकै, लपटझपट झकझोरि ॥
सो०--गहन न पावत घात, छूटि जात लपटात पुनि ॥
शिव बिधि पै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहत गहन ॥
श्याम सहज मल्लन सों खेलैं । पकरिपकरि भुज दण्डन पेलैं ॥
भये प्रथम कोमल तनु ताहीं । शिथिल रूप पणिवत मनमाहीं
तब चाणूर मनहिं गरबान्यो । हरिकं बलहि तुच्छ करि मान्यो
कोटि कुलिशसम तनुतिहि काला । तुरतहि होय गये नँदलाला
करिकै कोप मुष्टि इकमारी । फूलसमान श्याम उर पारी ॥

१ माता । २ बैल । ३ क्रोध ।

पुहुपहुते कोमल तिहि मान्यो । तिन मारयो अपने जिय जान्यो॥
भयो वेगि अति हर्षि नियारो कहन लग्यो मुरि अहिर पछारो ॥
देख्यो हँसत गोपालहि ठाढो । परयो शोच प्राणन अति गाढो ॥
नंदसुवन महिमा तब जानी । निश्चय मीच आपनी मानी ॥
तब मोहन करिकोप हँकारयो । जनुगज को मृगराज पुकारयो ॥
सुनत हाँक सब दाँव भुलानो । थर थराइ चाणूर डरानो ॥
धरयो धाय तब झपट कन्हाई । पटक्यो महि गहि चरण फिराई ॥

छंद–पटक्यो चरण गहि फेरि महि, चाणूर अति बल सांवरे॥
धंसि गयो धरणीमसकिअंग, सब विकटभूल्योदांवरे ॥
भयो शब्दाघात सुनि नृप, कंस उरधसको परयो ॥
निरखि पुर नर नारि नभसुर, हर्षि हिय आनँद भरयो ॥
पकरि ऐसिय भांति तब, बलराम मुष्टिक मारियो ॥
कहैं धनि धनि लोग सब, जय जयति सुरन उचारियो ॥
शल्ल अरु अति मल्ल आदिक, मल्ल तहँ जितने हते ॥
लपटि झपटि पछारिकै, पुनि नंदसुत मारे तिते ॥

दोहा–जब मारे हरि मल्ल सब, परयो कटक में शोर ॥
जिमि तारागण रवि उदय, छपैं असुर चहुँओर ॥

सो०–सखन सहित दोउ वीर, रंगभूमि राजत खरे ॥
हरण भक्त भय पीर, ब्रजवासी प्रभु नंदके ॥

अथ कंसासुरवध लीला ॥

जबहीं श्याम मल्ल सब मारे । चपे असुर सब लखि हिय हारे ॥
देखि कंस अति भयो दुखारी । सेनापतिन कहत दैगारी ॥
कांपतलिये खड्ग बहु क्रोधा । कहत गये कितरे सब योधा ॥
लैतरवार ढाल सब कोऊ । डारहु मारि नंदसुत दोऊ ॥

डारे मारि मल्ल सब मेरे । तनक छोहरा अहिरन केरे ॥
डर नहिं करत चले इत आवैं । देखहु जीवत जान न पावैं ॥
असुर वीर अपनी सँग जेते । लैलै नाम पठाये तेते ॥
कहा द्वारपालन भय बाढो । करहु कपाट पँवरिको गाढो ॥
नृप भय मानि असुर सब धाये । अस्त्र शस्त्रलै हरिपर आये ॥
भये बिकल लखि पुर नर नारी । मनमन देत कंसको गारी ॥
कहतकि भई कठिन यह बाता । बचहिं श्यामसो करै बिधाता ॥
आवत लखी असुरकी भीरा । भिरे हांक दैदै दोउ बीरा ॥

छंद--अवलोकि असुर समूह[2] आवत, हांक दै दोऊभिरे ॥
मनहुँ गज गण निरखि, केहरि[3] धायतिनऊपरपरे ॥
सुनत शब्द गँभीर हरिको, हहरि सेनापति गये ॥
लपकि गहिमहिपटकि जहँ तहँ, क्रोध करबलजू हये ॥
श्याम गौर किशोर सुन्दर, असुर गण बिच यों लरैं ॥
जनु शांत अरु शृंगार धरि तन, बीरकी करनी करैं ॥
जात नहिं बरणी चटक गहि, पटक इत उत धावहीं ॥
भूमि भार अपार अघ निधि, असुर निकर[5] नशावहीं ॥

दोहा–परचो नगर खल भल सकल,अति भय ब्याकुल कंस॥
पुनि पुनि मंत्रिन सों कहत;बढचो अधिक उरसंस॥

सो०–कीजै कछू उपाय, जियत जाहिं नाहिं बंधु दोउ ॥
मारहु नंद बुलाय, ब्रजकोउ रहन न पावहीं ॥

पुनि वसुदेव देवकी दोऊ । मारहु कठिन बन्धुते सोऊ ॥
बहुरों उग्रसेनको मारौं । पिता दोष कछु उरनहिं धारौं ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे । कंपित रिसन खड्ग कर धारे ॥
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा । मारे असुर सकल दोउ बीरा ॥

१ तुल्य । २ झुंड । ३ सिंह । ४ लराजे । ५ समूह ।

अति बलवन्त नन्दके बारे। तब सकोप नृप ओर निहारे ॥
गये मचान मचकि चढ़ि दोऊ। बाज झपट देखत सब कोऊ ॥
है गयो चकित नृपति भय मान्यो। आयो काल निकट यह जान्यो ॥
रहि गयो लिये खड्ग कर माहीं। हरिको मारिसक्यो सो नाहीं ॥
तबहीं श्याम लात इक मारी। गिरि गयो मुकुट शीशते भारी ॥
दीन ढकेलि मंचते भूपर। कूद परे हरि ताके ऊपर ॥
तहां चतुर्भुज रूप दिखायो। सो स्वरूपदै स्वर्ग पठायो ॥
मारयो कंस कहत सब बानी।जय ध्वनि सुरगण गगन बखानी ॥

छंद—जय ध्वनि गगन सुरगण बखानी, सुमनकी वर्षा भई॥
कहत सब हरि कंस मारयो, हांक यह त्रिभुवन[2] गई ॥
ब्रह्मादि सुर मुनि सिद्ध गंधर्व, मुदित[3] मन स्तुति भनी ॥
भूमि सुर उपकार हित, अवतार धनि त्रिभुवन धनी ॥
धन्य गज धनि मल्लमारे, धन्य कंसासुर अनी ॥
परशि तनु अनुपम लही गति, जात नहिं महिमागनी॥
धन्य अलख ब्रह्मांड नायक, भक्तहित नर तनु धरयो ॥
धन्यब्रजवासी सकल जिन, प्रेम करि तुम वश करयो ॥
दोहा—करि स्तुति पुनि पुनि हरषि, सुमन वर्षि सुरवृंद ॥
मुदित बजावत दुन्दुभी, कहि जय जय नँदनंद ॥
सो०—मथुरापुर नर नारि, अति प्रफुलित सबको हियो ॥
मनहु कुमुद जल चारि, विकसत हरि शशि मुख निरखि ॥
मारयो कंस जबहिं भगवाना। भ्राता अष्ट तासु बलवाना ॥
करि करि कोप युद्धको धाये। ते पुनि सब बलदेव नशाये ॥
बहुरि केशगहि कंस मुरारी। दियो घसीट यमुन जलडारी ॥
कीन्हो कछुक तहां विश्रामा। भयो विश्राम घाट तिहि नामा ॥

१ आकाश। २ स्वर्ग, पाताल, मृत्युलोक। ३ प्रसन्न। ४ श्रीकृष्ण।

सुनिकै मरन कंसकी नारी । और सकल भ्राताकी प्यारी ॥
रोदन करि करि विविध विलापा । सुमिरि भूपगुण रूप प्रतापा ॥
निजहित समुझि भयो दुख भारी । चहत मरण पति नेह विचारी ॥
गये तहां बहुरो दोउ भ्राता । करुणामय कोमल सुखदाता ॥
करि प्रबोध बोलीं सब रानी । रहीं मरण ते सुनि प्रभुबानी ॥
बहुत भांति तिनको समुझाई । आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेमिके वंश सुहायो । उग्रसेन सुनिकै उठिधायो ॥
तिन प्रभु चरण आय शिरनायो । त्राहि त्राहि कहि वचन सुनायो ॥

छंद—त्राहि त्राहि सुनाय आरत, वचन प्रभु चरणन गिरयो ॥
अब करहु करुणानिधि क्षमा, अपराध यह हमते परयो ॥
असुर मारि कंस भाइन, सहित सो उचितै करी ॥
परद्रोह रति खल[1] दलन हित, अवतार यह तुम्हरोहरी ॥
करिकै कृपा अब प्रजा पालन, हेत प्रभुचित दीजिये ॥
वर बैठि सिंहासन सुभग[2], यहराज्य मधुपुरि कीजिये ॥
सुनि दीन वचननहर्षि हरि, तब उग्रसेन उठायकै ॥
बहुभांति करि सन्मान पुनि पुनि, लिये हृदय लगायकै ॥

दोहा—श्रीमुखसों कर जोरि पुनि, कह्यो सुनहु महराज ॥
यदुवंशिनको शापहै, हमैं उचित नहिं राज ॥

सो०—करहु देव तुम राज, दूरि करौ सन्देह सब ॥
हम करिहैं सब काज, जो आयसु[3] देहौ हमैं ॥

जो नहिं मानै आनि तुम्हारी । ताहि दण्ड करिहैं हम भारी ॥
और कछू चित शोच न कीजै । नीति सहित परजहि सुखदीजै ॥
यादवजिते कंसकी त्रासा । गृहतजितजि भजिगये प्रवासा ॥
तिन सबको अब खोज बुझावो । सुखदै मथुरा मांझ बसावो ॥
विप्र धेनु सुर पूजनकीजै । इनकी रक्षामें चितदीजै ॥

१ दुष्टोंकेनाशकेलिये । २ उत्तम । ३ आज्ञा ।

यों प्रभु उग्रसेन समुझाये। राज सिंहासन पुनि बैठाये ॥
शिरपर मंजुल छत्र फिराई। निजकर चँवर लिये दोउ भाई ॥
युग युग प्रभु भक्तन सुखदाई। राखत जनकी सदा बड़ाई ॥
बरषि सुमन सुर कहत सुखारी। जय जय जय भक्तन हितकारी ॥
उग्रसेन नृप करि बैठायो। लखि मथुरा लोगन सुखपायो ॥
धनि धनि कहत सकल नरनारी। अब करिहैं पितु मातु सुखारी ॥
यहै बात सब घर घरमाहीं। इनसम और जगतकोउ नाहीं ॥

छंद-नर नारि सब यह कहत घर घर, और नाहिं इनते वियो
धनि मातु पितु दिनराति धनि, सोजन्म जग जब हरिलियो ॥
गहि कंस सहित सहाय मार्यो, मरन नहिं रानिनदियो ॥
उग्रसेन नरेश करि पुनि, चवँर कर अपने कियो ॥
विबुध हर्षे सुमन वर्षे, सुथिरसब यदुकुल भयो ॥
अब पावहीं पितु मातु सुनि सुख, सकलदुख उनकोगयो ॥
हम जिये अब सब निरखि सुख छबि, जन्मको फल जगलह्यो।
जियहु युगयुग भ्रात दोऊ, हरषि पुरवासिन कह्यो ॥

दोहा-कंस मारि भूभार हरि, उग्रसेन करि भूप ॥
कहां हमार मातु पितु, तब बोले सुख रूप ॥

सो०-संगहि चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब ॥
राम कृष्ण दोउ भाय, ब्रजवासी जन दुखहरन ॥

उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो। हृदय हर्षि देवकी सुनायो ॥
रामकृष्ण जनु मधुपुर आये। सुफलकसुत सँगनृपति बुलाये ॥
असुर सैन हति कंसहि मार्यो। उग्रसेन नृपकरि बैठार्यो ॥
सुनि तियकहै नयन भरिपानी। कहत कहापिय ऐसी बानी ॥
सुनिहै दूत कोऊ दुखदाई। कहिहै अबहिं कंससों जाई ॥
हम करिपाप जन्म जगलीन्हो। सोफल हमैं विधाता दीन्हो ॥

१ पवित्र-श्वेत। २ रात्रि। ३ अक्रूर।

बधे सात सुत देखत आगे। बच्यो एकडरि ब्रजलै आगे ॥
तापर बन्दिकिये हम दोऊ। धृग जीवन परवश जगकोऊ ॥
हमको मीच नीचविधि भूल्यो। होहु कंसको वंशनिमूल्यो ॥
कह वसुदेव रोडमति नारी। धोवौ बदन दीन्ह जलझारी ॥
कहियतहै दुखहरण गोपाला। गर्व प्रहारी दीनदयाला ॥
ह्वैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई। तात तुम्हारे त्रिभुवन राई ॥

दोहा—अब जनि होहु अधीर तिय, धरहु धीर सुखपाय॥
आयु तुलानी कंसकी, देखत जाय बिलाय ॥

सो०—स्वप्न वृथा नहिं जाय, मातु कह्यो मेरो प्रिया ॥
आज कालिह में आय, तोहिं मिलैं तेरे सुवन ॥

यहि अन्तर द्वारे हरि आये। वज्र कपाट जहां जडिलाये ॥
करुणाकरि हरि तिन्हैं निहारा। गये सहज सब उघरिकिवारा ॥
लखि वसुदेव सामुहे पाये। कहत कुँवर काके दोउ आये ॥
दियो दरशतिहि प्रेम सुहायो। जन्मसमय जो दरशन पायो ॥
मिले धाय पितु मातु निहारे। कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दम्पति।सुनै न कंस मनाहिं मनकम्पति ॥
तबहीं कृष्ण कह्यो सुनुमाता। मार्‍यो कंसअसुर हमताता ॥
मल्ल पछारि सुभट सब मारे। द्विरद कुबलिया दन्त उखारे ॥
यह कहकरि पितु मातु सुखारे। तुरत तोरि पगबन्धन डारे ॥
तब जननी निश्चय करिजानी। रोवन लगी कण्ठलपटानी ॥
बारहिं बार कहत उरलाये। मैंनाहिं कबहूं गोद खिलाये ॥
द्वादशवर्ष कहां रहेप्यारे। माता पिता जाहिं बलिहारे ॥

दोहा—सुनि जननी के वचन प्रभु, करुणानिधि यदुराय ॥
भये प्रेम वश दुखित लखि, बोले अति सकुचाय॥

सो०—लिख्यो न मेट्यो जाय, मतिकरुमात बिषादचित ॥
अब पुरवैं दोउ भाय, तुव मनके अभिलाष सब ॥

१ उमर। २ माता।

पुत्रजन्म जगमें सुखकारी। तुमपायो हमते दुखभारी ॥
मात पिता जाते दुखपावैं। वृथा जन्म सुत तासु बतावैं ॥
सो अब दोष न मनमें दीजै। होनहार वाकी कह कीजै ॥
अब जननी सब शोच निवारो। तजो शोक आनँद उर धारो ॥
सकल मनोरथ तुमरो करिहौं। स्वर्ग पताल जात नहिं डरिहौं ॥
अष्टसिद्धि नव निधि ले आऊं। घर घर मथुरा मांझ बसाऊं ॥
सुनि प्रभुवचन जननि सुखपायो। बार बार गहि कण्ठ लगायो ॥
अति आनन्द भयो मन माहीं। सो कहि सकत शारदानाहीं ॥
कहत तात तुम बदन निहारो। सफल भयो अब जन्म हमारो ॥
सुत हित श्रवतं[1] पयोधर[2] क्षीरा[3]। मिटी सकल उर अन्तर पीरा ॥
वसुदेव हृदय हर्ष अति आयो। सिद्ध लाभ साधक जनु पायो ॥
पूरवपुण्य फल्यो सुखकारी। पायो सुत हित करि दैत्यारी ॥

अथ वसुदेवगृहउत्सव लीला ॥

दोहा--तुरत बोलि तब विप्रवर, प्रीति सहित परि पाँय ॥
प्रथमहिं संकल्पी हती, दई लक्षते गाय ॥
सो०-और दियो बहु दान, बन्दीजन आये सुनत ॥
परितोषे सन्मान, अति उछाँह[4] वसुदेव मन ॥

तब देवकी कह्यो पति पासा। भरी परम आनंद हुलासा ॥
प्रगटेआज सुवन मम धामा। करहु जन्म उत्सवकी सामा ॥
सुनि वसुदेव परमसुखपावा। हर्ष द्वार दुंदुभी बजावा ॥
यदुवंशी सगरे जुरि आये। ध्वज पताक मंदिरन बँधाये ॥
रोपे कदली[5] खंभ रसाला[6]। बांधी रचि रुचि बंदनमाला ॥
लखि हरि जन्म अनंद बधाई। ऋद्धि सिद्ध प्रकटी सब आई ॥
हाटँककलश[7] अनेकविधाना। मंगल द्रव्य[8] रचे विधि नाना ॥
गज मुक्तनके चौक बनाये। मंदिर गलिन सुगंध सिंचाये ॥

१ माता। २ टपकत। ३ दूध। ४ हर्ष। ५ केला। ६ अम्ब। ७ सोनेके। ८ पदार्थ।

सुनि सब मथुरा पुर नर नारी । उमगि उठीं आनँद उर भारी ॥
घरघर सबहिन मंगल साजे । द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे ॥
नौसत साज सकल वरनारी । सजि सजि मंगल कंचन थारी ॥
गान करत कलकंठ[1] लजावैं । श्रीवसुदेव धामको आवैं ॥
दोहा–जाति पांति परिजन प्रजा, बंधुहितू सब लोग ॥
लै लै आवत भेट सजि, हरषत निज निज योग ॥
सो०–भई भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी ॥
धरि धरि मनुज शरीर, मानहुँ सुख आये सकल ॥
तब जननी मन अति सुखपाये । उपटनकारि दोउ सुत अन्हवाये ॥
निज कर अंग अँगौछि सुहायो । तन द्युति लखि दृग ताप नशायो ॥
केसरि मलय[2] मिलिय रुचिकारी। किधो तिलकवर भाल सुधारी ॥
भूषण बसन श्रृंगारत कैसे । राजकुवँर बर पहरत जैसे ॥
कंचन मणि मय खचित नवीनो । क्रीट मुकुट शोभित शिर कीनो ॥
कलँगी ललित जडाव जडाई । तुर्रा मध्य अनूप सुहाई ॥
गज मुक्तनके कुण्डल कानन । अति विशाल छबि शोभित आनन[3]
कंठपदिकके हार विराजैं । उर विशाल पर अति छबि छाजैं ॥
पंच रत्नके अंगद नीके । शोभित सुजन भावते जीके ॥
कर चूरा नव रतन निकाई । पाणि पल्लवन छाप सुहाई ॥
किंकिणिललित कलित रचकारी । कटिकेहरि पर बलित सवाँरी ॥
चूरा चारु मनोहर पाँयन ।चरण कमल भक्तन सुखदायन॥
दोहा–नील पीत बर बसन तनु, दोउ सुतन श्रृंगार ॥
चारु अलक मुख शशि झलक, निरखिजात बलिहार।
सो०–हते श्यामके साथ, ग्वाल तिन्हैं पुनि देवकी ॥
पहिराये निज हाथ, जानि कृष्ण प्रीतम सबै ॥
ग्वाल बाल सब चकित निहारे।कहि न सकत कछु मनहिं विचारे ॥
येतो कृष्ण देवकी जाये । झूठहि यशुमति सुवन कहाये ॥

१ कोकिला । २ चन्दन । ३ मुख ।

करत शोच मनहीं मन माहीं । अब हरि ब्रज चलिहैं कै नाहीं ॥
तब दोउ कुवँर चौक बैठारे । बिप्र१ वृन्द वसुदेव हँकारे ॥
विधिवत पूजि तिलक करवाये । दान बहुत हरि हाथ दिवाये ॥
बहुरि आरती मात उतारी । लखि छबि मुदित सकल नरनारी
वेद ध्वनि महि देवनकीन्हीं । द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हीं ॥
वरुण सहित सुरनभ यश गावैं । बरषि कुसुम२ दुंदुभी बजावैं ॥
परमानन्द सकल पुरवासी । निधि सिधि सब गृह गृहकीदासी
बहुरो सखन सहित दोउ भैया । निजकर परसि जिमाये मैया ॥
पूजी सकल कामना जीकी । मिटी कल्पना दारुण हीकी ॥
यहि विधि कंस मारि यदुराई। मात पिताकी बंदि छुड़ाई ॥

छंद०इहि भांति कंसनिपातियदुपति, मातुपितुकोसुखदयो
हर्षि अति नर नारि मथुरा, घरनघर आनँद भयो ॥
परमपावन यश सुहावन, पलहिं में त्रिभुवन गयो ॥
जीव जल थल नाग नर सुर,सरसरस जहँ तहँ भयो॥
यह कंसहतन पुनीत यश, नितनर सुनैं जे गावहीं ॥
ते न भव बंधन परहिं, फिरि अघ३ समूह नशावहीं ॥
मिटहिं दारिददोष दुरमति, विपति निकट न आवहीं
सकल मन बांछितलहैं अरु, भक्ति अविचल पावहीं॥

दोहा–कठिन शूल शंकट हरण, मंगल करण अशेष ॥
राम कृष्णके चरित बर, गावत सुनत बिशेष ॥

सो०–नरतनु पाय सुजान, अनुदिन४ गावत हरि कथा ॥
सकल सुखनकी खान, ब्रजवासी प्रभुकेसुयश ॥

अथ कुबिजागृहप्रवेश लीला ॥

श्रीयदुकुल कुल कमल तमारी । दीनबन्धु भक्तन हितकारी ॥
करिकै जननी जनक सुखारी। तब कुबिजाकी सुरति सवाँरी॥

१ ब्राह्मण । २ पुष्प । ३ पाप । ४ अहर्निश ।

नृपति भवन तजिके अभिरामा। चले बसन कुबिजाके धामा॥
कृष्ण कृपा सबही पै न्यारी। भाव भजन कुबिजा भइ प्यारी॥
सांचो भाव हृदय जहँ जाने। विवश होय तेहि हाथ बिकाने॥
नारि पुरुष कछु नाहिंन भेदा। नीच ऊंच नहिं करत निषेदा॥
प्रथमहिं आय मिली मग पाई। सोहित मानि लियो यदुराई॥
चन्दन चर्चि तनक तनु दीन्हो। मनहुँ कोटि तप काशी कीन्हो॥
अति अकुलीन कंसकी दासी। परसत पावन भई रमासी॥
आये पुनि प्रभुताके धामा। भक्त वत्सलहै जिनको नामा॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये। पाटम्बर पाँवडे बिछाये॥
अति आनंद लियो उठि आगे। पूरण पुण्य पुंज सब जागे॥

दोहा–टेढ़ीते सूधी करी, दियो रूप अभिराम॥
दासीते रानी भई, पूरे सब मन काम॥
सो०–कोकरिसकै प्रकाश, अति विचित्र हरिके गुणन॥
सदादासको दास, भयो रहै प्रभु जननके॥

पुरवासिन सबहिन यह जानी। राजा हरि कुबिजा पटरानी॥
घर घर कहत सकल नर नारी। कियो कहा धौं इन तप भारी॥
मिली तनक चंदनदै मगमें। भई विदित अति पावन[२] जगमें॥
यह महिमा कछु कहत न आवै। कोताकी पटतर अब भावै॥
भूलि कहत कुबिजा जो कोऊ। ताहि रिसाय उठत सब कोऊ॥
सो तो भई कृष्णकी प्यारी। दासी कहत डरत नर नारी॥
करत त्रास[३] मनमें सब प्राणी। डारहि मारि सुनै जो रानी॥
जापर कृपा करैं यदुराई। ताहिनहीं यह कछु अधिकाई॥
सदा सदा हरिकी यह रीती। मानत एक भक्तसों प्रीती॥
धनि धनि कुबिजा हरिकी रानी। धनि धनि कृष्ण प्रीति करिमानी
धनि धनि चन्दन अंग लगायो। धनि धनि भवन जहां हरि आयो
कहि कहि सब सुर नारि सिहाहीं। आज कूबरी सम कोउ नाहीं॥

१ आनन्ददाता। २ पुनीत। ३ भय।

दोहा–बसे श्याम कुबिजा सदन, तहँ करि कछु विश्राम॥
पुनि आये वसुदेव गृह, जन मन पूरण काम॥
सो–तब श्री नन्दकुमार, ब्रज बासिनकी सुरति करि॥
मनमें कियो विचार, अब सब चलिये नंदपै॥
लै वसुदेव संग दोउ भाई। गेजहँ उग्रसेन नृपराई॥
तहां बहुरि यादव सब आये। पुनि उद्धव अक्रूर बुलाये॥
तब हरि ऐसे वचन सुनाये। ममहित ब्रजवासी सब आये॥
नंदादिक सब गोप जितेका। रह्यो नहीं ब्रजमें कोउ एका॥
गाय वत्स सब तजे अनेरे। हैं सूने मंदिर सब केरे॥
ह्वैहै दुखित यशोमति मैया। जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया॥
बहुत हेत उन हमसों कीन्हों। विविध भांति अबलों सुखदीन्हों॥
सकुचत हौं अपने मन माहीं। उनसों उऋण कबहुँ मैं नाहीं॥
पलटो नहिं जो उनको दीजै। अब चलि बिदा उन्हें ब्रजकीजै॥
सुन हरि वचन परम सुख पाई। सब मिलि चले जहां नँदराई॥
सुनी नंद गोपन यह बाता। मारो कंस जाय दोउ भ्राता॥
साँच नहीं मनमें कछु माने। प्रजा भाव सबरहे सकाने॥
दोहा–नन्दही मन शोचत खड़े, नहिं आये बलराम॥
ब्रज में आये ह्वैगयो, तिन्हैं आयघोबाम॥
सो०–अब कैसे ब्रज जाहि, बल मोहन दोऊ बिना॥
अति व्याकुल मन माहिं, कबधौं नयनन देखि हैं॥

अथ नन्दबिदालीला॥

आये तबहीं कुवँर कन्हाई। नृप वसुदेव सहित दोउ भाई॥
देखत नन्द मिले उठि धाई। लिये लगाय कण्ठ सुखदाई॥
अब चलि हैं ब्रजको यह जान्यो। अति आनन्द हृदय हरषान्यो॥
लखि वसुदेव बहुत सुखपाई। मिले नन्दसों सादर धाई॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे। आदर सहित सकल बैठारे॥
उग्रसेन वसुदेव उपँगसुत। सुफलक सुत अरु यादव गण युत॥

बैठे मिलि हरि हलधर भाई । नन्दहि मिले निकट बैठाई ॥
और गोप ठाढे सब पेखैं । यशुमति सुतको भाव न देखैं ॥
नंद मनहिं मन अति अकुलाहीं। चलत वेगि अब ब्रज क्यों नाहीं ॥
सबहीके मनमें यह आई । हरि अब हम सों प्रीति घटाई ॥
करत विचार श्याम मनमाहीं । प्रीति विवश बोलत सकुचाहीं ॥
तब हरि यों मुख वचन उचारे । बहुत कियो प्रतिपाल हमारे ॥

दोहा–झझकि परे नँदराय सुनि, कहा कहत गोपाल ॥
मोसों कहतकि आनसों, किन कीन्हों प्रतिपाल ॥

सो०–चौंकत जिय नँदराय, मति मोसों ऐसे कहौ ॥
गहबरहिय भरि आय, डारि सकत नहिं नयन जल

तब हरि मधुर कह्यो नँदराई । सुनहु तात हम कहत लजाई ॥
कही गर्ग तुमसों जो वानी । सो तुम तब निश्चय नहिं जानी ॥
पुत्र हेतु हमको प्रतिपारे । तात मात जिमि अधिक दुलारे ॥
खेलत हँसत बसत ब्रज माहीं । जात इते दिन जाने नाहीं ॥
हमको तुम दीन्हों सुख जितनो । कह्यो न जात बदन ते तितनो ॥
तुम सम मात पिता न हमारे । जहाँ रहें तहँ तात तुम्हारे ॥
बिछुरन मिलन मोह अरु माया । यह प्रपंच जग विधि उपजाया ॥
ह्वै हैं दुखित यशोमति मैया । मोबिन ब्रज तिय अरु सब गैया ॥
तातें गमन वेगि[3] ब्रज कीजै । जाय सबनको धीरज दीजै ॥
यशुमति सों विनती मम कहियो । माने सदा पुत्रहित रहियो ॥
मेरी सुरति न उर ते टारो । मैं तुम ते कबहूं नहिं न्यारो ॥
हरि यों नन्दहि वचन सुनाई । बहुरो रहे सकुचि अरगाई ॥

दोहा–निठुर वचन सुनि श्यामके, भये बिकल अतिनंद ॥
उमगि नीर नयननचल्यो, परिगये दुखके फंद ॥

सो०–दुखित सखा अरु गोप, चकित रहे हरि मुख निरखि ॥
करत मनहिं मन कोप, ये चरित्र अक्रूरके ॥

१ विह्वल-कोमल । २ व्यवहार । ३ शीघ्र ।

परे नन्द तब चरणन धाई। कहत न ऐसी कबहुँ कन्हाई ॥
हौं मोहन तजि चरण न जैहौं। तुमबिन जाय कहा ब्रज लैहौं ॥
मधुबन तुमहिं छांड़ि जो जाऊं। यशुदै उत्तर कहा सुनाऊं ॥
सन्मुख सुनत दौरि जब ऐहै। तुमबिन काहि गोद भरि लैहै ॥
पंथ निहारत ह्वैहै मैया। चलहु वेगि ब्रज कुँवर कन्हैया ॥
सद माखन मथि कीन्हो ह्वैहै। कहोसो तुम बिन काहि खवैहै ॥
क्यों जीहै बिन दरशन पाये। होत निठुर कित मथुरा आये ॥
बारह वर्ष कियो हम गारो। नहिं जान्यो परताप तुम्हारो ॥
अब प्रकटे वसुदेव कुमारा। कीन्हो वचन गर्ग निरधारा ॥
कत हम काज महारिपु मारे। कत दरिद्र दुख हरे हमारे ॥
डारि न दियो कमल कर गिरिवर। दबि मरते ब्रज जन ताकेतर ॥
कहैं नंद यों बिकल अधीरा। भई कठिन बिछुरनकी पीरा ॥

दोहा–देखि प्रीति अति नंदकी, मन बसुदेव सिहात ॥
सकुचि रहे सब प्रेम वश, कहि न सकत कछु बात ॥

सो०–व्याकुल सबै अहीर, मानहु पन्नगके[1] डसे ॥
हरि मुख लखत अधीर, ठाढे काढे चित्रसे ॥

तब हलधर नंदै समुझावत। कहत तात तुम कत दुख पावत ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं। तुमबिन और कहाँ सुख पावैं ॥
हरि प्रगटे भूभार उतारन। कह्यो गर्ग तुमसों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ। तुम्हरे सुवन कहावैं दोऊ ॥
हमैं तुम्हैं सुत पितुको नातो। और परे अब होत न हातो ॥
बहुत कियो प्रतिपाले[2] हमारो। जाय कहां उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है। तुम्हैं गये धीरज कछु पैहै ॥
व्याकुल नंद सुनत यह बानी। पुनि पुनि कहत जोरि युग पानी ॥
अब कै चलहु श्याम मम गोहन[3]। ब्रजमें मिलि आवहु फिरि मोहन
मारिड कंस कियो सुर काजा। दीन्हो उग्रसेनको राजा ॥

---

१ सर्प। २ सेवा। ३ साथ।

सुख वसुदेव देवकी पायो । भयो सकल यदुकुल मन भायो ॥
यदपि यशोमति बिन गिरिधारी । को जानै प्रभु टेक तुम्हारी ॥
दोहा-ऐसे कहि अति विकलह्वै, रहे नंद गहि पांय ॥
भई क्षीण द्युतिहीन मति, नयनन जल नरहाय ॥
सो०-माया रहित मुकुन्द, नहीं विरह संयोग तिह ॥
ब्रह्म पूरणानन्द, सब घटवासी एकरस ॥
देखि विरह अति कादर नंदहि। सखा वृंद अरु सब उपनन्दहि ॥
बिछुरत तजन चलतहैं प्राना । तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अति दुस्तरहै माया । जिनकर जीवविमुख भरमाया ॥
तिन कछु द्वन्द कियो जगमाहीं। तब हरि बोध करत नँद पाहीं ॥
कत पछितात तातहौ एतो । ब्रज अरु मथुरा अंतरकेतो ॥
कहा दूरि तुमते कहुँ जाहीं । करि विचार देखौ मन माहीं ॥
हैं ब्रजके नरनारि दुखारी । ताते कीजत विदा तुम्हारी ॥
ऐसे बोधकियो ब्रजनाथा । तब नँद कह्यो जोरि युग हाथा ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई । तौ अब मेरो कहा बसाई ॥
जैहौं ब्रज प्रभुकहे तुम्हारे । जात वचन मोपै नहिं टारे ॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई । नीच दशालै ऊंच चढाई ॥
परमगँवार ग्वाल पशुपाला । भयो धन्य सब जगत विशाला ॥
दोहा-मेटि पाप संताप सब, कियो सुकृतकी खान ॥
भरी साखि चौदह भुवन, सुर मुनि वेद पुरान ॥
सो०-ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरिके चरण ॥
लीन्हे श्याम उठाय, कह्यो जान सन्मान तब ॥
तब वसुदेव विनय बहु भाषी । आगे बहुत संपदा राखी ॥
कियो जो हम प्रति तुम उपकारा । ताको बदलो नहिं संसारा ॥
बालक ये अपनेही जानो । इहाँ उहां कछु भेद न आनो ॥
सुनि सुनि नंद महर पछिताई । रहेठगे तनु दशा भुलाई ॥
ऊरधश्वास नयन बह पानी । कंपित तनु कहि जात न बानी ॥

सो कछु नृपति नंद न लीनी । विनती बहुरि श्याम सों कीनी ॥
मांगतहों प्रभु यह कर जोरी । ब्रजपर कृपा होय नहिं थोरी ॥
तब सब गोप नृपति पहँ आये । बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये ॥
गोप सखा बोधे हरि सबहीं । बिदा किये आदरदै तबहीं ॥
चले सकल ब्रज शोचत भारी । हारे सरबस मनहुँ जुवारी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं । लटपट चरण परत मग माहीं ॥
ब्रजतन जात बिलोकत मधुवन। विरह व्यथा बाढ़ी व्याकुल तन ॥

दोहा–भये विरह वारिधिमगन, अति अचेतअकुलाय ॥
श्यामराम तजिमधुपुरी, आये ब्रज नियराय ॥

सो०–उतहि गये हरि गेह, उग्रसेन वसुदेव युत ॥
ब्रज वासिनको नेह, पुनि पुनि श्रीमुखते कहत ॥

पुनि पुनि नंद कहत पछिताई । चूकपरी हरिकी सेवकाई ॥
कहँ लगि गनिये यह अपराधू । किये कर्म हम परम असाधू ॥
कोमल पद बन अति कठिनाई । तहँ हरि पै हम गाय चराई ॥
किंचक दधिके काज रिसाई । बांधे यशुमति ऊखल लाई ॥
इंद्रकोप ब्रजलोग बचाये । वरुण लोक ममहित उठि धाये ॥
हम मतिमन्द न उनहीं जाने । निकट बसत नाहिन पहिचाने ॥
तन धन[1] लोभ कंस भयपाई । करि दीन्हे आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नंद निज करनी । परे मुरछि व्याकुल अति धरनी ॥
बार बार जोवतमग[2] माता । व्याकुल बिन मोहन बल ताता ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी । हरषि हृदय आतुर उठि दौरी ॥
धाई धेनु वत्सको जैसे । माखन प्यारेहैं धौं कैसे ॥
कनियां लेवेको अतुरानी । आये बल मोहन यह जानी ॥

दोहा–धाई अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी पास ॥
दरश आश आईं सबै, ब्रजतियाहिये हुलास ॥

सो०–त्यहि क्षण अति आनन्द, ब्रजवासी ब्रजतिय सबै ॥
अति सकोच वश नंद, सो दुख कापै जात कहि ॥

१ धन–वस्त्रालंकार । २ मार्ग देख ।

अथ ब्रजकीविरह लीला ॥

आतुर सकल गईं नँदपासा । मनमोहन दर्शनकी आशा ॥
पेखे नन्द गोप सब देखे । श्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यशुमति अति अकुलाई । कहँ मेरे श्याम राम दोउ भाई ॥
सुनत वचन व्याकुल नँदराई । नयन नीर भरि नारिनवाई ॥
देखत सूखि गईं ब्रजनारी । जनु प्रफुलित कुमुदिनि हिमहारी ॥
जान्यो आन भई विधि सोई । कहि गये वचन गर्ग मुनि जोई ॥
अति व्याकुल सब बिन ब्रजनाथा । भये सकल नरनारि अनाथा ॥
परे भूमि सब टेर लगाई । कौन दोष प्रभु हम बिसराई ॥
यशुमति अति बिलपति बिलखानी । कहत सरोष[1] नंदसों बानी ॥
धिग धिग महर कहा यह कीनो । मथुरातजि सुत ब्रज पगदीनो ॥
मारग सूझि परेउ केहि भांती । विदा होत फाटी नहिं छाती ॥
अर्द्ध वचन सुनताहि उठि धाये । कहा लेन सुख ब्रजमें आये ॥

दोहा–कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँदकन्द ॥
सुनी नहीं दशरथ कथा, कहूं श्रवण मतिमन्द ॥
सो०–मैं मधुपुरकों जाय, रहिहौं हरिकी धायह्वै ॥
लीजै ठोंकि बजाय, अब अपनो ब्रज नंद यह ॥

यह सुनि नन्द परे मुरझाई । अति व्याकुल ब्रज लोग लुगाई ॥
पुनि पुनि कहति यशोमति टेरे । कहँ छांड़े दोऊ सुत मेरे ॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारो । छीनि लियो वसुदेव हमारो ॥
सुफलक सुत वैरी भयो भारी । लै गयो जीवन मूरि हमारी ॥
हौं न गई हरि संग अभागी । सिखये इन लोगनके लागी ॥
जोमैं जानि पावती गोहन । तोक्यों छाँडि आवती मोहन ॥
ऐसे रोवत करत बिलापू । कहि न जात यशुमति परितापू ॥
हरि बिन सबनरनारि उदासी । आये जबहिं सकल ब्रजवासी ॥

१ क्रोधकरके ।

नहीं श्याम बिन सदन सुहाई। मनहु मशान भूमि धरि खाई॥
पूछत बिलखि यशोमति मैया। कहौ नंद कहकह्यो कन्हैया॥
तुमको बिदा ब्रजहि जब कीन्हो। हरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हो
तुम कछु हरिसों बिनय न भाषी। कहा श्याम मनमें यह राखी॥
दोहा—मैं अपनोसों बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवन नाथ॥
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ॥
सो॰—कहिकै तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो॥
करिकै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसों आय ब्रज॥
पुनि बोले ऐसे बल भैया। दुखीहोनपावै नाहिं मैया॥
धीरज देहु तात तुम जाई। कछु दिनमें हम मिलिहैं आई॥
पठयो मोहिं तोहिं हितलागी। तबमैं वचन सक्यों नहिं त्यागी॥
सुनि सँदेश यशुमति दुखपागी। रहे प्राण हरि चरणनलागी॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं। गहि रहि मिलन आश मन माहीं
ब्रज घरघर सब कहत गुवाला। किये कृष्ण मथुरा जो ख्याल॥
मारेउ रजकजाय हरि जबहीं। नहिं निबहै जान्यो हम तबहीं॥
चन्दन बहुरि कंसको लीन्हो। रूप अनूपम कूबरि दीन्हो॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डारेउ। फिरि दोउ भाइन गजको मारेउ॥
रङ्गभूमि[1] सब मल्ल पछारे। असुर अनेक युद्ध करि मारे॥
कहत हते ब्रजमें हरि जैसे। कियो जाय कंसहि पुनि तैसे॥
केश पकरि महि तुरत गिरायो। मारि यमुन जल माहिं बहायो॥
दोहा—उग्रसेन राजा कियो, निज कर चमर दुराय॥
मथुरा नर नारी सबै, आनन्दे सुख पाय॥
सो॰—पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि अरु वसुदेव सों॥
कह्यो परम सुख पाय, तात मात कहि भ्रात दोउ॥
तहां भयो उत्सव अति भारी। दियो दान बहु विप्र हँकारी॥
हरिहि बसन भूषण पहिराये। मंगल सब नर नारिन गाये॥

१ मर्घटकी भूमि।

मथुरा घर घर बजी बधाई । बहु सम्पति वसुदेव लुटाई ॥
अब नहिं गोप गोपाल कहावैं । वासुदेव सब नाम बुलावैं ॥
यदुकुल कमल सकल जगनायक । बिरद वान वर्णत गुण गायक
भये कृष्ण मथुरा के राजा । अहिरन देखि लगति अति लाजा
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई । बसे श्याम कुबिजा गृह जाई ॥
भये जासुवश अति हित मानी । कीन्ही ताहि आपनी रानी ॥
राजा हरि कुबिजा भइ रानी । गोपिन सुनी जबहिं यह बानी ॥
गई बिरहतन तपत सिराई । सौति शाल शाल्यो उर आई ॥
भयो दुसह दुख ऊरध श्वासा । मिटी श्याम आवन की आशा ॥
नयनन जल धारा अति बाढी । रहीं शोच बैठीं कोउ ठाढी ॥

दोहा—जुरि आईं ब्रज तिय सबै, सुनि कुबिजाकी बात ॥
लागीं आपस में कहन, मन दुख सुख हर्षात ॥
सो०—करी सुहागिनि श्याम, कुबिजा दासी कंसकी ॥
आपुन पति वह बाम, कियोनाम तिहुँ पुर बिदित

लै श्रीखण्ड मिली मग माई । सुनियत ताते अति मन भाई ॥
भली बुरी कछु जात न चीन्ही । बहुत रूप दै सम कर लीन्ही ॥
वे बहु रमण नगर की सोऊ । बन्यो संग अब नीको ओऊ ॥
कहत जु वह सोई अब मानैं । निशि दिन वाके गुणहि बखानैं ॥
जानि अनोखी नेह बढावैं । अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं ॥
अपर कह्यो कछु रोष जनाई । श्याम सदाके ऐसेइ माई ॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो । कान लागि तब यहै सुनायो ॥
नई कूबरी नारि बताई । तबहि गये ताके सँग धाई ॥
बोली और एक तिन माहीं । कुबिजा तुम देखी कै नाहीं ॥
दधि बेचन जब जात तहांरी । तब नीके हम ताहि निहारी ॥
अँगटेढी मालिनकी जाँई । हँसत जाहि सब लोग लोगाई ॥
बसत ढिगन नृप महलन जोई । सुनियत करी सुन्दरी सोई ॥

१ चंदन । २ नई । ३ उत्पन्नकी ।

दोहा-कोटि बार दाहौ अनल, कोटिकसौंकिन सोय ॥
तौकत पीतरते कहूं, कैसे सोनो होय ॥
सो०-हरि तजि दीन्हीं लाज, हमैं होत सुनिकै हँसी ॥
जाय कूबरी काज, मथुरा मारेउ कंसनृप ॥
बोली सखी और इक बानी। अलि यह बात नहीं तुम जानी ॥
कुबिजा सदा श्यामकी प्यारी। वे भर्त्ता उनकी वह नारी ॥
तैसे वहां ताहि करि दासी। राखी ये अवगति गुणराशी ॥
रूप रतन कूबर में राख्यो। जिमि मोती सीपनमें भाष्यो ॥
कंस मारिकै सो अब लीन्हीं। ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्हीं ॥
ब्रज वनिता त्यागी अब तातें। बूझी सकल श्यामकी बातें ॥
कहत एक तब सुनु सखिएरी। वेदिन हरिको बिसरि गयेरी ॥
लिये फिरतहीजब सब कनियां। पहिरावन सिखये हमतनियां ॥
घर घरडोलत माखन खाते। यशुदहि उरहन देतलजाते ॥
बहुरि भये जब कछुक सयाने। बाट घाट अवगुण बहु ठाने ॥
जो जो उन हमसों गुण ठान्यो। हम सब ताही में सुख मान्यो ॥
जिमि भजि आप गोकुलै आये। गोप भेष करिरहे छिपाये ॥
दोहा-देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस ॥
बड़े भये तब यह कियो, बसे कूबरी पास ॥
सो०-यशुमति लाड लडाय, बारते सेवाकरी ॥
ताहूको बिसराय, भये देवकी पुत्र अब ॥
सुनो सखी अब कह्यो हमारो। नहिं कीजै तिनको पतियारो ॥
जो जन जगमें कृतेहि न मानै। निज स्वारथ लगि बहु गुणठानैं ॥
ज्यों भँवरा कल कुंज सुहाई। बैठन चाहि सुमनपर आई ॥
रसहि चाखि पुनि हित नहिं मानै। तहीं जात जहँ नूतनैं जानैं ॥
पालत कगापिकाहि हितमाने। मिलत कुलहि जब होत सयाने ॥
सोई भई हमहिं अरु नन्दहि। कहिये कहा सखी गोविन्दहि ॥

१ कियेकाउपकार। २ नवीन।

जे खोटे मन कपट सयाने। औसर परे परैं पहिचाने ॥
बैठत अब नृप आसन माहीं। सुनियत मुरली देखि लजाहीं ॥
मोर पंख देखत नहिं भावैं। ब्रजको नाम लेत बहरावैं ॥
सुरभी चित्रहुमें जो हेरत। तोलजाय इतउत मुख फेरत ॥
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं। सुरत करत ग्वालनकी नाहीं ॥
वे कह जानैं पीर पराई। जिनकी प्रकृति परी यह आई ॥
दोहा-भयो नयो अब राजहो, नये मात पित गेह ॥
नई नारि कुबिजा मिली, भये सखानवनेह ॥
सो०-बिसरे ब्रजकी बात, कुंजकेलि रस रासको ॥
गये आपनी घात, दिन दिन दुख दूनो लहौ ॥
कौन बातको करैं परेखो। सखि अपने जिय शोच न देखो ॥
नाहरि जाति न पांति हमारी। तिनको दुख मानिये कहारी ॥
गोपीनाथ नन्दके लाला। अब न कहावत कान्ह गुवाला ॥
वासुदेव अब उहाँ कहावत। यदुकुलदीप भाटवर गावत ॥
नहिं वनमाल गुंज उर माहीं। मोर पच्छ माथेपर नाहीं ॥
गृह वनकी सब प्रीति भुलाई। वा मुरली सँग गई सगाई ॥
अब वह सुरति होत कतराजन। दिनदश प्रीति करी निजकाजन
सबै अजान भई तिहि काला। सुनि मुरलीको शब्द रसाला ॥
अब मन जलनिधि खगज्यों थाकैं। फिरिफिरि शरण जहां जिहिताकैं
कहत एक सुन्दरी ब्रजनाथा। ब्रज अब मानों कियो अनाथा ॥
तब वह कृपा हुती ब्रज पाहीं। राख्यो गिरिवर[1] करतल[2] माहीं ॥
बहुरो और प्रताप कियोरी। हमहित दावानल[3] अँचयोरी ॥
दोहा-अब यह दोष लगै हमैं, समुझत सकुचत जीय ॥
भयो वज्रहूते कठिन, बिछुरत फट्यो नहीय ॥
सो०-अबलागे दिन जान, सुनु सखिमोहनलालबिन ॥
रहत देहमें प्रान, बिन वह सूरति सांवरी ॥

१ गोवर्द्धन पर्वत। २ छगुनियांपर। ३ अग्निकीज्वाला।

रहत वदन देखे बिन नयना। श्रवण नरहत सुने बिन बयना॥
रहतहियो बिन हरि कर परसे। वेधत बाण मनोभव बरसे॥
अब सखियां सहियत दुख भारो। मनहुँ नयन तन प्राण हमारो॥
जब विधि बालक वत्स चुराये। तब हरि तैसेइ और बनाये॥
जनु वैसेई कुवँर कन्हाई। विरह वृष्टि ब्रज ओर चलाई॥
ऐसेमन गुण गुणि गोपाला। भई विरह वश सब ब्रजबाला॥
अतिही कठिन भयोदुख मनमें। व्यापी दशहूँ अवस्था तनमें॥
कोउ कह लोचन दीन हमारे। क्योंजीवहिं बिनश्याम निहारे॥
ज्यों चकोर बिन चन्द्र दुखारी। जैसे री बारिजबिन बारी॥
बिवरन जिमि ग्रीषम के खंजन। जैसे दुखी भ्रमर बिन कंजन॥
श्याम सिधुते बिछुरि परेरी। तडफडात ज्यों मीन खरेरी॥
भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाहीं। हरिबिन धरत धीर दृग नाहीं॥

दोहा—देख्यो नहीं सुहात कछु, गृहबन बिन नँदनन्द॥
विरह व्यथा जारत नहीं, भयो तपनि अति चन्द॥
सो०—बिन श्वासाकी देह, और रूपह्वै जात जिमि॥
तिमि लागत ब्रज गेह, हरि बिन सखी भयावनो॥

इहि बिरियां बनते हरि आवत। दूरिहिते कलवेणु बजावत॥
कबहुँक परम चतुर गोपाला। गावत ऊंचेस्वरन रसाला॥
कबहुँक लैलै नाम सुनावत। धौरी धूमरि धेनु बुलावत॥
देत दृगन सुख बनते आई। वह मनमोहन रूप दिखाई॥
और सखी बोली यक ऐसे। बहुरो कबहुँ देखिये वैसे॥
बैठे ग्वाल बालकनसाथा। बांटत खात अशनै ब्रजनाथा॥
यकदिन दधि चोरत मम धामा। मैं दुरिदेखि रही छबिश्यामा॥
बेभाने ममलखि परछाहीं। तब मैं धाय लई गहिबाहीं॥
मुख करपोंछि लिये गहि कनियां। प्रेम प्रीतिरसके सुख दनियां॥
रहेलागि छातीसों जैसे। सो वह कहो जातसुख कैसे॥

१ बछरा। २ विशेष। ३ कमलन। ४ सुंदरीवंशी। ५ भोजन।

जिन धामन वे सुख अवलोके। तेअब धरि धरि खात बिलोके॥
सुमिरि सुमिरि वे गुणगण नाना। हरिबिन रहत अधम तनुप्राना॥
दोहा-कहँ लगि कहिये ये सखी, मनमोहनके खेल॥
उन बिन अब गोकुल भयो, ज्यों दीपक बिनतेल॥
सो०-रहत नयन जल छाय, सुमिरि सुमिरि गुण श्यामके
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब॥
एक प्रलाप करत मन माहीं। कहै जाय कोऊ हरि पाहीं॥
लेहु आय निज गायन घेरी। फिरत नहीं ग्वालनकी फेरी॥
बिडरी फिरत सकल घनमाहीं। तुमबिन नाहिं काहु पतियाहीं॥
अपनो जानि सँभारहुआई। मति बिसरौ ब्रजहेत कन्हाई॥
बिलखत गाय वत्स सबग्वाला। नेकुसुनावहु वेणु रसाला॥
बूड़त विरह सिंधुमें नारी। लेहु आय गहि सुजानिकारी॥
कोऊ कहत कहै कोउजाई। बसौफेरि ब्रज कुवँर कन्हाई॥
अबनहिं तुमसों गाय चरावैं। नहिं जगाय वन प्रात पठावैं॥
माखन खात बरजिहैं नाहीं। नहिं उरहन यशुदहि लैजाहीं॥
नहिं दावँरि यशुमतिको दैहैं। नहिं अब ऊखल सों बँधवैहैं॥
चोरी प्रगट करैं नहिं काहू। नहीं जनावहिं अवगुण ताहू॥
बेनी फूल गुहन नहिं कैहैं। नहीं महावर चरण दिवैहैं॥
दोहा-माँगत दान न बरजिहैं, हठ नहिं करिहैं मान॥
आय दरश अब दीजिये, रहत न तुम बिन प्रान॥
सो०-ऐसे कहि गहि पाँय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि॥
बसहिं बहुरि ब्रज आय, तौ ब्रजनंदन साँवरो॥
एक कहत अब हरिनहिं आवैं। नृपपद तजि क्यों ग्वाल कहावैं॥
वहँ गजरथ चढि चलत कन्हाई। इहँ क्यों गाय चरावहिं आई॥
उहां पटम्बर पहिरि दिखावैं। इहांकि क्यों अब कामरि भावैं॥
अब उन यशुमति मातु बिसारी। कौन चलावै बात हमारी॥

१ अनेकप्रकार। २ विचार। ३ भागी। ४ रस्सी।

बोली अपर सखी बिलखाई। भये निठुर अब कुवँर कन्हाई॥
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी। सुनु सखि सलिल मीनकी जैसी
तलफत मीन निपट अकुलाने। नीरै कछू उर पीर न जाने॥
इतनी दूर दया नहिं कीन्हीं। बीती अवधि खबरि नाहिं लीन्हीं॥
दै गये बिहँसि चलत परतीती। मिलि हौं आय बहुरि रिपुजीती
हारे नयन उतहि मग जोवत। रोय रोय उर कंचुकि धोवत॥
जैसा दिन निशि तैसी जाई। पल भर नींद परत नहिं आई॥
मंद समीर चंद दुखदाई। इनते जरत सेज अधिकाई॥

दोहा-स्वप्ने हूतो देखिये, नींद परै जो नयन॥
कीन्हे विविध उपाय मन, क्योंहूं लहै न चैन॥
सो०-बोलि उठी इकबाम, सुन सखि हौं तोसोंकहौं॥
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं स्वप्नमें॥

आये जनु मम सदन गोपाला। हँसि भुज पाणि गहे नँदलाला॥
कहा कहौं अरि नींद भईरी। एकहु क्षण नहिं और रहीरी॥
ज्यों चकई लखि निज परछाहीं। पतिहि जानि हरषी मन माहीं॥
तबहीं निठुर विधाता आई। दियो पवन मिस सलिल डुलाई
मेरी दशा भई सखि सोई। जो जागों तो ढिग नाहिं कोई॥
देखहु कहा अधिक अकुलाई। विरह जरी अरु काम जराई॥
कहा कहौं किहिं दोष लगाऊं। अपनी चूक समुझि पछिताऊं॥
बिछुरतही नहिं तज्यो शरीरा। समुझि परी तबहीं यह पीरा॥
महादुखित अब अंग हमारे। भये सखी दोउ नयन पनारे॥
अतिही भ्रम माते बिन देखे। चाहत रूप श्यामको पेखे॥
रसना यही नेम गहि राख्यो। हरि बिन और न चाहत भाष्यो॥
जबते बिछुरे कुँवर कन्हाई। तबते भये सबै दुखदाई॥

दोहा-वोई निशि वोई दिवस, वोई ऋतु वइ मास॥
बदलेसबै सुभाव जनु, बिन हरि मदन बिलास॥

१ पानी। २ शत्रु। ३ वैरी। ४ राति। ५ दिन। ६ महीना।

सो०–चली औरही चाल, अब या ब्रजमें ऐसखी ॥
विमुख भये गोपाल, भये दुखद जे सुखद सब॥
गृह कन्दरा सेज भइ शूली । शशिकी किरणि अग्नि सम तूली॥
सींचत अली मलय घसिनीरा । होत अधिक ताते उर पीरा ॥
फूली अरुण फूल बन डारी । झरत देखियत मनहुँ अँगारी ॥
हरि बिन फूल लगत सब कैसे । मनहुँ त्रिशूल शूल उर जैसे ॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे। अबते फल सब विष रस पागे ॥
त्रिविध समीर तीर सम लागे । कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे॥
तप्त तेल सम वारिद पानी । उठत दाह सुनि चातक बानी ॥
सुनु सखि चातक दोष नदीजे। ज्याये या पक्षिके जीजे ॥
जैसे पिय पिय हम रट लावत । तैसेही कहि कहि वह गावत ॥
अति सुकंठ पीतम हित मानी । क्षण नहिं रहत रटत पिय बानी
आप सुधारसपी सुख पावैं । टेरि टेरि बिरहिनको ज्यावैं ॥
जो यह खग नहिं करत सहाई । लहत प्राण तो दुख अधिकाई ॥
दोहा–यापक्षी सम औरको, सुनु सखि सुकृत समाज ॥
सफल जन्म है तासुको, जो आवै परकाज ॥
सो०–मगन सकल ब्रजबाल, ऐसे हरिके विरह वश ॥
नहिं बिसरत नँदलाल, सोवत जागत दिवस निशि ॥
पथिक जात मधुवनतन हेरैं । ताहि धाय ब्रजतिय सबघेरैं ॥
कहत परहिं हम पायँ तुम्हारे । सुनहु बटोही वचन हमारे ॥
उतहैं बसत कृष्ण ब्रजनाथा । कहियो तिनसों ब्रजकी गाथा ॥
तुम जु इन्द्रको यज्ञ नशायो । पुनिगिरि कर धर ब्रजै बचायो ॥
सो अब वह विरहा ह्वै आयो । चाहत है ब्रज फेरि बहायो ॥
वर्षत निशि दिन दृग घनकारे । बहत कुचन बिच सलिलपनारे ॥
ऊरध श्वास पवन झक झोरे । गर्जत शब्द पीर घन घोरे ॥
महावज्र दुख सुख द्रुम डारे । व्याकुल अंग सकल अति मारे ॥

१ मेघ ।

व्यथा प्रवाह बढ्यो अति भारी। बूडत विकल सकल ब्रजनारी॥
चितवत मग सब नाथ तुम्हारो। जानि आपनो आइ उबारो॥
गये मिलन कहि श्रीमुख बानी। अवधि बीते सबै सिरानी॥
तुम बिन तलफत प्राण हमारे। जैसे मीन सलिलते न्यारे॥
दोहा–एक बार फिर आयकै, देहु सुदरशन श्याम॥
तुम बिन ब्रज ऐसो लगत, ज्यों दीपकबिन धाम॥
सो०–मिलते वेणु बजाय, अब वह कृपा भई कहा॥
पुनि का करिहौ आय, प्राण गये ब्रज आयकै॥
सुनहु पथिक त्वहिं राम दुहाई। कहियो यह मोहनते जाई॥
तुम बिन राधेके तनु आई। भई सबै विपरीत बनाई॥
वदन सुधाकर[1] भीति छिपानी। अब रहगई कलंक निशानी॥
अँखियांहुती कमल पखुरीसी। सो अब मनहुँ रंगनिचुरीसी॥
आँच लगे कंचन जिमि कांचो। तिमि तनु विरहानलको तांचो॥
कदलीदलसी पीठ सुहाई। सो अब मानों उलटि बनाई॥
सुखकी संपति सकल नशानी। जारत भई कोकिला बानी॥
अब सब साद मानकी नासी। है रहि तुम्हरे दरश पियासी॥
चातक पिक मृग अति कुल जाती। तब इनको देखत अनखाती॥
अब तिनसों पूछत हैं धाई। तुम्हरे चरण कमल कुम्हिलाई॥
ललतादिक सखियां लखि धाई। जानि अटा चढि गर्व बढाई॥
अस कहि सखी तिन्हैं अकुलाई[2]। मिलि रायकै कंठ लगाई॥
दोहा–सुधि बुधि सब तनुकी गई, रह्यो विरह दुख छाय
होन चहत दशई दिशा, वेगि मिलहु तिहिआय॥
सो०–ऐसे निज निज हेत, कहत सँदेशो श्यामसों॥
पथिकहि चलन न देत, होत साँझ ताको तहां॥
विरह विकल सब ब्रजकी बाला। हरि वियोग उरपीर विशाला॥
हरि दरशन बिनकल नहिपावै। ज्यहि त्यहि कहि उर व्यथा जनावै

१ चन्द्र। २ दुःखित।

जब पपिहा बोलत निशि आई। कहत ताहि कोऊ अनखाई॥
हौं तो विरह जरी संतापी। तू कत जारत रेखग पापी॥
पिय पिय कहि अधरात पुकारै। मूढ मृतक अबलन कत मारै॥
तूनहिं सुखित दुखित बिन नीरा। तेउ न समुझत शठ परपीरा॥
करत कहा इतनी कठिनाई। हरिबिन बोलत ब्रजपर आई॥
उपजावत विरहिन उर आरत। काहे अगिलो जन्म बिगारत॥
एक कहत चताक सों टेरी। हैं सारंग चेरि हम तेरी॥
पौढे होहिं जहां सुखदाई। ऊंचे टेरि सुनावहु जाई॥
गइ ग्रीषम पावस ऋतु आयो। सब काहू चित चाव बढायो॥
तुम बिन ब्रजतिय डोलत ऐसे। नाव बिना करयाकी जैसे॥

दोहा–मानैंगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम॥
लेहु सुयश चातक बड़ो, लै आवहु सुखधाम॥

सो०–सुनि चातकके बैन, कोऊ सखि ऐसे कहत॥
यह बिहंग सुख दैन, सखि म्वहिं प्यारो पीवते॥

निशिदिन पिय पिय रटत विचारो। पियके बिरह भयो जरि कारो
स्वाति बूंद लगि रहत दुखारो। तज्यों सिंधुको जल करि खारो॥
आप पीर पर पीरहि पावै। जियको जीवन नाम सुनावै॥
प्रेम बाण लाग्यो जेहि होई। जानै व्यथा प्रेमकी सोई॥
कोऊ कहत कोकिलहिटेरी। सुनरी सखी सीख यक मेरी॥
बसत जहां हित कुँवर कन्हाई। फिरि आवहिं बारेक तहँ जाई॥
तू कुलीन कोकिला सयानी। सबहिं सुनावत मीठी बानी॥
तो सम कोउ नहीं उपकारी। जानतहौ विरहिन दुखभारी॥
उपवन बैठि श्यामको टेरी। कहियो अबलन मन्मथ घेरी॥
श्रवण सुनाय मधुर कल बानी। ब्रजलै आन श्याम सुखदानी॥
प्राणहुँ पलट मिलत नहिं एरी। सेंत सु बिकत सुयशकी ढेरी॥
है है लिन मोलन हम चेरी। गावहिं गोकुल कीरति तेरी॥

१ श्रीकृष्ण। २ कामदेव।

दोहा-कोऊ ऐसे कहि उठत, बरजहु बोलत मोर ॥
रह्यो परत नहिं टेर सुनि, बिन श्रीनन्दकिशोर ॥
सो०-बोलत करत बिहाल, मोरहु सखि बैरी भये ॥
बसेबिदेश गोपाल, ये बनते न टरैं मरैं ॥
बिरह मग्न यों ब्रजकी नारी। नहीं कृष्णसों पलभर न्यारी ॥
रही कृष्ण छबि दृगन समाई। रसना कृष्ण नाम रट लाई ॥
मनमें गुणहि सदा गुण हरिके। श्रवण रहें हरिको यश भरिके ॥
बसी श्याम मूरति उर माहीं। बिसरतसुरत एक पल नाहीं ॥
बैठत उठत चलत घर बाहर। श्याम सनेह गुप्त अरु जाहर ॥
सोवत जागत दिन अरु राती। प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती ॥
सब अँग कृष्ण प्रेम रस पागी। भई कृष्णमय सकल सभागी ॥
धनिसो प्रीति कृष्णसों लागी। धनिसो सुरति कृष्ण रस पागी ॥
धनिसो सुख हरि संग बिहारी। धनिसोदुख हरि बिरह बिचारी॥
धनिसु परेखो हरिसों जोई। धन्य सरेखो हरिको होई ॥
धनिसो ज्ञान ध्यान धनिसोई। जप तप धन्य जो हरि हित होई॥
धन्यजन्म जो हरिको दासा। सब बिधि धन्य जिन्हैं हरि आशा॥
दोहा-नंद यशोमति गोपिकन, निशिवासर हरि ध्यान॥
ब्रजवासी प्रभु दासकी, आश रहे लगि प्रान ॥
सो०-बिसरे सब व्यवहार, और न दूजी गति कछू ॥
अंधलकुटिया धार, एक सुरति नँदनंदकी ॥

अथ श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीत लीला॥

रहे जाय मथुरा हरि जबते। नितनव मोद होत तहँ तबते ॥
देवकी मन अभिलाष पुरावैं। निरखि निरखि दोउ सुत सुख पावैं॥
परमानंद मगन वसुदेऊ। सुखी सकल यादव गण तेऊ ॥
मुदित सकल मथुरा पुरवासी। देत सबन सुख प्रभु सुखरासी ॥
एक दिवस वसुदेव सुजाना। बोले जेकुल मध्य प्रधाना ॥
करि आदर मानता बड़ाई। तिनसों कहि यह बात सुनाई ॥

राम कृष्ण अबलों दोउ भाई । ग्वालन मध्य रहे ब्रजजाई ॥
यदुबंशिन की रीति न जानें । हैं अबहीं कुलधर्म अयानें ॥
ताते यह विचार अब कीजै । यज्ञोपवीत दुहुनको दीजै ॥
सुनिये वचन स्रवन मन भाये । गर्ग आदि सब विप्र बुलाये ॥
पूंछि सुदिन शुभ लग्न धराई । यज्ञकाज सब सौंज मँगाई ॥
सकल तीरथन ते जल आये । राम कृष्ण तासों अन्हवाये ॥

दोहा–सकल वेद विधि मंत्र पढ़ि, करि अभिषेक पुनीत ॥
दोउ भाइन तब गर्ग मुनि, दियो यज्ञ उपवीत ॥

सो०–अन्त न पावैं शेश, वेद श्वास जाको सकल ॥
ताहि दियो उपदेश, गायत्री गुरु गर्ग मुनि ॥

दियो दान वसुदेव अनेका । पूजे सब द्विज सहित विवेका ॥
सब नर नारी मङ्गलगाये । बन्दी जनन द्रव्य बहु पायो ॥
लखि कौतुक सुर गण सुख पावैं । बरषि सुमन दुन्दुभी बजावैं ॥
अति आनंद भयो सब काहू । तात मात उर परम उछाहू ॥
पुनि यक दिन वसुदेव सज्ञानी । यह इच्छा अपने मन जानी ॥
पण्डित भलो कहूं जो पैये । तो विद्या सब सुतन पढ़ैये ॥
काहू तब यह बात बखानी । संदीपन पण्डित बड़ ज्ञानी ॥
रहै अवन्ती पुरके माहीं । तासम जग पण्डित कोउ नाहीं ॥
यह सुनि कृष्ण सकल गुणखानी । पितुके मनकी रुचि पहिचानी ॥
ह्वैकैनेमसहित दोउ भाई । विद्या पढन गये यदुराई ॥
वेद विदित सेवा हरि कीन्हीं । अल्प काल विद्या सब लीन्हीं ॥
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो । जानि जगतपति मन हर्षायो ॥

दोहा–तब हरि गुरु सों जोरिकर, बोले सहित सनेहु ॥
गुरु दक्षिणा कछु चाहिये, माँगिसो हमसों लेहु ॥

सो०–तब गुरु कह्यो विचारि, तुम प्रभु कर्ता जगतके ॥
बूझि लेहुँ निज नारि, जो वह कहै सो दीजिये ॥

१ तिलक । २ जनेव । ३ नगारे ।

तब संदीपन तिय पहँ आये। वचन कृष्ण के ताहि सुनाये ॥
देन कहत हरि दक्षिणा हमको। माँगैं कहा सो बूझैं तुमको ॥
मरे हुते ताके सुत दोई। तिन मांगे हरि सों पुनि सोई ॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी। जल थल सब जिनके अनुगामी ॥
गये बहुरि भक्तन सुखकारी। जग उतपति पालन लयकारी ॥
चाहैं कियो होय सब सोई। आनि दिये गुरुके सुत दोई ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विज नारी। सुत संताप मिट्यो दुख भारी ॥
है प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हों। नमस्कार प्रभु गुरुको कीन्हो ॥
गुरु आयसुले पुनि दोउ भाई। आये मधुपुरि जन सुखदाई ॥
तात मात लखि अति सुख पायो। भयो मनोरथ सब मन भायो॥
राज काज पुनि प्रभु सब करई। उग्रसेन आयसु अनुसरई ॥
हित जन परिजन नर अरु नारी। सुखी सकल हरि बदन निहारी॥

दोहा-उद्धव अरु अक्रूरजे, सखा श्यामके साथ ॥
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥

सो०-ब्रजवासिनको ध्यान, ब्रजवासी प्रभुके सदा ॥
यदपि ब्रह्म सुखखान, तदपि भक्त वश प्रेमरस ॥

अथ उद्धवजीकीविदा लीला ॥

उद्धव यदुपति सखा सज्ञानी। एक ब्रह्म सुखसों रति मानी ॥
हरिको त्रिगुण रूप करि मानैं। प्रेम कथा कछु उर नहिं आनैं ॥
जब हरि ब्रजकी बात चलावैं। तब उद्धव हँसि कै उचटावैं ॥
हरि लखि मनहीं मन पछिताहीं। भली बानि याकी यह नाहीं ॥
रूप रेख जाके नहिं कोई। धर्यो नेम उरमें इन सोई ॥
निर्गुण कथा योगकी गावै। जामें कछु रस स्वाद न आवै ॥
मानत एक ब्रह्म अविनाशी। ज्ञान गर्वमें रहत उदासी ॥
बिछुरन मिलन दुःख सुख जाहीं। नहीं प्रेम उपजत तनु माहीं ॥
कनक कलश पानी बिन जैसे। याको रूप बन्योहै तैसे ॥

१ घमण्ड।

जोहौं कहौं कहा यह मानै । निंदा और हमारी ठानै ॥
कहिये काहि प्रेमकी गाथा । बन्यो हंस वायसको साथा ॥
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे । प्रेम भजन याके नाहिं नेरे ॥

दोहा-कहा यशोदा नंदसे, सुखद तात अरु मात ॥
कहँ वह सुख ब्रज धामको, नहिंविसरत दिन रात॥

सो०-कहां सखनको संग, कहां केलि वृन्दाविपिन ॥
कहँ वह प्रेम तरंग, वंशीवट यमुना निकट ॥

कहां नवल ब्रजगोप कुमारी । कहँ राधा वृषभानु दुलारी ॥
कहँ वह प्रीति रीति सुख संगा । कहां रासरस हासतरंगा ॥
कहँ कुंजन बनकेलि निकाई । कहां मान लीला सुखदाई ॥
कहँ लगि ब्रजके सुखन सँभारों । जिहिं लगि पुर वैकुंठ बिसारों॥
कहिये यह रस वाके आगे । उद्धव सुनत प्रेमको भागे ॥
कैसे प्रेम होय या माहीं । मेरेकहे मानिहै नाहीं ॥
ब्रजको याको देउँ पठाई । पैहै प्रेम तहां यह जाई ॥
याके मन अभिमान बढ़ाऊं । कहि युवतिनकी प्रीति सुनाऊं ॥
यहै बात यदुपति उर आनी । पठऊं ब्रजयहि थापत ज्ञानी ॥
कहौं बोध तिनको करि आवो । प्रेममिटाय ज्ञान समुझावो ॥
जैहैं तुरत सुनत यह बाता । कहिहैं हरि जानत म्वहिं ज्ञाता ॥
करि अभिमान तुरत ब्रज जैहैं । ह्वाँते जाय साध है ऐहैं ॥

दोहा-ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान ॥
उद्धवके उरते करों, दूर ज्ञान अभिमान ॥

सो०-आय गये तिहि काल, उद्धवजी हरिके निकट ॥
विहँसि मिले नँदलाल, सखा सखा करि अंक भरि॥

अति सुंदर सांवलि छबिछायो । जनु हरिको प्रतिबिम्ब सुहायो ॥
अंश भुजा दैके यदुराई । उद्धवसे ब्रजबात चलाई ॥
उद्धव सुनो कहौं तुमपाहीं । ब्रजको सुखम्वहिं विसरत नाहीं॥

१ कौवा ।

नेकहु नहीं यहां मन लागत। उठि उठि पुनि उतहीको भागत॥
यह मन होत वहीं पुनि जैये। गोपी ग्वालनमें सुखपैये॥
कहँवह हेत यशोमति मैया। दैदै माखन लेत बलैया॥
नहिं बिसरत मनते बिसराई। वह राधाकी प्रीति सुहाई॥
गोप सखा बृन्दावन गैयां। नहिं भूलत वंशीबटछैयां॥
त्यागत तिन्हैं बहुत दुखपाये। मिटत नहीं मनते पछिताये॥
उद्धव सुनि बोले मुसकाई। कहा कहत हरि यों अकुलाई॥
सदा रहत यह हित थिर नाहीं। जगव्यवहार सकल मिथ्याहीं॥
मोसों सुनो बात यदुराई। एकै ब्रह्म सदा सुखदाई॥

दोहा—जब उद्धव ऐसे कही, बिहँसि ज्ञानकी बात॥
तब यदुपति सुख पायकै, पुनि बोले हर्षात॥

सो॰—आई मो मन माहिं, उद्धव कहि जो बात तुम॥
तुम समानकोउनाहिं, सखा और मेरो हितू॥

उद्धव तुम ब्रजवेग सिधारो। करि आवहु यह काज हमारो॥
पूरण ब्रह्म अलख अज जोई। मात पिता ताके नहिं कोई॥
रूप न रेख जाति कुलनाहीं। व्यापिरह्यो सब घट घट माहीं॥
हौताके ज्ञाता तुम ज्ञानी। गोपी सकल प्रीतिरत मानी॥
यह मत तिन्हैं बोधकरि आवो। प्रेममेटिकै ज्ञान दृढावो॥
मेरेप्रेम विवश वे बाला। सहत विरह दुख दुसह विशाला॥
काम अग्नि तनु तूल[1] समाना। शोच श्वास मारुत[2] बलवाना॥
भस्म होन पावत सो नाहीं। भीज रहत नयनन जल माहीं॥
इहै[3] आज लोपै इहि भांती। विरह व्यथा व्याकुल दिनराती॥
ऐतेपै कैसे वे न्यारे। समाधान बिन धीरज धारे॥
ताते सखा वेगि तुम जाहू। मेटौ तिनके उरको दाहू॥
पठऊं नारिनके ढिग सोई। जो तुमहीं सों लायक होई॥

दोहा—एक प्रवीण गुरु सखामम, तुमते ज्ञानी कौन॥

---

१ रुई। २ वायु। ३ रहैंसब।

सो कीजे ज्यहि ब्रजवधू, साध न सीखैं दीन ॥
सो०-जिहि सुख पावैं नारि, ज्ञान योग उपदेशते ॥
डारैं मोहिं बिसारि, ब्रह्म अलख परचौकरैं ॥
उद्धव सुनो कहत मैं तुमको। तुम समहितू और नहिं हमको ॥
कैसहु उन गोपिन सों मोहीं। उऋण कीजिये बिनवत तोहीं ॥
निशिदिन भक्ति भरिये उनको। नाहिंआनि रुचि कैसिहु तिनको
सर्बस तिन न मोहिं सब दीनो। तन मन प्राण समर्पण कीनो ॥
मुक्ति तीन तिनको मैं दीनी। सोउनहित एकहु नहिं कीनी ॥
रही एक सो योजन कहिये। सो वह ज्ञान बिना नहिं लहिये ॥
सो अब देहु तिनहिं तुम ज्ञानू। जिहि पावैं पद पदनिरवानू ॥
जो अंगीकृत करैं न तासू। तौ मैं हौं उनको ऋणदासू ॥
गाय चरावत उनकी रैहौं। ब्रजतजिनहीं अनत कहुँ जैहौं ॥
यहै बात मेरे मन भावै। और न कछु मोपै बनि आवै ॥
उद्धव जाहु विलम्ब करौ जिन। उनको युग बीतत मोबिन छिन ॥
समाधान तिनको करि आवो। ब्रजमें जाय बिलम्बन न लावो ॥
दोहा-उद्धव ब्रजमें जायके, बिलंबि न रहियो जाइ ॥
तुम बिन हम अकुलायहैं, श्याम करत चतुराइ ॥
सो०-तुमहौ सखा प्रवीन, बार बार सिखऊं कहा ॥
जिय ज्यों जल बिन मीन, सोई मतौ बिचारिये ॥
कही श्याम ऐसे जब बानी। तब उद्धव अपने जिय जानी ॥
यदुपतियोगसाँच अब जान्यो। ज्ञान गर्व अपने मन आन्यो ॥
बोल्यो अति अभिमान बढ़ाई। तुम आयसु शिर पर यदुराई ॥
तुम पठवत गोपिनके माहीं। मैं कैसे प्रभु करौं कि नाहीं ॥
तुम्हरे कहे गोकुलहि जैहौं। ज्ञान कथा ब्रज लोगन कैहौं ॥
जो मानि हैं ब्रह्म उपदेशू। तो कहि हौं समुझाय सँदेशू ॥
दिन द्वै रहि ब्रजमें सुख दैहौं। बहुरो आय चरण पुनि गैहौं ॥

१ मोक्ष।

यह सुनि बिहँसि कह्यो हरि तबहीं। जाहु उपँगसुत ब्रजको अबहीं॥
ज्ञान दृढ़ाय खबरि तिन दीजै। एक पन्थ द्वैकारजकीजै॥
आये श्रात इतै हम दोऊ। तब ते ब्रज पठयो नहिं कोऊ॥
जाय नन्द यशुमति परितोषो। ज्ञान कथा कहि युवतिनपोषो॥
सकुच्यो मतिहि जानि ब्रजनारी। कहियो ज्ञान योग विस्तारी॥
दोहा-वचन कहतही समुझिहैं, वैहैं परमप्रवीन॥
ह्वैहैं शीतल विरहते, ज्यों जल पायो मीन॥
सो०-पठवत थापि महन्त, उद्धव को यहि काज हरि॥
ह्वै आवैंगे सन्त, ब्रज भक्तनके दरशते॥
अपनोही रथ तुरत मँगायो। दैउपंगसुत को पलनायो॥
अपनेइ भूषण बसन सुहाये। निज कर उद्धव को पहिराये॥
अपनइ मुकुट आपनी माला। पहिराई उर विहँसि विशाला॥
उद्धव तब हरि रूप स्वहाये। यक भृगुपदके चिह्न बराये॥
लिख्यो पत्रिका श्री यदुराई। नन्द बबाको विनय बड़ाई॥
पालागन कहियो कर जोरी। यशुमतिसे यहि भांति करोरी॥
बालक ग्वाल सखा समुदाई। लिख्यो मिलन सबहीं उरलाई॥
अरु नर नारि सकल ब्रज जेते। प्रीति जनाय लिखे सब तेते॥
लिखि गोपिनको योग पठायो। भाव जानि काहू नहिं पायो॥
लेहु दृढ़ाय प्रीति ब्रजबाला। यह आनी उरमें नँदलाला॥
नीके रहियो यशुमति मैया। कछु दिनमें अइहैं दोउ भैया॥
लिखि पाती उद्धवकर दीन्ही। और सुखागर विनती कीन्ही॥
दोहा-कहा कहौं कछु दिवसतें, जननी बिछुरेउँतोहिं॥
तादिनतें कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं॥
सो०-कह्यो सँदेश न जात, अति दुख पायो मात तुम॥
अब मोको निजतात, वसुदेव अरु देवकि कहत॥
कहियो नन्द बबासों जाई। कह मन धरी इती निठुराई॥

१ उद्धव। २ समाधान। ३ मछली।

जबते दियो इतै पहुँचाई । बहुरी सोध लियो नहिं आई ॥
बारेक बरसानेलौं जैयो । समाचार तहँके सब लैयो ॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे । ह्वैहैं वे मम विरह दुखारे ॥
तिन्हैं जाय मम दिशिते भेंटो । कहि सँदेश तिनको दुख मेटो ॥
ब्रजवासी जेते नरनारी । गोप वत्स खग मृग बनचारी ॥
जोजिहि विधि तासों तिहि भांती । अरस परस कहियो कुशलाती
मित्र एक मम दरशन पैहो । देखत ताहि परम सुख लहिहो ॥
वृंदावनमें रहत निरंतर । होत नहीं कबहूं उर अन्तर ॥
सघन कुंज तरु लता सुहाई । मिलियो ताको शीशनवाई ॥
इहि बिधि उद्धवसौं यदुराई । कहि सब मनकी बात सुनाई ॥
बल करि ताको प्रेम जनायो । ज्ञान गर्व ताके उर छायो ॥

दोहा–ऐसे उद्धवसों करी, प्रकट श्याम ब्रज प्रीति ॥
उद्धव तिनको ज्ञानलै, चले करन विपरीति ॥

सो०–लखि उद्धवको जात, हलधर लिये बुलाय ढिग ॥
समुझत ब्रजकी बात, आये जल भरि नैन पुनि ॥

कहा कहौं उद्धवमैं तुमसों । यशुमति करत हेतजो हमसों ॥
एक दिवस खेलतमो साथा । खेल कियो झगरो यदुनाथा ॥
मोको दौरि गोद तब लीन्हो । करसों ठेलि श्यामको दीन्हो ॥
नन्द बबा तब बनते आये । इन्हैं गोदलै मोहिं खिझाये ॥
लगे कहन नान्हो तेरो भाई । तोको छोह लगत नहिं राई ॥
वह हित नाहिं भूलत है हमको। कहत सँदेश बनत नहिं तिनको॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई । अरु दोउ भैयनकी कुशलाई ॥
कहियो हमहैं तनय तुम्हारे । मात पिता नहिं आन हमारे ॥
मिलिहैं आय धायकै तुमको । कारज कछुक औरहै हमको ॥
नहिं बिसरत क्षण गोकुल गाई । तुम तजि सुखको हमैं देखाई ॥
सुनि वसुदेव देवकी पायो । उद्धव ब्रजको जात पठायो ॥

दोहा-नंद यशोमति हित समुझि, लिखिपाती वसुदेव ॥
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव ॥
सो०-मति समुझो जिय माँहि,राम कृष्ण तुम्हरे तनय ॥
हम काहूकी आहिं, मात पिता तुम दुहुनके ॥

बालपने तुम पालनहारे । बालकेलिरस तुम्हैं दुलारे ॥
हमतो पाये वैस कुमारा । सो यह सब उपकार तुम्हारा ॥
मति कल्पो अपने मनमाहीं । हरिसों मिलि किन जात इहांहीं ॥
श्याम राम नहिं तुम्हैं भुलावैं । दिवस रैनि तुम्हरै यश गावैं ॥
ऐसे लिखि पाती सुखदाई । उद्धव कर वसुदेव पठाई ॥
तब हरि उद्धव बेगि पठायो । तुरत अकेले रथ बैठायो ॥
आयसुलियो बिदा हरि कीन्हों । चले उपँगसुत ब्रजपथ लीन्हों ॥
उद्धव चले गर्व मन धारी । कहा ज्ञान समुझैंगी ग्वारी ॥
देखौ हौं ब्रजलोगन धाई । मानत इतो तिन्हैं यदुराई ॥
चले उपँगसुत जब हर्षाई । गोपिनमन तब गयो जनाई ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लगिजाई । भयो कछुक दुख कछु हर्षाई ॥
समुझिसो शकुन दरश अनुरागीं । जहँ तहँ काग उड़ावन लागीं

दोहा-जो गोकुल हरि आवहीं, तो तू उड़रे काग ॥
दधि ओदन त्वहि देहुँगी, अरु अँचलकी पाग ॥
सो०-सुनि गोपिनके बैन,उठि बैठत वायस अनत ॥
लखि पावत सब चैन, कहत परस्पर आपसे ॥

सखी आज गोकुल हरि आवैं । कैधौं काहू ब्रजहि पठावैं ॥
नीकी बात सुनावै कोऊ । फरकत बाम नयन भुज दोऊ ॥
बिन बयारि अम्बर फहराई । टूटि टूटि कंचुकि बँदजाई ॥
उठि उठि बैठत काग कहेते । उमँगत मन आनंद लहेते ॥
भ्रमर एक चहुँ दिशि मडराई । पुनि पुनि कान लगत है आई ॥
होत शकुन सुन्दर शुभ काला । आवन हार भये नँदलाला ॥

१ काग। २ अंगिया।

जानत भाग्य दशा विधि फेरी । दूर करो अब दुख मन तेरी ॥
बहुरि गोपाल मिलें जो आई । सुख सनेह करिलीजै माई ॥
आसन हृदय कमलमें दीजै । नयनन निरखि वदन छबिलीजै ॥
देखत रूप मान तजिदीजै । प्रेम भजन अपनो करिलीजै ॥
आवैं जो ब्रज कुंजबिहारी । बड़ि भागिनी सबै ब्रजनारी ॥
नंद यशोमति सखि सुख पावैं । अति बडिभागिनि बहुरि कहावैं ॥

दोहा-घर घर शकुन विचारहीं, ब्रजकी तिय बड़भाग ॥
ब्रजवासी प्रभु दरशको, सबके मन अनुराग ॥
सो०-मथुरातन टक लाय, अनुदिन पंथ निहारहीं ॥
कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष सब ॥

अथ उद्धवजीकी ब्रजागमन लीला ॥

उद्धव चले ब्रजहि समुहाये । मथुरातजि गोकुल नियराये ॥
रथपर बैठे शोभित कैसे । दूजे नंदनँदन मनु जैसे ॥
वहै मुकुट पीतांबर काछे । श्याम रूप शोभित अँग आछे ॥
दूरहिते रथकी उजियारी । देखत हरषीं ब्रजकी नारी ॥
जान्यो आवत कुँवर कन्हाई । आतुर जहँ तहँते उठिधाई ॥
कहत परस्पर देखहु आली । मधुबनते आवत बनमाली ॥
गये श्याम रथपर चढ़ि जाहीं । तैसो रथ आवत मगमाहीं ॥
तैस्वइ मुकुट मनोहर राजै । तैस्वइ पट कुंडल छबि छाजै ॥
रथ तन सब देखत अनुरागीं । स्वप्नेको सुख लूटन लागीं ॥
ज्यों ज्यों रथ आतुर चलि आवै । त्यों त्यों पीतांबर फहरावै ॥
भई सकल सुख व्याकुल नारी । प्रेम विवश आनँद उर भारी ॥
जब लगि रथ आवत नियराई । तब लगि मानहु कल्प विहाई ॥

दोहा-यहै शोर ब्रज घर घरन, आवत हैं नँदलाल ॥
देखनको निकसे हरषि, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥
सो०-सुनत यशोदा नंद, लेन चले आगे हरषि ॥
भये परम आनंद, तिहि क्षण ब्रजके लोग सब ॥

जब कछु रथ आगे नियरायो। तब संदेह सबन मन आयो ॥
श्याम अकेले रथके माहीं। हलधर संग देखियत नाहीं ॥
कोऊ कहत नहैं ब्रजनाथा। जोपै हलधर नाहिंन साथा ॥
इतना कहत निकट रथआयो। उद्धव निरखि नयन जल छायो ॥
रहीं ठगीसी सब ब्रजबाला। नूतन बिरह भई बेहाला ॥
मनहुँ गई निधि कहूँपाई। बहुरि हाथते तुरत गँवाई ॥
ह्वैगइ सपने की रजधानी। जागत कछू नहीं पछितानी ॥
जबहीं कह्यो श्यामतो नाहीं। यशुमति मुरछि परी महि माहीं ॥
परी बिकल यशुमति ज्यहिठाईं। ब्रजतियधाय तहां चलिआई ॥
श्याम बिना रथलखि अकुलानी। जहाँ सो तहां रहीं मुरझानी ॥
रुदन करत व्याकुल अति भारी। लई उठाय पोंछि दृगबारी ॥
यह कहि बोध करत सब बाला। उद्धवको पठयो गोपाला ॥

दोहा–भली भई मारग चल्यो, सखा पठायो श्याम ॥
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों बाम ॥
सो०–सफल घरीहै आज, करहु जानि यह मन हरष ॥
आवनको ब्रजराज, इनके कर ह्वैहै लिख्यो ॥

यह सुनि उठीं कछुक सुखपाई। उद्धव निकटहि पहुँचीं आई ॥
हरिके रूप निरखि सुखपायो। श्यामसखा कहि सबन सुनायो ॥
उद्धव निरखि कहत ब्रजनारी। सुंदर सलज सुशील महारी ॥
ताहीते हरि याहि पठायो। लैसँदेश मोहनको आयो ॥
नीके नीके वचन सुनैहै। सुनि सुनि श्रवणनहियो सिरैहै ॥
यह जानिये वेगि हरि अइहैं। याके मुख अब यह सुनिपैहैं ॥
चहुँदिशि घेरिलियो रथजाई। नंद गोप ब्रजलोग लुगाई ॥
गये लिवाय नंद निजद्वारे। उद्धव रथते हर्षि उतारे ॥
अर्घ्यदेय भीतर घरलीन्हो। धनि धनि तिनकोहि आदरकीन्हो
चरण धोय आसन बैठाये। बहुप्रकार भोजन करवाये ॥

१ यशोदा। २ उत्तम।

विविध भांति करिके पहुनाई । नंद श्यामकी बात चलाई ॥
उद्धव कह्यो कुशल दोउ भैया । अरु वसुदेव देवकीमैया ॥
दोहा--करत हमारी सुधि कबहुँ, कहु उद्धव बलवीर ॥
पुलकि गात गद्गद वचन, पूछत नंद अधीर ॥
सो०–चूकपरी अनजान, कह पछिताने आजके ॥
घर आये भगवान, जाने हम निज अहिर करि ॥
प्रथम गर्गमुनि कह्यो बखानी । भूल्यो सङ्गदोष हितजानी ॥
अब उद्धव बिछुरे गिरिधारी । मरियत समुझि-शूल स्वइभारी ॥
कह्यो यशोमति दृग भरिपानी । उद्धव हम ऐसी नहिंजानी ॥
सुतको हितकरिकै हममाने । हरिहै वासुदेव प्रगटाने ॥
ज्यहि विरञ्चि शिवध्यान लगावैं । निशिदिन अङ्ग विभूति चढ़ावैं ॥
सोबालकहम अतिहि अयान्यो । ऊखल सों बांध्यो गहिपान्यो ॥
फाटत नहीं बज्र सम छाती । अब यह समुझि हृदय पछिताती ॥
वैसे भाग कबहुँ अब अइहैं । बहुरि श्यामको गोद खिलैहैं ॥
जबतेहरि मधुपुरी सिधारे । तबते उद्धव प्राण दुखारे ॥
तलफत मीन नीर बिन जैसे । देख्यो श्याम मनोहर तैसे ॥
उठिकै प्रात जातिहौं खरिका । देखत दुहत औरके लरिका ॥
उठत शूल उद्धव मनमाहीं । क्योंये प्राणनिकसि नहिंजाहीं ॥
दोहा–ग्वाल सखा सँग जोरि अब, को गैया लै जाय ॥
को आवै संध्या समय, बनते गाय चराय ॥
सो०–काहि लेहुँ उर लाय, आंचर सों रॅज झारिकै ॥
काकी लेहुँ बलाय, चूमि मनोहर कमल मुख ॥
मैं बलि सांची कहियो ऊधो । कैसे श्याम रहत ह्वां सूधो ॥
दही मही माखन नित जाई । खात कौनके धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वाल बालनके साथा । भोजन करत तहां ब्रजनाथा ॥
कौन सखा लीन्हे सँग डोलैं । खेलत हँसत कौनसे बोलैं ॥

१ ब्रह्मा । २ धूरिके कन ।

काको माखन चोरैं जाई। देन उरहनोको अब आई॥
बनमें यमुनातीर कन्हाई। किन गोपिनको रोंकत जाई॥
किनको दूध दही ढरकावैं। किनसों दधिको दान चुकावैं॥
इतनी बूझति यशुमति माई। भई बिकल गुण सुमिरि कन्हाई॥
बोले नंद बिलखि तब बानी। कहियो उद्धव साँच बखानी॥
श्याम कबहुँ बहुरो ब्रज अइहैं। ब्रजबासिनकी ताप नशैहैं॥
मोहिं तात यशुमतिसों माता। सदा कहतहैं हरि सुखदाता॥
कहि गये चलती बार मुरारी। मिलिहौं बहुरि तात यक बारी॥

दोहा-करिहैं सो अपनो वचन, कबहुँ श्याम प्रतिपाल॥
कह उद्धव तुमसों कछू, कह्यो कि नाहिं गोपाल॥
सो०-भये सकल कृश गात, श्याम विरह ब्रज नारि नर॥
युग सम दिवस बिहात, उद्धव हमको हरि बिना॥

लखि उद्धव ब्रज रीति सुहाई। रहे कछुक मनमें सकुचाई॥
सुनत नन्द यशुमतिकी बानी। बोल्यो हृदय परम सुखमानी॥
कहि दोउ भाइनकी कुशलाती। दई श्याम दीन्ही सो पाती॥
हरिको कह्यो सँदेश सुनायो। हलधरको सब कह्यो सुहायो॥
पाती बाँचि नन्द उर लाई। भेटे मानहुँ कुवँर कन्हाई॥
लिखी श्यामके करकी पाती। यशुमति लै लै लावति छाती॥
दुसह विरहकी ताप नशावै। हरिसँदेश सुनि सुनि सुख पावै॥
पुनि वसुदेव लिख्यो है जोई। उद्धव दियो नंदको सोई॥
बाँचत नयन नीरभरि आये। कहत श्याम अब भये पराये॥
पुनि वसुदेव लिखीका बाता। बोली बिलखि यशोदा माता॥
यद्यपि हरि वसुदेव कुमारा। उदर देवकी के अवतारा॥
तद्यपि [1]म्वहिं धायहुकेनाते। एकबार मोहन मिलि जाते॥

दोहा-उद्धव यद्यपि हम सबै, समझावत ब्रज लोग॥
उठत शूल तद्यपि निरखि, माखन हरिमुख योग॥

१ दुबले।

सो०–रोटी अरु नवनीत, नित मांगत उठि प्रातही ॥
कोदेहै करि प्रीत, तिन्हैं बानि जाने बिना ॥
यदपि देवगृह सब सुख भोगा । है वसुदेव सदन सब योगा ॥
हम पशुपाल ग्वाल ब्रजवासी । दही मही धन घोषनिवासी ॥
राज सुखन कोउ कोटि लडावै । तो माखन नहिं हरि सुखपावै ॥
निशिदिन रहतयहै जिय शोचू । ह्वै हैं हरिह्वां करत सकोचू ॥
एकबार गोकुल फिरि आवैं । मनकरि माखन भोग लगावैं ॥
सपति रहैं गोकुलमें नाहीं । उलटि बहुरि मधुपुरिको जाहीं ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई । उद्धव चरण रही शिरनाई ॥
तब उद्धव बोले सुखपाई । धन्य यशोमति धनि नँदराई ॥
धन्य धन्यहैं भाग्य तुम्हारे । जिनको कृष्ण प्राणते प्यारे ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखराशी । जगत आतमा सब घट वासी ॥
हैं व्यापक पूरण सब पाहीं । जैसे अग्नि काठके माहीं ॥
मतिजानो हरि हमते न्यारे । वेहैं सब जनके रखवारे ॥
दोहा–मति जानो सुत करि तिन्हैं, वे सबके करतार ॥
तात मात तिनके नहीं, भक्तन हित अवतार ॥
सो०–हम हैं सब अज्ञान, प्रभु महिमा जानैं नहीं ॥
वे प्रभु पुरुष पुरान, जन्म कर्म करिकै रहित ॥
हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने । नर समान हरिको करि जाने ॥
ज्यों शिशु आप चक्र सम फिरई । ताको फिरत जानि सब परई ॥
ताते प्रभुहि जानि हरि ध्यावो । जाते मुक्ति पदारथ पावो ॥
उद्धव जो तुम हमहिं सिखावत । हमहूं बहुत मनहिं समझावत ॥
तदपि वह मृदु रूप कन्हाई । देखे बिना रहो नहिं जाई ॥
सब ब्रजके जीवन हरि बारे । उद्धव कैसे जात बिसारे ॥
जादिन मोहन वनहिं न जाते । तादिन बन खग मृग अकुलाते ॥
नहिं अघात देखे वह मूरति । रूपनिधान साँवरी सूरति ॥

१ माखन ।

सो मृग तृण भरि उदर न खाहीं। भये रहत कृश श्याम बिनाहीं ॥
मुरली ध्वनि खग मोहे जोई। सो अब मुख फल खात न कोई ॥
जे बन सदा नवल सुखदाता। ते अब सूखे जीरण पाता ॥
कोकिल कीर मोर नहिं बोलैं। व्याकुल भये सकल बन डोलैं ॥

दोहा-जिन्हैं चरावत श्यामजू, फिरत दुखारी गाय ॥
जहँ जहँ गोदोहन कियो, सूँघत तहँ तहँ जाय ॥

सो०-सब ब्रज हिरह अधीर, युग सम बीतत पल हमैं ॥
धरैं कौन विधि धीर, उद्धव मनमोहन बिना ॥

ऐस्यहि कहत सुनत गुण हरिके। बैठे बीति गई निशि भरिके ॥
ठाढे यशुदहि रैनि बिहानी। भरि भरि लोचन ढारत पानी ॥
ब्रज घर घर सब होत बधाई। कहत कान्हकी पाती आई ॥
निपट समीपी सखा स्वहायो। उद्धवको हरि ब्रजहि पठायो ॥
कंचन कलश दूध दधि रोरी। नन्द सदन लै आवत गोरी ॥
गोप सखा सब कृष्ण उपासी। आये धाय सकल ब्रजबासी ॥
उद्धवको हरि रूप निहारी। भये सुखी सब नर अरु नारी ॥
ब्रजयुवती मिलि तिलक बनावैं। करि परदक्षिण शीश नवावैं ॥
कहत पायकै दरश तुम्हारो। भयो जन्म अब सफल हमारो ॥
बूझत कुशल सकल नर नारी। नन्द अवासँ भीर भइ भारी ॥
उद्धव लखि ब्रज प्रेम जकेसे। बोलि सकत नहिं रहे थकेसे ॥
हकबकात चहुँ दिशि सब ठाढे। उद्धव रहे मौन गहि गाढे ॥

दोहा-उद्धव की लखिकै दशा, ब्रज जन मन अकुलात ॥
क्यों उद्धव तुम कहत नहिं, राम कृष्ण कुशलात ॥

सो०-इक क्षण युग सम जाहि, हमैं सुने बिन प्रीति हरि ॥
आवन कह्योकि नाहिं, ब्रजहि कृपा करि सांवरे ॥

तब उद्धव बोले धरि धीरा। सदा कुशल हरि हलधर बीरा ॥
दियो तुम्हैं लिखि पत्र सँदेशू। अरु श्रीमुख यह कह्यो सँदेशू ॥

१ दूबर। २ पुराने। ३ घरद्वार।

करि समाधि अन्तर म्वहिं ध्यावो।गोप सखा करि मति चितलावो
हौं अनादि अविगति अविनाशी । सदा एक रस सब घटवासी ॥
निगुण ज्ञान बिन मुक्ति न होई । वेद पुराण कहत हैं सोई ॥
ताते दृढ करि यह मन धारो । सगुण रूप तजि निगुण विचारो॥
तुरत तापत्रय टरि दुखदाई । मिलि हौ ब्रह्म सुखहि सब जाई॥
उद्धव कही जबहिं यह बानी । गोपी जन सुनिकै बिलखानी ॥
इतनी दूर बसत सुनि आली । अब कछु और भये बनमाली ॥
इहां बिरहकी बात विचारी । बूड़ीं सकल मनहुँ बिनवारी ॥
मिलन आश गइ सुनत सँदेशू । उपज्यो उर अति कठिन अँदेशू ॥
फैल गई जहँ तहँ यह बानी । करत परस्पर सब अकुलानी ॥

दोहा–यह सब दोष लगै हमैं, कर्म रेखको जान ॥
प्रेम सुधा रस सानि कै, अब लिखि पठयो ज्ञान॥
सो०–इक ऐसे यह देह, रही झरसि बिरहा अनल ॥
कैलाहूतें खेह, अब आयो उद्धव करन ॥

रूप राशि जो सब सुखदाई । ब्रजके जीवन मूरि कन्हाई ॥
बिछुरे जिन्हैं इतो दुखपायो । सो अब हिरदय माहिं बतायो ॥
तिन्हैं कहत चितवो मन माहीं । वेहैं पूरण भरि सब ठाहीं ॥
जाको यत्न करतहैं योगी । निर्गुण निराकार निर्भोगी ॥
सो करि कृपा आइकै ऊधो । बोधिन मांझ बहायो सूधो ॥
अबलन कारण श्याम पठायो । व्यापक अगह गहावनआयो ॥
भयो आय बिरहन सब कोई । गायो निर्गुण निगमन जोई ॥
जो सम दृष्टि एक रस मोहन । तो कित चित्त चुरायो गोहन ॥
उद्धव यह हित लागै काहै । जोपै इष्ट कृष्ण हिय माहै ॥
निशिदिन नयन दरशहितजागत।कल नहिंपरत पलक नहिंलागत
चहुँ दिशि चितवत बिरह अधीरा।बिलखि बिलखि भरि डारत नीरा
ऐसयहु दुख प्रकटत क्यों नाहीं। जोपै श्यामहिं कहत इहाहीं ॥

दोहा–रहन देहु ऐस्यहिहमहिं, अवधि आशकी थाह ॥

फिरि चाहै नहिं पाय हौं, डारे अगुण अथाह ॥
सो०--ल्याये युवतिन योग, जो योगिनको भोग तुम ॥
हम तनुभरेउवियोग, भयो अधिकदुख श्रवणसुनि॥
एक कहत दूषण नहिं याको। यह आयो पठयो कुबिजाको ॥
वानेजो कहि याहि पठायो। सोई याने आय सुनायो ॥
अब कुबिजा जो जाहि सिखावै। सोई ताको गायो गावै ॥
कबहुँ श्याम कैहैं नहिं ऐसी। कही आय ब्रजमें इन जैसी ॥
ऐसी बात सुनैको माई। उठै शूल सुनि सहि नहिं जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो। ऐसी कैसे कहिहैं माधो ॥
जप तप संयम नेम अचारा। यह सब विधनाको व्यवहारा ॥
युग युग जीवहु कुवँर कन्हाई। शीश हमारे पर सुखदाई ॥
अच्छत पति विभूति किनलाई। कहो कहां की रीति चलाई ॥
हमरे योग नेम व्रत एहा। नंदनँदन पद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोषको लावै। यह सब कुबिजा नाच नचावै॥
जब युवतिन यह बात सुनाई। उद्धव रह्यो मौन सकुचाई ॥
दोहा-योग कथा युवतिन कही, मनहीं मन पछिताय ॥
प्रेम वचन तिनके सुनत, रहि गयो शीश नवाय ॥
सो०-तब जान्यो मन माहिं, ये गुण हैं सब श्यामके ॥
स्वहि पठयो इहि ठाहिं, याही कारणके लिये ॥
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी। गुरु करि तिन्हैं प्रथमहीं मानी॥
मन मन करि प्रणाम हर्षाने। उद्धव चले बहुरि बरसाने ॥
श्रीवृषभानु कुवँरि हरि प्यारी। और सकल ब्रज गोप कुमारी ॥
जिनके मनमोहन नँदलाला। सुनी सबन यह बात रसाला ॥
कोऊहै मधुबनते आयो। हित करि श्रीनँदलाल पठायो ॥
यूथ यूथ मिलि अति अतुराई। पिय सँदेश सुनतैं उठि धाई ॥

१ जे अक्षरका मन्त्रहोय तै हजार नित्यजपै भूतशुद्धि प्राणायामकरकै।
२ येनकेनइन्द्रियकोदमनकरै। ३ शु[illegible]चरण।

मिले उपँगसुत पंथ मझारी । रथ लखि कहत परस्पर नारी ॥
बहुरि सखी सुफलक सुत आयो । वैसोई रथ परत लखायो ॥
लैगयो प्रथमहिं प्राण हमारो अबधौं कहा काज जिय धारो ॥
तिहि क्षण उद्धव दरश देखायो । तब धीरज सबके मन आयो ॥
संगी सखा श्यामको चीन्हों । सबन प्रणाम जोरि कर कीन्हों ॥
उद्धव लखि अति भये सुखारी । मनहुँ विकल झख पायो बारी ॥
दोहा-तब उद्धव रथते उतरि, बैठे तरुकी छाहिं ॥
भई भीर गोपीनकी, अति आनँद मन माहिं ॥
सो०-अति प्रिय पाहुन जान, सुधि ल्याये ब्रजराजकी ॥
करिकै अति सन्मान, प्रेम सहित पूजे सबनि ॥
हाथ जोरि पुनि बिनय सुनाई । कहिये उद्धव निज कुशलाई ॥
बहुरि कहौ मधुवन कुशलाता । हैं वसुदेव देवकी माता ॥
कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ । अरु अक्रूर कुशल कुबिजाऊ ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलानी । नयन नीर मुख गदगद बानी
लखि गोपिनकी प्रीति स्वहाई । प्रेम मगनभे उद्धवराई ॥
पुलकि गात अँखियन जल छाई । गयो ज्ञानको गर्व हिराई ॥
पुनि पुनि यहै कहत मन माहीं । ऐसी हरिको बूझिय नाहीं ॥
ब्रज नारिन को योग पठावैं । चितते ब्रजकी प्रीति मिटावैं ॥
पुनि उद्धव उरमें धरि धीरा । बोले शोधि नयनको नीरा ॥
सब विधि कहि हरिकी कुशलाती । दीन्हीं प्रथम श्यामकी पाती ॥
लै लै करन मिलति सब पाती । कोउ नयन कोउ लावति छाती ॥
काहू लैकर शीश चढ़ाई । बूझत आपन लिखी कन्हाई ॥
दोहा-अतिहित पाती श्यामकी, सब मिलि मिलि सुख पाय
उद्धव कर दीन्हीं बहुरि, दीजै बांचि सुनाय ॥
सो०-उद्धव सबन समोध, बांचि श्यामकी पत्रिका ॥
लागे करन प्रबोध, ज्ञान कथा विस्तारिकै ॥
मोको हरि तुम पास पठायो । आतमज्ञान सिखावन आयो ॥

जाते पाप नहीं नियराई। मनते विषय देहु बिसराई॥
हरि आपहि नर आपुहि नारी। आपहि गृही आप ब्रह्मचारी॥
आपहि पिता आपही माता। आपहि पुत्र आपही भ्राता॥
आपहि पंडित आपहि ज्ञानी। आपहि राजा आपहि रानी॥
आपहि धरती आप अकाशा। आपहि स्वामी आपहि दासा॥
आपहि ग्वाल आपही गाई। आपहि गाय दुहावन जाई॥
आपहि भ्रमर आपही फूला। आपहि ज्ञान बिना जग मूला॥
राव रङ्क दूजा नहिं कोई। आपहि आप निरन्तर होई॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एकू। तैस्वइ जानों ब्रह्म विवेकू॥
यहि प्रकार जाको मन लागै। जरा मरण संशय भ्रम भागै॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै। ब्रह्मानन्द सुखहि तब पावै॥

दोहा–सुनतहि उद्धवके वचन, रहीं सबै शिरनाय॥
मानहु मांगत सुधारस, दीन्हों गरल पियाय॥

सो०–रहीं ठगीसी नारि, हरि सँदेश दारुण सुनत॥
बोलीं बहू संभारि, उद्धवसों करजोरिकै॥

भले मिले तुम उद्धवराई। भली आय कुशलात सुनाई॥
कछु यक हती मिलनकी आशा। किधो आय ताको तुम नाशा॥
इन बातन कैसे मन दीजै। श्याम विरह तनु पल पल छीजै॥
बिन देखे वह मूरति प्यारी। कुंडल मुकुट पीत पट धारी॥
उद्धव कहौ कौन विधि जीजै। योग युक्ति लैकै कह कीजै॥
छांडि अछत नँदनंदन प्यारो। कोलिखि पूजै भीति पगारो॥
हम अहीर गोरसके भोगी। योग युक्ति जानै कोउ योगी॥
उद्धव तुमसों सांच बखानै। प्रेम भक्ति हमरे मन मानै॥
हमको भजनानंद पियारो। ब्रह्मानँद सुख कहा विचारो॥
ब्यावारि व्यथा न वंध्यों जानै। ये दृग हरि दरशन सुखमानै॥
पुनि पुनि हमैं वहै सुधि आवै। कृष्णरूप विन और न भावै॥

---

१ राजा। २ दलिद्री। ३ विष। ४ बांझ।

नव किशोरको नयन निहारैं । कोटि ज्योति ताऊपर वारैं ॥
दोहा—अधर अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल ॥
क्यों बिसरत उद्धवहमैं, मोहन मदन गोपाल ॥
सो०—सजल मेघतनु श्याम, रूप राशि आनँद भर्यो ॥
मोहीं सब ब्रज बाम, और न जानत ब्रह्म हम ॥
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी । बोले बहुरो खाजि सयानी ॥
जौं लगि हृदय ज्ञान नहिँनीकैं । तौलौं सब पानीकी लीकैं ॥
बूझे बिन स्वप्नो सब होई । बिन विवेक सुख पाव न कोई ॥
रूप रेख जाके कछु नाहीं । नयन मूंदि चितवो मन माहीं ॥
हृदय कमलमें ज्योति बिराजै । अनहद्नाद निरंतर बाजै ॥
इडा पिंगला सुखमन नारी । सहज शून्यमें बसत मुरारी ॥
नासा अग्र ब्रह्मको बासा । धरहु ध्यान तहँ ज्योति प्रकासा ॥
क्रम क्रम योग पंथ अनुसरहू । इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू ॥
उद्धव हम गोपाल उपासी । ब्रह्मज्ञान सुनि आवत हाँसी ॥
जो वैं रूप रेख नहिं चीन्हा । हाथ पांव मुख नयन विहीना ॥
तौ यशुदा करि काको जायो । काको पलना घालि झुलायो ॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो । चोरि चोरि कैसे दधि खायो ॥
दोहा—कौन खिलाये गोदकरि, कहे न तुतरे बैन ॥
उद्धवताको न्याय है, जाहि न सूझै नैन ॥
सो०—नटवर वेष प्रकाश, श्री बृंदावन चंद्र तजि ॥
को खोजै आकाश, सुन्न समाधि लगायकै ॥
जानि बूझि मति होहु अयानी । मानहु सत्य हमारी बानी ॥
भजौ ब्रह्म ब्रह्म सब होहू । छांड़ि देहु ममता अरु मोहू ॥
मायानित आँधरी न बूझै । ज्ञान अनन्त नयन सब सूझै ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाषी । देखहु बूझि वेद सब साखी ॥
लगे आगि घर धूर जरावै । कोनिज गृह तजि धूर बुझावै ॥

१ नेत्र । २ ज्ञान । ३ माया ।

धरी करौ बलयोग सँवारो । भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥
योग कहा सब ओढि बिछावैं । दुसह वचन हमको नहिं भावैं ॥
अबलन आनि सिखावत योगू । हम भूली कैधौं तुम लोगू ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी । मनमें श्याम परेखो आनी ॥
ताही समय भ्रमर इक आयो । सहज निकट ह्वै वचन सुनायो॥
तासों कहि सब बात सुनावैं । उद्धव प्रति बहु व्यंग्य बनावैं ॥
वचन स्वभाव त्रिगुण अनुसारी । लागीं कहन सकल ब्रजनारी ॥

दोहा–कोऊ उद्धव सों कहत, कोइ आली प्रति बात ॥
निज निज मनकी उक्ति करि, अपनी अपनीघात॥

सो०–उद्धव भूले ज्ञान, उत्तर बोल न आवहीं ॥
रहे मौनसों मान, सुनत वचन नारीनके ॥

बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी । आय सुनोरी सब ब्रजनारी ॥
आयो मधुप देन पदवीको । लीन्हे शशी सुयश को टीको ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा । सुतपति बंधू सजन सनेहा ॥
शीश जटा अरु भस्म लगावो । सगुण छाँडि निर्गुण मनलावो ॥
आये करन लियन परछोहा । वस्ती छाँडि बतावत खोहा ॥
सुनि सखि कहत एक अरुबाला।येमधुपुरि दोउ बसत मराला ॥
वे अक्रूर और ये ऊधो । निरधारक पानी अरु दूधो ॥
जानत भली गांसकी बाता । इनही कंस करायो घाता ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई । प्रगट उजागर वंश सदाई ॥
अबकरि कृपा ब्रजहि उठिधाये । अबलनयोग सिखावन आये ॥
ऐसे एक कहत अरु ग्वाली । येदोउ इकमन सुनरी आली ॥
तब अक्रूर अबहिं ये ऊधो । ब्रज आँखेट कीन इनसूधो ॥

दोहा–वचन फाँसि फाँसि हँसि हरन, उन लियरथबैठाय॥
हर लीन्हीं इन गोपिका, हती ज्ञान शर[3] आय ॥

सो०–देखहु दीन्हीं लाय, चहुँ दिशि दावा योगको ॥

---

१ दया । २ शिकार । ३ बाण ।

भई कठिन अति आय, अबधौं का चाहत कियो॥
लागी कहन और इक ग्वारी । मधुकर जानी बात तुम्हारी ॥
तुम जो हमें योग यह आन्यो । करी भली करनीसो जान्यो ॥
इक हरि विरह रही हम जरिकै । सुनतै अधिक उठी अब बरिकै॥
तापर अब जनि लोन लगावो। भलै पराई बात चलावो ॥
दई श्याम तुम्हरे करपाती । सुनिकै बहुत सिरानी छाती ॥
कीन्हों उलटो न्याय कन्हाई । बहेजात मांगत उतराई ॥
इकहम दुसह विरह दुखपावैं । दूजे लिखि लिखि योग पठावैं ॥
मधुकर श्याम भेद अब पायो । नेहरत्न उनकहूं गँवायो ॥
पहिले अधर सुधारसप्यायो । कियो पोष बहु लाड़ लड़ायो ॥
बहुरोशिशुको खेल बनायो । गृहरचनारचि चलत मिटायो ॥
साँप कंचुकी ज्यों लपटाई । ऐसी हित की रीति दिखाई ॥
बहुरो सुरतिलई नहिं जैसे । तजी श्याम हमको अब ऐसे ॥
दोहा–करहु राजजहँजाउतहँ, लेहु अपन शिरभार ॥
दीजत सबै अशीश यह, न्हातहु खसो न बार ॥
सो०–बहुरङ्गी सुखतूल, जितहिंजात तितहीं सदा ॥
इक रंगी दुख मूल, चातक मीन पतंग गति ॥
मधुप कहा कहि तुम्हैं सुनैये । करिकै प्रीति सबै पछितैये ॥
निबहैगी ऐसे हम जानी । उनलैकै कछु औरै ठानी ॥
कारे तनुको कहा पत्यारो । मृदु मुसकनि मनहरो हमारो॥
तब काहू मन हरत न जान्यो ।हँसि हँसि सब लोगन सुख मान्यो॥
बरबहि कुबिजा कीन्हों नीको।सुनि सुनि मधुप मिटत दुखजीको॥
चंदन तनक श्याम उर धरिकै । श्रीसरबस्वपियो सब भरिकै ॥
जैसो छल हमसों हरिकीन्हो । ताको दावँ कूबरी लीन्हों ॥
बोली और एक या नारी । भाग दशा उद्धवकिन जारी ॥
बिलपत रहत सकल ब्रजनारी । कुबिजा भई श्यामकी प्यारी ॥

खात बच्यो असुरनको जोहैं। अबकुलवधू कहावत सोई॥
राज कुँवरि कोऊ हरि बरते। तो कछु हम चितमें नहिं धरते॥
बन्यो साथ अब अतिही आगर। कागा और मराल उजागर॥
दोहा-अब खेलत दोउ लाजतजि, बारहमासी फाग॥
लौंडी की डौंडी बजी, हाँसी अरु अनुराग॥
सो०-हमें देत वैराग, अपना दासी वश भये॥
चतुर चचोरत आग, उद्धव यह अचरज बड़ो॥
उद्धव हरि ऐसे काजनकारे। सुयश रह्यो त्रिभुवन माहींभारे॥
आये असुर जिते ब्रजमाहीं। मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं॥
विष जल सों सब ग्वाल जिवाये। कालीनाग नाथिलै आये॥
इन्द्रमान दलि ब्रजहि बचायो। गोवर्द्धन कर बाम उठायो॥
जब विधि बालक बत्स चुराये। करिकै यत्न आप उपजाये॥
धनुष तोरि गजमल्ल सँहारो। मल्लन सहित कंस नृप मारो॥
कीन्हों उग्रसेन को राजा। भये सकल देवनके काजा॥
ऐसी कीरति करि सब नासी। कीन्ही नारि कूबरी दासी॥
कहँ श्रीपति त्रिभुवन सुखदायक। अखिल लोक ब्रह्मांडके नायक॥
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा। करत निरंतर जाकी सेवा॥
उद्धव कहाँ कंसकी दासी। यह सुनि होत सकल ब्रजहाँसी॥
कत मारत यदुकुल को लाजन। अब करिकै हरि ऐसे काजन॥
दोहा-गावत जग सब गीत अब, वा चेरीके काज॥
उद्धव यह अनुचित बड़ो, चेरीपति ब्रजराज॥
सो०-उद्धव कहियो जाय, अबहूं चेरी परिहरैं॥
यह दुख सह्यो न जाय, सवति कहावति कूबरी॥
बोली और बाम यक ऐसे। उद्धव हरि रीझे धौं कैसे॥
यक चेरी अरु कूबर पाछे। सोवत नहीं उतानें आछे॥
कुटिल कुरूप जाति कुल हीनी। ताको श्याम सुहागिनि कीनी॥

१ हंस। २ सम्पूर्ण।

कहा सिद्धि धौं कूबर माहीं । हमको लिखि पठवत क्यों नाहीं ॥
हमहूं कूबर यतन बनावैं । चलिकै टेढी चाल दिखावैं ॥
कहैं श्याम सोई अब कीजै । लोक लाज भामिनि तजिदीजै ॥
होहिं आय गोकुलके बासी । तजैं निगोडी कुबिजादासी ॥
मधुकर जो हरि हमैं बिसारयो । गोपीनाथ नाम क्यों धारयो ॥
जो नहिं काज हमारे आवत । तौ कलंक कत हमहिं लगावत ॥
जोपै प्रीति करी कुबिजाकी । तौ अब बिरद बुलावहिं ताकी ॥
करतहि सुगम सबन करि पाई । प्रीति निबाहन अति कठिनाई ॥
अब परतीति कौन बिधि माने । क्षणमें होगये श्याम बिराने ॥
दोहा–ज्यों गजको रद त्योंकरी, हरि हमसों पहिचान ॥
दिखरावनको आनही, काज करनको आन ॥
सो०–[illegible]फीरा विष खात, छांड़ि छुहारा दाख फल ॥
मन मन कीजै बात, उद्धव कहिये काहिसों ॥
उद्धव कहि कह तुम्हैं सुनावैं । जैसे हरि बिन हम दुख पावैं ॥
बरु रहते मथुरा घनश्यामा । कित आये यशुदाके धामा ॥
कत करि गोप वेष सुख दीन्हों । कत गोबर्द्धन कर पर लीन्हों ॥
कतहि रासरसरचिवन माहीं । किये विविध सुख वरणि न जाहीं
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई । अब मन धरी इती निठुराई ॥
जबते ब्रजतजि गये बिहारी । तबते ऐसी दशा हमारी ॥
घटे अहार विहार हर्ष हिय । भोग सँयोग आश आवन जिय ॥
बाढ़ी निशा बलय आभूषण । लोचन जल अंचल प्रति अंजन ॥
उर चिन्ता कंचुकी उसासा । जीवन रह्यो अवधिकी आसा ॥
बीतत निशा गनत नभतारे । दिवस तकत पथ लोचन हारे ॥
रही नहीं सुधि बुधि मन माहीं । बिरहानलतनु जरत सदाहीं ॥
सुमिरि सुमिरि के हरि गुणग्राम। दुख अधिकात सुहात न धामा ॥
दोहा–कहँ लगि कहिये निज व्यथा, अरु हरिकी निठुराय ॥

१ दांत । २ नेत्र ।

कुल स्वभावसों डसि भजिजाहीं। यद्यपि तिन्हैं लाभ कछुनाहीं॥
जलद¹ सलिल² बर्षत चहुँपाहीं। भरत सकल सरसरिता माहीं॥
निशि दिन ताहि पपीहाध्यावै। भौंवरि दैदै प्रीतिबढ़ावै॥
एक बूंदको त्यहि तरसावैं। भ्रमर मालती सों मन लावै॥
जब रसहीन होत वा माहीं। निर्मोही तजिजाहिं पराहीं॥
सुनियत कथा काग पिककेरी। अंडनसेव करावत हेरी॥
बड़ेहोत निज कुल उड़जाहीं। बैठत निजमाता पितुपाहीं॥
ये सब कारे हरि पर वारे। सबहिनमें अतिही अनियारे॥
सबकी उपमा अरु गुण योगू। न्यायदेत पटतर कवि लोगू॥
अलिकुल अलक कोकिलाबानी। भुज भुजंग तनु जलद बखानी॥
समझी बात आज यहसारी। खानि कपटकी कुंजबिहारी॥

दोहा—मृदु मुसकनिविष डारिकै, गये भुजँग लौं भाग॥
नंद यशोदा यों तज्यो, ज्यों कोकिल सुत काग॥

सो०--गये प्रीति यों तोर, जिमि अलि रस लै सुमन सों॥
धनले भये कठोर, चातक सों हम रटत सब॥

उद्धव सुनो एक उपखानो। बाजी ताँत राग पहिंचानो॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी। क्योंनहिं दुखपावैं ब्रजनारी॥
कहत सुनत लागतहौ ऐसे। मीठो कहत गरलसों जैसे॥
पायो छोर लपटको तबहीं। लिखि आयो निर्गुण पद जबहीं॥
योगतहां अधिकारहि पाये। क्योंनहिं तूंबा यहां बोवाये॥
सुनिलीजे उद्धवजी हमसों। राज काज चलिहै नहिं तुमसों॥
करिये पोष आपनी काया। आये इतै करी बड़ि माया॥
जो तुमहै हमरेहित आन्यो। सोहम शिरचढाय सुखमान्यो॥
सुनिकै सब ब्रजलोग अनंद्यो। नरनारी परच्यो करवंद्यो॥
अब सँभारि अपनो बहलीजै। जिन तुम पठये तिनहीं दीजै॥
उनहिंनमें यह योग समैहै। इहां न काहूपै निरवैहै॥

१ मेघ २ पानी।

हम व्रज बसत अहीर गँवारी । योग योगकी नहिं अधिकारी ॥
दोहा–अंध आरसी बधिर ध्वनि, रोग ग्रसित तनु भोग ॥
उद्धव तिनको न्यावहै, हमैं सिखावत योग ॥
सो०–हमैं योग जो योग, सोई योग मिलाइये ॥
कहे न जानै रोग, कहा कीजिये वैद्यसों ॥
उद्धव जाउ भले तुम ओऊ । अपने स्वारथके सब कोऊ ॥
निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो । कौने याव्रज तुम्हैं पठायो ॥
और कह्यो संदेशो कोऊ । कहि निबरे अब सुनिये सोऊ ॥
तब अक्रूर आय वह कीन्हों । सगरे व्रजको सुख हरि लीन्हों ॥
तुम आये उद्धव यहिठाटी । अन्न छुडाय खवावत माटी ॥
जोपै हती ज्ञानकी गाथा । तौकत रास नचे व्रजनाथा ॥
मन हरिलीन्हों वेणु बजाई । आधी निशि सबनारि बुलाई ॥
रसलीला वृन्दावन ठानी । अब मथुरा ह्वै बैठे ज्ञानी ॥
तब ममता क्योंनहिं उरधारी । मातुल[1] मार्यो कंस पछारी ॥
बूझि परे नीके सब कोई । हुती कछुक आशा सोउ खोई ॥
पढे सबै एकै परिपाटी । अधिक एकते एक न घाटी ॥
हम बावरी चलीनहिं त्योंहीं । ज्यों जगचलत आपनी गौंहीं ॥
दोहा–मनकी मनहीं में रही, करिये कहा विचार ॥
हम गुहारि जितते चहत, तितते आई धार ॥
सो०–जानतहै सब कोय, जैसी तुम हमसों करी ॥
हम सहिलीनी सोय, पावोगे अपनो कियो ॥
उद्धवजी पूंछत हम तुमको । जो हरियोगसिखावत हमको ॥
तौ करि कृपा आपकिन आवैं । योग ज्ञान कहि प्रगट जनावैं ॥
जो उपदेशी निकट न आवै । तौ श्रोताक्योंह्व विधि मनलावै ॥
अबलग सुनी न काहू आनन[2] । मंत्रदेन लागे बिन कानन ॥
जबलगि युक्ति न सिद्ध बतावै । तब लगि साधक कैसे पावै ॥

१ मामा । २ मुख ।

हम गोकुल वे मथुरा माहीं। खेती होत सँदेशन माहीं॥
जोपै करी श्याम यह माया। करैं और तो इतनी दाया॥
दरशन प्रथम दिखावैं आई। करहिं पवित्र चरण पखराई॥
योग जानिकै नगर तियागैं। सघन कुंजवन मन अनुरागैं॥
आसन मौन नेम आचारा। जप तप संयम व्रत व्यवहारा॥
योग अंग कहियतहैं जेते। बनहींमें बनिआवैं तेते॥
करि प्रबोध कर माथ छुवावैं। होहिं सिद्ध फल तौ सुखपावैं॥
दोहा–तबतो खेलत सौंह करि, राख्यो कछु न सुहाय॥
अब यह योग मिल्यो कहां, उद्धव कहियो जाय॥
सो०–हमको निर्गुण ज्ञान, जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं॥
लिख पठयो निर्बान, चाटैं सहत लगायकै॥
बोली और एक रिस मानी। मधुकर समुझ कहत किनबानी॥
परमधुपिये जात नहिं दीजै। सुख देखेको न्याय न कीजै॥
बीचहि परे सत्यसो भाखै। राव रंककी शंक न राखै॥
सूझ न परत दिवस अरु राती। बात कहत हौ ठकुर सुहाती॥
व्रज युवतिनको योग सिखावत। वृषभ जोति सुरभीनगनावत॥
१कृतघ्न २लंपट व्यभिचारी। कीरति इहै आनि विस्तारी॥
हम जान्यो अलिहै रस भोगी। कतसीख्यो यह योग कुयोगी॥
जे भयभीत होहिं लखि माला। ते क्यों छुवैं भयानक व्याला॥
क्यों शठ बकत छांड़ि लज्जाडर। कहँ अबला कहँ देश दिगम्बर॥
साधु होयतो उत्तर दीजै। कहातोहिं कहि अपयश लीजै॥
भई बायसी देखियत तोहीं। इन बातन डर लागत मोहीं॥
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै। तापाछे औरन शिख दीजै॥
दोहा–कत भ्रम करि बकबक करत, कौन सुनत तुव बात॥
बन कारो यों होतहै, उठिकिन घ्यांत जात॥
सो०–देखि मूढ चित चाय, कहँ परमारथ कहँ विरह॥

१ उपकार न माननेवाला। २ कपटी।

राज रोग कफ जाय, ताहि खवावतहौ दही ॥
बोली और एक कोउ नारी। उद्धव सुनिये बात हमारी ॥
प्रथमहिं ब्रजकी कथा विचारो। पाछे योग सिद्ध विस्तारो ॥
जाकारण पठये हैं माधो। सोविचार कछु जियमें साधो ॥
केतिक बीच विरह परमारथ। देखौ जियमें समुझि यथारथ ॥
परम चतुर हरिके निज दासा। रहत सदा संतनके पासा ॥
जल बूडत पुनि पुनि अकुलाई। कहा फेन पकरत हौ धाई ॥
सुंदर श्याम कमलदललोचन।सब विधि सुखद सकल दुख मोचन॥
ब्रजको जीवन नंद दुलारो। कैसे उरते जात निसारो ॥
योग युक्ति किहिकाज हमारे। वाकी मुरली पर सब वारे ॥
तुम निर्गुणकी कीरति गाई। करैं कहा सो बहुत बडाई ॥
अति अगाध पैहैं नहिं पारा। मन बुधि कर्म सबनके सारा ॥
रूप रेख वपु वर्ण न जासों। कैसे नेह निबाहै तासों ॥

दोहा-बिनहीं तोय तरंग अरु, बिन चेतन चतुराय ॥
अबलों ब्रजमें नहिहुती, मधुप करी तुम आय ॥
सो०-कहोविविध विधकोय, नहिंसुहातनँदनंदबिन ॥
अन्नक्षुधारत जोय, स्रक् चंदन क्यों सुखलहै ॥

लागी कहन और यक ग्वाली। कितबेकाज कहत है आली ॥
कहिये त्यहि जो होय विवेकी। यह अलि[1]निजबातन को टेकी ॥
सकियासों को मूड पचावै। फटकै भुसी हाथ कह आवै ॥
तजि रसगेह नेह हरि पीको। सिखवत नीरस निर्गुण फीको॥
देखत प्रगट नयन कछु नाहीं।ज्योति ज्योति खोजत तनु माहीं॥
श्रवण सुनत जाकी मुरली धुन। भूलि रहे शिवसे योगी जन ॥
सो प्रभु भुज ग्रीवापर डारी। बन बन लाज छुड़ाय बिहारी ॥
रास विलास विविध उपजायो। संग हमारे नाच दिखायो ॥
लोक लाज कुलकानि नशाई। हम सब तिनके हाथ बिकाई ॥

१ ज्ञानी। २ भौंरा। ३ हठी।

काढि सुहाग प्रेम को हेली । बोवत योग जहरकी बेली ॥
चौपद होय ताँहि समुझैये । कौन भांति षटपदाहि सिखैये ॥
लागै कौन कहे अब याके । छाँछौ दूध बराबर जाके ॥
दोहा–हम बिरहिनि बिरहा जरी, जारी और अनंग ॥
सुखतौ तबहीं पाइहैं जब नाचैं फिर संग ॥
सो०–छाँड़ि जगत उपहास, दृढ व्रत कीन्हों श्यामसों ॥
सोई हमैं सुपास, और मुक्ति चाहैं नहीं ॥
सुनरे मधुप कुटिल कुविचारी । ये व्रज लोग कृष्ण व्रत धारी ॥
सुन्दर श्याम रूप रस साने । श्रीगोपाल तजि और न जाने ॥
जो तजि श्याम औरको ध्यावैं । व्यभिचारीते भक्त कहावैं ॥
विद्यमान तजि सुरसरि तीरा । चाहत कूप खोदिकै नीरा ॥
सुनै कौन यह सीख तुम्हारी । अति अनन्य मण्डली हमारी ॥
योग मोट तुम शिर धरि आनी । सो नहिं व्रजवासिन मनमानी ॥
इतनी दूर जाहु लै कासी । चाहत मुक्ति तहांके वासी ॥
हम कह करैं मुक्तिलै रूखी । अबला श्यामसंगकी भूखी ॥
ओसन प्यास कौन विधि जाई । जबलगि नीर न पियैं अघाई ॥
ऐसी बात कहौ अलि हमसों । तजहु शोच मिलिहैं हरि तुमसों ॥
हेतु हमारे जो पशु धारे । तौ हितकारि दुख हरो हमारे ॥
करहु सो यत्न श्याम जिमि आवैं । प्रगट देखि छबि हम सुख पावैं
दोहा–सत्य ज्ञान औ ध्यान अलि, सांचो योग उपाय ॥
हमको सांचो नन्दसुत, गर्ग कह्यो समुझाय ॥
सो०–वश कीन्ही मृदुहास, हम चेरी नँदनंदकी ॥
नख शिख अंग बिलास, तिनहीं देखे जीजिये ॥
इतनेहीं सों काज हमारो । मिलिहि फेरि व्रजनंददुलारो ॥
और अनेक उपाय तिहारो । राज करहु अलि हमहिं न प्यारो ॥

१ कामदेव । २ लम्पट । ३ गंगाजी । ४ कुवाँ । ५ श्रीकृष्णउपासन।सि-वाय और किसीकी भक्ति उरमें न आनेवाली मण्डली । ६ पानी । ७ कारण ।

तुम तो मधुप प्रीति रस जानो । हम काजै कत छीत अयानो ॥
सर्व सुमनमें फिरि फिरि आवत । क्यों कमलनमें आप बँधावत ॥
ज्यहि बल काठ फोरि घर करहू । क्यों न कमल दल टारत तबहू ॥
रँगे श्याम रँग जे पहिलेसे । चढत और रँग तिनपर कैसे ॥
पारस परसि जो लोह सुहायो। सो किमि बहुरि चुँबक लपटायो ॥
सुनी जिनन मुरली ध्वनि कानन । सो किमि सुनत किंगरी तानन ॥
बसे जासु उर सगुण कन्हाई । कैसे निर्गुण तहां समाई ॥
यह मन श्याम स्वरूप लुभानो । कहा करैं लै योग बिरानो ॥
सिंह सदा आमिष रुचि मानै । तृण न भखै पुनि तजै परानै ॥
हरि तजि हमैं न और सुहाई । कोटि भांति कोउ कहै बुझाई ॥

दोहा–द्वैदग रूप बिराटके, कहियत एक समान ॥
ताहू में हित चन्द्रमा, नहीं चकोरहि भान ॥
सो०–लोचन रूप अधीन, सगुण सलोने श्यामके ॥
क्यों सुख पावै मीन, जल बिन डारि दूध में ॥

नहिं मानत ये कथन हमारे । सुख न लहत बिन कान्हनिहारे ॥
*भये श्याम छबि जलके मीना । मुरली ध्वनिके मृग आधीना ॥
अलि लोभी पंकज पद करके । कोकि कोकि नद द्युति दिन करके ॥
बदन इन्दुके कुमुद चकोरा । तन घन छबिके चातक मोरा ॥
वहै रूप परगट जब देखैं । जीवन सफल तबहिं करि लेखैं ॥
बिगरि परे मन मधुप हमारे । ज्ञान वचन नहिं सुनत तुम्हारे ॥
ललित अनङ्ग रूप रस सानि । खरे चकित तातें जग जाने ॥
श्वान पूंछ लौं समनहिं होई । जो कोउ यत्न करै पचि कोई ॥
सो मन गयो श्यामके साथा । सुनै कौन अब निर्गुण गाथा ॥
एकै मन एकै वह मूरति । अटक्यौ ताहि न तजौ महूरति ॥
जो होतो दूजो मन कोऊ । तो हम लै धरतीं तहँ सोऊ ॥

१ मांस *यहांपर कृष्णछवि अरु गोपियोंके नेत्रोंकी एकता है जैसे कृष्णकी छवि जल गोपियोंके नेत्र मीन।

उद्धव हरि हैं ईश हमारे। ते अब कैसे जात बिसारे ॥
दोहा–योग दीजिये लै तिन्हैं, जिनके मन दशशीश ॥
छित डारत निर्गुण इतै, उद्धव ब्रजमें खीश ॥
सो०–गुण कर मोही श्याम, को निर्वाही निर्गुणहि ॥
किये जन्मके काम, क्यों तजिये नँदनन्द अब ॥
कहत मधुप तुम बात सुहाई। कहतहि सुगम करत कठिनाई ॥
प्रथम अग्नि चन्दन सी जानी। सती होन उम है सुखमानी ॥
ताकी तपत और सियराई। कहै कौन पाछे पुनि आई ॥
पैठत सुभट यथा रण जाई। कुसुमलता सम खड्ग सुहाई ॥
दियो अपनपौ शूर उदारा। को अब करै तासु निरवारा ॥
ये मनमोहन सों उरझाने। दुख सुख लाभ हानि नहिं जाने ॥
प्रेम पंथ सूधो अति ऊधो। मति निर्गुण कंटक लै रूंधो ॥
नेह न होइ पुरानो क्योंहीं। सरित प्रवाह नयोनित ज्योंहीं ॥
निरखहिं आनँद रूप छकी जल। रवि प्रतीति नहिं मान चढै थल
बूडत उमहिं सिन्धुके माहीं। येतउनीर न पियत अघाहीं ॥
दिन दिन बढ़त कमल दल जैसे। हरि छबि दृगन लालसा तैसे ॥
बसे गुपाल हृदय अम्बुज अलि। निकसत नाहिं सनेह रहे रलि॥
दोहा–योग कथा अब मति कहौ, उद्धव बारहिं बार ॥
भजै आन नँदनन्द तजि, ताकी जननी छार ॥
सो०–यहै हमारे भाव, अब कोऊ कछुवै कहौ ॥
जैबो होय सुजाव, रही प्रीति नँदलालकी ॥
रहै प्राण तनु प्रेमहि खोई। कौन काज आवै पुनि सोई ॥
बिना प्रेम शोभा नहिं पावै। निशा गये जिमि शशि न सुहावै
बिना प्रेम जग खग बहुतेरे। चातक यश गावत सब टेरे ॥
प्रेमसहित मीननकी करणी। नयन अछत देखहु जग वरणी ॥
हमते प्रेम जात नहिं दीन्हो। दुहूं भांति हम तो यश लीन्हो ॥

१ सहज। २ तरवारि। ३ जैसे कमलमें भ्रमर।

मिलैं श्याम तो अधिक स्वहायो । नातर सकल जगत यश गायो ॥
कहँ हम यह गोकुलकी ग्वारी । वर्णहीन घट जाति हमारी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा । बैठे पाँति हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान[1] अतीता । सो ब्रज भये हमारे मीता ॥
तिन्हैं संगलै रास बिलासी । मुक्ति इतै पर काकी दासी ॥
यह सुनि बोलि उठी इक आनै । मेरो बुरो न कोऊ मानै ॥
रसकी बात रसिकही जानै । निरस कहा रसकी पहिचानै ॥
दोहा–दादुर[2] कमलन ढिग बसत, जन्म मरण पहिचानि ॥
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत आनि ॥
सो०–जानै कहा मिठास, गूंगो बात सवादको ॥
मानहुँ काट्यो घास, इनसों कहिबो प्रेम रस ॥
धनि धनि उद्धव तुम बड़भागी । हरिसों हित नहिं मन अनुरागी ॥
पुरइन बसत यथा जल माहीं । जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं ॥
गागर नेहनीरमें जैसे । अपरस रहत न भीजत तैसे ॥
पैरत नदी बूंद नाहिं लागी । नेक रूपसों दृष्टि न पागी ॥
हम सब ब्रजकी नारि अयानी । ज्यों गुडसों चींटी लपटानी ॥
अब कासों वह लगत बखानैं । लागे बिन उद्धवको जानैं ॥
हृदय दहै नित शोचत रहिये । पशु वेदन ज्यों मन मन दहिये ॥
सबते पीर लगनकी भारी । यत्न रहित दुख सुखते न्यारी ॥
मंत्र यंत्र उपचार न पावैं । वेद कहांलगि ताहि बतावैं ॥
घायल पीर जानिहै सोई । लाग्यो घाव जाहिके होई ॥
प्रेम न रुकत हमारे बूते । गज कहुँ बँधत कमलके सूते ॥
कैसे विरह समुद्र सुखाई । योग अग्निकी तनकलुकाई ॥
दोहा–यद्यपि समुझाये बहुत, हम करि मनहिं कठोर ॥
तदपि न कबहूं भूलई, उद्धव नन्द किशोर ॥
सो०–क्यों सुख पावै प्रान, पलक लगत तब सहतनाहिं ॥

१ ध्यानमें न आवें । २ मेढक ।

लागे वर्ष बिहान, अब बिन देखे श्यामके ॥
तब षट्मास रासके माहीं । एक निमिष सम जाने नाहीं ॥
अब औरै गति बिना कन्हाई । एक एक पल कलप बिहाई ॥
तब घन वन हरि संग बिहारी । अब ब्रजमें यह दशा हमारी ॥
ज्यों देवी उजारि पुर माहीं । को पूजै कोउ मानत नाहीं ॥
कहत और यौवन अब ऐसो । चित्र अंधेरे घरको जैसो ॥
नवशशि अति सीरो अब तातो । भयो सकल सुख कारि तनु हातौ ॥
कतकारि प्रीति गये मनभावन । जासों हम लागी दुख पावन ॥
फिरि फिरि यहै समुझि पछिताहीं । कह्यो हतो आवन हम पाहीं ॥
याही आश प्राण तनु माहैं । बारेक बहुरि मिल्योही चाहैं ॥
उद्धव हृदय कठोर हमारे । फटै न बिछुरत नंददुलारे ॥
हमते भली जलचरी होई । अपनो नेह निबाहत जोई ॥
जो हम प्रीति रीति नहिं जानी । तो ब्रजनाथ तजी दुख मानी ॥

दोहा-कहँ लगि कहिये आपनी, उद्धव तुमसों चूक ॥
हम ब्रजबास बसी मनहुँ, सबै दाहिने शूक ॥

सो०-उद्धव कह्यो न जाय, मोहन मदन गोपालसों ॥
नयनन देखो आय, एक बार ब्रजकी दशा ॥

बोली और एक ब्रजबाला । उद्धव भली करी गोपाला ॥
अब ब्रज कबहूं आवैं नाहीं । मथुरहि रहैं सदा सुखमाहीं ॥
इहां चली अब उलटी चाली । देखत दुख अइहैं वनमाली ॥
तपत इन्दु[1] सूरजकी भांती । चंदन पवन सेज सब ताती ॥
भूषण बसन अनेल[2] समदागै । गृहवन कुंज भयावन लागै ॥
जिततितमारै द्रुमनकी[4] डारन । धनुशरलिये करतहै मारन ॥
हमतौ न्याय सहैं दुखयेतो । ब्रजवासिनी ग्वाल जड तेतो ॥
वेप्रभु भोग सँयोग भुवाला । क्यों सहिहैं कोमल तनु ज्वाला ॥
उद्धव कह्यो सँदेश सिधारो । जान्यो सब परपंच तिहारो ॥

१ चन्द्रमा । २ अग्नि । ३ कामदेव । ४ वृक्ष ।

बातन कहा हमैं भरमावत । जलमथि सुन्यो न माखन आवत ॥
सगुण निकट दर्शतहैं जिनको । निर्गुण ओट बतावत तिनको ॥
जोपै निज तुम यहै बखानो । प्रभु पूरण सबमें समजानो ॥
दोहा-तो तुम कापै करतहौ, उद्धव आवागौन ॥
को नेरे को दूरहै, वहां कौन ह्यां कौन ॥
सो०-खोजहु पावत नाहिं, योगी योग समुद्रमें ॥
इहां बँधावत बाहिं, सो यशुदाके प्रेम वश ॥
हम गुवाल गोकुलके बासी । गोपनाम गोपाल उपासी ॥
राजानंद यशोदा रानी । यमुना नदी परम सुखदानी ॥
गिरिवर धारी मित्र हमारे । वृन्दावन मिलि संग विहारे ॥
अष्ट[1] सिद्धि नवै[2] निधि सब दासी । इहां नयोग विराग उदासी ॥
वहै प्रेम रसकी सब भूखी । कीजै कहा मुक्तिलै रूखी ॥
निर्गुण कहा प्रेमरस जानै । उपदेशहु जे लोग सयानै ॥
हम ऐसेहि अपनी रुचिमाने । रहिहैं विरह वायु बौराने ॥
निशिदिन सपने सोवत जागे । वहै श्याम छबिसों दृगपागे ॥
बालचरित्र किशोरी लीला । सुधा समुद्रसकल सुखशीला ॥
सुमिरि सुमिरि सोई सुखग्रामा । रटिरटि मरिहैं माधव नामा ॥
विरहा मधुप प्रेमको करई । ज्योंपट पुटत रंगगहि धरई ॥
ज्योंवट प्रथम अनल तनु तावै । बहुरि उमहि रस भरि सुखपावै ॥
दोहा-सम्मुख सरसहि सूर जब, रवि रथ वेधत जाय ॥
प्रथम बीज अंकुरनमहि, पुनि फल फरत अघाय ॥
सो०-को दुख सुखहि डेराय, कृष्ण प्रेमके पंथ चलि ॥
और न कछू उपाय, उद्धव मीनन नीर विन ॥
बोलीएक सखी सुनि लीजै । अपने काज कहा नहिं कीजै ॥
दिनाचारि यहहू सब करिये । जो हरिमिलैं योगहू धरिये ॥

१ अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ।
२ महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व,

जटा बनाय भस्म तनु साजैं। मूंदेरहैं नयन बिन आँजैं॥
सिंगी दंड लेहिं मृगछाला। पहिरैं कंथा सेली माला॥
धरिधीरज सन्मुख शर सहिये। भाजे आज उबार न लहियै॥
बिरह ज्ञान सिख बिनहीं काजैं। मरियतहैं यह दुसह दुराजैं॥
एकसखी ऐसे कहदीन्हों। उद्धव तुम जु कह्यो सब कीन्हों॥
नयन मूंदिकै ध्यान लगायो। इतउत मनको बहुत चलायो॥
उरझि रह्यो नँदलाल प्रेमवश। नेक न चलत गयो गाडे फँस॥
जोहरि मिलत जानिहू परते। तोले योग शीशपर धरते॥
पहिले देहु तिन्हहिं फिरजाई। जिनपठये तुम इतहि सिखाई॥
लेहिं न वेऊ जान हमारे। देखियत माथे परेउ तुम्हारे॥

दोहा–भूले योगी योग जिहिं, तुमसे कियो बखान॥
जान्यो गयो नपंच मुख, ब्रह्मरंध्र तजि प्रान॥

सो०–हम उर जाको ध्यान, हमहिं दिखावहु ज्योतिसो॥
निपटहि छूछो ज्ञान, उद्धव कहा सुनावहू॥

उद्धव जबते श्याम निहारे। तबते योगी नयन हमारे॥
शिखासीख गुरुजनकी टारी। धरेउ जतेऊ लाज उतारी॥
पलक वसन घूंघुट गृह त्यागे। दिशा दिगम्बर मन अनुरागे॥
सजत समाधि रूप टकलाये। भये सिद्ध नाहिं डिगत डिगाये॥
ताके बीच विघ्नके कर्ता। पचि पचि रहे मातु पितु भर्त्ता॥
अब ये और योग नहिं जाने। वही श्याम छवि साधुभुलाने॥
भये कृष्ण मय नयन हमारे। नहीं कृष्ण हम ते कहुँ न्यारे॥
हम सों कहत कौनकी बातैं। गयो कौन तजि हम को घातैं॥
मथुरा जाय रजक[1] किन मारेउ। धनुष तोरि किन द्विरद[2] पछारेउ
किन मल्लन मथि कंस बहायो। उग्रसेन किन बन्दि छुड़ायो॥
कों वसुदेव देवकी जाये। तुम किनके पठये ब्रज आये॥
कुंडल मुकुट गुंज उरराजैं। गोकुल यशुदा नंद विराजैं॥

१ धोबी। २ गजकुवलिया।

दोहा–को पूरण को अलख गति, को गुण रहित अपार॥
करत वृथा बकवादकत, यहि ब्रज नन्दकुमार ॥
सो०–जात चरावत धेनु, दिन उठि ग्वालन संग मिलि॥
मधुर बजावत बेनु, आवत संध्याके समय ॥
जिन उद्धव मथुरा तब देख्यो । ब्रजबसि जन्म सफल करि लेख्यो
लेहौकहा जाय प्रभु तामें । परिहौ जाय राज्य बिपतामें ॥
निरख्यो गोकुल बाल कन्हाई । घरघर माखन खात चुराई ॥
जन्म कर्म गुण गावो नीके । परम मधुर सुखदायक जीके ॥
नन्दराय उत्सव किमि कीन्हों । कैसे दान द्विजनको दीन्हो ॥
कैसे गोपी जन सुनि धाई । कैसे पट भूषण पहिराई ॥
कैसे गोप ग्वाल सब आये । नृत्यत भेष बिचित्र बनाये ॥
कैसे दधिकी कीच मचाई । ब्रज सब भई अनन्द बधाई ॥
बाल बिनोद कौन विधि कीन्हो । कैसे गोवर्द्धन कर लीन्हो ॥
कैसे दधिको दान चुकायो । शरद रास सुख किन उपजायो॥
यह रस प्रेम कथा चित लावो । अपनी नीरस कथा बहावो ॥
निगमनेति निर्गुण को ध्यावै । क्यों नहिं प्रगट दरश चितलावै॥
दोहा–भावतहै जो कृष्णको, योग सो हम सों देखि ॥
उद्धव सब तनु खेहकरि, सुमति होय करि पेखि ॥
सो०–सब अँग करिकै कान, बैठो मनहिं बटोरिकै ॥
तजहु ज्ञान अभिमान, तौ यह अर्थ सुनावहीं ॥
नहीं जटा नहिं भस्मलगावैं । रूंधैं श्वास न शृंग बजावैं ॥
नहीं वेद नाहिं पढहिं पुराना । शम दम नेम न संयम ध्याना ॥
हम श्री गोकुल चन्द्र अराध्यो । प्रेम योग तप तिन सों साध्यो ॥
मन वच कर्म और नहिं जानैं । लोक वेद दुख सुख भ्रमभानैं ॥
मानपमान निंद कुल करसी । अग्नि अंचै गुरु जन बच सरसी ॥
हनातितापचहुँ दिशि तनु देखो । पियत धूम उपहास विशेषो ॥

१ बालक्रीडा ।

करि सुप्रेम वंदन जगवंदन। कर्म धर्म कामना निकंदन ॥
हम जु समाधि प्रीति बानिकहरि। अंग माधुरी हृदय रही धरि ॥
निरखत रहत निमेष नत्यागत। यह अनुराग योग नित जागत ॥
सगुण रूप रंग रस रागे। भ्रुकुटि नैन नैनन लगि लागे ॥
हँसनप्रकाश सुमुख कुंडल द्युति। शशि अरु सूर देखियेऊद्युति ॥
मुरली अधर मधुर सुर गाजै। शब्द अनाद स्वई ध्वनि बाजै ॥
दोहा-वर्षत रस रुचि मन अचै, रह्यो परम सचमान ॥
अति अगाध सुख संगको, पद आनन्द समान ॥
सो०-मंत्र दियो रतिऐन, भजन ज्ञान हरिको हमैं ॥
गुरूकरैं अब कौन, कौन सुनै फीको मतो ॥
उद्धव ब्रजकी रीति निहारी। भये विवश निज नेम बिसारी ॥
लाग्यो कहन धन्य ब्रजबाला। जिनके सर्वसमदन गोपाला ॥
धन्य धन्य यह प्रेम तुम्हारो। भक्ति सिखाय मोहिं निस्तारो ॥
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो। धन्य कृष्णपद दृढ व्रत धारो ॥
मैं जड कीन्हो और उपाई। अब तुम दरश भक्तिनिजपाई ॥
उद्धव आयो योग सिखावन। सीखे प्रेम भक्ति अति पावन ॥
भये मग्न रस प्रेम विशाला। लागे गावन गुणगोपाला ॥
लोटत कबहुँ कुंजमें जाई। कबहूं विटपन भेंटत धाई ॥
कबहूं ब्रज रज शीश चढावैं। कबहूं गोपिन पद शिर नावैं ॥
पुनि पुनि कहत धन्य ब्रज नारी। धन्य ग्वाल गैया वनचारी ॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन। धन्य धाम वृंदावन पावन[1] ॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो। कोहौंकित आयों सुधि भूल्यो ॥
दोहा-उद्धव मन आनन्द अति, लखिके प्रेम विलास ॥
आयोहौं दिन दोयको, बीति गये षटमास[2] ॥
सो०-जब उपज्यो उरशोच, वचन कृष्णके सुरति[3] करि ॥
मनमें भयो सकोच, बोल्यो हो प्रभु बेगम्वहिं ॥

१ पवित्र। २ छःमहीना। ३ स्मर्ण।

तब उपंगसुत रथहि पलान्यो। मथुरा चलबेको अतुरान्यो ॥
उद्धव जात गोपिकनजानी। आईं धाय सकल अकुलानी ॥
तब उद्धव सबको शिरनाई। हाथ जोरिकै विनय सुनाई ॥
अब म्वहिं देवि अनुग्रह कीजै। जाउँ कृष्णपै आयसुदीजै ॥
मैं सेवक जैसो उन केरो। त्यों जानिये आपनो चेरो ॥
कह्यो जुमैं कछु तुमसों आई। कृष्ण कहेते करी ढिठाई ॥
सो अपराध क्षमा अब कीजै। ह्वै प्रसन्न यह आशिष दीजै ॥
जासों कृष्ण करैं म्वहिं दाया। रहै प्रीति तुम चरण अमाया ॥
करों बडाई कहा तुम्हारी। ऐसी विमल न बुद्धि हमारी ॥
कृष्ण सदा तुम्हरो यश गावैं। जाको अंत वेद नहिं पावैं ॥
कबहुँकसुरत करत मम रहियो। जानि आपनो जनहित गहियो ॥
सुनि उद्धवकी निर्मल बानी। भई विवश ब्रज तिय सुखसानी॥

दोहा—क्यों नहिं उद्धवजी कहो, ऐसे वचन विचारि ॥
अन्त बड़े सब भांति तुम, हम निदान जड़म्वारि॥
सो०—होय न शील[2] समान, लघु दीरघ तातें भये ॥
भृगु कीन्हों अपमान, श्रीपति कर भूषण लियो॥

कहां गरल[3]सं वचन हमारे। कहँ अति शीतल मृदुल तुम्हारे॥
तुम हित कह्यो हमैं सुखमानी। तरन उपाय वेद विधि बानी ॥
हम गँवारि उलटी सब बूझी। कही कटुक तुमसों जो सूझी ॥
लोक वेद छोड्यो हम जैसो। ताको फल भुगतैहैं तैसो ॥
कहा करैं मन बहु समझावैं। श्याम दरशबिन सुख नहिं पावैं ॥
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमको। कहिये जानकौनविधि तुमको ॥
करिकै कृपा कीजियो सोई। जैसे दरश श्यामको होई ॥
देखतही या तनुको दहिवो। समय पाय हरि आगे कहिवो ॥
धोप वसतकी चूक हमारी। मन नहिं धरें लाल गिरिधारी ॥
जानि हमैं अति दीन दुखारी। करहिं कृपामन गुणहिं विचारी ॥

१ निर्मल। २ नम्रता। ३ विषसे।

आवन अवधि कहीहो जोई। धरिहैं सुरति वचनकी सोई॥
बहुत कहा कहिये ब्रजराजहि। करिहैं बांह गहेकी लाजहि॥
दोहा-प्रभु दीननपति दीनहित, यही हमारे आश॥
कबहुँक दर्श दिखायके, हरिहैं लोचन प्यास॥
सो०-ऐसे कहि ब्रज बाम, भईं बिरह सागर मगन॥
उद्धव करि परणाम, आये यशुमति नन्दपै॥
माँगी बिदा जोरिकर दोऊ। तुमसम धन्य और नहिं कोऊ॥
रामकृष्ण करिसुत जिनपाये। बाल भावकरि गोद खिलाये॥
धनि गोकुल धनि गोकुल वासी। किये प्रेमवश जिन अविनाशी॥
कृपाकरी म्वहिं कृष्ण पठायो। जाते दरश सबनको पायो॥
अब तुम मोको देहु निदेशू। जाय कृष्णसों कहौं सँदेशू॥
सुनि सप्रीति उद्धव की बाता। नंद बबा अरु यशुमति माता॥
उमग्यो प्रेम नयन जलबाढे। भये जोरिकर आगे ठाढे॥
उर बल श्याम विरहकी पीरा। कहत सँदेश बहत दृगनीरा॥
उद्धव हरिसों कहियो जाई। यशुदाकी आशीष सुनाई॥
कमलनयन सुंदर सुखदाई। कोटि युगन जीवहु दोउ भाई॥
कहियो बहुरि इती समुझाई। तुमबिन दुखित यशोमति माई॥
इतनी दया मात पै कीजै। एक बार दरशन फिर दीजै॥
दोहा-नंद दोहनी भरि दई, कह्यो नयन भरि नीर॥
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलबीर॥
सो०-दई यशोमति माय, मुरली ललित गोपालकी॥
उद्धव दीजो जाय, प्यारीही अति लालकी॥

अथ उद्धवजीकी मथुरागमन लीला॥

उद्धव लै माथे धरलीनी। लखि शुभप्रीति दंडवत कीनी॥
चल्यो योगकी नाव डुबाई। ह्वैगयो आप गोप ब्रज आई॥
जाय कृष्णपद शीशनवायो। प्रभु सादरह्वै कंठलगायो॥

कहिये सखा कुशलसों आये । व्रजमें जाय बहुतदिनलाये ॥
नंदबबा अरु यशुमति माई । कहौ कौनविधि देखे जाई ॥
बसत प्राण मोहींमें जिनके । कैसे दिन बीततहैं तिनके ॥
कहा दशा व्रजगोपिन केरी । जिनके प्रीति निरंतर मेरी ॥
उद्धव समुझत व्रजकीबाता । भये प्रेमवश पुलकित गाता ॥
भूल्यो यदुपति नाम बड़ाई । कह्यो सुनौ गोपाल गुसांई ॥
कहौं कहा प्रभु तुम्हैं सुनाई । व्रजकी रीति कही नहिं जाई ॥
कृपाकरी म्वहिं तहां पठायो । व्रजवासिनको दरश दिखायो ॥
जादिन गयो तुम्हैं शिरनाई । पहुँच्यो सांझ गोकुलहि जाई ॥

दोहा–दूरहिते लखि रथ ध्वजा, अरु पट पीत रसाल ॥
जानि तुम्हैं आवत हरषि, धाये गोपी ग्वाल ॥
सो०–रथपर मोहिं निहार, रहे ठगे से थकि सबै ॥
चली दृगन भरिधार[1], रहे मुरछि व्याकुल धरणि ॥

भये बिकल सब आशाटूटे । विरह घात सुरझे फिर फूटे ॥
जब तुम्हरो पठयो म्वहिंजान्यो । लैगँद सदनमाहि सनमान्यो ॥
तुमबिन यशुमति परम दुखारी । बूझी कुशल सराम तुम्हारी ॥
तृषित चातकी ज्यों अकुलानी । कृष्ण कृष्ण लागी जकबानी ॥
बारहि बार यहै पछिताहीं । प्रभु प्रभाव हम जान्यो नाहीं ॥
बांधे ऊखल तनक दहीको । अब कसकत कसनी सोहीको ॥
व्रज अब शून्य बिना मनमोहन । परम अभागी गई न गोहन ॥
ठाढीरहीं ठगोरी लाई । विरध वयस[2] तजिगये कन्हाई ॥
दशरथ प्राणतजे सुतलागी । मैं देखतही रही अभागी ॥
अब जनु ऐसेही मरि जैहौं । बहुरि न श्यामहिं कनियां लैहौं ॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता । अतिहिदीन दुःखित बिलखाता ॥
नंदहु सुमिरत तुम गुण ग्रामा । बीती निशा[3] चारहू यामा[4] ॥
दोहा–यद्यपि मैं बोधे बहुत, तुम बिन कछु न स्वहात ॥

१ आंखोंसे आंशूकीधार । २ वृद्धावस्था । ३ रात्रि । ४ प्रहर ।

तिनकी दशा विलोकि म्वहिं, युग सम बीती रात॥
सो०–नंद यशोदहि पाय, गयो प्रात वृषभानुपुर॥
सुनि सब आईं धाय, धाम काम तजि बाम तहँ॥

मोहिं तुम्हारो निज जन जानी। सन्मान्यो सबही सुख मानी॥
लखिपट भूषण चिह्न तुम्हारे। भई प्रेमवश सुरत सम्हारे॥
शिथिल अंग भरि आये नयना। पूंछी कुशल सुगद्गदवयना॥
जब मैं कह्यो सँदेश तुम्हारो। सुनतहि आयो सबन पत्यारो॥
बीती घरिक धीर उर आन्यो। मेरो कह्यो साँच नहिं मान्यो॥
दूषण सब कुबिजाको दीन्हों। कछुक परेखो तुमसों कीन्हों॥
तिनकी बात न जात बखानी। प्रेम पन्थ वे सकल सयानी॥
बह रसरीति देखि उनकेरी। कटक कथा लागी म्वहिं फेरी॥
यद्यपि मैं बहु विधि समुझाई। ग्रंथ युक्ति सब कथा सुनाई॥
कहिबे में न कछू सकराख्यो। भयो पवन ज्यों भुसमें भाख्यो॥
ज्ञान पंथ जो श्री मुख बानी। सोसब तिनको भई कहानी॥
कइइक कही बनाइ अनेका। उनके दृढ व्रत पतिव्रतएका॥

दोहा–गही एकही गहन उन, मेटि वेद विधि नीति॥
गोप भेष भजि सांवरे, रहीं विश्वभरि जीति॥

सो०–नहिं सीखैं शिख आन, जो विधि जाहि सिखावहीं॥
तुमहूं बड़े सुजान, उहां जाहु तो जानहू॥

क्षमा करो आयसु जो पाऊं। तौ अपनी सब विपति सुनाऊं॥
योग कथा कहि अबलन माहीं। होवैइतौ दुःख क्यों नाहीं॥
मैं निर्गुण गुण एक बखानो। सोऊ पूरो कहि नहिं जानो॥
वे सब उमगे वारिधि[1] ज्योंहीं। जामें थाह न पाऊं क्योंही॥
कहौं एक मैं पहरेक माहीं। वेकोटिक क्षणमें कहि जाहीं॥
कौन कौनको उत्तर आवै। सुनत सबै उनहींको भावै॥

१ समुद्र।

प्रेम प्रीति उनकी लखि बाँकी । धरी रही सब बात पैहांकी ॥
रह्यो चकित जिमि मनकी ऊलैं । जैसे हरिण चौकरी भूलैं ॥
वे पारत पटिया मो शीशा । सिखवों काहि योग जगदीशा ॥
वे षटवेत्ता सकल स्वभाऊ । मैं शठ बारह खरी पढाऊं ॥
अबलन वचन सुनतही मेरे । भई अग्नि ज्यों घृतके गेरे ॥
बहुत भांति करि मैं सब यांची । एकै अंग नकोऊ कांची ॥
दोहा–सगुण प्रेम दृढ उन गह्यो, यथा पपीहा पैद ॥
जानि लेहु प्रभु तुम यहां, कहा निरोगहिं वैद ॥
सो०–तिन्हैं निरन्तर ध्यान, श्याम राम अंबुज नयन ॥
लागत फीको ज्ञान, अवलोकत उनको भजन ॥
मैं देख्यों षटमास खोजकर । एकैरीति सबै ब्रज घरघर ॥
ज्यों कुरुखेत दिये बाढत धन । त्यों अधिकात प्रेमनित तुम तन ॥
प्रकट तुम्हारे गुणाचित दीन्हे । देह गेह अर्पण सब कीन्हे ॥
कोऊ कहत गये गोचारन । कोउ कहगये अघासुर मारन ॥
कोऊ कहत इंद्रजल जाई । गोवर्द्धन करलियो कन्हाई ॥
कोऊ कहत यमुन सुनिकाली । नाथन गये ताहि वनमाली ॥
घरघर दुहत कहतकोउबाला । कोउ कहै वन खेलत नँदलाला ॥
कोऊ कहत कुटिल लंपट हरि । बसे जायरी धौं काके घरि ॥
एक कहत वन वेणु बजावैं । चलौ सुनत यों कहि उठि धावैं ॥
ऐसी लीला प्रकट बखानैं । मेरो कह्यो न कोऊ मानैं ॥
हारि मानी निजमति षटज्ञानी । सुनि लीन्हीं उनकी मैं बानी ॥
प्रीति रीति लखि तहां डुलान्यो । नाथ तुम्हारी सुरति भुलान्यो ॥
दोहा–तुमसों आवन कहिगयो, वेगहि ब्रजते नाथ ॥
उन लखि उनसों ह्वैलग्यो, गावन उनके साथ ॥
सो०–बीत गये षट मास, समुझि परी आयो कहां ॥
तब उपज्यो जिय त्रास, भाज चलौ दै आन कहि ॥

१ उद्धवजीके मनमें जो निर्गुण ब्रह्मज्ञानको पक्ष था सो कहते हैं महाराज ब्रह्मज्ञान तो मेरेहीमेंरहा परन्तु मैं वहांसे और ज्ञानी होआया ।

बहुरि कहां मोको सुख वैसो। रसलीला विनोद ब्रज कैसो ॥
कहत न बनै देखतहि भावैं। यह सुख बड़ भागी स्वइपावैं ॥
बस्यो न पांचो दिन उन माहीं। तासु जन्म जग माहिं वृथाहीं ॥
नहिं श्रुति शेष ब्रह्म सुख पायो। जोरस ब्रज गोपिन मिलि गायो ॥
निरखत यदपि यहां यह सूरत। तदपि जाय उतहीं मन पूरत ॥
बर्ही[1] मुकुट गुंजकी माला। मुख मुरली ध्वनि वेणु बिशाला ॥
आगे धेनु रेनु मण्डित तन। तिरछी चितवन चारु हरण मन ॥
गोपी ग्वालन सों हरि बोलत। खेलत खात हँसत ब्रज डोलत ॥
तब वह सुख समुझत मन भावैं। इत यह लखि कछु कहत न आवैं ॥
तुम्हरी अकथ कथा तुम जानो। मैं कह समुझों मूढ अयानो ॥
हिय में मोहिं बहुत यह शालै। तुम तौ प्रभु करुणाके आलै[2] ॥
होत कठोर कठिन मन काहे। बनत कौन विधि बिनानिबाहे ॥

दोहा--निगम कहत वश भक्तके, पूरण सब सुख साज ॥
करि सु दृष्टि ब्रज पेखिये, गहो विरह की लाज ॥

सो०--अतिहि दुखित तनु क्षीन, ब्रजवासी तुम विरह वश ॥
तुम तन धन मन लीन, रटत चातकी लौं सबै ॥

कहौं कहा गति प्रभु राधाकी। जैसी विरह व्यथा बाधाकी ॥
भूषण बिन अति क्षीण शरीरा। बसन मलीन श्रवत दृग नीरा ॥
सुधि बुधि कछू देहकी नाहीं। रहत बावरी ज्यों घर माहीं ॥
कबहुँक कृष्ण कृष्ण रट लावैं। कबहुँक नाम आपनो गावैं ॥
बिचांछिशि अग्नि काठ कृमि जैसे। सहत बिरह दुख दुहँदिशि तैसे ॥
लहत न क्योंहूं शीतल ठाई[3]। कबहूं रहत मौन शिरनाई ॥
गृहजन देखि देखि दुख पावैं। नहिं कछु सुनति कोटि समुझावैं ॥
सूखी जिमि नलनी[4] बिनपानी। जुगवत यत्न न सखी सयानी ॥
तृणके अग्र ओसकण जैसे। आशा अवधि प्राण तनु तैसे ॥

---

१ मोर। २ स्त्री। ३ स्थान। ४ कमलिनी।

अचरजमोहिं बड़ो यह आवै । प्रभु तुमको कैसो यह भावै ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी । भक्तन हित तनुधारी स्वामी ॥
वेगि कृपाकरि दर्शन दीजै । ब्रज जन मरत ज्याय सब लीजै ॥
दोहा–यह मुरली दै बिलखिकै, कह्यो यशोमति माय ॥
एक बार हित नंदके, दरश दिखावहिं आय ॥
सो०–जिन गैयनको श्याम, आप चराई हेत करि ॥
बहुरि न आई धाम बिडरी कुंजन में फिरत ॥
सुनिकै प्रभु उद्धवके बैना । उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना ॥
ब्रजजनप्रीति आय उरशाली । भये विवश जन प्रणप्रतिपाली ॥
लै उठाय मुरली उर लाई । धरि ब्रजध्यान रहे अरगाई ॥
सहज स्वभाव कृपालुहि ऐसे । होत तुरत जैसनको तैसे ॥
पुनिहा ब्रजकहि छांडि उशासू । पोंछ पीत पट जलसों आंसू ॥
उद्धव सों यों वचन सुनाये । भले सखा शिषदै ब्रज आये ॥
मनमें यों प्रभु कियो विचारा । ब्रज भक्तन मम रूप अधारा ॥
मेरे मुक्ति बड़ी निधि सोई । सोवेनहीं आदरत कोई ॥
ताते जो जनके मन भावै । सोई मोहिं करत बनि आवै ॥
भक्ताधीन सो पर्ण हमारे । ब्रजवासी मोको अतिप्यारे ॥
सदा बसत ताते ब्रज माहीं । इन सम मोहिं और हितु नाहीं ॥
सब समरथ प्रभु सब गुणनागर । ब्रजवासी जनके सुखसागर ॥
दोहा–मन करि हरि ब्रजमें रहे, मिलि ब्रजजन मनसाथ
तनकहि देवन काज हित, भये द्वारकानाथ ॥
सो०–सदा बसत ब्रज श्याम, नटवर वपु मुरली धरे ॥
ब्रज जन पूरण काम, कोटि काम लावण्य निधि ॥
बसत सदा ब्रज कुँवर कन्हाई । ब्रजवासी जनके सुखदाई ॥
कृष्ण प्रेम मूरति ब्रजनारी । कबहूं नहीं कृष्णते न्यारी ॥
नित्य नवल नित वनहिं विहारा । ब्रज विलास नित नवल उदारा
नित्य धाम वृन्दावन पावन । नित्य रास रस परम सुहावन ॥

शिवसनकादि शेष ज्यहि ध्यावैं। सुर नर मुनि सब ध्यान लगावैं
ब्रज गोपिनकी महत बड़ाई। एक समय ब्रह्मा सब गाई॥
भृगु नारद आदिक जे भक्ता। पूछत भये विनय संयुक्ता॥
तिनसों विधि यहि भांति बखानो। वेद ऋचा सब ब्रजतिय जानो॥
इन सम सत्य कहौं तुम पाहीं। मो शिव शेष लक्ष्मी नाहीं॥
नहीं कृष्णते इक क्षण न्यारी। इनते और नकोउ अधिकारी॥
इनके भाव कृष्ण जो ध्यावैं। प्रीति रीति दृढ़ करि मन लावैं॥
नारि पुरुष कोऊ किन होई। वेद ऋचा पावै गति सोई॥

दोहा–परशे इनकी चरण रज, वृन्दावन महि माहिं॥
सोऊ गति इनकी लहै, यामें संशय नाहिं॥
सो०–यों विधि कही बुझाय, महिमा ब्रज गोपीनकी॥
व्यास कही सो गाय, पावन बृहतपुराणमें॥

ताते भृगु आदिक नारद मुनि। इन्द्रादिक सुर शिव ब्रह्मा पुनि॥
अरु हरि भक्त जगतते अहहीं। वृन्दाबन रज बांछित रहहीं॥
ब्रजरज अति दुर्लभ श्रुति गावैं। बडभागी जन तेई पावैं॥
चित धारि सोई ब्रज रस रासा। ब्रज विलास गायो ब्रजदासा॥
कृष्ण चरित ब्रजवन निकुंजको। सार सकल सुख सुकृत पुंजको॥
सार ज्ञान विज्ञान ध्यानको। वेद शास्त्र स्मृति पुराणको॥
सार वहुरि इतिहास भजनको। योग जाप अरु यज्ञ जननको॥
सारअमित मुनि संत मतनको। हरि पद पंकज प्रेम यतनको॥
सार जन्म अरु सुगति मुक्तिको। परमानन्द सुविमल भक्तिको॥
सार सकल रस रसिकाईको। परम मधुर सुन्दरताईको॥
सार सारको परम सुहायो। ब्रजविलास भक्तन मन भायो॥
सहितस्वभाव प्रीति जो गहैं। तेजन गति गोपिनकी लहैं॥

छंद–यह ब्रजविलास हुलास सो नर, नारि सुनि जे गाइहैं॥
सीखैं सिखावैं पढैं रुचिकर, प्रेम मन उपजाइहैं॥
धरि भाव भरता कृष्णसों, उर कमल पद चित लाइहैं॥

हरि राधिकापरसादते व्रज, गोपिका गति पाइहैं ॥
पूरण सकल मन काम सबसुख, धाम यश नँद लालको ॥
दलन दारिद दोष दुख भय, भव हरण यम कालको ॥
यह जानि गाथहिं सुजन गायो, जिनन आनँद पदलह्यो ॥
तिनकी कृपा बल पाय कछु, इकदास व्रजवासी कह्यो ॥

दोहा–व्रजविलास व्रजराजको, कोकहि पावै पार ॥
भक्त भाव गावत भगत, भजन प्रभाव विचार ॥
सिगरे दोहा आठसौ, और नवासी आहि ॥
हैं इतनेहीं सोरठा, व्रज विलासके माहिं ॥
दश सहस्र षट सौ अधिक, चौपाई विस्तारु ॥
छन्द एक शत षट अधिक, मधुर मनोहर चारु ॥
सबको तुष्टप् छंद करि, दश सहस्र परिमान ॥
खण्डित होन न पावही, लिखियो जान सुजान ॥
विधि निषेध जाने नहीं, कछु व्रजवासी दास ॥
ज्यों जाने त्यों राखि हैं, नँदनंदनकी आश ॥
नहिं तप तीरथ दान बल, नहीं कर्म्म व्यवहार ॥
व्रजवासीके दासको, व्रजवासी आधार ॥
व्रजवासी मागूं सदा, जन्म जन्म करि नेह ॥
मेरे जप तप व्रत यहै, फलदीजै पुनि एह ॥

इति श्रीव्रजविलासे सबसुखरासे भक्ति-
प्रकाशे, कृत व्रजवासी दास
संपूर्णम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बंबई.

॥ श्रीः ॥

क्रय्यपुस्तकोंकी-संक्षिप्त-सूची ।

नाम. ——— क़ी.रु.आ.

भाषावार्तिक ।

शुकसागर बड़ा लाला शालिग्रामजी अनुवादित शंका समाधानों दृष्टांतों समेत उत्तम-ग्लेज	१२–०
" तथा रफ्	१०–०
शुकसागर मध्यम अक्षर ग्लेज ७ रु. रफ् ...	६–०
शुकसागर छोटाअक्षर ग्लेज लालाशालिग्राम कृत	५–०
" तथा रफ्	४–०
वाल्मीकीरामायण केवल भाषा जिल्दबँधी ...	१०–०
रामाश्वमेध केवलभाषा जिल्दबँधी	२–०
शिवपुराण केवल भाषा जिल्दबँधी	६–०

भाषा–काव्य ।

रामरसायन रामायन-रसिकविहारीकृत ...	४–०
रसिकप्रिया सटीक	१–४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत ...	२–०
विज्ञानगीता केशवदासकृत (वेदान्त) ...	०–१०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदासकृत] मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन	१–४

नाम	की.रु.आ.
जगद्विनोद [पद्माकरकृत नायकाभेद] ...	०–८
रसराज [मतिरामकृत नायका भेद] ...	०–६
ब्रजविलास बडा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित ...	४–०
ब्रजविलास मध्यमअक्षर टिप्पणी सहित विलायती जिल्द	२–०
तथा रफ् कागजका	१–८
ब्रजचरित्र (श्रीराधाकृष्णजीकी सर्वलीला सुगम दोहा चौबोलोंमें वर्णितहैं)	३–०
प्रेमसागर टाईपका बडा ग्लेज कागजका ...	१–१२
प्रेमसागर टाईपका बडा रफ्	१–४
भक्तमाला रामरसिकावली बड़ी रीवाँधिपति महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथा हैं और द्वितीयावृत्ति उत्तर चरित्र समेत अत्युत्तम नई छपी है	४–०
रामस्वयंवर श्रीमहाराजारघुराजसिंहकृत (काव्य-देखनेयोग्य)	४–८
भक्तमाल नाभाजीकृत सटीक (छंदबद्ध)	१–४
रुक्मिणीपरिणय महाराज श्रीरघुराजसिंहजू देव	१–८

नाम	की.रु.आ.
महाभारत भाषा सबलसिंहकृत-तुलसीदासजी की रामायणकी रीतिसे दोहा चौपाईमें (१८) अठारहोंपर्व	३-८
तथा प्रथम भाग (३-आदि, सभा, वनपर्व)	१-०
तथा द्वितीय भाग (२-विराट, उद्योगपर्व)	१-०
तथा तृतीय भाग (८-भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, स्त्रीपर्व)... ...	१-०
तथा चतुर्थ भाग (५-शान्ति, अश्वमेध, आश्रमवासिक, मुशल, स्वर्गारोहणपर्व) ...	१-०
विजयमुक्तावली (महाभारतका सूक्ष्म वृत्तांत छंदबद्ध)	१-०
अर्जुनगीता भाषा	०-४
गजेंद्रमोक्ष भाषा	०-१॥
शनिकथा कायस्थकी	०-१॥
शनिकथाराघवदासकृत	०-३
शनिकथा बडी पं० रामप्रतापजीकृत ...	०-८
रुक्मिणीमंगल बड़ा (पद्मभक्तकृत मारवाडी भाषा)	१-४
हनुमान्बाहुक पंचमुखी कवच समेत	०-१॥
नासिकेतपुराणभाषा (स्वर्गनरकका वर्णन)	०-६
नरसीमेहताका मामेरा बडा	०-५
बिस्मिलपरिवारका स्वांग (इश्कचमन) ...	०-८

नाम	की.रु.आ.
सूर्यपुराणादि १९१ ग्रन्थ अतिउत्तमकागज और ...	०–८
...लास बडा मोटेअक्षरका टिप्प...	०–६
ज्ञानमाला	०–२
मंगलदीपिका अर्थात् शाखोच्चार	०–१॥
दंपतिवाक्यविलास-जिसमें सब देशांतरकी यात्रा और धंधेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खंडन किया है दोहा कवित्तोंमें (सुभाषित)	०–१२
रसतरंग ज्ञानभक्तिमार्गी अजब रँगीले पद्य कृष्ण गढ महाराज प्रणीत...	०–८
दादूरामोदय संस्कृत–दादूपंथी साधुओंको ...	०–१०
श्यामकामकेलि	०–४
परमेश्वरशतक...	०–६
भक्तिप्रबोध	२–०
भावपंचाशिका कविवृंदजीकृत	०–२

संपूर्णपुस्तकोंका "बडासूचीपत्र") ॥ आध आनेका ढिकट भेजकर मँगालीजिये.

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना खेतवाडी–मुम्बई.

